नज़ीर ग्रन्थावली

डा० नज़ीर

R
057
56

नज़ीर ग्रन्थावली

डा० नज़ीर मुहम्मद

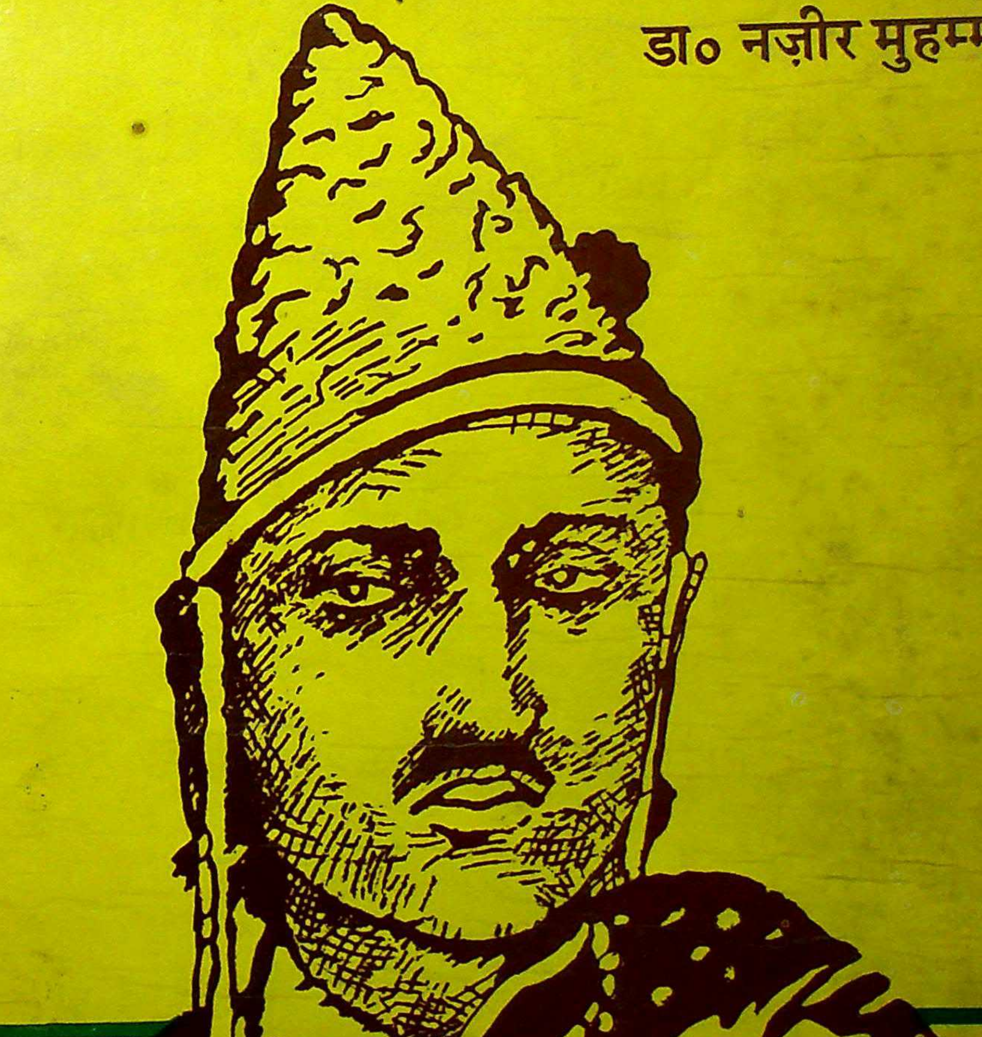

८१
८६

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

R
0८१
६६

8705

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

पुस्तकालय

गुरुकुल २ कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या $\frac{०८१}{६६}$ आगत संख्या 8705

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वे दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

नज़ीर ग्रन्थावली

8705

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हिन्दी समिति प्रभाग ग्रन्थाङ्क : २७५

नज़ीर ग्रन्थावली

DONATION

(कविवर नज़ीर अकबराबादी की रचनाओं का संग्रह)

उत्तर प्रदेश भाषा निधि के सौजन्य से

8705

सम्पादक
डॉ० नज़ीर मुहम्मद
एम० ए० (संस्कृत), एम० ए० (हिन्दी)
पी-एच० डी०, डी० लिट्०, ज्ञानाचार्य
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
(हिन्दी समिति प्रभाग)
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ-२२६ ००१

प्रकाशक :

विनोद चन्द्र पाण्डेय

निदेशक

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

R
०८१
३६

प्रथम संस्करण : १९९२

© : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

प्रतियाँ : २२००

मूल्य : २१०-०० रु० (दो सौ दस रुपये)

मुद्रक :

प्नार मुद्रक

११७, नजीराबाद
लखनऊ

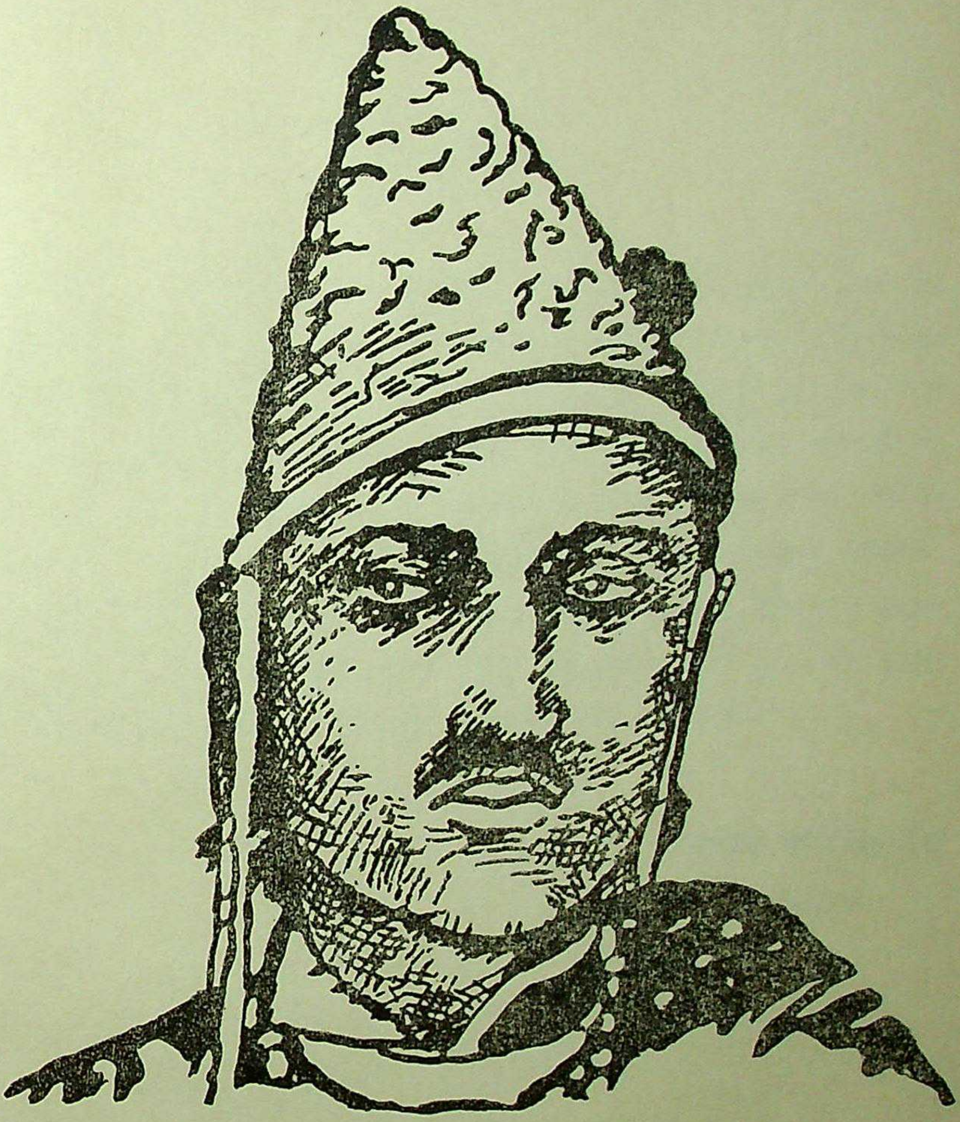

नज़ीर अकबराबादी
(सन् १७३५-१८३०)

प्रकाशकीय

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की प्रकाशन योजना के अन्तर्गत सन्दर्भ ग्रन्थों और विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया जाता रहा है। अब संस्थान द्वारा प्रतिष्ठित साहित्यकारों की ग्रन्थावलियों को प्रकाशित कर पाठकों को सुलभ कराने का विचार किया गया है। इसी दृष्टिकोण से कविवर नज़ीर अकबराबादी की रचनाओं का संग्रह "नज़ीर ग्रन्थावली" के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। हिन्दी साहित्य को श्री सम्पन्न करने में जहाँ हिन्दू कवियों ने अपना योगदान दिया है वहीं मुस्लिम कवियों का विशिष्ट योगदान भी उल्लेखनीय है। नज़ीर अकबराबादी की रचनायें निश्चय ही सहृदय पाठकों को प्रेरणा प्रदान करेंगी और इससे राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का पथ भी प्रशस्त होगा। आशा है यह ग्रन्थावली लोकप्रिय होगी और इसका सर्वत्र स्वागत होगा।

विनोद चन्द्र पाण्डेय

निदेशक

दो शब्द

नज़ीर की रचनाओं से मेरा परिचय बचपन में ही अनजाने हुआ। यों तो वृन्दावन के भक्तिमय वातावरण में भक्तों के पद मुझे लोरी की भाँति सुनने को मिले परन्तु बचपन में एक दिन एक युवा, रमता–फक्कड़, जोगी जैसा अलमस्त फकीर, जिसके हाथ में एक छोटा डंडा था, जो उसकी कलाई में पड़े लोहे के कड़े के साथ ताल के साथ बजता और वह जैसे देह की सुध भूल कर लावनी की तर्ज में गाता—

क्या–क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैया का बालपन।
ऐसा था बाँसुरी के बजैया का बालपन॥

वह गीत गाता जाता और चलता जाता और मेरे जैसे छोटे वय के बालक और बड़े लोग भी उसके गीतों के बोल, वाणी की मिठास और उसके मनमौजी ढब से आकर्षित हो, उसके पीछे-पीछे खिंचे चले जाते। वह चलता-चलता गाता, बैठकर गाता, आँखें बंद कर गाता। कभी इस 'बालपन' के गीत को गाता, कभी—'सब सुनने वाले कह उठे जय-जय हरी-हरी, ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बाँसुरी' कभी लीला–गीत गाता—

यह लीला है उस नन्द-ललन, मनमोहन जसुमत छैया की।
रख ध्यान सुनो, दंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की॥

उसके पास बहुत से गीत थे। कृष्ण के ही गीत वह गाता था। हम समझते वह खुद बनाकर गाता है। बड़े अच्छे और लुभावने लगते थे ये गीत। बड़ी कशिश थी इनमें। ब्रजभाषा के गहरे भाव-भरे पदों के बीच बहती खड़ी बोली कहिये या ब्रज और उर्दू-मिश्रित भाषा कहिये, इसका रवा ही कुछ और था, रवानगी ही और थी। बड़ी हल्की और लहरीली चाल, सुरताल के साथ, लोक गीत की धुन और भावों का प्रवाह। "कन्हैया का बालपन" कविता तो जैसे पूरी की पूरी याद हो गई। उसी सुर में बार-बार गाते। बाद में फकीर तो चला गया परन्तु वे कविताएँ, वे धुनें, गाने की मस्ती, फक्कड़पन—मेरे जैसे न जाने कितनों के पास छोड़ गया।

बहुत बाद में मालूम हुआ कि ये कविताएँ नज़ीर मियाँ की हैं। कविताएँ संस्कार में बस गई थीं तो 'नजीर' भी मन में बस गये। उसके बाद गीता प्रेस से छपा छोटे आकार का भक्ति-गीतों का एक संकलन देखा। उसमें भी यह कविता थी, और भी कुछ बड़ी ही प्रवाहपूर्ण इसी शैली की रचनाएँ थीं। उसमें कवि का नाम लिखा देखा—नज़ीर अकबरावादी।

नज़ीर अकबरावादी से जैसे एक साहित्यिक रिश्तेदारी हो गई। समझ और जानकारी के साथ नज़ीर

अकबरावादी और निकट आने लगें। यह भी मालूम हुआ कि अकबराबाद आगरा का ही दूसरा नाम है, जो शाहजहाँ ने रखा था। आगरा वृन्दावन से दूर नहीं, कहिये, आगरा भी ब्रज क्षेत्र में ही है। ब्रजभाषा का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। यह भी मालूम हुआ कि नज़ीर कुछ दिन मथुरा में भी रहे थे और कभी वृन्दावन भी आते-जाते थे। जब मैंने यह सुना तो मुझे अपने बचपन का वह फकीर याद आ जाता जो मुसलमान तो था, पर वह नज़ीर नहीं था, जो इन गीतों का रचनाकार था क्योंकि नज़ीर तो मेरे जन्म से बहुत पहले दिवंगत हो चुके थे उनके दुनियाँ से जाने और मेरे दुनियाँ में आने में ही १०० साल का फर्क था। हाँ, नज़ीर में और उस फ़कीर में एक बात समान थी, मस्ती और कृष्ण-प्रेम।

अब "नज़ीर अकबरावादी" की पूरी रचनाओं की ग्रन्थावली आपके सामने है। यदि एक बार इनके रचना-संसार का अवलोकन किया जाय तो यह अनुभव होगा कि नज़ीर एक जन्मजात कवि थे। संभवतः कविता उन्होंने बचपन से ही खेल-खेल में लिखी हो और जीवन के दौर से जब, जैसे गुजरते गये पूरी सच्चाई के साथ उसे लिखते चले गये। इसलिए उनकी कविता के विषय भी बदलते गये। नज़ीर जैसा विषय-वैविध्य कम देखने में आता है और इस तरह की दिल खोल कर कहने की हिम्मत तो और भी कम लोगों में होती है।

पहली बात तो यह है कि नज़ीर को हिन्दुस्तान की धरती से बेहद प्यार है और उसमें भी अपने शहर आगरे से। उन्होंने आगरा अपने नाम के साथ "अकबराबाद" के रूप में जोड़ा ही है, वह उनकी आत्मा से भी जुड़ा है। आगरा शहर के बाजार में से, खेल-तमाशे, तीज-त्यौहार, कोठे-महफिलें उनमें ऐसे बसे हैं कि जैसे वे उनके बीच में खड़े हैं और चारों ओर का "आँखों देखा हाल" वर्णन कर रहे हों। छोटी से छोटी बातें उनकी निगाह से नहीं छूटतीं। वस्तु-वर्णन की सहजता और विविधता में तो वे बहुत आगे हैं। उन जैसी चित्रात्मकता भी कम ही होती है।

नज़ीर ने अपना जीवन बाजारू शौकों से शुरू किया। वे बचपन में पक्षियों-जानवरों के खेलों में मशगूल रहते थे। कनकौआ तो उड़ाते ही थे, कबूतरबाजी भी खूब जम कर करते थे—

छोड़ उनको नज़ीर अपना दिल किससे लगावें।
अपने तो लड़कपन से हैं दमसाज़ कबूतर॥

कबूतर ही क्यों उन दिनों बुलबुलें लड़ाने का खेल भी निराला था। उसमें भी "नज़ीर" ही आगरे के सबसे बड़े उस्ताद रह गये थे, बाकी तो खेल खत्म ही था—

सबमें मियाँ नज़ीर अब तुम हो बड़े कलंदर।
यह खेल आगरे में अब खत्म तुम्हीं पर॥

सौ-सौ तरह की घूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारों कल बुलबुलें लड़ाई॥

"बमा" सम्बन्धी कबिता में उन्होंने खुद लिखा है कि हमारे पास पहले एक गिलहरी का बच्चा था, तोता था, बया हुआ बगुला था, जिन्हें कोई चोर चुरा ले गया। गिलहरी के बच्चे पर उनकी एक अलग से रचना है। उन्होंने एक रीछ का बच्चा भी पाला और कलंदर बनकर उसके करतब दिखाये। इसमें उन्होंने अपने हाथ में लोहे

का कड़ा डालकर और ढपली पर गत बजाकर नाचने-गाने का भी उल्लेख किया है। गाने के साथ "अहा हा" की संगत लगती थी। उससे उनके नाचने-गाने के शौक और खुली जिन्दगी की बेहिचक मस्ती लेने का भी पूरा प्रमाण मिलता है। उन्होंने अजदहे भी पाले। शायद यह उनका शौक था, रोटी कमाने का जरिया भी हो सकता है। जो हो, इससे वे जनता के साथ हिल-मिल गये।

एक बात उनमें और है वह यह कि वे आगरा, यानी ब्रज के ही मेलों-तमाशों के साथ भी ईमानदारी से जिये हैं। वे मुसलमान होने के कारण ईद ईदुलफित्र, रोजा, शबे-बरात, ईदगाह का वर्णन तो करते ही हैं परन्तु होली, दिवाली, राखी, बसंत, वर्षा, झूला, बलदेव जी का मेला, कंस का मेला, लाल जगधर का मेला, निर्जला पर पतंग के विविध रंगभरे वर्णनों से भी कवि का जी नहीं भरता। होली पर तो उन्होंने २० से भी अधिक कविताएँ लिखी हैं। आगरा में किस मोहल्ले में कैसी होली हो रही है, उसका वर्णन भी वे उनमें शिरकत कर अनुभव के बाद करते हैं और इस प्रकार आगरा का भूगोल भी बता देते हैं और उसकी संस्कृति का उल्लास भी। होली देखने वे ब्रज में जाते भी थे, क्योंकि वैसा लुत्फ तो और कहीं आता ही नहीं—

यह सैर होली की हमने तो ब्रज में देखी।
कहीं न होवेगी इस लुत्फ की मियाँ होली।
कोई तो डूबा है दामन से लेके ता चोली।
कोई तो मुरली बजाता है कह 'कन्हैया जी'।
है धूमधाम यह बेइख्तियार होली में॥

नज़ीर होली क्या फागुन के महीने को ही मस्त महीना मानते हैं—

ऐ ! क्या पूछे हैं, रंगभरी, है मस्त महीना फागुन का।

हाँ तो भारतीय संस्कृति में डूबे हुए मियाँ नज़ीर अपने जीवन के दौर में एक सच्चे मुसलमान की तरह खुदा और सल्लल्लाहो अलैहे बसल्लम हजरत मुहम्मद साहब पर पूरा ईमान लाते हैं और रात-दिन मुहम्मद का कलमा पढ़ने का गीत गाते हैं। वे हजरत अली का यशोगान भी जी खोल कर करते हैं और अरकाट के एक साहूकार के एक लड़के के ताजिया-प्रेम के हवाले से उसे हजरत बिन अली साहब के दर्शनों और कटी हुई बाँह के जुड़ जाने के चमत्कार से उसके माता-पिता द्वारा कलमा पढ़ने और जनेऊ उतार कर तस्वीह लेने की घटना का वर्णन भी करते हैं परन्तु मियाँ नज़ीर धर्म के सीमित दायरे में कहीं नहीं बँधे। वे धर्म की आत्मा को ही छूते थे। मौलवी और पंडितों की रोटी के लिए धर्म पालने की उनकी भावना को वे अधिक महत्त्व न दे सके। क्योंकि वे किसी खूँटे से बँधे हुए नहीं थे, इसलिए धर्म को उन्होंने सदा व्यापकता में देखा। उनके चारों ओर हिन्दू-समाज ही था, जो उन्हें उतना ही अपना मानता था, जितना मुसलमान। मियाँ नज़ीर बेतकल्लुफ होकर हिन्दुओं के देवता गणेश जी की बन्दना उनके चरणों में अपना माथा झुकाकर करते हैं, भैरव के मंदिर में जाकर उनकी शरण गह वे निहाल हो जाना चाहते हैं—

तेरी सरन गही है कर तू निहाल भैरों।
ए पर्तपाल देवत मदमस्त काल भैरों॥

दुर्गा जी के दर्शन करते हैं तो, उनके दर्शनों की तारीफ करते रह जाते हैं—

तारीफ कहूं मैं क्या-क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।

वे "बम शंकर" की रट लगाते हैं, हरि का स्मरण करते हैं, भगवान् के अवतारों का जगह-जगह बयान करते हैं, राम नाम की महिमा गाते हैं, भक्त प्रहलाद, भक्त सुदामा एवं अन्य पौराणिक भक्तों पर भगवान् की कृपा का स्मरण करते हैं, गुरु नानक शाह की प्रशंसा करते हैं परन्तु जब वे श्री कृष्ण की तारीफ लिखने लगते हैं । उन्हें सबका खुदा बताते हैं—

तू सबका खुदा, सब तुझ पै फिदा, अल्ला हो ग़नी, अल्ला हो ग़नी ।
हे कृष्ण कन्हैया, नन्द लला, अल्ला हो ग़नी, अल्ला हो ग़नी ।
तालिब है तेरी रहमत का, बन्दए नाचीज़ नज़ीर तेरा ।
तू बहरे करम है नन्दलला, ऐ सल्ले अला,
अल्ला हो ग़नी, अल्ला हो ग़नी ।

वे श्रीकृष्ण को "सृष्टि-रचैया" भी मानते हैं और यह भी मानते हैं कि वेद व्यास जी ने कई पुराणों की रचना की फिर भी वे श्री कृष्ण का चरित्र न लिख सके तो मुझ नाचीज़ की जली ज़बान और कलम उनके गीत कैसे लिख पायेगी ?

दरअसल मियाँ नज़ीर ने श्री कृष्ण का चरित्र, उनकी लीलाएँ पुराणों के आधार पर संतों-फकीरों से सुनी तो थीं ही, उससे भी ज्यादा उन्होंने ब्रजवासियों की भावनाओं में, ब्रज के मंदिरों में, वहाँ के राग-रंग में कृष्ण के उन रूपों को देखा, सहेजा, पाया है, जो कवि की आँखों और उसके अनुरागमय हृदय को बरबस अपनी ओर खींच लेती हैं । यही कारण है कि कृष्ण के अन्तर्दर्शन कर वे आत्मतृप्त हो गये और फिर किसी और द्वार जाने की उन्हें आवश्यकता नहीं रही । उनके कवित्व को श्री कृष्ण की लीलाओं में पूरा विश्राम मिल गया और वे प्रतिपल रीझते और गा उठते नन्दालय की लीलाओं में सबसे पहले कृष्ण का बालपन—

यारों सुनो ! यह दधि के लुटैया का बालपन ।
और मधुपुरी नगर के बसैया का बालपन ।
मोहन सरूप निरत करैया का बालपन ।
बन-बन के ग्वाल गौएँ चरैया का बालपन ।

ऐसा था बाँसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैया का बालपन ।।

यह कविता ३३ बंदों की है, जिसमें श्री कृष्ण के ऐश्वर्य एवं माधुर्य दोनों रूपों का वर्णन है । इसी प्रकार 'बाँसुरी' कविता में भी उसकी धुन सुनने के लिए सबमें बेकरार बने रहने का दिलकश वर्णन है जो वस्तुतः नज़ीर का ही अपना दर्द है—

कितने तो उसकी धुन के लिए रहते बेक़रार ।
कितने लगाए कान उधर रखते बार-बार ।
कितने खड़े हो राह में कर रहते इंतिज़ार ।
आए जिधर बजाते हुए श्याम जी मुरार ।
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसुरी ।

कृष्ण के कालियदमन, रासलीला, कन्हैया जी की राधा से सगाई, दसम कथा में रुक्मिणी ब्याह आदि में कृष्णलीला के न जाने कितने मनोमोहक प्रसंग हैं । वे इन लीलाओं में स्वयं भी शामिल होने का उल्लेख करते हैं, जैसे रासलीला के अन्त में—

इस शहर में 'नज़ीर' जो बेकस गरीब है ।
रहता है मस्त हाल में अपने बगैर में ।
शब को गया था रास में कुछ करके राह तैं ।
जाकर जो देखता है तो वाँ सच है करके जै ।
हर आन गोपियों का यही सुख विलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ॥

यह रास आध्यात्मिक लीला है या रासलीलानुकरण ? नज़ीर ही जानें !

अब एक दूसरी ओर ध्यान दें । नज़ीर मियाँ आरम्भ से ही हर हुनर के उस्ताद थे और सबके प्यारे थे । शायर तो थे ही । मन में प्रेम की लहरें न उठती हों, कैसे हो सकता है ? कहते हैं किसी वेश्या से उनका प्रेम था । जो हो, उन्होंने अपने यौवन में लौकिक प्रेम-लीलाओं के, कोठे के, नाच के, वेश्याओं के अंग-प्रत्यंग के इतने बेतकल्लुफ वर्णन किये हैं कि वे बहुत कुछ उघड़े हुए भी हो गये हैं, कामुकता से भरे हैं । उनका विस्तार यहाँ अपेक्षित नहीं है परन्तु इस सत्य की ओर इंगित करना चाहता हूँ कि यही लौकिक प्रेम क्रमशः जगत् की क्षणभंगुरता का परिचय होने पर अलौकिक प्रेम में पर्यवतित होने लगता है । बीच में दुनियाँदारी और इससे उत्पन्न वैराग्य के बड़े अच्छे शब्द-चित्र हैं । अन्त में तो सुरताल पर नाचने वाला कवि ऐसे मुकाम पर पहुँच जाता है, जहाँ गत बेगत हो जाती है और सुरताल छूट जाते हैं । ताल-पखावज के बिना ही जहाँ नाचना होता है, सच पूछिये तो ऐसे पहुँचे हुए लोगों के राग ही असली रंगों से भरे हैं और भाव भी. उन्हीं के सच्चे हैं और हाँ, यह नाँच भी जिसके लिए नाचते हैं, वह सूरत किसी छैल-छबीले की है, जो दिल के अन्दर छाई हुई है । आप इस "रसिया छैल" को सहज ही पहचान सकते हैं । उसी छैल-छबीली सूरत में, जोत में जोत समा जाती है—

जब छैल छबीले सुन्दर की, छबि नैनन अन्दर छाय रही ।
एक मूर्च्छा गत सी आय गई, और जोत में जोत समाय गई ।
हैं राग उन्हीं के रंग भरे और भाव उन्हीं के साँचे हैं ।
जो बेगत, बे-सुरताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ॥

अब वह आशिक मस्त फ़क़ीर बन गया है, फिर रह क्या गया—

हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक मस्त फकीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥

नज़ीर मियाँ ने निश्चय ही हँसी-मजाक और लौकिक प्रेम से अपनी जीवन-यात्रा आरम्भ की भी परन्तु अन्त में वे एक पहुँचे हुए फकीर बन गये, यह उनके काव्य की साक्षी से सिद्ध है ।

नज़ीर की भाषा बड़ी ही सरल, प्रवाहपूर्ण और मुहावरेदार है । वे लोकोक्तियों और मुहावरों को अपनी रचनाओं का मुखड़ा बना लेते हैं, जैसे—'क्या खूब सौदा नक्द है, इस हात दे, उस हात ले," "सच तो यह है खुशामद से खुदा राजी है ।" "नौड़ी न हो तो, कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।" "पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।" ऐसी अनन्त सूक्तियाँ हैं । कहीं-कहीं तो वे लोकगीतों के अंशों को ही गीत के बोल के रूप में चुन लेते हैं, जिससे सांस्कृतिक रंग भी गहराता रहता है और जहाँ-तहाँ पूरे दोहे ही उनकी रचनाओं में सम्मिलित हैं । ये दोहे—"विरह की आग" रचना के छन्दों के स्थायी बंद हैं और अलग से भी संकलित हैं । इन दोहों को प्रसाद गुण की दृष्टि से किसी भी रस-सिद्ध कवि के दोहों के साथ रखा जा सकता है ।

बानगी के कुछ दोहे प्रस्तुत हैं—

कूक करूँ तो जग हँसे, चुपकै लागै घाव ।
ऐसे कठिन सनेह का, किस विधि करूँ उपाव ॥

जो मैं ऐसा जानती प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा फेरती प्रीत न कीजो कोय ॥

विरह आग तन में लगी, जरन लगे सब गात ।
नारी छूवत बैद के पड़े फफोले हात ॥

पलक कटारी मार के हिरदे रक्त बहाय ।
कह की आह समर्थ जो वाके द्वारे जाय ॥

नेह डगर की रीत हैं तन मन दैहो खोय ।
प्रीति-डगर जब पग रखा, होनी होय सो होय ॥

सामान्यतया कहा जा सकता है कि नज़ीर की भाषा इस्लामी विषयों में अरबी-फारसी-बहुल है, जब कि श्री कृष्ण लीला एवं अन्य सांस्कृतिक वर्णनों में वह संस्कृत-प्रधान या ब्रजनिष्ठ है । सामान्यतया उनकी भाषा आगरा की बोलचाल की भाषा है, जो हिन्दी ही है, कुछ लोग उसे जहाँ-तहाँ अरबी-फारसी के छींटों के कारण उर्दू कहते हैं परन्तु है वह हिन्दी का ही एक रूप । निस्सन्देह नज़ीर का काव्य हिन्दी साहित्य में अपनी अनोखी जगह बनाये हुए है, जिसका निर्धारण इस ग्रन्थावली के प्रकाशन के बाद विशेष रूप से हो सकेगा ।

यह संयोग ही है कि नज़ीर मियाँ, जिनका पूरा नाम वली मुहम्मद नज़ीर था, की ग्रन्थावली का सम्पादन डा० नज़ीर मुहम्मद द्वारा किया गया है । वे अलीगढ़ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व—अध्यक्ष हैं और हिन्दी के साथ ही अरबी-फारसी, उर्दू के वे अध्येता हैं । ग्रन्थकार मियाँ नज़ीर के समान ही ब्रजवासी हैं, मुसलमान होने के साथ ही हिन्दू-समाज में घुले-मिले हैं और तुलसी जयन्ती, रामायण मेला से लेकर संगीत-शिरोमणि स्वामी

हरिदास जी के समारोहों में श्रद्धापूर्वक भाग लेते हैं। वे स्वयं श्रीराम एवं श्री कृष्ण विषयक रचनाएँ लिखते हैं अतः वे भारतीय संस्कृति के मर्म के ज्ञाता और हिन्दी के रचनाकार हैं। उन्होंने इस ग्रंथ का सम्पादन तो किया ही है, हिन्दी-पाठकों को दृष्टि में रखते हुए, कठिन शब्दों के अर्थ भी पाद-टिप्पणी में दिये हैं, उपयोगी भूमिका भी लिखी है। वे हमारे साधुवाद के पात्र हैं।

अन्त में, यह सुन्दर सम्पादित कृति मैं अपने सुधी पाठकों को सहर्ष समर्पित करता हूँ।

डॉ० शरण बिहारी गोस्वामी
कार्यकारी उपाध्यक्ष

भूमिका

भारत की समन्वयात्मक संस्कृति के आधार स्तम्भ हिन्दी कवियों में अमीर खुसरो, मलिक मुहम्मद जायसी, रहीम, रसखान के समान ही नज़ीर अकबराबादी का नाम भी उल्लेखनीय है। कविवर नज़ीर अकबराबादी हिन्दुस्तानी गंगा—जमुनी संस्कृति के सुन्दर प्रतीक हैं। इनकी कविता में भावनात्मक एकता, भारतीय सभ्यता और संस्कृति, जन–जीवन की चेतना तथा सच्चे मानव धर्म की भावना पूर्णतः समाई हुई है।

युगीन परिस्थितियाँ

नज़ीर अकबराबादी का कार्यकाल अठारवीं शताब्दी के मध्य से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य का है। यह काल उत्तर भारत के लिए विशेष उल्लेखनीय है। इस काल की परिस्थितियों का अध्ययन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है—

राजनैतिक परिस्थितियाँ

नज़ीर अकबराबादी का युग राजनैतिक दृष्टि से भारतीय व्यवस्था के पतन का युग था। मुगल सम्राट औरंगजेब के उनंचास वर्ष के लम्बे शासनकाल (सन् १६५८ ई०—१७०७ ई०) के अनन्तर मुगल साम्राज्य का सूर्य शनैः शनैः अस्ताचल की ओर अग्रसर होने लगा। औरंगजेब की घोर दमन नीति और शासन के अत्यधिक केन्द्रीयकरण के विरोध स्वरूप उसके दबाव में रहने वाली समस्त शक्तियों ने स्वातंत्र्य की साँस लेकर विस्फोटित होना प्रारम्भ किया। दक्षिण के युद्धों में फंसे रहने के कारण उसके शासनकाल की समाप्ति से पूर्व ही देश में अव्यवस्था फैल जाने से भावी विघटन के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगे, औरंगजेब स्वयं भी इस स्थिति को भाँप गया था "औरंगजेब बड़े दुख से सिर हिलाकर कहा करता था कि उसकी मृत्यु के बाद कैसा प्रलय मचेगा।"[1] औरंगजेब की मृत्यु के बाद का लम्बा काल भारतीय इतिहास में संक्रान्ति काल ही है। औरंगजेब के अनन्तर राज्य—प्राप्ति के लिए छिड़े युद्ध में सफल होकर राजकुमार मुअज्जम, बहादुरशाह के नाम से राजगद्दी पर बैठा और उसने सन् १७०७ से सन् १७१२ तक राज्य किया। वह नम्र, शान्त स्वभाव और क्षमाशील सम्राट था उसे 'शाहे बेखबर' या 'मस्त राजा' कहा जाता था। औरंगजेब की कठोरता वादी नीति के विरुद्ध उसने उदारता और समझौतावादी नीतियों का सहारा लिया। औरंगजेब द्वारा कैद किए गए विद्रोहियों को उसने इस आशा से रिहा कर दिया कि यह सभी मेरे कृतज्ञ होकर साथी बनेंगे। लेकिन रिहा होकर वे लोग विद्रोही, विरोधी बनकर शासन-शक्ति को शिथिल बनाने में लग गए।

---

१. मुगल साम्राज्य का पतन—डा० मथुरालाल, पृष्ठ-१६४

मराठों के प्रति मित्रता का वर्ताव करने के कारण मराठों ने भी अपनी शक्ति का प्रवर्द्धन कर सम्पूर्ण भारत पर अपना रौब-दौब कायम कर लिया। सिक्खों ने स्वयं को शक्ति—सम्पन्न कर दिल्ली के उत्तर में लूटपाट प्रारम्भ कर दी। राजपूतों की शक्ति भी मुगल साम्राज्य की सहायक न रहकर अलग-अलग स्वातंत्र्य की ओर बढ़ने लगी बहादुरशाह द्वारा राजपूतों की स्वतंत्र सत्ता की स्वीकृति मुगल साम्राज्य के शिविर को गिराने में सहायक बनी। बहादुरशाह बूढ़ा और निकम्मा शासक था। उसके चार वर्ष के शासन ने मुगल साम्राज्य की गहरी जमी हुई नीवों को हिला दिया।

बहादुरशाह की मृत्यु के अनन्तर उसके पुत्रों में राजगद्दी के लिए युद्ध छिड़ गया। युद्ध में सफल होकर जहाँदारशाह गद्दी पर बैठा लेकिन एक साल में ही उसे मौत के घाट उतार कर फर्रुखसियर को शासक बनाया गया। फर्रुखसियर वहुत कायर शासक था। इसके समय में राजपूतों, जाटों और सिक्खों के विद्रोह हुए। फर्रुखसियर स्वयं कुचक्रों का रचयिता बना। उसके संकेत पर योग्य सरदार जुल्फिकार खाँ का वध किया गया। मियाँ नज़ीर ने इसके क्रूर वध के सम्बन्ध में लिखा है—

कहता था कोई घोड़ा है नामदार खाँ का
ये पालकी यह हाथी है जुल्फिकार खाँ का
आया कदम अजल के जब तीस मार खाँ का
ख़र भी कहीं न देख़ा फिर शह सवार खाँ का
झप्पान मेग, डंबर दर पर हुआ, तो फिर क्या!

दरबार में ईरानी, तूरानी और हिन्दुस्तानी मुसलमानों तथा सैयद भाइयों की भयंकर गिरोह बंदी के कारण शासन चलाना असंभव हो गया। अन्त में फर्रुखसियर को कत्ल करके सैयद बन्धुओं ने मुहम्मद शाह को दिल्ली का शासक बनाया उसने अट्ठाईस वर्ष (सन् १७१९—१७४८ ई०) कार्य किया। वह बड़ा विलासप्रिय शासक था और सदा रंगरेलियों में ही रहता था। इसलिए इतिहास में उसे मुहम्मद शाह "रंगीला" कहा जाता है। उसके शासन काल में कई प्रान्त मुगल साम्राज्य की आधीनता से स्वतंत्र हो गए और मुगल—साम्राज्य टुकड़े-टुकड़े होने लगा।

इन्हीं विषम परिस्थितियों में नादिरशाह ने सन् १७३९ ई० में भारत पर आक्रमण किया। वह अपने साथ असीम धन राशि (पन्द्रह करोड़ रुपया) कोहेनूर हीरा, शाहजहाँ का तख्त ताऊस तथा अन्य अमूल्य सामान ले गया। सिंध, काबुल और पंजाब का पश्चिमी भाग उसने अपने शासन में सम्मलित कर लिया, मुगल शासन शक्तिहीन हो गया। अली वर्दी खाँ बंगाल में, सआदत खाँ अवध में और निज़ामुलमुल्क दक्षिण में स्वतंत्र शासक बन बैठे। सिक्खों जाटों और रुहेलों ने अपनी शक्ति बढ़ा ली। इससे मुगल साम्राज्य केवल देहली के समीपवर्ती थोड़े प्रदेश में ही रह गया। मुहम्मद शाह के शासनकाल में ही नज़ीर अकबरावादी का जन्म हुआ। नादिरशाह के पहले आक्रमण के समय वे लगभग चार वर्ष के थे। नादिरशाह के सैनिकों द्वारा ही मुहम्मदशाह के मीर मुंशी कवि घनानन्द का वध किया गया था।

सन् १७४८ ई० में मुहम्मदशाह की मृत्यु के अनन्तर वैश्या ऊधमबाई से उत्पन्न उसका बेटा अहमदशाह (सन् १७४८—१७५४ ई०) गद्दी पर बैठा। अहमदशाह ने अन्त.पुर सुन्दरियों से सजा लिया। उसने अपने तीन साल के पुत्र को पंजाब का सूबेदार और एक साल के पुत्र को नायब सूबेदार बनाया। पंजाब की अस्थिरता और दुर्बलता को देखकर अहमदशाह अब्दाली ने आक्रमण किया और लूट-खसोट कर वापिस चला गया।

बाद में अहमदशाह को हटाकर आलमगीर सानी को गद्दी पर बिठाया गया। मुगल सल्तनत की दुर्बलता को देखकर अफगानों के स्वतन्त्र शासक अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर लगातार दस आक्रमण किए। उसका पहला आक्रमण १७४८ ई० में और अन्तिम सन् १७६७ ई० में हुआ। इसके आक्रमणों ने मुगल सल्तनत की कमजोर कमर ही तोड़ दी। लूट-पाट तोड़-फोड़ की घटनाओं से दिल्ली की दशा दयनीय हो गई।

बाद में शाह आलम, अकबर शाह सानी (१८०६–३७) और बहादुरशाह (१८३७–५१) यद्यपि बादशाह कहलाते थे लेकिन इनका शासन-क्षेत्र केवल लाल किले तक ही सीमित था। अनेक सामन्त सरदारों के हाथ की कठपुतली बने यह केवल नाम के ही बादशाह थे। वे पूर्वजों के नाम पर आँसू बहाने और कुछ वफादार और चाटुकार लोगों द्वारा सिर झुकाने की वस्तु थे। नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के भयानक आक्रमणों ने देश को अराजकता, लूट-पाट, भय और असुरक्षा का भयानक जंगल बना दिया। आन्तरिक शक्तियों के रूप में उभरे हुए जाट, सिक्ख, मराठे, राहिल्लों ने भी देश को लूटमार कर पूर्णतः अशान्ति और असुरक्षा के गर्त में ढकेल दिया।

धन दोलत की प्राप्ति हेतु भयावह आक्रमण और नृशंस नरसंहार, राज्य प्राप्ति हेतु भाई द्वारा भाइयों का वध और मुगल साम्राज्य के कारुणिक पतन को नज़ीर अकबराबादी ने अपनी आँखों से देखा था। इन्हीं से द्रवित होकर उनकी वाणी करुण स्वर में पुकार उठी—

होती हैं ज़र के वास्ते हरजा चढ़ाइयाँ।
कटते हैं हाथ पाँव गले और कलाइयाँ।
बन्दूकें और हैं कहीं तोपें लगाइयाँ।
कुल जर की हो रही हैं जहाँ में लड़ाइयाँ।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए जर।
हर इक यही पुकारे है दिन रात हाय! जर॥

कविवर नज़ीर अकबराबादी ब्रज क्षेत्र के आगरा नगर में निवास कर रहे थे। आगरा सिकन्दर लोदी के शासन-काल (सन् १५०५ ई०) से ही भारतवर्ष की राजधानी रहा। हुमायूँ का राज्याभिषेक आगरा में हुआ था। शेरशाह द्वारा आगरा छीन लिये जाने पर पुनः सन् १५५५ ई० में हुमायूँ ने उसे विजय किया। अकबर ने १५५७ ई० में आगरा को अपना केन्द्रीय प्रान्त बनाया। यमुना-तट पर एक नये नगर की नींव डाली जिसका नाम शाहजहाँ ने अकबराबाद रखा। जहाँगीर की राजधानी आगरा में थी। शाहजहाँ ने स्वशासन का शुभारम्भ आगरा से किया बाद में सन् १६३९ ई० में दिल्ली को शाहजहाँबाद का नाम देकर स्वयं को स्थानान्तरित कर लिया लेकिन उसका मन मस्तिष्क आगरे में ही रमा रहा। ताजमहल इसका पक्का प्रमाण है आखिर में उसका देहान्त भी आगरा में ही

हुआ । औरंगजेब के शासनकाल तक आगरा ही मुगल शासन की राजधानी रही लेकिन मुहम्मदशाह के बाद आगरा मुगल शासकों से छिन गया और अनेक परिवर्तनों के अनन्तर सन् १७६१ ई० में आगरा भरतपुर के जाट राजा सूरजमल के हाथ आया । दस वर्ष तक जाटों का राज्य रहा, फिर सन् १७८५ से सन् १८०३ तक मरहटों का अधिकार रहा । बीच में नज़फ खाँ रुहेले ने आगरा ले लिया था । सन् १८०३ में लार्ड लेक ने उसे जीता । सन् १८३० ई० तक जिसमें आजकल पाकिस्तान है उस भाग को छोड़कर समस्त भारतवर्ष अंग्रेजों के हाथों में चला गया । तात्कालिक लूट खसोट अंधाधुंधी के बाद नये राज्य में जनता को सुरक्षा और निश्चिंतता सी प्रतीत हुई और वह किसी को अखरा नहीं । हमारे ही धन से, हमारी ही सेना से, हमारे ही हाथों हजारों कोस से आए हुए मुट्ठी भर अंग्रेजों ने हमें हराकर गुलाम बना लिया और अंग्रेजी राज्य की नींव को सुदृढ़ बनाने में हमारे ही लोग सहायक हुए । अंग्रेज शासक भारत में निवास कर शासन नहीं करते बल्कि थोड़े दिन यहाँ शासन कर लूट खसोट करके धन इंग्लैंड लेकर चले जाते थे । जैसे मुसलमान शासक यहाँ बस कर यहाँ के निवासी बन गए थे और अपनी शक्ति और युक्ति से भारत को धनधान्य सम्पन्न बना चुके थे वैसा अंग्रेजों ने कभी नहीं किया । अंग्रेजी राज्य सचमुच पर-राज्य था । भारतवासियों को पहली बार एक सुदूर स्थित नई जाति का दासत्व स्वीकार करना पड़ा ।

सामाजिक परिस्थितियाँ

उपर्युक्त समस्त घटनाओं का प्रभाव जनता के सामाजिक जीवन पर पड़ना स्वाभाविक था । "यथा राजा तथा प्रजा" । शासन सत्ता की भाँति ही समाज की दशा भी अस्थिर, भयावह और डाँवाडोल हो गई थी । सर्वत्र "जिसकी लाठी उसकी भैंस" का वातावरण था । चारों ओर लूटमार, आपाधापी, अव्यवस्था, अराजकता फैली हुई थी । विलासता और शोषण के पाटों में पिसती हुई साधारण जनता त्राहि-त्राहि पुकार रही थी । स्त्रियों की दशा दयनीय थी । कुलीन वधुओं से वैश्याओं का आदर अधिक हो रहा था । राजदरबारों में वैश्याओं का मान-सम्मान था । ऊधमबाई मुहम्मद शाह "रंगीला" के दरबार की सम्मानित वैश्या थी । मुहम्मदशाह की मृत्यु के अनन्तर ऊधमबाई का पुत्र अहमदशाह राजगद्दी पर शोभित हुआ था ।[२] घनानन्द की प्रेमिका सुजान भी इसी के दरबार में थी । मुस्लिम, हिन्दू सभी शासक विलासता और कामुकता के कीड़े बने हुए थे, मुगल शासकों के अनुरूप ही राजाओं नवाबों और अमीरों ने भी स्वयं को ढाल रखा था ।

जयपुर का सवाई प्रतापसिंह स्त्रियों की भाँति वस्त्र पहनकर तथा पैरों में घुंघरू बाँध कर अन्तःपुर में नाचा करता था ।[३] जहाँदारशाह हाथ में दर्पण और कंघा लेकर हर समय सुन्दरियों के केश सँवारा करता था । लालकुँवरि उसकी चहेती थी उसके कहने पर उसने तबलची, सारंगी वादक, कुंजड़ों आदि को उच्च पद प्रदान कर दिए थे । ये लोग शराब में चूर होकर बादशाह को भी लात मारते थे ।[४] यह काल वैश्याओं और हिजड़ों का काल

---

[२] बाद में वैश्या अनूपबाई के पुत्र आलमगीर द्वितीय और लाल कुँवर के पुत्र शाह आलम ने भी राजगद्दी की शोभा बढ़ाई थी ।

[३] मुगल साम्राज्य का पतन—सर यदुनाथ सरकार (भाग-४), पृ० २०४—२०५

[४] मुगल साम्राज्य का पतन—डा० मथुरालाल शर्मा, पृ० २०३

कहा जा सकता है। वैश्याओं से सम्बन्ध रखना बड़प्पन का चिन्ह माना जाता था। कवि घनानन्द का सुजान से और बोधा का सुभान नामक वैश्या से सम्बन्ध था। नज़ीर अकबराबादी का भी "मोती" नामक वैश्या से सम्बन्ध बताया जाता है।

शोषण और अत्याचारों का बोलबाला था। सामन्तों का शोषक वर्ग श्रमिक, कृषक आदि साधारण वर्ग के व्यक्तियों को पीसे डालता था। हर समय साधारण जनता को निर्दयता और कठोरता का सामना करना पड़ता था। श्रमिक और कृषक निस्सहाय थे उनकी सुनने वाला कोई नहीं था।

नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के अनेक आक्रमणों के समय हिन्दू मुसलमान सबके ही समान रूप से पीड़ित होकर समीप आने और मुस्लिम शासकों की उदारतावादी दृष्टि के कारण आपसी कटुता और अन्तर की भावना प्राय: समाप्त हो चली थी। मियाँ नज़ीर, लाला विलासराय के पुत्रों को पढ़ाते थे। अपने शिष्य की बारात में जाकर उन्होंने "न्योतनी" के समय "समधिन" नामक पद्य पढ़ी थी। मुगल बादशाह प्रसन्नतापूर्वक हिन्दू त्योहार मनाते और हिन्दू रीति रिवाजों में सम्मिलत होते थे। वैसे लुटे पिटे राजा और प्रजा दोनों ही दरिद्रता की नाव में थे। सर्वत्र निर्धनता और निराशा का सन्नाटा छाया हुआ था।

धार्मिक परिस्थितियाँ

नज़ीर अकबराबादी के काल में हिन्दू, इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी, ईसाई आदि विभिन्न धर्मावलम्बी भारत में निवास कर रहे थे। इनमें हिन्दू धर्मावलम्बी बहुसंख्यक थे। इस काल का हिन्दू धर्म मध्मकालीन भक्ति-आन्दोलन का क्षीण रूप था। वह अनेक वैष्णव, शैव और निर्गुण सम्प्रदायों में बंटा हुआ था।

हिन्दुओं में मुख्यतया भक्तिमार्ग का अनुसरण था, भक्ति मार्ग का अनुसरण करने वाले व्यक्ति विभिन्न सम्प्रदाय में विभक्त थे। इनमें प्रमुख सम्प्रदाय वैष्णव सम्प्रदाय था। वैष्णव सम्प्रदाय भी रामानुज, चैतन्य, वल्लभ तथा रामानन्द के समर्थकों की परम्परा में प्रचलित था। यह सभी सम्प्रदाय भक्ति मार्ग पर बल दे रहे थे। ये सभी ईश्वर प्रेम और भक्ति में विश्वास रखते थे।

इस काल में पौराणिक देवी देवताओं की मान्यता अधिक बढ़ी। कृष्णोपासना का प्रचलन अधिक हुआ। भजन—कीर्तन, रासलीला आदि का प्रचार हुआ नज़ीर अकबराबादी ने भी कृष्ण चरित के साथ रासलीला का वर्णन किया है। शैव सम्प्रदाय के अनेक साधु विविध प्रकार की शारीरिक यातनाओं से अपनी आध्यात्मिक प्रतुष्टि तथा श्रद्धालु जनता में आध्यात्मिक भय उत्पन्न कर अपना स्वार्थ साधन करते थे। अघोरी, ऊर्ध्ववासी, आकाश-मुखी, कापालिक, अवधूत, कनफटे योगी और सन्यासी अपने-अपने सम्प्रदाय चला रहे थे। मियाँ नज़ीर ने भी शिव भक्ति सम्बन्धी 'महादेव जी का विवाह' शीर्षक कविता लिखी थी।

कृष्ण के साथ ही उनके ज्येष्ठ भ्राता बलदेव की भी पूजा प्रचलित थी। "बलदेव जी के मेला" नामक कविता में यही भाव प्रदर्शित किया गया है। वेद विरोधी धार्मिक सम्प्रदायों में भैरव सम्प्रदाय का प्रभाव था। आगरा में भैरवों का प्रसिद्ध मंदिर तथा उसी के नाम पर भैरव का नाला नामक मुहल्ला प्रसिद्ध है। नज़ीर ने भी "तारीफ भैरों की" नामक कविता की रचना की थी। आगरे के माईथान मुहल्ले में ही गुरुद्वारा है। गुरुनानक देव के सम्बन्ध में कविता भी नज़ीर अकबराबादी ने की है।

निर्गुण संतों की साधना का प्रभाव साधारण समाज पर अब भी था। कबीर, नानक, रैदास, दादू जैसे संतों को सभी सम्मान प्रदान करते रहे। मलूकदास, तुलसी साहब, शिवदयाल साहब जैसे संत समाज का मार्गदर्शन कर रहे थे।

मुसलमानों में सुन्नी, शिया, बौहरा तथा खोजाओं जैसे विभिन्न वर्गों के अतिरिक्त एक मुख्य सम्प्रदाय सूफियों का था। इस्लाम में व्यक्ति और ईश्वर का सम्बन्ध एक गुलाम और मालिक के सम्बन्धों के समान माना गया है। इन सूफियों ने व्यक्ति और ईश्वर के सम्बन्धों को एक प्रेमिका और प्रेमी के रूप में व्यक्त किया। मुगल काल में सूफी संतों ने अपने विचारों से समाज का मार्ग प्रदर्शन किया। सूफियों के प्रमुख सम्प्रदाय चिश्ती सुहारावर्दी, क़ादरी और नक्शबंदी थे। मियाँ नज़ीर ने स्वयं को अनेक बार कलन्दर कहा है अधिकांश सूफी-संत परिवारी थे और विवाह करते थे। संसार में रहते हुए सत्यकर्म करना उनका उद्देश्य था। सूफी सम्प्रदाय हिन्दू -मुसलमान दोनों में पर्याप्त लोक प्रिय था। उसने हिन्दू—मुसलमानों को निकट लाने में योग दिया। सूफी दर्शन ने शासक और शासित दोनों को एक ही स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया।। इस काल की मुख्य विशेषता हिन्दू-मुसलमानों में धार्मिक सहिष्णुता की भावना का उत्पन्न होना था। सूफी संतों के मजारों पर उर्स हुआ करते थे। मियाँ नज़ीर ने शेख सलीम चिश्ती के उर्स का सुन्दर वर्णन किया है। इस युग के धार्मिक सम्प्रदायों, प्रवर्तकों और प्रचारकों ने हिन्दू और मुसलमानों को निकट लाने में सहयोग दिया। औरंगजेब की मृत्यु के अनन्तर मराठों, राजपूतों, जाटों और सिखों के राजनैतिक उत्थान के कारण हिन्दू-मुसलमानों में शक्ति सन्तुलन स्थापित हो गया और भारत में धार्मिक असहिष्णुता के लिए कोई स्थान न रहा। १८ वीं शताब्दी में भी हिन्दू-मुसलमानों के सम्बन्ध निकटता के थे। सन् १८५७ में हिन्दू और मुसलमान दोनों ने मिलकर विदेशी सत्ता की दासता को समाप्त करने का अथक प्रयत्न किया था।

मुगलकाल में जन साधारण का धार्मिक जीवन सरल था। अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, जादू-टोना में श्रद्धा रखते हुए भी व्यक्ति अधिकांशतः सदाचारी थे।

आर्थिक परिस्थितियाँ

नज़ीर अकबराबादी के काल में उत्तर भारत की आर्थिक दशा अत्यन्त जर्जरित हो गई थी। बाबर से लेकर औरंगजेब तक एकत्र की गई अपार सम्पत्ति लुटेरे नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के हाथ लगी। अहमदशाह अब्दाली ने दस बार आक्रमण किए। अब्दाली के सन् १७५६ ई० के आक्रमण में की गई लूटमार तो नादिरशाह से भी बहुत बढ़कर थी। वह यहाँ से लूटकर अपार सम्पत्ति अपने साथ ले गया। समसामयिक इतिहासकारों ने इसका मूल्य बारह करोड़ आँका है—यदुनाथ सरकार ने लूट के माल को लादने के लिए प्रयुक्त पशुओं की संख्या देते हुए लिखा है - दिल्ली से आगरा तक लूटमार में उसे असंख्य धन दौलत प्राप्त हुई। स्वयं अब्दाली का सामान अट्ठाइस हजार ऊँटों, हाथियों, खच्चरों बैलों और गाड़ियों पर लदा था। उसके साथ जाने वाली मुहम्मद शाह की विधवाओं की सम्पत्ति दो सौ ऊँटों पर लदी थी और यह सब माल भी उसी का था। उसके पीछे अस्सी हज़ार सवार और पैदल जा रहे थे और इनमें से प्रत्येक अपने साथ लूट का माल ले जा रहा था। उसके सवार पैदल चल

रहे थे क्योंकि घोड़ों पर लूट का माल जा रहा था। अब्दाली अपनी तोपों को भी परिवहन के अभाव में यहीं छोड़ गया था।[५]

जाटों, मराठों और सिक्खों ने भी बहुत लूटपाट की। मराठों की लूट के सम्बन्ध में "भाऊ की लूट" की लोकोक्ति ही जनता में प्रचलित हो गई। खालसा की लूट के सम्बन्ध में तो स्वयं नज़ीर अकबराबादी ने ही कहा है—

जो जो नज़ील कुट्टन, ज़र छोड़ कर मरेगा।
या खाएगा जमाई, या खालसा लगेगा॥

इस सभी लूटमार के कारण शासन और समाज दोनों ही आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त दुर्बल हो गये। मुगल शासन के अधिकारों के सीमित होने और धन-दौलत के घटने का यह परिणाम हुआ कि जब आलमगीर द्वितीय गद्दी पर बैठा तो कहा जाता है ईद की नमाज़ को जाने के लिए उसके पास वाहन न था जवाहरात से सुसज्जित सोने का बना हुआ "तख्त ताऊस" लुट चुका था। उसके स्थान पर केवल रंगीन चित्रों वाला लकड़ी का तख्त था। जिस देश के राजा की यह दशा हो, उसकी प्रजा और उसकी समाज की आर्थिक कमजोर दशा की पूर्णतः सम्भावना की जा सकती है।

प्रकृति के प्रकोप भी इसी समय भयानक रूप धारण कर उठे। कई वर्ष तक वर्षा नहीं हुई, फसलें बर्बाद हो गयीं। अव्यवस्था और आर्थिक दुर्दशा का प्रकोप बढ़ता ही गया। राज्य के पास अपने नौकरों और सैनिकों का वेतन चुकाने के लिए भी पैसा नहीं था। सब भूखों मर रहे थे।[६] ऋण न चुका पाने के कारण ऋणदाताओं का बादशाह पर से विश्वास हट गया था।

मराठा प्रशासन में अयोग्यता और रिश्वतखोरी फैलने के कारण आर्थिक शोषण अधिक बढ़ गया। उन्होंने अपने अधीन क्षेत्रों का भूमि कर बढ़ा दिया। कारीगरों और कलावंतों का भी अधिक शोषण होने लगा। अराजकता, युद्ध दुर्भिक्ष, कुशासन और कुप्रबन्ध के कारण उद्योग धन्धे नष्ट हो गये।

१६ सितम्बर सन् १८०३ ई० को शाह आलम दिल्ली में अंग्रेजों का शासन स्वीकार कर उनकी रियाया बन गया और इसके साथ ही सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र अंग्रेजों के शासन में चला गया। देश के कच्चे माल के इंग्लैंड के कारखानों को पहुँचने के कारण यहाँ के कुटीर उद्योग धीरे-धीरे नष्ट होने लगे। बेकार कलावंतों कारीगरों और जुलाहों ने जब कृषि कार्य अपनाया तो इनकी संख्या अधिक हो जाने के कारण वहाँ भी बेकारी की समस्या उत्पन्न हो गयी। सबके कारोबार नष्ट हो गये। नज़ीर अकबराबादी ने कहा है—

मारे हैं हाथ हाथ पै सब याँ के दस्तकार।
और जितने पेशेवर हैं सो रोते हैं ज़ार-ज़ार।
कुछ एक दो के काम का रोना नहीं है यार।
छत्तीस पेशे वालों के हैं कारोबार बन्द॥

---

५. मुगल साम्राज्य का पतन (भाग–२) पृष्ठ–८६
६. मुगल साम्राज्य का पतन—यदुनाथ सरकार भाग–३ पृष्ठ–१३२

भिखारियों को भीख मिलना भी कठिन हो गया। नज़ीर अकबराबादी ने इसी से प्रभावित होकर कहा—

इस शहर में फकीर भिखारी जो हैं तबाह।
जिस घर में जा सवाल वह करते हैं ख्वाम ख्वाह।
"भूखे हैं" कुछ भेजाइयो बाबा खुदा की राह"।
वाँसे सदा यह आती है "फिर माँगो" जब तो आह।
करते हैं होठ अपने वह शर्मसार बन्द॥

सर्वत्र बेरोजगारी, दरिद्रता और दीनता का दौर-दौरा हो गया। आदमी को खाना जुटाना कठिन था। इन्हीं परेशानियों के मार्मिक वर्णन कवि नज़ीर ने अपनी कोड़ी मुफ्लिसी, पेट, रोटियाँ, ज़र, आटे दाल का भाव आदि पद्यों में किए हैं। दीन दरिद्र की दशा का वर्णन करते हुए वे कहते हैं—

मुफ्लिस की कुछ नज़र नहीं रहती है आन पर।
देता है अपनी जान वह इक एक नान पर॥
हर आन टूट पड़ता है रोटी के ख्वान पर।
जिस तरह कुत्ते लड़ते हैं इक इस्तख़्वान पर॥
वैसा ही मुफ्लिसों को लड़ाती है मुफ्लिसी॥

भुखमरी में रोटी का महत्व अधिक बढ़ गया।

पूछा किसी ने एक किसी कामिल फकीर से।
वह महरोमाह हक़ ने बनाए हैं किसलिए।
वह सुन के बोला "बाबा खुदा तुझको खैर दे"।
हम तो न चाँद समझे न सूरज हैं जानते
बाबा हमें तो सब नज़र आती हैं रोटियाँ।

नज़ीर का काव्य तात्कालिक समाज का दर्पण है उसमें तात्कालिक समाज के समस्त वास्तविक चित्र स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं। नज़ीर के सामने ही अनेक बार लुट जाने के कारण आगरे का सम्पूर्ण वैभव समाप्त हो चुका था।

अब आगरे में जितने भी हैं सब लोग हैं तबाह।
आता नज़र किसी का नहीं एकदम निबाह॥

आगरा का किला और शहर सभी तोड़े-फोड़े जा रहे थे। जो आगरा कभी "चीन के दामाद" के समान लगता था आज उसमें कोई अपनी बेटी ब्याहने को भी तैयार न था।

तोड़े है कोई किले को कोई तोड़े शहर को,
अब किससे अपनी माँगे भला दाद आगरा।
अब तो ज़रा सा गाँव है बेटी न दे इसे,
लगता था वर्ना चीन का दामाद आगरा।

अतः यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि नज़ीर अकबराबादी के काल की सम्पूर्ण शताब्दी आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त जर्जरित और खोखली ही थी।

जीवन परिचय

माता-पिता

कविवर नज़ीर अकबराबादी ने अपना पूर्ण जीवन परिचय कहीं नहीं लिखा। यत्र-तत्र दिए गए संकेत-सूत्र ही परिचय के सहारे बने हैं। नज़ीर अकबराबादी और उनके काव्य के सम्बन्ध में प्रथम शोधकर्ता प्रोफेसर अब्दुल गफूर शहवाज़ के समय तक मियाँ नज़ीर अकबराबादी की बेटी इमामी बेगम की बेटी विलायती बेगम जीवित थीं। उन्होंने "जिन्दगानी बेनज़ीर" के लिए बहुत सी आवश्यक सामग्री प्रदान की।[7] उनके विवरणों को अधिक प्रामाणिक माना गया।

मियाँ नज़ीर का असली नामवली मुहम्मद और उपनाम "नज़ीर" था। अपने उपनाम "नज़ीर" में निवास स्थान सम्बन्धी "अकबराबादी" शब्द जोड़कर वे "नज़ीर अकबराबादी" कहलाए। उनके पिता का नाम मुहम्मद फारुक था। पिता पटना के किसी रईस के यहाँ काम करते थे। उनका ख़ानदानी पेशा सिपहगीरी था। नज़ीर की ननिहाल आगरा में थी। उनकी माँ आगरा के किलेदार नवाब सुलतान खाँ की बेटी थी मियाँ नज़ीर के जन्म के सम्बन्ध में प्रोफेसर शहवाज ने एक रोचक घटना का विवरण दिया है—

कहा जाता है कि अपनी बारह संतानों के अकाल काल कवलित हो जाने के कारण नज़ीर के माता पिता संतान के अभाव में दुखी रहते थे। एक बार एक फकीर का आगमन हुआ सुनकर मुहम्मद फारुक उनके पास गए और फकीर के दिए हुए पाँच फूल साथ लेकर घर आए। फकीर ने आदेश दिया था कि फूलों को सूँघकर नदी में डाल देना और जो कैफियत हो मुझे आकर बताना। विश्वास और आस्था के साथ मुहम्मद फारुक ने यमुना तट पर जाकर एक-एक करके फूलों को यमुना में फेंका उनमें से एक फूल पानी पर तैरता रहा, शेष सब पानी में डूब गए। यह बात उन्होंने फकीर को सुनाई। फकीर ने प्रसन्न होकर कहा "जा खुश हो तेरा एक लड़का जिन्दा रहेगा और तेरे नाम को रोशन करेगा। उनकी पत्नी गर्भवती हुई और समय से बच्चे का जन्म हुआ कई सन्तानों की मृत्यु के अनन्तर नज़ीर का जन्म होने के कारण माता, पिता और नानी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। समयानुसार उनके सभी संस्कार किए गए। बुरी नज़र से बचाने के लिए। नाक, कान छेदकर उनका रूप लड़कियों जैसा बना दिया गया।[8]

मियाँ नज़ीर ने आगरा में ही अरबी फारसी में शिक्षा प्राप्त की और उन्होंने फारसी और उर्दू पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया। वे आठ भाषाएँ संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, पंजाबी, मारवाड़ी, पूर्वी और हिन्दी जानते थे। प्रोफेसर शहवाज ने इस सम्बन्ध में लिखा है :

---

७. जिन्दगानी बेनज़ीर अध्याय १,२,७,८, मौ० सै० अब्दुल ग़फूर शहवाज़- नवल किशोर प्रेस, लखनऊ सन्१९०० ई०

८. जिन्दगानी बेनज़ीर —पृष्ठ ९ मौ०सै० अब्दुल गफूर शहवाज़ नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ सन् १९०० ई०

"नज़ीर ने अपनी तवज्जो को मुख्तलिफ ज़बानों को हासिल करने में मसरूफ किया। वह थोड़े ही जमाने में पंजाबी खासी तरह बोलने लगे। ब्रजभाषा पर गोपियों की सी महारत हासिल की। पूर्वियों का लहजा सीख लिया। मारवाड़ियों की परिभाषाएँ याद कीं। मलिक मुहम्मद जायसी या तुलसी दास की जो ज़वान है उसमें कमाल पैदा किया। इस प्रकार वे कई भाषाओं के जानकार बन गए।

नज़ीर जिस समय केवल चार वर्ष के थे। तभी सन् १७३९ ई० में दिल्ली पर नादिरशाह का आक्रमण हुआ। तदनन्तर अहमदशाह अब्दाली के लगातार तीन आक्रमण (सन् १७४८, १७५१ और १७५६ ई०) हुए जिनसे दिल्ली की दुर्दशा हो गई। अकाली के तीसरे आक्रमण के समय नज़ीर की आयु २०-२२ वर्ष की थी। दिल्ली की उथल-पुथल से जन-साधारण का जीवन इतना कष्टमय हो गया था कि वहाँ अपना किसी प्रकार निर्वाह हो पाना सम्भव न देखकर नज़ीर अपनी माँ और नानी के साथ अपनी ननिहाल आगरे चले आए और आगरा में मिठाई के पुल के पास नूरी दरवाजे में मीर साहब का मकान किराये पर लेकर रहने लगे।

जन्म तिथि

मियाँ नज़ीर अकबराबादी की जन्मतिथि के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत हैं, लेकिन अधिकतर विद्वान् उनका जन्म सन् १७३५ ई० मानते हैं।

प्रो० शहवाज़ ने नज़ीर की मृत्यु के समय उनकी आयु ८९ वर्ष की मानी है।[९] और इसके आधार पर वे उनका जन्म सन् १७४० ई० मानते हैं। प्रो० एहतेशाम हुसैन[१०] तथा प्रो० एजाज़ हुसैन[११] भी इससे सहमत हैं। दीवान-ए-नजीर में फरहतुल्लाह बेग और कुल्लियाते नज़ीर में अब्दुलबारी आसी नज़ीर की जन्म तिथि ११४७ हिजरी तदनुसार सन् १७३५ ई० बताते हैं। पं० उदयशंकर शास्त्री[१२] और डा० गुरुमुख राम टण्डन नज़ीर का जन्म सन् १७३५ ई० मानते हैं।

सैयद जलालुद्दीन जाफरी नज़ीर का जन्म सन् १७३४ ई० में बताते हैं।[१३]

नज़ीर के जन्म काल के सम्बन्ध में कोई निश्चित प्रमाण प्राप्त न होते हुए भी अधिकतर विद्वानों ने नज़ीर का जन्म सन् १७३५ ई० ही माना है।

जन्म स्थान

मियाँ नज़ीर अकबराबादी के जन्म-स्थान के सम्बन्ध में भी विद्वानों के विभिन्न विचार हैं। प्रोफेसर शहवाज़ नज़ीर का जन्म स्थान दिल्ली बताते हैं। इनके अतिरिक्त मखमूर अकबराबादी, फरहतुल्लाह बेग, मौलाना

---

[९] जिन्दगानी बेनज़ीर अध्याय ८-९

[१०] उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन पृष्ठ १२४

[११] उर्दू साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ८०

[१२] नज़ीर काव्य संग्रह भूमिका पृष्ठ १३

[१३] इंतख़ावे कुल्लियाते नज़ीर अकबराबादी पृष्ठ २

अब्दुलवारी आसी, इन्तज़ाम उल्लाह् शहावी, मौलाना अशरफ़ हुसैन लखनवी आदि ने भी दिल्ली को ही नज़ीर का जन्म स्थान माना है ।

फरहतुल्लाह् बेग नज़ीर के सम्बन्ध में लिखते हैं—

नज़ीर दिल्ली में सन् १७३५ ई० अर्थात् ११४७ हिजरी में पैदा हुए, उनके वालिद मुहम्मद फारुक थे और वालिदा नवाब सुलतान खाँ किलेदार आगरा की बेटी थीं । मुहम्मद फारुक अज़ीमाबाद के किसी नवाब के यहाँ नौकर होकर चले गए और वहीं उनका इन्तकाल हुआ[१४] । पं० उदयशंकर शास्त्री नज़ीर का जन्म स्थान देहली ही बताते हैं—"नज़ीर का जन्म सन् १७३५ ई० में देहली में हुआ था ।" नज़ीर के पिता पटना के किसी रईस के यहाँ नौकर थे । खानदानी पेशा सिपहगरी था[१५] ।

मौलाना अब्दुलबारी आसी ने अपने "कुल्लियाते नज़ीर" में नज़ीर के जन्म स्थान के सम्बन्ध में इसी मान्यता पर बल दिया है—

नज़ीर शहर देहली में १७३५ ई० में पैदा हुए बड़े पुरआशोब ज़माने में होश सँभाला, अहमदशाह अब्दाली के तीन हमले १७४८ से लेकर १७६४ ई० तक हुए । इसलिए नज़ीर अपनी माँ और नानी के साथ २२-२३ साल की उम्र में तर्के वतन पर मजबूर हुए और आगरे में मिठाई के पुल के पास रहने लगे[१६] ।

नज़ीर के जन्म स्थान के सम्बन्ध में विचार करने वाले विद्वानों का दूसरा वर्ग आगरा को नज़ीर का जन्म स्थान मानने के पक्ष में है । शेफ्ता "गुलशने बेख़ार" में नज़ीर को आगरा का ही बताते हैं[१७] । उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् मैकश अकबराबादी उन्हें निश्चित रूप से आगरा का मानते है[१८] । इन विद्वानों के अतिरिक्त आगरा के एक लेखक ताजमहली ने नज़ीर का जन्म स्थान अज़ीमाबाद बताया है[१९] । आगरा के नज़ीर काव्य के विद्वानों में से डा० गुरुमुख राम टण्डन नज़ीर का जन्म आगरे में ही मानते थे । उनका कथन था कि नज़ीर की ननसाल आगरा में थी उनके पिता पहले रियासत अलवर में फिर अज़ीमावाद में नौकर हुए । उनकी शादी आगरा में हुई । नज़ीर अपनी ननसाल आगरा में ही पैदा हुए । यहीं नज़ीर ने होश सँभाला । यहीं शिक्षा प्राप्त की । अब्दाली के आक्रमणों के समय उनकी माँ अपनी ससुराल दिल्ली में थी उन्हें लेकर नज़ीर आगरा आए और मिठाई के पुल के पास नूरी दरवाजे में मीर साहब का मकान किराए पर लेकर रहने लगे ।

विभिन्न विद्वानों के मतों पर ध्यान देने से नज़ीर अकबराबादी का जन्म स्थान देहली मानना ही उपयुक्त प्रतीत होता है । प्रोफेसर शहबाज़ द्वारा प्रस्तुत की गई जानकारी का सम्बन्ध मियाँ नज़ीर की नवासी (धेवती) से होने के कारण अधिक प्रामाणिक है ।

---

[१४] दीवान-ए-नज़ीर-मिर्जा फरहतुल्लाह् बेग, पृष्ठ ४

[१५] "जब नज़ीर आगरे आए" लेख पं० उदयशंकर शास्त्री ४८ वाँ नज़ीर मेला स्मारिका, पृष्ठ ३

[१६] कुल्लियाते नज़ीर-मौलाना अब्दुलबारी आसी, पृ० ३

[१७] नज़ीर अकबराबादी-अली अहमद फात्मी, पृ० ५१

[१८] वही, पृष्ठ ५१

[१९] कुल्लियाते नज़ीर-अज़हर राही, पृष्ठ ४

नज़ीर का आगरे के प्रति प्रेम और आगरे के विद्वानों का नज़ीर के प्रति प्रेम ही आगरे को नज़ीर के जन्म स्थान का श्रेय दिलाकर महत्व प्रदान करने का प्रयत्न रहा है। नज़ीर देहली में जन्म लेकर आगरे में आकर बसे उन जैसे महामानव को प्राप्त कर आगरा धन्य हो गया।

नज़ीर अकबराबादी के काव्य में आगरा के वातावरण के विस्तृत वर्णनों तथा दिल्ली के सम्बन्ध में कुछ न होने के कारण कुछ विद्वान् उनका जन्म दिल्ली में स्वीकार करते हुए भी उनके ४-५ वर्ष की बाल्यावस्था से ही आगरा में आकर निवास करने की बात कहते हैं[20]।

कविवर आगरा के प्रेम में भाव-विभोर होकर स्वयं को सर्वथा सर्वभावेन आगरे का बताकर सुखी होते हैं—

आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है।
मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है।
मुफ्लिस कहो, फ़क़ीर कहो, आगरे का है।
शायर कहो, नज़ीर कहो, आगरे का है।।

शाहजहाँ ने बादशाह अकबर के नाम पर आगरा का नाम अकबराबाद रखा था। मियाँ नज़ीर शब्द अकबराबाद को अपने उपनाम में सम्मिलित कर पूर्णत: "अकबराबादी" बन गए।

विवाह तथा परिवार

आगरा में ही मियाँ नज़ीर का विवाह अहदी अब्दुल रहमान खाँ चुगताई की नवासी और मुहम्मद रहमान खाँ की बेटी तहव्वरुन्निसा बेगम के साथ हुआ जो ताजगंज मुहल्ले की मलिकों की गली में रहते थे। मियाँ नज़ीर भी बाद में नूरी दरवाजे वाला मकान छोड़कर ताजगंज में जा बसे। वहीं अपना मकान बनवा लिया। उनके दो संतानें एक पुत्र गुलज़ार अली "असीर" तथा एक पुत्री इमामी बेगम हुई। इमामी बेगम की बेटी विलायती बेगम से नज़ीर अकबराबादी के सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी प्राप्त करके ही प्रोफेसर शहबाज़ ने नज़ीर अकबराबादी के सम्बन्ध में लेखन कार्य किया था।

मियाँ नज़ीर के जीवन का बड़ा भाग खेलकूद में बीता। पच्चीसा, गंजफा, चौसर शतरंज के अतिरिक्त दिवाली पर जुआ भी खेला (नज़ीर तो है बना जुआरिया दिवाली का) बुलबुल, लाल, तीतर लड़ाए, कबूतर भी उड़ाए (अपने तो लड़कपन से हैं दमशाज़ कबूतर) पतंगबाज़ी की। कुश्ती लड़ी (कुश्ती में हमने कितनी मुद्दत बदन को तोड़ा) गिलहरी, रीछ और अजदहे का बच्चा पाला (हम बेचते हैं यारो ! लो अजदहे का बच्चा) तैराकी में दिलचस्पी ली (इस आगरे में क्या-क्या ऐ ! यार पैरते हैं) मेले-ठेले तीज त्योहार का आनन्द उठाया। शेख सलीम चिश्ती के उर्स के साथ ही बलदेव जी का मेला भी देखा। शब्बरात ईद, के साथ ही रक्षाबन्धन और होली भी मनाई।

जीवन यापन कने के लिए नज़ीर ने कुछ दिन मथुरा में लड़के पढ़ाने की नौकरी की। वहाँ मन नहीं लगा

---

[20] २०. गुलिस्ताने बे खिज़ाँ-कुतुबुद्दीन वातिन पृष्ठ २५७ यू० पी० उर्दू एकेडेमी ८३ ई०

तो आगरा आकर भाऊ किलेदार के उस्ताद बन गए ।। इसके बाद कुछ दिनों नवाब मुहम्मद अली खाँ के बच्चों को पढ़ाया, पर यहाँ भी अधिक दिन नहीं टिके । यहाँ से नौकरी छोड़कर आगरा के माईथान मुहल्ले में राजा विलासराय के बच्चों को सत्रह रूपये माहवार पर पढ़ाने लगे । एक समय का खाना भी वहीं खाते थे । ताजगंज से आने जाने के लिए घोड़ी प्रयोग करते थे ।

प्रोफेसर शहबाज़ ने मियाँ नज़ीर अकबराबादी के जीवन—परिचय के संबंध में पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की है—

उनका कथन है कि जब नज़ीर दिल्ली से आगरा आए, उस समय यहाँ उर्दू के प्रसिद्ध शायर मीर तकी मीर की धाक थी । यहाँ आकर नज़ीर ने भी मीर की तर्ज़ पर एक ग़ज़ल कही । उस ग़ज़ल की खबर मीर साहब के पास पहुंची । नज़ीर ने यही ग़ज़ल मीर साहब के सामने एक मुशायरे में पढ़ी । ग़ज़ल की प्रथम पंक्तियाँ इस प्रकार थीं—

नज़र पड़ा एक बुत परीवश निराली सजधज नई अदा का
जो उम्र देखी तो दस बरस की यह कहर आफत ग़ज़ब ख़ुदा का

जब नज़ीर ग़ज़ल समाप्त करके बैठने लगे तो मीर साहब ने उन्हें अपने पास बुलाकर शाबाशी दी ।[२१]

इस ग़ज़ल के बाद नज़ीर ने आगरा में एक शायर के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर ली ।

इस विवरण के सम्बन्ध में विद्वानों के विभिन्न मत हैं । इंतजाम उल्लाह शहाबी अपने नज़ीर नामा में इसको मीर साहब के दुबारा आगरा आने के समय की घटना बताते हैं उस समय मियाँ नज़ीर की आयु पैंतीस वर्ष के लगभग रही होगी ।

अली अहमद फातमी ने इस घटना का विरोध किया है ।[२२]

कविवर नज़ीर अपनी वाणी और कलम से थोड़े ही समय में हिन्दू मुसलमान सबके प्रिय बन गए । सभी वर्गों के स्त्री पुरुष उनसे कविता सुनाने का आग्रह किया करते थे । अनेक व्यक्ति उनके प्रशंसक थे । जाति से मुसलमान होते हुए भी उन्होंने हिन्दुओं के देवी-देवताओं, तीज त्यौहारों आदि पर अनेक कविताएँ लिखीं । आज हिन्दू भक्त अपने देवताओं के सामने उनकी कविताओं का प्रेम से पाठ करते हैं । ताजगंज के पास श्मशान घाट पर बने काल भैरव के मन्दिर में भक्त मियाँ नज़ीर द्वारा लिखित "स्तुति भैरोंजी" का नित्य पाठ करके अपने देवता को प्रसन्न करते हैं । धार्मिक भेदभाव कवि नज़ीर को छू तक नहीं गया था । वे हिन्दू मुसलमान सिख आदि में कोई भेदभाव नहीं रखते थे ।

कवि नज़ीर सरल स्वभाव के थे । जब वे घर से निकलते तो अक्सर लोग रास्ता रोककर खड़े हो जाते । घोड़ी ऐसी सध गई थी जहाँ लोगों ने सलाम किया वह खड़ी हो जाती । सब कहते मियाँ पहले कविता सुनावें तब आगे जाने देंगे । नज़ीर वहीं बैठकर कविता बनाते और घंटों सुनाते, फेरी लगाकर माल बेचने वाले उनसे

---

२१. ज़िन्दगानी बेनज़ीर, पृष्ठ ११२

२२. नज़ीर अकबराबादी— अली अहमद फातमी, पृष्ठ ६०

कविताएं लिखवा ले जाते और उन्हें गली कूँचों में गा–गाकर अपना माल बेचा करते। ककड़ी बेचने वाला पीछे पड़ा तो "आगरे की ककड़ी" नामक रचना की।

क्या खूब नर्मोनाज़ुक इस आगरे की ककड़ी।
और जिसमें ख़ास कर फिर इस्कंद की ककड़ी॥

भीख माँगने वाले जोगी ने निवेदन किया तो उन्होंने "कन्हैया का बालपन" कविता कही और वह कड़ा बजा बजाकर उसे गा गाकर भीख माँगने लगा—

क्या-क्या कहूँ मैं किश्न कन्हैया का बालपन।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन॥

एक बार ताजगंज से आते हुए कुछ बेड़नियों ने रोक लिया। कुछ सुनाने के लिए हठ कर रही थीं। मजबूर होकर उन दोनों से उनके नाम पूछे। एक ने कहा "जमुना" दूसरी ने कहा मुझे "गंगा" कहते हैं। मियाँ ने दुआ के लिए हाथ उठाए और कहने लगे—

या! रब मेरी दुआ को जल्दी कबूल कीजै।
जमना में लगा बल्ली गंगा के पार कीजै॥

माईथान जाते हुए किनारी बाजार पड़ता है। एक वैश्या ने मुस्कराते हुए कोठे पर से कहा—"मियाँ अपना कलाम सुना दें। याद करके गाया करेंगे। बहुत हठ कर रही थी। मियाँ नज़ीर कहने लगे—

"लिखें हम ऐश की तख्ती पै किस तरह ऐ! जाँ।
कलम ज़मी के ऊपर दवात कोठे पर॥

वह झेंप कर रह गई।

मियाँ नज़ीर दोपहर का खाना राय साहब के यहाँ खाते थे। एक रोज बेसनी रोटी भी खाने में थी। अचार के लिए जी चाहा। घर में बचा न था भोलाराम पंसारी का लड़का भी उनके पास पढ़ने आ बैठता था। उससे दुकान से अचार लाने के लिए कहा। दूकान पर ग्राहकों की भीड़ थी। भोलाराम ने जल्दी से मटकी से चंगुल भर अचार निकाल कर दोने में रखकर लड़के को दे दिया। मियां ने दोना खोलकर देखा तो मरा हुआ चूहा मसाले में लिपटा हुआ था। दोने को अलग रखवा दिया। शाम को राय साहब आए उनसे कहा भोला को भी बुलवा लें एक लतीफा है। वह आया तो एक नई रचना "चूहों का अचार" सुनाई। बहुत हँसी पड़ी।

दाऊजी (बलदेव) में "बलदेव जी का मेला, और बनारस में दुर्गा मन्दिर पर "दुर्गा जी के दर्शन" नामक पद्य पढ़ी थी।

अपने शिष्य लाला बिलासराय के पुत्र की बारात में गए। न्योतनी के समय मनोविनोद के वातावरण में "समधिन" नामक पद्य सुनाई सबने बहुत सराहना की।

सहृदय होने के कारण मियाँ नज़ीर किसी का दुःख दर्द नहीं देख सकते थे। कहते हैं एक बार वे अपना वेतन लेकर घर लौट रहे थे। रास्ते में किसी ने अपनी लड़की के विवाह के लिए इनसे धन की याचना की। इन्होंने

अपना पूरा वेतन उसे दे दिया। यही कारण था कि उनका आगरे में साधुओं जैसा स्वागत होता था। वे अपनी वाणी और कलम से हिन्दू मुसलमान दोनों के ही प्रिय बन गए थे।

मियाँ नज़ीर स्वाभिमानी और स्वतन्त्र प्रकृति के कवि थे। उन्होंने कभी किसी राजा, नवाब या रईस की प्रशंसा में एक पंक्ति भी नहीं लिखी। उन्होंने जो कुछ लिखा जनता के लिए लिखा। वे न तो लोभी थे और न उन्हें किसी की खुशामद करनी ही पसन्द थी। कहा जाता है—लखनऊ के नवाब सआदत अली खाँ कवि और कलाकारों का बहुत सम्मान करते थे। उन्हें नज़ीर की गरीबी का पता चला तो उन्हें अपने यहाँ बुलाने के लिए आदमी भेजे। भेंट स्वरूप कुछ धन भी भेजा। नज़ीर ने उस समय तो वे रुपए रख लिए और लखनऊ जाने का वायदा भी कर लिया। परन्तु उन्हें उन रुपयों से ऐसी ग्लानि हुई कि रात भर नींद नहीं आई। सुबह उठकर उन्होंने वे रुपये वापस कर दिये और कहा—बादशाह से मेरा सलाम कहना, मेरी तरफ से माफी माँगना, और अर्ज करना कि नज़ीर फकीर तो अपनी झोपड़ी में ही खुश है। शाही महलों में रहना उसकी तकदीर में नहीं।

प्रोफेसर शहबाज़ ने लिखा है कि इनके पिता मुहम्मद फारुक अजीमाबाद के किन्ही नवाब के यहाँ नौकर थे। उनके देहान्त के बाद उनका माल सामान लेने के लिए इनको बुलाया गया, लेकिन यह नहीं गए। उनको लिख दिया कि कृपया आप माल लेकर खैरात कर दीजिए।[२३]

व्रज क्षेत्र में इनकी कविता की बहुत धूम थी। इनकी प्रशंसा से प्रभावित होकर भरतपुर के राजा ने इन्हें अपने यहाँ बुलाया लेकिन वहाँ भी नहीं गए। मियाँ नज़ीर को आगरा इतना पसन्द था कि उन्होंने आगरे की हद से बाहर जाने की इच्छा नहीं की। वे अपने सम्बन्ध में लिखते हैं—

आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है।
मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है॥
मुफ्लिस कहो, फकीर कहो, आगरे का है।
शायर कहो, नज़ीर कहो, आगरे का है॥

नज़ीर अकबराबादी को आगरा में कुछ ऐसी शान्ति और स्नेह प्राप्त हुआ, इस नगर की प्राकृतिक छटा और रमणीयता इतनी अधिक पसंद आई कि उन्होंने "शहर अकबरावाद के नाम से लम्बी पद्य लिखी और उसमें आगरा की प्रशंसा के पुल बाँध दिये—

शहरे सखुन में अब जो मिला है मुझे मकाँ।
क्यों कर न अपने शहर की खूबी करूँ बयाँ॥
देखी हैं आगरे में बहुत हमने खूबियाँ।
हर वक्त इसमें शाद रहे हैं जहाँ-तहाँ॥
    रखियो इलाही इसको तू आबाद जाविदाँ॥
यारो अजब तरह का यह दिलचस्प है मकाम॥
होते हैं ऐसे कितने ही खूबी के अज़दहाम॥

---

२३. ज़िन्दगानी बे नज़ीर--पृष्ठ १४१

हर तौर दिल रहे हैं खुश और तबअ शादकाम ।
मेरी "नज़ीर" दिल से यही है दुआ मदाम ।।
हँसता रहे यह शहर बसद अमन और अमाँ ।।

यही नहीं आगरे की तबाही पर "शहर आगरा" और "शहर आशोब" जैसी पद्यें लिखकर आँसू बहाते हुए गिड़गिड़ा कर दिल से दुआ माँगी—

यारब हमेशा रखियो तू आबाद आगरा ।

मियाँ नज़ीर का मुख्य कार्य बच्चों को शिक्षा देना और शायरी करना था । उनका अधिक समय बच्चों को शिक्षा देने में व्यतीत होता था । यही उनकी जीविका का साधन था । वे आगरा के प्रसिद्ध शिक्षकों में से थे । वे राजा विलासराय के लड़कों (हरबख्श राय, गुरुबखश राय, मूलचन्द राय, मनसुख राय, बंशीधर तथा शंकरदास) को पढ़ाया करते थे, इनके अतिरिक्त और भी अनेक बच्चों को उन्होंने पढ़ाया था ।

शायरी के क्षेत्र में उनसे प्रेरणा ग्रहण करने वाले शिष्यों की संख्या वैसे तो बहुत थी लेकिन प्रो० शहवाज़ ने उनमें मुख्य निम्नलिखित व्यक्तियों के नाम गिनाए हैं ।[२४]

१. खलीफा गुलज़ार अली "असीर" (पुत्र)
२. हकीम मीर कुतुबुद्दीन बातिन
३. मिर्ज़ा असदुल्लाह "ग़ालिब"
४. महाराजा बलवन्त सिंह
५. लाला बुद्धसैन साफी
६. शेख मदारी "ज़मीर"
७. हकीम मीर मुहम्मद "ज़ाहिर"
८. शेख नबी बख्श "आशिक"
९. मुंशी हुसैन अली खाँ "महव"
१०. बेदार बख्श "लहर"
११. शेख हुसैन बख्श "बख्शी"

इनमें से मिर्जा गालिब के शिष्यत्व के सम्बन्ध में विचारकों के विभिन्न विचार हैं । काल क्रमानुसार नज़ीर अकबराबादी (सन् १७३५-१८३० ई०) और मिर्ज़ा गालिब (सन् १७९७-१८६९ ई०) के कवि हैं । इस प्रकार नज़ीर का बुढ़ापा ग़ालिब का बचपन है । ग़ालिब का बचपन आगरे में बीता । प्रोफेसर शहवाज़ का कथन है—उस समय आगरा में खलीफ़ा मुअज्ज़म और मियाँ नज़ीर दो ही —मुमताज़ मुल्लाओं में थे । ग़ालिब को इन्हीं दो की तरफ जाना पड़ा ।[२५]

---

२४. जिन्दगानी बेनज़ीर— सैयद मुहम्मद अब्दुलगफूर "शहवाज़" नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ-सन्१९०० पृष्ठ २०४
२५. जिन्दगानी बेनज़ीर— मौ० सै० मु० अब्दुल गफूर "शहबाज— मुंशी नवलकिशोर प्रेस— लखनऊ, पृष्ठ २०३

कुतुबुद्दीन बातिन ने भी गुलिस्ताने बेखिज़ाँ में मिर्ज़ा गालिब को मियाँ नज़ीर का शिष्य बताया है।

नज़ीर के रूप-सरूप के सम्बन्ध में फरहतुल्लाह बेग ने अपनी पुस्तक "दीवान नज़ीर अकबराबादी" में इस प्रकार लिखा है—

नज़ीर का रंग गंदुम (गेहुंआ) कद दरमियानाँ, पेशानी ऊँची और चौड़ी, आँखें चमकदार और बेनी (नाक) बुलन्द थी। दाढ़ी खसखसी और मूंछें बड़ी रखते थे। खिड़कीदार पगड़ी गाढ़े का अंगरखा, सीधा पर्दा, नीची चोली उसके नीचे कुर्ता, एक बर्का पायजामा घेतली जूती, हाथ में शानदार छड़ी, अँगुलियों में फीरोज़े और अकीक की अंगूठियाँ।[२६]

उनका फारसी भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वे अरबी भी जानते थे। लेकिन निरभिमानी होने के कारण कहीं गर्वोक्ति नहीं करते। उनमे "दरबारी" कवियों का सा अभिमान न था। वे स्वभाव से बड़े नम्र, निरभिमानी तथा रहमदिल थे।

मियाँ नजीर जीवन भर ताजगंज वाले मकान में ही रहे। उनके मकान के सहन में दो वृक्ष बेरी और नीम के थे। वृद्धावस्था में उन्हीं की छाया में बोरी टाट बिछाकर बैठे बच्चों को पढ़ाया करते थे। मिलने वाले आते तो वहीं मुलाकात होती। कहा जाता है कि एक बार शहर से कुछ मिलने वाले उनके घर पहुंचे। कुंडी खटखटाई। थोड़ी देर में मियाँ नज़ीर ने दरवाजा खोला। उनके सारे शरीर पर आटा लगा हुआ था। सबने कारण पूछा। बताया, तुम्हारी भाभी बिगड़ी बैठी हैं, आटा कौन पीसे। सोचा मैं ही आटा पीस कर रोटी डाल दूं। सबने मिल जुल कर रोटी पकाई। मियाँ नज़ीर की पत्नी को भी मनाकर खिलाई। खुद भी खाई।

दीर्घ आयु भोगने के बाद मियाँ नज़ीर अकबराबादी का देहावसान हुआ।

मृत्यु तिथि

नज़ीर अकबराबादी की मृत्यु तिथि के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतैक्य नही। प्रोफेसर शहवाज़ ने लिखा है जब नज़ीर मरे तो उनकी उम्र नवासी वर्ष की थी। फारसी-उर्दू काव्य में अक्षरों की गणना के आधार पर वर्ष निकालने की परम्परा रही है। प्रोफेसर शहवाज़ ने नज़ीर की मृत्यु तिथि को ज्ञात करने के लिए ऐसे ही एक आधार का विवरण दिया है। उन्हें मियाँ नज़ीर की मृत्यु तिथि के संबंध में फारसी में लिखा हुआ एक पद्यांश प्राप्त हुआ—

नज़ीरे अकबराबादी चुजीं दुनियाये अवतर शुद।
मुख़म्मस बे सरोपा बैते वे दिल फरो वे सर शुद॥[२७]

---

[२६] दीवान नज़ीर अकबराबादी (भूमिका) पृष्ठ ३

[२७] ज़िन्गानी नज़ीर पृष्ठ १४८, १४६

इसके आधार पर नज़ीर की मृत्यु १२४६ हिजरी तदनुसार सन् १८३० ई० में हुई। मिर्ज़ा फरहतुल्लाह बेग ने 'दीवान नज़ीर अकबराब्रादी' की भूमिका में, रामबाबू सक्सेना ने "तारीख अदब उर्दू" और सलीम जाफर ने "गुलजारे नज़ीर" में यही पंक्तियाँ उद्धृत की हैं। इसके अतिरिक्त मौलाना अहसन मारहरवी ने अपने एक लेख "तारीखे इंतकाल नज़ीर अकबराबादी।[२८] में लिखा है कि सैयद शाहआलम मारहरवी ने नज़ीर और उनके अतिरिक्त दो अन्य व्यक्तियों की मृत्यु की तारीख जिनकी मृत्यु इसी साल हुई थी "सवानेः ग़म आग़ीं, से १२४६ हिजरी निकाली।

नज़ीर अकबराबादी की इस मृत्यु-तिथि को सभी मान्यता प्रदान करते हैं। इस मृत्यु तिथि को मान लेने पर नज़ीर के इस कथन को पढ़ने पर नज़ीर की आयु का अनुमान स्वयं हो जाता है—

ऐ यार सौ बरस की हुई अपनी उम्र आकर।
और झुर्रियाँ पड़ी हैं सारे बदन के ऊपर॥

नब्बे पचानवे के लगभग आयु को पहुंचा हुआ व्यक्ति ही स्वयं को लगभग सौ वर्ष का कह सकता है।

मिर्ज़ा फरहतुल्लाह बेग ने दीवान नज़ीर अकबराबादी में मृत्यु का दिन २६ सफर १२४६ हिजरी तदनुसार एक अगस्त १८३० ई० माना और इंतजाम उल्लाह शहाबी ने लिखा "९८ वर्ष की उम्र हो गई तो २६ सफर १२४६ हिजरी व मुताबिक १६ अगस्त १८३० ई० को इंतकाल हुआ।[२९]

सन् १२४३ हिजरी में उन पर फालिज गिरा और तीन साल की बीमारी के बाद २६ सफर १२४६ हिजरी तदनुसार १ अगस्त सन् १८३० को उनका देहान्त हुआ। जनाज़े की नमाज़ शिया सुन्नियों ने अपने-अपने ढंग से पढ़ी। जनाज़े की चादर हिन्दू भी ले गए! घर में खड़े पेड़ों की छाया में ही मियाँ नज़ीर को दफनाकर मज़ार बना दिया गया।

इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के वह महामानव, भारतीय आत्मा के सच्चे प्रतीक, जनमानस के सफल चितेरे कवि मियाँ नज़ीर अकबराबादी सदा सर्वदा के लिए सुख की नींद सो गये।

आखिर के तई हंस अकेला ही सिधारा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

---

[२८] निगार लखनऊ, नज़ीर विशेपांक मौलाना अहसन मारहरवी, जनवरी १९४० ई०

[२९] नज़ीरनामा, पृष्ठ ३९

ब्रज—क्षेत्र और आगरा वासी अब भी अपने प्रिय कवि मियाँ नज़ीर अकबराबादी को स्मरण करते हैं । जब प्रकृति सरसों के पीले पुष्पों से धरती का श्रृंगार करती है, आम्र मंजरियों की मधुर मादकता से आकर्षित होकर भ्रमर गुंजायमान होते हैं, मलयानिल मद भरे संदेश सुनाने लगती है और कृषक अपनी महकती मदमाती अल्हड़ कृषि को निहार निहार कर मस्त होने लगते हैं तभी बसंत पंचमी के शुभावसर पर व्यक्तियों के समूह एकत्र होकर अपने हृदय हार, जनकवि मियाँ नज़ीर अकबराबादी को श्रद्धा—सुमन समर्पित करते हैं ।

अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हिन्दू-मुसलमान उनकी रचनाओं के सस्वर पाठ करके हर्षोल्लास में फूले नहीं समाते ।

प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के दिन मियाँ नज़ीर अकबराबादी की समाधि पर "नज़ीर मेला" लगता है ।

है ताजगंज में अब तो नज़ीर का मेला ।
नज़ीर क्या कि अजब बेनज़ीर का मेला ॥

रचनाएँ

कविवर नज़ीर अकबराबादी रास्ता चलते हुए नज़्में कहा करते थे । इन्होंने अपनी रचनाओं का कोई संग्रह नहीं किया । यही कारण है कि नज़ीर का सारा काव्य स्फुट रूप में उपलब्ध है । उनकी पद्यों से प्रभावित होकर जनता ने उनकी रचनाओं को कंठ और कागज पर सँजोकर रखा ।

यह तो सब स्वीकार करते हैं कि नज़ीर ने बहुत लिखा है लेकिन यह कह सकने की दशा में कोई नहीं है कि नज़ीर ने बस इतना लिखा है ।

शास्त्रीय नियम, साहित्यिक सौन्दर्य और राजसी साज-सँवार का ध्यान न रखने के कारण साहित्यकारों ने नज़ीर के काव्य को साधारण और घटिया समझकर उपेक्षित रखा और कोई व्यवस्थित संग्रह तैयार नहीं हो सका । कवि नज़ीर ने भी अपनी रचनाओं को जमा नहीं किया । उनके शिष्यों, मित्रों और श्रद्धालुओं के पास उनकी रचनाएँ पड़ी रहीं । मियाँ नज़ीर अकबराबादी के शिष्यों ने ही इनका पहला कुल्लियात मेरठ से प्रकाशित कराया था । सैयद मुहम्मद अब्दुल गफ़ूर "शहबाज़" ने बहुत परिश्रम पूर्वक खोज करके इनकी रचनाओं का संग्रह "कुल्लियाते नज़ीर" प्रकाशित कराया । प्रोफेसर शहबाज़ ने ही ग्रंथ 'जिन्दगानी बेनज़ीर' में नज़ीर अकबराबादी का विस्तृत जीवन परिचय भी प्रस्तुत किया । इन रचनाओं ने विचारकों का ध्यान नज़ीर काव्य की ओर आकृष्ट किया और उन्हें नज़ीर की रचनाओं की खोज करने और समीक्षात्मक दृष्टि से उन पर विचार करने की प्रेरणा प्रदान की ।

मियाँ नज़ीर का लिखा हुआ फारसी ग़ज़लों का एक दीवान और फारसी गद्य में लिखी हुई कुछ पुस्तकें भी प्राप्त होती हैं ।

उर्दू हिन्दी के अनेक विद्वानों ने उनकी रचनाओं के छोटे बड़े संग्रह प्रकाशित कराए साथ ही जीवन परिचय भी प्रस्तुत किये हैं।

नज़ीर अकबरावादी के उर्दू काव्य संग्रह

कुल्लियाते नज़ीर : मुहम्मद अब्दुल गफूर "शहबाज़"
रूहे नज़ीर : मखमूर अकबरावादी
मुन्तख़ाबाते नज़ीर : मखमूर अकबरावादी
चमने बेनज़ीर : मखमूर अकबरावादी
दीवाने नज़ीर अकबरावादी : मिर्ज़ा फरहतुल्लाह बेग
इन्तखाब कुल्लियाते नज़ीर : सैयद जलालुद्दीन अहमद जाफरी
गुलज़ारे नज़ीर : सलीम जाफर
कुल्लियाते नज़ीर अकबरावादी : मौलाना अब्दुल बारी "आसी"
नज़ीर की नज़्में
दीवाने नज़ीर : मुहम्मद नज़र खाँ
इंतखाबे नज़ीर : रशीद हसन खाँ
कुल्लियाते नज़ीर : अज़हर राही
इंतखाबे ग़ज़लियात नज़ीर अकबरावादी : डा० मलिक ज़ादा मंज़ूर अहमद

नज़ीर अकबरावादी के हिन्दी काव्य संग्रह

अशआर-ए-मियाँ नज़ीर : लल्लूलाल, कलकत्ता सन् १८१२ ई०
नज़ीर के शेर : ज्ञान रत्नाकर प्रेस, कलकत्ता सन् १८६८ ई०
दीवान ए नज़ीर : इकवाल, शहंशाही प्रेस आगरा सन् १८९७ ई०
अशआर-ए-नज़ीर : राजनारायण अग्रवाल, हाफ़िज़ शमशुद्दीन
नज़ीर वानी : फिराक गोरखपुरी
दीवान ए नज़ीर (हिन्दी) : मुहम्मद नज़र खाँ
महाकवि बेनज़ीर : रघुराज किशोर वतन-हरिदास एण्ड कम्पनी मथुरा
नज़ीर काव्य संग्रह : पंडित उदयशंकर शास्त्री

कविवर नज़ीर : डा० शिवमंगल सिंह "सुमन"
नज़ीर अकबरावादी और उनकी शायरी : सरस्वती सरन "कैफ"
महाकवि नज़ीर अकबरावादी : रघुराज किशोर वतन
दीवान ए नज़ीर : मुहम्मदी प्रेस धनकोट, आगरा

इनके अतिरिक्त छोटी-छोटी पुस्तकों के रूप में मियाँ नज़ीर की रचनाएँ "बालपन कन्हैया का, नागलीला, चूहेनामा, महादेव जी का ब्याह आदि प्रकाशित हुई हैं। "गीताप्रेस" गोरखपुर से प्रकाशित भजन संग्रह में नज़ीर के कुछ भजन संगृहीत हैं।

इन संग्रहों में भी नज़ीर की समस्त रचनाएँ सम्मिलित नहीं हो सकीं। आगरा के नज़ीर काव्य के प्रेमी और विशिष्ट विद्वान्, डा० गुरुमुखराम "टंडन" के पास नज़ीर की कविताओं का विशाल संग्रह था। उनके संग्रह तथा अन्य स्थानों से मुझे कुछ नई रचनाएँ प्राप्त हुईं, मैंने उन सबको इस संग्रह में संजोने का प्रयत्न किया है।

कविवर नज़ीर अकबरावादी की विचारधारा

मियाँ नज़ीर अकबरावादी के विचार उनके समय से बहुत आगे के हैं। वह अपने काल की काव्य परम्परा से मुक्त रहकर स्वतंत्र काव्य-रचना करते हैं। "कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः" वाला कथन उन पर पूर्णतः चरितार्थ होता है। कहा गया है—

लीक-लीक तीनों चलें कायर, कूर कपूत।
बिना लीक तीनों चलें शायर, सूर, सपूत॥

वे ऐसे ही कवि हैं। उनको किसी युग की काव्य-परम्परा में बाँधा नहीं जा सकता। मियाँ नज़ीर हिन्दी-उर्दू साहित्याकाश के वह देदीप्यमान नक्षत्र हैं जो किसी विकास की श्रृंखला की कड़ी नहीं बनते बल्कि दूर स्थित रहकर अपनी जगमगाहट से दिशाओं को दीप्त करते रहते हैं। उनकी लोकवादी कविताओं में देश-प्रेम और जन-जीवन की सुगन्ध समाहित है।

नज़ीर अकबरावादी हिन्दी के आधुनिक काल का शुभारम्भ करने वाले पहले आधुनिक कवि हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा दिए गए काल- विभाजन के अनुसार वे हिन्दी के रीतिकाल के उत्तरार्द्ध में आते हैं, लेकिन अपने विचारों भावों और भाषा की दृष्टि से वे आधुनिक कालीन श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में रखने योग्य हैं। उनकी पेट, रोटियाँ, पैसा, मुफ़्लिसी, आदमीनामा, बंजारानामा, मौत की फिलासफी हंसनामा आदि जनमानस से जुड़ी हुई रचनाएँ हिन्दी के बीसवीं शताब्दी के कवियों की काव्य-चेतना से पीछे नहीं हैं।

मियाँ नज़ीर अकबरावादी (सन् १७३५ ई०–सन् १८३० ई०) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र (सन् १८५० ई०–सन् १८८५ ई०) से पहले हुए थे। भारतेन्दु जी का रचनाकाल सन् १८६८ ई०–सन् १८८५ रहा। भारतेन्दु जी को आधुनिक काव्य–धारा का प्रवर्तक माना जाता है। आधुनिक शब्द मध्यकाल से भिन्नता और नवीन इहलौकिक दृष्किोण का सूचक है। भक्तिकाल में भक्ति-परक रचनाओं की प्रधानता रही। रीतिकाल में कला और काव्य अपने कथ्य, अलंकृति और शैली में एक रूप होकर घोर शृंगारिकता के बँधे घाटों से बहने लगे। एक ही प्रकार के छंदों में एक रंग-ढंग के साथ काव्य-रचना होने लगी।

मध्यकाल में पारलौकिक दृष्टि से आच्छन्न मनुष्य अपने परिवेश को भूल चुका था। आधुनिक काल में वह अपने परिवेश और पर्यावरण के प्रति जागरूक हुआ। सुधार, परिष्कार और अतीत का पुनराख्यान नवीन दृष्टिकोण की देन है। आधुनिक युग की ऐतिहासिक प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप साहित्य की भाषा बदलकर ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली हो गई।

मियाँ नज़ीर अकबरावादी उस काल में हुए थे जब उर्दू जगत में सौदा (सन् १७०६ ई०–१७८१ ई०), दर्द (सन् १७२१ ई०–१७८५ ई०) और मीर तकी मीर (सन् १७२५ ई०–१८१० ई०) का दौर दौरा था। इस काल का सामाजिक और आर्थिक जीवन दो धाराओं में विभक्त था। एक ओर बादशाह, जागीरदार, राजा, सेना के बड़े कर्मचारी और दरबार से सम्बन्ध रखने वाले उच्च वर्ग के व्यक्ति थे दूसरी ओर अधिकतर किसान और नीची श्रेणी के धन्धे करने वाले साधारण लोग।

इस काल के उर्दू कवियों की चेतना सामन्तवादी युग के विचारों, शिक्षा तथा नैतिक सिद्धान्तों से बनी थी और वे उन्हीं परम्पराओं का पालन कर रहे थे। इनमें से बहुत से कवि साधारण जन जीवन से अनभिज्ञ थे साधारण जनता से बात करना भी उनको पसन्द न था। फारसी अरबी की शब्दावली से भरी उर्दू भारतीय जन-मानस के जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न रखने वाले भावों और विचारों से भरी हुई थी।

उर्दू के अधिकतर कवि फारसी भाषा और काव्यशास्त्र के ज्ञाता होने के कारण उर्दू के स्थान पर फारसी में लिखना सभ्यता का प्रतीक समझते थे। उनके अप्रस्तुत और अलंकार सब अरब और ईरान से ही जुटाये जा रहे थे।

कविवर नज़ीर अकबरावादी ने अपने देश और मातृभूमि की साधारण से साधारण वस्तुओं को हृदय से प्यार किया और अपने काव्य का विषय बनाया। आगरे की ककड़ी, तिल के लड्डू, रोटी, पेट, पैसा, कौड़ीनामा, बंजारानामा, आदमीनामा जैसी साधारण विषयों पर कही गई पद्यें उर्दू के नफ़ासत पसंद कवियों को पसन्द नहीं आईं। उनमें उर्दू कवियों की सी बनावट, सजावट, नज़ाकत नहीं थी। इसी कारण उर्दू वालों ने नज़ीर को घटिया बाजारू शायर बताया और बहुत समय तक उनको कवियों की श्रेणी में स्थान नहीं दिया।

मियाँ नज़ीर अकबराबादी सन् १७३५ से सन् १८३० ई० तक जीवित रहे। यह काल हिन्दी में रीतिकाल की सीमा में आता है। इस काल के कवि अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा और प्रसन्नता के लिए काव्य रचना कर रहे थे। इनकी मुक्तक रचनाओं में विषय का महत्व कम, कथन की शैली, उसकी वक्रता वाग्विदग्धता, शब्द चयन, मंडन-शिल्प और वाक् चातुरी का महत्व अधिक था। केशव, बिहारी, देव, दास, ठाकुर, पद्माकर और बेनी प्रवीन की उक्तियाँ इसी प्रकार चमत्कृत कर देने वाली हैं।

उस युग के अनेक कवि बिना किसी प्रतिभा के मीन, मृग, खंजन, आदि उपमानों के नाम जोड़-तोड़ कर कवित्त रचना करके पुरस्कार प्राप्त करते रहते थे ऐसे ही कवियों पर व्यंग्य करते हुए ठाकुर कवि ने कहा था—

सीखि लीन्हों मीन, मृग खंजन, कमल, नैन,
सीखि लीन्हों जस और प्रताप को कहानो है।
डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच,
लोगन कवित्त कीवो खेल करि जानो है।

राजसभा में बड़प्पन पाना ही अच्छे कवि की पहचान बन गया था।

ठाकुर सो कवि भावत मोंहि जो राजसभा में बड़प्पन पावै।
पंडित और प्रवीनन को जोई चित्त हरै सो कवित्त कहावै।।

रीतिकालीन कवियों ने समय-समय पर ज्ञान, वैराग्य, भक्ति राजनीति धर्मनीति आदि के भी छंद रचे लेकिन उनका प्रिय विषय शृंगार ही रहा है। कविगण नायक-नायिकाओं के मिलन और विरह, मान और अभिसार की सरस चर्चा में तल्लीन थे। विलासिता के इस युग में राजा और नवाबों के अन्तःपुर भिन्न-भिन्न वय और रुचि, रूप और सौन्दर्य की नायिकाओं से भरे रहते थे। युद्ध और राजकार्य से अवकाश प्राप्त शासकों का मन इन्हीं की ओर दौड़ता था, कविगण इस मनोविनोद के सखा और सहायक होते थे। सौभाग्य से इन्हें राधा कृष्ण का आलम्बन भी प्राप्त हो गया था और राधाकृष्ण के बहाने वे युग की वासना का चित्रण कर रहे थे--कहा भी गया

आगे के सुकवि रीझिहैं तो कविताई,
न तु राधा कन्हाई सुमिरन को बहानों है।

परिणाम यह हुआ कि रीतिकाल की काव्य रचना में शृंगार की बाढ़ सी आ गई। इस काल में कवि की प्रतिभा भी बहुत गिर गई। "कविर्मनीषी, परिभू, स्वयम्भू" के गौरव से मंडित कवि इस काल में राज-सभा के रसिक चाटुकार बन कर रह गए।

इस प्रकार के कवियों के लिए साधारण जन जीवन का कोई महत्व न था। उन्होंने कभी इसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। रीतिकालीन कवि राजदरबारों में नायिकाओं के नख-शिख वर्णन के साथ राधा-कृष्ण को साधारण नायक-नायिकाओं के रूप में चित्रित कर रहे थे। "राधा कन्हाई सुमिरन" का बहाना लेकर श्रृंगार रस में गोते लगा रहा थे। भगवान् कृष्ण जो भारतवर्ष की बहुत बड़ी जनता के परमाराध्य हैं और जिनको परम ब्रह्म का पूर्णवितार माना जाता है, "कृष्णस्तु भगवान स्वयम्। उनको साधारण नायक के रूप में चिचित कर हमारे उपास्य की छवि धूमिल कर रहे थे। ऐसे समय में मियाँ नज़ीर अकबरावादी ने भगवान् कृष्ण की विविध लीलाओं का सरस गान किया और कहीं कामुकता की छींट भी नहीं छू सकी। सर्वत्र कवि की आस्था, श्रद्धा और भक्ति के दर्शन होते हैं। जन्म-कन्हैया जी, कन्हैया जी की खेल कूद, बाँसुरी, कन्हैया जी की रास, कन्हैया जी की शादी आदि पद्यों में उन्होंने श्री कृष्ण की लीलाओं का सफल चित्रण किया है। कृष्ण कथा का वर्णन करने में उन्होंने अमित भक्ति दिखाई है:

तारीफ करूँ अब मैं क्या क्या उस मुरली अधर बजैया की।
नित सेवा कुँज फिरैया की और वन-वन गऊ चरैया की॥
गोपाल, बिहारी, बनवारी, दुख हरना, मेहर करैया की।
गिरधारी, सुन्दर स्याम बरन और हलधर जू के भैया की॥
यह लीला है उस नन्द ललन, मन मोहन, जसुमति छैया की।
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की॥

उनकी दृष्टि में श्रीकृष्ण सर्वत्र दुखहरन, कृपाकरन और परमाराध्य ही हैं। मुसलमान होते हुए भी वे श्रीकृष्ण जी को महान् से महान् और परमेश्वर तक मानते हैं। उनके लिए कृष्ण पैगम्बर जैसे हैं।

तू सबका खुदा, सब तुझ पै फिदा, अल्लाहोग़नी, अल्लाहोग़नी।
ऐ किशन कन्हैया, नंदलला, अल्लाहोग़नी, अल्लाहो ग़नी।
सूरत में नबी, सीरत में खुदा, ऐ सल्ले अलाह, अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी।
तालिब है तेरी रहमत का, बंदा ये नाचीज़ 'नज़ीर' तेरा।
तू बहरे करम है नंदलला, अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी।

यही नहीं हिन्दू जन-जीवन, संस्कार देवी-देवता और श्रद्धास्पदों के सम्बन्ध में वे अत्यन्त भावावेग के साथ काव्य रचना करते हैं। मुसलमान होते हुए हिन्दू धर्म से सम्बन्धित अनेक अन्तर्कथाओं, प्रतीक बिम्ब और उपमानों का सफल प्रयोग करके वे पाठकों को आश्चर्यान्वित कर देते हैं। गणेश जी की स्तुति, कृष्ण कन्हैया की तारीफ, दुर्गाजी के दर्शन, जन्म कन्हैया जी, कन्हैया जी की रास, सुदामा चरित आदि रचनाएँ इसके सुन्दर उदाहरण हैं। साम्प्रदायिक सद्भाव और साम्प्रदायिक एकता के वे साकार प्रतिमान हैं। उनका जीवन हिन्दू-मुस्लिम के बीच सुन्दर सेतु स्वरूप है। उस काल में हिन्दू मुलसमान बहुत समीप आ चुके थे। मियाँ नज़ीर द्वारा लाला विलासराय के बच्चों को पढ़ाना इसका उदाहरण है। मियाँ नज़ीर भी इसी साम्प्रदायिक सद्भावना से प्रेरित होकर ऐसी सरस रचनाएँ करते रहे। अपने स्वच्छन्द स्वभाव के कारण वे आध्यात्मिक और भौतिक आनन्द में रमते रहे हैं, कट्टरता उन्हें छू भी नहीं सकी।

कविवर नज़ीर अकबरावादी के काव्य में एक और बहुत महत्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगोचर होता है । हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल से पूर्व के साहित्य पर ध्यान देने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे एक काल का समस्त साहित्य एक "टाइप" विशेष में आबद्ध करके रख दिया गया हो । अधिकतर एक ही प्रकार की मनोवृत्ति को अपनाकर काल विशेष के कवियों ने काव्य रचना की है । "साहित्य समाज का दर्पण है" यह कथन हिन्दी के उपर्युक्त साहित्य के सम्बन्ध में खरा नहीं उतर पाता । हिन्दी साहित्य में समाज के कतिपय पक्षों, मनोवृत्तियों और विचारधाराओं को ही प्रश्रय मिला हैं । इस साहित्य में समाज के कुछ व्यक्तियों राजा, महाराजाओं और पूँजीपतियों की मनोवृत्तियों और सुखद परिस्थितियों का ही प्रतिनिधित्व है, साधारण समाज और दीन दुखियों का प्रतिनिधित्व नहीं । समस्त साहित्य एक सीमित कटघरे में बँधा हुआ प्रतीत होता है । ऐसा ज्ञात होता है जैसे कवियों ने आस पास के जीवन को पूर्णत: भुला दिया हो । समाज से कटकर कवि काव्य-रचना कर रहा हो । नित्य प्रति घटित होने वाली घटनाओं से आँखें बन्द कर कवि अपनी धुन में लगा हुआ हो ।

कवि नज़ीर अकबरावादी का काव्य इन समस्त सीमाओं से परे है । उसमें विषय वैविध्य है । उनके दिल की धड़कनें समाज की धड़कनों के साथ स्वर मिलाए रही है । वह समाज में जिए और बढ़े हैं । समाज को खुली आँखों से देखते हुए उन्होंने अपने शब्दों के "कैमरे" में चित्र उतारे हैं । उनका काव्य शब्दों की चित्रशाला है । सर्वत्र सांग और पूर्ण बिम्ब । कहीं पाठक को कल्पना करने की आवश्यकता नहीं । वर्ण्य-विषय का सम्पूर्ण बिम्ब दृष्टि के सम्मुख आ उपस्थित होता है । दृश्य और घटनाओं के ऐसे सजीव चित्र हमें हिन्दी-उर्दू काव्य में कहीं भी प्राप्त नहीं होते । नज़ीर इस रूप में लीक छोड़कर चलने वाले सच्चे शायर थे । "शक्तिर्निपुणता लोक, शास्त्र, काव्यादि वेक्षणात्" लोक को देखकर शब्द चित्र उपस्थित कर देने की उनमें ईश्वर प्रदत्त परम प्रतिभा है । दृश्य को शब्दों में उतारने में वे अत्यधिक समर्थ और सफल हैं उनमें विविध वस्तु वर्णना शक्ति परम् अद्भुत हैं ।

कविवर नज़ीर अकबरावादी की कविता सरल और स्वाभाविक है । उसमें दृश्य और घटनाओं का यथार्थवादी चित्रण हुआ है । देश की बदलती हुई ऋतुओं का मनमोहक वर्णन उन्होंने किया है । ऋतुओं की सम्पूर्ण दशा का पूर्ण चित्र आँखों के समक्ष उपस्थित हो जाता है ।

शरद ऋतु के वर्णन में वे दाँतों के बजने, सी-सी करने । कंपकंपी आने के साथ ही हवा के झोंकों के साथ वर्षा होने का भी वर्णन करते हैं ।[३०]

जाड़े की ऋतु में गर्मी पाने के लिए "तिल के लड्डू" खाने में उन्हें बहुत आनन्द आया है ।[३१] गर्मी के आधिक्य से परेशान हुए कवि को "कोरा बर्तन प्यारा लगा है । उसमें सन-सन करती हुई पानी की बूंदें कवि के हृदय तक उतर गयी है । कोरे बर्तन की यह सनसनाहट कदाचित् ही किसी यथार्थवादी कवि का हृदय आकर्षित कर काव्य-विषय बन सकी हो :

---

[३०] घर घर का ज़ोर अखाड़ा हो बजती हो सबकी बत्तीसी ।
जड़ बांध महावट पड़ती हो और तिस पर लहरें ले लेकर ।
सन्नाटा वायु का चलता हो तब देख बहारें जाड़े की ।।

[३१] जाड़े में फिर खुदा ने खिलवाए तिलके लड्डू ।
हर एक खोंमचे में दिखलाये तिल के लड्डू ।।

कोरे बर्तन हैं क्यारी गुलशन की।
जिससे खिलती है हर कली तन की।
बूंद पानी की इनमें जब खनकी।
क्या वो प्यारी सदा है सन-सन की।
ताजगी जी की और तरी तन की।
वाह। क्या बात कोरे बर्तन की।।

गर्मी के मौसम में उमस अधिक कष्टदायक होती है। इसमें हवा बंद हो जाती है। पसीने से शरीर भीग उठता है। शरीर में मैल की चीटियाँ सी काटने लगती हैं। कपड़ा पहनने पर पसीने के कारण बेचैनी होती है नंगा रहने पर मक्खियाँ परेशान करती हैं।[३२]

उमस के अनन्तर वर्षा का शुभागमन होता है। बादल हवा के ऊपर चक्कर काट रहे हैं।[३३] डाबरों और नदियों में अत्यधिक पानी भर गया है।[३४] जंगल हरे भरे हो गए हैं।[३५] हरियाली पर बीरबहूटी और टीलों पर धतूरे दिखाई दे रहे हैं। कहीं पिस्सू और मच्छरों का प्रकोप है। किसी को बिच्छू ने काट लिया है। आँगन में कनसलाई और कोनों में कनखजूरे दिखाई दे रहे हैं।[३६] अत्यधिक वर्षा होने के कारण मकान भी गिरने लगे हैं—

कोठा झुका, अटारी गिरी, दर फिसल पड़ा।
छज्जा गिरा मुड़ेरी का पत्थर फिसल पड़ा।
तुम दर को झीकते हो, मेरा घर फिसल पड़ा।
पाखे पछेत सो गए छप्पर फिसल पड़ा।।

बरसात में अमीर और गरीबों की दशा का यथार्थ चित्रण मियाँ नज़ीर ने किया है। धनवान व्यक्ति छतरी लगाकर हाथी पर चढ़कर चल रहे हैं। लेकिन बेचारे गरीब लोग हाथों में जूतियाँ लेकर पाँयचे चढ़ाए

---

[३२] ईधर तो पसीनों से पड़ी भीगें हैं खाटें।
गर्मी से ऊधर मैल की कुछ च्यूटियाँ काटें।।
कपड़ा जो पहनिए तो पसीने उसे आटें।
नंगा जो बदन रखिए तो फिर मक्खियाँ काटें।।

[३३] बादल हवा के ऊपर हो मस्त छा रहे हैं।

[३४] मारे है मौज डाबर दरिया उमड़ रहे हैं।

[३५] जंगल सब अपने तन पर हरियाली सज रहे हैं।

[३६] सब्जों पर वीर बहूटी, टीलों ऊपर धतूरे।
पिस्सू से मच्छरों से रोये कोई बिसूरे।
बिच्छू किसी को काटे कीड़ा किसी को घूरे।
आँगन में कनसलाई, कोनों में कनखजूरे।।

हुए निकलते हैं और कीचड़ में गिर भी पड़ते हैं।[३७] यही नहीं कुछ बेचारे दलदल में फंस कर निकलने में मजबूर हैं। और दर्शक लोग उनकी हंसी उड़ा रहे हैं——

कितने तो दलदलों की कीचड़ में फंस रहे हैं।
कपड़े तमाम गंदे दलदल में बस रहे हैं।
कितने उठे हैं मरमर कितने उकस रहे हैं।
वह दुख में फंस रहे हैं, और लोग हँस रहे हैं।
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें।

सबके शरीर पर फुंसी फोड़े हो रहे हैं। भारी चीज खा लेने पर पेट पचता नहीं——

फुंसी किसी के तन में सर पर किसी के फोड़े।
छाती पै गर्मी दाने और पीठ में ददोड़े॥
खा पूरियाँ किसी का हैं लग रहे मरोड़े।
आते दस्त हैं जैसे दौड़े इराकी घोड़े॥

ऐसे ही सांग सरस और यथार्थ चित्र पाठकों का मन मोह लेते हैं। उस काल में ऐसे वर्णन अन्यत्र अप्राप्य हैं।

मियाँ नज़ीर को सर्वाधिक प्रसन्नता बसन्त ऋतु में होती है। "आने को आज धूम इधर है बसंत की" और "आलम में तशरीफ लाई बसन्त" कहकर वे प्रसन्न होते हैं, और सबकी तो बसंते हैं, है यारो का बसंता" गाते हुए झूम उठते हैं।

नज़ीर अकबराबादी ने हिन्दू—मुस्लिम त्यौहारों का वर्णन दिल खोलकर किया है। ईद और शब्बरात का वर्णन करने में वे गरीब पिसनहारी की शब्बरात को भी भुला नहीं सके हैं वे साधारण जनता के प्रतिनिधि हैं। दीन—दरिद्र की दयनीय दशा का वर्णन करने में उन्हें संतोष प्राप्त होता है———

"ठिलिया, चपाती, हलवे की तो सबमें चाल है।
अदना गरीब के तईं यह भी मुहाल है॥
काले से गुड़ की लपसी कढ़ी की मिसाल है।
पानी की हाँड़ी, गेहूं की रोटी भी लाल है॥
करती है ऐसी दुखिया पिसनहारी शब्बरात॥

---

[३७] जो इस हवा में यारो दौलत में कुछ बड़े हैं।
है उनके सर पै छतरी हाथी ऊपर चढ़े हैं।
हमसे गरीब गुरवा कीचड़ में गिर पड़े हैं।
हाथों में जूतियाँ हैं और पायचे चढ़े हैं।
क्या—क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें॥

दिवाली का वर्णन करते हुए वे कहते हैं :

"हमें अदाएं दिवाली की ज़ोर भाती है
कि लाखों झमकें हर एक घर में जगमगाती है।
चिराग जलते हैं और लौएं झिलमिलाती हैं
मकाँ मकाँ में बहारें ही झमझमाती हैं।
खिलौने नाचे हैं तस्वीरें गत बजाती हैं।
बताशे हसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं।।

दिवाली पर जुआ खेलने वाले भी उनकी दृष्टि से छिप नहीं सके हैं। जुआरियों की हरकतों का वर्णन करते हुए वे कहते हैं——

किसी ने घर की हवेली गिरवी रखा हारी।
जो कुछ थी जिंस मयस्सर बता—बता हारी।
किसी ने चीज किसी की चुरा छिपा हारी।
किसी ने गठरी पड़ोसिन की अपनी ला हारी।
यह हार जीत का चर्चा पड़ा दिवाली का।।

राखी के त्योहार को देखकर तो उनका हृदय प्रेम प्लावित हो उठता है। वे ब्राह्मण बनकर अपने प्रिय—पात्र के हाथ में प्रेम की राखी बाँधना चाहते हैं——

मची है हर तरफ क्या—क्या सलूनों की बहार अब तो।
हरेक गुलरू फिरैं है राखी बाँधे हाथ में खुश हो।
हविस जो दिल में गुजरे है कहूँ क्या आह।' मैं तुमको।
यही आता है जी में बनके ब्राह्मण आज तो यारो।
मैं अपने हाथ से, प्यारे के बांधूँ प्यार की राखी।।

मियाँ नज़ीर को सर्वाधिक प्रसन्नता होली के त्यौहार पर होती है। होली को वे राष्ट्रीय त्यौहार मानते हैं।

हिन्द के गुलशन में जब आती है होली की बहार।
जाँ फिसानी चाही कर जाती है होली की बहार।।

और—

जब आई होली रंग भरी सौ नाज़ो अदा से मटक-मटक।
और घूंघट के पट खोल दिए वह रूप दिखाया चमक-चमक।।

कुछ मुखड़े करते दमक-दमक, कुछ अबरन करते झलक-झलक ।
मरदंगें बाजें ताल भरें, कुछ खनक-खनक कुछ धनक-धनक ॥

वे मस्त होकर गाने लगते हैं—

जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की ।
और डफ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की ॥
परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की ।
कुछ घुंघरू ताल झनकते हों तब देख बहारें होली की ॥

होली वर्णन की प्रसन्नता में यहाँ शब्द बजते हैं, छन्द नाचते हैं और मियाँ नज़ीर झूम उठते हैं। ऐसे चित्र अन्यत्र कहाँ ?

ब्रज लोक जीवन के अनेक जीते जागते सांस्कृतिक चित्र उनके काव्य में प्राप्त होते हैं । शेख सलीम चिश्ती के उर्स के साथ ही लल्लू जगधर का मेला, कंस का मेला और "बलदेव जी का मेला" में ब्रज के मेलों के सरस चित्र उतारे गए हैं । मेले की भीड़भाड़, धक्का मुक्की का वास्तविक वर्णन हुआ है । बलदेव जी के मेला का एक पद देखें—

लाखों बैठे बिसाती और मनिहार
अपना सब गरम कर रहे बाजार
चूड़ी, बंगड़ी की इक तरफ झंकार
नौगरी, पोथ, अंगूठी, छल्ले हार
टूट पड़ते हैं गंवारी और गंवार
जिस गवारी को चलिए धक्का मार
गिर के दे गाली चले है "दाढी जार"
रंग है रूप है झमेला है
ज़ोर बलदेव जी का मेला है

'रासलीला' नामक कविता में तात्कालिक रास का सरस वर्णन हुआ है ।

कविवर नज़ीर अकबरावादी का सम्बन्ध समाज के हर तबके से था । उनकी कविताओं में चित्रित किए गए विभिन्न दृश्यों को देखकर ज्ञात होता है कि उन्हें समाज के विभिन्न पहलुओं का कितना विस्तृत अनुभव और विशद ज्ञान था । उन्होंने जीवन का बड़ा भाग खेल कूद में बिताया । पच्चीसी, ग़ंजफा, चौसर, शतरंज के अतिरिक्त दिवाली पर जुआ भी खेला (नज़ीर तो है बना जुआरिया दिवाली का), बुलबुल, लाल, तीतर, कबूतर उड़ाए अपने तो लड़कपन से है दमसाज़ कबूतर), पतंगबाजी की, कुश्ती भी लड़ी (कुश्ती में हमने कितनी मुद्दत बदन को तोड़ा), गिलहरी, रीछ और अजदहे का बच्चा पाला (हम बेचते हैं यारो । लो अजदहे का बच्चा) तैराकी में दिलचस्पी ली । "आगरे की तैराकी" का वर्णन करते हुए वे कहते हैं :

अदना, गरीब, मुफ्लिस ज़रदार पैरते हैं ।
सौ-सौ तरह का कर कर विस्तार पैरते हैं ॥

क्या क्या हंसी खुशी से हर बार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ ! यार पैरते हैं ।।

आम, संतरा, नारंगी, खरबूजे, तरबूजे, खिरनी और जामुन का स्वाद चक्खा, "आगरे की ककड़ी" को तो "गन्ने की पोरी" रेशम की तकली, "फरहाद की निगाहें", "शीरी की हंसलियाँ", "मजनूं की सर्द आहें", और "लैला की उंगलियाँ" कह कर सराहा—

क्या प्यारी-प्यारी मीठी और पतली पतलियाँ हैं ।
गन्ने की पोरियाँ हैं रेशम की तकलियाँ हैं ।।
फरहाद की निगाहें, शीरी की हसलियाँ हैं ।
मजनूं की सर्द आहें, लैला की उंगलियाँ हैं ।।
क्या खूब नर्म नाज़ुक इस आगरे की ककड़ी ।।

मियाँ नज़ीर अकबरावादी ने कौड़ी, पैसा, रुपया, ज़र आदि पर बड़ी मुन्दर और प्रभावोत्पादक रचनाएँ की हैं । आटे दाल का भाव, रोटियाँ, चपाती आदि पर लिखी हुई कविताओं को पढ़कर उनकी दरिद्रता और परेशानियों का ज्ञान होता है । उन्होंने गरीबी का जीवन भोगा है । वे मुफ़्लिसी का वर्णन करते हुए कहते हैं :

बीबी की नथ न लड़कों के हाथों कड़े रहे ।
कपड़े मियाँ के बनिए के घर में पड़े रहे ।
जब कड़ियाँ बिक गईं तो खंडहर में पड़े रहे ।
जंजीर न किवाड़ न पत्थर गड़े रहे ।
आखिर को ईंट-ईंट खुदाती है मुफ़्लिसी ।

समाज के साधारण व्यक्तियों के प्रति नज़ीर के हृदय में जैसी पीड़ा और कसक है वैसी उस काल में अन्यत्र कहीं नहीं । उन्होंने साधारण जीवन जिया और भोगा है । अपने आस-पास दीन दुखी दरिद्र-नारायणों के दुखद दृश्यों को दर्द भरी दृष्टि से देखा और चित्रित किया है । उनकी "मुफ़्लिसी" और इफ़्लास का नक्शा नामक कविताएँ तो यथार्थवादी होने के साथ ही प्रगतिवादी काव्य की आधारशिला हैं । वे दीनता और दरिद्रता का दस्तावेज़ हैं ।

मियाँ नज़ीर का जीवन बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते बीता । बुढ़ापे में भी अपने ही घर में पेड़ों के नीचे टाट बोरी बिछाकर बैठे गरीबों के बच्चों को पढ़ाया करते थे । वे अपने जीवन के कटु अनुभवों को शब्दों की तरल धारा में बहाते हुए कहते हैं—

जो अहले फज़्ल आलिमो फाज़िल कहाते हैं ।
मुफ़्लिस हुए तो कलमा तलक भूल जाते हैं ।
पूछे कोई "अलिफ" तो वे "बे" बताते हैं ।
वह जो ग़रीब गुरबे के लड़के पढ़ाते हैं ।।
उनकी तो उम्र भर नहीं जाती है मुफ़्लिसी ।।

उन्होंने दीन-दरिद्र के उजड़े हुए घर का शब्द-चित्र उपस्थित किया है—

क्या-क्या मैं मुफ़्लिसी की कहूँ ख्वारी फकड़ियाँ ।
झाड़ू बग़ैर घर में बिखरती हैं झकड़ियाँ ।
कोने में जाले लिपटे हैं छप्पर में मकड़ियाँ ।
पैदा न होवें जिनके जलाने को लकड़ियाँ ।
दरिया में उनके मुर्दे बहाती है मुफ़्लिसी ॥

भूखे और दरिद्र व्यक्ति का संसार में कहीं कोई आदर नहीं रहता—

चूल्हा तवा न पानी के मटके में आबी है ।
पीने को कुछ न, खाने को, और न रकाबी है ।
मुफ़्लिस के साथ सबके तईं बेहिजाबी है ।
मुफ़्लिस की जोरू सच है कि हाँ सबकी भाभी है ।
इज्ज़त सब उसके दिल की गिराती है मुफ़्लिसी ।

वे कहते हैं कि गरीबी में घर का सब कुछ बिक जाता है । सोने के लिए चारपाई और बिस्तर का भी प्रबन्ध नहीं होता, खाना भी कठिनाई से प्राप्त हो पाता है :[३८]

वह यह बताते हैं कि आदमी पेट भरने के लिए ही संसार के सभी कर्म—कुकर्म करता फिरता है । "विभुक्षित: किं न करोति पापम्" वह पेट भरने के लिए ही सभी पाप कमाता है—[३९]

मियाँ नज़ीर के भूखे पेट ने रोटी के वास्तविक महत्व को आँका है—

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियाँ ।
फूली नहीं बदन में समाती हैं रोटियाँ ।
आँखें परीरुखों से लड़ाती हैं रोटियाँ ।
सीने उपर भी हाथ चलाती हैं रोटियाँ ॥

---

[३८] चारपाई बेच खाई और बान को जलाकर ।
रोटी पकाई रो रो और खाई आह भर कर ।
सोने के वक्त झंगला, गुदड़ा रहा न चादर ।
कोहनी पै सर को रखकर सोए फकत जमीं पर ।
तकिया मिला तो ऐसा, बिस्तर मिला तो ऐसा ॥

[३९] करता है कोई जोरो जफा पेट के लिए ।
सहता है कोई रंजो बला पेट के लिए ।
सीखा है कोई मक्रो दग़ा पेट के लिए ।
जो है सो हो रहा है फिदा पेट के लिए ॥

रोटी न पेट में हो तो कुछ जतन न हो।
मेले की सैर ख़्वाहिशो बागो चमन न हो।।
भूखे गरीब दिल की खुदा से लगन न हो
सच है कहा किसी ने कि भूखे भजन न हो
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियाँ।।

जीवन और जगत के यथार्थ चित्रण में नज़ीर कुशल हस्त हैं। भौतिक जीवन के रूपात्मक दृश्यों में उनके मन का रमना ही यथार्थवादी काव्य का प्रारम्भ है। उन्होंने "आदमी" की प्रकृति और प्रवृत्ति के बड़े अन्तर्विरोधी प्रभावोत्पादक चित्र उपस्थित किए हैं——

मस्जिद भी आदमी ने बनाई है यों मियाँ।
बनते हैं आदमी ही इमाम और खुत्वाख़्वाँ।।
पढ़ते हैं आदमी ही कुरान और नमाज़ याँ
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ।।
जो उनको ताड़ता है सो है वह भी आदमी।।

याँ आदमी पै जान को बारे है आदमी
और आदमी पै तेग को मारे है आदमी।
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी।।
और सुनके दौड़ता है सो है वह भी आदमी।।

आम आदमी के प्रति नज़ीर के हृदय में बहुत ममता है। उनकी दृष्टि में पूर्ण मानव वे हैं जो दुःख-दर्द और दीन-हीन दशा में भी प्रसन्न रहते हैं—

दुःखदर्द में आफ़ात में जंजाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं।।

उनका महत्त्वपूर्ण विचार यह है—

जितने सुखन हैं सब में यही है सुखन दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त।।

उनकी "खुशामद नामक कविता मनुष्य की गिरावट और बिगड़े हुए सामाजिक सम्बन्धों का खुला चित्र है—

जो खुशामद करे खल्क उससे राज़ी है।
सच तो यह है कि खुशामद से खुदा राज़ी है।

इसी तरह बाला, मोती पंखा, बटुआ, पान, जलेबी आरसी,पलंग, ताबीज, इज़ारबन्द, समधिन आदि पर सुन्दर कविता कही। 'बूढ़ी वैश्या' और 'हिजड़ों' को भी वे नहीं भूले।

बेटा हुआ किसी के जो सुन पावें 'हीजड़े'।
सुनते ही उसके घर में फिर आ जावें 'हीजड़े'।
नाचें बजाके तालियाँ और गावें 'हीजड़े'।
उसके बड़े नसीब जहाँ जावें 'हीजड़े'।

हिजड़ों के नाच को देखकर तो मियाँ के इरादे ही बदल जाते हैं—

मुद्दत से हो रहा है इरादा यह दिल पज़ीर।
अल्लाह हमें भी देवे जो बेटा तो ऐ ¡ नज़ीर।
हम भी बुलाके खूब से नचवावें 'हीजड़े'।।

मियाँ नज़ीर को अपने देश के कण-कण से प्यार है। वह अपने देश की खुशी में खुश होते हैं और दुख में रोने लगते हैं। मुगल साम्राज्य के सूर्यास्त के समय जाट, रुहेले, मराठे तथा विदेशी आक्रमणकारी देश को यत्र तत्र लूट खसोट रहे थे। आगरा में सभी व्यापारिक कारोबार बन्द हो चुके थे—कवि कहते हैं—

मारे हैं हाथ पर हाथ सब याँ के दस्तकार।
और जितने पेशेवर हैं सो रोते है ज़ार-ज़ार।।
कूटे है तन लोहार तो पीटे है तन सुनार।
कुछ एक दो के काम का रोना नहीं है यार।
छत्तीस पेशे वालों के है कारोबार बन्द।।

कवि आगरा की दीन दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं—

वे वारिसी से आगरा ऐसा हुआ तवाह।
टूटी हवेलियां हैं तो फूटी शहरपनाह।।

वे गिड़गिड़ाकर परमात्मा से प्रार्थना करते हैं—

है मेरी हक से अब ये दुआ शाम और सहर।
हो आगरे की खल्क पर अब मेहर की नजर।
सब खावें पीवें, शाद रहें अपने अपने घर।
इस टूटे शहर पर भी इलाही तू फज़्ल कर।
खुल जावें एक बार तो सब कारोबार बन्द।।

कष्ट सहन करते रहने पर भी कवि आगरा को छोड़कर किसी राजदरबार में भी जाना नहीं चाहते। आगरा के जन-जीवन का सफल चित्रण कर वह देश प्रेम का पूर्ण परिचय देते हैं। वह आगरा को हृदय से प्यार करते हैं। वह आगरा पर जी जान से फिदा है :

आशिक कहो असीर, कहो आगरे का है।
मुल्ला कहो दबीर[41] कहो आगरे का है।
मुफ्लिस कहो फकीर कहो आगरे का है।
शायर कहो नज़ीर कहो आगरे का है।

कविवर नज़ीर अकबवादी ने मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया है। साधारण मानव के बचपन, जवानी और बुढ़ापे के सम्बन्ध में कदाचित् ही विश्व के किसी श्रेष्ठ साहित्य में इतनी लम्बी और सुन्दर कविताएँ लिखी गई होंगी। सूर के बाल वर्णन में श्रीकृष्ण जी के लौकिक अलौकिक दोनों रूपों का सामंजस्य हुआ है लेकिन मियाँ नज़ीर का बाल वर्णन तो सभी साधारण बच्चों से सम्बन्ध रखता है परिवार में बच्चों का लाड़ प्यार से परिपालन और संवर्द्धन सबको सुखी बनाता रहता है—

क्या दिन थे यारो वह भी थे जब कि भोले-भाले
निकली थी दादी लेकर फिरते कभी ददा ले।
चोटी कोई रखा ले बद्धी कोई पिन्हा ले।
हसली गले में डाले मिन्नत कोई बढ़ा ले।
मोटे हों या कि दुबले, गोरे हों या कि काले।
क्या ऐश लूटते है मासूम भोले-भाले।।

बच्चों की बाल-मनोवृत्ति और मस्ती के साथ ही नज़ीर अपनी प्रसन्नता और मजाकियापन को साथ लिए हुए मनोहर "बाल—लीला' लिखते हैं—

दिल में किसी के हरगिज ने शर्म ने हया है।
आगाभी खुल रहा है पीछा भी खुल रहा है।।
पहने फिरें तो क्या है, नंगे फिरे तो क्या है
यां यूँ भी वाह-वाह है और वूँ भी वाह-वाह है।
भोंपू कोई बजाले, फिरकी कोई फिराले।
क्या ऐश लूटते हैं, मासूम भोले भाले।।

उनके युवावस्था के वर्णन प्रेम, मुहब्बत, जोश, खरोश, नैन लगाने, नैन चुराने आदि की क्रियाओं से भरे हुवे है। बुढ़ापे पर लिखी गई कविताओं में तो बुढ़ापे के पूरे चित्र उतार दिये गए हैं—

जबसे सफेद हो गए जो बाल थे स्याह।
फिर वह तो खासे मौत के आकर हुए गवाह।।

---

४०. बंदी
४१. लेखक

हँस हँस के मुँह से दाँत भी उसके हुए जुदा।
रोटी लगे निगलने मसूड़ों से पुल-पुला ।।
फिर नीदो भूक उनकी में आकर हुई कमी।
गर्दन हिली, कमर झुकी और दिल हुआ हज़ी ।।
था गोश्त उनके जिस्म का वह किस कदर कड़ा।
वैसा ही आखिरश को हुआ नरम पुल-पुला ।।
जाती रही जवानी वह होशो हवास आह।
और तन भी उसका सूत हुआ मिस्ल घास आह ।।
जो भी दवा दी उसको वह आई न रास आह।
मुर्दे की तन से आने लगी उसके बास आह ।।
समझें कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।

कविवर नज़ीर अकबरावादी बहुत सरल हृदय और खुश मिज़ाज हैं उनके हृदय की सरसता बुढ़ापे के वर्णनों में भी दिखाई देती है—

क्या यारो उलट हाय गया हमसे ज़माना।
जो शोख कि थे अपनी निगाहों के निशाना।
छेड़े है कोई डाल के दादा का बहाना।
हंस कर कोई कहता है, 'कहाँ जाते हो नाना, ।।
पूछे जिसे कहता है 'वह क्या पूछे है बुड्ढे'।
आवें तो गुल होता है 'कहाँ आवे है बुड्ढे ।।
खूवां में अगर जावे तो होती है यह फकड़ी।
खींचे है कोई हाथ कोई पकड़े है लकड़ी ।।
मूँछे कहीं बत्ती के लिए जाती हैं पकड़ी।
डाढ़ी को पकड़ खींच कोई झाड़े है मकड़ी।
नकलें कोई इन पोपले होठों की बनावे।
चलके कोई कुबड़े की तरह क़द को झुकावे।
यह होठ जो अब पोपले यारो है हमारे।
इन होठो ने बोसों के बड़े रंग है मारे।
होते थे जवानी में तो परियों के गुजारे।
और अब तो चुड़ैल आन के कोई लात न मारे ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय । बुढ़ापा।
आशिक को तो अल्लाह । न दिखलाए बुढ़ापा।

जन-जीवन के कण-कण से कवि नज़ीर को प्रेम है। कौड़ी, पैसा, रुपया, जर इत्यादि पर उन्होंने सुन्दर

कविताएँ लिखी हैं। बच्चों के लिए रीछ का बच्चा, गिलहरी का बच्चा, कौआ और हिरन, पतंगबाजी, बुलबुलों की लड़ाई आदि पर भी कविताएँ कहीं हैं।

मियाँ नज़ीर ने सर्वाधिक कवितायें जीवन और संसार की क्षण भंगुरता और अनित्यता पर लिखी हैं। प्रत्यक्षदर्शी बनकर वे जीवन की नश्वरता के चित्र उपस्थित करते जाते हैं। सन्त कबीर की भाँति कवि नज़ीर भी अपने प्रतीकों और अप्रस्तुतों को समाज में फैले हुए उपकरणों से ग्रहण करते हैं। वे दुनिया को "धोखे की टट्टी" बताते हैं :

गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनियाँ को यह धोखे की सी टट्टी है॥

संसार को मरण शील बताते हुए वे कहते हैं कि संसार में आकर हर एक को मरना पड़ता है चाहे वह सुख में जीवन व्यतीत करे या दुख में।[४२] अन्त में मानव को अकेला ही जाना पड़ता है।

आखिर के तईं हंस अकेला ही सिधारा।

जीवन की नश्वरता को ध्यान में रखकर लिखी गई उनकी "बंजारानामा" नामक कविता बहुत प्रसिद्ध है :

जब चलते चलते रस्ते में यह गौन तेरी रह जावेगी।
इक बधिया तेरी मिट्टी पर फिर घास न चरने पावेगी॥
यह खेप जो तूने लादी है सब हिस्सों में बंट जावेगी।
धी, पूत, जमाई, बेटा क्या बंजारिन पास न आवेगी॥
क्या बधिया, भैंसा, बैल शुतर क्या आग धुआ और अंगारा।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा॥

नज़ीर अकबरावादी बड़े स्वाभाविक ढंग से अनेक उदाहरणों के साथ यह सिद्ध करते हैं कि संसार को समस्त वस्तुएँ नष्ट होने वाली हैं अन्त में सब को ख़ाक में मिल जाना है—

---

[४२] दुनिया में अपना जी कोई बहला के मर गया।
दिल तंगियों से कोई उकता के मर गया।
आकिल था वो आपको समझा के मर गया।
वे अक्ल छाती पीट के घबरा के मर गया।
दुख पाके मर गया कोई सुख पाके मर गया।
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया॥
(कुल्लो नफसिन जायक़तुल मौत) सबको मौत का मजा चखना है।

गढ़, कोट, तोप, रहलका, तेगो, कमानो, तीर ।
बाग़ो, चमन, महलों मकानात दिल पज़ीर ।।
होना है सबको आह ! इसी ख़ाक में ख़मीर ।
मेरी ज़ुबाँ पै अब तो यही बात है 'नज़ीर' ।।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को खाक है ।

वे स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हैं—

दुनियाँ में कोई खास न कोई आम रहेगा ।
आखिर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।

मियाँ नज़ीर अकबरावादी सर्वतो मुखी प्रतिभा के धनी थे ।

वे समकालीन और कालातीत कविताएँ साथ-साथ लिखने की अपूर्व क्षमता रखते थे । वे पतंगबाजी, तिल के लड्डू, आगरे की ककड़ी, ताजगंज का रोजा, शहर आशोब, भूचालनामा जैसी समकालीन यथार्थवादी कविताओं के साथ-साथ ही श्री कृष्ण जी की तारीफ, दुर्गा जी के दर्शन, भैरों की तारीफ, गणेश जी की स्तुति, बाँसुरी कन्हैया की, रासलीला, कालियदमन, बलदेव जी का मेला आदि कविताएँ भी लिखते हैं । वे खुदा की बातें, दुनियाँ के तमाशे, दुनियाँ धोखे की टट्टी, बंजारनामा आदि आध्यात्मिक अनुभव की सुन्दर कविताओं की संरचना करते हैं । हंसनामा उनकी सुन्दर प्रतीकारात्मक रचना है तो 'परी का सरापा' रीतिकालीन परम्परा का सुन्दर शिख-नख वर्णन ।

मियाँ नज़ीर के काव्य में गहराई और गम्भीरता है तो विषय विस्तार भी । विषय-वैविध्य उनकी परम विशेषता है । मानव जीवन का कोई कोना उनके अनुभव से छूटा नहीं है । प्रत्येक विवरण प्रत्येक सूचना, वृत्त-चित्र की भाँति पाठक के समक्ष प्रस्तुत हो जाते हैं । नज़ीर की कविता तात्कालिक जन जीवन की सच्ची रिपोर्ट है । सांस्कृतिक सुषमा की सुन्दर चित्रशाला है ।

उत्तरी भारत की, विशेषतः ब्रज की ढाई सौ साल पुरानी संस्कृति के विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त कराने में उनकी वाणियाँ बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है ।

मियाँ नज़ीर अकबरावादी का यह दुर्भाग्य रहा कि उर्दू शायरी के लकीर के फकीर न बनने के कारण उर्दू वालों ने उनको बहुत समय तक कवियों की श्रेणी में ही नहीं रखा । इधर हिन्दी के विद्वान् उनको उर्दू का ही कवि मानते रहे उनकी मृत्यु के लगभग सौ वर्ष बाद उर्दू वालों ने उनकी सुध ली । लेकिन आज उर्दू के अनेक कवि नज़ीर अकबरावादी के आदर्श पर रचनाएँ करके समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं । हिन्दी में यत्र तत्र उनकी चर्चा है परन्तु उनको वास्तविक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में अभी समय लगेगा । विदेश के विद्वानों ने नज़ीर अकबरावादी के काव्य को बहुत पसन्द किया है यूरोप के प्रसिद्ध विद्वान डा० फेलन का कथन है—

"नज़ीर ही एक ऐसे कवि हैं जो यूरोपियन की दृष्टि में कवि कहे जाने के अधिकारी हैं उनकी सब कविताओं ने आम लोगों के दिलों में राह की है । लोग उनकी कविताओं को सड़कों, गलियों और खेतों में गाते फिरते हैं ।

वही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने बच्चों और माँ की ममता पर कविताएँ लिखी हैं और दुखी लोगों के साथ हमदर्दी दिखाई है । वह स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे और भाग्य दुर्भाग्य के बीच भेद नहीं करते ।”

फिराक गोरखपुरी का कथन है—

नज़ीर की कलम सावन की घटा है जो सैकड़ों शीर्षकों पर बरस जाया करती है । होली, दिवाली, तैराकी, रीछ का बच्चा, बचपन, जवानी, बुढ़ापा, चाँदनी, बरसात, और फिसलन, उमस, कोराबर्तन, ककड़ी, तरबूज, आँधी, जाड़े की बहार, मौत का झोपड़ा, आइना, कलजुग, मुफ्लिसी, पैसा, रोटियाँ, चपाती, आदमी, कन्हैया जी का जन्म, महादेव जी का ब्याह, हज़रत अली, गुरू नानक की वन्दना इत्यादि विषय नजीर की कलम की नोक पर थे।

वे जब तक जीवित रहे उर्दू के आलोचक उन्हें बाज़ारू कवि कहते रहे । परन्तु बीसवी सदी के लिखने वालों ने नजीर की महानता को पहचाना और अब उनको अठारहवीं सदी के जनसाधारण के जीवन का सबसे बड़ा गायक माना जाता है । इसके अतिरिक्त और किसी ने इस काल में ऐसी कवितायें नहीं लिखीं ।

कविवर नज़ीर अकबरावादी की रचनाओं का अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि वे आधुनिक युग बोध के आधुनिक हिन्दी साहित्य के पहले सफल कवि हैं । वर्तनी भेद के कारण उनको हिन्दी साहित्य के इतिहास में सम्मिलित न करना अनुपयुक्त है ।

मियाँ नज़ीर की भाषा

शक्तिनिपुणता लोकशास्त्र काव्यादिवेक्षणात्’’ में से मियाँ नज़ीर में ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा और लोक जीवन की बारीकी से निरखने-परखने की शक्ति परम अद्भुत थी । विषय को देखते, सोचते ही शब्दों के कैमरों में पूरा का पूरा चित्र उतार देने में वे बहुत सफल थे, उनको विविध भाषाओं का ज्ञान था । अरबी, फारसी, उर्दू, हिन्दी, ब्रज, अवधी, पंजाबी आदि पर उनका समान अधिकार था । नज़ीर अकबरावादी की भाषा बड़ी समर्थ और प्रभावोत्पादक है। भावों को सफलतापूर्वक प्रकट करने की अद्भुत शक्ति उनकी भाषा में है। नज़ीर अकबरावादी शब्दों के जादूगर और वाणी के बादशाह हैं । भाषा उनके भावों को सफलतापूर्वक प्रकट करने को मजबूर सी लगती है । भाव जागे और भाषा ने सरलता और सफलता के साथ शब्द-चित्र उतारने शुरू किए । वे खड़ी बोली के समर्थक थे ।

नज़ीर अकबरावादी की रचनाओं का जन-मन पर अधिक प्रभाव पड़ने का एक बड़ा रहस्य यह है कि उनकी भाषा विषयानुकूल और पात्रानुकूल है । जिस प्रकार के विषय हैं उसी प्रकार की भाषा का प्रयोग मियाँ नज़ीर ने किया । वह नाटकीय दृश्य उपस्थित कर देने में सफल है । विषय के सांग चित्र उपस्थित होते जाते हैं । मुसलमानों से सम्बन्ध रखने वाले गम्भीर विषयों का वर्णन करने में अरबी फारसी के तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक है । हम्द, मदह और मौजिज़ा लिखते समय उनकी भाषा में व्याकरण बद्ध अरबी फारसी की तत्सम शब्दावली का बाहुल्य है । अल्लाह की स्तुति करते समय कवि ने अरबी फारसी की तत्सम शब्दावली का प्रयोग अधिक किया है ।

अता की इन्हें दौलते–मा’ रिफ़्त ।
इबादत इताअत निको मंज़िलत

हया, हुस्नो उल्फत, अदब, मस्लहत ।
तमीज़ों सुखन, खुल्क खुश मक्रमत ।
फरावाँ दिए और नाज़ो—नईम ॥

इसी प्रकार मुस्लिम त्यौहारों (ईद, शबरात) या मुस्लिम बुजुर्गों का वर्णन करने में भी अरबी फारसी शब्दावली बहुलभाषा का प्रयोग हुआ है । "ईद", शबरात" और हज़रत सलीम चिश्ती का उर्स नामक रचनाएं इसके प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत की जा सकती है [४३] उर्स का वर्णन अरबी फारसी बहुल शब्दावली में है ।

हिन्दू देवी देवताओं की स्तुति और महिमा गान करते समय शुद्ध और परिष्कृत हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है । यथा—

"फिर आया वहाँ इक वक्त ऐसा जो आए गर्भ में मन मोहन ।
गोपाल, मनोहर, मुरलीधर, श्रीकृष्ण किशोरन कमलनयन ।
घनश्याम, मुरारी, बनवारी, गिरधारी सुन्दर श्याम वरन ।
प्रभुनाथ, बिहारी कान्ह लीला सुखदाई जग के दुख भंजन ॥

हिन्दू त्यौहारों राखी, बसंत, होली, "जन्म कन्हैया "जी के वर्णन में

हिन्दी शब्दों का प्रयोग अधिक है । इसी प्रकार दसम कथा, किशन व नरसी मेहता, सुदामा चरित्र, महादेव जी का ब्याह आदि में भी हिन्दी के शब्दों का बाहुल्य है । ब्रज के मेले ठेले, रास आदि के वर्णन में ऐसी सीधी, सरल स्वाभाविक, ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है कि प्रतिपाद्य विषय का सांग मनोहर चित्र आ उपस्थित होता है—बलदेव ज़ी के मेले का वर्णन देखें—

कोई आकर बहाने और मिस से ।
मिल रहा है मिला है दिल जिस से ।
होते है आ मिलाप जिस तिस से ।
लड़ रहा है कोई कहीं रिस से ।
कोई खो गया है मजलिस से ।
कौन चिल्लाए पूछिए किस से ।
कहीं बाजू में लग रहे घिस्से ।
और धकापेल और घमाघिस्से ॥

---

४३. तुम सबसे हो मुअज्ज़म और सबसे हो मुकर्रम ।
ख़िलकत हुई तुम्हारी सब नूर से मुजस्सम ।
और खूबियाँ जहाँ की तुम पर हुई मुसल्लम ।
अब्रे करम से तेरे दायम हैं सब्जो खुर्रम ।।
आलम का सब गुलिस्तां हज़रत सलीम चिश्ती ।

इसमें तिस से, रिस से, घिस्से, धकापेल, और घमाघिस्से आदि शब्द ब्रज क्षेत्र के प्रचलित शब्द हैं। इनके प्रयोग से ब्रज के मेले का वस्तविक चित्र उपस्थित हो गया है।

कोरा बर्तन, पंखा, बटुआ, तरबूज, आँधी आदि साधारण विषयों के वर्णन में शब्दावली भी साधारण ही रही है।

गिलहरी का बच्चा, रीछ का बच्चा आदि पद्य बच्चों के लिये लिखी गई है। इनकी शब्दावली सरल है। सरल खड़ी बोली का प्रयोग है।

लिये फिरता है यूं तो हर बशर बच्चा गिलहरी का।
हर उस्ताद के रहता है घर बच्चा गिलहरी का॥
वह लेकिन है हमारा इस क़दर बच्चा गिलहरी का
दिखा दें हम किसी लड़के को गर बच्चा गिलहरी का
तो दम में लोट जाए देखकर बच्चा गिलहरी का॥

कल राह में जाते जो मिला रीछ का बच्चा।
ले आए वहीं हम भी उठा रीछ का बच्चा।
सौ नैमते खा–खाके पला रीछ का बच्चा।
जिस वक्त बड़ा रीछ हुआ रीछ का बच्चा॥
जब हम भी चले साथ चला रीछ का बचा॥

आगरे की ककड़ी और आगरे की तैराकी नामक पद्यों में ककड़ी बेचने वाले और तैरने वाले लोगों की भाँति ही मियाँ नज़ीर ने भी 'इस्कदरे की ककड़ी' और 'दिलदार पैरते हैं' का प्रयोग किया है। इसी प्रकार—

झड़ बाँध महावत पड़ती हो और तिस पर लहरें ले लेकर
चिल्ला ख़म ठोंक उबलता हो तब देख बहारे जाड़े की।

मैं जन प्रचलित भाषा का प्रयोग हुआ है। नज़ीर की भाषा आगरे की खड़ी बोली है उसमें उस क्षेत्र की ब्रज भाषा का सुन्दर सामंजस्य है।

मियाँ नज़ीर यथार्थवादी कवि हैं और उनकी शब्द योजना भी यथार्थवादी ही है। जैसे—

वो कहती है भैना ये गुजरती नहीं 'ढड्डो'।
वो कौन सा दिन होगा जो मर जायगी 'झाँपो'
अब तो मुझे 'डायन' सी नजर आती है बुढ़िया
'पाखे पछेत' सो गए, छप्पर फिसल पड़ा।
तुम दर को 'झींकते' हो मेरा घर फिसल पड़ा॥

कहीं कहीं कवि ने शब्दों की ध्वन्यात्मक योजना से ही दृश्य सा उपस्थित कर दिया है।

होता है नाच घर–घर घुघरू खड़क रहे हैं।
पड़ता है मेह झड़ाझड़ तबले खटक रहे हैं॥

मियाँ नज़ीर अकबरावादी को 'खूब' और 'ज़ोर' शब्द प्यारे हैं। किसी विषय की अतिशयता प्रकट करने को वे इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हैं यथा—

क्या। खूब नर्मोनाजुक इस आगरे की ककड़ी।
हम भी बुलाके खूब से नचवावें हीजड़े।
हमें अदाएँ दीवाली की ज़ोर माती हैं।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उनकी भाषा को खड़ी बोली परम्परा की महत्वपूर्ण कड़ी मानते हैं। नज़ीर अकबराबादी ने कृष्ण लीला सम्बन्धी बहुत से पद्य हिन्दी खड़ी बोली में लिखे।[४४] डा० विश्वनाथ प्रसाद के मतानुसार खासकर आगरे की बोली तो उनकी रचनाओं में अपनी पूरी छवि और माधुर्य के साथ सर्गबद्ध हुई है।

भावनात्मक एकता

भारतवर्ष एक विस्तृत विशाल देश है। यहाँ अनेक जाति, वर्ण, धर्म और सम्प्रदाय के व्यक्ति निवास करते हैं। अनेक भाषा बोलते और अनेक प्रकार की वेशभूषा धारण करते हैं। देश का यह बड़ा दुर्भाग्य है कि यहाँ जाति-धर्म-गत ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध की भावना समय असमय भयंकर ज्वालामुखी के रूप में भड़क उठती है। है। दस-बीस हताहत होते हैं, हजारों लाखों की सम्पत्ति नष्ट होती है। भय, त्रास और अशान्ति का प्रकोप होता है। विकास की गति धीमी पड़ जाती है।

हम यह भूल गए हैं कि हमारे मेल में ही देश का लाभ है। मज़हबी रीति-रिवाजों या पूजा पाठ के तरीकों के अलग होते हुए भी हमें एक मिली जुली सामाजिक जिन्दगी, मिला जुला रहन सहन अपनाना होगा। सब धर्मों की पवित्र पुस्तकों को प्रेम से पढ़ना और उनके उपदेशों को ग्रहण करना होगा। धर्मगत भेदभाव को भुलाकर मानव धर्म का पाठ पढ़ाना और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को स्वीकार करना होगा—

आज देश को आवश्यकता है शान्ति, श्रम, संयम और स्नेह की, भ्रातृत्व भाव और भावात्मक एकता की। धर्म और मज़हब के नशे को त्यागकर हम एक होकर देश का नव-निर्माण करें और मानवता का प्रसार करें। इस प्रकार का वातावरण उपस्थित करने में भ्रातृत्व भाव और भावात्मक एकता के रंग में रंगे हुए कवियों और शायरों की रचनाएँ हमारी बहुत सहायक हो सकती हैं। इस प्रकार के उदारमना विस्तृत और विशाल हृदय कवियों में कविवर नज़ीर अकबरावादी सर्वश्रेष्ठ हैं। वे किसी धर्म या मज़हब की, पंथ या सम्प्रदाय की, शाखा या मत की शृंखलाओं में बंधे हुए नहीं हैं। वे किसी भी धर्म, पंथ या मत का खण्डन-मण्डन नहीं करते। सभी धर्मों के महान्

---

[४४] हिन्दी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सं० २०४० वि० पृष्ठ ४०

और सम्मान्य महापुरुपों के प्रति उनके हृदय में आदर भाव श्रद्धा है। सिख, हिन्दू और मुसलमान सबके आराध्य और महान् पुरुषों के प्रति वे श्रद्धा, सहित नमन करते हैं। गुरू नानक शाह की महिमा का वर्णन करते हुए वे कहते हैं—

दुख दर्द में अपने ध्यान लगा जिस वक्त गुरू का नाम लिया।
पल बीच गुरू ने आन उन्हें खुश हाल किया और थाम लिया॥
इस बख्शिश के इस अज़मत के हैं बाबानानकशाह गुरू।
सब सीस नवा अरदास करो हरदम बोलो वाह! गुरू॥

श्रीकृष्ण की लीलाओं का सरस गान करते हुए उन्होंने कहा है—

यह लीला है उस नन्द ललन, मन मोहन जसुमति छैया की।
रख ध्यान सुनो दंडौत करो जै बोलो किशन कन्हैया की॥

भैरों जी की प्रतिमा के सामने वे गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करते हैं —

मेरा तो कोई इस जा, अपना है ना बिगाना।
बेकस हूं, बे हुनर हूं, और है बुरा ज़माना।
ऐ बेकसों के वाली, मेरी मदद को आना॥
तेरे सिवा किसी जा, मेरा नहीं ठिकाना॥
दिन रात है यह मेरा, तुझसे सवाल भैरों।
अब दर्दो ग़म से आकर मुझको संभाल भैरों।
तेरी सरन गही है कर तू निहाल भैरों॥

हज़रत मुहम्मद साहब को वे दोनों जहान का सहारा बताते हैं—

यां भी तुम वां भी तुम्हीं हो या मुहम्मद मुस्तफा।

और खुदा की हम्द (ईश + स्तुति) में वे कहते हैं—

तेरा शुक्रे ऐहसां हो किससे अदा।
हमें मेहर से तूने पैदा किया।
नज़ीर इस सिवा क्या कहे सर झुका।
यह सब तेरे इकराम हैं या करीम॥

इस प्रकार मियां नज़ीर अकबरावादी में सभी धर्मों के प्रति समान श्रद्धाभाव दिखाई देता है। वे भारतीय धर्म निरपेक्षता के साकार प्रतीक हैं। धर्म और मजहब की दीवारों को तोड़ फोड़ कर वे ऊँचे से ऊँचे उठते चले गए हैं और उसी ऊँचाई से वे घोषणा करते हैं—यहाँ कोई धर्म और मजहब का झगड़ा न करे। जो जहाँ पर है वहीं खुश रहे। चाहे गले में यज्ञोपवीत पहने कोई पक्का हिन्दू हो अथवा बगल में कुरान शरीफ लिए हुए कोई पक्का

मुसलमान । इसमें कोई अन्तर नहीं । सच्चा इन्सान तो इंसानियत को प्यार करने वाला होता है वह हिन्दू या मुसलमान नहीं होता ।

झगड़ा न करे मिल्लतो मज़हब का कोई यां ।
जिस राह में जो आन पड़े खुश रहे हर आं ।।
जुन्नार गले या कि बगल बीच हो कुरआं ।
आशिक तो कलन्दर है न हिन्दू न मुसल्मां ।।

मेरा विश्वास है कि देश से धार्मिक ईर्ष्या द्वेष मिटाने, सहृदयता, एकता और मेलजोल का वातावरण बनाने, सच्ची धर्म निरपेक्षता का प्रसार करने और मानव धर्म की स्थापना करने में मियां नज़ीर अकबराबादी की रचनाएँ अत्यन्त सहायक सिद्ध होंगी ।

—०—

निवेदन

हिन्दी में कविवर नज़ीर अकबराबादी की रचनाओं के संग्रह का अभाव खटकता रहा है । नज़ीर अकबराबादी की रचनाओं के उर्दू में प्रकाशित विभिन्न संग्रहों कुल्लियातों) का अध्ययन करके यह ज्ञात हुआ कि उनमें पाठ-भेद बहुत है । किसी एक संग्रह के पाठ को पूर्ण शुद्ध कह पाना कठिन है । इसी से मैंने विभिन्न कुल्लियातों के पाठों में से शुद्धतम पाठ को प्रमुखता प्रदान करते हुए अन्य पाठों को पाद-टिप्पणी में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । कठिन शब्दों के अर्थ भी नीचे दिये गये हैं । अध्ययन के लिए निम्नलिखित कुल्लियातों को आधार बनाया गया है ।

१. कुल्लियाते नज़ीर— मौ० सै० मुहम्मद अब्दुल गफ़ूर "शहवाज़"
प्रकाशक— मुंशी नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ सन् १९०० ई०
संकेत चिन्ह = श०

२. कुल्लियाते नज़ीर अकबरावादी— कुतुबुद्दीन अहमद क़ादरी
प्रकाशक— नामी प्रेस, लखनऊ सन् १९०१ ई०
संकेत चिन्ह— क़ा०

३. कुल्लियात नज़ीर-- मौ० अब्दुलबारी "आसी"
प्रकाशक—तेजकुमार वारिस नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ सन् १९५१ ई०
संकेत चिन्ह=आ०

४. गुलज़ारे नज़ीर — सलीम जाफ़र
प्रकाशक—हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद सन् १९५१ ई०
संकेत चिन्ह--जा०

इन कुल्लियातों में प्राप्त समस्त रचनाओं के अतिरिक्त विभिन्न संग्रहालयों, पुस्तकालयों तथा विद्वानों से प्राप्त नज़ीर अकबराबादी की अन्य रचनाओं को भी इस संग्रह में संगृहीत किया गया है। स्वर्गीय डा० गुरुमुखराम टंडन (माईथान, आगरा) के पास नज़ीर अकबराबादी की रचनाओं का बड़ा संग्रह था। डाक्टर साहब से प्राप्त बहुत सी नई रचनाओं को इस संग्रह में सँजोया गया है। मैं उनके तथा अन्य सभी विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैंने यह कार्य सन् १९८३ में सम्पूर्ण किया था। लम्बे अन्तराल के अनन्तर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा इसका प्रकाशन मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता प्रदायक है। मैं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान तथा उसके प्रकाशन विभाग का अत्यन्त आभारी हूँ। पुनार मुद्रक के स्वामी श्री विश्व मोहन मेहता के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ। जीवन सहचरी श्रीमती शरीफुन्निसा बेगम का आभार प्रदर्शित कर मैं उनका महत्व कम नहीं करना चाहता।

अन्त में मैं परमपिता परमात्मा की उस असीम अनुकम्पा के प्रति अत्यन्त श्रद्धावनत हूँ जिसने मेरे इस कार्य को सम्पन्न कराया।

विनीत
नज़ीर मुहम्मद

राहतकदा
डिग्गी रोड
अलीगढ़-२०२ ००१

विषय-सूची

विषय	पृ०सं०
प्रकाशकीय	
भूमिका	i
हम्द (ईश-स्तुति)	१
ऐ बरतर अज़ ख़्यालो क़यासो गुमाने मा	३
मुसद्दस करीमा दर मुनाजात बारीएतआला	६
परमात्मा की याद	८
इश्क़ अल्लाह (१)	१२
इश्क़ अल्लाह (२)	१७
खुदा की तारीफ	१८
नात ह० मुहम्मदरसूलुल्लाह	२२
दरसनाए पैग़म्बरे खुदा	२५
नात हज़रत मुहम्मद	२७
मोजिज़ा हज़रत अली अलैहिस्सलाम	३२
मन्क़बत हज़रत अली	३६
मन्क़बत अमीरुलमोमिनीन	४२
मन्क़बत दरशाने अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली	४४
ज़ोरे बाज़ूए अली	४८
ख़ैबर की लड़ाई	५०
मौजिज़ा हज़रत अब्बास बिन अली करमुल्लाह वजह	५६
तारीफ़ पंजतन पाक	६६
मदह हज़रत सलीम चिश्ती	६८
तारीफ़ गुरू गंजबख़्श की	७१

गणेश जी की स्तुति ७३
हरि की तारीफ ७६
हरि जी का सुमिरन ७७
कृष्ण कन्हैया की तारीफ़ ७९
श्री कृष्ण जी की तारीफ में ८१
गुरू नानक शाह ८४
चिड़ियों की तस्बीह ८६
तारीफ भैरो की ८९
दुर्गा जी के दर्शन ९३

सूफ़ियाना नज्में

आशिक़ों की भंग (१) ९५
आशिक़ों की भंग (२) ९७
आशिक़ों की सब्ज़ी १००
इश्क की मस्ती १०२
दुनियां बदले की जगह है १०४
दुनियां धोके की टट्टी है १०६
कल जुग ११०
दुनियां भी क्या तमाशा है ११३
ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ११८
तवक्कुल १२१
ग़फ़लत का ख़्वाब १२४
तंबीहुल गाफ़िलीन १२७
ख़ुदा की दी हुई नेमते १३१
फ़ना (१) (मौत) १३३
फ़ना (२) (मौत) १३६
मौत का धड़का १३९
मौत की फ़िलासफी १४१
मौत १४४
दुनियां में १४९
दुनियां के मरातिब क़ाबिले ऐतबार नहीं १५३
मरातिब दुनिया महज़ बेसबात हैं १६०
ख़ुशी से दान देने की प्रेरणा १६३

दुनियाँ के तमाशे १६६
फ़क़ीरों की सदा (१) १६८
फ़क़ीरों की सदा (२) १७३
बंजारानामा १७६
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा १७९
तन का झोंपड़ा १८४
तवक्कुलो तर्को तजरीद १८६
बम शंकर बोलो हरी-हरी १८९
क़ुदरत का गुलदस्ता १९२
तौहीद १९६
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं २००
दम का तमाशा २०४
अजल का पयाम २०६
दम ग़नीमत है २१०
वज्द—व—हाल २१२
रोटियाँ २१४
चपाती २१८
पेट की फ़िलासफ़ी २२१
पेट २२५
दुआए तन्दुरूस्ती २२६
शुक्र तन्दुरूस्ती १२९
खुशामद २३१
मज़म्मते अहले दुनियाँ २३६
आदमीनामा २३९

बुद्धिमानी की बातें

कौड़ी २४३
पैसा (१) २४६
पैसा (२) २४९
रुपए की फिलासफी २५३
ज़र २५५
मुफ़्लिसी २५९
इफ़्लास का नक्शा २६६
आटे दाल का भाव (१) २६९

आटे दाल का भाव (२) २७१
भजन (१) २७३
भजन (२) २७५
भजन (३) २७६

मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाये

✓ बचपन २७८
बचपन के मज़े २८०
जवानी २८२
✓ जवानी के मज़े २८३
बुढ़ापा २८७
बुढ़ापे की तअ़ल्लियाँ २९८
बुढ़ापे की आशिक़ी ३०१
जवानी बुढ़ापे की लड़ाई ३०५
मवाज़नए ज़ोरो कमज़ोरी ३१०
लूली पीर (बूढ़ी वेश्या) ३१२

त्यौहार

मुस्लिम त्यौहार

शब्बरात (१) ३१५
शब-बरात (२) ३१९
शब-बरात (३) ३२०
ईद (१) ३२३
ईद (२) ३२४
ईदुलफ़ित्र (३) ३२६
ईदगाह अकबराबाद (आगरा) ३२९

हिन्दू त्योहार

होली (१) ३३१
होली (२) ३३३
होली (३) ३३५

होली (४) ३३८
होली (५) ३४१
होली (६) ३४६
होली की बहारें (७) ३४८
होली (८) ३५०
होली (९) ३५२
होली (१०) ३५३
होली (११) ३५५
होली (१२) ३५७
होली (१३) ३५८
होली (१४) ३५८
होली पिचकारी (१५) ३५९
होली (१६) ३५९
होली (१७) ३६१
होली (१८) ३६४
होली (१९) ३६६
होली (२०) ३६७
फ़कीर की होली ३६८
दिवाली (१) ३७०
सामान दिवाली का (२) ३७१
दिवाली (३) ३७५
राखी ३७९

मेले

हज़रत सलीम चिश्ती का उर्स ३८१
बल्देव जी का मेला ३८४
कंस का मेला ३९४
लल्लू जगधर का मेला ३९८
आगरे की तैराकी ४०४
कनकौए और पतंग (निर्जला) ४०७

खेल तमाशे

कबूतरबाज़ी ४१२
बुलबुलों की लड़ाई ४१४

पशु-पक्षी वर्णन

बया	४१५
गिलहरी का बच्चा	४१८
रीछ का बच्चा	४२०
अज़दहे का बच्चा	४२३

प्रकृति वर्णन

रात	४२६
बहार	४२७
चांदनी	४३०
चांदनी रात	४३२
अंधेरी रात	४३४
आंधी	४३६
शबे ऐश (झड़ी)	४३९
बरसात और फ़िसलन	४४१
बरसात का तमाशा	४४३
बरसात की बहारें	४४८
बरसात की उमस	४५८
आशिक का झूला	४६०
जाड़े की बहारें	४६२
जाड़े के मौसम में तिल के लड्डू	४६३
बहार	४६५
बसंत (१)	४६६
बसंत (२)	४६७
बसंत (३)	४६९
बसंत (४)	४६९
बसंत (५)	४७०
बसंत (६)	४७१
बसंत (७)	४७३
बसंत (८)	४७५
बसंत (९)	४७६
बसंत (१०)	४७७
बसंत (११)	४७७

नगर-वर्णन

शहर अकबराबाद (आगरा की तारीफ़) ४७६
ताजगंज का रोज़ा (ताजमहल) ४८१
शहर आगरा ४८३
शहरे आशोब ४८४
भूचालनामा ४९२

विविध-वर्णन

✓ जुल्फ के फन्दे ४९९
परी का सराया ५०१
समधिन (१) ५०६
समधिन (२) ५०६
सच्चे नक़्श कुश (हीजड़े) ५०७
मोती (१) ५०९
मोती (२) ५११
आरसी ५१२
पहुंची ५१२
बाला (१) ५१३
बाला (२) ५१४
बाला (३) ५१४
अंगिया ५१६
इज़ारबन्द (कमरबन्द) ५१६
बटुआ (१) ५१७
बटुआ (२) ५१८
ताबीज़ (१) ५१९
ताबीज़ (२) ५२०
ख़त ५२१
मेंहदी (१) ५२२
मेंहदी (२) ५२२
हिना (मेंहदी) ५२४
कोरा बर्तन ५२४
पान ५२७
हुक्का ५२८

पंखा (१) ५२९
पंखा (२) ५३१
पंखिया ५३२
✓आईना ५३३
आगरे की ककड़ी ५३५
तरबूज़ ५३७
संतरा ५४०
खरबूज़े ५४०
नारंगी ५४१
जलेबियाँ ५४३
कोठा (१) ५४४
कोठा (२) ५४५
कोठे पर ५४६
चूहों का अचार ५४७
मक्खियां ६५१

कथा-कहानियाँ

जनम कन्हैया जी ५५४
बालपन-बाँसुरी बजैया का ५६१
बाँसुरी ५६८
खेलकूद कन्हैया जी का (कालिय-दमन) ५७०
कन्हैया जी की रास ५७३
ब्याह कन्हैया का ५७६
दसम कथा (रुकमनी का ब्याह) ५७९
हरि की तारीफ़ ५८९
श्रीकृष्ण व नरसी मेहता ५९५
सुदामा चरित ६०२
महादेव जी का ब्याह ६०८
हंसनामा ६२५
किस्सा लैला मजनूं ६२९
पोदने और गुढ़ पंख की लड़ाई ६४४
कौवे और हिरन की दोस्ती ६४६

विविध

ग़ज़ल (१)	६४९
ग़ज़ल (२)	६५०
ग़ज़ल (३)	६५०
ख़मसा (१)	६५१
ख़मसा (२)	६५२
विसालेयार (१) (दोस्त से मुलाकात)	६५४
विसालेयार (२)	६५७
दिलबरी	६६०
शौके दीद	६६२
गिरफ्तारिये दिल	६६४
राज़ी व रज़ा	६६६
फ़हमाइश	६६८
गिला	६७१
अलफिराक	६७४
सोज़े फिराक़	६७६
दोहा	६७९

आदमी

यां आदमी ही नार है और आदमी ही नूर ।
यां आदमी ही पास है और आदमी ही दूर ।।
कुल आदमी का हुस्नो क़बह में है यां ज़हूर ।
शैतां भी आदमी है जो करता है मको ज़ूर ।।
और हादी रहनुमा है सो है वह भी आदमी ।

यां आदमी पे जान को वारे है आदमी ।
और आदमी पे तेग़ को मारे है आदमी ।।
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी ।
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी ।।
और सुन के दौड़ता है सो है वह भी आदमी ।

—नज़ीर अकबराबादी

हम्द[१] (ईश-स्तुति)

इलाही[२] तू फ़य्याज़[३] है और करीम[४] ।
इलाही तू ग़फ़्फ़ार[५] है और रहीम[६] ।
मुक़द्दस[७] मुअल्ला[८] मुनज्ज़म[९] अज़ीम[१०] ।
न तेरा शरीक[११] और न तेरा सहीम[१२] ।
तेरी ज़ाते[१३]-वाला[१४] है यकता[१५] क़दीम[१६] ॥ १ ॥

तेरे हुस्ने-क़ुदरत[१७] ने याकिर्दगार[१८] ।
किये हैं जहां में वह नक़्शो-निगार[१९] ।
पहुँचती नहीं अक़्ल उन्हें ज़र्रा-वार[२०] ।
तहय्युर[२१] में है देखकर बार-बार ।
हैं जितने जहां में ज़हीनो-फ़हीम[२२] ॥ २ ॥

ज़मीं पर समावात[२३] गर्दा[२४] किये ।
नजूम[२५] उनमें क्या-क्या दुरख़्शाँ[२६] किये ।
नबातात[२७] बेहद नुमायां[२८] किये ।
अयाँ[२९] बह्र[३०] से दुर्रो-मरजां[३१] किये ।
हजर[३२] से जवाहर भी और ज़र्रो-सीम[३३] ॥ ३ ॥

---

१. ईश्वर की स्तुति २. मेरा ईश्वर, ३. बहुत देने वाला ४. मेहरबानी करने वाला, मेहरबान ५. बहुत्र अधिक क्षमा करने वाला ६. रहम करने वाला ७. पवित्र, पाक ८. श्रेष्ठ, उत्तम ९. संघटित १०. श्रेष्ठ ११. साझी १२. भागीदार १३. हस्ती, अस्तित्व १४. श्रेष्ठ १५. अनुपम १६. पुरातन, अनादि १७. निर्माण-कौशल १८. विधाता १९. चित्र विचित्र २०. तनिक भी २१. हैरानी २२. बुद्धिमान २३. आकाश २४. घूमने वाले २५. सितारे २६. चमकने वाले २७. वनस्पतियाँ २८. प्रकट २९. प्रकट ३०. समुद्र ३१. मोती-मँगा ३२. पत्थर ३३. सोनाचांदी

शगुफ़ता[1] किये गुल ब-फस्ले-बहार।
अनादिल[2] भी और क़ुमरिओ कब्को सार[3]।
बरो-बर्गो--नख़्लो-शजर[4] शाख़सार[5]।
तरावत[6] से ख़ुशबू से हंगाम-कार[7]।
रवां की सबा[8] हर तरफ और नसीम[9] ॥ ४ ॥

बयां कब हो ख़लक़त[10] की अनवाअ[11] का।
जो कुछ हस्र[12] होवे तो जावे कहा।
ख़ुसूसन बनी-आदमे ख़ुशलक़ा[13]।
शरफ़[14] उन सभों में उन्हीं को दिया।
ब (१) इस्लामो-ईमानो-दीने-क़दीम[15] ॥ ५ ॥

अता की इन्हें दौलते मारिफ़त[16]।
इबादत[17] अताअत[18] निको[19]-मंज़िलत[20]।
हया, हुस्नो-उल्फ़त, अदब, मस्लहत।
तमीज़े-सुख़न[21] ख़ुल्क़े[22] ख़ुश-मक्रमत[23]।
फ़रावाँ[24] दिये और नाज़ो-नईम[25] ॥ ६ ॥

तेरा शुक्रो ऐहसां हो किस से अदा।
हमें मेहर से तूने पैदा किया।
किये और अल्ताफ़[26] बे इंतिहा[27]।
"नज़ीर" इस सिवा क्या कहे सर झुका।
यह सब तेरे इकराम[28] हैं, या करीम[29] ॥ ७ ॥

---

१. प्रफुल्लित २. बुलबुल ३. फ़ाख़्ता और तीतर
४. फल, पत्ते, पेड़, पौधे ५. जंगल ६. नमी ७. भारी ८. सुबह की हवा ९. ठंडी हवा १०. सृष्टि ११. क़िस्मों १२. सीमा
१३. सुन्दर मानव जाति १४. सम्मान १५. इस्लाम पुरातन धर्म है १६. ईश-ज्ञान-रूपी धन १७. पूजा
१८. आज्ञाकारिता १९. उत्तम, श्रेष्ठ २०. आदर, सत्कार २१. बोलने की शिष्टता २२. शिष्टाचार २३. दया-भाव
२४. अत्यधिक २५. ऐश्वर्य २६. कृपाएं २७. अत्यधिक २८. कृपाएं २९. कृपालु पाठान्तर–(१) श० आ० 'प'

ऐ बरतर अज़ ख़्याले क़्यासो गुमाने मा[+]

यारब[१] है तेरी ज़ात[२] को दोनों जहां में बरतरी[३]।
है याद तेरे फ़ज़्ल[४] को रस्मे ख़लाइक़[५] परवरी[६]।
दाइम[७] है ख़ासो आम[८] पर लुत्फ़ो[९] अता हिफ़्ज़[१०] आवरी।
क्या उनसिया[११], क्या तायरां[१२], क्या वह्‌श[१३], क्या जिन्नों[१४] परी[१५]।
पाले है सबको, हर ज़मां तेरा करम[१६] और यावरी[१७] ॥ १ ॥

तू ख़ालिक़े[१८] अर्ज़ो समां[१९], तू हाकिमे क़ुदरत नुमा[२०]।
है हुक्म तेरा जा बजा[२१], ले अर्श[२२] ता तहतुस्सरा[२३]।
बरतर[२४] मुक़द्दस[२५], ज़ुलउला[२६], बन्दे[२७] तेरे शाहो[२८] गदा[२९]।
दुनियाओ[३०] दीं की या खुदा बरहक़[३१] तुझी को है रवा[३२]।
फरमारवाई[३३], हाकिमी, शाही[३४], ख़ुदाई, सरवरी[३५] ॥ २ ॥

---

१. ईश्वर २. व्यक्तित्व ३. श्रेष्ठता ४. कृपा ५. जनसाधारण ६. पालन करना ७. सदा ८. प्रत्येक व्यक्ति पर ९. आनन्द १०. रक्षा हिफाजत ११. स्त्रियां १२. पक्षी १३. जंगली जानवर १४. आग से पैदा होने वाले, दिखाई न देने वाले प्राणी १५. अप्सरा १६. कृपा १७. सहायता १८. उत्पत्तिकर्ता, पैदा करने वाला १९. पृथ्वी-आकाश २०. दिखाने वाला २१. जगह-जगह २२. आकाश २३. पाताल २४. श्रेष्ठ २५. पाक, पवित्र २६. बहुत बड़ा २७. ग़ुलाम २८. बादशाह २९. फ़क़ीर ३०. दुनियां और धर्म ३१. दुरुस्त, सच ३२. उचित, वाजिब ३३. बादशाही ३४. बादशाही ३५. बुज़ुर्गी।

[+] वह व्यक्तित्व जो हम लोगों के ख़्याल गुमान और वहम से भी परे है। (शेख़ सादी की "करीमा" नामक मसनवी के अशआर के आधार पर)

क़ुदरत ने तेरी हर ज़मां[१] लेकर ज़मीं ता[२] आस्मां ।
क्या क्या बहारें की अयां,[३] क्या क्या दिखाईं ख़ूबियां ।
मर्ग़ूब[४] रंगआमेज़िया,[५] महबूब हुस्न आराइयां[६] ।
हक़[७] तेरी सनअत[८] पै यहाँ हैं खत्म लारेबो[९] गुमां ।[१०]
रंगीनी-ओ, तर्राही[११], आं, नक्क़ाशी ओ, सूरत (१) गरी[१२] ॥ ३ ॥

तूने बनाये सब फ़लक[१३] पैदा किये हूरो[१४] मलक[१५] ।
इन्सां सबीहो[१६] पुर नमक, हैवां[१७] अजायब[१८] यक बयक[१९] ।
हर जा तजल्ली[२०] और झमक बे इन्तिहा[२१] नूर और चमक ।
कहती है दानिश[२२] उनको तक, है यह भी क़ुदरत की झलक ।
चमके हैं जिससे इस क़दर ख़ुर्शीदो[२३] माहो[२४] मुश्तरी[२५] ॥४॥

तू क़ादिरो[२६] सुबहान[२७] है, अक़दस[२८] मुअल्ला[२९] शान है ।
ख़ालिक़[३०] है और रहमान[३१] है रज़्ज़ाक़[३२] और मन्नान[३३] है ।

---

१. प्रत्येक काल में २. तक ३. प्रकट ४. रुचिकर ५. चित्रकारी ६. सुन्दता को आभूषित करना, बहुत सुन्दर ७. सच है ८. हुनर, कारीगरी ९. निस्संदेह, बेशक १०. शंका, शक ११. नक़्क़ाशी १२. चित्र बनाना, तस्वीर बनाना १३. आकाश १४. स्वर्ग में रहने वाली सुन्दर स्त्रियां १५. फ़रिश्ते १६. सुन्दर, हसीन, गौरवर्ण १७. पशु जंगली पशु १८. विचित्र १९. अनायास २०. रोशनी २१. अत्यधिक २२. बुद्धि २३. सूरज २४. चांद २५. वृहस्पति २६. क़ुदरत रखने वाला २७. पाक २८. बहुत पवित्र २९. उत्तम, श्रेष्ठ ३०. पैदा करने वाला ३१. रहम करने वाला, ३२. अन्नदाता ३३. अहसान करने वाला

पाठान्तर—(१) श गरे

तेरा करम[1] हर आन है, ऐहसान बेपायान[2] है ।
हमको यही शायान[3] है, जब तक बदन में जान है ।
हर आन[4] में लावें बजा शुकरानओ[5] फ़रमांबरी[6] ॥५॥

जो जो हैं तेरी क़ुदरतें क्या क्या बयां उनका करें ।
आती नहीं कुछ फ़हम[7] में, जुज़[8] यह कि उनको तक रहें ।
क्या क्या बनाई नैमतें, क्या क्या बनाई रहमतें ।
कब शुक्र उनका कर सकें लेकिन यही हर दम कहें ।
यारब तेरा फ़ज़्लो करम लुत्फ़ो[9] इनायत[10] गस्तरी ॥६॥

है तू ही रब्बुल आलमीं[11], और तू ही ख़ैरुर्राहिमीं[12] ।
यकताई[13] है तेरे तईं, हमसर[14] तेरा कोई नहीं ।
ले आस्मां से ता ज़मीं, हैं सब इबादो[15] ताबई[16] ।
है यह 'नज़ीर' इसयांक़रीं[17] जाने है बा सिद्क़ोयक़ी[18] :
होगी तेरे ही फ़ज़्ल से हर जा मेरी खोटी खरी ॥७॥

---

१. कृपा २. असीम, बेहद ३. मुनासिब ४. वक़्त ५. देने वाले की तारीफ़ ६. आज्ञाकारिता ७. अक़्ल, बुद्धि ८. अतिरिक्त ९. करुणा १०. कृपा करना ११. रब्बुल आलमीं पूरी दुनियां को पैदा करने और पालने वाला १२. सबका भला करने वाला १३. बेमिसाली, जिसके समान कोई न हो १४. बराबर १५. सेवक १६. आज्ञाकारी १७. पापों में लिप्त १८. सच्चे विश्वास ।

मुसद्दस करीमा[+]

दरमुनाजात बारीएतआला

सदा दिल से ऐ मोमिने[१] पाकबाज़।
वज़ू करके पढ़ पंज-वक़्ती[२] नमाज़।
ब वक़्ते मुनाजात[३] बा सद नियाज़[४]।
यह कह अपने हाथों को करके दराज़[५]।

करीमा व बख़्शाए बर हाले मा।
कि हस्तम असीरे कमंदे हवा[६]।

इलाही तू सत्तारो गफ़्फ़ार है।
मेरा यां गुनाहों का अंबार[७] है।
न हामी[८] कोई ना मददगार है।
अब इस बेकसी में तू ही चार है।

---

१. ईमान वाले, मुसलमान २. पांच बार की ३. ईश-प्रार्थना ४. सैकड़ों इच्छाएँ ५. फैलाकर ६. ऐ बख़्शिश करने वाले हमारे हाल पर रहम फरमा। (हम पर करम और बख्शिश कर) इसलिए कि मैं लालच और खुदगरज़ी की कमंद (जाल) का कैदी हूं ७. बोझा ८. सहायक।

+ईश्वर की प्रार्थना में लिखा गया छः पंक्तियों का छंद।

न दारीम ग़ैर अज़ तू फ़रयादरस ।
तुई आसियाँ रा ख़ता बख़्शो बस[1] ।

हुए जुर्म तुझ से सग़ीरो कबीर ।
पड़ा है तू दामे गुनाह में असीर ।
ज़रा ख़्वाबे ग़फ़लत से चौंक ऐ 'नज़ीर' ।
दुआ मांग जल्द और कह ऐ ख़बीर[2] ।

निगहदार मार अज़तूराहे ख़ता ।
ख़ता दर गुज़ारो सवाबम नुमा[3] ।

---

[1] ऐ ख़ुदा ! हम तेरे सिवा कोई भी फ़रियादों को सुनने वाला नहीं रखते । दरअस्ल तू ही हम गुनहगारों की ख़ताओं को बख़्शने वाला और माफ़ करने वाला है और केवल तू ही । [2] ऐ जानकार । [3] ऐ ख़ुदा ! तू हमको ख़ता और ग़लती के रास्ते से बचाकर रख । हमारी ग़लतियों को माफ़ कर और सही और सीधा रास्ता दिखा ।

परमात्मा की याद

इस अर्ज़ो समां[१] के अर्से[२] में यह जितना खच्चम खच्चा है।
यह ठाठ तुझी ने बांधा है, यह रंग तुझी ने रच्चा है।
हैवान[३], पखेरू[४], नर नारी, क्या बूढ़ा बालक बच्चा है।
क्या दाना[५] बीना[६] होश भरा, क्या भोला नादां कच्चा है।
कुल आलम[७] तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ।।१।।

कोई ख़ालिक़[८] बारी[९] रब[१०] मौला[११], रहमान[१२] रहीम[१३] अल्लाह तँगरी[१४]
कोई अलख रूप करतार कहे निरकाल नाम धरी।
कोई राम राम कहकर सुमरे कोई बोले शिव शिव हरी हरी।
कोई दाना[१५] दीनत, देव अटल, कोई राक्षस देवत जिन्न परी।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ।।२।।

दरियाओ[१६] समुन्दर झील नहर नद्दी नाले डबरे[१७] जौहर।
सीपी, घोंघे, कौड़ी, मोती, घड़ियाल और नाके, सोंस, मगर।
जोंकें, भैंसे, गोहें, झींगे, मुर्गाबी, बत्तख़, बैल अम्बर।
क्या लाची, परवी और भँवर, क्या कछ, मछ और क्या जी जन्तर।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ।।३।।

---

१. पृथ्वी और आकाश २. बीच ३. जानवर, पशु ४. पक्षी ५. बुद्धिमान ६. देखने वाला ७. संसार ८. पैदा करने वाला ९. पैदा करने वाला १०. पालने वाला ११. मदद करने वाला १२. माफ़ करने वाला १३. कृपालु १४. अल्लाह (तुर्की भाषा में) १५. बुद्धिमान १६. नदियाँ १७. छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा रहे।

फुलवारी, बाड़ी, बाग़, चमन है सबको याद तेरी ही भली ।
तू माली, वाली, रखवाली क्या बिरछ फली क्या पेड़ बली ।
कोई माला फेरे, कोई सुमिरन है सबके दिल में याद घुली ।
क्या चोटी, जड़, क्या फल, कोपल, क्या टहनी पत्ता कली-कली ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ॥४॥

हुशियारो दाना मस्त सटर[१] अग़यार[२] नज़र, नाक़िस[३] क़ामिल[४] ।
सरदार ग़रीब अदना आला ज़ीरक[५] सियाना नादां ग़ाफ़िल ।
रम्माल[६] नजूमी[७] घड़ियाली मुल्ला ब्राह्मन पंडित आक़िल[८] ।
क्या बंद महनदस[९] अब्जद[१०] दां, क्या आलिम[११] फ़ाज़िल[१२] क्या जाहिल[१३]
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ॥५॥

सैयाद सवाबित[१४] लौहो क़लम जिन्नात अदन फ़िर्दौस[१५] फ़लक[१६] ।
ख़ुर्शीद[१७] से ले महताब[१८] तलक महताब से ले ख़ुर्शीद तलक ।
आसार[१९] तबाए[२०] क़ोसोजदी मीज़ाने असद सर्तान हरयक ।
क्या रिज्वां[२१] ग़िल्मां[२२] जन्नत के क्या अर्श[२३] बरी क्या हूरो[२४] मलक[२५] ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ॥६॥

---

१. तुच्छ, छोटा, मोटा २. ग़ैर लोग ३. अपूर्ण, ख़राब ४. पूर्ण, होशियार ५. अक्लमंद, दाना ६. रमल (भविष्य की बातें बिन्दियों द्वारा बताने की विद्या) करने वाला ७. ज्योतिषी ८. बुद्धिमान् ९. महंत १०. पढ़ा लिखा ११. योग्य १२. योग्य १३. मूर्ख १४. ठहरे हुए सितारे १५. स्वर्ग १६. आकाश १७. सूरज १८. चांद १९. खंडहर २०. प्रकृतियां, तबीयतें २१. जन्नत का दरोगा, स्वर्गाध्यक्ष २२. स्वर्ग के बालक २३ आसमान २४. स्वर्ग की सुन्दर स्त्रियां २५. फ़रिश्ता ।

है दश्त[१] बयाबां[२] और वादी[३] अर्सा मैदाँ सहरा[४] जंगल ।
वीराना पर्वत झाड़, शजर[५] बूटी, झाड़ी पेड़ और जबल[६] ।
पीलू, पाखर, नरमा, सेंभल, कचनार, संभालू, बड़, पीपल ।
क्या अब्र[७] हवा, क्या बर्क़[८] घटा, क्या दल बादल क्या जल और थल ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ।।७।।

राबेल, नगेर और मौलसिरी, मद मालति बेला और समन[९] ।
दोपहरी, गेंदा, गुललाला[१०] नाफ़रमा[११] करना, बान मदन ।
जाई, जुई, शब्बो नरगिस, सिंगार चमेली सीम-बदन[१२] ।
क्या फूल गुलाबी गुलतूर्रा क्या डेला बांसा सुख दर्सन ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ।।८।।

अंगूर, संगतरा, नारंगी, बरसेव सदाफल, सीताफल ।
नारंज झम्बेली और कोले खट्टे मीठे कमरख गुलगुल ।
आम, इमली, जामुन, मल्लकरी बादाम, छुहारे और जाफल ।
क्या गूलर, खट्टे, मौलसिरी क्या शफ़तालू क्या कटहल, बड़हल ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ।।९।।

---

१. जंगल २. चटियल मैदान ३. घाटी ४. रेगिस्तान ५. पेड़ ६. पहाड़ ७. बादल ८. बिजली ९. चमेली का फूल १० एक फूल ११. कहना न मानने वाला, एक फूल १२. चांदी जैसे शरीर वाला ।

गुढ़पंख कुलंग और बारकोई सारस, बगुला, कोयल, तीतर ।
सुर्ख़ाब तरमती ज़ाग़ो ज़ग़न सीमुर्ग़ और सारस, मोर, सफ़र ।
बहरी, लग्घड़, तोता, मैना, हुद-हुद, शिकरे, बाशे, तीतर ।
क्या बुलबुल, क़ुमरी, लाला बया, क्या मक्खी, भुनगा और मच्छर ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ॥१०॥

गज, गेंडा, अरना[१] शेर पिलंग[२] आहू[३] हिरनी रोब:[४] गीदड़ ।
सीपी[५], न्योला[६], साँड़ा[७] बिच्छू, अफ़ई[८], चीतल[९], चित्ती[१०] अज़दर[११] ।
कज, कूही, पाढ़ा[१२] गर्ग चरख़[१३], गिरगिट चलपा सेब[१४] मूशोदिगर[१५] ।
क्या जल मानस, क्या बन मानस, क्या हाथी, घोड़ा पील[१६] शुतर[१७] ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ॥११॥

अब्दाल[१८], कुतुब[१९] और ग़ौस[२०] वली[२१] है ध्यान में तेरे दिल सबका ।
क्या ज्ञानी, ध्यानी, नारद मुनि क्या जोगी जंगम गुरु चेला ।
तू पालने वाला है सबका और सबका तुझसे ध्यान लगा ।
क्या शाह 'नज़ीर' और क्या राजा क्या मुफ़लिस[२२] क्या कंगाल गदा ।
कुल आलम तेरी याद करे तू साहब सबका सच्चा है ॥१२॥

---

१. भैंसा २. तेंदुआ ३. हिरन ४. लोमड़ी ५. घोंघे आदि की जाति का एक जल जन्तु ६. नेवला ७. एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी काम में आती है ८. काला सांप ९. एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर चित्तियां होती हैं अथवा अजगर की जाति का एक प्रकार का सांप १०. एक प्रकार का सांप ११. अज़दहा १२. एक प्रकार का हिरन, चित्रमृग १३. एक शिकारी जानवर १४. दरिन्दे जानवर १५. चूहा १६. हाथी १७. ऊँट १८. भक्त १९. ऋषि २०. महात्मा २१. महात्मा, मित्र २२. गरीब।

इश्क़ अल्लाह[१]

पहले इस ताजे नबुव्वत (१)[१] से कहो इश्क़ अल्लाह ।
साहिबे ख़ल्क़ो[२] करामत[३] से कहो इश्क़ अल्लाह ।
गुलशने दीं[४] की तारावत से कहो इश्क़ अल्लाह ।
नूरे हक़ शाफ़ए[५] उम्मत से कहो इश्क़ अल्लाह ।
यानी इस ख़त्मे रिसालत[६] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।१।।

है जो वह नूरे नबी, शेरे ख़ुदा, शेरे इलाह[७] ।
साहिबे दुलदुलो[८] क़ुम्बर[९] शरफ़े बैतुल्लाह[१०] ।
ज़ोरे दीं,[११] क़ातिले कुफ़्फ़ार,[१२] मुहिब्बो[१३] की पनाह ।
यानी वह हैदरे कर्रार,[१४] अली, आली जाह ।
हर दम उस शाहे विलायत[१५] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।

और वह है जिस से हरा बाग़ इमामत[१६] का चमन ।
सब्ज़-ए-पोश चमन जन्नते फ़िर्दौस हसन ।
जह्र ने जिसका ज़ुमर्रुद[१७] सा किया सब्ज़ बदन ।
याद कर मोमिनो[१८] उसका वह हरा पैराहन[१९] ।
सब्ज़ऐ बाग़े इमामत से कहो इश्क़ अल्लाह ।।३।।

---

१. पैग़म्बरी २. सृष्टि ३. चमत्कार ४. मजहब ५. सिफ़ारिश करने वाला ६. अन्तिम पैगम्बर ७. अल्लाह का शेर ८. दुलदुल वाले ९. हजरत अली के ग़ुलाम का नाम १०. अल्लाह का घर ११. दीन का ज़ोर १२. काफिर १३. प्रेम करने वाला १४. शत्रु पर बराबर आक्रमण करने वाले हजरत अली १५. ऋषि या वली होने का भाव १६. पेशबाई १७. पन्ना १८. ईमान वालों १९. लिबास ।

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० ख़त्मे रिसालत

और वह गुल जिस से है गुलज़ार शहादत[१] का खिला ।
ले गए दश्ते बला में जो उसे अहले जफ़ा[२] ।
तीन दिन रात का प्यासा वह बहादुर यक्ता ।
लश्करे शाम को ललकार के तनहा[३] वह लड़ा ।
गोहरे[४] दुर्रे शुजाअत[५] से कहो इश्क़ अल्लाह ॥४॥

और वह जिस मर्द का है नाम शहे ज़ैनुलअबा(१)[६] ।
कर्बला[७] में वह अगर आह का शोला करता(२) ।
जल के लश्कर वह सभी ख़ाक सियाह हो जाता ।
पर सिवा हक़ की रज़ा उसने न कुछ दम मारा ।
उस जवां मर्द की हिम्मत से कहो इश्क़ अल्लाह ॥५॥

बाक़रो, जाफ़रो, काज़िमो रज़ा शाहे शहां ।
और तक़ी नूर नबी और वह नक़ी क़िब्लऐ जां ।
असकरी मेहदीओहादी वह इमामे दौरां ।
हैं ज़माने में यही बारह इमाम ऐ यारां ।
सब हर एक साहिबे इज़्ज़त से कहो इश्क़ अल्लाह ।६॥

हैं जहां तक कि जहां[८] में जो वली[९] और फ़ुक़रा[१०] ।
हर दम उन सबके दिलों में है भरा इश्क़ अल्लाह ।

---

१. गवाही २. ज़ुल्म करने वाला ३. अकेला ४. मोती ५. बहादुरी ६. हज़रत इमाम हुसैन
७. जहां पर हज़रत इमाम हुसैन शहीद हुए ८. संसार ९. ऋषि १०. सन्यासी, दरवेश ।

पाठान्तर—(१) क० श० आ० ज़ैन अबा (२) श० आ० गिरता

और जिस मर्द ने ख़ुश होके बराहे मौला ।
मालो जान दौलतो घर बार तलक बख़्श दिया ।
उस सख़ी दिल की सख़ावत[1] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।७।।

जितने अल्लाह ने भेजे हैं वली पैग़म्बर[2] ।
आरिफ़ो[3] कामिलो[4] दुर्वेशों[5] मशायख़[6] रहबर[7] ।
और जिन्होंने ही फ़िदा(१) हक़ के ऊपर करके नज़र ।
राहे मौला में ख़ुशी होके दिया अपना सर ।
उन शहीदों की शहादत से कहो इश्क़ अल्लाह ।।८।।

हैं जो वह साबिरो[8] शाकिर[9] बरजाए[10] मौला(२) ।
राहे मौला में चले लेके तवक्कुल[11] हमराह ।
जाके जंगल में पहाड़ों में लगा हक़ पै निगाह ।
दिल में ख़ुश बैठे हुए करते हैं अल्लाह अल्लाह ।
उन जवानों की क़नाअत[12] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।९।।

वह जो कहलाते हैं दुनिया में ख़ुदा के बन्दे ।
बन्दिगी करते ही करते वह सभी ख़ाक हुए ।

---

१. बख़्शिश करना २. ईश्वर का आदेश लाने वाले ३. ईश्वर को पहचानने वाला, जानने वाला ४. पूरा ५. फ़कीर ६. सूफ़ी बुज़ुर्ग ७. राह दिखाने वाला ८. सब्र करने वाला ९. शुक्र अदा करने वाला १०. ईश्वर की इच्छा ११. ख़ुदा का भरोसा १२. थोड़ी चीज़ पर राज़ी होना ।

पाठान्तर—(१) का० श० आ० कि ज़रा (२) श० आ० अल्लाह

ख़ाक भी हो गए पर करते हैं हर दम सिजदे ।
हैं कहीं बातिनी(१) लूटे हैं इबादत[२] के मज़े ।
दोस्तो उनकी इबादत से कहो इश्क़ अल्लाह ।।१०।।

और जो वह आबिदो[३] ज़ाहिद[४] हैं ख़ुदा की रह[५] के ।
यां के सब ऐशो मज़े छोड़ दिये रह-रह के ।
चिल्ले खींचे हैं मुहब्बत की कमां गह-गह के ।
सूख कांटा हुए हर रंजो सितम सह-सह के ।
यारो सब, उनकी रियाज़त[६] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।११।।

और जो वह आशिक़े सादिक[७] हैं जहां में यक्ता ।
इश्क़ बाज़ी का लिया नाम पर अपने सिक्का ।
गरचें[८] माशूक़ की जानिब से हुए जोरो जफ़ा[९] ।
मर गए तो भी न मुंह अपना वफ़ा[१०] से मोड़ा ।
उनकी जां बाज़ियों[११] जुरअत[१२] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।१२।।

और वह माशूक़ जो हैं नाज़ो अदा में मग़रूर[१३] ।
हुस्न रखते हैं भबूका सा जहां में पुर नूर ।

---

१. छिपे हुए २. आराधना ३. आराधना करने वाले ४. सिवाय ईश्वर के दुनियां की इच्छा न रखने वाले लोग ५. रास्ता ६. परिश्रम, आराधना ७. सच्चा ८. यद्यपि ९. जुल्मो सितम १०. श्रद्धा, वायदा पूरा करना ११. जान पर खेलने १२. हिम्मत १३. घमण्डी

पाठान्तर — (१) श० आ० बात न

गरचे ज़ाहिर में वह आते नहीं आशिक़ के हुज़ूर ।
पर वह बातिन[1] में नहीं अपने ख़रीददार से दूर ।
उनकी इस दिल की मुहब्बत से कहो इश्क़ अल्लाह ।।१३।।

और वह जिनपै हैं अहवाल दो आलम[2] के खुले ।
चलते दरिया में हैं और रूएहवा[3] पर उड़ते ।
चाहें पत्थर के तईं लाल करें नज़रों से ।
चाहें अकसीर[4] करें ख़ाक को हर दम ले ले ।
उनकी सब कश्फ़ो[5] करामत[6] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।१४।।

और वह जो इश्क़ का गुलज़ार[7] खिलाता है नज़ीर ।
पंजतन पाक का आलम में कहाता है नज़ीर ।
रेख़्ता[8] फ़र्द रूबाई[9] भी बनाता है नज़ीर ।
कह सुख़न[10] इश्क़ का फिर सबको सुनाता है नज़ीर ।
उसके सब हर्फ़ों हिकायत[11] से कहो इश्क़ अल्लाह ।।१५।।

---

[1] अन्दर [2] दुनिया [3] हवा पर [4] लाभदायक [5] खोलना [6] भेद [7] बाग
[8] नज़ीर अकबराबादी के काल में उर्दू भाषा के लिए प्रचलित नाम । [9] चतुष्पदी [10] सुखन, कथा ।
[11] कहानी, बात ।

इश्क़ अल्लाह

ज़ाहिदो रौज़ए रिज़्वां से कहो इश्क़ अल्लाह ।
आशिक़ो कूचए जानां से कहो इश्क़ अल्लाह ॥

जिसकी आँखों ने किया बज़्मे दो आलम को ख़राब ।
कोई उस फितनए दौरां से कहो इश्क़ अल्लाह ॥

यारो देखो जो कहीं उस गुले खन्दां का जमाल ।
तो मेरे दीदए गिरयां से कहो इश्क़ अल्लाह ॥

हैं जो वह कुश्तए शमशीर निगाहे क़ातिल ।
जाके उस गंजे शहीदां से कहो इश्क़ अल्लाह ॥

आह के साथ मेरे सीने से निकले है धुआं ।
ऐ बुतां मुझ दिलबर जां से कहो इश्क़ अल्लाह ॥

याद में उसके रुख़ो ज़ुल्फ़ की हर आन "नज़ीर" ।
रोज़ो शब सुंबुलो रेहां से कहो इश्क़ अल्लाह ॥

ख़ुदा की तारीफ़

'(तू कारे जहां रांको साख़्ती)'+

ख़ुदा की ज़ात[1] है वह ज़ुलजलाल[2] वल इकराम[3] ।
कि जिससे होते हैं परवर्दा[4] सब ख़वासो[5] अवाम[6] ।।
उसी ने अर्ज़ो[7] समावात[8] को दिया है निज़ाम[9] ।
उसी की ज़ात को है दायमो[10] सबातो[11] क़याम[12] ।।
क़दीर[13] वहदो[14] करीमो[15] मुहीमिनो[16] अनआम[17] ।।

फ़लक[18] पै तारों की क्या क्या मुरस्सा[19]कारी की ।
फिर उनमें ज़ेबफ़िज़ा[20] कहकशां[21] निगारी[22] की ।
ज़ियाओ[23] नूर की क्या क्या तजल्ली[24] बारी की ।
बुरूंज[25] बारह में लाकर रखी वह बारीकी ।।
कि जिसको पहुंचे न फ़िकरत[26] न दानिशो[27] औहाम[28]

---

१. हक़ीकत २. आदर के योग्य ३. श्रेष्ठ सम्मान योग्य ४. पाला हुआ ५. खास ६. आमलोग । ख़वासो अवाम– साधारण-असाधारण सभी व्यक्ति ७. पृथ्वी ८. बहुत से आस्मान ९. प्रबन्ध १०. हमेशा ११. दृढ़ता १२. स्थिरता १३. सर्वशक्तिमान् १४. अल्लाह १५. कृपालु १६. महरबान १७. दान देने वाला १८. आस्मान १९. जड़ाई २०. सुन्दरता बढ़ाने वाली २१. आकाश गंगा २२. जड़ाई २३. रोशनी २४. रोशनी २५. बारह राशियां २६. सोच २७. अक्ल २८. भ्रान्तियां, मुगालते ।

+ तू कारे जहां राको साख़्ती क्वा आस्मानीज परदाख़्ती (शेख सादी का कथन)
(ऐ इंसान क्या तूने इस मिट्टी की दुनियां के सारे काम दुरुस्त कर लिए कि आसमान की तरफ भी तूने रुख कर डाला । वहां के मामलात में भी रुजू करने लगा ।)

बनाई कुर्सियो[१] अर्श[२] और ला मकां दर[३] आं ।
फिर और सदरए रफ़रफ़[४] से दर्ज[५] नारो[६] जिनां[७] ।
तहूरो[८] हूरो[९] क़ुसूरो[१०] मलायको[११] रिज़वां[१२] ।
इधर फ़रिश्तए कबी[१३] और हैं उधर ग़ुलमा[१४] ।
क़लम को लौह[१५] पै बख्शी है ताक़ते अरक़ाम[१६] ॥३॥

सवाबित[१७] उसने बनाये हैं इस क़दर सैयार[१८] ।
कि रोज़े हश्र[१९] तलक हो सके न जिनका शुमार ।
मगर यह नाम है उनके जो सात हैं सय्यार[२०] ।
यह दो हैं शम्सो क़मर, और साथ उनके यार ।
अतारु ओ-ज़हलो, ज़ोहरा, मुश्तरी बहराम ॥४॥

हुआ है हुक्म अज़ल[२१] से जो उनको फिरने का
करेंगे दौर[२२] यह हमराह[२३] आस्मां के सदा ।
क़वी[२४] किसी का कहां हुक्म हो सके ऐसा ।
जो चाहें एक पलक ठहरें यह, सो ताक़त क्या ।
फिरा करेंगे यह आग़ाज़[२५] से ले ता अनजाम[२६] ॥५॥

जो कुछ है उसने बनाया यह कुल निहानो[२७] अयां[२८] ।
उसी की सनअतो[२९] क़ुदरत के हैं यह सब शायां[३०] ।
हैं ऐसे ऐसे मकां और उसके बेपायां[३१] ।
बशर[३२] जो चाहे सो समझे उन्हें है क्या इमक़ां[३३] ।
है यां फ़रिश्तों की आजिज़ उक़ूल[३४] और अफ़हाम[३५] ॥६॥

---

१. आठवां आस्मान २. आस्मान ३. दरवाज़ा ४. तेज घोड़ा, बुर्राक़ ५. भरपूर ६. आग ७. जिन्न ८. पवित्र ९. सुन्दर स्त्रियां १०. बहुत से महल ११. फरिश्ते १२. जन्नत का दरोग़ा १३. फरिश्ता देवता १४. स्वर्ग के बालक १५. तख़्ती १६. लेखन १७. भ्रमणशील सितारे १८. घूमने वाले १९. क़यामत २०. भ्रमणशील सितारे २१. शुरू से २२. दौड़ा २३. साथ २४. दृढ़, मज़बूत २५. शुरूआत २६. अन्त २७. छिपा हुआ २८. ज़ाहिर २९. कारीगरी ३०. लायक ३१. असीम ३२. व्यक्ति ३३. उम्मीद ३४. बुद्धियां ३५. बुद्धि

जमीं को देखो तो कुल आब[१] पर दिया है क़रार[२] ।
फिर उसमें और बनाये हैं कोहो[३] बर्रो[४] बहार ।
किया है(१) और नबातात[५] के तईं इज़हार ।
निकाले उनसे गुलो[६] मेवा शाख़[७] गुल और बार[८] ।
सब उसके लुत्फ़ो करम[९] के हैं आम यह इनआम ।।७।।

उसी के हुक्म से हम इस जहां में आते हैं ।
ज़ुबानो, अक़्लो ख़िरद[१०] चश्मो[११] गोश[१२] पाते हैं ।
उसी के लुत्फ़ से फूले नहीं समाते हैं ।
उसी के बाग़ से दिलशाद[१३] होके खाते हैं ।
छुहारे व किशमिशो इनजीरो पिस्तओ बादाम ।।८।।

वही है ख़ालिक़ो[१४] राज़िक[१५] वही रऊफ़ो[१६] गफ़ूर[१७] ।
उसी के मेहर से पलते हैं इन्सां[१८] वहशो[१९] तयूर[२०] ।।
उसी के हुक्म से ख़लक़त[२१] का यां हुआ है जहूर[२२] ।
चमक रहा है उसी की यह क़ुदरतों का नूर ।।
बहर ज़मानो[२३] बहर साअतो[२४] बहर हंगाम[२५] ।।९।।

उसी ने हुक्म किया है हमें इबादत का ।
उसी ने ताअतो[२६] तक़वा[२७] का हुक्म हमको दिया ।
जो ग़ौर की तो हमारा भी है इसी में भला ।
कि उसका शुक्र करें शब[२८] से ता बरोज़[२९] अदा[३०] ।
इताअत[३१] उसकी बजा लावें सुबह से ता शाम ।।१०।।

---

१. पानी २. स्थिरता ३. पहाड़ ४. द्वीप ५. पेड़–पौधे ६. फूल ७. टहनी ८. पेड़ के फल, मेवा ९. दया १०. अक्ल, बुद्धि ११. आँख १२. कान १३. खुश १४. पैदा करने वाला १५. खाना देने वाला १६. अत्यन्त दयालु १७. गुनाहों को माफ करने वाला १८. इंसान, व्यक्ति १९. जंगली जानवर २०. परिन्दे २१. दुनिया २२. जाहिर होना २३. वक्त, जमाना २४. क्षण, समय २५. समय, मौसम २६. बन्दगी २७. संयम २८. रात २९. दिन तक ३०. अदा करना ३१. बंदिगी

पाठान्तर— (१) श० फिर

जो उसमें लुत्फ़ो इनायत है कब–किसी में हो ।
हर इक तरफ़ है उसी के गुले करम[1] की बू[2] ।
इबादत उसकी है(१) जो हो बेदिल की ख़ू[3] ।
"नज़ीर" नुक्ता[4] समझ मेहरो फ़ज़्ल ख़ालिक़ को ।
उसी के फ़ज़्ल से दोनों जहां में हैं आराम ॥११॥

R
०८९
६६

8705

---

१. बख़्शिश २. ख़ुशबू (गंध) ३. आदत ४. रहस्य ।

पाठान्तर— (१) श० बेहतर

ना'त ह० मुहम्मदरसूलुल्लाह[+]

तुम शहे[१] दुनियाओ दीं[२] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा[३] ।
सर[४] गिरोहे[५] मुसलमीं[६] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।
हाकिमे दीने मतीं[७] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।
क़िब्लऐ[८] अहले यक़ीं हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।
रहमतुल लिल आलमीं[९] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ॥१॥

आस्मां तुमने शबे मैराज[१०] को रोशन किया ।
अर्शो[११] कुर्सी[१२] को क़दम अपने से दे (१) नूरो ज़िया[१२] ।
रंगो बू[१३] जन्नत के गुलशन की बढ़ाई बरमला[१४] ।
जिस जगह वहमे मलायक[१५] को नहीं मिलती है जां[१६] ।
वां के तुम मसनद नशीं हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ॥२॥

है तुम्हारी पुश्त पर मुहरे नबुव्वत[१७] का निशां ।
और तुम्हारा वस्फ़[१८] है त्वाहा[१९]व यासीं[२०] में अयां[२१] ।
मोजिज़े[२२] जो हैं तुम्हारे उनका कब होवे बयां ।
किशवरे ऐजाज़[२३] जो है उसके तुम बा इज़्ज़ो शां[२४] ।
साहिबे ताज़ो नगीं[२५] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ॥३॥

[+] हज़रत मुहम्मद साहब (अल्लाह का दरूद और सलाम आप पर हो) का यशोगान ।

१. बादशाह २. मज़हब ३. इंसानी बुराइयों से साफ हज़रत मुहम्मद ४. सरदार ५. झुंड ६. मुसलमान, मुसलमानों के सरदार ७. गंभीर ८. सम्मानित ९. संसार का १०. मैराज ऊपर चढ़ने की सीढ़ी शबे मैराज-हज़रत मुहम्मद के आस्मान पर चढ़ने की रात ११. आस्मान का छोटा तख़्त १२. रोशनी, प्रकाश १३. खुशबू १४. लोगों के सम्मुख, खुल्लम खुल्ला सामने १५. फरिश्तों १६. जगह १७. नबी (ईश्वर के दूत) होने का निशान १८. तारीफ १९. क़ुरान मजीद के सोलहवें पारे की एक सूरत मुहम्मद साहब का एक नाम २०. क़ुरान शरीफ़ के बाइसवें पारे की एक सूरत जो मरते समय मुसलमानों को सुनाई जाती है। २१. ज़ाहिर २२. चमत्कार २३. चमत्कार, करामात २४. वैभव, प्रताप, शानो शौकत २५. मोती

पाठान्तर— (१) श० आ० दे

तुमको ख़त्मुल अम्बिया[१] हक़[२] भी हबीब[३] अपना कहे ।
और सदा रूहुल अमीं[४] आवें अदब[५] से वही ले ।
किस नबीं[६] को यह मदारिज[७] हैं तुम्हारे से मिले ।
है नबुव्वत[८] का जो अकदस[९] बह्र[१०] तुम उस बह्र के ।
गौहरे[११] यक्ता[१२] तुम्हीं हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।।४।।

हैं जो यह दोनों जहां[१३] की आफ़रीनिश[१४] के चमन ।
जिसमें क्या क्या कुछ अयां[१५] है सनए ख़ालिक़ के जतन ।
बाइसे[१६] ख़ल्क़ उनके हो तुम या हबीबे ज़ुलमनन[१७] ।
और एक मतला[१८] पढ़ूं मैं युमन[१९] से जिसके सुख़न ।
सौ सआदत[२०] के करीं[२१] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।।५।।

तुम ज़हूरे[२२] अव्वलीं[२३] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।
तुम ही ख़ैरुल(१)आख़िरीं[२४] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।।
हमदमे[२५] जां आख़िरीं[२६] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।
वजहे[२७] क़ुरआने मुबीं[२८] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।।
नुजहते[२९] बुस्ताने[३०] दीं हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।।६।।

अहमदे मुख़्तार[३१] हो तुम या शहे हर दो सरा ।
है तुम्हारे हुक्म के ताबे[३२] क़दर[३३] भी और क़ज़ा ।।
ख़ल्क़ में ख़्वाहिश से तुम जिस अम्र[३४] की रक्खो बिना ।
देर एक पल दरमियां आये नहीं मुमकिन ज़रा(१) ।।
जिस घड़ी चाहो वहीं हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।।७।।

---

१. नबियों २. सच ३. दोस्त ४. हज़रत जिब्रील ५. आदर, सम्मान ६. ईश्वर का पैगाम देने वाले ७. दर्जे ८. पैगम्बरी ९. बड़ा पाक १०. समुद्र ११. मोती १२. अनुपम १३. इहलोक और परलोक १४. पैदायश उत्पत्ति १५. प्रकट १६. कारण हेतु १७. अहसान वाले १८. ग़ज़लका प्रथम शैर जिसके दोनों मिस्रों में क़ाफ़िया हो १९. मुबारिकी, शुभकारिता २०. मुबारिकी, शुभकारिता २१. समीप २२. प्रकट होने वाले २३. पहले २४. अन्तिम और श्रेष्ठ २५. प्यारा, हरदम साथ रहने वाला २६. शरीर में प्राण डालने वाला ईश्वर २७. मुंह २८. जाहिर २९. बे ऐब, पवित्र निर्दोष ३०. फुलवाड़ी ३१. आज़ाद ३२. मातहत ३३. हुक्म इलाही ३४. हुक्म

पाठान्तर— (१) क़ा० श० आ० आवे तो यह इमकान क्या

आपके नक़्शो क़दम[१] से जो मुशर्रफ़[२] हो जमीं ।
देखता है उसकी रफ़अत[३] रात दिन अर्शे[४] बरीं ।
राज़[५] तो ख़लक़त[६] के तुमको ही खुले हैं शाहे दीं[७] ।
और जो जो कुछ कि हैं असरारे[८] रब्बुलआलमीं[९] ॥
सबके तुम बरहक़[१०] अमीं[११] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ॥८॥

आपका फ़ज़्लो करम[१२] कौनेन[१३] में मशहूर है ।
और तुम्हें हर तौर से लुत्फ़ो करम[१४] मंज़ूर है ।
हश्र[१५] में गरचे[१६] सज़ा मिलने का भी दस्तूर[१७] है ।
क्या हुआ लेकिन दिल इस उम्मीद से मसरूर[१८] है ।
तुम शफ़ीउल[१९] मुज्निबीं[२०] हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ॥९॥

मुख़बरे[२१] सादिक़[२२] हो तुम और हज़रते ख़ैरुलवरा[२३] ।
सरवरे[२४] हर दो सरा[२५] और शाफ़ए[२६] रौज़े जज़ा[२७] ।
है तुम्हारी ज़ाते वाला[२८] मुम्बए[२९] लुत्फ़ो अता[३०] ।
क्या "नज़ीर" एक और भी सबकी मदद का आसरा ।
यां भी तुम वां भी तुम्हीं हो या मुहम्मद मुस्तफ़ा ॥१०॥

---

१. पद-चिह्न २. प्रतिष्ठित ३. बुलंदी ४. ऊँचा आस्मान ५. भेद ६. पैदायश, दुनिया ७. दीन के बादशाह ८. भेद ९. सारे जहान के मालिक १०. सच ११. अमानतदार १२. रहम और बख़्शिश १३. लोक, परलोक १४. महरबानी और करम १५. कयामत १६. यद्यपि १७. कानून १८. ख़ुश १९. सिफारिश करने वाला २०. पापी, गुनाहगार २१. ख़बर देने वाला २२. सच्चा २३. संसार का भला चाहने वाला २४. सरदार २५. लोक-परलोक २६. शफाअत करने वाला २७. हिसाब का दिन २८. व्यक्तित्व श्रेष्ठ है २९. चश्मा ३०. महरबानी और बख़्शिश

दरसनाए पैग़म्बरे ख़ुदा

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम +

तेरा दोस्त है वह जो ख़ेरुलवरा।
मुहम्मद नबी मालिके दोसरा॥
कहां वस्फ़[1] हो मुझ से उसका अदा।
व लेकिन है मेरी यही इल्तिजा[2]।
जबां ताबुवद दर दहां जाये गीर।
सनाऐ मुहम्मद बुवद दिल पज़ीर[3]।

वह शाहे दो आलम अमीरे उमम।
बने वास्ते जिसके लौहो-क़लम[4]।
सदा जिसके चूमें मलायक[5] क़दम।
करूं उसका रुतबा[6] में क्यूंकर रक़म[7]।
हबीबे ख़ुदा अशरफ़ुल अम्बिया।
कि अर्शे मजीदश बुवद मुत्तक़ा[8]।

+ हजरत मुहम्मद साहब (अल्लाह का दुरुद और सलाम आप पर हो) के यशोगान में।

[1] प्रशंसा, विशेषता [2] प्रार्थना [3] जब तक जुबां मुंह में क़ायम रहे, रसूले पाक स्व० अ० व० की तारीफ़ और तौसीफ़ दिल को भाती रहे [4] वह तख़्ती और लेखिनी जिनके द्वारा ईश्वर की आज्ञा से भविष्य में होने वाली सब घटनाएं लिखी हों [5] देवतागण, फरिश्ते [6] महत्ता, बड़ाई [7] लिखना [8] वह रसूल जो ख़ुदा के महबूब हैं और नबियों में जिनका रुत्बा सबसे ज्यादा है। (मैराज की रात को) जिनका निवास स्थान अर्श (सब आसमानों से ऊपर का स्थान) जैसी ऊंची जगह पर बना।

अगर्चे वह पैदा हुआ ख़ाक पर।
गया ख़ाक से फिर वह इफ़लाक[१] पर।
मेरा जी फ़िदा उस तने पाक पर।
तसद्दुक़[२] हूं मैं उसके फ़ितराक[३] पर।
सवारे जहां गीर यकरां बुराक़।
कि बगज़श्त अज़ करने नीली-ए-खाक़[४]।

---

१. आकाश २. न्यौछावर ३. वह डोरी जो घोड़े की ज़ीन में दोनों ओर लगाते हैं ४. वह व्यक्ति कि जो अकेले बुराक (घोड़े) पर सवार होकर ब्रह्माण्ड की सैर कर आए जोकि इस नीली गुम्वद वाले महल (आस्मान) से भी परे चले गए।

ना'त हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम +

रख अपने दिल में ऐ आदम के बिन[1] कलमा[2] मुहम्मद का।
और अपनी उंगलियों ऊपर भी गिन कलमा मुहम्मद का।
पढ़ें हैं सब परी और देव जिन कलमा मुहम्मद का।
मुसलमां हो तो मत भूल एक छिन कलमा मोहम्मद का।
पढ़ाकर सिद्क दिल[3] से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥१॥

मियां यह कलमा तयब[4] तो शफ़ीउल मुज्निबी[5] का है।
ख़ुदा के दोस्त बरहक़[6] रहमतुललिलआलमीं[7] का है।
मुहम्मद मुस्तफ़ा यानी की ख़तमुल[8] मुरसलीं[9] का है।
भरोसा, आसरा, तकिया[10] भी यह दुनियाओ दीं[11] का है।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥२॥

इसी कलमें से खुलता है सदा जन्नत का हर एक दर।
यही कलमा लिखा है अर्श[12] और कुर्सी[13] के माथे पर।
इसी कलमे को पढ़ते हैं चमन के फूल सब खिल कर।
यह सब कलमों से है बेहतर यह सब कलमों से है बरतर।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥३॥

+ हज़रत मुहम्मब साहब (अल्लाह का दुरूद और सलाम आप पर हो) का यशोगान।

१. आदम के पुत्र, मानव २. धार्मिक मंत्र ३. सच्चे दिल से ४. पाक कलमा ५. पैग़म्बर ६. सच ७. संसार पर रहमत करने वाले ८. अन्तिम ९. पैगम्बर (जिन पर इलहामी किताब उतरी) १०. सहारा ११. मजहब १२. आस्मान १३. ज़मीन

इसी के नूर से ख़ुर्शीद[१] कहलाता है नूरानी ।[२]
इसी कलमे के बाइस[३] चांद की रौशन है पेशानी[४] ।
इसी कलमे के बाइस दीनोदुनिया में सनाख़्वानी ।[५]
इसी कलमे को पढ़ते हैं फ़लक[६] अर्ज़ो[७] पवन[८] पानी ।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।४।।

इसी कलमे से हैं ऐ दिल ज़मीनों आसमां रौशन ।
महो[९] खुर्शीद तारे अर्शो[१०] कुर्सी[११] लामकां[१२] रौशन ।
इसी कलमे से हैं जन्नत के बाग़ और बाग़बां रौशन ।
ग़रज़ जन्नत तो क्या इससे तो हैं दोनों जहां रौशन ।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।५।।

यह वह कलमा है जिसका है रहा अरमान नबियों[१३] को ।
इसी कलमे के पढ़ने से गये हैं लोग आरिफ़[१४] हो ।
इसे हूरो[१५] मलक[१६] ग़िल्मां[१७] पढ़े हैं हर शहरु[१८] मुंह धो ।
वह बेशक जन्नती[१९] है एक बारी जो पढ़े इसको ।
पढ़ाकर सिद्क दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।६।।

इसी कलमे की बरकत[२०] से तू अब यां भी सलामत[२१] है ।
अगर यां से तू जावेगा तो फिर वां भी सलामत है ।
पढ़ेगा जो इसे उसका दिलो जां[२२] भी सलामत है ।
उसी की आक़बत[२३] भी ख़ैरो ईमां[२४] भी सलामत है ।
पढ़कर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।७।।

---

१. सूरज २. चमकता हुआ ३. कारण ४. माथा ५. प्रशंसा ६. आसमान ७ ज़मीन ८. हवा ६ चांद १०. आस्मान ११. ज़मीन १२. मकानों से परे ईश्वर-स्थान १३. ईश्वर के पैग़म्बर १४. ज्ञाता, ब्रह्म ज्ञानी १५. सुन्दर अप्सरा १६. फ़रिश्ता १७. स्वर्ग के बालक १८. सुबह १६. जन्नत, स्वर्ग में रहने वाले २०. नेकी २१. सुरक्षित, स्वस्थ, ठीक २२. दिल और जान २३. यमलोक २४. धर्म पर दृढ़ विश्वास, भलाई और ईमान

चलेगा जिस घड़ी तू छोड़कर यह आलमे फ़ानी[1]।
पड़ेगा क़ब्र के जाकर अंधेरे में हो ज़नदानी[2]।
नक़ीरो[3] मुनकिर[4] आकर जब करेंगे तुझ पै तुग़यानी[5]।
यही कलमा करेगा वां तेरी मुश्किल की आसानी।
पढ़ाकर सिद्क़ से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥८॥

इसी कलमे ने इजराईल[6] की हैबत[7] को टाला है।
इसी कलमे ने तंगी[8] को लहद[9] की खोल डाला है।
पड़ेगा क़ब्र का तुझ पर मियां वह दिन जो काला है।
यही कलमा तेरा वां भी अंधेरे का उजाला है।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥९॥

सफ़े महशर[10] में जब दहशत[11] का तुझ पर वार[12] उतरेगा।
यही कलमा तेरा उस जा रफ़ीक़[13] और यार उतरेगा।
गुनाहों का तेरा जितना है बोझ और भार उतरेगा।
इसी कलमे की दौलत से मियाँ तू पार उतरेगा।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥१०॥

मियाँ जब पुलसिरात[14] ऊपर तू अपना पैर डालेगा।
तो वह तलवार की हो धार तेरा पांव खालेगा।
लगेगा जब वहां गिरने तो यह कलमा बचा लेगा।
यही बाजू पकड़ लेगा, यही तुझको संभालेगा।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥११॥

---

१. मिटने वाली दुनियाँ २. क़ैदी ३. क़ब्र में सवाल जवाब करने वाले ४. क़ब्र में सवाल जवाब करने वाले फ़रिश्ते ५. ज़्यादती ६. रूह को क़ब्ज करने वाला फ़रिश्ता ७. डर ८. सिकुड़ी हुई ९. क़ब्र १०. कयामत का दिन ११. ख़ौफ़ १२. हादसा, घटना १३. मित्र १४. दोज़ख़ पर बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार की धार से भी ज़्यादा तेज़ पुल

सवा नेज़े[१] के ऊपर जबकि होगा आफ़ताब[२] आया।
हर एक गर्मी की ताबिश[३] से फिरेगा सख़्त घबराया।
पड़ेगा जब तेरे तन पर भी शोला[४] उसका गरमाया।
यही कलमा छतर बनकर करेगा तुझ पै वां साया।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।१२।।

तुलेंगे जब वहां सबके अमल[५] मीज़ां[६] के पल्ले पर।
जो हलके हैं पड़ेंगे आतशीं[७] गुर्ज़[८] उनके कल्ले पर[९]।
तुझे तोलेंगे जिसदम उस तराज़ू के महल्ले[१०] पर।
यही कलमा मियां वां भी तेरे होवेगा पल्ले पर।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।१३।।

जो पूरे हैं मियां उनकी तो होगी गर्म बाज़ारी[११]।
कमी है जिन्स[१२] जिनकी (१) उनकी वां होगी बड़ी ख़्वारी।
तेरा पल्ला भी जब करने लगेगा वां[१३] सुबक सारी[१४]।
यही कलमा बनावेगा तेरे पल्ले को वां भारी।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।१४।।

पड़ेगा अल(२)अतश[१५] का शोर उस मैदां में जब आकर।
फिरेंगे पानी-पानी करते मारे प्यास के अक्सर।
तेरे भी जब लगेंगे सूखने तालू ज़बां यक्सर।
यही कलमा तुझे पानी पिलावेगा मियां भर-भर।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ।।१५।।

---

१. सवा भाले, सवाबाँस २. सूरज, तेज गर्मी का जोर ३. आग की लपट ४. चिंगारी, अग्निकण ५. कर्म ६. तराज़ू ७. आग का गर्म ८. गदा ९. कनपटी, जबड़ा १०. जगह ११. क़द्रोक़ीमत १२. सौदा, चीज़ १३. वहां १४. बेतअल्लुक़ी १५. प्यास की तेज़ी १६. पूरे ही

पाठान्तर—(१) क़ा० उनकी, आ० श० जिसकी
(२) श० आ० तिश्निगी।

यही कलमा तुझे दीदार[1] हक़[2] का भी दिखावेगा।
मुहम्मद की शफ़ाअत[3] से भी तुझको बख़्शवावेगा[4]।
बहिश्ती[5] करके हुल्ले[6] नूर के तुझको पिन्हावेगा।
बड़ी इज़्ज़त बड़ी हुर्मत[7] से जन्नत में ले जावेगा।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥१६।

यही कलमा तुझे वां जाम कौसर[8] का पिलावेगा।
यही कलमा तुझे गुलज़ार[9] जन्नत के दिखावेगा।
यही कलमा तेरा मुंह चांद सा रौशन बनावेगा।
यही कलमा तेरे हर बक़्त वां पर काम आवेगा।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥१७॥

यही कलमा निजात[10] और मग़फ़िरत[11] का है तेरे चारा॥
इसी कलमें से तेरी रूह[12] होगी अर्श[13] का तारा।
इसी कलमे से है हम सब गुनहगारों[14] का छुटकारा।
इसी कलमे से होगा दीन[15] और दुनिया से निस्तारा[16]।
पढ़ाकर सिद्क़ दिल से रात दिन कलमा मुहम्मब का ॥१८॥

मियां अब जो यह कलमा है यह हक़[17] की ख़ास रहमत[18] है।
यह सदक़े[19] से रसूलुल्लाह[20] की हम पर इनायत[21] है।
इसी से यां "नज़ीर" इज्जत इसी से वां शफ़ाअत[22] है।
यही सब मोमिनों[23] के वास्ते अफ़ज़ल[24] इबादत[25] है।
पढ़ाकर सिद्क दिल से रात दिन कलमा मुहम्मद का ॥१९॥

---

[1] दर्शन [2]. सत्य, ईश्वर [3]. सिफ़ारिश [4]. माफ़ कराएगा [5]. जन्नती [6]. पोशाक [7]. बहुत इज्जत [8]. जन्नत की एक विशेष नहर [9]. बाग़ [10]. छुटकारा [11]. ग़ुनाह बख़्शना [12]. आत्मा [13]. आकाश [14]. पापी [15]. धर्म [16]. पार जाना [17]. ईश्वर [18]. इनायत महरबानी [19]. दान [20] हजरत मुहम्मद साहब [21]. महरबानी [22]. सिफ़ारिश [23]. ईमान वालों के लिए [24]. श्रेष्ठ [25]. आराधना

मोजिज़ा हज़रत अली अलैहिस्सलाम+

(मज़्लूम (पीड़ित) शेरनी का इंसाफ़)

सुनते हो ऐ अली के मुहिब्बाने[१] दोस्त दार[२]।
एक मोजिज़ा[३] मैं कहता हूं उस शह[४] का आश्कार[५]।
है ताज़ा वारदात[६] यह अज़[७] नक़्ल रोज़गार।
था कोई शख़्स दौलतो हश्मत[८] में नामदार।
इक रोज़ वह गया था कहीं खेलने शिकार ॥१॥

जिस दश्त[९] में शिकार को गुज़रा था वह ग़नी[१०]।
बां एक शेर रहता था और उसकी शेरनी।
था एक चश्मा पानी का[११] और सब्ज़ थी बनी[१२]।
दो (१) बच्चे उस बनी में थी वह शेरनी जनी[१३]।
दस बीस रोज़ के थे अभी तिफ़ले[१४] शीर ख्वार[१५] ॥२॥

बच्चों को अपनी छाती पर रक्खे वह बे ज़ुबां[१६]।
दोनों को बैठी दूध पिलाती थी शादमां[१७]
बन्दूक की जो आई सदा इसमें नागहां[१८](२)।
नर मादा दोनों भाग गए होके नीम ज़ां[१९]।
बच्चे अकेले रह गए जंगल में बेक़रार[२०] ॥३॥

+हज़रत अली (अल्लाह की सलामती आप पर हो) द्वारा दिखाया गया चमत्कार।

१. प्रेम करने वाले २. मित्रगण ३. चमत्कार ४. शाह ५. जाहिर ६. हादसा, घटना ७. नक़्ल से ८. बुज़ुर्गी, खिदमतदार लोग ९. बियावान, जंगल १०. मालदार ११. झरना १२. जंगल १३. पैदा किए हुए १४. बच्चे १५. दूध पीने वाले १६. जो ज़ुबान से कुछ कह न पाए १७. ख़ुश १८. यकायक १९. आधी जान, अधमरे २०. बेचैन

पाठान्तर (१) जा० और
(२) जा० नागए

अलक़िस्सा[1] जब शिकार से फ़ारिग़[2] हुआ वह शाह[3] ।
नागाह[4] दोनों बच्चों पै (१) उसकी पड़ी निगाह ।
रखवाके उनको ऊंट पे जल्दी से ख्वामख़्वाह[5] ।
ली उस शिकार गाह[6] से फिर अपने घर की राह ।
महलों में अपने आन के उसने लिया क़रार ॥४॥

जब आये शेरो शेरनी बा हालते तबाह[7] ।
और दोनों बच्चे घर में न आये उन्हें निगाह ।
वह शेर खाके ग़श[8] गिरा इक बार करके आह ।
और शेरनी ने लीं नजफ़ अशरफ़[9] की यूंहीं राह[10] ।
सर पीटती चली वह बयाबां[11] से सोगवार[12] ॥५॥

अलक़िस्सा कितने रोज़ में वह शेरनी ग़रीब ।
भूकी प्यासी फेरती होटों पे ख़ुश्क जीब ।
शौहर से छूटी और हुई बच्चों से बे नसीब[13] ।
आ पहुंची यक बयक[14] नजफ़ अशरफ़ के अन क़रीब[15] ।
पंजों से अपने सर पे उड़ाती हुई ग़ुबार ॥६॥

बाजार में नजफ़ के जब आई वह नीम जां ।
हर एक दुकां से वां की उठा शोर और फ़ुगां[16] ॥
कोई पुकारा दौड़ियो कोई पुकारा हां ।
हैबत[17] से उसकी छुपने लगे पीर[18] और जवां[19] ।
चारों तरफ़ से धूम मची आके एक बार ॥७॥

---

१. मतलब यह कि २. फ़ुरसत में आना ३. बादशाह ४. अचानक ५. बे मतलब, अकारण ६. शिकार खेलने की जगह ७. बुरी हालत ८. बेहोश ९. हज़रत अली के शहर जहाँ उनका मजार भी मानते हैं १०. रास्ता ११. जंगल १२. दुःखी १३. अभागिन १४. अचानक १५. पास १६. चीख पुकार १७. डर १८. बूढ़े १९. नौजवान

पाठान्तर—
(१) का० श० आ० पर

वह तो किसी तरफ़ को न घुड़की बताती थी ।
ने मुंह को मोड़ती थी न पंजा उठाती थी ।।
आंखों से उस हुजूम[१] में आंसू बहाती थी ।
शाहे नज़फ़ के रौज़े[२] पे फ़र्यादी[३] जाती थी ।।
लोग इस पर अपने ख़ौफ़ से कहते थे मार-मार ।।८।।

जिस दम वह पहुंची हैदरे सफ़दर[४] के दर[५] तलक ।
दरबान उसके ख़ौफ़ से यक्सर[६] गये सरक[७] ।।
दाखिल हुई वह रौज़ऐ अनवर[८] में यक बयक ।
रोने लगी वह सामने सर को पटक-पटक ।।
आंसू की दोनों आंखों से बहने लगी क़तार ।।९।।

आंखों से उसके आंसू की नद्दी जो बहती थी ।
बच्चों का दाग़[९] अपने कलेजे पे सहती थी ।
कुछ मुंह से शोर करती थी कुछ देख रहती थी ।
गोया[१०] वह शह से अपनी जुबां में यह कहती थी ।
बच्चे मेरे दिलाइये या शेरे किर्दगार[११] ।।१०।।

रोती थी यूं वह शेरनी, आंसू बहा-बहा
मज़लूम[१२] जैसे रोवे है आदिल[१३] के पास आ
और कुछ जुबां से अपनी सुनाती थी बग़बग़ा[१४]
निकले थी आग़ा-आग़ा[१५] की मुंह उसके से सदा[१६]
कह आग़ा-आग़ा[१७] दर्द से रोती थी ज़ार-ज़ार[१८] ।।११।।

---

१. भीड़ २. कब्र पर ३. पुकार करने वाली ४. फौज की कतार को फाड़ने वाला ५. चौखट
६. यकायक ७. हट गए ८. बहुत चमकदार ९. दुख १०. जैसे, मानों ११. खुदा के शेर ।
१२. जिस पर जुल्म किया गया हो १३. इंसाफ करने वाला १४. अचानक, सहसा १५. मालिक-मालिक ।
१६. आवाज़ १७. मालिक मालिक १८. फूट-फूट कर अत्यधिक

फ़र्यादी[1] बन के साक़िये कौसर[2] के सामने ।
मोहताज[3] बनके साहिबे क़ुम्बर[4] के सामने ।
यूं देखती थी रौज़ए अनवर[5] के सामने ।
मज़्लूम[6] जैसे आन के दावर[7] के सामने ।
करता है उसके हुक्म का रह-रह के इन्तज़ार ।।१२।।

लोगों के दिल में जब तो हुआ ख़ौफ़ इसका कम ।
सब इसके पास आन के देखें थे इसका ग़म ।
हर आन[8] अपने सर को पटक करके चश्मे नम[9] ।
पंजों को इस तरह वह उठाती थी दम बदम ।
फ़र्यादी दाद[10] माँगे है जूं हाथ को पसार ।।१३।।

फ़र्याद[11] वह तो मांगे थी आक़ा[12] से झूम झूम ।
यानी फ़लक[13] ने मुझको दिखाया वह रोज़े शूम[14] ।
इस बात से तमाम नजफ़ में पड़ी यह धूम ।
गिर्द[15] उसके मर्दोज़न[16] का हुआ आन के हुजूम[17] ।
हैरत में थे तमाम चैह[18] नादां चैह होशियार ।। १४ ।।

कोई पानी उसके वास्ते कोई खाना लाता था ।
लेकिन उसे तो रोने सिवा कुछ न भाता था ।
बच्चों का दाग़ होश सब उसके उड़ाता था ।
जो उसको देखता था उसे रोना आता था ।
ऐसी तरह से सर को पटकती थी बार-बार ।। १५ ।।

---

१. दुहाई देने वाला २. हज़रत अली ३. जो कुछ न कर सकता हो ४. हज़रत अली का गुलाम ५. चमकदार ६. जिस पर अत्याचार किया गया हो ७. हाकिम ८. प्रत्येक क्षण ९. रोकर १०. इंसाफ ११. दुहाई १२. मालिक १३. आकाश, भाग्य १४. मनहूस, बुरा दिन १५. आस पास १६. स्त्री-पुरुष १७. भीड़ १८. चाहे

वाँ तीन दिन वह शेरनी भूकी पड़ी रही।
नाचार[1] उन शरीफ़ों ने देख उसकी बेकली।
जिस तरह वां क़दीम[2] से कहने की राह थी।
उस तरह से जनाबे मुक़द्दस[3] में अर्ज़ की।
बा सीनए अलम कशो[4] बा चश्मे अश्क बार[5] ॥ १६ ॥

आई निदा[6] यह शेरनी देती दुहाई है।
एक शख़्स के यह ज़ुलमो सितम की सताई है।
बच्चों ने इसके क़ैद की आफ़त जो पाई है।
सो अब हमारे रौज़े पे फ़र्यादी आई है।
कल इसका भेद होवेगा तुम सब पे आश्कार ॥ १७ ॥

यां तो शरीफ़ को यह इनायत हुआ जवाब[7] ।
वां जा पलंग उलट दिया उसका बऐनेख़्वाब[8] ।
फ़रमाया वह जो शेर के बच्चे हैं दिल कबाब[9] ।
भिजवादे उनको शहर नजफ़ में तू कल शिताब[10] ।
वर्ना तू इस गुनाह से बहुत होगा शर्मसार ॥ १८ ॥

मां उनकी उनके वास्ते आंसू बहाती है।
और तीन दिन हुए हैं न पीती न खाती है।
फ़र्यादी होके रोती है और ग़ुल[11] मचाती है।
ग़श[12] हो हमारे रौज़े में जी को खपाती है।
जल्दी से उनको भेज दे, कर ऊंट पर सवार ॥ १९ ।

वह थर थरा के कांप उठा होके उज़्र ख़्वाह ।
जाना यह उसने यह है शहंशाहे दीं पनाह ।
बोला नजफ़ तो पन्द्रह दिन की है यां से राह ।
भिजवादूं किस तरह से उन्हें कल मैं पुर गुनाह[15] ।
इतना तो इस ग़ुलाम में कब है गा इख़्तियार[16] ॥ २० ॥

---

१. जो कुछ न कर सके २. पुराना ३. पवित्र ४. गम उठाने वाले सीने ५. आंसू बरसाने वाली आंखों के साथ ६. पुकारना, आवाज़ करना ७. उत्तर ८. स्वप्न में ९. कबाब जैसे जले हुए दिल वाले १०. जल्दी ११. शोर १२. बेहोश १३. बहाना करने वाला १४. शरणागत की रक्षा करने वाले १५. गुनहगार १६. अधिकार

तब(१) हुक्म यह हुआ उसे जिस वक़्त हो सहर[1] ।
जल्दी से दोनों बच्चों को रखवाके ऊंट पर ।
भिजवादे अपने शहर की आबादी से उधर ।
जब पहुंचेंगे यह शहर के दरवाज़े के उपर ।
वां पैदा होगा ग़ैब[2] से एक नाक़ऐ सवार(२)[3] ॥ २१ ॥

होते ही सुबह उसने मंगा कर वह दो बच्चे ।
रखवाके एक ऊंट पे जल्दी रवाँ किये ।
जब लोग आये शहर के दरवाज़े के कने[4] ।
क्या देखें एक शख़्स को वां आधी रात से ।
है मुन्तज़िर[5] वह ऊंट की पकड़े हुए महार[6] ॥ २२ ॥

जाते ही दोनों बच्चे उन्होंने(३) उसे दिये ।
बा एहतियात[7] सौंप के फिर शहर को फिरे ।
वह उन बच्चों को ले के चला इस शिताब[8] से ।
आ पहुंचा उस मकान में एक पहर दिन चढ़े ।
यकबार उसका शहर नजफ़ में हुआ गुज़ार ॥ २३ ॥

बच्चों के आने आने के जब गुल हुए कडोड़ ।
वह शेरनी भी तकने लगी अपने मुंह को मोड़ ।
जब लाके उसके सामने बच्चे दिये वह(४) छोड़ ।
यूं ख़ुश हो चाटने लगी उल्फ़त से वह झंझोड़ ।
इंसान जैसे करता है बच्चों को अपने प्यार ॥ २४ ॥

बच्चे भी दौड़ मां के गले से लिपट गए ।
यूं जैसे कोई दूर का बिछड़ा हुआ मिले ।
छाती पे लोट लोट के जा दूध से लगे ।
उस शेरनी के जैसे कलेजे में दाग थे ।
वैसे ही उसके मुंह पे ख़ुशी की हुई बहार ॥ २५ ॥

---

१. सुबह २. परोक्ष ३. ऊंटनी सवार ४. पास ५. इंतजार करने वाला ६. नकेल ७. ठीक़ तरह ८. जल्दी

पाठान्तर—१. क़ा० जब २. क़ा० श० नाक़ओ ३. क़ा० उन्हीं के ४. क़ा० श० आ० उल्फ़त की कर ।

जब उसने बच्चे पाये तो होकर वह शादमां ।
बच्चों समेत उठके वह हैवान[१] बे ज़ुबां[२] ।
रौज़े के सात बार तसद्दुक़[३] हुई वहां ।
फिर आस्ताना[४] चूम हुई वां से वहरवां ।
जा पहुंची अपने दश्त[५] में ख़ुश होके एक बार ।। २६ ।।

शेरे[६] ख़ुदा के अद्ल[७] की यह देख रस्मो[८] राह ।
ख़लक़त[९] तमाम वां की पुकारी यह वाह वाह ।
इंसाफ ऐसा चाहिए ऐ शाहे दीं पनाह[१०] ।
हामियो[११] मुन्सिफ़[१२] और नहीं कोई तुम सा शाह ।
है ख़त्म तुम पे अद्लो हिमायत[१३] का कारोबार ।। २७ ।।

हैवां तुम्हारे लुत्फ़ से जिस वक़्त होवें शाद[१४] ।
इंसान फिर यहां से(१) फिरें क्यूंकि नामुराद[१५] ।
जैसे तुम्हारे दर[१६] से मिली शेरनी को दाद[१७] ।
एहसान ऐसे ऐसे बहुत ऐ करम निहाद[१८] ।
हैंगे तुम्हारे सफ़हऐ आलम[१९] में यादगार ।। २८ ।।

ऐ शाह यह 'नज़ीर' तुम्हारा गुलाम है ।
रखता सिवा तुम्हारे किसी से न काम है ।
आसी[२०] है पुर गुनाह[२१] है और ना तमाम है ।
दिन रात उसका आपसे अब यह कलाम है ।
रख लीजो मेरी आबरू या शेरे किर्दगार[२२] ।। २९ ।।

---

१. जानवर २. जो कुछ कह न सके । ३. न्योछावर करना, सदक़े करना ४. चौखट ५. जंगल ६. ख़ुदा के शेर हज़रत अली ७. इंसाफ ८. कायदा कानून ९. लोग, जन समूह १०. दीन का बचाव करने वाला ११. तरफ़दार १२. इंसाफ करने वाला १३. तरफ़दारी १४. प्रसन्न १५. जिसकी इच्छा पूरी न हो १६. दरबाजा १७. इंसाफ १८. दान देने की आदत १९. दुनियां २०. गुनहगार, पापी, मुजरिम २१. पापों से भरा हुआ २२. ख़ुदा के शेर, हज़रत अली ।

पाठान्तर—१. क़ा० श० आं० मकान से ।

मन्क़बत हज़रत अली[+]

अली की याद में रहना इबादत[१] इसको कहते हैं।
अली का वस्फ़[२] कुछ कहना सआदत[३] इसको कहते हैं।
अली की मदह्[४] का पढ़ना करामत[५] इसको कहते हैं।
अली के नाम का लेना हलावत[६] इसको कहते हैं।
अली की हुब[७] में मर जाना शहादत[८] इसको कहते हैं॥ १॥

उसी को सर झुका सजदा किया ख़ुर्शीदे[९] अनवर[१०] ने।
उसी को लाफ़ता[११] हर दम कहा अल्लाहो अकबर ने।
उसी को लहमके लहमी[१२] कहा जाने पयम्बर[१३] ने।
उसी को दम्मकोदम्मी[१४] कहा उस शाहे बरतर ने।
ख़ुदाओ मुस्तफ़ा[१५] से हम क़राबत[१६] इसको कहते हैं॥ २॥

किया मौला[१७] से मेरे गर किसी ने एक सवाल आकर।(१)
जो मांगा एक शुतर[१८] उसको दिलाये सैकड़ों उश्तर[१९]।
अगर कुछ ज़र[२०] की ख़्वाहिश[२१] की तो बख़्शे इस क़दर गौहर[२२]।
कि उसका घर भरा और उसके हमसायों[२३] का घर बाहर।
करीमो[२४] अहले हिम्मत[२५] में सख़ावत[२६] इसको कहते हैं॥ ३॥

[+] हज़रत अली का यशोगान।

१. पूजा २. खूबी या गुण ३. नेकी ४. प्रशंसा ५. चमत्कार ६. मिठाई, मिठास ७. प्रेम ८. ईश्वर के मार्ग पर बलिदान होना ९. सूरज १०. बहुत चमकदार ११. अविजयी १२. तेरा गोश्त पोश्त मेरा गोश्त पोश्त है यह ह० मुहम्मद साहब ने कहा १३. ईश्वर का आदेश लाने वाले हज़रत मुहम्मद साहब १४. तेरा खून और जीवन मेरा खून और जीवन है, यह ह० मुहम्मद साहब ने कहा १५. हज़रतमुहम्मद १६. करीब होना १७. हज़रतअली १८. ऊंट १९. बहुत से ऊंट २०. दौलत २१. इच्छा २२. मोती २३. पड़ोसियों २४. दान देने वाला २५. बहादुर २६. दान देना।

पाठान्तर—१. श० अगर।

अमीरुलमोमिनीं[१] गर[२] दश्त[३] में पढ़ने नमाज़ आवें ।
वहीं क़ामत[४] के कहने के लिये जिब्रील[५] आ जावें ।
सफ़े[६] हूरों[७] मलक[८] गिल्मांओ[९] जिन्नो[१०] इंन्स[११] की लावें ।
मेरा मौला[१२] हर एक सिजदे[१३] में वस्ले हक़[१४] ही दिखलावें ।
नबुव्वत[१५] के जो मालिक हैं इमामत[१६] इसको कहते हैं ।। ४ ।।

उसी ने एक हमले से गिराया बाब[१७] ख़ैबर का ।
करोड़ों(१) काफ़िरों[१८] से जा लड़ा वह एक तन तनहा[१९] ।
चहे[२०] बीरुलअलम[२१] में कूद[२२] कर देवों को जा मारा ।
हज़ारों पहलवानों से कभी अपना न मुंह मोड़ा ।
बहादुर बेबदल[२३](२) यकता[२४] शुजाअत[२५] इसको कहते हैं ।। ५ ।।

कहा उस शाह ने रोज़े क़यामत[२६] मैं जो आऊंगा ।
वहां अरसात[२७] में अपने मुहिब्बों[२८] को जो पाऊंगा ।
खड़ा हो अर्श[२९] के आगे सभों को बख़्शवाऊंगा ।
पिला कर जामे कौसर[३०] सबको जन्नत पहुंचवाऊंगा ।
अली के दोस्तों सुन लो शफ़ाअत[३१] इसको कहते हैं ।। ७ ।।

---

१. मुसलमानों के सरदार २. अगर ३. जंगल ४. नमाज़ से पूर्व तकबीर कहना ५. वही लाने वाला फ़रिश्ता ६. कतार ७. सुन्दरियां (जन्नत की) ८. फरिश्ता ९. स्वर्ग के बालक १०. जिन्नात ११. मनुष्य १२. खुदा १३. खुदा के आगे सर ज़मीन पर रखना १४. खुदा से भेंट १५. ईश्वर दूत होने के १६. रहबरी १७. दरवाज़ा १८. खुदा को न मानने वाला १९. अकेला २०. कुंआ २१. कुंए का नाम २२. पहुँचकर २३. अनुपम २४. अकेला २५. बहादुरी २६. कयामत के दिन २७. कयामत २८. चाहने वालो २९. तख़्त (ख़ुदा का) ३०. स्वर्ग के हौज़ के पानी का प्याला ३१. सिफ़ारिश ।

पाठान्तर—१. श० आ० जा० कड़ोडो २. आ० बेदिल ।

"नज़ीर" आवे वह दिन जो शाह को सब दोस्तां देखें।
तो फिर हसनैन[१] के सदक़े[२] से उनको हम भी वां देखें।
और अब दुनियां में आंखों से नजफ़ का आस्तां[३] देखें।
सरों पर अपने वह दामाने आली[४] सायबां[५] देखें।
क़सम ईमान की हम ऐन राहत[६] इसको कहते हैं ॥ ७ ॥

---

१. हज़रत हसन और हुसैन २. ईश्वर के नाम पर जो गरीबों को दें ३. चौखट ४. बड़ेआंचल
५. सायवान, धूप से बचाने के लिए छाजन ६. ख़ास आराम।

मन्क़बत अमीरुलमोमिनीन

हज़रत अली करमुल्लाहवजह+

नूरे[१] ज़हूरे[२] ख़ालिक़े[३] अकबर[४] को क्या लिखूं ।
रूहे[५] रवाने जिस्म[६] पयम्बर[७] को क्या लिखूं ।
दरियाए मारिफ़त[८] के शिनावर[९] को क्या लिखूं ।
दोनों जहाँ के गौहरे[१०] अनवर[११] को क्या लिखूं ।
हैरत में हूं कि हैदरे सफ़दर[१२] को क्या लिखूं ॥ १ ॥

गर नूर उसका देख कहूं शम्स[१३] और क़मर[१४] ।
वह उसका ज़र्रा[१५] नूर का वह उसका फैज़ बर[१६] ।
तारे तो जूं सितारे हैं उस नक़्श(१) पा[१७]उपर ।
और कुतुब[१८] भी तो उससे ही क़ायम है बेख़तर ।
हैरत में हूं कि हैदरे सफ़दर को क्या लिखूं ॥ २ ॥

फ़िल मिस्ल[१९] गर मैं उसको कहूं रौज़ए जनां[२०] ।
झुकती हैं बारे(२) इज्ज़[२१] से जन्नत की डालियां ।
और जो भला मैं ख़ूबिये रिज़वा[२२] से दूं निशां ।
सो वह भी उसके बाग़ का अदना है बाग़बां ।
हैरत में हूं कि हैदरे सफ़दर को क्या लिखूं ॥ ३ ॥

+ मुसलमानों के अमीर (सरदार) हज़रतअली (अल्लाह का करम आप पर हो) का यशोगान ।

१. रोशनी २. जाहिर होना ३. बनाने वाला ४. बड़ा ५. जान ६. जिस्म में बहता हुआ ७. ईश्वर का संदेश लाने वाला ८. अध्यात्म, तसव्वुफ ९. तैरने वाला, तैराक १०. मोती ११. बहुत अधिक चमकदार, उज्ज्वलतम १२. फौज की सफ़ (पंक्ति) को फाड़ने वाला १३. सूरज १४. चांद १५. टुकड़ा, अंश १६. अंशाशि १७. पैरों के निशान १८. ध्रुवतारा १९. मिसाल के तौर पर २०. स्वर्ग का बाग़ २१. सम्मान के बोझ २२. जन्नत का दरोगा २३. मामूली ।

पाठान्तर—१. क़ा० श० आ० कफ़श २. क़ा० यार ।

और जो कहूं कि चश्मए[१] आबे हयात[२] है।
या ख़िज़्र[३] है तो यह कोई कहने की बात है।
उसके अरक़[४] से जिस्म के यह क़तरः(१) जात[५] है।
और उसकी उसके फ़ज़्ल से यारो निजात[६] है।
हैरत में हूं कि हैदरे सफ़दर को क्या लिखूं॥ ४ ॥

इस शाह के अगर लबो[७] दनदान[८] की सफ़ा।
कहते कोई कि लालो[९] गौहर[१०] हैं ये बेबेहा[११]।
सो वह तो सदक़े होके रहा ख़ाक में गड़ा।
और यह भी हो निसार सदा आब में रहा।
हैरत में हूं कि हैदरे सफ़दर को क्या लिखूं॥ ५ ॥

शाहा[१२] तेरी जो मदह[१३] बनाता है अब "नज़ीर"।
तेरे सिवा किसी का कहाता है कब "नज़ीर"।
लेकिन कलम को हाथ लगाता है जब "नज़ीर"।
सलवात[१४] पढ़के यह ही सुनाता है तब "नज़ीर।
हैरत में हूं कि हैदरे सफ़दर को क्या लिखूं॥ ६ ॥

---

१. स्रोत २. अमृत ३. एक ईश-दूत ४. रस ५. शरीर के हिस्से ६. मुक्ति ७. होंठ
८. दांत ९. मोती १०. मोती ११. बहुमूल्य १२. बादशाह १३. प्रशंसा गान १४. दुरुद।

पाठान्तर—१. क़ा० क़तरा।

मन्कबत दर शाने अमीरुलमोमिनीन

हज़रत अली +

करूं क्या वस्फ़[१] मैं उनका अलमनाक[२] ।
कि जिनकी शान में आया है लौलाक[३] ।
फिरा जो अर्श[४] और कुर्सी[५] पै चालाक ।
कहां वह और कहां मेरा यह इदराक[६] ।
चः निस्बत ख़ाक रा बा आलमे पाक[७] ॥ १ ॥

मुहम्मद रहमतुललिलआलमीं[८] हैं ।
हबीबे हक़ शफ़ीउलमुज़नबीं[९] हैं ।
रसूले पाक ख़तमुल मुरसलीं[१०] हैं ।
कोई ऐसा ख़ुदाई में नहीं है ।
लगा तहतस्सरा[११] से ता ब[१२] अफ़लाक[१३] ॥ २ ॥

मुहम्मद और अली याक़ूते[१४] अहमर[१५] ।
दुरे[१६] बहरे ख़ुदा ख़ातूने अतहर[१७] ।
ज़मर्रूद[१८] लाल हैं शब्बीरों[१९] शब्बर[२०] ।
जवाहर ख़ानऐ क़ुदरत[२१] के अन्दर ।
यही पांचों गुहर[२२] है पंज तन पाक ॥ ३ ॥

+ मुसलमानों के अमीर (सरदार) हज़रत अली की प्रतिष्ठा में यशोगान ।

१. गुण २. खेदजनक ३. मुहम्मद साहब की उपयोगिता दर्शाने हेतु प्रयुक्त शब्द ४. आसमान ५. बैठने की जगह ६. बुद्धि ७. इस मिट्टी को आलमे पाक से क्या ताल्लुक । ख़ाक ख़ाक है आस्मां आस्मां है ८. सृष्टि पर दया करने वाले ९. संसार को मोक्ष १०. आखिरी रसूल (ईश्वर के संदेश लाने वाले) ११. पाताल १२. तक १३. आसमान १४. एक रत्न १५. सुर्ख, लाल १६. बड़ा मोती १७. पवित्र १८. हरे रंग का रत्न, पन्ना १९. हज़रत हुसन का नाम २०. हज़रत हसन का नाम था २१. प्रकृति २२. मोती ।

उन्हीं के वास्ते ख़ुल्दे अदन[१] है ।
उन्हीं के वास्ते नहरे लबन[२] है ।
जिन्हें इनकी मुहब्बत का चलन है ।
बहिश्ती हुल्ला[३] और उनका बदन है ।
सदा शेरे बहिश्त और सायए पाक[४](१) ॥ ४ ॥

जिसे उनकी मुहब्बत पल ब पल है ।
उसी को दीन और दुनिया का फल है ।
जो कोई उनकी उलफ़त में दग़ल[५] है ।
तो उस मुरतिद की यारो यह मिसल[६] है ।
कि जैसे लेवे तूबा बेच कर ढाक ॥ ५ ॥

अली जो शहसवारे लाफ़ता है ।
अमीरुलमोमिनी[७] शेरे ख़ुदा है ।
फ़लक हैबत[८] से उसकी कांपता है ।
अली जो सफ़दरे[९] रोज़े वग़ा है ।
कि जिसकी शर्क़[१०] से है ग़र्ब[११] तक धाक ॥ ६ ॥

अली है क़ातिले[१२] कुफ़्फारे[१३] गुमराह[१४] ।
अली का हुक्म है माही[१५] से ता माह[१६] ।
नबी का क़ुव्वते बाज़ू[१७] यदुल्लाह ।
उठावे चर्ख़[१८] की गर्दिश[१९] तो वल्लाह ।
अभी थम जाये दम से चर्ख़[२०] का चाक ॥ ७ ॥

---

१. जन्नत के बाग २. दूध की नहर ३. स्वर्गीय लिबास ४. पवित्र ५. खोटा ६. मिसाल ७. मुसलमानों का सरदार ८. डर ९. फ़ौज की पंक्ति को फाड़ने वाला १०. सूरज के निकलने की जगह ११. सूरज के छिपने की जगह १२. कत्ल करने वाला १३. कई ईश्वरों को मानने वाला १४. राह से भटके हुए १५. मछली १६. चांद १७. भुजाओं की शक्ति । १८. आसमान १९. दौड़ क्रम-चक्र २०. आसमान

पाठान्तर—१. क़ा० श० आ० ताक ।

अली ने महद[1] में चीरा है अज़दर[2] ।
अली ने काट डाले उमरो[3] अन्तर[4] ।
उलट डाला है एक हमले से खैबर ।
ख़वास[5] अशया[6] का फेरे गर वह सरवर[7] ।
तो हो तिर्याक़[8] ज़हर और ज़हर तिर्याक़[9] ।। ८ ।।

अली को मुस्तफ़ा[10] ने जी[11] कहा है ।
अली को जिस्मके जिस्मी[12] कहा है ।
अली को लहमके लहमी[13] कहा है ।
अली को रूहके[14] : रूही कहा है ।
यह समझे वह ख़ुदा दे जिसको इद्राक[15] ।। ९ ।।

अली को ख़ास निस्वत[16] है नबी[17] से ।
नबी को राह दिल में है अली से ।
वह दोनों एक तन और एक जी से ।
किसी को ताब[18] क्या गैर अज अली से ।
जो पहने मुस्तफ़ा[19] के तन की पोशक ।। १० ।।

अली को जो कोई पहचानता है ।
बराबर मुस्तफ़ा के मानता है ।
जो इनमें कुछ तफ़ावुत[20] जानता है ।
वह अपने ख़ाक सर पर छानता है ।
लगाई उसने दोज़ख़[21] की मगर ताक[22] ।। ११ ।।

---

१. पालना २. अजदहा, बहुत बड़ा सांप ३. उमर ४. अन्तर (उमर, अन्तर नामक दो पहलवान) ५. गुण ६. चीजे ७. सरदार ८. ज़हर को नष्ट करने वाला ९. ज़हर को नष्ट करने वाला १०. हज़रत मुहम्मद साहब ११. जिन्दगी, जीवन १२. ऐ अली तेरा जिस्म मेरा जिस्म है १३. तेरा गोश्त पोश्त मेरा गोश्त पोश्त हैं १४. तेरी रूह मेरी रूह है १५. समझ बूझ १६. वास्ता, सम्बन्ध १७. हज़रत मुहम्मद साहब १८. ताकत १९. हज़रत मुहम्मद साहब २०. दूरी २१. नरक २२. दृष्टि डालना

अली की दोस्ती में जो मरेगा ।
उसी को बाग़ जन्नत का मिलेगा ।
अली के बुग्ज़[1] में जो जान देगा ।
वह मलउन[2] दोज़ख़ अन्दर यों जलेगा ।
कि जैसे आग पर जलता है ख़ाशाक[3] ॥ १२ ॥

जिसे वस्फ़े[4] अली कुछ सालता है ।
उसी को दोज़ख़ आख़िर ढालता है ।
जो उनका बुग्ज़ दिल में पालता है ।
गोया भर भर के डलियां डालता है ।
वह अपने दीन और ईमान में ख़ाक ॥ १३ ॥

---

१. द्वेष २. तिरस्कृत ३. कूड़ा करकट ४. प्रशंसा ।

ज़ोरे बाज़ुए अली[+]

एक मोजिज़ा[1] कहता हूं मैं उस शाह का सुनकर ।
मोती से सुख़न हैं लो इसे धागे से चुनकर ।
एक क़ाफ़िरे बदज़ात चला लड़ने की धुन कर ।
आ सामने हैदर के ग़जब आग सा भुनकर ।
जूं ऊंट ज़िबह करते हैं चिल्ला के दहाड़ा ॥१॥

कहने लगा मैं तुमसे अली कुश्ती लड़ूंगा ।
कुश्ती के जो हैं पेच अली तुमसे करूंगा ।
ख़म ठोंक के मैदाँ में अली तुमसे अड़ूंगा ।
हां, या अली मैं आपसे कुछ गिर न पड़ूंगा ।
हर चंद अली आपने देवों को पछाड़ा ॥२॥

जब शाह उठे जोश में आ तैशो ग़ज़ब के ।
यकबारगी उस काफ़िरे बदज़ात से लिपटे ।
कर यादे ख़ुदा हाथ कमर बंद में उसके ।
एक हाथ से फेंका जो उसे तीन चरख़ दे ।
यूं गिर पड़ा जूं गिरता है दरिया का कड़ाड़ा ॥३॥

चाहा जो उठे ख़ौफ़ से वह कांप धड़क कर ।
उस शाह ने मारी वहीं एक लात कड़क कर ।
रूह उसकी निकलने लगी नथनों से फड़क कर ।
नथनों से लहू डाल के माथे पै छिड़क कर ।
मुनकिर[4] को अजल ले चली दरिया को निवाड़ा ॥४॥

[+] हज़रत अली का वाहुबल

[1] चमत्कार [2] शरअ के नियमों के अनुसार जानवर का हलाल करना [3] चक्कर [4] शरअ को न मानने वाला।

दांतों से पकड़ तिनका वह बोला अली आया ।
तक़्सीर[5] हुई मुझसे मैं अपना किया पाया ।
फिर उसको मुसलमां किया, कलमे को पढ़ाया ।
कुफ़्फार में जा दीन के डंके को बजाया ।
दीं–दारी[6] को जारी किया और कुफ्र[7] को गाड़ा ॥५॥

---

[5] ख़ता, कुसूर [6] दीन (धर्म) पर चलाना [7] ईश्वर को एक न मानना ।

ख़ैबर की लड़ाई

हो क्यूं न बुरा ग़म से ख़वारिज[१] का दहाड़ा ?
जड़ पेड़ से कुफ़्र[२] उनका न क्यूं जाये उखाड़ा ?
घर तैश[३] मुख़ालिफ़[४] का रहे क्यूं न उजाड़ा ?
"ले नाम अली" जब कहूं ललकार जबाड़ा[५] ।
दरियाये फ़लक[६] का भी दहल जाये कड़ाड़ा[७] ।।१।।

पहले तो पयम्बर[८] से लड़ा था वह कड़क के ।
रुस्तम[९] के तईं ठोंक (१) ले, दे ज़ाल[१०] को धक्के ।
छूट जायें वहां सामो[११] नरीमान[१२] के छक्के ।
हैं शाह की जुरअत[१३] के जहां धूम धड़क्के ।
नेजों[१४] के तईं[१५] आन के मैदान में गाड़ा ।।२।।

दुखती थी मेरे शाह की जब आंख सरासर ।
पेश आया जभी मारिकए[१६] क़िलअए[१७] खैंबर ।
इस वास्ते घर छोड़ गये उनको पयम्बर ।
और आप नबी लेके चले दीन का लश्कर ।
झंडों के तईं आन के मैदान में गाड़ा ।।३।।

दिन रात मची आन के ख़ैबर की लड़ाई ।
और फ़तह कई रोज़ तलक हाथ न आई ।
ले नादेअली[१८] हक़ ने पयम्बर को भिजाई ।
जिब्रील ने यह बात वहीं आन सुनाई ।
यह गढ़ तो किसी तरह न जावेगा उखाड़ा ।।४।।

---

१. जो खारिज हो गए हों २. खुदा को एक न मानना ३. क्रोध ४. विरोधी, शत्रु ५. बुलन्द आवाज़ के साथ ६. आसमान ७. नदी का ऊंचा किनारा ८. ईश्वर का सन्देश लाने वाला ९. एक मशहूर पहलवान १०. रुस्तम के परदादा ११. रुस्तम के पिता का नाम १२. रुस्तम के दादा का नाम १३. साहस, हिम्मत १४. भाला १५. को १६. युद्ध १७. किला (ख़ैबर के किले का युद्ध) १८. एक दुआ का नाम ।

पाठान्तर— (१) श० आ० टोक

और यूं ही बहुत रोज़ तलक तुम से लड़ेगा ।
लश्कर पे लड़ाई का बड़ा बोझ पड़ेगा ।
पामाल[१९] न हो, ख़ाक में हरगिज न गड़ेगा ।
जब तक न अली आन के इस गढ़ पे चढ़ेगा ।
यह गढ़ तो उसी शाह से जावेगा उखाड़ा ।।५।।

यह सुनते ही हज़रत ने मेरे शाह को बुलाया ।
आये तो वहीं छाती से बस अपनी लगाया ।
आंखों में लबेपाक[२०] लगाकर यह सुनाया ।
इस फ़तह का है हुक्म तेरे नाम पे आया ।
बेशक यह मकां तुम से ही जावेगा उखाड़ा ।।६।।

यह सुनते ही हैदर[२१] ने, ज़र्राख़ोद[२२] पहनकर ।
दुलदुल[२३] वेरपेचढ़े कहके, जो अल्ला हो व अकबर ।
आये वह वहां पर था जहां क़िलए ख़ैबर ।
कावे[२४] को लगाकर दिया रहवार[२५] को चक्कर ।
नेज़े[२६] को हिलाया कभी तिरछा कभी आड़ा ।।७।।

कहते हैं कि ख़ैबर है बड़े कोह[२७] के ऊपर ।
गिर्द इसके धरा है वहां एक सख्त सा पत्थर ।
दुलदुल को फिरा शाह ने दरवाज़े पे आकर ।
हिम्मत कर उठा हाथ को मारा जो ज़मीं पर ।
पत्थर में वही गड़ गया नेज़ा जूं ही गाड़ा ।।८।।

जब आके हुए वां असदुल्लाह[२८] नुमायां[२९] ।
तब चलने लगे तीरो तबर[३०], खंजरो पैकां[३१] ।
दरवाज़े पे ख़ैबर के जो बैठा था निगहवां[३२] ।
हैदर के ख़तो ख़ाल पे जब उसका गया ध्यांन ।
मुंह देख के काफ़िर ने वहीं शाह को ताड़ा ।।९।।

---

१९. पददलित २०. थूक २१. हज़रत अली २२. लड़ाई की पोशाक २३. एक मादा खच्चर जो इस्कंदरिया के शासक ने हज़रत मुहम्मद साहब को भेंट किया था और उन्होंने उसे हज़रत अली को दिया था । २४. घोड़े को फेरना या मोड़ना २५. तेज़ रफ़तार घोड़ा २६. बर्छी, भाला २७. पहाड़ २८. अल्लाह का शेर, हज़रत अली की उपाधि २९. जाहिर ३०. कुल्हाड़ा, फर्सा ३१. बाण की नोंक, बर्छी की अनी ३२. देखभाल करने वाला ।

चिल्ला के जभी उसने यह आवाज़ सुनाई ।
क्या बैठा है कमबख़्त है शामत तेरी आई ।
जो कुछ कि निशानी थी बुज़ुर्गों ने बताई ।
सब इस असदुल्लाह में देती है दिखाई ।
अब गढ़ तेरा जाता है इसी दम में उखाड़ा ॥१०॥

दस्ती है नजूमों[३३] की सफ़ेदी में सियाही ।
जाते ही मकां लेवेगा यह शेरे इलाही ।
यह तीर यह पैकान[३४] है हैदर की गवाही ।
आई है तेरे कुफ़्र,[३५] की कश्ती पे तबाही ।
आया है वहीं शेर इलाही का निवाड़ा ॥११॥

यह सुनते ही मरहब[३६] को ग़रज़ तैश चढ़ आया ।
आवाज़ से हारिस[३७] को वहीं उसने बुलाया ।
ले लश्करे कुफ़्फ़ार[३८] को बाहर निकल आया ।
हैदर से चला लड़ने को वह देव का जाया ।
तैयार किया लड़ने को कुश्ती का अखाड़ा ॥१२॥

सफ़[३९] बांधे उधर लश्करे कुफ़्फ़ार खड़ा था ।
और एक तरफ़ को था अलम[४०] फ़ौजे अली का ।
और दोनों तरफ़ तेज़ तबल[४१] जंग का बाजा ।
आवाज़ नक़ीबों[४२] ने वहीं ज़ोर की दी आ ।
और जंग का मैदां में जमा आके अखाड़ा ॥१३॥

पहले तो हुई जंग अमूदों[४३] की नमूदार ।
फिर उनकी कमन्दों का खुला हल्क़एं खूंख़्वार ।
फिर बर्क़[४४] की सूरत से चमकने लगी तलवार ।
शेरों से हुआ आन के मैदान नमूदार ।
जूं राद[४५] के होता है गरजने में झंगाड़ा[४६] ॥१४॥

---

३३. नक्षत्रों का प्रकाश ३४. बाण की नोक, बर्छी की अनी ३५. अकृतज्ञता, नाशुक्री ३६. अरब के एक ग़ैर मुस्लिम पहलवान का नाम ३७. सरदार ३८. ईश्वर को न मानने वाले लोग ३९. कतार, लाइन ४०. झंडा ४१. ढोल ४२. शाहकी सवारी के समय आगे आवाज़ लगाने वाले ४३. सरदार ४४. बिजली ४५. बिजली ४६. गर्जना, गूंज

हर सिम्त से आते ही घटा छा गई घनघोर ।
तीरों का बरसने लगा मेंह आन के पुर ज़ोर ।
शमशीर[४७] की बिजली भी चमकने लगी चहुं ओर ।
ईधर से हुआ लश्करे इस्लाम का गुल शोर ।
ऊधर से हर एक काफ़िरे बदकेश[४८] दहाड़ा ।।१५।।

मरहब[४९] ने अखाड़े में क़दम आके दिये गाड़ ।
हारिस भी उसी आन बना आन के एक ताड़ ।
ख़म ठोंक बदल त्योरी को बाज़ू के तईं झाड़ ।
इस ज़ोर से नारा किया वां आन के चिंघाड़ ।
कोहक़ाफ़[५०] के पर्दे में गोया[५१] देव चिंघाड़ा ।।१६।।

यूं कहने लगा लश्करे इस्लाम को ललकार ।
आवे जो हो कोई तुम में पहलवान नमूदार ।
तो हाथ मेरा देख ले और ज़ोर के आसार ।
क्या ताब है मुझ से जो लड़े आन के एक बार ।
मैंने तो सदा देव के सीने को है फाड़ा ।।१७।।

यह सुनते ही हैदर ने दी रख हाथ से समसाम[५२] ।
और सीधे चले आये अखाड़े में उठा गाम[५३] ।
कुम्बर[५४] ने लिया दौड़ के दुलदुल के तईं थाम ।
मरहब से लड़े लेके जब अल्लाह का वह नाम ।
आपस में लगा होने को ज़ोरों का झड़ाड़ा ।।१८।।

मरहब तो वहीं गिर पड़ा यह देख के सामां ।
सब पर हुए मौला के मेरे ज़ोर नुमायां ।
उस काफ़िरे बदकेश[५५] के तब छुट गये औसां ।
मौला ने उसे मार के ठोकर से उसी आं ।
हारिस को कुचल कूट के, मरहब को पछाड़ा ।।१९।।

---

४७. तलवार ४८. बुरे स्वभाव वाला ४९. अरब का एक गैर मुस्लिम पहलवान ५० काफ़ नामक पहाड़ी
५१. जैसे, मानो ५२. तेज़ तलवार ५३. कदम, पैर ५४. हज़रत अली का ग़ुलाम ५५. दुष्ट प्रकृति वाले

था उनमें ही एक और पहलवान ज़ोरआवर[५६] ।
मरहब को उठाने लगा आकर वह ज़ोरआवर ।
दुलदुल ने उसे देख के जल्दी से उछल कर ।
एक लात जड़ी क़हर[५७] की दांतों से पकड़कर ।
यूं चाब लिया जैसे चबाते हैं सिंघाड़ा ।।२०।।

हारिस को गिरा शाम को मरहब के तईं मार ।
मैदां में किये फ़तह के आसार नमूदार ।
हमला किया ख़ैबर के ऊपर आन के एक बार ।
घोड़े के ऊपर हैदरी नारे के तईं मार ।
पाताल की जड़ से दरे ख़ैबर[५८] को उखाड़ा ।।२३।।

थीं शाह की ज़ुरअत[५९] की जहां तक कि तरंगें ।
सब कांप गईं क़िलए ख़ैबर[६०] की उलगें ।
कितने तो वहां भाग गए मार शलगें ।
और कितने गए भूल वहां आन के ज़ंगें ,
हर गब्रु[६१] को फिर तप से चढ़ा आन के जाड़ा ।।२२।।

तब उनपे चली आन के इस्लाम की तलवार ।
भागा कोई ज़ख़्मी, कोई बिस्मिल[६२] कोई ख़ूंबार ।
ढूंढे न मिला फिर किसी बदकेश का आसार ।
सब दूर हुए गुलशने दुनिया से ख़सो ख़ार[६३] ।
और कुफ़्र[६४] के जंगल पे बजा दीं[६५] का कुल्हाड़ा ।।२३।।

की फतह ग़रज़ शाह ने खैंबर की लड़ाई ।
बदकेशों की पल मारते ही कर दी सफ़ाई ।
कुफ़्फ़ार में इस्लाम की नौबत को बजाई ।
ख़ैबर में फिरी आन के हैदर की दुहाई ।
सब उड़ गया फिर आन के कुफ़्फ़ार का घाड़ा ।। २४ ।।

---

५६. ताकतवर ५७. ग़जब ५८. खैबर का दरवाज़ा ५९. दिलावरी ६०. ख़ैबर का किला ६१. आग के उपासक, पहलवान, शक्तिशाली युवक ६२. घायल ६३. सूखी घास और कांटे ६४. ईश्वर को एक न मानना ६५. मज़हब ।

मैं मदह[६६] नज़ीर अब जो बनाता हूं हमेशा।
दौलत ही का इनआम मैं पाता हूं हमेशा।
खाता हूं, खिलाता हूं लुटाता हूं हमेशा।
ख़ैरात उसी दर से मैं पाता हूं हमेशा।
जारी है सदा मेरे शहंशाह का वाड़ा ॥ २५ ॥

---

[६६] प्रशंसात्मक काव्य।

मौजिज़ा हज़रत अब्बास बिन अली करमुल्लाह वजह+

(अरकाट के एक साहूकार के लड़के का वाक़या)

जो मुहिब[१] हैं ख़ान्दाने मुस्तफ़ा[२] के दोस्त दार[३] ।
और अलीए[४] मुर्तज़ा[५] पर जानो दिल से हैं निसार[६] ।
सब सुनें दिलशाद[७] हो यह माजरा[८] तफ़सील दार[९] ।
हैं जो अब्बासे अली[१०] कर्रार[११] गाज़ी[१२] नाम दार ।
उनका मैं एक मौजिज़ा लिखता हूं बा इज़्ज़ो विक़ार[१३] ॥१॥

शहर है अरकाट इक वां एक साहूकार था ।
जितने वां ज़रदार[१४] थे उन सब में वह सरदार था ।
मालो ज़र का घर में इसके जा बजा[१५] अंबार[१६] था ।
उसके एक बेटा सआदतमंद[१७] बरख़ुर्दार[१८] था ।
गुल बदन[१९] गुल पैरहन[२०] गुल रंग[२१] गुलरू[२२] गुल इज़ार[२३] ॥२॥

दूसरा उसके कोई बेटी न बेटा था मगर ।
एक बेटा था वहीवां सरवरे[२४] रश्के क़मर[२५] ॥
था पिन्हाता उसको पोशाक और जवाहर सरबसर[२६] ।
बस कि इकलौता जो था इस वास्ते उसके उपर ॥
बाप भी जी से फ़िदा और मां भी दिल से थी निसार[२७] ॥३॥

+ हज़रत अली के पुत्र हज़रत अब्बास (अल्लाह का करम आप पर हो) का चमत्कार ।

१. प्यार रखने वाले २. पवित्र, पुनीत हज़रत मुहम्मद साहब का ख़िताव ३. हज़रत मुस्तफा के घर से प्यार करने वाले ४. हज़रत अली ५. पसंद किए हुए (प्रिय अली) ६. कुरबान ७. खुश ८. वारदात ९. विस्तृत, विवरण सहित १०. हज़रत अली के पुत्र ११. शत्रु पर बराबर हमला करने वाले १२. युद्ध में शत्रुओं का कत्ल करने वाले १३. आदर सहित १४. मालदार १५. जगह-जगह १६. ढेर १७. नेक १८. बेटा १९. फूल सा शरीर २०. फूल से वस्त्र २१. फूल सा रंग २२. फूल सा चेहरा २३. फूल जैसे गालों वाला २४. सरदार २५. चांद की प्रभा को मंद करने वाला २६. बिल्कुल २७. निछावर ।

उन दिनों में था बरस तेरह् का उसका सिन्नो साल[२८]।
जब नज़र आया उसे माहे मुहर्रम[२९] का हिलाल[३०]।
ताज़िया ख़ानों[३१] में जाता छुप के वह राना ग़िज़ाल[३२]।
मर्सियों[३३] में सुनके शाहे कर्बला[३४] के ग़म का हाल।
पीटता सीने को और मातम[३५] से रोता ज़ार-ज़ार ॥४॥

ताज़िये के सामने होके मोअद्दब[३६] सर झुका।
मोरछल रो रो ज़रीहे पाक[३७] पर झलता खड़ा।
जब अलम[३८] उठते तो फिर लड़कों के साथ आंसू बहा।
या हुसैन इब्ने अली[३९] कह कर अलम लेता उठा।
लोग देख उसकी मुहब्बत होते थे हैरान कार[४०] ॥५॥

शाम से आकर वह क़न्दीलें[४१] जलाता दमबदम।
क़ुमक़ुमे[४२] और झाड़ पर शमए[४३] चढ़ाता दम बदम।
औद सोजों[४४] में अगर लाकर गिराता दम बदम।
अहले मजलिस[४५] के तईं शर्बत पिलाता दम बदम।
सब वह करता था ग़रज़ जितना था वां का कारोबार ॥६॥

लेकिन उसके बाप को हर्गिज़ ख़बर अब तक न थी।
जब सुना उसने तो बेटे पर बहुत ताक़ीद[४६] की।
झिड़का और मारे तमांचे खूब सी तम्बीह[४७] की।
और कहा ऐ बे हया बदबख़्त मूजी मुद्दई।
ज़ात से क्या तू निकालेगा मुझे ऐ नाबकार[४८] ॥७॥

---

२८. वर्ष २९. मुहर्रम कामहीना ३०. चांद ३१. ताज़ियों का मातम करने की जगह ३२. सुन्दर हिरन के बच्चे जैसा ३३. शोकगीत ३४. हज़रत इमाम हुसैन ३५. रोना धोना ३६. बाअदब ३७. सुनहरा कब्र जैसा मोम का ताजिया ३८. झण्डा ३९. अली के बेटा ४०. आश्चर्य चकित ४१. फानूस जिनमें चिराग जलाते हैं ४२ छोटे गोल बर्तन ४३. मोमबत्ती दिये ४४. खुशबूदार लकड़ी (सामग्री) जलाने की जगह ४५. मजलिस के लोग ४६. नसीहत ४७. रोकथाम ४८. नालायक

उसके दिल में तो शहीदे कर्बला[४९] का जोश था।
ताज़िये पर ध्यान था और मर्सिये बर गोश[५०] था।
बाप तो करता नसीहत और वह ख़ामोश था।
ने तमांचों का उसे ने झिड़कियों का होश था।
उठ गया था उसके दिल से साफ़ सबका नंगो आर[५१] ।।८।।

बाप ने तो दिन में यह उस पर किया रंजो इताब[५२]।
रात को फिर ताज़िया ख़ानों में जा पहुंचा शिताब[५३]।
फिर पकड़ लाया उसे जाकर बसद हाले खराब।
अल ग़रज़[५४] सौ सौ तरह इस पर किये रंजो इताब[५५]।
उसने पर जाना न छोड़ा उस मकां का ज़ीनहार[५६] ।।९।।

अपना बेगाना[५७] उसे जाकर बहुत समझाता था।
पर किसी का कब कहा ख़ातिर में उसकी आता था।
रोना और मातम[५८] ही करना उसके दिल को भाता था।
ताज़िया खाने की जानिब[५९] यूँ वह दौड़ा जाता था।
जिस तरह आशिक़ किसी माशूक का हो बेक़रार ।।१०।।

जब तो सबने तंग हो यह मस्लहत[६०] ठानी बहम[६१] ।
जिस से करता है यह मातम और उठाता है अलम ।
क्यूं न अब इस दम वही हाथ इसका कर डालो क़लम[६२]।
कह के यह आख़िर को सबने, है क़यामत है सितम।
काट डाला हाथ जल्द उस बेगुनाह का एक बार ।।११।।

अलग़रज़[६३] कर हाथ उस मज़्लूम[६४] का तन से जुदा ।
कोठरी में बंद करके और क़ुफ़्ल[६५] ऊपर जड़ा ।
ने उसे खाना खिलाया ने उसे पानी दिया ।
शाम तक भूका प्यासा कोठरी में था पड़ा ।
देख अपने हाथ को रोता था धाड़ें मार-मार[६६] ।।१२।।

---

४९. करबंला में शहीद किए गए इमाम हुसैन ५०. शोक-गीत में ध्यान मग्न ५१. शर्म ५२. क्रोध, गुस्सा ५३. जल्द ५४. मतलब यह है कि ५५. क्रोध, गुस्सा ५६. कदापि ५७. पराया ५८. दुःख मनाना ५९. तरफ ६०. भेद की बात ६१. आपस में ६२. काट डालो ६३. गर्ज़ यह कि ६४. दुखिया ६५. ताला ६६. बिलख-बिलख कर

वह अंधेरी कोठरी वह भूक पानी की प्यास ।
हाथ से लोहू की बूदें भी टपकतीं आस पास ।
किस मुसीबत में पड़ा वह गुल बदन[६७] ज़र्री लिबास[६८] ।
हाथ ज़ख़्मी, ख़ून जारी, दिल परेशां[६९], जी उदास ।
किस से मांगे दाद[७०] और किसको पुकारे बार-बार ॥१३॥

वह तो अपनी बेकसी के दर्द में रोता था वां ।
इसमें क्या है देखता उस कोठरी के दरमियाँ ।
हो गया एकबारगी नूरे तजल्ली[७१] का निशां ।
इस तजल्ली में नज़र आया उसे एक नौ जवां ।
कांधे के ऊपर अलम, पहलू में तेग़े आबदार[७२] ।१४॥

दास्ताना[७३] हाथ में और पुश्त[७४] के ऊपर सिपर[७५] ।
तन में एक सीमीं[७६] जिरह[७७] और ख़ोद ज़र्री[७८] फ़र्क[७९] पर ।
दायें को तीरो कमां[८०] बांये को शमशीरो[८१] तबर[८२] ।
जिस तरह अबरे सिया[८३] में बर्क़[८४] होवे जलवा गर ।
इस तरह उस कोठरी में आ गया वह शह सवार ॥१५॥

उसने जब इस नौजवां के नूर की देखी झलक ।
था मुजस्सिम[८५] वह तो हक़ का नूर सर से पाँव तक ।
देखते ही इसका हैबत[८६] से गया सीना धड़क ।
मुंद गई आंखें वहीं और खा गईं पलकें झपक ।
हो गया बेहोश वह मजबूर ज़ख़्मी दिलफ़िगार[८७] ॥१६॥

ताब[८८] किसकी है जो उस चेहरे के आगे ताब लाये ।
माह[८९] क्या गर शम्स[९०] भी देखे तो अपना सर झुकाये ।
ऐसे तालअ़[९१] ऐसी क़िस्मत यह नसीबा कौन पाये ।
ऐसा शहज़ादा मुक़द्दस[९२] जिसके घर तशरीफ़ लाये ।
आदमी क्या है फ़रिश्तों[९३] का नहीं इज़्ज़ो विक़ार[९४] ॥१७॥

---

६७. फूल जैसा शरीर ६८. जड़ाऊ कपड़े ६९. परेशान दिल ७०. मदद ७१. रोशनी ७२. पानीदार
७३. दस्ताना ७४. पीठ ७५. ढाल ७६. चांदी जैसा ७७. कवच ७८. सुनहली शिरस्त्राण ७९. सिर,
८०. कमान ८१. तलवार ८२. कुल्हाड़ा, फरसा ८३. काले बादल ८४. बिजली ८५. साकार, मूर्तिमान
८६. डर ८७. ज़ख़्मी दिल ८८. ताकत ८९. चांद ९०. सूरज ९१. भाग्य ९२. पवित्र ९३. देवता
९४. प्रतिष्ठा, इज़्ज़त

वह तो वह नूरे तजल्ली[९५] देख बे ख़ुद था पड़ा ।
इस इनायत इस करम का कुछ भी यारो इन्तिहा[९६] ।
आप घोड़े से उतर के नूर चश्मे लाफ़ता[९७] ।
उस बरीदा[९८] दस्त[९९] को उसके दिया तन से मिला ।
और कहा उठ जल्द ऐ आले नबी[१००] के दोस्तदार[१०१] ॥१८॥

वह जो आंखे खोल कर देखे अजब अनवार[१०२] है ।
रौशनी से जिनकी रौशन सब दरो दीवार है ।
हाथ को देखा तो ख़ासा हाथ भी तैयार है ।
ने तो उसमें दर्द है न ख़ून का आसार[१०३] है ।
रह गया एक बारगी[१०४] हैरत में वह मज़लूम ज़ार[१०५] ॥१९॥

फिर जो उस लड़के को उसमें होश सा कुछ आ गया ।
हो तसद्दुक़[१०६] और वहीं पांव के ऊपर गिर पड़ा ।
और कहां रो रो कि मेरा हाथ तन से था जुदा ।
यह तुम्हीं से हो सका जो फिर दिया तन से मिला ।
सच बताओ कौन हो तुम ऐ अमीरे नामदार[१०७] ॥२०॥

बाप ने तो मेरे मुझ पर यह सितम बरपा[१०८] किया ।
हाथ काटा क़ैद की और सौ तअद्दी[१०९] ओ जफ़ा[११०] ।
मुझ से बेकस पर जो तुमने की यह कुछ लुत्फ़ो अता[१११] ।
अब ख़ुदा के वास्ते जल्दी से ऐ बहरे सख़ा[११२] ।
अपना कुछ नामो निशां मुझसे कहो तफ़सीलवार[११३] ॥२१॥

---

९५. तेज, आभा, प्रकाश ९६. अन्त ९७. अविजयी ९८. कटे हुए, अलग हुए ९९. हाथ १००. नबी रसूल की औलाद या अनुयायी १०१. हजरत मुहम्मद (नवी) की औलाद से प्यार करने वाले १०२. रोशनी १०३. चिह्न १०४. एक बार तो १०५. जिस पर जुल्म किया गया हो १०६. न्यौछावर १०७. नामवर, प्रसिद्ध १०८. कायम डाला १०९. बेहद ज़ुल्म ११०. सितम १११. महरबानी ११२. दानी ११३. विवरण सहित

जब कहा हज़रत ने हम भी आदमी हैं ऐ अज़ीज ।
बन्दऐ[११४] दरगाहे[११५] रब्बुलआलमीं[११६] हैं ऐ अज़ीज़ ।
ख़ाकमारो[११७] आजिज़ो[११८] अन्दोहगी गीं[११९] हैं ऐ अज़ीज ।
जिनका तू करता है मातम वह हमीं हैं ऐ अज़ीज़ ।
आफ़रीं सद आफ़री[१२०] ऐ पाक मोमिन[१२१] दीनदार ॥२२॥

यह हमारा है निशां ऐ पाक तीनत[१२२] मुत्तक़ी[१२३] ।
नाम को पूछे तो हैगा नाम अब्बासे अली ।
कर्बला के दश्त[१२४] में दौलत शहादत[१२५] की मिली ।
जो हमें चाहे हमारा भी उसे चाहे है जी ।
जो हमारा ग़म करे हम भी हैं उसके ग़म्रगुसार[१२६] ॥२३॥

सुनते ही इस बात के एक बार वह लड़का ग़रीब ।
हो गया शाद और वहीं सर रख के क़दमों के क़रीब ।
यूं लगा कहने बड़ी क़िस्मत बड़े मेरे नसीब ।
मैं कहां आजिज़ कहां अल्लाह के ख़ासे हबीब ।
मैं तसद्दुक[१२७] हूं तुम्हारा या शहे वाला तबार[१२८] ॥२४॥

यह करम[१२९] यह लुत्फ़ यह बन्दा नवाज़ी[१३०] किस से हो ।
मुझ से नालायक़ की ऐसी सरफ़राज़ी[१३१] किस से हो ।
तुमने जो कुछ मुझ से की यह चारासाजी[१३२] किस से हो ।
यह हिमायत यह मदद या शाहे ग़ाज़ी[१३३] किससे हो ।
इस इनायत इस करम का है तुम्हीं पर कारोबार ॥२५॥

---

११४. गुलाम ११५. किसी वली का मज़ार ११६. सारेसंसार के मालिक अल्लाह की दरगाह का गुलाम ११७. ख़ाक (धूल) के समान गरीब ११८. लाचार ११९. गमगीं, दुखी १२०. शाबाश, प्रशसनीय १२१. ईमान वाले १२२. असली १२३. संयमी १२४. जंगल १२५. खुदा की राह मे कत्ल हो जाना १२६. दुख दूर करने वाले १२७. निछावर १२८. ऊंचे खानदान १२९. महरबानी १३०. गुलामों की हिम्मत बढ़ाना १३१. सर बुलन्दी १३२. बीमारी का इलाज १३३. काफिरों को कत्ल करने वाले बादशाह

मैं जो अपने हाथ से करता था मातम बरमिला[१३४] ।
और उठाता था अलम (१) भी मैं तुम्हारे जा बजा ।
हक़ अगर पूछो तो किसका हाथ है कट कर मिला ।
यह तुम्हीं से हो सका जो फिर दिया तन से लगा ।
वर्ना किस में थी भला यह क़ुदरत और यह इक़्तिदार[१३५] ॥२६॥

वह अभी राग़िब[१३६] था अपने दर्द के इज़हार[१३७] का ।
एक पल में फिर न देखा नक़्श उस असवार(२) का ।
क्या दिया तन से मिला हाथ अपने मातमदार का ।
मोज़िज़ा[१३८] देखो यह इब्ने हैदर[१३९] कर्रार[१४०] का ।
किस में यह क़ुदरत बजुज़[१४१] फ़रज़ंद शेरे कर दिगार[१४२] ॥२७॥

अब जो इसके हाथ पर कटने की आई थी गिरह ।
कुछ हकीमों से न होता गर वह फिरता दह ब दह ।
अब उन्होंने कर दिया एक आन में आते ही वह ।
यह नहीं अब्बास का दस्ते यदुल्लाही[१४३] है यह ॥
जुज़ यदुल्लाह[१४४] हो भला किस दस्त से यह दस्तकार ॥२८॥

क्या हुसैन इब्ने[१४५] अली ने जस लिया मैदान में ।
और हैं अब्बास अली की बख़्शिशें हर आन में ।
जिनके बेटों के रहें दिल ख़ल्क़ के ऐहसान में ।
क्यूं न फिर ख़ालिक कहे उनके पिदर[१४६] की शान में ।
ला फ़ता इल्ला अली ला सैफ़ इल्ला ज़ुल्फ़िक़ार[१४७] ॥२९॥

---

१३४. फौरन १३५. सत्ता, रौबदाब १३६. माइल, आकर्षित १३७. ज़ाहिर करना १३८. चमत्कार १३९. हज़रत अली के पुत्र १४०. शत्रु पर बराबर आक्रमण करने वाले १४१. अलावा १४२. अल्लाहताला के शेर १४३. खुदा का हाथ १४४. खुदा के हाथ के अतिरिक्त १४५. हज़रत अली के बेटा १४६. पिता १४७. अली के अलावा कोई फतह करने वाला नहीं है और ज़ुल्फ़िकार (हज़रत अली की तलवार) के अलावा कोई तलवार नहीं है।

पाठान्तर—(१) श० आ० अलम को मैं (२) जा० मातमदार

सुबह को उस कोठरी का ख़ुद बख़ुद दर खुल गया ।
बाप मां देखें तो उसका हाथ तन से है मिला ।
पूछा यह क्या था, जो कुछ देखा था उसने सब कहा ।
सुनते ही दोनों ने फिर तो सिदक[१४८] से कल्मा पढ़ा ।
हाथ में तस्बीह[१४९] लीज़ु न्नार[१५०] को डाला उतार ॥३०॥

फिर हुई उस मोजिज़े की शहर की ख़ल्क़त में धूम-धूम ।
हो गया उस तिफ़्ल[१५१] पर सब शहर का आकर हुजूम ।
देखता था जो कोई लेता था उसके हाथ चूम ।
और लगा आंखों से यूं कहता था हर दम झूम-झूम ।
यह उन्हीं की दोस्ती के गुल ने दिखलाई बहार ॥३१॥

अलग़रज़[१५२] मा बाप उस पर जानो दिल से हो फ़िदा ।
लेके लड़के को चले दिल शाद[१५३] सूए[१५४] कर्बला ।
राह में करते थे लोग उनकी ज़ियारत जा बजा ।
जब वह मंज़िल पर उतरते थे तो वां के लोग आ ।
दम बदम करते थे अपना सीमो ज़र[१५५] उस पर निसार ॥३२॥

कू बकू[१५६] शहरे नजफ़[१५७] में भी यह शोरो ग़ुल पड़े ।
एक मुहिब्बे[१५८] पाक दिल आया है हिन्दुस्तान से ।
वां के भी लोग आये सब इसकी ज़ियारत के लिये ।
और लाखों शख़्स आये दूर और नज़दीक के ।
इस क़दर यह मोजिज़ा सब में हुआ वां आशकार[१५९] ॥३३॥

---

[१४८] सच्चाई [१४९] खुदा के नाम का जप करने की माला [१५०] जनेऊ [१५१] बच्चा [१५२] मतलब यह है [१५३] खुश [१५४] तरफ [१५५] चांदी सोना [१५६] गली-गली [१५७] शहर का नाम जहां हज़रत अली का मज़ार है [१५८] प्यार रखने वाला [१५९] प्रकट ।

कर्बला के पास पहुंचा जिस घड़ी वह माहेताब[१६०] ।
उन शरीफ़ों को हुआ हुक्मे शहे आली जनाब ।
एक हमारा दोस्त आता है चला जूं मौजे आब ।
करके इस्तक़बाल[१६१] तुम जाकर उसे लाओ शिताब ।
उसकी लाज़िम है तुम्हें दिल दारी - करनी बेशुमार ।।३४।।

कर्बला के लोग निकले उसके इस्तक़बाल को ।
ले गये अस्पो[१६२] शुतर[१६३] आराइशो अजलाल[१६४] को ।
कर ज़ियारत चूम उसके दस्ते ख़ुश अफ़आल[१६५] को ।
सौ तजम्मुल से ग़रज़ उस साहिबे इक़बाल को ।
शहर में लाये बसद[१६६] इकराम[१६७] और सद इफ़्तिख़ार[१६८] ।।३५।।

काम क्या क्या कुछ हुए उस से ख़ुदा की राह के ।
फिर ख़ुदा ने भी उन्हें यह दस्त क़ुदरत के दिये ।
उसने कटवाया तो हाथ अब उनके मातम के लिये ।
क्यूं न फिर तन से मिलाते वह तो मुंसिफ़ हैं बड़े ।
सीख जावे उनसे नुसफ़त[१६९] आके हर नुसफ़त शआर ।।३६।।

जब हुए रोज़े में दाख़िल वह मुहिब्बाने अली[१७०] ।
कर ज़ियारत और तसद्दुक होके दिल से हर घड़ी ।
वां उन्होंने कुछ मकां बनवाने की तज़वीज की ।
लड़का बनवाता फिरे था हाथ में लेकर छड़ी ।
की इमारत आख़िरश रंगीं मुनक़्क़श[१७१] ज़र निगार[१७२] ।।३७।।

दीन भी उसको मिला दुनिया भी यारो देखियो ।
और मुहिब्बे पाक कहलाया टुक इसको देखियो ।
क्या मुहब्बत के चमन की है यह ख़ुशबू देखियो ।
क्या ही तालेअ[१७३] क्या ही किस्मत है मुहिब्बो[१७४] देखियो ।
उनकी उल्फ़त का निहाल[१७५] आख़िर यह लाया बर्गोबार[१७६] ।।३८।।

---

१६०. चांद १६१. स्वागत १६२. घोड़ा १६३. ऊंट १६४. शानोशौकत १६५. अच्छे काम करने वाले हाथ १६६. सैकड़ों १६७. बुज़ुर्ग १६८. इज़्ज़त और फख़्र के काबिल १६९. इंसाफ १७०. हज़रत अली के चाहने वाले १७१. चित्रित १७२. सोने के काम से सजी हुई १७३. भाग्य १७४. मित्र, सखा, दोस्त १७५. पौधा १७६. फल-फूल फूल-पत्ते

या अली अब्बास ग़ाज़ी[१७७] साहिबे ताजो सरीर[१७८] ।
सबके तुम मुश्किल कुशा[१७९] हो क्या ग़रीबो क्या अमीर ।
जानो दिल से अब तुम्हारे नाम का होकर फ़क़ीर ।
यह ग़ुलामे स्याहरू[१८०] अब जिसको कहते हैं "नज़ीर" ।
आपके फ़ज़लो करम का यह भी है उम्मीदवार ॥३६॥

---

[१७७] काफ़िरो को क़त्ल करने वाले
[१७८] बादशाही
[१७९] परेशानी को दूर करने वाला
[१८०] गुनहगार ।

तारीफ़ पंजतन पाक+

है दिल में मेरे याद जो बारह इमाम[1] की ।
और आरज़ू[2] है साक़िये कौसर[3] के जाम[4] की ।
यह बैंत[5] मुझको विर्द[6] है हर सुबहो शाम की ।
तस्बीह[7] हज़ार दाना है और उनके नाम की ।
सुमरन मुझे भली है यह पंजतन[8] के नाम की ।।१।।

अव्वल तो दिल हो साफ़ दोयम[9] जिस्म[10] ताबनाक[11] ।
सोयम[12] कहाऊं दोनों जहां में गुनाह से पाक ।
चौथे अदद का ग़ैब[13] से हो जावे सीना चाक[14] ।
और पांचवीं मैं डालूं मुख़ालिफ़[15] के सर पे ख़ाक ।
सुमरन मुझे भली है यह पंजतन के नाम की ।।२।।

तन है सौ पाक साफ़ मुअत्तर[16] हो गिस्ल फूल[17] ।
हो रूह[18] शाद[19] दिल न हो मेरा कभी मलूल[20] ।
दोनों जहाँ में ख़ुश रहूं अज़[21] ख़िदमते रसूल ।
रोज़ा, नमाज़, विर्दो वज़ाइफ़[22] हो सब क़ुबूल ।
सुमरन मुझे भली है यह पंजतन के नाम की ।।३।।

+ पांच पवित्र व्यक्ति अर्थात् ह० मुहम्मद, ह० फ़ातिमा, ह० अली और उनके दोनों पुत्र इमाम हसन और इमाम हुसैन की तारीफ़ ।

१. नेता, पेशवा, नमाज पढ़ाने वाला, बारह इमाम २. चाह ३. जन्नत की शराब की नहर ४. शराब का प्याला ५. काव्य पंक्ति ६. किसी बात को बार बार कहना या करना ७. माला ८. पांच व्यक्ति अर्थात् हज़रत मुहम्मद, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत अली और उनके दोनों पुत्र इमाम हसन और इमाम हुसैन ९. दूसरे १०. शरीर ११. रोशन, चमकदार १२. तीसरे १३. परोक्ष १४. फटा हुआ १५. विरोधी १६. खुशबूदार १७. फूल की तरह १८. आत्मा १९. प्रसन्न २०. रंजीदा, उदास २१. से २२. वज़ीफ़ा, किसी मंत्र या क़ुरान शरीफ़ के वाक्य का जाप ।

भागे चुड़ैल कांप उठे भूत और पलीद[२३] ।
टल जावें देव छुपने लगें मुन्किरे[२४] शदीद[२५] ।
जिन्नो परी हों दिल से मेरे आन कर मुरीद[२६] ।
जीता रहूं तो शाह, जो मर जाऊँ तो शहीद[२७] ।
सुमरन मुझे भली है यह पंजतन के नाम की ॥४॥

नारा करूं जो हैदरी हिल जावें सब पहाड़ ।
थर्रावें चश्मए सार हिलें डर से बूटे झाड़ ।
गर ख़ारिजी[२८] हो आवे मेरे आगे मिस्ल ताड़ ।
पगड़ी को इसकी फेंक के दाढ़ी को लूँ उखाड़ ॥
सुमरन मुझे भली है यह पंजतन के नाम की ॥५॥

ऐ दोस्तो अजब है बना पंजतन का नाम ।
जिसके तुफ़ैल[२९] इतने बर[३०] आते हैं सब के काम ।
जो हैं सो हैं यही ख़तमुलख़ैर[३१] वस्सलाम ।
और मैं जो हूं "नज़ीर" तो कहता हूं सुबहो शाम ।
सुमरन मुझे भली है यह पंजतन के नाम की ।६॥

---

२३. नापाक, अपवित्र प्रेत २४. इंकार करने वाला २५. सख़्त २६. शिष्य, आध्यात्मिक शिष्य २७. जो ख़ुदा की राह में बलिदान हुआ हो २८. जो हलके से निकल गए हों २९. ज़रिया ३०. फल, पूर्ति ३१. ठीक से समाप्ति ।

मदह हज़रत सलीम चिश्ती +

हैं दो जहां के सुल्तां[1] हज़रत सलीम चिश्ती ।
आलम के दीनों-ईमां हज़रत सलीम चिश्ती ।
सर दफ़त्‌रे मुसलमां हज़रत सलीम चिश्ती ।
मक़बूले-ख़ासे-यज़दां[2] हज़रत सलीम चिश्ती ।
सरदार-मुल्के-इर्फ़ां[3] हज़रत सलीम चिश्ती ।।१।।

बुर्जे(१) असद[4] की रौनक अर्शे बरीं[5] के तारे ।
गुलज़ारे दीं के गुलवन[6] अल्लाह के संवारे ।
यह बात जानो दिल से कहते हैं सब पुकारे ।
तुम वह वली हो बरहक़[7] जो फ़ैज़[8] से तुम्हारे ।
आलम है बाग़ो बुस्तां[9] हज़रत सलीम चिश्ती ।।२।।

शाहों के बादशाह हो बा-ताज बा-लिवा[10] हो ।
और क़िबलए सफा[11] हो और काबए ज़िया[12] हो ।
ख़लक़त[13] के रहनुमा[14] हो दुनिया के मुक़्तदा[15] हो ।
तुम साहिबे सख़ा[16] हो महबूबे किब्रिया[17] हो ।
है तुमसे ज़ेबे इमकां[18] हज़रत सलीम चिश्ती ।।३।।

+ हज़रत सलीम चिश्ती की तारीफ़ ।

१. बादशाह २. ख़ुदा ३. पहचानना ४. सिंह राशि ५. ऊंचे आसमान ६. गुलाब का पौधा ७. सच ८. उपकार ९. बाग़ १०. झंडा सहित ११. पवित्र १२. रोशनी १३. दुनियां १४. राह दिखाने वाले १५. दुनियां के पेशवा, इमाम हो १६. दानी १७. ख़ुदा १८. मुमकिन होना, संभव होना ।

पाठान्तर—(१) श० आ० बुर्ज

शाहो[१९]-गदा[२०] हैं ताबेअ़[२१] सब तेरी मुमलिकत[२२] के ।
लायक तुम्हीं हो शाहा[२३] इस क़द्रो[२४]-मंज़िलत[२५] के ।
परवर्दा[२६] हैं तुम्हारे सब ख़्वान-मुकर्मत[२७] के ।
शाहा[२८] शरफ़[२९] तो बख़्शी[३०] ख़ालिक़ की सल्तनत के ।
और तुम हो मीर-सामां हज़रत सलीम चिश्ती ॥४॥

है नाम पाक तेरा मशहूर शहरो वन में ।
करती हैं याद तुमको यह जानें हैं जो तन में ।
हैं ख़ुल्क़[३१] की तुम्हारे ख़शबू गुलो-समन[३२] में ।
ख़िदमत में हैं तुम्हारी फ़िर्दौस के चमन में ।
जन्नत के हूरो[३३] गिल्मां[३४] हज़रत सलीम चिश्ती ॥५॥

काबा[३५] समझ के अपना मुश्ताक़[३६] तेरे दर[३७] को ।
करते हैं आ ज़ियारत[३८] दिल से झुकाके सर को ।
औसाफ़[३९] (१) तेरे हर दम पाते हैं सीमो ज़र[४०] को ।
पढ़ते हैं मदह[४१] तेरी गुलशन में हर सहर[४२] को ।
हो बुलबुले ख़ुशइलहां[४३] हज़रत सलीम चिश्ती ॥६॥

है सल्तनत जहां की सब तेरे ज़ेरे-फ़र्मा[४४] ।
चाकर हैं तेरे दर के फ़ग़फूर[४५] और ख़ाक़ां[४६] ।
ख़्वाने करम[४७] पे तेरे है ख़ल्क़[४८] सारी मेहमां ।
हैं हुक्म में तुम्हारे जिन्नो-परीओ-इन्सां ।
हो वक़्त के सुलेमां हज़रत सलीम चिश्ती ॥७॥

---

१९. बादशाह २०. भिखारी २१. मातहत २२. मुल्क २३. बादशाह २४. आदर २५. रुतबा २६. पाले हुए २७. बुजुर्गी २८. बादशाह २९. बुजुर्गी ३०. वेतन बांटने वाला अफसर ३१. आदत ३२. चमेली का फूल ३३. स्वर्ग की अप्सरा ३४. स्वर्ग के लड़के ३५. ख़ुदा का घर जो मक्का शरीफ़ में है ३६. अभिलाषी ३७. दरवाज़ा ३८. मिलना, दर्शन करना ३९. खूबियाँ ४०. चांदी सोना ४१. स्तुति ४२. सुबह ४३. अच्छे स्वर वाली ४४. आज्ञाकारी ४५, ४६. चीनी शासकों की उपाधियाँ बुजुर्ग ४७. दस्तर ख़्वान (खाने का कपड़ा) जिस पर किसी की रोकटोक न हो ४८. दुनिया, सृष्टि

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० औसाफ़

तुम सबसे हो मुअज़्ज़म[49] और सब से हो मुकर्रम[50] ।
ख़ल्क़त[51] हुई तुम्हारी सब नूर से मुजस्सम[52] ।
और ख़ूबियां जहां की तुम पर हुई मुसल्लम[53] ।
अब्रे[54]-करम से तेरे दायम[55] हैं सब्जो-ख़ुर्म[56] ।
आलम[57] का सब गुलिस्तां[58] हज़रत सलीम चिश्ती ।।८।।

पुश्त[59] पनाह हो तुम हर एक गदाओ[60] शह के ।
मोहताज हैं तुम्हारी एक लुत्फ़ की निगह के ।
मंजिल पे आके पहुंचे सालिक[61] तुम्हारी रह के ।
ख़ाके क़दम तुम्हारी दर चश्म(१) महरो मह[62] के !
हो रौशनी के सामां हज़रत सलीम चिश्ती ।।९।।

चश्मो चिराग़ हो तुम अब जुम्ला[63] मोमिनीं[64] के ।
रौशन हैं तुमसे पर्दे सब आस्मां ज़मीं के ।
बेशक ज़ियाये[65] दिल हो हर साहिबे यक़ीं के ।
ज़र्रा[66] नहीं तफ़ावुत[67] तुम आस्मां हो दीं के ।
हो आफ़ताबे रख़्शां[68] हज़रत सलीम चिश्ती ।।१०।।

आलम है सब मुअत्तर[69] तेरे करम[70] की बू[71] से ।
हुर्मत[72] है दोस्तों को हज़रत तुम्हारी रू[73] से ।
यह चाहता हूं अब मैं सौ दिल की आरज़ू से ।
रखियो "नज़ीर" को तुम दो जग में आबरू से ।
ऐ मूजिदे[74]-हर-एहसां हज़रत सलीम चिश्ती ।।११।।

---

४९. इज्जत वाला ५०. प्रतिष्ठित ५१. दुनिया ५२. शरीरदार ५३. मानी गई, पूर्ण ५४. कृपा के बादल ५५. सदैव ५६. प्रसन्न ५७. दुनियां ५८. बाग ५९. पीठ ६०. भिखारी व बादशाह ६१. राह चलने वाला ६२. सूर्य-चन्द्र ६३. समग्र ६४. ईमान वाले ६५. रोशनी ६६. कण ६७. फ़र्क ६८. चमकता हुआ सूरज ६९. खुशबूदार ७०. दया, कृपा ७१. खुशबू ७२. इज़्ज़त ७३. मुंह, रुख़ ७४. नई चीज़ पैदा करने वाला ।

पाठान्तर—(१) श० आ० दर चश्म

तारीफ़ गुरू गंज बख़श की

हो रह विला[1] मुदाम[2] गुरू गंज बख़श का ।
ख़ूबी में हैं क़याम[3] गुरू गंज बख़श का ।
कृपा में एहतराम[4] गुरू गंज बख़श का ।
ले दिल हमेशा नाम गुरू गंज बख़श का ।
रख ध्यान सुबहो शाम गुरू गंज बख़श का ।।१।।

हरदम उन्हीं की याद का रख दिल में तू ख़याल ।
और रख सुरत[5] तू अपनी उन्हीं के चरन दे नाल[6] ।
खोते हैं सबके दिल के वही रंज और मलाल ।
सेवक को अपने करते हैं एक आन में निहाल ।
बख़्शिश में है यह काम गुरू गंज बख़श का ।।२।।

आते हैं वह मदद के तईं जल्द हर कहीं ।
उनका हुआ जो दिल से उसे कुछ ख़तर नहीं ।
यह बात ठीक है इसे कर जी में तू यक़ीं ।
गिरता हुआ जो नाम ले उनका तो उस तईं ।
लेता है नाम थाम गुरू गंज बख़श का ।।३।।

ख़ूबी कुछ उनके लुत्फ़[7] की जाती नहीं कहीं ।
कृपा वह अपनी रखते हैं हर आन हर घड़ी ।
गहते हैं दुःख में बांह बहुत होते हैं खुशी ।
कहते हैं जिसको लुत्फ़ की मसनद[8] सो हैं वही ।
है दिल सदा मुक़ाम गुरू गंज बख़श का ।।४।।

---

१. मित्र २. सदा ३. निवास ४. सम्मान ५. ध्यान ६. चरणों में (पंजाबी) ७. दया, आनन्द ८. सिंहासन ।

रख उनकी लहज़: लहज़:[९] तू कृपा उपर नज़र ।
वह अपने गंज लुत्फ़[१०] से देते हैं सीमो ज़र[११] ।
जो चाहिए मुराद[१२] उन्हीं से तू अर्ज़ कर ।
जो दिल से पूजते हैं तो उन सबके हाल पर ।
अल्ताफ़[१३] हैं मुदाम[१४] गुरू गंज वख़्श का ॥५॥

उनकी सरन में आया तो फिर दुःख न हो कभू ।
रख लेंगे अपनी मेहर से वह तेरी आबरू[१५] ।
रख अपने जी से उनकी ही कृपा की आरज़ू[१६] ।
अरदास करके सर को झुका उनके दर[१७] पे तू ।
लुत्फो[१८] करम[१९] है आम गुरू गंज बख़्श का ॥६॥

कर अर्ज़ उनसे अपना तू अहवाल ऐ नज़ीर ।
अपने करम से लेंगे तुझे पाल ऐ नज़ीर ।
रख उनकी याद जी मैं तू हर हाल ऐ नज़ीर ।
रहता है जग में खुश दिलो खुशहाल ऐ नज़ीर ।
है दिल से जो ग़ुलाम गुरू गंज वख़्श का ॥७॥

---

९. प्रतिक्षण १०. महरबानी के खज़ाने ११. सोना-चांदी, धन-दौलत १२. इच्छा, मन्नत
१३. महरबानियां १४. सदा १५. इज़्ज़त १६. इच्छा १७. दरवाज़ा १८. दया १९. महरबानी, कृपा

गणेश जी की स्तुति

अव्वल तो दिल में कीजिए पूजन गनेश जी ।
स्तुति भी फिर बखानिए धन-धन गनेश जी ।
भक्तों को अपने देते हैं दर्शन गनेश जी ।
वरदान बख़शते हैं जो देवन गनेश जी ।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।१।।

माथे पै अर्द्ध चन्द्र की शोभा, मैं क्या कहूं ।
उपमा नहीं बने है मैं चुपका ही हो रहूं ।
उस छवि को देख देख के आनन्द सुख लहूं ।
लैलो निहार[1] दिल में सदा अपने वो जपूं ।
हर आन ध्यान दीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।२।।

इक दन्त को जो देखा किया ख़ूब है बहार ।
इस पै हज़ार चन्द की शोभा को डालूं वार ।
इनके गुणानुवाद का है कुछ नहीं शुमार ।
हर वक्त दिल में आता है अपने यही विचार ।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।३।।

गजमुख को देख होता है सुख उर में आन-आन ।
दिल शाद-शाद होता है मैं क्या करूं बखान ।
इल्मो हुनर में एक हैं और बुद्धि के निधान ।
सब काम छोड़ प्यारे रख मन में यही आन ।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।४।।

---

[1] रातदिन ।

क्या छोटे-छोटे हाथ हैं चारों भले-भले ।
चारों में चार हैं जो पदारथ खरे-खरे ।
देते हैं अपने दासों को जो हैं बड़े-बड़े ।
अलबत्ता अपनी मेहर यह सब पर करें-करे ।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।५।।

इक दस्त में तो हैगा यह सुमिरन बहार दार ?
और दूसरे में फर्सी अजब क्या है उसकी धार ?
तीजे में कंज चौथे कर में हैं लिए अहार ?
मत सोच दिल में और तू ऐ यार बार-बार ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेगें रिद्धि सिद्धि ओ अन-धन गनेश जी ।।६।।

अच्छे विशाल नैन हैं और तोंद है बड़ी ।
हाथों को जोड़ सरस्वती हैं सामने खड़ी ।।
होवे असान पल में ही मुश्किल है जो अड़ी ।
फल पावने की इनसे तो है भी यही घड़ी ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेगें रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश ज़ी ।।७।।

मूसा सवारी को है अजब ख़ूब बेनजीर ।
क्या खूब कान पंजे हैं और दुम है दिल पजीर ।।
खाते हैं मोती चूर कि चंचल बड़ा शरीर ।
दुख दर्द को हरे हैं तो दिल को बधावें धीर ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।८।।

घी में मिला के कोई जो चढ़ाता है आ सिन्दूर ।
सब पाप उसके डालता कर दम के बीच चूर ।।
फूल औंर विरंच शीश पै दीपक को रख कपूर ।
जो मन में होवे इच्छा तो फिर क्या है उससे दूर ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।९।।

जुन्नार है गले में एक नाग जो काला ।
फूलों के हार डहडहे और मोती की माला ।।
वह हैंगे अजब आन से शिव गौरी के लाला ।
सुर नर मुनि भी कहते हैं वो दीन दयाला ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।१०।।

सनकादि सूर्य चन्द्र खड़े आरती करें ।
और शेषनाग गंध की ले धूप को धरें ।।
नारद बजावें बीन चँवर इन्द्र ले ढरें ।
चारो बदन से स्तुति ब्रह्मा जी उच्चरें ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।११।।

जंगम अतीत जोगी जती ध्यान लगावें ।
सुर नर मुनीश सिद्ध सदा सिद्धि को पावें ।।
और संत सुजन चरन की रज शीश चढावें ।
वेदो पुरान ग्रंथ जो गुन गाय सुनावें ।।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।१२।।

जो जो शरन में आया है कीन्हा उसे सनाथ ।
भव सिन्धु से उतारा है दम में पकड़ के हाथ ।
यह दिल में ठान अपने और छोड़ सबका साथ ।
तू भी 'नज़ीर' चरणों में अपना झुका के माथ ।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी ।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी ।।१३।।

हरि की तारीफ

वही सब में रहे हरि आप हरि हर से नियारा है ।
वही है देख लो प्रत्यक्ष जग उसका पसारा है ।।
उसी ने बात के कहते ही यह रचना रची सारी ।
उन्होंने क्या अलग ब्रह्माण्ड यह मन्दिर संवारा है ।।

है अब का दांव बाज़ी जीत होकर लाल जा घर में ।
न डाला नाम पासा जिसने इस जुग में वह हारा है ।।
किया था गर्व सागर ने कि सर बर कौन है मेरी ।
कि तीन अंजल से आचमन कर किया मीठे को खारा है ।।

कुट्म को देख भूला है नहीं साथी कोई उस बिन ।
न भाई बन्धु है तेरा यहां अब सुत न दारा है ।।
मिलाया आप आपा उसी के जो हुए सनमुख ।
समाया जोति में वह जिसको अपने हाथ मारा है ।।

मिली है अटल पदवी उसको जिसने नाम को समझा ।
हुआ बैंकुठ वासा, आपको जिसने विचारा है ।।
वही है दिल में बैठा देव आतम, पूज तू घट में ।
उसी हरि का यही तू जान दिल ठाकुर दुआरा है ।।

जो चातुर है तो दिल में रह निराला जगत से अब याँ ।
कि जैसे आंच में रखने से भागे तड़प पारा है ।।
तू यां पे फिक्र कर अपनी अरे ग़ाफ़िल फ़ंसा है क्यों ।।
यह दुनिया सच नहीं इसको समझ दलदल का गारा है ।।

लिया था नाम अजामिल गनिका और रैदास सदना ने ।
बताऊं साख में क्या क्या उन्होंने सब को तारा है ।।
जो आकर नाम से लागा वही एक दम में पहुंचा है ।
वगरना देख लें चमके है हर दम ध्रुव सितारा है ।।
उसी का ध्यान धर हर दम 'नज़ीर' और याद में रह तू ।
उसी हरि का तुझे भी देखियो यां वां सहारा है ।।

हरि जी का सुमिरन

श्री कृष्ण जी की याद दिलो जां से कीजिए ।
ले नाम वासुदेव का अब ध्यान कीजिए ।
क्या बादा[१] बेख़ुमार[२] दिलो जां से पीजिए ।
सब काम छोड़ नाम चतुर्भुज का लीजिए ॥
जो दम है जिन्दगी का वह सुमिरन में दीजिए ।
आये है भक्त हेत जो साहब जमीं उपर ।
सब-रोज दिलोजान से करता है शोर शर ।
मादर पिदर बिरादरओ फ़रज़न्द[३] पर न भूल ।
दिन चार के हैं यार यह सुनता है ऐ मझूल[४] ।
कितने हजार शाह पड़े हैं बखालेधूल[५] ।
कहता हूँ बार बार तू करता नहीं कबूल ॥ सब०

इस नाम के लिये से हजारों हुये हैं पार ।
गनका वो अजामील से लक्खों कई हजार ।
रैदास व सदना का मैं क्या करूँ शुमार ।
कहता हूँ बार बार तू करता नहीं कबूल ॥ सब०

इस नाम के लिये से हजारों हि तर गये ।
टांडा जो लाद आप कबीरा के घर गये ।
मांगन को दान राम जी जो बलि के घर गये ।
रावन को मार राज भभीखन को कर गये ॥ सब०

धन्ना का खेत तुख़्म[६] बिन कुदरत से बो दिया ।
दारिद्र एक पल में सुदामा का खो दिया ।
जिन मैल दिल से मिर्ज़ा व माधो का धो दिया ।
हिन्दू तुरक का भेद दिलो जां से खो दिया ॥ सब०

---

[१]. प्याला, जाम [२]. जिसमें नशा न हो [३]. पुत्र [४]. अशिक्षित, अयोग्य [५]. मिट्टी में [६]. बीज

प्रहलाद हेत राम ने नरसिंह औतार धर ।
मारा हैं हरनाकुस को जब खंब फाड़ कर ।
लाया है भक्त अपने को ग़म से उबार कर ।
भौंचक्का हो के देख रहे सब निहार कर ॥ सब०

जिन नामदे की गाय को मुई का जिला दिया ।
आबे खिजर[७] का उसको प्याला पिला दिया ।
सरमिन्दा होके सेना ने सर को नवा दिया ।
श्री राम जी का कहना हरदम रवाँ किया ॥ सब०

शंख पद्म युक्त चक्र गदा बिरजें हाजरी ।
करती है मेरे दिल में जो आवाज बाँसुरी ।
कहता है लालजी वो बरहमन घड़ी घड़ी ।
रख याद दिल से नाम चतुर्भुज हरी हरी ।
सब काम छोड़ नाम चतुर्भुज का लीजिए ।
जो दम है जिन्दगी का सुमिरन में दीजिए ॥३॥ बस

---

[७] अमृत

कृष्ण कन्हैया की तारीफ़

सिफ्तो सना[1] में सृष्टि रचैया की क्या लिखूं ।
औसाफी[2] खूबी ब्रज के बसैया की क्या लिखूं ।
पदायश अब में कुल के करैया की क्या लिखूं ।
कुछ मदह[3] में उस सुध के लिवैया की क्या लिखूं ।
तारीफ कहो कृष्ण कन्हैया की क्या लिखूं ॥
श्री वेद व्यास जी ने बनाये कई पुरान ।
लिखने में तो भी आया नहीं कृष्ण का बयान ।
लिख-लिख के थक रहे हैं हर एक कर नविश्त ख्वान[4] ।
कहती है जो कलम मेरी वह है जली ज़बान ॥ तारी०

आ द्वारका से द्रोपदी का चीर बढ़ाया ।
बैकुंठ से आ ग्राह से गजराज छुड़ाया ।
प्रहलाद को जलने से अगन के बीच बचाया ।
मेवा को त्याग साग विदुर के यहाँ खाया ॥ तारी०

परबत रखा है उँगली पै जों रुई का गाला ।
संग ग्वाल बाल लेके खड़े नन्द के लाला ।
बंसी बजाते नृत्य करते भार को टाला ।
दिन सात में इन्दर का सभी गर्व निकाला ॥ तारी०

गायें चराके आवें थे संग ग्वाल बाल से ।
हर तरफ आग देख कहैं सब गुपाल से ॥
अब के हमें बचाओ यहाँ किसी चाल से ।
आँखे मिचा बचाया उन्हें अग्नि जाल से ॥ तारी०

---

१. विशेषता-स्तुति २. विशेषता ३. प्रशंसा ४. लेखक, कथाकार

अब क्या कहूँ मैं तुमसे उनकी लतीफ[५] बात ।
पीतम्बर ओढ़ लेट रहे वे छुपा के गात ।
भृगुजी ने वों ही आन के छाती पै मारी लात ।
जब पाँव दबाने लगे श्री कृष्ण अपने हाथ ।। तारी०

क्या क्या बयान हो सकें जो जो किये हैं काम ।
दो पेड़ थे वहाँ खड़े जो नंद जी के धाम ।
और दही डाल हाथ बँधाए उन्हों के काम ।
ऊखल से बाँध हाथ उन्हें नाक भेजा शाम ।। तारी०

फरजंद[६] गुरू के सबी एक आन में लाए ।
फिर तीनों लोक मुँह में जसोदा को दिखाए ।
छोनी अठारह रंग में जो भारत के जुझाए ।
तहाँ अंडे भारथी के घंटा से बचाए ।। तारी०

सुरजन सा दुष्ट जान के जुन्नार[७] से छोड़ा ।
एक आन में जिन मार लिया केसरी घोड़ा ।
आंधी में जो तिनावर्त को तिनका सा तोड़ा ।
और नाम धराया है जो फिर आप भगोड़ा ।। तारी०

एक दम में किये दूर सुदामा के दरिद्दर ।
कंचन के सभी कर दिये एक आन में मंदर ।
जो चाहे कोई करता हरी आप व्रिसंभर ।
फिर आप गए दान को बलि राजा के दर पर ।। तारी०

सोलह हजार कैद से छुटवाई हैं रानी ।
दिन रात कहा करतीं थीं वे कृष्ण कहानी ।
रथवान हो अर्जुन के कही गोष्ठ पुरानी ।
फिर अपने बचन सेती भए दधि के जो दानी ।। तारी०

कहता नज़ीर तेरे जो दासों का दास है ।
दिन रात उसको तेरे ही चरनों की आस है ।
ना समुझे एक तेरे ही से नित विलास है ।
गुन गाए से तेरा हिये हरदम हुलास है ।
तारीफ कहो कृष्ण कन्हैया की क्या लिखूँ ।।

---

[५] आनन्दमय [६] पुत्र [७] जनेऊ

श्री कृष्ण जी की तारीफ में+

तू सबका ख़ुदा सब तुझ पे फ़िदा ।
अल्लाहो ग़नी[1] अल्लाहो ग़नी ।
हे कृष्ण कन्हैया, नंद लला !
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

इसरारे[2] हक़ीक़त यों खोले ।
तोहीद[3] के वह मोती रोले ।
सब कहने लगे ऐ सल्ले अला ।
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

सरसब्ज़ हुए वीरानए दिल ।
इस में हुआ जब तू दाखिल ।
गुलज़ार[4] खिला सहरा-सहरा[5] ।
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

फिर तुझसे तजल्ली[6] ज़ार[7] हुई ।
दुनिया कहती तीरो तार हुई ।
ऐ जल्वा फ़रोज़े[8] बज़्मे-हुदा[9] ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

+ श्री मिट्ठनलाल साहब जेलर आगरा की हस्तलिखित पाण्डुलिपि से डा० गुरुमुखराम टण्डन साहब ने नकल की । उन्हीं के सौजन्य से लेखक को प्राप्त हुई अप्रकाशित रचना ।

१. निःस्पृह, बेनियाज २. मर्म-भेद ३. अद्वैत, ईश्वर को एक मानना ४. बाग ५. जंगल
६. आभा, नूर ७. भरपूर, रक्षक ८. रोशन करने वाले ९. सत्यता की महफिल

मुट्ठी भर चावल के बदले ।
दुख दर्द सुदामा के दूर किए ।
पल भर में बना क़तरा दरिया ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

जब तुझसे मिला ख़ुद को भूला ।
हैरान हूं मैं इंसा कि ख़ुदा ।
मैं यह भी हुआ, मैं वह भी हुआ ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी अल्लाहो ग़नी ।

खुर्शीद[10] में जल्वा चांद में भी ।
हर गुल में तेरे रुख़सार[11] की बू ।
घूंघट जो खुला सखियों ने कहा ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

दिलदार ग्वालों, बालों का ।
और सारे दुनियांदारों का ।
सूरत में नबी[12] सीरत[13] में ख़ुदा ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

इस हुस्ने अमल[14] के सालिक[15] ने ।
इस दस्तो जबलए[16] के मालिक ने ।
कोहसार[17] लिया उंगली पे उठा ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

---

[10] सूरज [11] कपोल [12] ईश्वर-दूत, पैगम्बर [13] स्वभाव, प्रकृति [14] शुभ कार्य
[15] गृहस्थ-साधक [16] जंगल और पहाड़ [17] पर्वत

मन मोहनी सूरत वाला था ।
न गोरा था न काला था ।
जिस रंग में चाहा देख लिया ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

तालिब[१८] है तेरी रहमत का ।
बन्दए नाचीज़[१९] नज़ीर तेरा ।
तू बहरे करम[२०] है नंद लला ।
ऐ सल्ले अला,
अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी ।

---

[१८] याचक, इच्छुक [१९] तुच्छ सेवक [२०] दया का सागर

गुरू नानक शाह

हैं कहते नानक शाह जिन्हें वह पूरे हैं आगाह गुरू।
वह कामिल[१] रहबर[२] जग में हैं यूँ रौशन जैसे माह[३] गुरू।
मक़सूद मुराद[४], उम्मीद सभी, वर लाते हैं दिलख़्वाह गुरु।
नित लुत्फ़ो करम से करते हैं हम लोगों का निरबाह (१) गुरू।
इस बख़्शिश के इस अज़मत[५] के हैं बाबा नानक शाह गुरू।
सब सीस नवा अरदास करो, और हर दम बोलो वाह गुरू।

हर आन दिलों विच यां अपने जो ध्यान गुरू का लाते हैं।
और सेवक होकर उनके ही हर सूरत बीच कहाते हैं।
गर अपनी लुत्फ़ो इनायत से सुख चैन उन्हें दिखलाते हैं।
ख़ुश रखते हैं हर हाल उन्हें सब तन का काज बनाते हैं।
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू।
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरू।

जो आप गुरू ने बख़्शिश से इस ख़ूबी का इर्शाद[६] किया।
हर बात है (२) वह इस ख़ूबी की तासीर[७] ने जिस पर साद किया।
यां जिस-जिस ने उन बातों को है ध्यान लगाकर याद किया।
हर आन गुरू ने दिल उनका ख़ुश वक़्त किया और शाद किया।
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू॥
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरू॥३॥

---

१. मुकम्मिल, सम्पूर्ण २. अच्छा रास्ता दिखाने वाले ३. चांद ४. इरादा की हुई ५. प्रतिष्ठा, सम्मान ६. धर्म गुरू का उपदेश ७. असर लाना

पाठान्तर— (१) श० वरताह (२) श० आ० बात वह है, का० बात वही है

दिन रात जिन्होंने याँ दिल बिच है याद गुरू से काम लिया ।
सब मनके मक़सद[८] भर पायें ख़ुश वक़्ती का हंगाम[९] लिया ।
दुःख दर्द में अपने ध्यान लगा जिस वक़्त गुरू का नाम लिया ।
पल बीच गुरू ने आन उन्हें ख़ुश हाल किया और थाम लिया ।
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू ।।
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरू ।।४।।

यां जो-जो दिल की ख़्वाहिश की कुछ बात गुरू से कहते हैं ।
वह अपनी लुत्फ़ो शफ़क़त[१०] से नित हाथ उन्हीं के गहते हैं ।
अल्ताफ़[११] से उनके ख़ुश होकर सब ख़ूबी से यह कहते हैं ।
दुःख दूर उन्हींके होते हैं सौ सुख से जग में रहते हैं ।
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू ।
सब सीस नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू ।।५।।

जो हरदम उनसे ध्यान लगा उम्मीद करम की धरते हैं ।
वह उन पर लुत्फ़ो इनायत से हर आन तवज्जै[१२] करते हैं ।
असबाब[१३] ख़ुशी और ख़ूबी के घर बीच उन्हीं के भरते हैं ।
आनन्द इनायत करते हैं सब मन की चिन्ता हरते हैं ।
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू ।।
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरू ।।६।।

जो लुत्फ़ इनायत उनमें हैं कब वस्फ़[१४] किसी से उनका हो ।
वह लुत्फ़ों करम जो करते हैं हर चार तरफ हैं ज़ाहिर वो ।
अल्ताफ़ जिन्हों पर हैं उनके सौ ख़ूबी हासिल हैं उनको ।
हर आन 'नज़ीर' अब याँ तुम भी बाबा नानक शाह कहो ।
इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरू ।
सब सीस नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू ।।

---

[८] मतलब, मुराद [९] समय [१०] महरबानी [११] महरबानी [१२] ध्यान देना [१३] कारण
[१४] गुणगान, प्रशंसा

चिड़ियों की तस्बीह[1]

वक़्त सहर[2] की रूहें क्या हूं हूं हूं हूं करती हैं ।
हूं हूं हूं हूं कर कर ज़िक्र[3] कुन[4] और फ़याकूं[5] करती हैं ।
मुर्गे बोलें कुकड़ू कुकड़ू मुर्गियां कूं कूं करती हैं ।
तूतिया भी सब याद में उसकी मत्तूं मत्तूं करती हैं ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ।।१।।

पंख हो या गुड़ पंख उसी के ग़म के तप में तपते हैं ।
उनक़ा और सीमुर्ग़ उसी की फ़ुर्क़त[6] बीच तड़पते हैं ।
सारस, गिद्ध, हवासिल, बुज़्जे, बगले पंख कलपते हैं ।
पंख पखेरू जितने हैं, सब नाम उसी का जपते हैं ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ।।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ।।२।।

क़ुमरी बोले हक़ सर्रा, बुलबुल बिस्मिल्लाह[7] ।
कबकटि टेरी चारों कुल और तीतर भी सुबहानअल्लाह[8] ।
दादुर, मोर, पपीहे, कोयल, कूक रहे अल्लाह अल्लाह ।
फ़ाख़्ता कू कू, तीहू हू हू, तोते बोलें हक़ अल्लाह[9] ।
सांझ सबेरे चिड़िया मिलकर चूं चूं चूं चूं करती है ।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचं करती हैं ।।३।।

---

१. जपमाला २. प्रातः काल ३. चर्चा, एक प्रकार का जप ४. होजा ५. बस हो गया अल्लाह ने कहा कुन् (होजा) फयाकुन् (बस हो गया) चिड़ियाँ अल्लाह की तारीफ़ महान् रचनाकार के रूप में करती हैं। ६. विरह ७. अल्लाह के नाम के साथ ८. अल्लाह पाक है ९. अल्लाह सत्य है

शकरा, चैंख और लग्घड़, वाशे और तुर्मती, बाज़ कोई ।
कूंज, कबूतर, सब्ज़क झांपू, कलकल, सामार चोई ॥
लाल पढ़े हैं सुम्मुन बुकमुन[१०], जग पहने पोशाक सोई ।
पिदड़ी, पिद्दी, पोदने, शक्करख़ोरे बोलें तोई तोई ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ॥४॥

चील कतई यिस्सिजिल[११] कहे चलूं चलूं मत जान मियां ।
कौए कांय् कांय् करते हैं ऐलान कमा कान मियां ।
भर भर बोले मुग़ाबी, "कुल्लोमनअलैहा फ़ान"[१२] मियां ।
जितने पंख पखेरू हैं, सब पढ़ते हैं कुरआन मियां ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ॥५॥

हंस हुमा, सुर्ख़ाब, बदखें, बोलें या रहमान[१३] मियां ।
सारू हरियल और लटूरे घैयड़ या हन्नान[१४] मियां ।
क़ुक़्नस तीतर, चकवा चकवी बोलें या मन्नान[१५] मियां ।
हुद हुद बोलें 'अहद - अहद'[१६], कुछ तू भी तो कर ध्यान मियां ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ॥
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ॥६॥

बूम[१७] चुग़द[१८] सब्ज़का अबाबील और चकोरे शाम चिड़ी ।
खंजन' झय्यां लायं कुलंग और गूगाई की धूम पड़ी ।
तितली टिड्डी, डांस, भंभीरी कतरी, भौंरी और बड़ी ।
मक्खी, मच्छर, पिस्सू, भुनगे, बोल रहे सब घड़ी-घड़ी ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ॥७॥

---

[१०] कुरान में प्रयुक्त एक शब्द [११] कुरान में प्रयुक्त एक वाक्यांश [१२] कुरान के सत्ताईसवें पारे में प्रयुक्त एक वाक्य—प्रत्येक वस्तु का नाश होना है [१३] दया करने वाला, ईश्वर [१४] बहुत अधिक उपकार करने वाला [१५] मोक्ष प्रदान करने वाला, ईश्वर [१६] एक-एक [१७] उल्लू [१८] उल्लू

तन मन और लमढ़ेंक ममोला हक़ हक़ तार पिरोते हैं ।
अघन वये चंडोल, अबलक़े याद में उसकी रोते हैं ।
तायर[२०] तो सब तुख़्मेमुहब्बत[२१] उसका दिल में बोते हैं ।
पंछी उसकी याद करें हम पांव पसारे सोते हैं ।
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ॥
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ॥८॥

किस किस का लूं नाम ग़रज़, हैं जितने तायर खुर्दो कबीर[२२] ।
कोई कहे या 'रब्बेतवाना[२३]' कोई कहे या 'रब्बेक़दीर[२४]'
पंखी तो सब याद करें, और हम गफ़लत[२५] में रहें असीर[२६] ।
हमसा ग़ाफ़िल[२७] दुनिया में, अब कोई न होगा आह 'नज़ीर'
सांझ सबेरे चिड़ियां मिलकर चूं चूं चूं चूं करती हैं ।
चूं चूं चूं चूं चूं चूं क्या ? सब बेचूं बेचूं करती हैं ॥९॥

---

[२०] पक्षी
[२१] प्रेम का बीज,
[२२] छोटे-बड़े
[२३] शक्ति-शाली ईश्वर
[२४] सर्व शक्तिमान ईश्वर
[२५] अनभिज्ञता
[२६] बंदी, क़ैद
[२७] अनभिज्ञ

तारीफ भैरों की+

देखा है जब से मैंने, तेरा जमाल भैरों ।
रखता हूं तब से दिल में, तेरा ख़याल भैरों ।
दिन रात है यह मेरा, तुझसे सवाल भैरों ।
अब दर्दो ग़म से आकर मुझको संभाल भैरों ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ।।१।।

आंखों में छा रहा है, तेरा सरूप काला ।
तन में भभूत गहरी, गल बीच मुंड माला(१) ।
आखें दिया सी(२) रोशन, हाथों में मै का प्याला ।
हूं दिल से दास तेरा, सुन ऐ मेरे दयाला ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ।।२।।

क्या-क्या मची हैं तेरे(३), दरबार की बहारें ।
भगती कला पे तेरी, जी जान अपना वारें ।
सब अपना अपना कारज, मन मानता संवारें ।
सेवक चरन को चूमें, इष्टी खड़े पुकारें ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ।।३।।

पाठान्तर—(१) क़ा० मुड डाला, जा० मुंडा माला (२) क़ा० से
(३) जा०श०आ० तेरी

+ ताजगंज (आगरा) में भैरों जी के मन्दिर में अब भी इसी पद्य को गा गा कर आरती हुआ करती है ।

माथे पे तेरे टीका, सिदूंर का बिराजे ।
मद पीवे मास(४) खावे, जो तू करे सो छाजे ।
तिरसूल कांधे(५) ऊपर, डमरू की गत भी बाजे ।
सब तज के मैंने अब तो, तेरी दया के काजे ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ।।४।।

तू राक्षसों के तन से, हर आन सर उखाड़े ।
चाहे जिसे, बसावे चाहे जिसे उजाड़े ।
जो तुझ से दू बदू हो, एक आन में लताड़े ।
दानों को चीर डाले दैयत(६) को भी पछाड़े ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ।।५।।

ग़ुस्से में तू जो आकर अपनी जटा हिलावे ।
धरती, अकास, पर्वत, पाताल दहल जावे ।
सर काट राक्षसों के, झोंटे पकड़ हिलावे(७) ।
झांके कलाल ख़ाना, कुत्तों को ख़ूं चटावे ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ।।६।।

जोगी अतीत जंगम(८) तेरे चरन से लागें ।
सेवें(९) जो तुझको उनके सोते नसीब जागें ।
जब नाम लेके तेरा, भड़कावें तप की आगें ।
जिन, देव हाथ जोड़े, भूत और पलीत भागें ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ।।७।।

पाठान्तर—(४) क़ा० जा० पास (५) क़ा० कामध
(६) क़ा०जा०श०आ० दीनंत (७) क़ा०श० बुलाव़े
(८) श०आ० जंकम (९) श०क़ा० सेवन

है कौन अब जो निकले, तुझ मस्त से अकड़ कर ।
दुष्टों को लात मुक्के, मूज़ी के सर को टक्कर ।
किरपा है तेरी मेरे हक़ में तो क़न्दो शक्कर ।
अब सब तरह से मैंने तेरी दया को तक कर ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ॥
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ॥८॥

मेरा तो कोई इस जा, अपना है ना(१०) बिगाना ।
बेकस हूँ, बे हुनर हूँ, और है बुरा ज़माना ।
ऐ बेकसों के वाली, मेरी मदद को आना ।
तेरे सिवा किसी जा, मेरा नहीं ठिकाना ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ॥
ऐ पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ॥९॥

पूजा कथा में तेरी, मैं गुन बखानता हूं ।
तुझको ही पूजता हूं, तुझको ही मानता हूं ।
धूल अब तेरे चरन की, माथे पे सानता हूं ।
तेरा ही हो रहा हूं, तुझको ही जानता हूं ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ॥
ऐ पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ॥१०॥

तू शाह मैं भिखारी, मैं क्या कहूं कि क्या दे ।
जो दिल में तेरे आवे, दाता मुझे दिला दे ।
मुझसे बिगड़ चले को, अब मेहर कर बना दे ।
अब जिस तरह से चाहे, चिन्ता मेरी मिटा दे ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ॥
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ॥११॥

अब ग़म मेरे जिगर को, तीरों से छानता है ।
और गर्द बेकसी की, नित सर पे छानता है ।
किस से कहूं मैं जाकर, कौन, आह मानता है ।
जो दुख है मेरे जी पर, सो तू ही जानता है ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ॥
हे पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ॥१२॥

पाठान्तर—(१०) क़ा०जा०श०आ० ने

जो दुख है मेरे जी पर अब किसको जा सुनाऊं ।
किससे पनाह मांगू, यह दुख किसे दिखाऊं ।
अब बेकसी मैं अपनी, जाकर किसे सुनाऊं ।
तेरा कहाके अब मैं, किसका भला कहाऊं ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मदमस्त काल भैरों ।।१३।।

अब किस तरह जताऊं, मैं अपनी बेकली को ।
ने सुख है मेरे दिल को, न चैन मेरे जी को ।
पूछे जो मेरे दुख को, अब क्या पड़ी किसी को ।
मुझसे भले बुरे की, अब लाज है तुझी को ।
तेरी सरन गही है, कर तू निहाल भैरों ।।
ऐ पर्तपाल देवत, मद मस्त काल भैरों ।।१४।।

है जिनको(११) अब जहां में तुझ इष्ट का सहारा ।
दिन रात बाजता है उनका सदा नक़ारा ।।
है 'बेनज़ीर' तेरी किरपा का ठाठ सारा ।
मानक जती गहे हैं(१२) भैरों सरन तिहारा ।।
तेरी सरन गही है कर तू निहाल भैरों ।
ऐ पर्तपाल देवत मद मस्त काल भैरौं ।

पाठान्तर—(११) का० श० आ० जिसका (१२) श० आ० बजे हैं, का० जने तजे हैं

दुर्गा जी के दर्शन[+]

मन बास न कहिये क्यों कर जी है क़ाशी नगरी बरसन की ।
है तीरथ ज्ञानी ध्यानी का हर पंडित और धुन सरसन की ।।
जो बसने हारे दूर के हैं यह भूमि है उन मन तरसन की ।
उस देवी देवनी नटखट के है चाह चरन के परसन की ।।
परसंद बहुत मन होते हैं यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।१।।

उस मंडल ऊंचे गुम्मट में जो देवी आप विराजत हैं ।
तन अवरन ऐसे झलकत हैं जो देख चन्द्रमा लाजत है ।।
धुन पूजन घंटन की ऐसी नित नौबत मानों बाजत हैं ।
उस सुन्दर मूरत देवी का जो बरनन हो सब छाजत हैं ।।
परसंद बहुत मन होते हैं यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।२।।

जो मेहेर सुने उस देवी की, वह दूर दिसा से धावत है ।
जो ध्यान लगाकर आवत है, सब वा की आस पुजावत है ।
जब किरपा वा की होवत है, सब वा के दरसन पावत है ।
मुख देखत ही वा मूरति का, तन मन से सीस नवावत है ।
परसंद बहुत मन होते हैं, यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।३।।

जो नेमी हैं वा मूरति के, वह उनकी बात सुधारिन है ।
सुख चैन जो बातें मांगत हैं, वह उनकी चिन्ता हारिन हैं ।
हर ज्ञानी वा की सरनन है, हर ध्यानी साधु उधारिन हैं ।
जो सेवक हैं वा मूरति के, वह उनके काज संवारिन है ।
परसंद बहुत मन होते हैं, यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।४।।

[+] कवि ने काशी में दुर्गा जी के मेले में यह पद्य सुनाई थी ।

जब होली पाछे उस जागह, दिन आकर मंगल होता है ।
हर चार तरफ़ उस देवल में, अंबोह समंगल होता है ।
टुक देखो जिधर भी आंख उठा, नर नारी का दल होता है ।
हर मन में मंगल होता है, आनन्द बिरछ फल होता है ।
परसंद बहुत मन होते हैं, यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।५।।

जो बाग़ लगे हैं मन्दिर तक, वह लोगों से सब भरते हैं ।
वह चुहलें होती हैं जितनी, सब मन के रंज बिसरते हैं ।
कुछ बैठे हैं ख़ुश वक्ती से, दिल ऐशो तरब पर धरते हैं ।
कुछ देख बहारे ख़ूवां की, साथ उनके सैरें करते हैं ।
परसंद बहुत मन होते हैं, यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।६।।

जो चीज़े मेलों बिकती हैं, सब उस जा आन झमकती हैं ।
पोशाकें जिनकी ज़रीं हैं, वह तन पर खूब झलकती हैं ।
महबूबों से भी हुस्नों की, हर आन निगाहें तकती हैं ।
लूं नाम 'नज़ीर' अब किस-किस का, जो खूबियां आन झमकती हैं ।
परसंद बहुत मन होते हैं, यह रीत रची है हरसन की ।
तारीफ़ कहूं मैं क्या क्या कुछ, अब दुर्गा जी के दरसन की ।।७।।

सूफ़ियाना नज़्में

आशिक़ों की भंग

दुनियां के अमीरों में यां किसका रहा डंका।
बरबाद हुए लश्कर, फौजों का थका डंका।
आशिक़ तो यह समझे हैं, अब दिल में बना डंका।
जो भग पियें उनका बजता है सदा डंका।
कूंडी के नक़्क़ारे पर, ख़ुतके का लगा डंका॥
नित भंग पी और आशिक़, दिन रात बजा डंका॥ १॥

उल्फ़त के जमर्रुद[१] की, यह खेत की बूटी है।
पत्तों की चमक उसके कमख़्वाब[२] की बूटी है।
मुंह जिसके लगी उससे फिर काहे को छूटी है।
यह तान टिकोरे[३] की इस बात पे टूटी है।
कूंडी के नक़्क़ारे पर, ख़ुतके का लगा डंका॥
नित भंग पी और आशिक़, दिन रात बजा डंका॥ २॥

हर आन खड़ाके से, इस ढब का लगा रगड़ा।
जो सुन के खड़क इसकी हो बंद सभी दगड़ा[४]।
चक़्क़ान[५] चढ़ा गहरा, और बांध हरा पगड़ा[६]।
क्या सैर की ठहरेगी टुक छोड़ के यह झगड़ा।
कूंडी के नक्क़ारे पर, खुतके का लगा डंका॥
नित भंग पी और आशिक़, दिन रात बजा डंका॥ ३॥

---

[१] हरा रत्न, पन्ना
[२] बहुमूल्य वस्त्र, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र
[३] नौबत की आवाज
[४] कच्ची सड़क।
[५] गाढ़ी घुटी हुई भंग
[६] बड़ी पगड़ी

एक प्याले के पीते ही, हो जावेगा मतवाला।
आंखों में तेरी आकर खिल जायेगा गुल-लाला[७]।
क्या-क्या नज़र आवेगी हरियाली व हरियाला।
आ मान कहा मेरा, ऐ शोख़[८] नये लाला।
कूंडी के नक़्क़ारे पर, खुतके का लगा डंका॥
नित भंग पी और आशिक़, दिन रात बजा डंका॥ ४॥

हैं मस्त वही पूरे, जो कूंडी के अन्दर हैं।
दिल उनके बड़े दरिया, जी उनके समुन्दर हैं।
बैठे हैं सनम बुत हो, और झूमते मन्दिर हैं।
कहते हैं यही हंस हंस, आशिक़ जो कलन्दर[९] हैं।
कूंडी के नक़्क़ारे पर, खुतके का लगा डंका॥
नित भंग पी और आशिक़ दिन रात बजा डंका॥ ५॥

सब छोड़ नशा प्यारे, पीवे तू अगर सब्जी।
कर जावे वहीं तेरी, ख़ातिर में असर सब्जी।
हर बाग में हर जां[१०] में, आजावे नज़र सब्जी।
तेरी भी "नज़ीर" अब तो सब्जी में है सर सब्जी।
कूंडी के नक़्क़ारे पर खुतके का लगा डंका॥
नित भंग पी और आशिक़, दिन रात बजा डंका॥ ६॥

---

[७] लाल रंग का प्रसिद्ध फूल [८] चंचल [९] मस्त और आज़ाद फ़क़ीर [१०] हर जगह।

आशिक़ों की भंग

क्यूं अबस[१] बैठा है, डाले कान में ग़फ़लत का तेल।
ख़ल्क़ में क्या-क्या मची है, सब्जियों की रेल—पेल।
खोल जुल्फ़े ऐश को और डाल बेले का फुलेल।
फिर चढ़ा दे आसमाने ऐश पर, इश्रत की बेल।
कूंडी सोटे को बजा, और देख टुक कुदरत के खेल॥
छोड़ सब कामों को गाफ़िल, भंग पी और डंड पेल॥ १॥

सिद्क़[२] से ले नाम पहले लाल और शहबाज़[३] का।
मांग फिर चढ़ने को घोड़ा बाज़ हाथ ऊपर उठा।
और नशे की झांझ[४] में, जो हाथ लग जावे सो खा।
भंगियां[५] दर बाग़ रफ़्ता, बेर गुठली सब रबा।
कूंडी सोटें को बजा, और देख टुक कुदरत के खेल॥
छोड़ सब कामों को गाफ़िल, भंग पी और डंड पेल॥ २॥

जिसने इस दुनिया में आकर एक दिन भी पी न भंग।
उसने सच पूछो तो क्या देखा जहां का आबो रंग।
गर तुझे कुछ देखने हैं, जिन्दगी के रंग—ढंग।
तो मंगा सब्जी को और सब दोस्तों को ले के संग।
कूंडी सोंटे को बजा और देख टुक कुदरत के खेल॥
छोड़ सब कामों को गाफ़िल भंग पी और डंड पेल॥ ३॥

कल मुझे दरिया उपर ख्वाजा ख़िज़्र[६] जो मिल गये।
सब्ज पैराहन[७] गले में हाथ में आसां[८] लिए।
कम खुश्क और नातवानी[९] के गले में जब गये।
तब तो वह मुंह देख, मेरा हंस के यूं कहने लगे।
कूंडी सोंटे को बजा और देख टुक कुदरत के खेल॥
छोड़ सब कामों को गाफ़िल भंग पी और डंड पेल॥ ४॥

---

१. अकारण, बेकार में २. सच्चाई, सत्यता ३. लाल और शहबाज़ दो बड़े बुजुर्ग हुए हैं। चरस और भंग पीने से पहले उनमें विश्वास रखने वाले लोग प्रायः इनका नाम लेते हैं ४. तेजी, तरंग ५. भांग पीने वाला। ६. भूले भटकों को मार्ग बताने वाले वन के अधिकारी अमर पैगम्बर ७. कुर्ता, वस्त्र ८. असा से बना है, हाथ में पकड़ने की लकड़ी, छड़ी ९. शक्ति हीनता, निर्बलता

फिर कहा मैं उनसे यूं, ऐ मेरे हादी[१०] रहनुमा[११] ।
मैंने कुछ देखा नहीं, दुनिया में आने का मज़ा ।
जी भी रहता है उदास, और दिल भी रहता है ख़फ़ा ।
सोच-सोच आख़िर उन्होंने फिर यही मुझसे कहा ।
कूंडी सोंटे को बजा और देख टुक कुदरत के खेल ॥
छोड़ सब कामों को गाफ़िल भंग पी और डंड पेल ॥ ५ ॥

मुर्शिदो[१२] मौला से पूछा मैंने ऐ पीरे ज़मन[१३] ।
मेरी कुछ लगती नहीं, अल्लाह से दिल की लगन ।
सुनके बोले वह बतादें हम तुझे इसका जतन ।
जा शिताब[१४] और जल्द सब्जी लेके एक, दो, चार मन ।
कूंडी सोंटे को बजा और देख टुक कुदरत के खेल ॥
छोड़ सब कामों को गाफ़िल, भंग पी और दंड पेल ॥६॥

ज़र है तेरे पास तो सब्जी का तू व्यौपार कर ।
कोठियां, मटके, घड़े, कूजे, सुराही भर के धर ।
टाट के बोरे सिला, खत्ते खुदा, कुएं भी भर ।
बैठ घर में चैन से, दिन रात और शामो सहर ।
कूंडी सोटे को बजा, और देख टुक कुदरत के खेल ॥
छोड़ सब कामों को ग़ाफ़िल, भंग पी और डंड पेल ॥७॥

और तुझे खेती की कुदरत है तो सब्जी को बुआ ।
बाग़ में, घर में, सहन में, पेड़ सब्जी के लगा ।
घोंट सब्जी, छान सब्जी, और सब्जी में नहा ।
देख भी सब्जी को और सब्जी ही पी, सब्जी ही खा ।
कूंडी सोटे को बजा और देख टुक कुदरत के खेल ॥
छोड़ सब कामों को ग़ाफ़िल, भंग पी और डंड पेल ॥८॥

---

[१०] पथप्रदर्शक
[११] पथप्रदर्शक, आगे आगे चलने वाले ।
[१२] पीर, धर्म गुरू
[१३] संसार के गुरू
[१४] शीघ्र, जल्दी

यह सुख़न तो सब नशे बाज़ों में अब हैगा मचा ;
यानी सब्जी का नशा अब सब नशों का है चचा ।
जोन से सुल्तान भंगड़ से तू पूछेगा बचा[१५] ।
वह यही तुझको कहेगा खूब शोरो ग़ुल मचा ।
कूंडी सोंटे को बजा और देख टुक कुदरत के खेल ॥
छोड़ सब कामों को ग़ाफ़िल, भंग पी और डंड पेल ॥९॥

यह वह सब्जी हैं जिसे पीते हैं यां आकर फ़क़ीर ।
तिफ़्ल[१६] और बूढ़े को याक़ूती[१७], जवां के हक़ में खीर ।
गर तू चाहे अब सुख़न सर सब्ज हो और दिल पज़ीर[१८] ।
तो कोई दो चार मन सब्जी मंगा कर ऐ "नज़ीर" ।
कूंडी सोंटे को बजा और देख टुक क़ुदरत के खेल ॥
छोड़ सब कामों को ग़ाफ़िल भंग पी और डंड पेल ॥१०॥

---

[१५] बच्चा [१६] बच्चा [१७] एक यूनानी दवा जिसमें याक़ूत पड़ता है और जो दिल को ताकत देता है
[१८] रुचिकर

आशिक़ों की सब्ज़ी

जितने हैं इस जहां में सब्ज़ी के इश्क वाले ।
दिलशाद[१] सुर्ख आँखें, सर सब्ज़ मुँह उजाले[२] ।
पीते हैं सब्ज़ तुर्रे, खाते हैं तर निवाले ।
क्या देखता है बैठा, ओ यार हुस्न वाले ।
पी आशिक़ों में आकर, दो भंग के प्याले ॥
जो एक दम में तेरा घर घूमे छप्पर हाले ॥१॥

ग़ैरों की तूने अक्सर, माज़ून[३] तो है खाई ।
सुर्ख़ी ज़रा भी तेरी, आँखों तलक न आई ।
गर देखनी है तुझको, कुछ ऐश की चढ़ाई ।
उछले दिवाल, पाखें भन्नावे चारपाई ।
पी आशिकों में आकर, दो भंग के प्याले ॥
जो एक दम में तेरा घर घूमे छप्पर हाले ॥२॥

घोले है पोस्त[४] तेरी, खातिर रक़ीब झड़वा ।
अब पोस्ती करेगा, तुझको वह चोर भड़वा ।
देखेगा जब तू लेगा, तेरा उतार खड़वा ।
गर सैर देखनी है, तो करके दिल को कड़वा ।
पी आशिकों में आकर, दो भंग के प्याले ॥
जो एक दम में तेरा घर घूमे छप्पर हाले ॥३॥

खाकर अफ़ीम ज़ालिम मत हूजियो अफ़ीमी ।
तन सूख कर खुजावे, आवाज़ होगी धीमी ।
क्यों भिनभिना बना है, ऐ गुल अज़ार[५] सीमी[६] ।
आशिक़ तो सब इसी के, मन मस्त हैं क़दीमी[७] ।
पी आशिक़ों में आकर, दो भंग के प्याले ।
जो एक दम में तेरा, घर घूमे छप्पर हाले ॥४॥

---

१. खुश २. नशे से चेहरे पर दमक ३. अवलेह ४. अफीम ५. गुलाब जैसे सुकुमार और कोमल गालों वाला ६. चांदी जैसा ७. पुराने, पहले से ही

ताड़ी व सेंधी बूजा[८], ज़ालिम अगर पियेगा ।
फूलेगा पेट तेरा, या बैठ क़ै करेगा ।
पीकर शराब नाहक़, कीचड़ में गिर पड़ेगा ।
और यह नशा तो कोठे, छज्जे प ले उड़ेगा ।
पी आशिकों में आकर, दो भंग के प्याले ।
जो एक दम में तेरा घर घूमे छप्पर हाले ।।५।।

गांजा पिये से होगा, तेरा शऊर हुर्रा ।
और चर्स के पिये से, तुझको लगेगा खुर्रा ।
चाहे अगर उड़ाना, इश्रत का बाज़ जुर्रा ।
तो पहन हार बद्धी, और सर पे रख के तुर्रा ।
पी आशिकों में आकर, दो भंग के प्याले ।।
जो एक दम में तेरा, घर घूमे छप्पर हाले ।।६।।

हैं इस नशे में ज़ालिम, सौ रंग के धड़ाके ।
कूंडी की डगमगाहट, सोंटे के सौ खड़ाके ।
गर देखने हैं तुझको, कुछ ऐश के झड़ाके ।
तो झाड़ अपने पंजे, और सर को झड़ झड़ाके ।
पी आशिकों में आकर, दो भंग के प्याले ।।
जो एक दम में तेरा, घर घूमे छप्पर हाले ।।७।।

सब्जी का वह नशा है, उड़ ग़म की धूल जावे ।
तैयार तन बदन हो, और दिल भी फूल जावे ।
आंखों के आगे जाकर, सरसों सी फूल जावे ।
इश्रत[९] की लहरें आवें, दुख दर्द भूल जावे ।
पी आशिकों में आकर, दो भंग के प्याले ।।
जो एक दम में तेरा, घर घूमे छप्पर हाले ।।८।।

पैसा हो पास यारों, या मुफ़्लिसी[१०] सहेंगे ।
पर सब्ज़ियों के यां तो, दरिया वहीं बहेंगे ।
कुंडी के उस तरफ़ को, या इस तरफ़ रहेंगे ।
अब तो 'नज़ीर' प्यारे, हर दम यही कहेंगे ।
पी आशिक़ों में आकर, दो भंग के प्याले ।
जो एक दम में तेरा, घर घूमे छप्पर हाले ।।९।।

---

[८] जौ की शराब
[९] खुशी
[१०] ग़रीबी

इश्क़ की मस्ती

हैं आशिक़ और माशूक जहाँ वां शाह[१] बज़ीरी[२] है बाबा ।
न रोना है न धोना है न दर्द असीरी[३] है बाबा ॥
दिन रात बहारें चुहलें हैं और इश्क़ सग़ीरी[४] है बाबा ।
ज़ो आशिक़ हैं सो जानें हैं यह भेद फ़क़ीरी है बाबा ॥
हर आन हंसी, हर आन ख़ुशी हर वक़्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए फिर क्या दिलगीरी[५] है बाबा ॥१॥

है चाह फ़क़त एक दिलबर की फिर और किसी की चाह नहीं ।
एक राह उसी से रखते हैं फिर और किसी से राह नहीं ।
यां जितना रंजो तरद्दुद[६] है हम एक से भी आगाह नहीं ।
कुछ करने का सन्देह नहीं, कुछ जीने की परवाह नहीं ॥
हर आन हंसी, हर आन खुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़कीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥२॥

कुछ जुल्म नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद[७] नहीं, फ़रयाद नहीं ।
कुछ क़ैद नहीं, कुछ बन्द नहीं, कूछ जब्र[८] नहीं, आज़ाद नहीं ॥
शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं ।
हैं जितनी बातें दुनियां की सब भूल गये कुछ याद नहीं ॥
हर आन हंसी, हर आन खुशीं, हर वक़्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़कीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥३॥

जिस सिम्त नज़र भर देखे हैं उस दिलबर की फुलवारी है ।
कहीं सब्ज़ी की हरियाली है, कहीं फूलों की गुलकारी[९] है ॥
दिन रात मगन ख़ुश बैठे हैं और आस उसी की भारी है ।
बस आप ही वह दातारी हैं और आप ही वह भंडारी हैं ॥
हर आन हंसी, हर आन ख़ुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़कीर हुए, फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥४॥

---

१. बादशाह, शासक २. मंत्री ३. ऊँचा (तेज) ४. छोटा, थोड़ा ५. रंज, दुख ६. सोच ७. न्याय, इंसाफ ८. अत्याचार, किसी बात के लिए मजबूर करना ९. बेल बूटे बनाने का काम

नित इश्रत[१०] है नित फ़रहत[११] है, नित राहत है, नित शादी है।
नित मेहरो करम[१२] है दिलबर का नित ख़ूबी ख़ूब मुरादी है ॥
जब उमड़ा दरिया उल्फ़त का हर चार तरफ़ आवादी है ।
हर रात नई एक शादी है हर रोज़ मुवारकबादी है ॥
हर आन हंसी, हर आन ख़ुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥५॥

है तन तो गुल के रंग बना और मुंह पर हर दम लाली है।
जुज़ ऐशो तरब[१३] कुछ और नहीं जिस दिन से सुरत संभाली है ॥
होंठो में राग तमाशे का और गत पर बजती ताली है ।
हर रोज़ बसत और होली है और हर इक रात दिवाली है।
हर आन हंसी, हर आन ख़ुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा ॥
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥६॥

हम चाकर जिसके हुस्न के हैं वह दिलबर सबसे आला है।
उसने ही हमको जी बख़्शा उसने ही हमको पाला है ॥
दिल अपना भोला भाला है और इश्क़ बड़ा मतवाला है ।
क्या कहिये और 'नज़ीर' आगे अब कौन समझने वाला है ॥
हर आन हंसी, हर आन ख़ुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥७॥

---

[१०] खुशी [११] खुशी [१२] कृपा [१३] हर्षोल्लास

दुनियां बदले की जगह है

है दुनियां जिसका नाम मियां, यह और तरह की बस्ती है।
जो महंगों को तो महंगी है, और सस्तों को यह सस्ती है।
यां हर दम झगड़े उठते हैं, हर आन अदालत बस्ती है।
गर मस्त करे तो मस्ती है, और पस्त करे तो पस्ती है।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इंसाफ और अदल परस्ती है ॥
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती[1] है ॥१॥

जो और किसी का मन रक्खे तो उसको भी अरमान मिले।
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान मिले ॥
नुकसान करे नुकसान मिले, अहसान करे अहसान मिले।
जो जैसा जिसके साथ करे फिर वैसा उसको आन मिले ॥
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है ॥
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती है ॥२॥

जो और किसी की जां बख़्शे, तो उसकी भी हक़ जान रखे।
जो और किसी की आन रक्खे, तो उसकी भी हक़ आन रखे।
जो यां का रहने वाला है, यह दिल में अपने जान रखे।
ये तुरत फुरत का नक़्शा है, इस नक्शे को पहचान रखे।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है ॥
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती है ॥३॥

जो पार उतारे औरों को, उसकी भी पार उतरनी है।
जो ग़र्क़ करे फिर उसको भी यां डुबकूं डुबकूं करनी है।
शमशीर[2], तबर[3], बन्दूक, सिनां[4] और नश्तर तीर, नहरनी है।
यां जैसी-जैसी करनी है फिर वैसी-वैसी भरनी है।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है ॥
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती है ॥४॥

---

[1] हाथ से हाथ का [2] तलवार [3] एक प्रकार की कुल्हाड़ी (तबल) [4] नेज़े और तीर की नोंक

जो और का ऊंचा बोल करे, तो उसका बोल भी बाला है।
और दे पटके तो उसको, कोई और पटकने वाला है।
बे ज़ुल्मों ख़ता[५] जिस ज़ालिम ने, मज़लूम[६] ज़िबह् कर डाला है।
उस ज़ालिम के भी लोहू का, फिर बह्ता नद्दी नाला है।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है।
इस हाथ करो उस हाथ मिले, याँ सौदा दस्त ब दस्ती है ॥५॥

जो मिश्री और के मुँह् में दे, फिर वह् भी शक्कर खाता है।
जो और के तई अब टक्कर दे, फिर वह् भी टक्कर खाता है।
जो और को डाले चक्कर में, फिर वह् भी चक्कर खाता है।
जो और को ठोकर मार चले, फिर वह् भी ठोकर खाता है।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है।
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती है ॥६॥

जो और किसी को नाहक़ में, कोई झूठी बात लगाता है।
और कोई ग़रीब और बेचारा, हक़ नाहक़ में लुट जाता है।
वह् आप भी लूटा जाता है, और लाठी पाठी खाता है।
जो(१) जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है।
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती है ॥७॥

जो और की पगड़ी ले भागे, उसका भी और उचक्का है।
जो और पै चौकी बिठला दे, उस पर भी धौंस धड़क्का है।
यां पुश्ती[७] में तो पुश्ती है, और धक्के में यां धक्का है।
क्या ज़ोर मज़े का जमघट है, क्या ज़ोर यह् भीड़ भड़क्का है।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है।
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौंदा दस्त ब दस्ती है ॥८॥

है खटका उसके हाथ लगा, जो और किसी को दे खटका।
और ग़ैव[८] से झटका खाता है, जो और किसी को दे झटका।
चीरे के बीच में चीरा है, और पटके बीच जो है पटका।
क्या कहिये और "नज़ीर" आगे, है ज़ोर तमाशा झट पटका।
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदल परस्ती है।
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यां सौदा दस्त ब दस्ती है ॥९॥

---

[५] अत्याचार और गलती के बिना [६] जिस पर ज़ुल्म किया गया हो। [७] मदद [८] परोक्ष, भाग्य

पाठान्तर-- (१) श० आ० यह्

दुनिया धोके की टट्टी है

यह पैंठ अजब है दुनियां की, और क्या क्या जिन्स इकट्ठी हैं ।
यां माल किसी का मीठा है, और चीज़ किसी की खट्टी है ।
कुछ पकता है कुछ भुनता है, पकवान मिठाई पट्टी है ।
जब देखा खूब तो आख़िर को, न चूल्हा भाड़ न भट्टी है ।
गु़ल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी ट्टटी है ।।१।।

कोई ताज ख़रीदे हंस-हंस कर, कोई तख़्त खड़ा बनवाता है ।
कोई कपड़े रंगी पहने है, कोई गुदड़ी ओढ़े जाता है ।
कोई भाई, बाप, चचा, नाना, कोई नाती पूत कहाता है ।
जब देखा खूब तो आख़िर को, न रिश्ता है न नाता है ।
गु़ल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी ट्टटी है ।।२।।

कोई सेठ, महाजन, लाखपती, बज्जाज़, कोई पंसारी है ।
या बोझ किसी का हल्का है, और खेप किसी की भारी है ।
क्या जाने कौन ख़रीदेगा, और किसने जिन्स उतारी है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को, दल्लाल न कोई व्योपारी है ।
गु़ल शोर बबूला, आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ।।३।।

कोई फूल के बैठे मसनद पर, कोई रोये अपनी ज़िल्लत को ।
कोई बोले अपना मुझसे लो, और मेरा हो सो मुझको दो ।
कोई लड़ता है, कोई मरता है, कोई झगड़े हक़ पर नाहक़ को ।
जब देखा ख़ूब तो आखिर को कुछ लेना एक न देना दो (१) ।।
गु़ल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ।।४।।

पाठान्तर—(१) श० आ० कुछ देना एक न लेना दो

रम्माल[१], नुजूमी[२], आमिल[३] है और फ़ाज़िल[४], मुल्ला स्याना है ।
कोई आक़िल[५] कामिल[६] दाना[७] है, कोई मस्त पड़ा दीवाना है ।
तावीज़, फ़लीता, फ़ाल[८], फ़सूं[९] और जादू मंतर लाना है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को सब हीला मक्र बहाना है ।
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ॥५॥

कोई लूटे कूंचे गलियों में, तैयार किसी का डेरा है ।
कोई बाग़, कुआं बनवाता है और घेर किसी ने घेरा है ।
नित क़िस्से झगड़े करते हैं, यह तेरा है यह मेरा है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को ना मेरा है ना तेरा है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ॥६॥

कहीं धूम मची है क़र्ज़ों की, कहीं क़र्ज़ों का दुख सेना है ।
कोई हीरा पन्ना परखावे और बेचे कोई चैना[१०] है ।
हर रोज़ तक़ाज़ा धरना है, दुख देना पैसा लेना है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को, कुछ लेना है न देना है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ॥७॥

कोई बनिया है कोई तेली है, कोई बेचे पान तमोली है ।
कोई सर पर रख कर खींचे है, कोई बांधे फिरता झोली है ।
कहीं गोन[११] ढली है नाज़ों की, कहीं थैली थैला खोली है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को, एक दम की बोला ठोली है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ॥८॥

---

१. नुक्तों (शून्यों) के आधार पर भविष्य की बातों को बताने की विद्या जानने वाला २. ज्योतिषी ३. भूत प्रेत उतारने वाला ४. जिसने पूरी विद्या पढ़ ली हो, स्नातक ५. बुद्धिमान ६. निपुण, दक्ष, चमत्कारी साधु ७. बुद्धिमान ८. शकुन ९. जादू मंत्र १०. एक साधारण चावल जैसा अनाज ११. गधे पर लादने का बोरा

कोई टोपी पहने जाता है कोई बांध फिरे इमामा है ।
कोई साफ़ बरहना[१२] फिरता है ना पगड़ी न पाजामा है ।
कमख़्वाब, गज़ी और गाढ़े का, नित किस्सा है हंगामा है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को ना पगड़ी है ना जामा है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ।।९।।

कोई बाल बढ़ाये फिरता है, कोई सर को घोंट मुंडाता है ।
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई नंगे मुंगे आता है ।
कोई पूजा, कथा बखाने है, कोई छापा, तिलक लगाता है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को सब छोड़ अकेला जाता है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी है ।।१०।।

कोई रोता है, कोई हंसता है, कोई नाचे है कोई गाता है ।
कोई छीने, झपटे, ले भागे, कोई धोंस धड़क्का लाता है ।
कोई माल इकट्ठा करता है. कोई कुंजी क़ुफ़्ल[१४] लगाता है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को सब झगड़ा रगड़ा जाता है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनिया को, यह धोके की सी टट्टी है ।।११।।

कोई बेचे भंग शराब, अफ़्यू[१५] कहीं दूध दही की फेरी है ।
कोई पल्ला सर पर लाता है, कोई लादे बैल मकेरी है ।
कोई झगड़े अपनी जागह पर यह मेरी है यह तेरी है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को न तेरी है न मेरी है ।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को, यह धोके की सी टट्टी ।।१२।।

कहीं बल्ली टेवकी, थूनी है, कहीं घास करब कीं पूली है ।
कहीं छलनी, छाज, पिटारे हैं, कहीं चूल्हा, चक्की, चूली है ।
तरकारी बैंगन, साग, बड़ा, गुड़, गांडा, गाजर, मूली है ।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को सब छू यह देखत भूली है ।
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
हम देख चुके इस दुनियां को यह धोके की सी टट्टी है ।।१३।।

---

[१२] नंगा [१४] ताला [१५] अफ़ीम

कहीं बान, अटेरी, टाट कढ़ी कहीं दमरख, चमरख़, तकला है।
कहीं रोक रुपैया खुर्दा है कहीं कौड़ी पैसा धेला है।
कहीं ढाँच पलंग विकता है, कहीं छींका रस्सी रस्सा है।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को न पीढ़ी खाट न चरख़ा है।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनियां को यह धोके की सी टट्टी है ॥१४॥

कोई शकरा बाज़ उड़ाता है, कोई रक्खे हाथ पे तितली है।
शाबाश कोई ले बैठा है, और दोड़ किसी ने दुत ली है।
है तार किसी के हाथों में, और नाचती फिरती पुतली है।
जब देखा ख़ूब तो आख़िर को, न रेशम सूत न सुतली है।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनिया को, यह धोके की सी टट्टी है ॥१५॥

अब किसका रंग बुरा कहिये, और किसका रूप भला कहिए।
एक दम की पैठ लगी है यह, अम्बोह[१६] मज़ा चर्चा कहिए।
यह सैर तमाशे देख "नज़ीर", अब जा कहिए बेजा कहिए।
कुछ बात नहीं बन आती है चुपचाप पहेली क्या कहिए।
गुल शोर बबूला आग हवा, और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनिया को, यह धोके की सी टट्टी है ॥१६॥

---

[१६] झुंड

कल जुग

दुनिया अज़ब बाज़ार है, कुछ जिन्स[1] यां की सात ले ।
नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले ॥
मेवा खिला, मेवा मिले, फल फूल दे फल पात ले ।
आराम दे आराम ले, दुख दर्द दे, आफ़ात ले ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ।
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले ॥१॥

कांटा किसी के मत लगा गौ मिस्ले गुल[2] फूला है तू ।
वह तेरे हक़ में तीर है, किस बात पर भूला है तू ॥
मत आग में डाल और फिर(१) एक घास का पूला है तू ।
सुन रख यह नुक़्ता बे ख़बर किस बात पर फूला है तू ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ।
क्या खूब सौदा नक़्द है इस हात दे उस हात ले ॥१२॥

शोख़ी[3] शरारत मक्रोफ़न[4], सबका बसेखा है यहां ।
जो जो दिखाया और को, वह खुद भी देखा है यहां ॥
खोटी खरी जो कुछ कहे, तिसका परेखा है यहां ।
जो जो पड़ा तुलता है दिल, तिल तिल का लेखा है यहां ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यांहां दिन को दे और रात ले ॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले ॥३॥

जो और की बस्ती रखे उसका भी बसता है पुरा ।
जो और के मारे छुरी, उसके भी लगता है छुरा ॥
जो और की तोड़े धुरी उसका भी टूटे है धुरा ।
जो और की चीते बदी, उसका भी होता है बुरा ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले ॥४॥

---

[1] वस्तु, गल्ला [2] फूल के समान [3] चपलता, चंचलता, धृष्टता [4] धोखा, चालाकी का काम
(१) श० आ० यह

जो और को फल देवेगा, वह भी सदा फल पावेगा ।
गेहूं से गेहूं, जौ से जौ, चावल से चावल पावेगा ॥
जो आज देवेगा यहां, वैसा ही वह कल पावेगा ।
कल देवेगा, कल पावेगा, कल पावेगा, कल पावेगा ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ।
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले ॥५॥

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स यां तैयार है ।
आराम में आराम है, आज़ार में आज़ार है ॥
दुनिया न जान इसको मियाँ, दरिया की यह मझधार है ।
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है इस हात दे उस हात ले ॥६॥

तू और की तारीफ़ कर, तुझको सनाख़्वानी[५] मिले ।
कर मुश्किल आसाँ और की, तुझको भी आसानी मिले ॥
तू और को मेहमान कर, तुझको भी मेहमानी मिले ।
रोटी खिला, रोटी मिले, पानी पिला, पानी मिले ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले ॥७॥

जो गुल खिलावे और का, उसका ही गुल खिलता भी है ।
जो और का कीले है मुंह, उसका ही मुंह किलता भी है ॥
जो और का छीलै जिगर उसका जिगर छिलता भी है ।
जो और को देवे कपट, उसको कपट मिलता भी है ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले ॥८॥

कर चुक जो कुछ करना हो अब, यह दम तो कोई आन है ।
नुक़्सान में नुक़्सान है, एहसान में एहसान है ॥
तोहमत में यां तोहमत लगे, तूफ़ान में तूफ़ान है ।
रहमान को रहमान है, शैतान को शैतान है ॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले ॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है इस हात दे उस हात ले ॥८॥

---

[५] तारीफ

यां ज़हर दे तो ज़हर ले, शक्कर में शक्कर देख ले।
नेकों को नेकी का मज़ा, मूज़ी को टक्कर देख ले॥
मोती जो दे मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले।
गर तुझको यह बावर[६] नहीं, तो तू भी कर-कर देख ले॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले॥१०॥

अपने नफ़ा के वास्ते मत और का नुक़्सान कर।
तेरा भी नुक़्सां होवेगा, इस बात पर(१) तू ध्यान कर॥
खाना जो खा तू देखकर, पानी पिये तो छान कर।
यां पांव को रख फूंक कर, और ख़ौफ से गुज़रान कर॥
कल जुग नहीं, कर जुग है यह, यां दिन को दे और रात ले॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हात दे उस हात ले॥११॥

ग़फ़लत की यह जागह नहीं, यां साहिबे इदराक[७] रह।
दिलशाद[८] रख, दिल शाद रह, ग़मनाक[९] रख, ग़मनाक रह॥
हर हाल में तू भी "नज़ीर", अब हर क़दम की ख़ाक रह।
यह वह मकां है ओ मियां! यां पाक रह बेबाक रह॥
कलजुग, नहीं करजुग है यह, यां दिन को दे और रात ले॥
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है इस हात दे उस हात ले॥१२॥

---

६. विश्वास ७. अक्लमंद ८. खुश ९. दुखी

पाठान्तर—(१) श० आ० ऊपर

दुनियां भी क्या तमाशा है

यह जितना ख़ल्क़ में अब जावजा तमाशा है ।
जो ग़ौर की तो यह सब एक का तमाशा है ॥
न जानो कम इसे, यारो बड़ा तमाशा है ।
जिधर को देखो उधर एक नया तमाशा है ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ॥१॥

मेरे यह देख तमाशे, नहीं हैं होश बजा ।
किसे बताऊं मैं सीधा, किसे कहूं उल्टा ॥
जो हो तिलिस्म हक़ीकी, वह जावे कब समझा ।
अजब बहार की एक सैर है अहा ! हा—हा ! ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ॥२॥

नहीं है ज़ोर ज़िन्हों में, वह कुश्ती लड़ते हैं ।
जो ज़ोर वाले हैं, वह आप से पिछड़ते हैं ॥
झपट के अंधे बटेरों तई पकड़ते हैं ।
निकाले छातियां कुबड़े अकड़ते फिरते हैं ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ॥३॥

जिन्होंके पर हैं, वह पांव से चलते फिरते हैं ।
जो बिन परों के हैं, वह पंखे झलते फिरते हैं ॥
मिसाल रूह के लुंजे भी चलते फिरते हैं ।
हिरन की तरह से लंगड़े उछलते फिरते हैं ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं, दुनियां भी क्या तमाशा है ॥४॥

बना के न्यारिया[1] ज़र की दुकान बैठा है ।
जो हुंडी वाला था वह ख़ाक छान बैठा है ॥
जो चोर था सो वह हो पासबान[2] बैठा है ।
ज़मीन फिरती है, और आसमान बैठा है ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ॥५॥

---

१. भट्टी की राख में मिले हुए सोने-चांदी के कणों को छानकर अलग करके जीविका कमाने वाला
२. निरीक्षक, निगरानी करने वाला

चकोरें घिसती हैं और गिद्ध घुग्गू बढ़ते हैं ।
पतिंगे बंद हैं, मच्छर फ़लक पे चढ़ते हैं ।।
किताबें खोल चुग़द बैठे साया करते हैं ।
नमाज़ बुलबुलें, तोते क़ुरान पढ़ते हैं ।।
ग़रज़ मैं क्या कहूं, दुनियां भी क्या तमाशा है ।।६।।

इराक़ी[3] फूस ठठेरे खड़े चबाते हैं ।
गधे पुलाव तई लात मार जाते हैं ।।
जो शेर हैं उन्हें गीदड़ खड़े चिढ़ाते हैं ।
पढ़न[4] तो नाचे हैं मेंढ़क मलार गाते हैं ।।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।७।।

बतों[5] की लम्बी दुमें, मोर सब लंड्रे हैं ।
सफ़ेद कौवे हैं, चीलों के रंग भूरे हैं ।।
जो साधु सन्त हैं पूरे सो वह अधूरे हैं ।
कपट की नद्दी पै बगले, भगत के पूरे हैं ।।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।८।।

ज़ुबां है जिसके इशारत से वह पुकारे है ।
जो गूंगा है वह खड़ा फ़ारसी बघारे है ।
कुलाह[6] हंस की कौआ खड़ा उतारे है ।
उछल के मेंढ़की हाथी के लात मारे है ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।९।।

जो हैं नजीब नस्ब[7] के वह बन्दे चेले हैं ।
कमीने अपनी बड़ी ज़ात के नवेले हैं ।
जो बाज़ शकरे हैं पापड़ खड़े वह बेले हैं ।
लंगड़(१) तो मर गये उल्लू शिकार खेले हैं ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।१०।।

---

[3] इराक़ देश का कीमती घोड़ा [4] एक प्रकार की मछली [5] बतख [6] टोपी, ताज [7] शुद्ध वंश

पाठान्तर—(१) श० लकड़

चमन हैं ख़ुश्क बनों बीच आब जारी है ।
ख़राब फूल है कांटों की गुल इज़ारी[८] है ॥
स्याह गोश[९] को पिदड़ी ने लात मारी है ।
दुबकते फिरते हैं, चीते हिरन शिकारी है ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं, दुनिया भी क्या तमाशा है ॥११॥

जिन्होंके दाढ़ी है, उनकी तो बा तबाही है ।
जो दाढ़ी मुंडे हैं उनकी सनद गवाही है ॥
स्याह रोशनी और रोशनी स्याही है ।
उजाड़ शहर में मुर्दों की बादशाही है ॥
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनिया भी क्या तमाशा है ॥१२॥

जिन्हों में अक़्ल नहीं वह बड़े सियाने हैं ।
जो अक़्ल रखते हैं, वह बावले दिवाने हैं ।
जनाने शौक़ से मर्दों के पहने बाने हैं ।
जो मर्द हैं वह निरे हीजड़े जनाने हैं ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ॥१३॥

जिन्हों के कान नहीं, दूर की वह सुनते हैं ।
जो कान वाले हैं, बैठे सर को धुनते हैं ।
धुँए बरसते(१) हैं और अब्र तिनके चुनते हैं ।
कबाब भूनते हैं, और कबाबी भुनते हैं ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनिया भी क्या तमाशा है ॥१४॥

चिमगादड़ दिन के तईं रतजगा मनाती है ।
छछूंदर और भी घी के दिये जलाती है ।
जो चुहिया ढोल बजाती है घूंस[१०] गाती है ।
गिलहरी बैठी हुई गुलगुले पकाती है ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनिया भी एक तमाशा है ॥१५॥

---

[८] फूल जैसे सुन्दर [९] कुत्ते के बराबर एक जानवर जिससे शेर डरता है ।
[१०] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जन्तु

पाठान्तर—(१) श० आ० बरसते धुंऐं हैं

पहन के रीछनी पोशाक जब दिखाती है ।
गधों से हंसती है, कुत्तों से मुस्कराती है ।
परी तो कौड़ी की मिस्सी को दाग़ खाती है ।
चुड़ैल पान के बीड़े खड़ी चबाती हैं ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनिया भी क्या तमाशा है ।।१७।।

ख़बीस[११] देव, पलीद, आ हर एक से लड़ते हैं ।
जो आदमी हैं वह उन सबके पांव पड़ते हैं ।
बलायें लिपटाँ(१) हैं और भूत जिन झगड़तेहैं ।
यह क़हर देखो कि ज़िन्दों से मुर्दे लड़ते हैं ।
ग़रज मैं क्या कहूं दुनिया भी क्या तमाशा है ।।१७।।

गधा लड़ाई में, हाथी के तईं लताड़े है ।
शुतुर[१२] के घर के तईं लोमड़ी उजाड़े है ।
हुमा[१३] को बूम[१४] हर एक वक़्त मारे धाड़े है ।
ग़ज़ब है पोदना सारस का पर उखाड़े है ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।१८।।

खिले हैं आक(२) के फूल और गुलाब झड़ते हैं ।
बिनौले पकते हैं अंगूर, आम सड़ते हैं ।
सख़ी करीम[१५] पड़े एड़ियां रगड़ते हैं ।
बख़ील[१६] मोतियों को मूसलों से छरते हैं ।
ग़रज मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।१९।।

शकर के ग़म में शकर ख़ोरी ख़ाक उड़ाती है ।
जलेबी, पेड़ों ऊपर मक्खी भिनभिनाती है ।
उड़ें हैं मछलियां, मुर्ग़ी खड़ी नहाती है ।
जंगल की रेत में मुर्ग़ाबी गोता खाती है ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।२०।।

---

११. प्रेत १२. ऊंट १३. फ़ारसी और उर्दू साहित्य में वर्णित एक कल्पित पक्षी जिसकी छाया पड़ जाने से मनुष्य राजा हो जाता है, वह पक्षी केवल हड्डियां खाता है १४. उल्लू १५. उदार और दयालु १६. कंजूस

पाठान्तर—(१) क़ा० लिपटे
(२) क़ा० आख

जो ठग थे अपनी वह ठग विद्या से छूटे हैं ।
मुसाफ़िर उनके गले फांसी डाल घूटे हैं ।
अंधेरी रात में घर चोरटों के फूटे हैं ।
सभों को दिन के तई साहूकार लूटे हैं ।
ग़रज़ मैं क्या कहू दुनियां भी क्या तमाशा है ।।२१।।

तज़रू[17] रोते हैं और ज़ाग़[18] खिलखिलाते हैं ।
ख़मोश बुलबुलें और भुनगे चहचहाते हैं ।
चिड़े अटारियां और पिद्दे बंगले छाते हैं ।
बिलों को छोड़ के चूहे महल उठाते हैं ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।२२।।

चरिंद[19] जितने हैं पर झाड़-झाड़ उड़ते हैं ।
परिंद गिरते हैं, और बूटी झाड़ उड़ते हैं ।
पड़ी हैं बस्तियां वीरां, उजाड़ उड़ते हैं ।
अटल हो बैठे हैं रोड़े, पहाड़ उड़ते हैं ।
ग़रज मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।२३।।

सुलेमां भूके हैं च्यूटीं के पास ढेरी है ।
कुलंग[20], बुज्जे[21] की चिड़िया ने राह घेरी है ।
अजब अँधेरे उजाले की फेरा फेरी है ।
घड़ी में चांदनी है और घड़ी अंधेरी है ।
ग़रज मैं क्या कहूं दुनिया भी क्या तमाशा है ।।२४।।

अज़ीज़[22] थे जो हुए चश्म[23] में सभों की हक़ीर[24] ।
हक़ीर थे सो हुए सब साहिबे तौक़ीर[25] ।
अजब तरह की हवाएँ हैं और अजब तासीर[26] ।
अचंभे खल्क़ के क्या-क्या करूं बयां मैं "नज़ीर" ।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनियां भी क्या तमाशा है ।।२५।।

---

[17] बहुत सुन्दर रंग का जंगली मुर्ग [18] कौए [19] चौपाये [20] एक पहाड़ी मौसमी पक्षी जिस के पेट में मोती निकलते हैं । [21] श्वेत-श्याम रंग का एक जल-पक्षी ।
[22] प्रिय, सम्बन्धी, [23] आंख, [24] तुच्छ, छोटे, [25] प्रतिष्ठा वाले, [26] प्रभाव ।

ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने

जहां में क्या क्या, ख़ुदी के अपनी, हर एक बजाता है शादयाने[1] ।
कोई हकीम और कोई महंदस, कोई हो पण्डित कथा बखाने ।
कोई है आक़िल[2], कोई है फ़ाज़िल[3], कोई नुजूमी[4] लगा कहाने ।
जो चाहो कोई यह भेद खोले, यह सब हैं हीले यह सब बहाने ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना[5], करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।।
जो खूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।१।।

हवा के ऊपर जो (१) आस्मां का, वे चोबा ख़ेमा यह तन रहा है ।
न उसके मेंखें, न हैं तनावें न उसके चोबें अधर खड़ा है ।
इधर है चांद और उधर है सूरज, इधर सितारे उधर हवा है ।
किसी को मुतलक़ ख़बर नहीं है, कि कब बना है और काहे का है ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, क़रोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।२।।

फ़लक तो कहने को दूर हैगा, ज़मीं का अब जो यह बिस्तरा है ।
खड़े हैं लाखों पहाड़ जिस पर, फ़लक से सिर जिनका जा लगा है ।
हज़ारों हिकमत[7] का एक बिछौना, यह पानी ऊपर जो बिछ रहा है ।
बहुत हकीमों ने ख़ाक छानी, कोई न समझा यह भेद क्या है ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।३।।

---

१. बधाई, ख़ुशी के समय बजने वाला गाना २. बुद्धिमान ३. पूरा विद्वान, स्नातक ४. ज्योतिषी ५. योग्य व्यक्ति ६. बिलकुल ७. होशियारी

पाठान्तर (१) श० आ० यह

ज़मीं से लेकर आस्मां तक, भरी हैं लाखों तरह की ख़ल्क़त ।
कहीं है हाथी, कहीं है च्यूंटी, कहीं है राई कहीं है पर्वत ।
यह जितने जलवे दिखा रही है, ख़ुदा की सनअत[८] ख़ुदा की हिकमत[९] ।
जो चाहे खोले यह भेद उसके, किसी को इतनी नहीं है क़ुदरत ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ॥४॥

कोई जो पूछे किसी से जाकर 'यह मुल्क क्या है और कब बना है ?'
जो जानता हो तो कुछ बतावे, न जाने सो क्या, कहे कि क्या है ?
अरस्तू, लुक़मां और फ़लातूं, हर एक सर को पटक गया है ।
यह वह तिलिस्मात हैं कि जिनकी, न इब्तिदा[१०] है न इन्तिहा[११] है ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ॥५॥

कोई है हंसता, कोई है रोता, कहीं है शादी, कहीं गमी है (१) ।
कहीं तरक़्क़ी, कहीं तनज़्ज़ुल[१२], कहीं गुमां और कहीं यक़ीं हैं ।
कोई घिसटता ज़मीं के ऊपर, कोई खुशी से फ़लक नशीं[१३] है ।
यह भेद अपना वह आप जाने, किसी को हरगिज़ खबर नहीं है ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आखिर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ॥६॥

अजब तरह की यह रंगीं चोपड़[१४], गरज़ बिछाई हैं अब खुदा ने ।
कोइ है फुटकल[१५] किसी का जुग[१६] है फिरे हैं नर्दें[१७] भी ख़ाने ख़ाने ॥
जो पासा[१८] फेंके बना बना कर और दांव कितने ही दिल में ठाने ।
जो चाहता हो अठारह आवें, तो उसके पड़ते हैं तीन काने ॥
पड़े भटकते हैं लाखो दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, खुदा की बातें खुदा ही जाने ॥७॥

---

[८] कारीगरी [९] बुद्धिमत्ता [१०] प्रारम्भ [११] अन्त [१२] पतन [१३] आसमान पर बैठने वाला ऊँचा [१४] खेल जो बिसात पर चार रंगों की गोटियों से खेला जाता है, चौसर [१५] अकेला [१६] जोड़ा [१७] चौपड़ की गोट [१८] हाथी दांत या हड्डी के छह पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिन्दियां बनी होती हैं और जिनसे चौपड़ खेलते हैं

अजब यह शतरंज का सा नक़्शा, बिछा है दिन और रात इस जा ।
जो मात चाहे करे किसी को, न आवे बुर्द[19] उसके हात इस जा ।
हज़ारों मंसूबे बांधे दिल में बनावे चालों की घात इस जा ।
नही है इक चार चौक क़ायम, सभों की बाज़ी है मात इस जा ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।८।।

अजब तरह के वरक़[20] बने हैं, कोई मुकद्दर[21] कोई सफा है ।
किसी के सर पर है ताजशाही, किसी पे शमशीर[22] पुर जफ़ा[23] है ।
कोई अमीर और कोई वज़ीर है कोई फकीरी में दिल ख़फा है ।
सभों को इस जा ख़याल आया, यह हक़ की क़ुदरत का गंजफ़ा है ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित, हजारों स्याने ।
ज़ो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।९।।

यह कौन जाने कि कल किया क्या और आज मालिक वह क्या करेगा ।
किसे बिगाड़े किसे संवारे, किसे लुटावे किसे भरेगा ।
किसी के घर कौन होगा पैदा, किसी के घर कौन सा मरेगा ।
किसी को हरगिज़ ख़बर नहीं है कि क्या किया और वह क्या करेगा ।।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना, करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आख़िर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।१०।।

अजब तरह का यह जाल हैगा कमंद[24] कहिये व या कमन्दा ।
न छूटे च्यूंटी न छूटे हाथी, न कोई वहशी[25] न कोई परिन्दा ।।
सभी की गर्दन फंसी है इसमें, किसी का टूटा न एक फंदा ।
'नज़ीर' इतनी मजाल किसकी, कहां ख़ुदा और कहाँ यह वंदा ।
पड़े भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों पण्डित हज़ारों स्याने ।
जो ख़ूब देखा तो यार आखिर, ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने ।।११।।

---

[19] शतरंज की वह बाज़ी जिसमें आधी मात मानी जाती है और जिसमें हारने वाले के पास बादशाह के सिवा कोई मोहरा नहीं रहता । [20] पृष्ठ [21] मैला, गंदा
[22] तलवार [23] अत्याचार से भरी हुई [24] फंदा पाश, एक लम्बी रस्सी जिसके एक सिरे पर गोह बंधी रहती थी, उसके द्वारा ऊँची ऊँची दीवारों पर चढ़ा जा सकता था, गोह जहां चिपक जाती है फिर कितना ही जोर किया जाय वहां से नहीं छूटती । कमंद शब्द असल में खमंद था क्योंकि उस रस्सी में बहुत से खम (टेढ़) होते हैं । [25] जंगली पशु

तवक्कुल+

ऐ दिल ! कहीं तू जाके न अपनी ज़ुबां हिलाये ।
और दर्द अपने दिल का किसी को तू मत सुनाये ॥
मांग उससे जिसके हाथ से तू पेट भरके खाये ।
मशहूर यह मसल[1] है कहूं क्या मैं तुझसे हाये ॥
गैर अज़[2] ख़ुदा के किस में है क़ुदरत जो हाथ उठाये ?
मक़दूर[3] क्या किसी का, वही दे वही दिलाये ॥१॥

क़ादिर[4], क़दीर[5] ख़ालिक़ो[6] हाकिम हकीम है ।
मालिक, खालिक[7] हैय्यो[8] तवाना[9] क़दीम[10] है ॥
दोनों जहां से जात उसी की करीम है ॥
यानी उसी का नाम ग़फ़ूरुर्रहीम[11] है ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे वही दिलाये ॥२॥

सत्तार[12] ज़ुलजलाल[13], ख़ुदावंद[14], किर्दगार[15] ।
रज़्ज़ाक[16], कारसाज़, मददगार, दोस्तगार ॥
इंसान, देव जिनो परी, फ़ीलो मोरो मार ।
जारी उसी के हाथ से हैं सब के कारोबार ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे वही दिलाये ॥३॥

+ तवक्कुल—सांसारिक साधनों का भरोसा हटाकर सारे काम ईश्वर की मर्जी पर छोड़ देना ।

१. कहावत, लोकोक्ति २. ईश्वर के अतिरिक्त ३. शक्ति ४. कुदरतवाला, ताकत रखने वाला ५. ताक़तवर, कुदरतवाला ६. पैदा करनेवाला ७. सृष्टिकर्ता ८. खुदा का नाम ९. शक्तिशाली १०. अनादि, बहुत पुराने ज़माने का ११. क्षमावान, बखशने वाला ईश्वर १२. दोष छिपाने वाला, ईश्वर १३. तेज और प्रताप वाला, ईश्वर १४. मालिक, स्वामी, ईश्बर १५. सर्व-शक्तिमान, ईश्वर १६. अन्नदाता, ईश्वर

कहने के तइं अगरचे, वह बे नियाज़[17] है ।
पर सब नियाज़ मंदों[18] को उस पर ही नाज़ है ॥
जितने हैं बन्दे सबका वह बन्दा नवाज है ।
जितनी है ख़ल्क़, सबका वही कारसाज़ है ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे, वही दिलाये ॥४॥

अहले जहां[19] हैं जितने, तू इन सबका छोड़ साथ ।
ने पांव पड़ किसी के, तू ऐ दिल, न जोड़ हाथ ॥
दो हाथ वाले जितने हैं, इन सबसे मोड़ हाथ ।
उससे ही मांग, जिसके हैं, अब सौ करोड़ हाथ ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे, वही दिलाये ॥५॥

उसके सिवा किसी के कने[20] गर जू जायेगा ।
इस आबरू को अपनी, तू नाहक़ गंवायेगा ॥
शर्मिन्दा होके यूं ही, तू ख़ाली फिर आयेगा ।
बिन हुक्म उसके यार, तू एक जौ न पायेगा ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे, वही दिलाये ॥६॥

ज़र[21], सीमो[22] लाल दुर[23] को तू बारे[24] उसी से मांग ।
सन्दूक मालोधन के पिटारे उसी से मांग ॥
पैसा भी मांगता है तो जारे उसी से मांग ।
कौड़ी भी मांगता है, तो प्यारे उसी से मांग ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें हैं क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे वही दिलाये ॥७॥

---

१७. जिसे कुछ लेने की इच्छा न हो १८. आज्ञाकारी, भक्त १९. दुनियां में रहने वाले २०. पास
२१. माल, दौलत २२. चाँदी २३. मोती २४. आखिरकार

नैंमत, मिठाई, शीरा, शकर, नान उसी से मांग ।
कौड़ी की हल्दी मिर्च भी, हर आँ उसी से मांग ॥
कमख़्वाब ताश गाढ़ा, गज़ी हां, उसी से मांग ।
जो तुझको चाहिए, सो मेरी जां ! उसी से मांग ॥
गै़र अज़ खुदा के किस में है कुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे, वही दिलाये ॥८॥

गर वह दिलाया चाहे, तो दुश्मन से ला दिलाये ।
और जो न दे तो दोस्त भी फिर अपना मुंह छिपाये ॥
बिन हुक्म उसके रोटी का टुकड़ा न हाथ आये ।
गर चुल्लू पानी मांगो, हरगिज न कोई पिलाये ॥
गैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे, वही दिलाये ॥९॥

जरदार[२५] जिसको समझा है तू सेठ साहूकार ।
यह सब उसी से मांगे हैं दिन रात बार—बार ॥
हरगिज़ किसी के सामने, मत हाथ को पसार ।
पूरी तेरी उसी के दिये से पड़ेगी यार ॥
गै़र अज़ खुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे, वही दिलाये ॥१०॥

जरदार मालदार के, मत फिर तू आस पास ।
मोहताज़गी से आप, वह बैठा है जी उदास ।
मां, बाप, यार, दोस्त, जिगर सबसे हो निरास ।
हर दम उसी करीम की, रख अपने दिल में आस ।
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे वही दिलाये ॥११॥

उम्दा हैं जितने खल्क़ में, क्या शाह, क्या वज़ीर ।
अल्लाह ही ग़नी[२६] है, और हैं यह सब फ़क़ीर ॥
क्या गंजो[२७] मुल्को मालो मकां, ताज क्या सरीर ।
जो मांगना है मांगो उसी से मियां 'नज़ीर' ॥
ग़ैर अज़ ख़ुदा के किसमें है क़ुदरत जो हाथ उठाये ।
मक़दूर क्या किसी का, वही दे वही दिलाये ॥१२॥

---

[२५] मालदार [२६] मालदार [२७] निधि, ख़ज़ाना, कोष

ग़फ़लत का ख़्वाब

जब यार ने उठाई छड़ी तब ख़बर पड़ी ।
और जो हीं एक बदन पै जड़ी तब ख़बर पड़ी ॥
उल्फ़त की आग दिल में पड़ी तब ख़बर पड़ी ।
जब आँख उस सनम से लड़ी तब ख़बर पड़ी ॥
ग़फ़लत की गर्द दिल से झड़ी तब ख़बर पड़ी ॥१॥

जब तक चढ़ी जवानी थी, और बाल थे सियाह ।
उल्फ़त, किसी से प्यार, मुहब्बत किसी से चाह ॥
आई शराब इसमें, बुढ़ापे की ख़्वाह मख़्वाह ।
पहले के जाम में न हुआ कुछ, नशा तो आह ॥
दिलबर ने दी जब उससे कड़ी तब ख़बर पड़ी ॥२॥

थे जब तलक अधेड़ रहे तो भी बलबले ।
और जब सफ़ेद होके हुए बर्फ़ के डले ॥
यारों से जब तो बोले कि यारो लो हम चले ।
लाये थे हम तो उम्र, पटा यां लिखा वले ॥
जब स्याही पर सफ़ेदी चढ़ी तब ख़बर पड़ी ॥३॥

डाढ़ी की जबकि रात गई और सुबह हुई ।
तो भी यह दिल में ख़ुश थे कि मरना नहीं अभी ॥
दिलबर खड़ा बजावे था, घड़ियाल उम्र की ।
सुन-सुन के सुन तो होते थे पर कुछ खबर न थी ॥
बाजी जब आ गजर की घड़ी तब ख़बर पड़ी ॥४॥

उस हाल पर भी कुछ न हुई दीद[1] और शुनीद[2] ।
दांतों पर इसमें आन के हल-चल पड़ी शदीद[3] ॥
मुंशी क़ज़ा का लिखने लगा, जिन्स की रसीद ।
डाढें लगीं उखड़ने को, दन्दां[4] हुए शहीद[5] ॥
मजलिस में चल बचल यह पड़ी तब ख़बर पड़ी ॥५॥

---

[1] देखना [2] सुनना [3] तेज [4] दांत [5] बलिदान

इस पोपले ही मुंह से लगे करने फिर निवाह ।
कानों के इसमें आन के पर्दे हुए तबाह ॥
गर्दन फिर इसमें हिलने लगी, कम हुई निगाह ।
बिन दांत भी हंसे पे, जब आंखें चलीं तो आह ॥
जब लागी आंसुओं की झड़ी तब ख़बर पड़ी ॥६॥

ढाते थे वां मजूर, तो तन की महल सरा[६] ।
यह घर बना रहे थे दिवालें उठा उठा ॥
इसमें क़ज़ा का राज, जो कोठे पे आ चढ़ा ।
शहतीर सा जो क़द था, सो ख़म होके झुक गया ॥
गिरने लगी कड़ी पे कड़ी, तब ख़बर पड़ी ॥७॥

कुबड़े हुए तो जब भी न समझे यह होशियार ।
यानी कि अब तो बांधिये, घोड़े पे बोझ भार ॥
फिर इसमें आके सर ने लिया पांव पर क़रार ।
चौगान से कमर के बना सर की गेंद मार ॥
खेला जब आके गेंद तड़ी तब ख़बर पड़ी ॥८॥

यह तो लगाये बैठे थे अपनी बड़ी दुकान ।
थे ग़र्क़ लेन देन में और कुछ न था ध्यान ॥
लेखा जब इसमें उम्र का ड्योढ़ा हुआ जब आन ।
कुप्पा जो लुढ चला न हुआ तब भी कुछ ज्ञान ॥
जब लुट गई धड़ी की धड़ी तब ख़बर पड़ी ॥९॥

बिस्तर पे जब तो आन पड़े, लौंट कर निढाल ।
उठने दे कौन ? आह ! जो करवट हुआ मुहाल[७] ॥
होने लगी फ़रिश्तों से नज़रों में कीलोक़ाल[८] ।
जी ग़श में डूबा तो भी न था कूच का ख़याल ॥
जब सांस आ गले में अड़ी, तब ख़बर पड़ी ॥१०॥

---

६. रनवास, जनानखाना ७. मुश्किल ८ वाद-विवाद, बहस-मुबाहसा

छाती पे चढ़ क़ज़ा ने लिया, जब गले को घूंट ।
पानी का फिर तो आह, न उतरा गले से घूंट ।।
उखड़ी बदन से जान भी रग — रग से छूट — छूट ।
पंजा दिखाया शेर ने तो भी यह समझे झूट ।।
जब चाब ली गले की नड़ी तब ख़बर पड़ी ।।११।।

कांधे पै रख पालकी ले आए जब कहार ।
और ग़ुल मचाके बोले कि जल्दी से हो सवार ।।
इसमें नहाके आप भी, जल्दी हुए तैयार ।
कपड़े बदल के इत्र लगा, पहन फूल हार ।।
निकली सवारी धूम पड़ी तब ख़बर पड़ी ।।१२।।

जब पालकी में चढ़ के चला आपका वदन ।
कलमा नक़ीब[६] पढ़ते चले साथ, कर फवन ।।
तो भी यह कहते थे हुआ कौन बेवतन ? ।
जव आये उस गढ़े में "नज़ीर और हज़ार मन ।।
ऊपर से आके ख़ाक़ पड़ी, तब ख़बर पड़ी ।।१३।।

---

६. आगे-आगे आवाज़ लगाने वाले

तंबीहुल ग़ाफ़िलीन

(बे ख़बर लोगों को चेतावनी)

जहां है जब तलक यां सैकड़ों शादीयो ग़म[1] होंगे ।
हज़ारों आशिक़े जां बाज़ और लाखों सनम होंगे ॥
किनारों[2] बोस[3] और ऐशों तरब[4], भी दम बदम होंगे ।
मगर जितने यह अपनी सफ़[5] के हैं यह सब अदम[6] होंगे ॥
न यह चुहलें न यह धूमें, न यह चर्चे बहम[7] होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥१॥

तुम्हारा अब है जितना, हुस्न का आलम ग़नीमत है ।
अगर है बेश[8] तो बेहतर, वगरना कम ग़नीमत है ॥
हमारा देखना और आशिक़ी का दम ग़नीमत है ।
भरोसा कुछ नहीं दम का, अज़ीज़ों दम ग़नीमत है ॥
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥२॥

चमन में चल के बैठो, और सुराही जाम मंगवाओ ।
पियो भर—भर के सागर[9] तुम भी, और हमको भी पिलवाओ ॥
गले लिपटो हमारे, और हमें हंस हंस के बोसा दो ।
अजल[10] काफ़िर खड़ी है सर पे ऐ ! दिलदार सुनते हो ॥
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥३॥

---

१. खुशी और रंज २. गोद लेना ३. चुंबन करना ४. भोग-विलास का आनन्द ५. पंक्ति ६. यमलोक, मृत ७. आपस में ८. अधिक ९. शराब का जग १०. मौत

हमारी चश्म में आए तुम्हारे आरिज़[11] गुलगूं[12] ।
ग़रज़ तुम वक़्त के लैला हो प्यारे और हम मजनूं ।।
घड़ी भर बैठ कर हम पास कर लो ऐशे बू कलमूं[13] ।
किसी के कहने सुनने पर न जाओ देखो कहता हूं ।।
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां एक दिन वह आवेगा, न तुम होंगे न हम होंगे ।।४।।

उछल लो, कूद लो, है जब तलक यह ज़ोर नलियों में ।
ग़नीमत है वही दम, अब जो गुज़रे रंग रलियों में ।।
हमें लो साथ और सैरें करो, फूलों की कलियों में ।
फिरेगी फिर तो आखिर तन की उड़ती ख़ाक गलियों में ।।
न यह चुहलें न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होंगे न हम होंगे ।।५।।

अगर सीना हमारा तुमने चक्की की तरह राहा[14] ।
तो अब जल्दी गले मिलकर, लगादो ऐश का फ़ाहा ।।
मुए[15] पर किसने पूछा दिलबरो और किस ने फिर चाहा ।
हमें तो रोना आता है, यही कह कर, अहा ! हा ! हां ! ।।
न यह चुहलें न यह धूमें, न यह चर्चे वहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होंगे न हम होंगे ।।९।।

जो आगे आशिकों माशूक थे सब मिल गए गिल[16] में ।
अजल[17] की तेग़ से दोनों के तुक्के उड़ गए तिल में ।।
न क़ातिल[18] में रहा जी और न उस क़ातिल के बिस्मिल[19] में ।
तो बस ऐ दिलबरों ! तुम भी यही अब जान लो दिल में ।।
न यह चुहलें न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होंगे न हम होंगे ।।१०।।

---

११. कपोल १२. गुलाब जैसे रंग वाले १३. ऐशोआराम की बातें १४. चक्की चलाना, पीसना १५. मरने पर १६. मिट्टी १७ मौत १८. कत्ल करने वाला १९. तड़पने वाला

अगर तुमने हमारे दिल को दुःख दे देके तरसाया ।
ग़लत फ़हमी तुम्हारी याकि जिसने तुमको सिखलाया ॥
गया जब वक़्त काफ़िर हाथ से फिर हाथ कब आया ।
ग़रज हमने तो अब भी और तुम्हें आगे भी समझाया ॥
न यह चुहलें न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगें ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होंगे न हम होंगे ॥११॥

हमारे और तुम्हारे हक़ में है अब तो यही बेहतर ।
कि देखें चांदनी और सैर दरिया की करें जाकर ॥
कभी लिपटें गले से, और कभी मैं के पियें साग़र ।
यही कहने को रह जावेगा आख़िर ऐ मेरे दिलबर ॥
न यह चुहलें न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आयेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥१२॥

अगर बरसात हो या अब्र[20] हो, या मेंह बरसता हो ।
पहन पोशाक रंगी और हमारे बर[21] में आ बैठो ॥
अदाओ नाज़ो ग़मज़े[22], चोंचले करने हो सो कर लो ।
फ़लक[23] कब चैन देता है, मेरी जां फिर तो आखिर को ॥
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥१३॥

उधर वां हुस्न की मस्ती, इधर यां इश्क की रै है ।
चमन है अब्र[24] है, साक़ी सुराही, जाम और मै है ॥
जो करना हो सो कर लो, इस घड़ी सब ऐश की शै है ।
ग़ज़ब है, क़हर है, जब जी निकल जावेगा फिर ऐ है ॥
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥१४॥

अभी यां उल्फ़तें बढ़ती हैं और वां नाज़ की घातें ।
ग़नीमत हैं तमाचे प्यार के और चाह की लातें ॥
जब आंखें मुंद गईं, सब हो चुकीं चितवन इशारातें ।
कहां फिर दिन मज़े के और कहां यह ऐश की रातें ॥
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियां ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ॥१५॥

---

२०. बादल २१. ऊपर २२. हाव-भाव २३. आसमान, भाग्य २४. बादल

हमें है बेकरारी और तुम्हें हरदम तरहदारी ।
ग़नीमत है हमारी और तुम्हारी गर्म बाज़ारी ।।
"नज़ीर" अब क्या कहे आगे ग़रज़ आख़िर ब लाचारी (१) ।
कहां फिर हम, कहाँ फिर तुम, कहाँ उल्फ़त, कहाँ यारी ।।
न यह चुहलें, न यह धूमें, न यह चर्चे बहम होंगे ।
मियाँ ! एक दिन वह आवेगा, न तुम होगे न हम होंगे ।।१६।।

पाठान्तर — (१) का० जा० बनाचारी

ख़ुदा की दी हुई नेंमतें

यह नेंमतें अयां[1] हैं जो आलम के वास्ते ।
हैंगी यह सब मियां ! इसी आदम के वास्ते ।
कुछ तन के वास्ते हैं कुछ शिकम[2] के वास्ते ।
है वेश-वेश के लिए, कम-कम के वास्ते ।
सब ख़ूबियां बनी हैं, यह आदम के वास्ते ॥
और दम बना है आह ! फ़क़त ग़म के वास्ते ॥१॥

महबूब गुलइज़ार[3], परी ज़ाद[4] सुर्ख़ फ़ाम[5] ।
मुतरिब[6], शराब, साक़ियो मीना[7], सुराही जाम ।
नाज़ो अदाओ चोचले दौलत की धूमधाम ।
हस्ती निशातो[8] इश्रतो[9], ऐशो तरब[10] मुदाम[11] ।
सब ख़ूबियां बनी हैं यह आदम के वास्ते ॥
और दम बना है आह ! फ़क़त ग़म के वास्ते ॥२॥

असबाब इश्रतों के हैं जितने जहाँ तहां ।
गुलदान, पानदान, इत्रदान ज़र फ़िशां[12] ।
हुक्के भंरे चमकते हैं, और नैंचे पेंचवां[13] ।
मुश्को[14], गुलाबो, इत्रों, चमन, बाग़ो बोस्तां[15] ।
सब ख़ूबियां बनी हैं यह आदम के वास्ते ।
और दम बना है आह ! फ़क़त ग़म के वास्ते ॥३॥

---

१. प्रकट २. पेट ३. गुलाब जैसे सुकुमार और कोमल गालों वाला ४. परियों की औलाद, अप्सरा पुत्र ५. जिसके शरीर का रंग लाल हो, रक्तांग ६. गायक ७. शराब का जग ८. खुशी ९. भोग विलास का सुख १०. भोग विलास का आनन्द ११. सदैव १२. सोना बरसाने वाला १३. पेचदार १४. कस्तूरी १५. उद्यान, बाग

जितने जवाहिरात हैं सुर्ख़ो सफ़ेदो, लाल ।
याक़ूत[१६], लाल, यमनियो[१७] नीलम फ़लक मिसाल[१८] ।
फ़ीरोजा[१९], मूंगा, मोतियो पुखराज ख़ुश ख़िसाल[२०] ।
ज़र सीम, फ़ोज, हश्मतो[२१] इमलाक[२२], गंजो माल ।
सव ख़ूबियां बनी हैं यह आदम के वास्ते ।
और दम बना है आह ! फ़क़त ग़म के वास्ते ।।४।।

मेवे हैं जितने खुश्को तर इस बाग़ में लगे ।
बादाम, पिस्ते, दाख, छुहारे व खोंपरे ।
ख़रबूजे, आम, जामनो, लीमूं चकोतरे ।
नारंगियो, अनार वही, केले संगतरे ।
सब ख़ूबियां बनी हैं यह आदम के वास्ते ।
और दम बना है आह ! फ़क़त ग़म के वास्ते ।।५।।

दुनियां में जितने लोग हैं, क्या शाह क्या फकीर ।
सब सुख में हैं, पर एक न एक दुःख में है असीर[२३] ।
क्या इश्रतें बहार की, क्या ऐश दिल पज़ीर[२४] ।
जिन जिन का तुमने नाम लिया अब मियां "नज़ीर" ।
सब ख़ूबियां बनी हैं, यह आदम के वास्ते ।।
और दम बना है आह ! फ़क़त ग़म के वास्ते ।।६।।

---

१६. एक प्रसिद्ध रत्न १७. यमन सम्बन्धी १८. आसमान जैसा १९. हरित मणि २०. खुश करने वाले स्वभाव के २१. सम्मान २२. किसी को किसी वस्तु का स्वामी बनना, स्वामित्व २३. क़ैदी, बन्दी २४. रुचिकर, दिलपसंद

फ़ना(१) (मौत)

दुनियां में कोई शाद[१] कोई दर्दनाक है ।
या ख़ुश है, या अलम[२] के सबब सीना चाक है ।
हर एक दम से जान का, हर दम तपाक है ।
नापाक तन पलीद[३], नजिस[४] या कि पाक है ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥१॥

है आदमी की ज़ात का इस जा बड़ा ज़हूर[५] ।
ले अर्श[६] ताबा[७] फ़र्श[८], चमकता है जिसका नूर ।
गुज़रे हैं उनकी क़ब्र पे जब वह्श[९] और तयूर[१०] ।
रो-रो यही कहे हैं, हर एक क़ब्र के हुज़ूर ।
जो ख़ाक़ से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥२॥

दुनिया से जबकि अम्बिया और औलिया उठे ।
अजसाम पाक उनके इसी ख़ाक में रहे ।
रूहें हैं खूब हाल[१२] में, रूहों के हैं मज़े ।
पर जिस्म से तो अब यही, साबित हुआ मुझे ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥३॥

वह शख़्स थे जो सात विलायत के बादशाह ।
हश्मत[१३] में जिनकी अर्श[१४] से ऊंची थीं बारगाह[१५] ।
मरते ही उनके तन हुए गलियों की ख़ाक-राह ।
अब उनके हाल की भी यही बात है गवाह ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥४॥

---

१. खुश २. रंज ३. गन्दा ४. अपवित्र ५. ज़ाहिर होना ६. आसमान ७. से ८. ज़मीन तक ९. जंगली जानवर १०. चिड़ियाँ ११. शरीर १२. सुख चैन १३. रौब-दौब, सम्मान १४. आसमान १५. शाही मकान, दरबार

किस-किस तरह के होगए महबूब कज कुलाह[१६] ।
तन जिनके मिस्ल फूल थे और मुंह भी रश्के माह[१७] ।
जाती है उनकी क़ब्र पे जिस दम मेरी निगाह ।
रोता हूं तब तो मैं यही कह-कह के दिल में आह ।
जो ख़ाक से बना है वह आख़िर को ख़ाक है ॥५॥

वह गोरे-गोरे तन, कि जिन्हों की थी दिल में जाय ।
होते थे मैले, उनके कोई हाथ गर लगाय ।
सो वैसे तन को ख़ाक, बनाकर हवा उड़ाय ।
रोना मुझे तो आता है, अब क्या कहूं मैं हाय ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥६॥

उम्दों के तन को तांबे के सन्दूक में धरा ।
मुफ़्लिस[१८] का तन पड़ा रहा, माटी उपर पड़ा ।
क़ायम यहां यह और न साबित वह वां रहा ।
दोनों को ख़ाक खा गई, यारो ! कहूं मैं क्या ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥७॥

गर एक को हज़ार, रूपे का मिला कफ़न ।
और एक यूं पड़ा रहा, बेकस, बर हना[१९] तन ।
कीड़े मकोड़े खा गए, दोनों के तन बदन ।
देखा जो हमने आह, तो सच है यही सुखन ।
जो ख़ाक से बना है वह आख़िर को ख़ाक है ॥८॥

जितने जहां में नाज हैं, कंगनी से ता गेहूं ।
और जितने मेवाजात हैं, तर ख़ुश्क गुनांगूं ।
कपड़े जहां तलक हैं, सुपेदो, सियां, नमूं ।
कमख़्वाब, ताश, बादला, किस किस का नाम लूं ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ॥९॥

---

[१६] टेढ़ी टोपी पहनने वाले, माशूक [१७] चांद की प्रभा कौ मंद कर देने वाले [१८] गरीब
[१९] नंगा

जितने दरख्त(१) देखो हो, बूटे से तावा झाड़ ।
बड़, पीपल, आम, नीब, छुआरा, ख़जूर, ताड़ ।
सब ख़ाक होंगे, जबकि फ़ना डालेगी उखाड़ ।
क्या बूटे डेढ़ पात के, क्या झाड़, क्या पहाड़ ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ।।१०।।

जितना यह ख़ाक का है, तिलिस्मात बन रहा ।
फिर ख़ाक इसको होना है, यारो जुदा-जुदा ।
तरकारी, साग, पात, जहर, अमृत और दवा ।
जर[२०], सीम[२१], कौड़ी, लाल, जुमुर्रद[२२] और उन सिवा ।
जो ख़ाक से बना है, वह आख़िर को ख़ाक है ।।११।।

गढ़, कोट, तोप रहंकला[२३], तेगो, कमानोतीर ।
बागो चमन, महलो मकानात दिल पज़ीर ।
होना है सबको आह, इसी ख़ाक में ख़मीर ।
मेरी जुवां पे अब तो, यही बात है "नज़ीर" ।
जो ख़ाक से बना है, वह आखिर को ख़ाक है ।।१२।।

---

[२०] माल, दौलत [२१] चांदी [२२] पन्ना
[२३] तोप लादने की गाड़ी

पाठान्तर--(१) आ० जहां में ।

फना(२) (मौत)

पढ़ इल्म कई इस दुनियां में, गर कामिल[१] जी इद्राक[२] हुए ।
और लाद किताबें ऊंटों पर, हर मानी के दर्राक[३] हुए ।
माकूल[४] पढ़ी, मन्कूल[५] पढ़ी, हर मनतक़[६] में चालाक हुए ।
या कितने इल्म के दरिया हैं, उन दरिया के पैराक हुए ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़ज़िये[७] पाक हुए ।।१।।

रम्माल[८], नुजूमी[९], जफ़री[१०] हो, या ग़ैबों[११] के अहकाम[१२] कहे ।
कुल तारे छान लिये सारे और फेंके तख़्तों पर क़ुरए[१३] ।
मुंह देख अजल[१४] की शक्लों का, सब दाख़िल ख़ारिज भूल गए ।
न तख़्ते क़ुरए काम आए न रमल जफ़र कुछ पेश गए ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच-पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़ज़िये पाक हुए ।।२।।

मशहूर हकीम और बैद[१५] हुए, यां पढ़कर इल्मतिबावत[१६] का ।
दालान किताबों से रोका, और नुस्ख़ों से सन्दूक भरा ।
जब मौत मरज़ ने आन लिया, सब भूले नब्ज़ और क़ाकरा[१७] ।
गो नुस्ख़े लाख मुजर्रब[१८] थे, पर काम न आया एक नुस्ख़ा ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिये पाक हुए ।।३।।

---

१. योग्य २. अक्लमंद ३. कुशाग्र बुद्धि ४. न्याय ५. न्यायशास्त्र ६. इल्म ७. झगड़ा, मुकद्दमा ८. रमल विद्या जानने वाला ९. ज्योतिषी १०. परोक्षवादी ११. परोक्ष भाग्य १२. आज्ञाएं १३. पांसे १४. मौत, मृत्यु १५. वैद्य १६. वैद्यक १७. पेशाब १८. परीक्षा किए हुए

ले हाथ क़लम और बांध सिपर[१९] गर हुए सिपाही मुतसद्दी[२०] ।
दिन रात लड़े गढ़ काग़ज से, शमशीर[२१] खिची और क़लम चली ।
जब कलक[२२] क़जा ने हर्फ़ लिखे, और सेफ़[२३] अजल की आ चमकी (१) ।
यां दफ़्तर तबलक[२४] डूब गए, वां तेग़सिपर भी पट्ट पड़ी ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब किस्से क़जिये पाक हुए ॥४॥

या कोठी कर कर सेठ हुए, या खोद जमीं को खेती की ।
लिख डाली बहियां लाखों की, बो डाली धरती बुरी भली ।
जब हुंडी आई मालिक की, और आकर जम की भीज[२५] लगी ।
यां कोठी कोठे बैठ गए, वां खेती बाड़ी खेत रही ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब किस्से क़जिए पाक हुए ॥५॥

या मस्त शराबी रिंद[२६] हुए, या ज़ाहिद ता मक़दूर हुए ।
या पी कर मै दिल शाद हुए, या चुल्लू में मसरूर हुए ।
जब उम्र के प्याले दोनों के, आ साअत पर मामूर हुए ।
यां जुव्वे तसबीह दूर हुए, वां साग़र(१) शीशे चूर हुए ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ॥
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिये पाक हुए ॥६॥

इस दुनिया की धन दौलत में, गर शाह, सुलेमां जाह चले ।
या ठहरे मीर, वज़ीर आज़म, या राजा बनकर आह चले ।
मुंह देख अजल के लश्कर का, तब लेकर घर की राह चले ।
ने हाथी घोड़े संग गए, ने तख़्त छतर हम राह चले ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ॥
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिए पाक हुए ॥७॥

---

१६. ढाल २० प्रबन्धक, हिसाब-किताब रखने वाला २१. तलवार २२. अशुभ, मनहूस २३. तलवार २४. कागज २५. मालगुजारी २६. शराबी

पाठान्तर—आ० अजल की चमकी
पाठान्तर (१) श० आ० प्याले

सब छोड़ फ़क़ीर आज़ाद हुए, या दुनियांदारी लूट गए ।
या शाल, दोशाले ओढ़ फिरे, या उजले पेबन्द गोट नए ।
संग[२७] और क़ज़ा के सोंटे से, सिर दोनों के जब फूट गए ।
याँ सेली तागे टूट गए, वाँ जामे तन के छूट गए ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तों क्या खाक हुए ॥
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिए पाक हुए ॥८॥

या हाकिम या महकूम[२८] हुए, या आकिल[२९] या माक़ूल[३०] हुए ।
या ख़ादिम याम ख़दूम[३१] हुए, या जाहिल या मजहूल हुए ।
ज़रदार हुए, सरदार हुए, मरदूद[३२] हुए मक़बूल हुए ।
कुछ और न देखा आख़िर को, सब अन्त इसी में धूल हुए ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिए पाक हुए ॥९॥

कर बैर बख़ीली[३३] ज़हर हुए या बख़्शिश में तिर्याक़ हुए ।
या नख़्ल हुए पुरमेवों के, या ख़ाली पातों ढाक हुए ।
या उम्र ग़ुजारी इश्रत से, या सौ ग़म में ग़मनाक हुए ।
फल फूल खिलाये(१) गुलशन के, या गलियों की ख़ाशाक[३४] हुए ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिये पाक हुए ॥१०॥

हक्काक[३५], मुसव्विर[३६], ज़र गर[३७] थे, या हाथ तबर[३८] और तेशे[३९] थे ।
या फेरी से दूकान बसी, या जंगल जंगल बेशे[४०] थे ।
जो इल्मो हुनर हम सीखे थे और जितने अपने पेशे थे ।
बस और 'नज़ीर' अब क्या कहिये, सब नाहक़ के अन्देशे थे ।
सब जीते जी के झगड़े हैं, सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब क़िस्से क़जिये पाक हुए ॥११॥

---

२७. पत्थर २८. शासित २९. बुद्धिमान ३०. समझदार ३१. स्वामी ३२. निकम्मे ३३. कंजूसी
३४. कूड़ा करकट ३५. नगीना जड़ने वाला ३६. चित्रकार ३७. सुनार ३८. तबल, कुल्हाड़ी
३९. कुदाल ४०. जंगल में रहने वाले

पाठान्तर (१) क़ा० खाये

मौत का धड़का

दुनिया के बीच यारो, सब ज़ीस्त[1] का मज़ा है ।
जीतों के वास्ते ही यह ठाठ सब ठठा है ।
जब मर गए तो आख़िर, फिर उम्र ख़ाके पा[2] है ।
ने[3] बाप है न बेटा, ने यार आश्ना है ।
डरती है रूह यारो, और जी भी कांपता है ।।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ।।१।।

जीतों के दिल को हर दम क्या ऐश पै व पै बपै[4] है ।
गुलज़ार[5], नाच, सेरें, साक़ी[6], सुराही मै[7] है ।
जब मर गए तो हरग़िज मै है न कोई शै[8] है ।
इस मर्ग[9] के सितम को, क्या-क्या कहूं मैं है-है ।
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है ।।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ।।२।।

है दम की बात, जो थे मालिक यह अपने घर के ।
जब मर गए तो हरगिज़ घर के रहे न दर[10] के ।
यूं मिट गए कि गोया थे नक़्श[11] रहगुज़र[12] के ।
पूछा न फिर किसी ने ये थे मियां किधर के ।
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है ।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ।।३।।

मरने के बाद कोई उल्फ़त न फिर जतावे ।
ने बेटा पास आवे, ने भाई मुंह लगावे ।
जो देखे उनकी सूरत, दहशत से भाग जावे ।
इस मर्ग[13] की जफ़ाएें[14], क्या क्या कोई सुनावे ।
डरती है रूह यारो, और जी भी कांपता है ।।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ।।४।।

---

[1] जीवन [2] पैरों की धूल [3] न [4] लगातार, निरन्तर [5] बाग़ [6] शराब पिलाने वाली [7] शराब [8] वस्तु [9] मृत्यु [10] दरवाज़े [11] निशान [12] आम रास्ता, सड़क [13] मौत [14] अत्याचार

पीते थे दूध, शर्बत और चाबते थे मेवा ।
मरते ही फिर कुछ उनका, सिक्का रहा न थेवा[१५] ।
बच्चे यतीम हो गए, बीवी कहाई 'बेवा' ।
इस मर्ग ने उखाड़ा किस किस बदन का लेवा ।
डरती है रूह यारो, और जी भी कांपता है ।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ॥५॥

जब रूह तन से निकली, आना नहीं यहां फिर ।
काहे को देखते हैं, यह बाग़ो बोस्तां फिर ।
हाथी पे चढ़ के यां फिर घोड़े पे चढ़के वां फिर ।
जब मर गए तो लोगो यह इश्रतें कहां फिर ।
डरती है रूह यारो, और जी भी कांपता है ।
मरने का नाम मत लो मरना बुरी बला है ॥६॥

घर हो बहिश्त जिनका(१) और भर रही हो दौलत ।
असबाब इश्रतों के, महबूब खूबसूरत ।
फिर मरते वक़्त उनको क्यूंकर न होवे हसरत ।
क्या सख़्त बेबसी है, क्या सख़्त है मुसीबत ।
डरती है रूह यारो, और जी भी कांपता है ।
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ॥७॥

खाने को उनके नेमत सौ सौ तरह की आती ।
और वह न पावें टुकड़ा देखो टुक उनकी छाती ।
कौड़ी की झोपड़ी भी, छोड़ी नहीं है जाती ।
लेकिन "नज़ीर" सब कुछ यह मौत है छुड़ाती ।
डरती है रूह यारो और जी भी कांपता है ॥
मरने का नाम मत लो, मरना बुरी बला है ॥८॥

---

[१५] अंगूठी के नगीने का पत्थर जिस पर मुंहर खुदवा लेते हैं   [१६] अनाथ   [१७] बाग़   [१८] आनन्द

पाठान्तर—(१) जा० जिसका

मौत की फ़िलासफ़ी

जो मरना-मरना कहते हैं वह मरना क्या वतलाये कोई ।
वां ज़ाहिर वाहें खोल मिले सब अपनी अपनी छोड़ दुई ।
सीं डाली आंख दो रंगी की जब यक रंगी ने मार सुई ।
नामर्दों का ग़ुलशोर रहा ना औरत की कुछ आह उई ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।

नक़्क़ारा धूं धूं बजता था और क्या—क्या थी आवाज़ बड़ी ।
जब फूट गया, फिर देखो तो आवाज़ सब उसकी कहां गई ।
नर मादा दोनों एक हुए जब आन भरम की खाल फटी ।
न नर का कुछ निर मोल रहा न मादा की पहचान रही ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।।२।।

हर चार तरफ़ उजियाली थी उस तेल सकोरी पानी की ।
वह जोत न थी उस दिये की थी और किसी की उजियारी ।
सब घर के बीच उजाला था क्या नेक बदी थी नूर भरी ।
जब दीवा बुझ कर सर्द हुआ फिर हाय गई कुल अंधियारी ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किस से पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।।३।।

था जब तक ख़ासा दूध बना थी क्या—क्या उसमें चीज़ धरी ।
बुर्राक़, मलाई, माखन था और खोया गाढ़ा और तरी ।
जब फटकर टुकड़े दूध हुआ फिर कहाँ गई वह चिकनाई ।
न दूध रहा, न दही रहा न रौग़न मसका छाछ मही ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिए कोन मुई ।।४।।

यह बात न समझे, और सुनो जो लकड़ी में थी आग लगी ।
जब बुझ कर ठंडी राख हुई फिर उसकी आँच कहाँ पहुंची ।
यां एक तरफ़ को दूल्हा था और एक तरफ़ को दुल्हन थी ।
जब दोनों मिलकर एक हुए फिर बात रही क्या पर्दे की ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।।५।।

यह बात न समझे, और सुनो जो मटकी डाली पानी में ।
और रस्ते में जब फूट गई हाथों की नोचा तानी में ।
न राजा का सन्देह रहा, न भेद रहा कुछ रानी में ।
जा घेरे मिल गए घेरों में, और पानी मिल गया पानी में ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिए कौन मुई ।।६।।

यह बात न समझे, और सुनो जो कपड़ा पानी भीगा था ।
जब सूखा धूप के अन्दर वह फिर पानी उसका कहां गया ।
सब मुर्दा - मुर्दा बोल उठे वां और किसी ने रंग बदला ।
न भरम रहा नर मादा का न धोका हाथी, च्यूंटी का ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।।७।।

यां जिनको जीना मरना है ऐ यार ! उन्हीं को डरना है ।
जब दोनों दुख सुख दूर हुए फिर जीना है न मरना है ।
इस भूल भुलैया चक्कर में टुक रस्ता पैदा करना है ।
सब छोड़ भरम की बातों को इस बात उपर दिल धरना है ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।।८।।

हक़ नाहक़ उनसे कौन लड़े जो मरना समझें जीने को ।
जीने का रहना नाम रखें, और जीना खाने पीने को ।
जो मर गए आगे मरने से, वह जाने भेद क़रीने को ।
हो ख़ासी दुलहन जा लिपटी उस लाल बने रंग भीने को ।
माटी की माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ।।९।।

क्या सूरत लोग लुगाई की क्या नक़्शा नारी नरपत का ।
क्या रंग बने क्या रूप हुए क्या स्वांग बनाया गत - गत का ।
जो समझे उनको आसाँ है नहीं फ़र्क है राई पर्वत का ।
बस और 'नज़ीर' अब क्या कहिये है ज़ोर तमाशा क़ुदरत का ।
माटी का माटी, आग अगन, जल नीर, पवन की पवन हुई ।
अब किससे पूछे कौन मुआ ? और किससे कहिये कौन मुई ॥१०॥

मौत

(हर एक को मौत का मज़ा चखना है)

दुनियां में अपना जी कोई बहला के मर गया ।
दिल तंगियों से और, कोई उकता के मर गया ।
आक़िल[1] था वह तो, आपको समझा के मर गया ।
बेअक़्ल छाती पीट के, घबरा के मर गया ।
दुःख पाके मर गया, कोई सुख पाके मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१॥

दिन रात धुन मची है यहां और पड़ी हैं जंग ।
चलती है नित अजल[2] की सिनां[3] गोली और तुफ़ंग[4] ।
जिसका कदम बढ़ा वह मुआ[5] वहीं बेदरंग[6] ।
जो जी छुपा के भागा, तो उसका हुआ यह रंग ।
वह भागने में, तेगो तबर[7] खाके मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥२॥

पैदा हुए हैं खल्क़ में अब जितने जुज़ओ कुल ।
या चुप गुज़ारी उम्र व या घूम कर चुहल ।
जब आन कर फ़ना[9] ने, खिलाया अजल का गुल[10] ।
काम आई कुछ किसी को, ख़मोशी न शोरो गुल ।
चुपके कोई मुआ कोई चिल्ला के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥३॥

---

१. बुद्धिमान २. मौत ३. भाला ४. बन्दूक या तुपक
५. मरा ६. शीघ्र ७. कुल्हाड़ा, फरसा ८. अधूरे, पूरे, अर्थात सभी ९. मौत १०. मृत्यु का फूल

गर लाख इश्रतों[११] से रही दिन में धूम धाम ।
या सौ मुसीबतों से, हुआ ग़म का अज़दहाम[१२] ।
आखिर को जब अजल ने, किया आन कर सलाम ।
ग़म में किसी हसीं[१३] के, कोई हो गया तमाम ।
कोई हूर[१४], परियां[१५], छाती से लिपटा के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।४।।

पढ़कर नमाज़ कोई, रहा पाक बा वज़ू[१६] ।
कोई शराब पीके, फिरा मस्त कू बकू[१७] ।
नापाकी,[१८] पाकी[१९], मौत के ठहरी न रूबरू[२०] ।
कोई इबादतों[२१] से मुआ होके सुर्ख़रू[२२] ।
नापाक रू स्याह[२३] भी, पछता के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।५।।

कर दिल के आइने के तईं, साफ़ एक बार ।
कश्फ़े क़ुलूब[२४] दिल पे, किया अपने आश्कार[२५] ।
जब पैक[२६] ने अजल के, किया आन कर गुज़ार ।
काम आई रौशनी, न करामात की बहार ।
कामिल[२७] फ़क़ीर, ख़ल्क़ में कहला के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।६।।

बिलफर्ज़[२८] गर किसी को हुई याद कीमिया[२९] ।
या मुफ़्लिसी[३०] में एक ने ख़ूने जिगर पिया ।
कोई ज़्यादा उम्र से, एक दम नहीं जिया ।
सूखी किसी ने रोटी चबा, गम में जी दिया ।
क़लिया, पुलाव ज़र्दा कोई खाके मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।७।।

---

११. खुशी, आनन्द १२. आधिक्य १३. सुन्दरी १४. स्वर्ग की सुन्दर स्त्रियां १५. सुन्दरियां १६. वज़ू किए हुए, पवित्र १७. गली दर गली १८. अपवित्रता १९. पवित्रता २०. सामने २१. प्रार्थना २२. सम्मानित २३. काले रंग का, असम्मानित २४. दिल की बात २५. प्रकट २६. हरकारा, दूत २७. चमत्कारी साधु २८. मान लो कि, २९. सोना-चांदी बनाने की कला ३०. गरीबी

पहना लिवास खूब अगर इत्र का भरा ।
या चीथड़ों की गूदड़ी, कोई औढ़ कर फिरा(१) ।
आख़िर को जब अजल की, चली आन कर हवा ।
पूले के झोंपड़े को, कोई छोड़कर चला ।
बाग़ो, मकां, महल, कोई बनवा के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।८।।

गेसू[31] बढ़ाके कोई, मशायख़[32] हुआ यहां ।
या बेनवा[33] हो कोई, हुआ खुड़मुडा यहां ।
जब मुर्शिदे अजल[34] का, क़दम आया दरमियां ।
कोई तो लम्बी दाढ़ी, लिए हो गया रवां ।
मूछें, भवें, तलक कोई मुंडवा के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।९।।

गर एक वेविक़ार[35] हुआ एक(२) क़द्र दार ।
सर पर लगा जब आन के, तेग़े अजल का वार ।
वे क़द्री काम आई, किसी का न कुछ विकार[36] ।
था वेहया, सो वह तो मुआ खोके नंगो आर[37] ।
और जिसको शर्म थी, सो वह शर्मा के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।१०।।

कोई मोती(१) चाबता था, कोई मोंठ और मटर ।
जिस दम क़ज़ा ने हाथ में ली तेग़ और सिपर[38] ।
काम आई कुछ फ़क़ीरी, न कुछ तख़्त और छतर ।
यह ख़ाक पर मुआ, वह मुआ तख़्त के ऊपर ।
थी जिसकी जैसी क़द्र वह बतला के मर गया ।।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ।।११।।

---

३१. केश, बाल ३२. सूफी, पीर ३३. दरिद्र ३४. मौत का फरिश्ता ३५. बेइज्जत
३६. इज्जत ३७. शर्म, गैरत ३८. ढाल

पाठान्तर—(१) जा० मरा (२) आ० और एक
पाठान्तर—(१) जा० ठुड्डी

आशिक़ हो गर किसी ने, किसी गुल की चाह की ।
आशिक़ ने अपने, इश्क़ बढ़ाने में जान दी ।
और जब अजल की दोनों से आकर लगन लगी ।
माशूकी काम आई, किसी की न आशिक़ी ।
दिलबर भी अपने हुस्न को, चमका के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१२॥

कितनों में बढ़के ऐसी बढ़ी उल्फ़तों की चाह ।
जो जिस्मो जान एक हुए उनके वाह्-वाह ।
आशिक़ मुआ तो मर गया, माशूक ख़्वाम-ख़्वाह ।
माशूक मर गया, तो वह आशिक़ भी कर के आह ।
उस गुलबदन की क़ब्र उपर जाके मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१३॥

क्या काली पीली शक्ल के, क्या गोरे गुलइज़ार[३९] ।
आशिक़ कोई है और कोई माशूक तरहदार ।
आक़िल[४०], हकीमो[४१], आमिलो[४२], फ़ाज़िल[४३] रिसालदार[४४] ।
पण्डित नुजूमी[४५], वैद[४६], चः नादां[४७], चः होशियार ।
दो दिन की शान, हर कोई दिखला के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१४॥

क्या ओछी ज़ात पात के, अशराफ़[४८] क्या नजीब[४९] ।
क़िस्मत[५०] से फूटी कौड़ी, किसी को न हुई नसीब[५१] ।
जिस दम क़ज़ा के हाथ ने, बंद आंख की हबीब[५२] ।
क्या होशियारो आक़िलो दानाओं[५३] क्या तबीब[५४] ।
कोई ख़ज़ाने ख़ाक में गड़वा के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१५॥

---

३९. गुलाब जैसे सुकुमार और कोमल गालों वाले ४०. बुद्धिमान ४१. बुद्धिमान ४२. अमल करने वाला
४३. पढ़ा लिखा ४४. फौज के दस्ते का सरदार ४५. सितारों के द्वारा भविष्य बताने वाला ज्योतिषी
४६. वैद्य ४७. मूर्ख ४८. शरीफ़ लोग ४९. कुलीन ५०. भाग्य ५१. प्राप्त ५२. दोस्त
५३. बुद्धिमान ५४. हकीम

मरने से पहले मर गए, जो आशिक़ाने ज़ार[५५] ।
वह ज़िन्दए अबद[५६] हुए, ताहश्र[५७] बरक़रार[५८] ।
क्या कातिबान[५९] अहले क़लम[६०] ख़ुश नवीसकार[६१] ।
जितनी किताबें देखते हो, लाख या हज़ार ।
कोई लिख के मर गया, कोई लिखवा के मर गया ।
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१६॥

पीरो[६२] मुरीदो[६३] शाहोगदा[६४], मीर[६५] और वज़ीर[६६] ।
सब आन कर अजल के हुए दाम[६७] में असीर[६८] ।
मुफ़्लिस[६९] ग़रीब साहिबे ताजो इल्म सरीर[७०] ।
कौन इस जहाँ में ज़िन्दा रहा ऐ, मियाँ 'नज़ीर' ।
कोई हज़ारों ऐश, की ठहरा के मर गया ॥
जीता रहा न कोई, हर एक आके मर गया ॥१७॥

---

[५५] दिल से चाहने वाले [५६] हमेशा जीवित रहने वाले [५७] प्रलय तक, कयामत तक [५८] कायम
[५९] लिखने वाले [६०] साहित्यकार [६१] सुन्दर लिखने वाले ।
[६२] गुरू [६३] शिष्य [६४] बादशाह व फकीर [६५] मुख्य [६६] मंत्री [६७] पिंजड़ा [६८] कैदी
[६९] गरीब [७०] लिखने का इल्म ।

दुनियाँ में

की वस्ल[1] में दिलबर ने इनायात, तो फिर क्या ?
या ज़ुल्म से दी हिज्र[2] की आफ़ात[3], तो फ़िर क्या ?
गुस्सा रहा, या प्यार से की बात, तो फिर क्या ?
गर ऐश से इश्रत में कटी रात तो फिर क्या ?
और ग़म में बसर हो गई औक़ात, तो फिर क्या ?

मजनूं की तरह हमने अगर दिल को लगाया ।
बेचैन किया रूह को और तन को सुखाया ।
दिलबर ने भी लैला की तरह दिल को लुभाया ।
जब आई अजल फिर कोई ढूंढा तो न पाया ।
क़िस्सों में रहे हुर्फ़ों[4] हिकायात[5] तो फिर क्या ?

जिस शेख परी ज़ाद की आ दिल से हुई चाह ।
हर रोज़(१) मिले उससे, रहे ऐश के हमराह ।
हंसना भी हुआ, बातें भी अच्छी हुई दिलख़्वाह[6] ।
हल बोसो किनार और जो था, उसके सिवा आह !
गर वह भी मयस्सर[7] हुआ, है हात तो फिर क्या ? ॥३॥

थे वह जो दुरो लाल[8] से बेहतर लबो दन्दा[9] ।
आख़िर को जो देखा तो मिले ख़ाक में यक्सां[10] ।
जिन आंखों को मिलना हो, भला ख़ाक के दरमियां ।
दो दिन अगर उन आंखों ने दुनियां में मेरी जां ।
की नाज़ अदाओं की इशारात, तो फिर क्या ? ॥४॥,

---

१. मिलन २. जुदाई ३. आफतें, परेशानियाँ ४. बातें ५. कहानियाँ ।
६. दिल को पसन्द आने वाली ७. हासिल ८. पद्मराग ९. दांत १०. बराबर

पाठान्तर—(१) आ० तौर

दुनियाँ में अगर हमको मिला तख़्ते सुलेमा ।
तावे रहे सब जिन्नो परी आदमो मुर्गां ।
जब तन से हवा हो गई वह पोदने सी जां ।
फिर उड़ गई एक आन में सब हश्मतो[११] सब शां ।
ले शर्क़[१२] से ता ग़र्ब[१३] लगा हात, तो फिर क्या ? ।।५।।

दोलत में अगर हम हुए दाराओ सिकन्दर ।
और सात विलायत पे किया हुक्म सरासर ।
जब आई अजल फिर न रहा तख्त ओ अफ़सर ।
अस्पो[१४] शुतरो[१५] फ़ीलो ख़रो[१६] नौबतो लश्कर ।
गर कब्र तलक अपने चला सात, तो फिर क्या ? ।।६।।

कामिल हो अगर रोशनी की दिल की अंधेरी ।
और बागे तसर्रुफ़[१७] से करिश्मात की फेरी ।
जब आई अजल फिर न चली मेरी न तेरी ।
आख़िर को जो देखा तो हुए ख़ाक की ढेरी ।
दो दिन की हुई कश्फ़ो करामात, तो फिर क्या ? ।।७।।

तायर[१८] की तरह से उड़े हम गर्चे हवा पर ।
या अर्ज़[१९] को तै कर गए ग़ोता सा लगाकर ।
दरिया पे चले ऐसे कि पाँ भी न हुए तर ।
जब आई अजल, आह ! तो एक दम में गए मर ।
गर यह भी हुई हम में करामात, तो फिर क्या ? ।।८।।

हुजरे[२०] में अगर बैठ के हम हो गए दरवेश[२१] ।
और चिल्ला कशी[२२] करके हमेशा रहे दिलरेश[२३] ।
आबिद[२४] हुए, ज़ाहिद[२५] हुए, सरताज हक़ अन्देश[२६] ।
जब आई अजल, एक रियाज़त[२७] न गई पेश ।
मर-मर के जो की कोशिशे, ताआत[२८] तो फिर क्या ? ।।९।।

---

११. शान शौकत १२. पूर्व १३. पश्चिम (मग़रिब) १४. घोड़ा १५. ऊंट १६. हाथी और गधा
१७. विचारों का बाग १८. परिन्दा १९. चौड़ाई २०. मस्जिद के पास का छोटा कमरा २१. फ़क़ीर
२२. चालीस दिन तक एकान्त में बैठकर साधना करके २३. परेशान २४. इबादत करने वाला २५.
संयमी २६. सच्ची वात सोचने वाला २७. तपस्या २८. आराधना

मै पीके अगर हो गए, हम मस्तो ख़राबी ।
होंठों से जुदा की, न कभी मै की गुलाबी ।
की लाख तरह ऐश की मस्तीयो ख़राबी ।
जब आई अजल, फिर वहीं उठ भागे शिताबी ।
रिन्दों[२९] में हुए अहले ख़राबात, तो फिर क्या ? ॥१०॥

आमिल हुए हम लाख अगर नक़्शे अजल से ।
लोगों को बचाने लगे भूतों के ख़लल से ।
जब आई अजल फिर न चला ज़ोर अजल से ।
दो दिन को जो तावीज़ों फ़तीलाओं[३०] अमल से ।
तसख़ीर[३१] किया आलमे जिन्नात, तो फिर क्या ? ॥११॥

पढ़ इल्मे रियाज़ी जो मुनज्जिम हुए धूमी ।
पेशानी महो जहराओ बिरजीस की चूमी ।
आख़िर को अजल सर के ऊपर आन के घूमी ।
इस उम्र दो रोज़ा में अगर होके नजूमी ।
सब छान लिए अर्ज़ो समावात[३२], तो फिर क्या ? ॥१२॥

गर हमने अतिब्बा[३३] हो तबाबत[३४] की रक़म ली ।
चीज़ और सिवा तिब के सर अंजाम के कम ली ।
जब तन(१) के उपर मर्ग ने आ डाल दी कमली ।
एक दम में हवा हो गए(२) सब नज़रीयो अमली ।
थे याद जो असबाबो अलामात तो फिर क्या ? ॥१३॥

गर अपना हुआ मनसबो[३५] जागीर का नक़्शा ।
और एक को मर मर के मिला भीक का टुकड़ा ।
क्या फ़र्क हुआ दोनों में जब मरना ही ठहरा ।
उसने कोई दिन बैठ के आराम से खाया ।
वह मांगता दर-दर फिरा ख़ैरात तो फिर क्या ? ॥१४॥

---

[२९] मस्त, उन्मत्त [३०] भूत और जिन उतारने वालों की बत्ती, वह चिराग में जलाकर प्रेतबाधा ग्रस्त को दिखाते हैं अनपढ़ लोग फ़लीतः भी बोलते हैं [३१] जीतना, सिद्ध [३२] सम्पूर्ण संसार, धरती आकाश । [३३] हकीम [३४] तिब, हिकमत [३५] पद

पाठान्तर—(१) आ० सर (२) आ० हो गई

दुनियां में लगा मुफ़्लिसों दर्वेश से ता शाह ।
सब ज़र[36] के तबलगार हैं ले माही[37] से ता माह[38] ।
मरता है कोई माल पे ढूंढ़े है कोई जाह[39] ।
दौलत ही का मिलना है बड़ी चीज़ 'नज़ीर' आह ।
बिलफ़र्ज़[40] हुई इससे मुलाक़ात तो फिर क्या ? ॥१५॥

---

३६. सोना, दौलत ३७. मछली ३८. चांद ३९. मान-सम्मान ४०. मान लें ।

दुनियाँ के मरातिब क़ाबिले ऐतबार नहीं

गर शाह सर पे रखकर अफ़सर हुआ, तो फिर क्या ?
और बह्‌रे सल्तनत का गौहर[१] हुआ, तो फिर क्या ?
माहीये[२], इल्म, मरातिब[३], पुर ज़र[४] हुआ, तो फिर क्या ?
नौबत, निशां[५], नक़ारा, दर[६] पर हुआ तो फिर क्या ?
सब मुल्क सब जहाँ का, सरवर[७] हुआ तो फिर क्या ?

क्या रख के फ़ौज लश्कर, की सल्तनत पनाही ।
फेरी दुहाई अपनी, ले माह[८] ताबा माही[९] ।
जब आन कर फ़ना[१०] की, सर पर पड़ी तबाही ।
फिर सर रहा न लश्कर, ने ताजे बादशाही ।
दारा, अज़म, सिकन्दर, अकबर हुआ तो फिर क्या ?

या ज़ात में कहाये, नामी असील, ज़ाती ।
जमशेद फ़र के पोते, नौशेरवाँ के नाती ।
थे आप मिस्ल[११] दूल्हा, और फ़ौज थी बराती ।
जब चल बसे तो कोई, फिर संग था न साथी ।
मुल्को, मकां, ख़ज़ाना, लश्कर हुआ तो फिर क्या ?

या राज बंसी होकर, दुनिया में राज पाया ।
चित्तौर गढ़, सितारा, कालिंजर आ बनाया ।
जब तोप ने अजल की आ मोर्चा लगाया ।
सब उड़ गए हवा पर, कोई न काम आया ।
गढ़, कोट, तोप, गोला, लश्कर हुआ, तो फिर क्या ?

---

१. मोती २. मछली ३. ओह्‌दे ४. मालदार ५. निशान, झंडा ६. दरवाजा ७. मालिक ८. चांद ९. मछली आकाश से पाताल तक १०. मौत ११. तरह, मानिन्द ।

कितने दिनों यह ग़ुल था, नव्वाब हैं यह खाँ हैं ।
यह इब्न पंच हज़ारी, यह आ़ली खानदां हैं ।
जागीरो मालो मनसब, गो आज इनके हाँ हैं ।
देखा तो एक घड़ी में, न नामो न निशां हैं ।
दो दिन का शोर चर्चा, घर-घर हुआ, तो फिर क्या ?

कहता था कोई देखो, यह हैं अमीर ख़ां जी ।
और वह हैं खानख़ाना, और यह हैं मीर ख़ां जी ।
पंजा उठा क़ज़ा[12] का, जब आके शेरख़ां जी ।
फिर किसके मीर खां जी, किसके वज़ीर खां जी ।
उम्दा, ग़नी, तवगंर[13], बाज़र[14] हुआ, तो फिर क्या ?

कहता था कोई घोड़ा, है नामदार ख़ां का ।
यह पालकी यह हाथी, है जुल्फ़िक़ार ख़ां का ।
आया क़दम अजल के, जब तीस मार ख़ां का ।
ख़र भी कहीं न देखा, फिर शहसवार ख़ां का ।
झप्पान[15], मेग, डम्बर दर पर हुआ तो फिर क्या ?

कहता था कोई ड्योढ़ी, है ख़ान मेहेरबां[16] की ।
यह वाग यह हवेली, है महल दार ख़ां की ।
जब राज ने क़ज़ा के करनी वसूली टांकी ।
एक ईट भी न पाई, हरगिज़ किसी मकां की ।
रंगों महल, सुनहरा घर, दर हुआ, तो फिर क्या ?

कितनों ने बादशाही, क्या क्या ख़िताब पाया ।
मोहरें बड़ी खुदाई, सिक्का बड़ा बनाया ।
जब आन कर फ़ना ने, नामो निशां मिटाया ।
वह नाम और वह सिक्का ढूंढा कहीं न पाया ।
दो दिन का मुहर, छापा, दर पर हुआ, तो फिर क्या ?

---

१२. मौत १३. मालदार १४. दौलतमंद १५. पहाड़ों पर प्रयोग होने वाली छोटी पालकी ।
१६. मेहरबानी करने वाला

जागीर में किसी ने, ज़र खेज़[१७] मुल्क पाया ।
कर बन्दोबस्त अपना, नज़्मो नसक़[१८] बिठाया ।
लेकर सनद, अजल की जब फ़ौजदार आया ।
एक दिन में हुक्मों हासिल, सब हो गया पराया ।
हांसी हिसार, ठट्टा, भक्कर हुआ तो फिर क्या ?

कहता कोई यह लश्कर, है तुर्रे बाज़ ख़ां का ।
यह ख़ेमा शामियाना, है शहनवाज़ ख़ां का ।
आया कटक अजल के, जब यक्का ताज़ ख़ां का ।
सर भी कहीं न पाया, फिर सरफ़राज़ ख़ां का ।
सरदार, मीर, बख़्शी बढ़कर हुआ तो फिर क्या ?

हाथी पे चढ़के निकले या ख़ासे घोड़े ऊपर ।
या नालकी संभाली, या पालकी की झालर ।
या ले सुराही, हुक्का दौड़े जलीव अन्दर ।
जब आ अजल पुकारी, साहब रहा न नौकर ।
आक़ा हुआ तो फिर क्या ? नौकर हुआ तो फिर क्या ?

या लेके एक क़लम दां और रख क़लम को सर पर ।
जोड़े हिसाब लाखों, चेहरे लिखे सरासर ।
जब उम्र की कचहरी, झांकी क़ज़ा ने आकर ।
फिर आप न क़लम दां, कागज़ रहा न दफ़्तर ।
मुंशी, वकील, दीवां मर मर हुआ, तो फिर क्या ?

या ले क़ज़ाकी ख़िदमत, हो बैठे आप क़ाज़ी ।
मेहज़र[१९] क़बाले[२०] लिखे, क़ज़िये चुकाये शरई ।
ऐलान ले कज़ा का, जब आ फ़ना पुकारी ।
फिर महकमा न झंगड़ा, क़ाजी रहा न मुफ़्ती ।
कोड़ा लबेदा, दुर्रा[२१] दर पर हुआ, तो फिर क्या ?

---

[१७] उपजाऊ [१८] इंतजाम [१९] संयुक्त प्रमाणित दस्तावेज [२०] बिक्री का कागज़
[२१] चमड़े का कोड़ा

कुतवाल बनके बैठा, या सदर हो मुक़र्रर ।
फ़ासिक़[२२] डरें हज़ारों, और चोर कांपे थर थर ।
आया क़ज़ा का मरधा, जिस दम छुरी उठाकर ।
कुतवाली और सदारत, सब उड़ गई हवा पर ।
दो दिन का ख़ोफ़ो ख़तरा, और डर हुआ, तो फिर क्या ?

कहते थे कितने हम तो हैं, ज़ात में कलाँ[२३] जी ।
हम शेख़, हम मुग़ल हैं, हम हैं पठान हां जी ।
जिस दम क़ज़ा पुकारी, 'अब उठ चलो मियां जी' ।
फिर शेख़ जी न सैय्यद, मिर्ज़ा रहे न ख़ां जी ।
ज़ातो हस्ब नस्ब[२४] का, जौहर हुआ तो फिर क्या ?

या लेके ज़र जहां में, करने लगे तिजारत ।
या सेठ बनके बैठे, ख़ासी बना इमारत ।
खोली क़ज़ा ने बहियाँ, जब करके इक इशारत ।
सब कोठी और दुकानें, कर डालीं दम में ग़ारत ।
मालो मकां, जवाहर, और ज़र हुआ तो फिर क्या ?

या हो सिपाही बांका, तिरछा बड़ा कहाया ।
बल दार बांध चीरा, तुर्रे[२५] को जगमगाया ।
खेतों में जाके कूदा, लाखों तई भगाया ।
जब मुंह अजल का देखा, फिर कुछ भी बन न आया ।
यक्ता शुजा, बहादुर, सफ़दर[२६] हुआ तो फिर क्या ?

घोड़ा उठा के डूबा फ़ौजों में हो दिलावर ।
मारे तमंचे, भाले, खाई कटार, जमघर ।
मारा क़जा ने भाला, जिस दम फ़ना का आकर ।
फिर मरदमी शुजाअत[२७], सब हो गई बरावर ।
खोद व कुलाह[२८], चलता, बक्तर[२९] हुआ, तो फिर क्या ?

---

२२. पापी, गुनहगार २३. श्रेष्ठ २४. खानदान २५. टोपी का फूल २६. बहादुर २७. बहादुरी
२८. शिरस्त्राण और ताज २९. कवच ।

या हो हकीम हाज़िक़,[३०] करने लगे तबाबत[३१] ।
मुर्दों तई जिलाया, ईसा की कर करामत ।
खोये मरज़ हज़ारों, धोई हर एक ज़हमत[३२] ।
जब आई सर पर अपने, फिर कुछ चली न हिकमत[३३] ।
लुक़मान या फ़लातूं आकर हुआ, तो फिर क्या ?

या हो नुजूमी कामिल, तारों को छान डाला ।
सूरज गहन विचारे, चन्दर गहन निकाला ।
बुर्जों सितारे बांधे, अहकाम[३४] को संभाला ।
जब वक्त अपना आया, उस वक्त को न टाला ।
जोतिश, नुजूम, पण्डित, पढ़कर हुआ तो फिर क्या ?

या पढ़के दो किताबें और करके इल्म हासिल ।
या भूत, जिन उतारे, मशहूर होके आमिल ।
जब देव का अजल के, साया हुआ मुकाबिल ।
मुल्ला रहा न स्याना आलिम रहा न फ़ाजिल ।
तावीज़, फ़ाल, जादू, मंतर हुआ, तो फिर क्या ?

माथे पे खींच टीका, या हाथ लेके माला ।
पोथी बग़ल में दावी, जुन्नार[३५] को संभाला ।
पूजा कथा बखानी, गीता सबद(१) निकाला ।
कुछ बन सका न, आया जब जान लेने वाला ।
वेदों पुरान पढ़कर मिस्सर[३६] हुआ तो फिर क्या ?

या पीके मै किसी ने, की ऐशो कामयाबी ।
लोटा नशे में हरजा कर दिल से बे हिजाबी[३७] ।
जिस दम क़ज़ा ने अपनी, झमकाई एक गुलाबी ।
फिर मै रही न मीना, न मस्त न शराबी ।
एक दम लबों पे भभका, साग़र हुआ तो फिर क्या ?

---

[३०] हकीम जिसके हाथ में शफा हो [३१] इलाज [३२] तकलीफ [३३] अक्लमंदी [३४] हुक्म [३५] जनेऊ [३६] मिश्र, पंडित [३७] वेपर्दगी

पाठान्तर—(१) आ० क्या क्या सबद

हुस्नो जमाल पाकर, या ख़ूबरू[३८] कहाया ।
या इश्क में किसी ने, जी जान को घटाया ।
आकर पड़ा सरों पर, जिस दम अजल का साया ।
दोनों में फिर किसी को ढूंढा कहीं न पाया ।
आशिक़ हुआ तो फिर क्या ? दिलबर हुआ तो फिर क्या ?

या होके पीर ज़ादे, करने लगे फ़कीरी ।
करके मुरीद कितने, की उनकी दस्तगीरी[३९] ।
जब पेरहन[४०] की कफ़नी, आकर अजल ने चीरी ।
सब उड़ गई हवा पर, दम में मुरीदी पीरी ।
मुर्शिद[४१], फ़कीर, हादी[४२], रहबर[४३] हुआ तो फिर क्या ?

या सर मुंडा के बैठे, आजाद हो नवेले ।
या खुड़मुड़े कहाकर सौ रूप रंग खेले ।
मेले किये हज़ारों मूंडे, फ़कीर चेले ।
जब आ फ़ना पुकारी, जा सो रहे अकेले ।
तकिया हुआ तो फिर क्या, बिस्तर हुआ तो फिर क्या ?

जोगी, अतीत, जंगम या सेवड़ा(१) कहाया ।
या खोल कर जटा को, या घोंट सर मुंडाया ।
त्रिसूल ले क़ज़ा का, जब वक्त सर पर आया ।
ने वालके को थामा, ने आपको बचाया ।
नानक कबीर पंथी, भरथर हुआ, तो फिर क्या ?

या नेक बन के बैठे, अच्छे लगे कहाने ।
या होके बद हर एक के, दिल को लगे सताने ।
आकर बजे अजल के, जब सर पे शादयाने ।
थे नेको बद जहां तक, सब लग गए ठिकाने ।
बेहतर हुआ तो फिर क्या ? बदतर हुआ तो फिर क्या ?

---

३८. सुन्दर ३९. सहायता ४०. कपड़ा ४१. गुरू ४२. हिदायत करने वाला ४३. मार्गदर्शक

पाठान्तर—(१) आ० स्योड़ा

क्या हिन्दू, क्या मुसलमाँ, क्या रिंदो गवरो काफ़िर ।
नक़्क़ाश क्या मुसव्विर, क्या खुश नवीस शायिर ।
जितने, 'नज़ीर' हैं, यां, एक दम के हैं मुसाफिर ।
रहना नहीं किसी को चलना है सबको आख़िर ।
दो चार दिन की ख़ातिर, यां घर हुआ तो फिर क्या ?

मरातिब[1] दुनिया महज़ बेसबात[2] हैं[+]

इस्तिग़ना (निस्पृहता)

गर बादशाह होकर अमल मुल्को हुआ तो क्या हुआ ?
दो दिन का नरसिंगा बजा, भौं-भौं हुआ तो क्या हुआ ?
ग़ुल शोर मुल्को माल का कोसों हुआ, तो क्या हुआ ?
या हो फ़क़ीर आज़ाद के रंगूं हुआ तो क्या हुआ ?
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥१॥

दो दिन तो यह चर्चा रहा, घोड़ा(१) मिला हाथी मिला. ।
वैठा अगर हौदे ऊपर, या पालकी में जा चढ़ा ।
आगे को नक़्क़ारे, निशां, पीछे को फ़ौजों का परा ।
देखा तो फिर एक आ़न में, हाथी न घोड़ा ना गधा ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥२॥

या दौलतो इक़बाल है, पहना ज़री और वादला ।
मसनद सुनहरी दी बिठा, कमख़ाव के तकिये लगा ।
आख़िर न वह दौलत रही, न आप ने वह घर रहा ।
मसनद कहीं जाती रही, तकिया कहीं फिरता फिरा ।
गर यूँ हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥३॥

या इश्रतों के ठाठ थे और ऐश के असवाब थे ।
साकी, सुराही, गुलबदन, जामे शराबे नाब थे ।
या बेकसी के दर्द से, बेहाल थे बेताब थे ।
आख़िर जो देखा दोस्तों सब कुछ ख़यालों ख़्वाब थे ।
गर यूं हुआ तो क्या हुअ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥४॥

---

१. मर्तवा, पद, ओहदा (मर्तवा का बहुवचन) २. अस्थिर।
+ संसार के पद और प्रतिष्ठा अस्थिर हैं ।
पाठान्तर—(१) ज़ा० हाथी मिला हाथी मिला ।

था एक दिन वह धूम का, निकले था जब असवार हो ।
हर दम पुकारे था नक़ीब[1] आगे बढ़ो पीछे रहो ।
या एक दिन देखा उसे, तनहा पड़ा फिरता है वह ।
बस क्या ख़ुशी, क्या ना ख़ुशी, यक्सां हैं सब ऐ दोस्तो ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥५॥

जब हश्मतों की शान में करता था क्या-क्या शेखियां ।
हर दम तकब्बुर[2] के सुख़न, हर आन में मग़रूरियां[3] ।
और उड़ गई दौलत, यह फिर असबाब के तख़्ते कहां ।
आकर फ़ना हाज़िर हुई, सब मिट गए नामो निशां ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥६॥

या नेमतें खाता रहा, दौलत के दस्तरख़्वान पर ।
मेवे, मिठाई वा मज़े, हल्वाये तर शीरो शकर ।
या बांध झोली भीख की, टुकड़ों के ऊपर धर नज़र ।
होकर गदा फिरने लगा टुकड़ों की ख़ातिर दरबदर ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥७॥

या दौलतों का सामने, आकर था यक दरिया बहा ।
लेकर ज़मीं ता आस्मां, दौलत में फिरता था पड़ा ।
या होके मुफ़्लिस बेनवा, फिरता है दाने मांगता ।
जब आगई सर पर अजल, एक दम में सब कुछ मिट गया ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥८॥

गर नाज़ो नेमत में रहा, यानी कि वह ज़रदार[4] था ।
या मुफ़्लिसी के हाथ से, मोहताज हो दर-दर फिरा ।
जब वक़्त चलने का हुआ, न यह रहा, न वह रहा ।
आया था जिस अह्वाल से, वैसा ही आख़िर चल बसा ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ॥९॥

---

[1] वह व्यक्ति जो किसी राजा महाराजा की सवारी के समय आगे आवाज़ लगाता चलता है, चौबदार ।
[2] (अ० पु०) घमंड [3] (अ० वि०) घमंड [4] दौलतमन्द ।

गर एक मुसीबत में रहा और दूसरा दिलशाद है ।
वां ऐश इश्रतके मज़े, यां नालओ[५] फर्याद है ।
या लज़्ज़तें[६] या राहतें, या ज़ुल्म या बेदाद[७] है ।
कुछ रह नही जाता, मियां आख़िर को सब बरबाद है ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ।।१०।।

जो इश्रतें आकर मिलें तो वह भी कर जाना मियां ।
जो दर्द दुःख आकर पड़ें, तो वह भी भर जाना मियां ।
या सुख में या दुख में, ग़रज़ यां से गुज़र जाना मियां ।
यां चार दिन की ज़िन्दगी, आख़िर को मर जाना मियां ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ।।११।।

अब देख किसको शाद हो और किस पे आंखें नम करे ।
यह दिल बिचारा एक है, किस-किसका अब मातम करे ।
या दिल को रोवे बैठकर या दर्द दुख को कम करे ।
यां का यही तूफान है अब किसकी जूती ग़म करे ।
गर यूँ हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ।।१२।।

गर तू 'नजीर' अव मर्द है हर हाल में भी शाद हो ।
दस्तार में भी हो खुशी, रूमाल में भी शाद हो ।
आज़ादगी भी देख ले, जंजाल में भी शाद हो ।
गर यूं हुआ तो क्या हुआ ? और वूं हुआ तो क्या हुआ ।।१३।।

---

५. आह भरना ६. मज़ा ७. असहयोग ।

ख़ुशी से दान देने की प्रेरणा

ज़रदार है तो हरग़िज, मत मार अपने मन को ।
तनज़ेब तनसुखों से, तरसा न अपने तन को ।
जो नर चलन चले हैं, चल तू भी उस चलन को ।
मुर्शिद का है यह नुक्ता, रख याद इस सुखन को ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ।।१।।

जा बैठ मैकदों में सब दर्दो ग़म से हटकर ।
छमका गुलाबी मै की प्याली उलट पलट कर ।
महबूब दिलबरों से खुश हो लिपट-लिपट कर ।
पी दूध और बताशे, मेवा मिठाई चट कर ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ।।२।।

कमख़ाब क्या दुशाला क्या रेशमी दुसूती ।
कर शाल का लंगोटा, मत रख क़बा अछूती ।
बोले जो शूम भड़ुवा, मार उसके सर पै जूती ।
दो दिन तो दोस्तों में, बुलवा ले अपनी तूती ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ।।३।।

यह नैमतें हैं जितनी जो कुछ मिले सो खा जा ।
ताश और बादले में इक बार जगमगा जा ।
पापी बख़ील मत बन दाता सख़ी कहा जा ।
इकदम तो अपना डंका मन मानता बजा जा ।
दिल की ख़ुशी की खातिर चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक कौड़ी न रख क़फन को ।।४।।

यां का यही मज़ा है, खाना व या खिलाना ।
भूखे को डाल रोटी, नंगे को कुछ उढ़ाना ।
सब इस घड़ी उड़ा ले, जो तुझको हो उड़ाना ।
गाफ़िल फिर इस गली में, तुझको नहीं है आना ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक, कौड़ी न रख क़फन को ।।५।।

जो गुल बदन है रूठे, ज़र दे उन्हें मना ले ।
बोसा उन्हों का लेकर, सीने से फिर लगा ले ।
हंस ले, हंसा ले, हर दम देले, दिलाले, खाले ।
जो बन सके सो अपने, जी के मज़े उड़ा ले ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फन को ।।६।।

जो पास है ज़ख़ीरा, मत रख वह कोने अन्दर ।
मस्जिद कुएं बनादे, तालब, बाग मन्दर ।
दरिया कहीं बहादे, बन जा कहीं समन्दर ।
सब कुछ उड़ा लुटा कर, हो रह सदा क़लन्दर ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ।।७।।

बाग़ों की देख सैरें, भर जाम के छलक्के ।
और छान मेले ठेले, कर धूम और धड़क्के ।
आवे जो शूम, भड़ुवा, काढ़ उसको देके धक्के ।
तू शौक़ से उड़ा ले, ऐशो मज़े झमक्के ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ।।८।।

सन्दूक में जो ज़र है, उसको भी ले गवां दे ।
मै के बहा के नाले, तबलों को खड़खड़ा दे ।
कोठे मकां हवेली, सब खोद कर खिला दे ।
कड़ियां तलक जला दे, ईंटें तलक उड़ादे ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक, कौड़ी न रख क़फ़न को ।।९।।

जो जो बख़ील कुट्टन ज़र छोड़कर मरेगा ।
या खायेगा जमाई, या ख़ालसा लगेगा ।
तेरा वही है जो कुछ, राहे ख़ुदा में देगा ।
खाता, खिलाता, हंसता, तू भी सदा रहेगा ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ॥१०॥

गर आ पड़ेगा तुझ पर कुछ हादसा ख़लल का ।
मालिक फिर और कोई ठहरेगा तेरे दल का ।
आगे से दे दिला के, हो रह तू उससे हलका ।
कर सोच अपने दिल में, कुछ आज का न कलका ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है जो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ॥११॥

ज़र जोड़-जोड़ अपने तू पास गर रखेगा ।
या छीन लेगा हाकिम, या चोर ले मरेगा ।
तेरा वही है जो कुछ, अब ऐश कर चुकेगा ।
जब वक़्त आ पुकारा, तब कुछ न बन सकेगा ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर, चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ॥१२॥

जिसने यह ज़र दिया है फिर वोही धन भी देगा ।
मालो, मकां, हवेली, बाग़ो चमन भी देगा ।
जीता रहेगा जब तक खाने को अन भी देगा ।
मर जायेगा तो वोही तुझको क़फ़न भी देगा ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़, कौड़ी न रख क़फ़न को ॥१३॥

जितने गड़े, दबे हैं सब खाले और खिलाले ।
रख धुन उसी की दिल में अब खाले और खिलाले ।
अपना समझ उसी को जब खाले और खिलाले ।
अब तो "नज़ीर" तू भी सब खाले और खिलाले ।
दिल की ख़ुशी की ख़ातिर चख डाल माल धन को ।
गर मर्द है तो आशिक़ कौड़ी न रख क़फ़न को ॥१४॥

दुनियाँ के तमाशे

खोल टुक चश्मे तमाशा, यार बाशे फिर कहां ।
यह शिकारो सैद, यह शिकरे व बाशे फ़िर कहां ।
माल दौलत, सोना, रूपा, तोले माशे फिर कहां ।
दम ग़नीमत है, भला, यह बूदोबाशे फिर कहां ।
देख ले दुनियाँ को ग़ाफ़िल यह तमाशे फिर कहां ॥

दिल लगा उल्फ़त में, और कर ले परीज़ादों की चाह ।
चांद से मुखड़ों से मिल, सूरजवशों पर कर निगाह ।
कुछ मज़े, कुछ लूट हज, यह वक़्त कब मिलता है, आह ।
खाले पीले, सुख दे, और देले दिलाले, वाह वाह ।
देख ले दुनियाँ को, ग़ाफिल, यह तमाशे फिर कहां ॥

हुस्न वालों के भी क्या-क्या, हुस्न के आलम हैं यां ।
सांवले गोरे, सुनहरी, सुर्ख बांधे पगड़ियां ।
क्या सजें, क्या-क्या धजें, क्या नाज़ क्या छब तख़्तियां ।
भोली भोली सूरतें, और प्यारी प्यारी अंखड़ियां ।
देख ले दुनियाँ को ग़ाफ़िल यह तमाशे फिर कहां ॥

सुबह हो तो सैर कर, बाग़ों की जाकर बाफ़िराक़ ।
बुलबुलें चहकें हैं, और गुल खिल रहे हैं मिस्ल बाग़ ।
शाम हो तो रोशनी को देख, पी मै[1] के अयाग़ ।
जल रहे हैं झाड़ों मशजल[2] शम्मा कंदीलो चिराग़ ।
देख ले दुनियाँ को ग़ाफ़िल, यह तमाशे फिर कहां ॥

---

[1] शराब [2] मशाल

कितने मैख़ानों[३] के दर पर लोटते हैं पी के मै।
कितने मजलिस करके सुनते हैं दफ़ों[४] मरदंगो नै।
दैरों[५] में और मस्जिदों में करते हैं ग़ुल[६] पै व पै[७]।
हर तरफ़ धूमें मची हैं, दीद[८] है और सैर है।
देख ले दुनियाँ को ग़ाफ़िल, यह तमाशे फिर कहां॥

कितने दिल हैं मुत्तफ़िक़[९], कितने दिलों में फूट है।
दोस्ती है दुश्मनी है, ज़िद है मारा कूट है।
प्यार है, हंस बैठना है, और जुगत और झूट है।
अद्ल[१०] है और ज़ुल्म है, ग़ारत है लूटा लूट है।
देख ले दुनियाँ को ग़ाफ़िल यह तमाशे फिर कहां॥

वाह वा! क्या-क्या "नज़ीर" इस ख़ल्क के अतवार हैं।
ख़्वार हैं, सरदार हैं, ज़रदार हैं, लाचार हैं।
गुजरियां हैं, चौक हैं, बसते कई बाजार हैं।
दश्त हैं, सहरा हैं, और दरिया हैं और कोहसार हैं।
देख ले दुनियाँ को ग़ाफ़िल यह तमाशे फिर कहां॥

---

[३] मधुशाला [४] ढफ [५] मंदिर, गिरिजा [६] शोर [७] बार-बार [८] दर्शन।
[९] एक राय, सहमत [१०] न्याय।

फ़कीरों की सदा*

बुख़्ल+ की बुराइयां

जर की जो मुहब्बत, तुझे पड़ जायेगी, बाबा ।
दुःख उसमें तेरी रूह, बहुत पायेगी बाबा ।
हर खाने को हर पीने को तरसाएगी बाबा ।
दौलत जो तेरे यां है न, काम आयेगी बाबा ।
फिर क्या तुझे अल्लाह से मिलवाएगी बाबा ।।१।।

दौलत जो तेरे पास है रख याद तू यह बात ।
खा तू भी और अल्लाह की कर राह में ख़ैरात ।
देने से रहे उसके तेरा ऊंचा सदा हात ।
और यां भी तेरी गुजरेगी सौ ऐश से औक़ात ।
और वां भी तुझे, सैर यह दिखलाएगी बाबा ।।२।।

दौलत की यही ख़ूबी है, सौ नेमतें खा डाल ।
कमख़्वाब पहन, बादला ओढ़ और बना डाल ।
बाग़ो चमनो होजो इमारात बना डाल ।
एक दम तो भला, खल्क़ में दरिया सा बहा डाल ।
फिर वर्ना तुझे सैर, यह दिखलाएगी बाबा ।।३।।

दाता की तो मुश्किल कोई अटकी नहीं रहती ।
चढ़ती है पहाड़ों के ऊपर नाव सख़ी[1] की ।
और तूने बख़ीली[2] से, अगर जमा उसे की ।
तो याद यह रख बात कि जब आवेगी सख्ती ।
खुश्की में तेरी नाव यह डुबवाएगी बाबा ।।४।।

---

* आवाज ।

+ कंजूसी ।

१. दानी २. कंजूसी

दौलत जो तेरे घर में यह अब फूली है जूं फूल ।
मरदूद[3] भी करती है यह और करती है मक़बूल[4] ।
जो चाहे तेरे साथ, चले यां से यह मजहूल ।
ज़नहार खबरदार हो इस बात पै मत भूल ।
यह खन्दी[5] तेरे साथ नहीं जाएगी बाबा ॥५॥

क़स्बी[6] यह पुरानी है न आ इसके तू छल में ।
आज इसकी बग़ल में है तो कल उसकी बग़ल में ।
ठंडक नहीं पड़ने की कभी इसके तो झल में ।
जब तन से तेरी जान निकल जावेगी पल में ।
तू जावेगा और यह यहीं रह जाएगी बाबा ॥६॥

गर नेक कहाता है, कर इस जाय कुछ एहसान ।
हिन्दू को खिला पूरी, मुसलमां को खिला नान ।
खा तू भी इसे शौक़ से, और ऐश पे रख ध्यान ।
तू इसको न खावेगा, तो यह बात यक़ीं जान ।
एक रोज़ यह ख़न्दी, तुझे खा जाएगी बाबा ॥७॥

इससे यही बेहतर है तू ही अब इसे खा जा ।
बेटों को, रफ़ीकों को अज़ीज़ों को खिला जा ।
सब रूबरू अपने इसे इशरत में उड़ा जा ।
फिर शौक़ से हंसता हुआ, जन्नत को चला जा ।
वर्ना तुझे हर दुःख में, यह फंसवाएगी बाबा ॥८॥

गर आवेगा हाकिम कोई ज़ालिम तो मेरी जान ।
और तेरी सुनेगा वह बख़ीली की सी गुज़रान ।
जब खींच बुलावेगा लगाकर कोई तूफ़ान ।
तू जी से जिसे दोस्त समझता है यह सर आन ।
यह दोस्त ही दुश्मन, तेरी हो जाएगी बाबा ॥९॥

---

[3] छोटे, खराब [4] प्रिय [5] बदचलन [6] रंडी ।

कोई कहेगा उसके तई बांध के लटका।
कोई कहेगा तूंबड़ा मुंह इसके में चढ़वा।
कोई कहेगा कपड़े भी सब इसके उतरवा।
सौ ज़िल्लतो ख़्वारी से तुझे देखके फिरता।
बंधवायेगी, और मार भी खिलवाएगी बाबा ॥१०॥

और जो कभी हाकिम ने न पूछा तेरा अहवाल।
तो चोर चुरा लेवेगा, या डाका कोई डाल।
गाड़ेगा ज़मीं बीच, तो फिर होवेगा यह हाल।
क़िस्मत से तेरी, जब कभी आजावेगा भूचाल।
फिर नीचे ही नीचे, यह सरक जाएगी बाबा ॥११॥

यह तो न किसी पास रही है, न रहेगी।
जो और से करती रही, वह तुझ से करेगी।
कुछ शक नहीं इसमें जो बढ़ी है सो घटेगी।
जब तक तू जियेगा, तुझे यह चैन न देगी।
और मरते हुए फिर यह ग़ज़ब लाएगी बाबा ॥१२॥

जब मौत का होवेगा तुझे आनके धड़का।
और निज़अ[७] तेरी आन के, दम देवेगी भड़का।
जब इसमें तू अटकेगा, न दम निकलेगा फड़का।
कुप्पों में रुपे डाल के जब देवेंगे खड़का।
जब तन से तेरे, जान निकल जाएगी बाबा ॥१३॥

तू लाख अगर माल के सन्दूक़ भरेगा।
है यह तो यक़ीं, आखिरश[८] एक दिन तो मरेगा।
फिर बाद तेरे इस पै जो कोई हाथ धरेगा।
वह नाच, मज़ा देखेगा और ऐश करेगा।
और रूह तेरी, क़ब्र में घबराएगी(१) बाबा ॥१४॥

---

७. मौत का समय ८. अन्त में।

पाठान्तर—(१) क़ा० ज० चिल्लाएगी।

उसके तो वहां ढोलको मरदंग बजेगी ।
और रूह तेरी, क़ब्र में हस्रत[९] से जलेगी ।
वह खावेगा और तेरे तई आग लगेगी ।
ताहश्र[१०] तेरी रूह को, फिर कल न पड़ेगी ।
ऐसा यह तुझे गोर में तड़पाएगी बाबा ॥१५॥

जूं जूं वह तेरे माल से इश्रत(१) में पड़ेगा ।
तू क़ब्र में रह—रह कफ़े अफ़सोस मलेगा ।
जो चाहे कोई बोले तो फिर बस न चलेगा ।
बेबस तू पड़ा कब्र में हस्रत से जलेगा ।
दिन रात तेरी छाती को, कुढ़वाएगी बाबा ॥१६॥

जावेगा तेरी गोर[११] की जानिब तो वह नागाह[१२] ।
साक़ीयो[१३] सुराहीयो परी ज़ाद के हमराह ।
रोना मुझे आता है तेरे हाल पे वल्लाह ।
जब देखेगा सौ ऐश में तू उसके तई आह ।
क्या—क्या तेरी छाती पे यह लहरायेगी बाबा ॥१७॥

तू भूत हो छाती पे अगर आन चढ़ेगा ।
तो वां भी तेरे वास्ते, आमिल[१४] कोई बुलवा ।
शीशे में उतरवा के तुझे देवेंगे गड़वा ।
या ख़ूब सा सुलगा के कोई हाय, फ़तीहा ।
धूनी भी तेरी नाक में दिलवाएगी बाबा ॥१८॥

गर होश है तुझ में तो बख़ीली[१५] का न कर काम ।
इस काम का आख़िर को, बुरा होता है अंजाम ।
थूकेगा कोई कहके, कोई देवेगा दुश्नाम[१६] ।
जनहार न लेगा कोई हर सुबह तेरा नाम ।
पैजारे तेरे नाम पै लगवाएगी बाबा ॥१९॥

---

[९] इच्छा [१०] रोज़े कयामत तक [११] कब्र [१२] अचानक [१३] शराब पिलाने वाला [१४] अमल करने वाला, झाड़ फूंक करने वाला [१५] कंजूसी [१६] गाली ।

पाठान्तर—(१) जा० इज्जत ।

कहता है "नज़ीर" अब तो यह बातें तुझे हर आन ।
गर मर्द है आक़िल तो इसे झूठ तू मत जान ।
टुक ग़ौर से कर गंज[१७] पे कारूं के ज़रा ध्यान ।
जैसा ही उसे उसने किया ख़ूब परेशान ।
वैसा ही मज़ा तुझको भी दिखलाएगी बाबा ।।२०।।

---

१७. खजाना ।

फ़क़ीरों की सदा (२)

बटमार[1] अजल[2] का आ पहुंचा, टुक इसको देख डरो बाबा ।
अब अश्क बहाओ आंखों से और आहें सर्द भरो बाबा ।
दिल हाथ उठा इस जीने से बस मन मार मरो बाबा ।
जब बाप की ख़ातिर रोते थे, अब अपनी ख़ातिर रो बाबा ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

अब जीने को तुम रुख़सत दो मरने को मेहमान करो ।
ख़ैरात करो एहसान करो, या पुन्न करो या दान करो ।
या पूड़ी लड्डू बनवाओ, या ख़ासा हलुवा नान करो ।
कुछ लुत्फ़ नहीं अब जीने का, अब चलने का सामान करो ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

दिल को तो उबाओ जीने से अब और गले को मत काटो ।
अब चाह फ़ना की टुक चक्खो और ख़ून किसी का मत चाटो ।
धुन छोड़ो हिस्से बख़रे की और भाजी अपनी तुम बांटो ।
नाकंद बछेड़े कूद चुके अब और दुलत्ती मत छांटो ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

यह अस्प बहुत कूदा उछला, अब कोड़ा मारो ज़ेर करो ।
जब माल इकट्ठा करते थे, अब तन का अपने ढेर करो ।

---

[1] रास्ते में लूट लेने वाला, बटपरा [2] मौत ।

गढ़ टूटा, लश्कर भाग चुका, अब म्यान में तुम शमशेर करो ।
तुम साफ़ लड़ाई हार चुके, अब भागने में मत देर करो ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।

सर कांपा, चांदी बाल हुए, मुंह पोला, पलकें अपन झुकीं ।
कद टेढ़ा, कान हुए बहरे और आखें भी चुंधियाय गयीं ।
सुख नींद गई और भूख घटी, दिल सुस्त हुआ आवाज़ मद्दीं ।
जो होनी थी सो हो गुज़री, अब चलने में कुछ देर नहीं ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

या पांव घिसट कर चलने से, मत रस्ते को हैरान करो ।
और पोपले मुंह से रोटी को मत मल-मल कर हलकान करो ।
अब आप हुए तुम पानी से मत पानी का नुकसान करो ।
कुछ लाभ नहीं है जीने में अब्र मरने से पहचान करो ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।

गर अच्छी करनी नेक अमल, तुम दुनियां से ले जाओगे ।
तो घर अच्छा सा पाओगे और सुख से बैठे खाओगे ।
और ऐसी दौलत छोड़ के तुम जो खाली हाथों जाओगे ।
फिर कुछ भी नहीं बन आवेगी, घबराओगे, पछताओगे ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

यह उम्र जिसे तुम समझे हो, यह हर दम तन को चुनती है ।
जिस लकड़ी के बल बैठे हो, दिन रात यह लकड़ी घुनती है ।
तुम गठरी बांधो कपड़े की और देख अजल सर धुनती है ।
अब मौत कफ़न के कपड़े की यां ताना बाना बुनती है ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

घर बार रुपै और पैसे में, मत दिल को तुम ख़ुरसन्द करो ।
या गोर बनाओ जंगल में, या जमुना पर आनन्द करो ।

मौत आन लताड़ेगी आख़िर, कुछ मक्र करो या फंद करो ।
बस ख़ूब तमाशा देख चुके अब अपनी आँखें बंद करो ।
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर जीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

यह ऊंट किराये का यारो, सन्दूक, जनाजा, अर्थी है ।
जब हो उस पर असवार चले फिर घोड़ा है ने हस्ती है ।
किस नींद पड़े तुम सोते हो, यह बोझ तुम्हारा भारी है ।
कुछ देर नहीं अब आह 'नज़ीर' तैयार खड़ी असवारी है ।
तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा ।
अब मौत नक़ारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा ।।

बंजारा नामा

टुक हिर्सो–हवा[१] को छोड़ मियां, मत देस विदेश फिरे मारा ।
क़ज्ज़ाक़[२] अजल[३] का लूटे है, दिन रात बजाकर नक़्क़ारा ।
क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतर[४] क्या गोनें पल्ला शर भारा ।
क्या गेहूं, चावल, मोंठ, मटर, क्या आग, धुंआ और अंगारा ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा ।।१।।

गर तू है लक्खी बंजारा और खेप भी तेरी भारी है ।
ऐ ग़ाफ़िल, तुझ से भी चढ़ता एक और बड़ा व्यापारी है ।
क्या शक्कर मिश्री क़ंद गरी क्या सांभर मीठा खारी है ।
क्या दाख, मुनक़्क़ा सोंठ, मिरच, क्या केसर लौंग सुपारी है ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।।२।।

तू बधिया लादे बैल भरे, जो पूरब पश्चिम जावेगा ।
या सूद बढ़ाकर लावेगा, या टोटा घाटा पावेगा ।
क़ज्ज़ाक अजल का रस्ते में जब भाला मार गिरावेगा ।
धन, दौलत, नाती पोता क्या, एक कुनबा काम न आवेगा ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।।३।।

हर मंजिल में अब साथ तेरे यह जितना डेरा डंडा है ।
ज़र दाम दिरम का भांडा है, बन्दूक सिपर और खांड़ा है ।
जब नायक तन का निकल गया, जो मुल्कों मुल्कों हांडा है ।
फिर हांडा है न भांडा है, न हलवा है न मांडा है ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।।४।।

---

१. लालच २. डाकू ३. मौत ४. ऊंट ।

जब चलते-चलते रस्ते में यह गौन तेरी ढल जावेगी ।
एक बधिया तेरी मिट्टी पर, फिर घास न चरने आवेगी ।
यह खेप जो तूने लादी है, सब हिस्सों में बंट जावेगी ।
धी, पूत, जमाई, बेटा क्या, बंजारिन पास न आवेगी ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।।५।।

यह खेप भरे जो जाता है, यह खेप मियां मत गिन अपनी ।
अब कोई घड़ी, पल साअ़त में, यह खेप बदन की है कफ़नी ।
क्या थाल कटोरे चांदी के, क्या पीतल की डिबिया ढकनी ।
क्या बरतन सोने चांदी के, क्या मिट्टी की हंडिया चपनी ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा ।।६।।

यह धूम-धड़क्का साथ लिए क्यों फिरता है जंगल-जंगल ?
इक तिनका साथ न जावेगा, मौक़ूफ़[5] हुआ जब अन और जल ।
घर बार अटारी, चौपारी, क्या ख़ासा, तनसुख और मलमल ।
क्या चिलमन, पर्दे, फ़र्श नये, क्या लाल पलंग और रंग-महल ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।।७।।

कुछ काम न आवेगा तेरे, यह लालो-ज़मर्रुद[6] सीमो-ज़र[7] ।
जब पूंजी बाट में बिखरेगी, फिर आन बनेगी जां ऊपर ।
नौबत, नक़्कारे, वान निशां, दौलत हश्मत, फोज़ें लश्कर ।
क्या मसनद तकिया, मुल्क मकां, क्या चौकी, कुर्सी, तख़्तछतर ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा ।।८।।

क्यों जी पर बोझ उठाता है, इन गौनों भारी-भारी के ।
जब मौत का डेरा आन पड़ा, तब कोई नहीं गुनतारी के ।
क्या साज जड़ाऊ ज़र ज़ेवर, क्या गोटे थान किनारी के ।
क्या घोड़े ज़ीन सुनहरी के, क्या हाथी लाल अमारी के ।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ।।९।।

---

[5] बंद [6] लाल और पुखराज [7] चाँदी, सोना ।

मग़रूर[९] न हो तलवारों पर, मत फूल(१) भरोसे ढालों के।
सब पट्टा तोड़ के भागेंगे, मुंह देख अजल के भालों के॥
क्या डिब्बे मोती हीरों के, क्या ढेर ख़ज़ाने मालों के।
क्या बुग़चे ताश[१०] मुशज्जर[११] के क्या तख़्ते शाल दुशालों के॥
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा॥१०॥

क्या सख़्त मकां बनवाता है, ख़म तेरे तन का है पोला।
तू ऊंचे कोट उठाता है, वां गोर[१२] गढ़े ने मुंह खोला॥
क्या रैनी[१३] ख़ंदक रंद[१४] बड़े, क्या बुर्ज कंगूरा अनमोला।
गढ़, कोट, रहक़ला[१५], तोप क़िला, क्या शीशा दारु और गोला॥
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा॥११॥

हर आन नफ़ा और टोटे में, क्यों मरताफिरता है बन-बन।
टुक ग़ाफ़िल दिल में सोच ज़रा, है साथ लगा तेरे दुश्मन॥
क्या लौंडी बांदी, दाईदिदा[१६], क्या बंदा चेला नेक-चलन।
क्या, मन्दिर, मस्जिद, ताल-कुआं, क्या खेती बाड़ी बाग़ चमन॥
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा॥१२॥

जब मर्ग[१७] फिरा कर चाबुक को, यह बैल बदन का हाँकेगा।
कोई नाज समेटेगा तेरा, कोई गौन सिये और टाँकेगा॥
हो ढेर अकेला जंगल में, तू ख़ाक लहद[१८] की फाँकेगा।
उस जंगल में फिर आह 'नजीर' एक भुनगा(२) आन न झाँकेगा।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा॥१३॥

---

९. घमंडी १०. एक प्रकार का छपा हुआ ज़री का रेशमी कपड़ा ११. वह कपड़ा जिस पर पेड़ों का डिजाइन हो १२. कब्र १३. किले की छोटी दीवार १४. दीवारों के वह सूराख जिनमें से बन्दूकों की मार की जाय १५. गाड़ी जिस पर रख कर तोप ले जाई जाती है १६. बूढ़ी नौकरानी १७. मौत १८. कब्र।

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० भूल
(२) क़ा० तिनका

आखिर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा

दुनियां में कोई ख़ास न कोई आम रहेगा ।
न साहिबे मक़दूर न नाकाम रहेगा ॥
ज़रदार[१] न बेज़र[२] न बद अंजाम रहेगा ।
शादी न ग़मे गर्दिशे अय्याम रहेगा ॥
न ऐश न दुख दर्द न आराम रहेगा ॥
आखिर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥१॥

यह चर्ख़[३] दिखाता है पड़ा गुंबदे अज़रक[४] ।
यह चांद यह सूरज, यह सितारे हैं मुअल्लक ॥
लोहो क़लमो अर्शे बरीं, साबितो मुतलक़ ।
सब ठाठ यह एक आन में हो जावेगा हू हक़ ॥
आग़ाज़ किसी शै का न अंजाम रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥२॥

ले आलमे अर्वाह से ता आलमे जिन्नात ।
इन्सान, परी, हूरो मलक जिन्नो खबीसात ॥
क्या अब्रो[५] हवा, कोहो बहर अर्ज़ो समावात ।
एक फूंक में उड़ जायेंगे जूं नक्शे तिलिस्मात ॥
हुशियार न पुख्ता, न कोई ख़ाम रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥३॥

गर इल्मो हुनर से है कोई ख़ल्क़ में मशहूर ।
या कश्फ़ो[६] करामात में है साहिबे मक़दूर ॥
या एक का है नामो निशां ख़ल्क में मशहूर ।
एकदम में पलक मारते होजायेंगे सब दूर ॥
मस्तूर[७] न मशहूर, न गुमनाम रहेगा ।
आखिर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥४॥

---

१. मालदार २. गरीब ३. आसमान ४. नीला ५. बादल ६. गुप्त बातों का ज्ञान ७. छिपा हुआ, गुप्त

मुख़्तारी के ख़तरे से जो करते हैं सदा काम ।
या जब्र से मजबूरी के रखते हैं कई दाम ।।
जब आके फ़ना डालेगी एक गर्दिशे अय्याम ।
एक आन में उड़ जायेगा सब चीज़ का इल्ज़ाम ।।
मुख़्तार न मजबूर, न खुद काम रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।५।।

अब दिल में बड़े अपने जो कहलाते हैं अय्यार[८] ।
सौ मक्रों[९] दग़ा करते हैं एक आन में तैयार ।।
जब आके फ़ना डालेगी सर के ऊपर एक वार ।
एक बार के लगते ही यह हो जावेंगे सब पार ।।
ने मक्र, न हीला, न कोई दाम रहैगा ।।
आखिर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।६।।

करते हैं जो अब दिल से रियाज़ातो[१०] इबादात ।
या उम्र को खोते हैं बेरिंदीयो[११] ख़राबात ।।
जब आके फ़ना छोड़ेगी शमशीर[१२] का एक हात ।
फिर साफ़ है दोनों की गुनाहगारियो ताआत ।।
न रिंद[१३] न आबिद[१४] न मै आशाम[१५] रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।७।।

झगड़ा न करे मिल्लतो मज़हब का कोई यां ।
जिस राह में जो आन पड़े खुश रहे हर आं ।।
जुन्नार[१६] गले या कि बग़ल बीच हो क़ुरआं ।
आशिक़ तो क़लंदर[१७] हैं न हिन्दू न मुसल्मां ।।
काफ़िर न कोई, साहिबे इस्लाम रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।८।।

---

८. बहुत अधिक चालाक ९. धोखा १०. तपस्या ११. मस्ती १२. तलवार १३. शराबी, मस्त १४. तपस्वी १५. शराब पीने वाला १६. यज्ञोपवीत १७. मस्त और आजाद मनुष्य ।

जो शाह कहाते हैं कोई उनसे यह पूछो ।
दाराओ सिकन्दर वह गए आह किधर को ॥
मग़रूर न हो शौकतो हश्मत पे, वज़ीरो ।
इस दौलतो इक़बाल पे मत फूलो अमीरो ॥
ने मुल्क, न दौलत, न सर अंजाम रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥९॥

व्योपार जो करते हैं हर एक चीज़ का जरदार ।
आगे भी दुकानें थीं कई और कई बाज़ार ॥
जिस तौर का अब चाहिए कर लीजिये व्योपार ।
फिर जिन्स, न दल्लाल, न मालिक न ख़रीदार ॥
न नक़्द, न कुछ क़र्ज़, न कुछ दाम रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥१०॥

अब जितनी खड़ी देखो हो आलम में इमारात ।
या झोंपड़े दो कौड़ी के या लाख के महलात ॥
क्या पस्त मकां, क्या यह हवादार मकानात ।
एक ईंट भी ढूंढे कहीं आने की नहीं हात ॥
दालान न हुजरा, न दरो बाम रहेगा ॥
आखिर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥११॥

यह बागो चमन अब जो हर एक जा में रहे फूल ।
यह शाख़ यह गुंचा, यह हरे पात यह फल फूल ॥
आजावेगी जब बादे ख़िज़ां उनके उपर भूल ।
हर ख़ार की हर फूल की, उड़ जावेगी सब धूल ॥
न ज़र्द, न सुर्ख़, और न सियाहफ़ाम[१८] रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥१२॥

मै ख़्वार[१९] भी कितने हुए यां मै के मलाक़ी ।
साक़ी भी कई हो गए महबूब वसाक़ी ॥
ला जाम कोई भर के जो हो और भी बाकी ।
फ़ुर्सत है गनीमत कोई दम को, अरे साक़ी ॥
न मै न सुराही न तेरा जाम रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ॥१३॥

---

[१८] काले रंग का [१९] शराब पीने वाले, शराबी

यह आशिको माशूक जो करते हैं बहम चाह ।
आगे भी बहुत आशिको माशूक थे वल्लाह ।।
वह शख़्स कहां जाते रहे, ऐ ! मेरे अल्लाह !
यह बात से मालूम हुआ अब तो यही आह ।।
न इश्क न आशिक न दिल आराम रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।१४।।

टुक गौर करो अब हैं कहां मजनूं व फ़रहाद ।
लैला कहां, शीरीं कहां, वह नाज़ वह बेदाद ।।
जो फूल खिले, वाह, वह सब हो गए बरबाद ।
हम तुम भी ग़नीमत हैं सुन, ओ यार परीज़ाद ।।
वां हुस्न, न यां इश्क का हंगाम रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।१५।।

महबूब बना जिसने, तुम्हें हुस्न दिया है ।
उसने ही हमें आशिक़े जां बाज़ किया है ।
मिलना है तो मिल लो, यही जीने का मज़ा है ।
सब नाज़ो नियाज़, आह, यह एक दम की हवा है ।।
फिर हिज्र न कुछ वस्ल[२०] का पैगाम रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।१६।।

मिलने से हमारे जो तुम्हें आता है इल्ज़ाम ।
आने दो, पै तुम हमसे मिले जाओ, सहर शाम ।।
फिर हुश्न कहां, अपने रखो काम से तुम काम ।
झक मारते हैं, वह जो तुम्हें करते हैं बदनाम ।।
तूफान, न भूतान, न इल्ज़ाम रहेगा ।।
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।१७।।

---

[२०] मिलन

यह शेरो ग़जल अब जो बनाते हैं ज़बानी ।
आगे भी बहुत छोड़ गए अपनी निशानी ॥
दीवान बनाया, कोई किस्सा कि कहानी ।
कुछ बाक़ी 'नज़ीर' अब नहीं, सब चीज है फ़ानी[२१] ॥
ख़म्सा[२२] न ग़जल, फ़र्द न ईहाम[२३] रहेगा ॥
आख़िर वही अल्लाह का एक नाम रहेगा ।।१८।।

---

[२१] मिटने वाली [२२] उर्दू की एक नज्म जिसके हर बन्द में पाँच मिस्रे होते हैं। [२३] एक अर्थालंकार जिसमें ऐसा शब्द लाते हैं जिसके दो अर्थ होते हैं और पास वाला अर्थ छोड़कर दूरवाला अर्थ लगाते हैं।

तन का झोंपड़ा

यह तन जो है हर एक के उतारे का झोंपड़ा।
इससे है अब भी, सबके सहारे का झोंपड़ा।
इससे है बादशाह के नज़ारे का झोंपड़ा।
इसमें ही है फ़कीर, विचारे का झोंपड़ा।
अपना न मोल का न इजारे[1] का झोंपड़ा।
'बाबा' यह तन है दम के गुजारे का झोंपड़ा ॥१॥

इसमें ही भोले भाले, इसी में सियाने हैं।
इसमें ही होशियार, इसी में दिवाने हैं।
इसमें ही दुश्मन, इसमें ही अपने यगाने[2] हैं।
शाह झोंपड़ा भी अपने, इसी में नुमाने हैं।
अपना न मोल का, न इजारे का झोंपड़ा।
'बाबा' यह तन है दम के गुजारे का झोंपड़ा ॥२॥

इसमें ही तो, इश्क़ो मुहब्बत के मारे हैं।
इसमें ही शोख[3], हुस्न के चांद और सितारे हैं।
इसमें ही यार दोस्त, इसी में पियारे हैं।
शाह झोंपड़ा भी अपने इसी में विचारे हैं।
अपना न मोल का न इजारे का झोंपड़ा।
'बाबा' यह तन है दम के गुज़ारे का झोंपड़ा ॥३॥

इसमें ही अहले दौलतो[4] मुनइम[5], अमीर हैं।
इसमें ही रहते सारे जहां के फ़कीर हैं।
इसमें ही शाह और इसी में वज़ीर हैं।
इसमें ही हैं, सग़ीर[6], इसी में कबीर[7] हैं।
अपना न मोल का न इजारे का झोंपड़ा।
'बाबा' यह तन है दम के गुज़ारे का झोंपड़ा ॥४॥

---

१. ठेका २. स्वजन ३. चंचल ४. दौलतमंद ५. धनाढ्य ६. छोटा ७. बड़ा, महान्।

इसमें ही चोर ठग हैं, इसी में अमोल हैं ।
इसमें ही रोनी शक्ल, इसी में ठठोल हैं ।
इसमें ही बाजे, और नक़ारे व ढोल हैं ।
शाह झोंपड़ा भी इसमें ही करते कलोल हैं ।
अपना न मोल का न इजारे का झोंपड़ा ।
'बाबा' यह तन है दम के गुज़ारे का झोंपड़ा ॥५॥

इसमें ही पासा[८] हैं इसी में लवंद हैं ।
वेदर्द भी इसी में हैं और दर्द मंद हैं ।
इसमें ही सब परिंद इसी में चरिंद हैं ।
शाह झोंपड़ा भी अब इसी दरबे में बन्द हैं ।
अपना न मोल का न इजारे का झोंपड़ा ।
'बाबा' यह तन है दम के गुज़ारे का झोंपड़ा ॥६॥

इस झोंपड़े में रहते हैं सब शाह और वज़ीर ।
इसमें वकील बख़्शी व मुतसद्दी[९] और अमीर ।
इसमें ही सब ग़रीब हैं, इसमें ही सब फ़क़ीर ।
शाह झोंपड़ा जो कहते हैं, सच है मियां 'नज़ीर' ।
अपना न मोल का, न इजारे का झोंपड़ा ।
'बाबा' यह तन है दम के गुज़ारे का झोंपड़ा ॥७॥

---

[८] संयमी [९] हिसाब किताब रखने वाला प्रबन्धक ।

तवक्कुलो तर्क़ो

तजरीद[1]

जितने तू देखता है यह फल, फूल पात, बेल ।
सब अपने अपने काम, की हैं कर रहे झमेल ।
नाता है यां सो नाथ, जो रिश्ता है सो नकेल ।
जो ग़म पड़े सो इसको तू अपने ही तन पे झेल ।
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ॥१॥

यह सूरतें जो देखे है मत इनसे दिल लगा ।
बरँ यह सोतियां हैं इन्हें ऐ यार मत जगा ।
शिजरा[2] कुलाह[3] फेंक उड़ादे झगा तगा ।
आगे को छोड़ नाथ, न पीछे को रख पगा ।
गर है फ़कीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ॥२॥

जब तू हुआ फ़कीर, तो नाता किसी से क्या ।
छोड़ा कुटम, तो फिर रहा रिश्ता किसी से क्या ।
मतलब भला फ़कीर को, बाबा किसी से क्या ।
दिलबर को अपने छोड़ के, मिलना किसी से क्या ।
गर है फ़कीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
या तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ॥३॥

---

[1] सांसारिक साधनों का भरोसा हटा कर सारे काम ईश्वर की मर्ज़ी पर छोड़ देना [2] वंशावली
[3] टोपी, ताज ।

तेरी न यह ज़मीं है न तेरा यह आस्मां ।
तेरा न घर, न बार, न तेरा यह जिस्मोजां[४] ।।
उसके सिवा कि जिस पे हुआ तू फ़क़ीर यां ।
कोई तेरा रफ़ीक़[५], न साथी, न मेहेरबां ।।
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ।।४।।

देता है दिल को अपने तो दे उस किसी के हात ।
जिस यार से कि हो तेरे जीते मुए का सात ।।
और यह जो तुझसे करते हैं मिल मिल के मीठी बात ।
मारा पड़ेगा देख, न खा उनके हात घात ।।
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ।।५।।

यह उल्फतें कि साथ तेरे आठ पहर हैं ।
यह उल्फतें नहीं हैं मेरी जान क़हर[६] हैं ।।
जितने यह शहर देखे हैं, जादू के शहर हैं ।
जितनी मिठाइयां हैं, मेरी जान जहर हैं ।।
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ।।६।।

खूबां[७] के यह जो चांद से मुंह पर खुले हैं बाल ।
मारा है तेरे वास्ते, सैयाद[८] ने यह जाल ।।
यह बाल, बाल अब है तेरी जान का वबाल ।
फंसियो खुदा के वास्ते इसमें न देखभाल ।।
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ।।७।।

जिसका तू है फ़क़ीर, उसी को समझ तू यार ।
मांगे तो मांग उस से ही क्या नक़्द, क्या उधार ।।
देवे तो ले वही, जो न देवे तो दम न मार ।
उसके सिवा किसी से न रख अपना कारोबार ।।
गर है फ़क़ीर तू तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ।।८।।

---

[४] शरीर एवं जीव [५] दोस्त [६] प्रकोप [७] सुन्दर, सुकुमारियां [८] बहेलिया

दुनियां इसे न जान, यह दरिया है कहरदार ।
लाखों में इससे कोई उतर कर हुआ न पार ॥
जब तू बहा तो फिर, न मिलेगा तुझे किनार ।
मल्लाह यां, न नाव, न बल्ली है मेरे यार ?
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ॥९॥

दुनियां न कह इसे, यह तिलिस्मात हैं मियां ।
यह जानवर, यह बाग़, यह गुलज़ार यह मकां ॥
शक्लें जो देखता है यह जादू की हैं अयां ।
सब कुछ तेरे तईं है, यह धोके की टट्टियां ॥
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
या तूंबड़ी, न बेल, पड़ा अपने सर पे खेल ॥१०॥

क्या फ़ायदा ? अगर तू हुआ नाम का फ़क़ीर ।
होकर फ़क़ीर, तो भी रहा जाल में असीर ॥
ऐसा ही था तो फ़क्र[९] को नाहक़ किया हक़ीर[१०] ।
हम तो इसी सखुन के हैं क़ायल मियां 'नज़ीर' ॥
गर है फ़क़ीर तू, तो न रख यां किसी से मेल ।
यां तूंबड़ी, न बेल, पड़ा, अपने सर पे खेल ॥११॥

---

[९] फकीरी [१०] अपमानित

बम शंकर बोलो हरी-हरी

ले सब्रो क़नाअत साथ मियां, सब छोड़ यह बातें लोभ भरी ।
जो लोभ करे उस लोभी की, नहीं खेती होती जान हरी ॥
सन्तोख तवक्कुल हिरनों ने, जब हिर्स[1] की खेती आन चरी ।
फिर देख तमाशे क़ुदरत के, और लूट बहारें हरी भरी ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥१॥

टुक अपनी क़िस्मत देख मियां, तू आप बड़ा दातारी है ।
पर हिर्सो तमाअ[2] के करने से, अब तेरा नाम भिखारी है ॥
हर आन मरे है लालच पर हर साअत लोभ अधारी है ।
ऐ लालच मारे, लोभ भरे, सब हिर्सो हवा की ख़्वारी है ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥२॥

गर हिर्सो हवा और लालच की, है दौलत तेरे पास धरी ।
तू ख़ाक समझ इस दौलत को, क्या सोना रूपा लाल ज़री ॥
हाथ आया जब सन्तोख दरब[3], तब सब दौलत पर धूल पड़ी ।
कर ऐश मज़े सन्तोखी बन, जय बोल मुरलिया वाले की ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी ॥
सब चन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥३॥

इस हिर्सो हवा के बीजों को, जो लोभी दिल में बोते हैं ।
वह चिन्ता मारे लोभ भरे, नित ख़्वार हमेशा होते हैं ॥
जो हाथ पसारे लालच कर, वह माथा कूट के रोते हैं ।
और हाथ जिन्होंने खींच लिया, वह पांव पसारे सोते हैं ।
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी ॥
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥४॥

---

१. लोभ २. लालच ३. द्रव्य, धन

इस लोभ पुरी की गलियों की, जब मुंह पर तेरे धूल पड़ी ।
वेचैन रहेगा हर साअत, आराम न होगा एक घड़ी ॥
चल लोभ के सर पर जूती मार, और लोभी तन पर मार छड़ी ।
कर सुमिरन कुंज बिहारी की, जय बोल मुकुट की घड़ी-घड़ी ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥५॥

यह शहद बुरा है लालच का, इस मीठे को मत खा प्यारे ।
यह शहद नहीं यह ज़हर निरा, इस ज़हर उपर मत जा प्यारे ।
जो मक्खी इसमें आन फंसी, फिर पंख रहे लिपटा प्यारे ।
सर पटके रोये हाथ मले, है लालच बुरी बला प्यारे ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥६॥

यह लोभ निरी पत खोता है, इस लोभी लालच मारे की ।
यह लोभ चमक खो देता है, हर आन चमकते तारे की ॥
तू एक तपक कर लालच पर, बन सूरत लाल अंगारे की ।
कर याद मदन मतवारे की, जय बोल कन्हैया प्यारे की ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥७॥

गर हिर्सो हवा के फंदे में तू अपनी उम्र गंवावेगा ।
ना खाने का फल देखेगा, ने पानी का सुख पावेगा ॥
एक दो गज कपड़े तार सिवा, कुछ साथ न तेरे जावेगा ।
ऐ लोभी बन्दे लोभ भरे, तू मर कर भी पछतावेगा ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥८॥

इस हिर्सो हवा की झोली से, है तेरी शक्ल भिकारी की ।
पर तुझको अब तक ख़बर नहीं है, लोभी अपनी ख़्वारी की ॥
सन्तोखी साध सरन में रह तज, मिन्नत नर और नारी की ।
ले नाम किशन मन मोहन का, जय बोल अटल बनवारी की ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥९॥

है जब तक तुझमें लोभ भरा, तू चोर उचक्का तगड़ा है ।
है नीच पुरानी पगड़ी से, जो सर पर तेरे पगड़ा है ॥
हर आन किसी से किस्सा है, हर वक़्त किसी से झगड़ा है ।
कुछ मीन नहीं कुछ मेख नहीं, सब हिर्सो हवा का झगड़ा है ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई, और आई गत सन्तोख भरी ।।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥१०॥

अब दुनिया में कुछ चीज़ नहीं, इस लोभी के निस्तारे की ।
है कीचड़ उस पर लिपट रही, सब हिर्सो हवा के गारे की ॥
क्या कहिए वा की बात "नज़ीर", उस लोभी लोभ संवारे की ।
सब यारो मिल कर जय बोलो, इस बात पे नन्द दुलारे की ॥
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी ।
सब चैन हुए आनन्द हुए, बम शंकर बोलो हरी हरी ॥११॥

क़ुदरत का गुलदस्ता

दुनियां का चमन यारो है ख़ूब यह आरस्ता[१] ।
सरसब्ज रहे उसका हर सब्जा यह पैवस्ता[२] ।
हर फूल के आने का जारी है सदा रस्ता ।
हर शाख़ मुकत्ता[३] है हर बर्ग[४] है बरजस्ता[५] ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ।।

या अर्जो[६] समा[७] तारे जो आन के झूले हैं ।
जिन देव परी आदम या बाद बबूले हैं ।
सब वहशियों[८] ताइर[९] हैं या घास के पूले हैं ।
कुछ और नहीं यारो यह गुल वही फूले हैं ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ।।

हर शहरोदहो कस्बा सब फूलों की डलियां हैं ।
कूंचे हैं सो तख़्ते हैं गलियां हैं सो कलियां हैं ।
दीवारो दरो हुजरे सब क्यारियां ढलियां हैं ।
ईट ईट से हर घर के क्या रंग हैं रलियां हैं ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सर बस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ।।

अम्बोह है गुंचों का और गुल की क़तारें हैं ।
शाखों के तराकुम हैं बर्गों की वहारें हैं ।
जो अपनी खड़े होकर ख़ूबी को संवारे हैं ।
सब अपने ही आलम में दम हुस्न का मारे हैं ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ।।

---

१. सुसज्जित, सजा हुआ २. लगा हुआ ३. छटी हुई ४. पत्ता ५. फौरन, तुरन्त ६. पृथ्वी
७. आकाश ८. जँगली ९. पक्षी ।

कहता है गुलाब हर दम मैं इत्र सरासर हूं ।
और सेब यह कहती है मैं उससे मुअत्तर हूं ।
बेला यह पुकारे है मैं चांद का पत्तर हूं ।
गुल अशर्फी कहती है वह क्या है मैं बेहतर हूं ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ॥

लाला यह सुनाता है मैं लाल का प्याला हूं ।
सूरजमुखी कहती है मैं उसकी भी खाला हूं ।
सदबर्ग[10] यह कहता है सौ दर्जे में बाला हूं ।
गुल जाफ़री कहती है मैं उससे भी आला हूं ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा हैं यह गुलदस्ता ।

नसरीनो समन[12]-शब्बू[13] गुच्छा है सुरैया का[14] ।
नीलोफ़रो[15] नाफ़र्मा[16] है रूप कन्हैया का ।
राबेल चमेली भी जलवा है डलैया का ।
दम भरता है जन्नत से हर फूल कटैया का ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ॥

कहता है कमल हर दम मैं पाक नमाज़ी हूं ।
और मोंगरा कहता है मैं मर्द हूं ग़ाज़ी[17] हूं ।
सौसन[18] की जबां बोली मैं तुर्कियो[19] ताज़ी[20] हूं ।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़दरत के बांधा है गुलदस्ता ॥

---

[10] गेंदा, सौ दलों वाला [11] पीले रंग का एक फूल [12] चमेली का फूल [13] रात में खिलने वाला खुशबूदार (फूल) [14] रोशनी का झाड [15] नील कमल [16] नटखट। [17] धर्मबीर [18] एक नीला फूल जिसकी पंखुड़ी ज़बान जैसी होती है। जबान के उपमान के रूप में काव्य में प्रयोग किया जाता है [19] तुर्किस्तान की भाषा तुर्की [20] अरब की भाषा, अरबी

मधुमालती, नागेसर और मौलसिरी, करना।
दोपहरिया दाऊदी गुल चीन कटहल, बरना।
नरगिस भी पुकारे है मुझ पर यह नज़र करना।
पीछे को सुहागिन के सौ इश्क़ के दम भरना।
दुनियां न कहो इसको यह बाग है सरबस्ता।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता।।

गुल केबड़ा कहता है क्या मुझको तराशा है।
और केतकी कहती है सन्दल[21] का तराशा है।
और मोतिया शफ़तालू ज़र सीम का माशा है।
और रंगे हिना मख़मल जो है सो तमाशा है।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है वह गुलदस्ता।।

डेले व कनीज़ों की क्या पंखड़ी ढाली है।
चम्पा व मुचंपा है या मोती की बाली है।।
बगुले व मदन बान की कुछ बात निराली है।
गुल चांदनी कहती है मेरी ही उजाली है।।
दुनिया न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता।।

दस्तार[22] पे गुल तुर्रा क्या शान जमाता है।
कलगा भी उधर अपनी कलगी को हिलाता है।।
और फूल निवाड़े का बजरे को बढ़ाता है।
जो गुल है सो अपने ही जोवन को दिखाता है।।
दुनिया न कहो इसको यह बाग है सरबस्ता।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता।।

---

[21] चंदन [22] पगड़ी

बन आग़ तुरई टेसू क्या फूल रहे बन बन ।
सरसों है अड़ूसा है फिर और ही है सन बन ।।
कहता है पिया बांसा है हुस्न मेरा सोसन ।
दरसन यह पुकारे है आ देख ले सुखदरसन ।।
दुनिया न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ।।

क़ुदरत बनाई जिसने इस बाग़ की डाली है ।
क्या बोलें 'नज़ीर' आगे क्या ख़ूब वह माली है ।।
क्या नख़्ल का डाला है क्या फूल की डाली है ।
सबका वही वारिस है सबका वही वाली[२३] है ।।
दुनियां न कहो इसको यह बाग़ है सरबस्ता ।
क्या दस्त से क़ुदरत के बांधा है यह गुलदस्ता ।।

---

[२३] मालिक

तौहीद+

ख़ुदा की ख़ुदाई

तनहा[१] न उसे अपने दिले तंग में पहचान ।
हर बाग़ में, हर दश्त[२] में, हर संग[३] में पहचान ।।
बे रंग में, बारंग[४] में, नेरंग[५] में पहचान ।
मंज़िल में, मुक़ामात में, फरसंग[६] में पहचान ।।
नित रोम में और हिंद में और ज़ंग[७] में पहचान ।
हर राह में हर साथ में, हर संग में पहचान ।।
हर अज़्म[८] इरादे में, हर आहंग[९] में पहचान ।
हर धूम में, हर सुलह में, हर अंग में पहचान ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।।
आशिक़ है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।१।।

फल पात कहीं शाख, कहीं फूल, कहीं बेल ।
नरगिस कहीं, सोसन कहीं, बेला कहीं राबेल ।।
आज़ाद कोई सबसे, किसी का है कहीं मेल ।
मलता है कोई राख, चंबेली का कोई तेल ।।
करता है कोई जुल्म, तो लेता है कोई झेल ।
बांधे कोई तलवार, उठाता है कोई सेल ।।
अदना कोई, आला कोई, सूखा कोई, डंड पेल ।
जब गौर से देखा, तो उसी के हैं यह सब खेल ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।
आशिक़ है तो दिलबर को, हर इक रंग में पहचान ।।२।।

---

१. अकेला २. जंगल ३. पत्थर ४. रंगीन ५. विभिन्नता ६. लगभग छह मील का एक माप
७. अफ्रीका ८. श्रेष्ठ इरादा ९. आवाज़

+ईश्वर को एक मानना, अद्वैतवाद

गाता है कोई शौक़ में, करता है कोई हाल[10] ।
फांकें(१) है कोई ख़ाक, उड़ाता है कोई माल ।।
हंसता है कोई शाद, किसी का है बुरा हाल ।
रोता है कोई होके ग़मो दर्द में पामाल[11] ।।
नाचे है कोई शोख़, बजाता है कोई ताल(२) ।
पहने है कोई चीथड़े ओढ़े है कोई शाल ।।
करता है कोई नाज़, दिखाता है कोई बाल ।
जब ग़ौर से देखा तो उसी की हैं यह सब चाल ।।
हर आन में हर बात में, हर ढ़ंग में पहचान ।
आशिक़ है तो दिलबर को, हर रंग में पहचान ।।३।।

जाता है हरम[12] में, कोई क़ुरआन बग़ल मार ।
कहता है कोई दौर[13] में पोथी के(३) समाचार ।।
पहुंचा है कोई पार, भटकता है कोई वार ।
बैठा है कोई ऐश में, फिरता है कोई ज़ार ।।
आ़जिज़[14] कोई, बेबस कोई, ज़ालिम कोई लठमार ।
मुफ्लिस[15] कोई नाचार तवांगर[16] कोई ज़रदार[17] ।।
ज़ख़्मी कोई, माँदा कोई, अच्छा कोई बदकार ।
जब ग़ौर से देखा, तो उसी के हैं सब असरार[18] ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।।
आशिक़ है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।४।।

है कोई दिली दोस्त, कोई जान का दुश्मन ।
बैठा है पहाड़ों में, कोई फिरता है बन बन ।।
माला कोई जपता है, कोई शौक़ं में सुमिरन ।
छोड़े है कोई माल समेटे है कोई धन ।।
निकले हैं जवाहर के कोई पहन के अबरन ।
लोटे है कोई ख़ाक में रो-रो के मिला तन ।।

---

१०. सूफ़ियों का मस्ती में नाचना ११. पददलित, दुखी १२. काबा, ख़ुदा का घर १३. मन्दिर
१४. विवश १५. गरीब १६. धनी १७. धनी १८. रहस्य

पाठान्तर—(१) जा० छाने
(२) जा० गाल
(३) क़ा० जा० की

जोगी कोई, भोगी कोई, सोगी कोई, सोहगन ।
जब ग़ौर से देखा, तो उसी के हैं यह सब फ़न ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।
आशिक है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।५।।

सर्दी कहीं, गर्मी कही, जाड़ा कहीं, बरसात ।
दोज़ख कहीं बैकुंठ कहीं अर्जो समावात[19] ।।
हूरें कहीं, गुल्मां कहीं, परियां कहीं जिन्नात ।
ऊजड़ कहीं, बस्ती कहीं, जंगल कहीं देहात ।।
सख़्ती कहीं, राहत कहीं, गर्दिश[20] कहीं सकनात[21] ।
शादी कहीं, मातम, कहीं, नूर और कहीं ज़ुल्मात ।।
तारे कहीं सूरज कहीं बुर्ज और कहीं दिन-रात ।
जब गौर से देखा तो उसी के हैं तिलिस्मात[22] ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।।
आशिक़ है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।६।।

बेचे हैं जवाहर(१) कोई ज़र सीमो तिला रांग ।
मारे कोई पारे को वनाये कोई मिरगांग ।।
देता है कोई हाथ से, लेता है कोई मांग ।
मोहताज कोई क़ुव्वत का, रखता है कोई दांग ।।
ठहरा है कोई चोर, लगाता है कोई थांग ।
मलता है कोई पोस्त को, छाने है कोई भांग ।।
घंटा है कहीं झांझ, कहीं संख कहीं बांग ।
जब ग़ौर से देखा तो उसी के हैं यह सब स्वांग ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।
आशिक़ है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।७।।

---

१९. ज़मीन, आसमान २०. घूमना, दुर्भाग्य २१. ठहरना, चैन २२. जादू

पाठान्तर—(१) का० जौहर

नारी कोई बाँदी, कोई ख़ाकी कोई आबी ।
सूफ़ी कोई ज़ाहिद कोई मदमस्त शराबी ।।
बातें कोई बैठा हुआ, करता है किताबी ।
पीता है कोई कैफ़, कोई मै की गुलाबी ।।
मारे है ज़टल कोई कहीं जेब है दाबी ।
सच्चा कोई झूठा है कोई रिंद ख़राबी ।।
काला कोई गोरा, कोई पीला कोई आबी ।
हैं उसकी ही क़ुदरत के यह सब लाल गुलाबी ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।।
आशिक़ है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।८।।

क्या हुस्न कहीं पाया है, अल्लाह ही अल्लाह ! ।
क्या इश्क़ कहीं छाया है; अल्लाह ही अल्लाह ! ।।
क्या रंग यह रंगवाया है; अल्लाह ही अल्लाह ! ।
क्या नूर यह झमकाया है, अल्लाह ही अल्लाह ! ।।
क्या धूप है क्या साया है, अल्लाह ही अल्लाह ! ।
क्या मेहर है क्या माया है, अल्लाह ही अल्लाह ।।
क्या ठाठ यह ठहराया है, अल्लाह ही अल्लाह ।
क्या भेद "नज़ीर" आया है, अल्लाह ही अल्लाह ।।
हर आन में हर बात में, हर ढंग में पहचान ।
आशिक है तो दिलबर को हर एक रंग में पहचान ।।९।।

पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं

जो फ़क़्र[1] में पूरे हैं वह हर हाल में खुश हैं ।
हर काम में हर दाम में, हर हाल में खुश हैं ।।
गर माल दिया यार ने, तो माल में खुश हैं ।
बे जर जो किया, तो उसी अहवाल में खुश हैं ।।
इफ़्लास[2] में इदबार[3] में, इक़्बाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ।।१।।

चेहरे पे मलामत[4], न जिगर में असरे ग़म ।
माथे पे कहीं चैंन, न अबरू[5] में कहीं ख़म ।।
शिक्वा न ज़ुबां, पर, न कभी चश्म हुई नम ।
ग़म में भी वही ऐश, अलम में भी वही दम ।।
हर बात हर औक़ात, हर अफ़आ़ल[6] में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ।।२।।

गर यार की मर्ज़ी हुई सर जोड़ के बैठे ।
घर बार छुड़ाया तो वहीं छोड़ के बैठे ।।
मोड़ा उन्हें जिधर वहां मुंह मोड़ के बैठे ।
गुदड़ी जो सिलाई तो वही ओढ़ के बैठे ।।
गर शाल उढ़ाई तो उसी शाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं ।।३।।

गर उसने दिया ग़म तो उसी ग़म में रहे खुश ।
और उसने जो मातम दिया, मातम में रहे खुश ।।
खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे खुश ।
जिस तौर कहा उसने उस आ़लम में रहे खुश ।।
दुख दर्द में आफ़ात में जंजाल में खुश है ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ।।४।।

---

[1] साधुता [2] गरीबी, मुफलिसी [3] गरीबी [4] भर्त्सना, निन्दा [5] भौंह [6] कार्य

जीने का न अन्दोह न मरने का ज़रा ग़म ।
यकसां है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम ॥
वाक़िफ़ न बरस से, न महीने से वह एक दम ।
ने शब की मुसीबत, न कभी रोज का मातम ॥
दिन रात घड़ी, पहर(१) में औ साल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश है ॥५॥

गर उसने उढ़ाया तो लिया ओढ़ दुशाला ।
कम्बल जो दिया, तो वही कांधे पे संभाला ॥
चादर जो उढ़ाई, तो वही हो गई बाला ।
बंधवाई लंगोटी तो वहीं हंस के कहा 'ला' ॥
पोशाक में दस्तार में, रूमाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ॥६॥

गर खाट बिछाने को मिली खाट में सोये ।
दूकां में सुलाया, तो वह जा हाट में सोये ॥
रस्ते में कहा, सो, तो वह जा बाट में सोये ।
गर टाट बिछाने को दिया, टाट में सोये ॥
और खाल बिछा दी, तो उसी खाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ॥७॥

प्याले को दिया हाथ, तो हो निकले भिखारी ।
बिठला के खिलाया, तो वहीं उम्र गुजारी ॥
मियाने[८] पे चढ़ाया, तो लगे करने सवारी ।
और पांव चलाया, तो वही बात संवारी ॥
जिस चाल में रक्खा, वह उसी चाल में खुश हैं ॥
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ॥८॥

---

[८] एक प्रकार की पालकी

पाठान्तर—(१) जा० महर

गर मोंठ मंगा दी तो वही चाब ली खुश हो।
और ज्वार भुना दी, तो वही चाब ली खुश हो॥
सूखी जो दिला दी, तो वही चाब ली खुश हो।
रूखी जो उठा दी, तो वही चाब ली खुश हो॥
और दाल खिलाई, तो उसी दाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं॥९॥

पानी जो मिला पी लिया, जिस तौर का पाया।
रोटी जो मिली तो किया रोटी में गुजारा॥
दी भूख अगर यार ने, तो भूख को मारा।
दिलशाद रहे, करके कड़ाके पे कड़ाका॥
और छाल चबाई, तो उसी छाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं॥१०॥

गर उसने कहा सैर करो जाके जहां की।
तो फिरने लगे जंगलो बरमार के झांकी॥
कुछ दश्तो[१०] वियावां[११] में ख़बर तन की न जां की।
और फिर जो कहा, सैर करो, हुस्ने[१२] बुतां की॥
तो चश्मो[१३], रूख़ो[१४], जुल्फ़ो, ख़तो ख़ाल[१५] में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥११॥

कश्क़े[१६] का हुआ हुक्म, तो क़श्क़ा वहीं ख़ींचा।
जुब्वे[१७] की रज़ा देखी, जो जुब्बा वहीं पहना॥
आज़ाद कहा हो तो वही सर को मुड़ाया।
जो रंग कहा, उसने वही रंग रंगाया॥
क्या ज़र्द में, क्या सब्ज में, क्या लाल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥१२॥

---

९. खुश १०. जंगल ११. मरुस्थल १२. माशूका की सुन्दरता १३. आंख १४. गाल, कपोल
१५. तिल-बिन्दु १६. तिलक १७. अंगरखा, चोगा

चादर जो उढ़ाई तो जती हो गये यकबार ।
बाहर को चले, फ़क्र की झोली को बग़ल मार ॥
मुंह बांध के निकलो, तो वहीं हो गए तैयार ।
सर घोंट मुंडाओं, तो किया फिर वही विस्तार ॥
सब पंथ में सब चाल में, सब ढाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ॥१३॥

कुछ उनको तलब घर की न बाहर से उन्हें काम ।
तकिये की न ख्वाहिश है न विस्तर से उन्हें काम ॥
इस्थल की हवस दिल में, न मन्दिर से उन्हें काम ।
मुफ़्लिस से न मतलब, न तवांगर से उन्हें काम ॥
मैदान में बाजार में, चौपाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं ॥१४॥

उनके तो जहां में अजब आलम हैं, 'नज़ीर' आह !
अब ऐसे तो दुनियां में, वली कम हैं, 'नज़ीर' आह ॥
क्या जाने फ़रिश्ते हैं, कि आदम है 'नज़ीर' आह !
हर वक़्त में हर आन में, खुर्रम हैं 'नज़ीर' आह ॥
जिस ढाल में रखा, वह उसी ढाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वही मर्द, जो हर हाल में खुश हैं ॥१५॥

दम का तमाशा

दुनियां में सब दम का तमाशा है

जहां में जब तलक यारो ! हमारे जिस्म में दम है ।
कभी हंसना, कभी रोना, कभी शादी, कभी ग़म है ।।
कहें किस किस से क्या-क्या एक दम के साथ आलम है ।
मगर जो साहिबे दम है वह इस नुक्ते से महरम है ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न आदम है ।।१।।

मशक़्क़त, महनतों से जमा करना दाम दरहम का ।
तअल्लुक रंज राहत का तफ़क्कुर बेश और कम का ।।
कभी सामान इश्रत का, कभी असबाब मातम का ।
कहूं क्या क्या ? गरज़, यारो ! यह झगड़ा है सब इस दम का ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।२।।

इसी दम के, कहूं मैं सीम और ज़र में थपेड़े हैं ।
इसी के वास्ते इत्र और गुलाबों के तड़ेड़े हैं ।।
जलेबी, इमरती, वर्फ़ी, गुलाबी, लड्डू, पेड़े हैं ।
ग़रज मैं क्या कहूं ? यारो, यह सब दम के वखेड़े हैं ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।३।।

इसी दम के लिए क्या महल यह संगीं तराशे हैं ।
इसी के वास्ते ज़र सीम के तोले व माशे हैं ।।
बहारों बाग़ो सहरा सैद[1] और शिकरे व बाशे हैं ।
फ़क़त दम के ही आने के यह सब यारो तमाशे हैं ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है न जादम है ।।४।।

---

[1] शिकार, शिकार का जानवर

इसी दम की हैं पोशाकें यह रंगी इत्र में डूबी ।
इसी के वास्ते हैं सब तरहदारी व मरग़ूबीं ।।
गदाई, बादशाही, आशिक़ी, रिंदी व महबूबी ।
इसी दम के ही आने की है,—ऐ यारो, यह सब ख़ूबी ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।५।।

इसी दम के लिए अफ़यूं, शराबो, पोस्त बंगें हैं ।
नशे, मस्ती, तराने, ऐशो इश्रत की तरंगें हैं ।।
मुहब्बत, दोस्ती, इख़लास, उल्फत, सुलह, जंगें हैं ।
इसी दम के ही आने की यह सब यारो उमंगें हैं ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।६।।

यही दम हाथी, घोड़े. पालकी, हौदज पे चढ़ता है ।
यही दम बेकसी में नंगे पावों में खदड़ता है ।।
कोई मुफ़्लिस हो घटता है, कोई उम्दा हो बढ़ता है ।
जो कुछ है ऊंचा नीचा यारो सब यह दम ही गढ़ता है ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।७।।

इसी दम के लिए यह सब बने हैं सुख जमाने के ।
मज़े ऐशो तरब के, और तहम्मुल दुख उठाने के ।।
जहां तक शादियो ग़म हैं जहां के कारखाने के ।
यह सब दुख सुख हैं ऐ यारो, इसी इक दम के आने के ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।८।।

इसी दम के लिए बदली में बगुलों की क़तारें हैं ।
इसी के वास्ते अब्रो हवाओ मेंह की धारें हैं ।।
चमन, गुलज़ार बूटा, फूल, फल और आबशारे हैं ।
"नज़ीर" अब क्या कहें ? यारो, यह सब दम की बहारें हैं ।।
जो आया दम तो आदम है, इसी आदम का आदम है ।
न आया दम तो फिर दम में न आदम है, न जादम है ।।९।।

अजल का पयाम

मौत का धड़का

दुनियां के बीच में जो कोई ख़ासो आम है ।
क्या शाह क्या वज़ीर मियां क्या ग़ुलाम है ।।
गर्दन के बीच मौत का अब सबके दाम है ।
हम दम का आना जाना जो अब सुबहो शाम है ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१।।

जिस रोज़ उसकी ज़ात पे हस्ती का आया नाम ।
उस दिन से नेस्ती तो उसे कर चुकी सलाम ।।
हर वक़्त उसको मौत का जाने लगा सलाम ।
यह जो निकल बक़ा ने फ़ना में किया मुक़ाम ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।२।।

हस्ती के जब से नाम पे उसकी क़लम चली ।
हस्ती के है ज़मी से लगी साथ नेस्ती ।।
कुछ बात हस्तो नेस्त की जाती नहीं कही ।
ग़फ़लत से अपनी यह यों ही जाती है ज़िन्दगी ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।३।।

रोटी से खून, खून से नुत्फ़े जहां बना ।
हालात भी जब ही से लगी होने फिर फ़ना ।।
जबीं हो गई ग़रवाल में छिना ।
आखिर जब उसकी मां ने ज़मीं के उपर जना ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।४।।

पैदा हुआ तो करने लगा रोके 'हाव' 'हाव' ।
जो बेस्ती थी सो वह हुई हस्ती उसके भाव ।।
फिर घुटनों से चलने लगा फिरने पांव पांव ।
माँ ने पिलाया दूध तो बावा ने रखा नांव ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।५।।

तन में जब उसके आ के दाखिल हुआ बढ़ाव ।
जाना बढ़ाव उसने व लेकिन था वह घटाव ।।
सो सो तरह के दिल में लगे होने राव चाव ।
जो ऐन था लगाव वह सूझा उसे बनाव ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।६।।

दस पन्द्रह वर्ष हो गए जब उम्र सेरवाँ ।
फिर ऐशो इश्रतों की हविस आई दरमियां ।।
फूला यह दिल में मां जी हुआ अब मैं जवां ।
इसकी जवानी का मैं करूं ज़िक्र क्या बयां ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।७।।

जब आए उसके तन बदन जवानी के बबूले ।
मा बाप निस्बत करके उसे ब्याहने चले ।।
जब ब्याह लाये करके बहुत चाव चौचले ।
यह खुश हुआ मैं लाया दुलहिन ब्याह कर चले ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।८।।

लज्ज़त मिली जो फिर उसे ऐशो तमाअ की ।
दिन रात उस मज़े में न फिर कल उसे पड़ी ।।
जब कसरत जमाअ से मनी घटी ।
जो ऐश ज़िन्दगी थी वही सब निकल गई ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।९।।

शुहबत में उसका खूब सा जिसदम लहू चुआ ।
इस खून का शिकम में बंधा आनकर थुआ ।।
फिर बाद नो महीने के बेटा जहां हुआ ।
बेटा वह क्या हुआ कि हुआ बाप अधमुआ ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१०।।

जब तक जवां रहें इश्रत की थी नमूद ।
और जब ढली जवानी तो गम का हुआ वजूद ।।
दाढ़ी के बाल थे निहायत स्याह कबूद ।
जब उस स्याही में वह सफ़ेदी हुई नमूद ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।११।।

दो चार लड़के उसमें हुए जबकि उनके हां ।
फिर उनके घर में पैदा हुए लड़के लड़कियां ।।
या 'बावा' 'बाबा' कहते थे सब उनको हर जमां ।
या 'नाना' 'दादा' नाम हुआ उनका फिर वहां ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१२।।

जबसे सफेद हो गए जो बाल थे स्याह ।
फिर वह तो खासे मोत के आकर हुए गवाह ।।
उसमें घटी जो उनकी आंखों की फिर निगाह ।
उन कम निगाहियों का बयां क्या करूं में आह ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१३।।

कानों पे उनके जिस घड़ी आ हादसा पड़ा ।
गफलत की नींद तो भी न उनकी गई ज़रा ।।
हंस हंस के मुंह से दांत भी उसके हुए जुदा ।
रोटी लगे निगलने मसूड़ों से पुल पुला ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१४।

जिस वक़्त उनके नूर हुआ कम निगाह का ।
ऐनक को रख के नाक पै फिर देखने लगा ।।
कानों के बीच उसमें कम आने लगी सदा ।
खासे बहिश्ती वहरे हुए फिर तो वाह ! वाह ! ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१५।।

फिर नीदो भूक उनकी में आकर हुई कमी ।
गर्दन हिली । कमर झुकी और दिल हुआ हज़ी ।।
उनकी तो यहां से चलने की तैयारियां हुई ।
क़द झुक गया फिर उनको खबर तो भी कुछ नहीं ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१६।।

जैसे कि हंसते फिरते थे यारों के साथ में ।
वैसे ही बूढ़े होके पड़े मुश्किलात में ।।
ताकत क़मर की कम हुई, असा आया हाथ में ।
रोना फिर उनको आने लगा बात बात में ।।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है ।।१७।।

था गोश्त उनके जिस्म का वह किस कदर कड़ा।
वैसा ही आख़िरश को हुआ नरम पुल पुला॥
दाना के सामने तो न परवा कोई रहा।
उसमें मरीज़ होके जो खाने लगे दवा॥
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है॥१८॥

जाती रही जवानी वह होशो हवास आह।
और तन भी उसका सूत हुआ मिस्ल घास आह॥
जो भी दवा दी उसको वह आई न रास आह।
मुर्दे की तन से आने लगी उसके बास आह॥
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है॥१९॥

आए फिर उसको वजअ में हसरत के बलवले।
दो हिचकियां लीं और यह दुनिया से चल लिये॥
नाहक़ अदम से आके हम इस जाल में फसे।
समझे कोई तो यह भी अजल का पयाम है॥२०॥

दम ग़नीमत है

ऐश दुनिया को गनीमत जानो

देख, टुक ग़ाफिल चमन को गुल फ़िशानी[1] फिर कहां ?
यह बहारें, ऐश(१), यह शोरे जवानी फिर कहां ?
साकीयो मुतरिब, शराबे अर्ग़वानी[2] फिर कहाँ ?
ऐश कर ख़ूबां में, ऐ दिल शादमानी[3] फिर कहां ?
शादमानी गर हुई, तो ज़िन्दगानी फिर कहां ? ॥१॥

यह जो बांके गुल बदन मिलते हैं सौ-सौ घात से ।
कुछ मज़े कुछ लूट हिज़[4] इन गुल रुख़ों की ज़ात से ॥
एक दम हरगिज जुदा मत हो, तू इनके सात से ।
जिस क़दर पीना हो पी ले, पानी इनके हात से ॥
आबे जन्नत तो बहुत होगा, यह पानी फिर कहां ? ॥२॥

यह जो कड़वे होके हमको अब झिड़कते हैं यहां ।
इनकी तल्ख़ी[5] में हजारों है भरी शीरीनियां ॥
उठ सकें जब तक उठा ऐ ! दिल तू इनकी सख़्तियां ।
लज़्ज़तें जन्नत के मेवे की बहुत होंगी वहां ॥
पर यह मीठी गालियां ख़ूबां[6] की खानी फिर कहां ? ॥३॥

यह तो फिरते हैं सुनहरी सब्ज पोशाकें किए ।
ख़ाक हो तो भी लगा रह इनके तू दामान से ॥
इनकी पोशाकों की रंगत को ग़नीमत जान ले ।
वां तो हुल्ले[7] हैं बले ! यह जोड़े रंगारंग के ॥
सोसनी, सोहनी, गुलाबी, ज़ाफ़रानी फिर कहां ॥४॥

---

१. फूल बरसाना २. लाल रंग की ३. खुशी ४. मज़े
५. कड़ुवापन ६. सुन्दरियां ७. वह कपड़े जो स्वर्ग में दिये जाते हैं ।

पाठान्तर—(१) श० आ० इश्क़

रह वहीं ऐ दिल सदा महबूब रहते हैं जहां ।
कर ले उनकी खिदमतें हर दम दिलो जां से मियां ॥
जो तुझे देवें सो ले ले और ग़नीमत इसको जां ।
वां तो हां हूरों के गहने के बहुत होंगे निशां ॥
इन परी ज़ादों के छल्लों की निशानी फिर कहां ? ॥५॥

मुंह जो दिखलाते हैं खूवां दम बदम अब तोड़ जोड़ ।
देख ग़ाफ़िल उनके तू जोरो जफ़ा से मुंह न मोड़ ॥
जिस घड़ी आकर फ़ना अपनी दिखावेगी मड़ोड़ ।
फिर तो इक दम में चला जावेगा तू इन सबको छोड़ ॥
यह हटीले दिलरुबा महबूब जानी फिर कहां ॥६॥

हुस्ने ख़ूवां की जहां कुछ हो रही हो दास्तां ।
कान रखकर सुन उसे और याद रख हरदम मियां ॥
उनकी एक-एक बात का सुनना तुझे लाज़िम है जां ।
वां तो किस्से हूरो गुल्मां के वहुत होंगे बयां ॥
इनकी पुर जुल्फ़ो कमर की यह कहानी फिर कहां ॥७॥

हो सके जिस तौर सुन ले दोस्तों की वारदात ।
और वयां कर आगे उनके हों जो तुझ पर मुश्किलात ॥
जिस घड़ी आई कज़ा कोई न फिर पूछेगा बात ।
उल्फ़तो महरो मुहब्बत सब हैं जीते जी के सात ॥
मेहरबां ही उठ गये यह मेहरबानी फिर कहां ? ॥८॥

अब जो आग़ाज़े जवानी की बहारें हैं मियां ।
ऐशो इश्रत में उड़ा ले ज़िंदगी की ख़ूबियां ॥
पी नशे, धूमें मचा, कर सैर बाग़ो बोस्तां ।
वाजज़ो नासह[८] बकें तो उनके कहने को न मान ॥
दम ग़नीमत है मियां, यह नौजवानी फिर कहां ? ॥९॥

होके हर दम खूबरूओं की मुहब्बत में असीर ।
खा निगाहे सुर्मा साकी नाविकों के दिल में तीर ॥
वस्फ़[९] अब इनका जो करना है सो कर ले दिल पज़ीर ।
जा पड़े चुप होके जब शहरे ख़मोशां में 'नज़ीर' ॥
यह ग़ज़ल यह रेख़्ता, यह शेरख़्वानी फिर कहां ? ॥१०॥

---

[८] नसीहत करने वाले [९] तारीफ़

वज़्द-व-हाल+

क्या इल्म उन्होंने सीख लिया, जो बिन लिक्खेको बांचे हैं ।
और बात नहीं मुंह से निकले बिन होंठ हिलाये जाचे हैं ।।
दिल उनके तार सितारों के तन उनके तबल तमाचे हैं ।
मुंह चंग ज़बां, दिल सारंगी, पा घुंघरू हाथ कमाचे हैं ।
हैं राग उन्हीं के रंग भरे और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो बेगत, बे सुर ताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ।।१।।

कुल बाजे बजकर टूट गए आवाज़ लगी जब भर्राने(१) ।
और छम-छम(२) घुंघरू बंद हुए तब गत का अंत लगे पाने ।।
संगीत नहीं यह संगत हैं नटवे भी जिससे नट मानें ।
यह नाच कोई क्या पहचाने, इस नाच को नाचे सो जाने ।।
हैं राग उन्हीं के रंग भरे, और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो बेगत, बे सुर ताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ।।२।।

जब हाथ को धोया हाथों से जब हाथ लगे थिरकाने को ।
और पांव को खींचा पावों से, जब पांव लगे गत पाने को ।।
जब आंख उठाई हंसने से, जब नैन लगे मटकाने को ।
सब छाछ कछे, सब नाच नचे, उस रसिया छैल रिझाने को ।।
हैं राग उन्हीं के रंग भरे, और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो वेगत बे सुर ताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ।।३।।

जो आग जिगर में भड़की है, उस शोले की उजियाली है ।
जो मुंह पर हुस्न की जर्दी है, उस जर्दी की सब लाली है ।।
जिस गत पर उनका पांव पड़ा, उस गत की चाल निराली है ।
जिस मजलिस में वह नाचे हैं, वह मजलिस सबसे खाली है ।।
हैं राग उन्हीं के रंग भरे और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो बेगत बे सुर ताल हुए विन ताल पखावज नाचे हैं ।।४।।

+ आनन्दाधिक्य से आत्म विस्मृत होकर झूमना ।

पाठान्तर--(१) श० आ० जा० लहराने (२) का० झम झम

सब घटना बढ़ना फेंक इधर और ध्यान उधर धर मरते हैं ।
बिन तारों तार मिलाते हैं, जब निरत निराला करते हैं ॥
बिन गहने झमक दिखाते हैं, बिन जोड़े मन को हरते हैं ।
बिन हाथों भाव बताते हैं, बिन पांव खड़े गत भरते हैं ॥
हैं राग उन्हीं के रंग भरे, और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो बेगत बे सुर ताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ॥५॥

था जिनकी ख़ातिर नाच नचा, जब सूरत उनकी आय गई ।
कहीं आप कहा, कहीं नाच किया और तान कहीं लहराय गई ॥
जब छैल छबीले सुन्दर की, छबि नैनन अन्दर छाय गई ।
एक मूर्छा गत सी आय गई, और जोत में जोत समाय गई ॥
हैं राग उन्हीं के रंग भरे, और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो बेगत बे सुर ताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ॥६॥

सब होश बदन का दूर हुआ, जब गत पर आ मरदंग बजी ।
तन भंग हुआ, दिल दंग हुआ, सब आन गई बे आन सजी ॥
यह नाचा कोई 'नज़ीर' अब यां औ किसने देखा नाच अजी ।
जब बूंद मिली जा दरिया में, इस तान का आख़िर निकला जी ॥
हैं राग उन्हीं के रंग भरे और भाव उन्हीं के सांचे हैं ।
जो बेगत बे सुर ताल हुए, बिन ताल पखावज नाचे हैं ॥७॥

रोटियां

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियां ।
फूली नहीं बदन में समाती हैं रोटियां ॥
आंखें परीरुखों[1] से लड़ाती हैं रोटियां ।
सीने उपर भी हाथ चलाती हैं रोटियां ॥
जितने मज़े हैं सब यह दिखाती हैं रोटियां ॥१॥

रोटी से जिनका नाक तलक पेट है भरा ।
करता फिरे है क्या वह उछल कूद जा बजा ॥
दीवार फ़ांद कर कोई कोठा उछल गया ।
ठट्ठा हंसी शराब, सनम साक़ी, उस सिवा ॥
सौ सौ तरह की धूम मचाती हैं रोटियां ॥२॥

जिस जा पे हांडी, चूल्हा तवा और तनूर है ।
ख़ालिक की कुदरतों का उसी जा जहूर है ॥
चूल्हे के आगे आंच जो जलती हुज़ूर है ।
जितने हैं नूर सब में यही ख़ास नूर है ॥
इस नूर के सबब नज़र आती हैं रोटियां ॥३॥

आवे तवे तनूर का जिस जा ज़ुबां पे नाम ।
या चक्की चूल्हे के जहां गुलज़ार हो तमाम ॥
वां(१) सर झुका के कीजे दण्डवत और सलाम ।
इस वास्ते कि ख़ास यह रोटी के हैं मुकाम ॥
पहले इन्हीं मकानों में आती हैं रोटियां ॥४॥

---

[1] परियों जैसी शक्ल सूरत वाली

पाठान्तर—(१) श० मां

इन रोटियों के नूर से सब दिल हैं पूर पूर(१) ।
आटा नहीं है छलनी से छन-छन गिरे है नूर ॥
पेड़ा हर एक उसका है बर्फ़ी या मोती चूर ।
हरगिज़ किसी तरह न बुझे पेट का तनूर ॥
इस आग को मगर यह बुझाती हैं रोटियां ॥५॥

पूछा किसी ने यह किसी कामिल[2] फ़क़ीर से ।
यह मेहरो[3] माह[4] हक़ ने बनाए हैं काहे के ॥
वह सुनके बोला, बाबा ख़ुदा तुझको ख़ैर दे ।
हम तो न चांद समझें, न सूरज हैं जानते ॥
बाबा हमें तो यह नज़र आती हैं रोटियां ॥६॥

फिर पूछा उसने कहिये यह है दिल का नूर क्या ?
इसके मुशाहिदें[5] में है खिलता ज़हूर[6] क्या ?
वह बोला सुनके तेरा गया है शऊर क्या ?
कश्फ़ुलक़ुलूब[7] और कश्फ़ुलक़ुबूर[8] क्या ?
जितने हैं कश्फ[9] सब यह दिखाती है रोटियां ॥७॥

रोटी जब आई पेट में सौ क़न्द[10] घुल गए ।
गुलज़ार[11] फूले आंखों में और ऐश तुल गए ॥
दो तर निवाले पेट में जब आके ढुल गए ।
चौदह तबक़[12] के जितने थे सब भेद खुल गए ॥
यह कश्फ़ यह कमाल दिखाती हैं रोटियां ॥८॥

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो ।
मेले की सैर ख्वाहिशे बागो चमन न हो ॥
भूके ग़रीब दिल की ख़ुदा से लगन न हो ।
सच है कहा किसी ने कि भूके भजन न हो ॥
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियां ॥९॥

---

२. निपुण, होशियार ३. सूर्य ४. चांद ५. निरीक्षण ६. प्रकट ७. हृदय का गुप्तज्ञान
८. कब्र का गुप्त ज्ञान ९. गुप्त ज्ञान १०. शकर ११. बाग १२. चौदह लोक
पाठान्तर—(१) क़ा० जा० बूर बूर

अब जिनके(१) आगे माल पुए भर के थाल हैं ।
पूरे(२) भगत उन्हें कहो, साहब के लाल हैं ॥
और जिनके आगे रोग़नी और शीरमाल हैं ।
आरिफ़ वही हैं और वही साहिब कमाल है ॥
पक्की पकाई अब जिन्हें आती हैं रोटियां ॥१०॥

कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते ।
लम्बे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते ॥
बांधे कोई रुमाल हैं रोटी के वास्ते ।
सब कश्फ़ और कमाल हैं रोटी के वास्ते ॥
जितने हैं रूप सब यह दिखाती हैं रोटियां ॥११॥

रोटी से नाचे प्यादा क़वाइद दिखा दिखां ।
असवार नाचे घोड़े का कावा लगा लगा ॥
घुंघरू को बांधे पैक[१३] भी फिरता है जा बजा ।
और इस सिवा जो ग़ौर से देखा तो जा बजा ॥
सौ सौ तरह के नाच दिखाती हैं रोटियां ॥१२॥

रोटी के नाच तो हैं सभी ख़ल्क में बड़े(१) ।
कुछ भांड भगतिये यह नहीं फिरते नाचते ॥
यह रण्डियां जो नाचें हैं घूंघट को मुंह पे ले ।
घूंघट न जानो दोस्तो ! तुम ज़िनहार[१४] इसे ॥
उस पर्दे में यह अपनी कमाती हैं रोटियां ॥१३॥

वह जो नाचने में बताती हैं भाव-ताव ।
चितवन इशारतों से कहें हैं कि 'रोटी लाव' ॥
रोटी के सब सिंगार हैं रोटी के राव-चाव ।
रंडी की ताब क्या जो करे इस कदर बनाव ॥
यह आन यह झमक तो दिखाती हैं रोटियां ॥१४॥

---

[१३] पत्रवाहक, डाकिया । उस काल में डाकिया अपने पैर या लाठी में घुंघरू बांधे थे । [१४] कदापि, हरगिज़

पाठान्तर—(१) क़ा० जिसके, जा० आगे जिसके (२) श० आं० पूरी
पाठान्तर—(१) जा० पड़े

अशराफ़ों ने जो अपनी यह ज़ातें छुपाई हैं।
सच पूछिये, तो अपनी यह शानें बढ़ाई हैं॥
कहिये उन्हीं की रोटियां कि किसने खाई हैं।
अशराफ़[१५] सब में कहिए, तो अब नान बाई हैं॥
जिनकी दुकान से हर कहीं जाती हैं रोटियां॥१५॥

भटियारियां कहावें न अब क्योंकि रानियां।
मेहतर खसम हैं उनके वह हैं मेहतरानियां॥
ज़ातों में जितने और हैं क़िस्से कहानियां।
सबमें उन्हीं की ज़ात की ऊंची हैं बानियां॥
किस वास्ते कि सब यह पकाती हैं रोटियां॥१६॥

दुनियां में अब बदी न कहीं औ निकोई[१६] है।
ना(१) दुश्मनी न दोस्ती ना तुन्दखोई[१७] है॥
कोई किसी का, और किसी का न कोई है।
सब कोई है उसी का कि जिस हाथ डोई है॥
नौकर नफ़र[१८] ग़ुलाम बनाती हैं रोटियां॥१७॥

रोटी का अब अज़ल से हमारा तो है ख़मीर।
रूखी भी रोटी हक़ में हमारे है शहदो शीर॥
या पतली होवे मोटी ख़मीरी हो या फ़तीर[१९]।
गेहूं, ज्वार, बाजरे की जैसी भी हो 'नज़ीर'॥
हमको तो सब तरह की ख़ुश आती हैं रोटियां॥१८॥

---

१५. शरीफ़ का बहुवचन। कुलीन, खानदानी १६. अच्छाई १७. बदमिजाज़ी १८. मज़दूर १९. गुंधे हुए आटे की।

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० या

चपाती

जब मिली रोटी हमें, सब नूरे हक़ रोशन हुए ।
रात दिन, शम्सो क़मर शामो शफ़क़ रोशन हुए ।।
ज़िन्दगी के थे जो कुछ, नज़्मो नस्क़[1] रोशन हुए ।
अपने बेगानों के लाज़िम, थे जो हक़ रोशन हुए ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।१।।

वह जो अब खाते हैं बाक़र खानी, कुलचा[2], शीरमाल ।
हैं वह ख़ासुलख़ास, दरगाहे करीमे ज़ुलजलाल[3] ।।
यह जो रोटी दाल का रखते हैं हम गर्दन में जाल ।
जब मिली रोटी वहीं हम हो गए साहिबे कमाल ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।२।।

वह तो अब मर्दे ख़ुदा हैं, कुव्वत जिनका नूर है ।
वह मलाइक[4] हैं, वहां रोटी का क्या मज़कूर है ।।
दिल हमारा तो फ़कत, रोटी का अब रंजूर[5] है ।
हम शिकम बन्दो का यारो, बस यही दस्तूर है ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।३।।

पेट में रोटी पड़ी, जब तक तो यारो ख़ैर है ।
गर न हो फिर ग़ैर का अपने ही जी से बैर है ।।
खाते ही दो तर निवाले आसमां पर पैर है ।
आसमां क्या, फिर तो ख़ासे, ला मकां की सैर है ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकावी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।४।।

---

[1] इंतजाम, ब्यबस्था [2] खमीरी टिकिया [3] प्रताप वाला दयालु और प्रताप वाले ईश्वर की दरगाह में वे ही प्रमुख हैं [4] देवता, फरिश्ते [5] दुखी, रोगी, बीमार

जब तलक रोटी का टुकड़ा हो न दस्तर ख्वान पर ।
ने नमाज़ों में लगे दिल, और न कुछ कुर्आन पर ।।
रात दिन रोटी चढ़ी, रहती है सबके ध्यान पर ।
क्या ख़ुदाका नूर बरसे हैं पड़ा हर नान पर ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।५।।

गर न हों दो रोटियां और एक प्याला दाल का ।
खेल फिर बिगड़ा फिरे, यां हाल का और क़ाल का ।।
गर न हो रोटी तो किसका पीर किसका बाल का ।
वस्फ़[६] किस मुंह से करूं मैं नान के अह्वाल का ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।६।।

पेट में रोटी न थी जब तक दो आलम था स्याह ।
जब पड़ी रोटी, तो पहुंची अर्श के ऊपर निगाह ।।
खुल गए पर्दे थे जितने माही से ले ताबा माह ।
क्या करामत है फ़क़त रोटी में यारो वाह, वाह ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।७।।

यूं चमकता है पड़ा हर आन गिरेवः[७] नान का ।
जान आती है, लिये से नाम दस्तरख़्वान का ।।
चांद का टुकड़ा कहूं मैं, या कि टुकड़ा जान(१) का ।
रूह नाचे है बदन में, नाम सुनकर ख़्वान का ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक रोशन हुए ।।८।।

---

६. प्रशंसा, तारीफ़ (७) गिरेवः (फा० पु०) ढेर, टीला
पाठान्तर—(१) क़ा० जा० नान का

हुस्न जितने हैं जहां में, सब भरे हैं नान(२) में ।
ख़ूबियाँ जितनी हैं आकर सब भरी हैं ख़्वान में ।।
आशिक़ो माशूक भी टिकिया के हैं दरम्यान में ।
फंस रहे हैं, सबके दिल, रोटी के दस्तरख़्वान में ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।९।।

जो मुरीद अपना किसी दुरवेश को करता है पीर ।
यानी कुछ देखे तजल्ली की करामत दिल पज़ीर ।।
खाते ही दो रोटियां, दिल हो गया बदरे मुनीर ।
कोई रोटी सा नहीं, अब पीरो मुर्शिद ऐ 'नज़ीर ।।
दो चपाती के वरक़ में, सब वरक़ रोशन हुए ।।
एक रकाबी में हमें, चौदह तबक़ रोशन हुए ।।१०।।

पाठान्तर (२) क़ा० जा० ख़्वान

पेट की फ़िलासफ़ी

करता है कोई ज़ोरो जफ़ा पेट के लिए ।
सहता है कोई रंजो बला पेट के लिए ।।
सीखा है कोई मक्रो दगा पेट के लिए ।
फिरता है कोई वे सरो पा पेट के लिए ।।
जो है सो हो रहा है फ़िदा पेट के लिए ।।१।।

आ़जिज़ हैं इसके वास्ते क्या शाह क्या वज़ीर ।
मोहताज़ हैं इसी के लिए बख़्शियो अमीर ।।
मुंशी, वकील, एलची[१], मुतसद्दियों[२], मुशीर[३] ।
चाकर, नफ़र[४], ग़ुलाम, तवंगर, ग़नी[५], फ़क़ीर ।।
सब कर रहे हैं फ़िक्र सदा पेट के लिए ।।२।।

सर्राफ़, ख़ुर्दिये से लगा सेठ साहूकार ।
दल्लाल, जौहरी और किनारी के पेशे वार ।।
पंसारियो, बजाज़, अनाजों के कारोबार ।
व्यापार लेन देन बनज कर्ज़ और उधार ।।
है सबने ठकठका यह किया पेट के लिए ।।३।।

अब ख़ल्क़ में हैं छोटे बड़े जितने पेशेवर ।
सीखे उसी के वास्ते सब क़स्ब और हुनर ।।
सह्हाफ़, जिल्दसाज़पिलमची[६], कमांन गर ।
जींदोज़, गुल फ़रोश, बिसाती, सफ़ाल गर ।।
बैठे हैं सब दुकान लगा पेट के लिए ।।४।।

---

१. (तु० पु०) पत्रवाहक, राजदूत २. प्रबन्धक, पेशकार (लिपिक) ३. सलाहकार ४. नौकर ५. धनी
६. मुलम्मे का काम करने वाला ।

बैठे हैं मस्जिदों में मुसल्ले बिछा बिछा ।
जुब्वे पहन के, हाथ में तस्वीह को फिरा ।।
वाइज़ के हर सुखन में है खाने का मुद्दआ ।
आबिद भी दावतों की इबादत है कर रहा ।।
ज़ाहिद भी मांगता है दुआ पेट के लिये ।।५।।

क्या मीनेसाज़ काम के और क्या मुरस्सा कार ।
हुक्काक क्या मुसब्विरो नक़्क़ाश ज़र निगार ।।
देखा तो न सुनार कोई और न अब लुहार ।
सब अपने अपने पेट के करते हैं कारोबार ।।
पेशा हर एक ने सीख लिया पेट के लिए ।।६।।

गन्धी के मग़ज़ में भी यही रच रही है बो ।
खींचे हैं जब गुलाब निकाले हैं इत्र बो ।।
शीशी किसी को, सींक के फोए किसी को दो ।
हर दम छिड़क गुलाब लगा तन से इत्र को ।।
लपटें हर एक ही को सुँघा पेट के लिए ।।७।।

रंगरेज़ बैठे रंगते हैं, रंगत हज़ारियाँ ।
सुर्खो, गुलाबी, ज़र्द, स्याह, सब्ज धारियाँ ।।
मख़मल है कोई कोई है मशरू कटारियाँ ।
जंगल में जाके देखा तो इस जा भी न्यारियाँ ।।
नित ख़ाक छानता है पड़ा पेट के लिए ।।८।।

बदनाम है इसी के लिए खल्क़ में कलाल ।
ज़ब्बाह भी करे हैं इसी के लिए हलाल ।।
सय्याद भी इसी के लिए ले चला है जाल ।
ठग भी इसी के वास्ते फांसी गले में डाल ।।
हर वक्त घोंटता है गला पेट के लिए ।।९।।

नटखट, उचक्के, चोर, दग़ाबाज, राह मार ।
अय्यार, जेबकतरे, नज़रबाज़, होशियार ।।
सब अपने-अपने पेट के करते हैं कारोबार ।
कोई ख़ुदा के वास्ते करता नहीं शिकार ।।
बिल्ली भी मारती है चूहा पेट के लिए ।।१०।।

बांका सिपाही ख़ूब शुजाअत में बे जिगर ।
वह भी इसी के वास्ते ले तेग़ और तबर ।।
लड़ता है तोप, तीर, तुफ़ंगों में आन कर ।
खाता है ज़ख़्म ख़ून में होता है तरबतर ।।
आख़िर को सर भी दे है कटा पेट के लिए ।।११।।

फ़ाज़िल के फ़ज़्ल में भी इसी की है इल्तिजा ।
आबिद नुजूमी का भी इसी पर है मुद्दआ ।।
मुल्ला भी दिन गुजारे हैं लड़के पढ़ा-पढ़ा ।
शायर भी देखिये तो क़सीदे बना बना ।।
क्या-क्या करे है वस्फो सना पेट के लिए ।।१२।।

क़ाजी के हाल की भी यही बात है गवाह ।
मुफ़्ती के क़स्द की भी यह शाहिद है ख़्वाह मख़्वाह ।।
बैद और हकीम की भी इसी पर है अब निगाह ।
अत्तार के भी दर्द को देखा तो वह भी आह ।।
दिन रात कूटता है दवा पेट के लिए ।।१३।।

पढ़ते हैं अब क़ुरान जो मुर्दों का लेके नाम ।
फूलों में बैठ करते हैं पंज आयतें तमाम ।।
दोज़ख़ में या बहिश्त में मुर्दे का हो मुक़ाम ।
कुछ हो पर उनको हलवे व मांडे से अपने काम ।।
ख़ुश हो गये जब उनको मिला पेट के लिए ।।१४।।

उल्फ़त किसी के दिल में, किसी में पड़ा है बैर ।
माने कोई हरम को, कोई पूजता है दैर ।।
खाने की सारी दोस्ती, खाने की सारी सैर ।
कहता है अब फ़क़ीर भी देकर दुआये ख़ैर ।।
बाबा कुछ आज मुझको दिला पेट के लिए ।।१५।।

आशिक़ के तईं जो देखें हैं सौ नेमतों की जेट ।
लड़के भी अपनी खोल के छाती दिखाके पेट ।।
गोदी में बैठ जाते हैं हर दम बग़ल में लेट ।
खाने की देख चाह लगावट की कर लपेट ।।
क्या-क्या करें है नाज़ो अदा पेट के लिए ।।१६।।

हैं जिनके पास मनसबो जागीरो मालो जाह ।
ख़ूबां भी उनके साथ करें हैं सदा निबाह ॥
खाने की सारी दोस्ती खाने की सारी चाह ।
देखा जो ख़ूब गौर से हमने तो वाह-वाह ॥
माशूक भी करें हैं वफ़ा पेट के लिए ॥१७॥

रंडी जो नाचती है परी ज़ाद फुलझड़ी ।
सर पांव से तमाम जवाहर में है जड़ी ॥
चितवन लगावटों की जताकर घड़ी-घड़ी ।
ले शाम से सहर तई है नाचती खड़ी ॥
सौ सौ तरह के भाव बता पेट के लिए ॥१८॥

लाखों में कोई ले है मुहब्बत से हक़ का नाम ।
वर्ना सब अपने पेट के हैं कलमें और कलाम ॥
न आक़िबत की फ़िक्र न राहे ख़ुदा से काम ।
समझे न कुछ हलाल न जाना कि कुछ हराम ॥
जो जिससे हो सका सो किया पेट के लिए ॥१९॥

जितने हैं अब जहान में कम ज़ात या असील ।
सब अपने-अपने पेट की करते हैं क़ालो क़ील ॥
शेरो पिलंग[1], कर्गो[2] हिरन, च्यूंटी ओरफ़ील ।
कौवा, बटेर, हंस लघड़बाज, गिद्धो चील ॥
सब ढूंढ़ते फिरे हैं ग़िज़ा पेट के लिए ॥२०॥

जिसका शिकम भरा है वह हंसता है मिस्ल फूल ।
ख़ाली है जिसका पेट वह रोता है हो मलूल ॥
जब तक न इस गढ़े में पड़े आके ख़ाक धूल ।
सूझे धरम न दीन न अल्लाह न रसूल ॥
जो-जो कोई करे सो बजा पेट के लिए ॥२१॥

ज़रदार, मालदार, गदा, शाह क्या वज़ीर ।
सरदार क्या ग़रीब तवंगर हो या फ़क़ीर ॥
हर दम सबों को देखा इसी हाल में असीर ।
अपनी यही दुआ है शबो रोज ऐ 'नज़ीर' ॥
दे शर्मो आबरू से ख़ुदा पेट के लिए ॥२२॥

---

[1] तेंदुआ [2] (कर्गदन का लघु) गैंडा

पेट

किसी सूरत नहीं भरता ज़रा पेट, यह कुछ रखता है अब हर्सो हक।
अगर चोरी न करता चोर यारो, तो होता चाक कहो उसका भला पेट ।।

चले हैं मार अशराफ़ों को धक्का, मियाँ जिस दम कमीने का भरा पेट ।
नहीं चैन उसको इस क़ाफ़िर के हाथों, है छोटा जिसका अधसेरा बनापेट ।।

खुदा हाफिज़ है उन लोगों का यारो, कि जिनकी है बड़ी तोंद और बड़ा पेट ।
सदा माशूक पेड़े मांगता है, मलाई सा वह आशिक को दिखा पेट ।।

और आशिक़ का भी इसके देखने से, कभी मुतलिक नहीं भरा पेट ।
गरीब आ़जिज़ तो हैं लाचार यारो ! कि उनसे हर घड़ी है मांगता पेट ।।

तसल्ली खूब उनको भी नहीं है कि घर दौलत से जिनके फट पड़ा पेट ।
किसी का यह मुहिब न यार न दोस्त फ़क़त रोटी का है इकआश्ना पेट ।।

भरे तो इस खुशी से फूल जावे कि गोया बाँझ के तई रह गया पेट ।
जो खाली हो तो दिन को यों करे सुस्त किसी का जैसे दस्तों से चला पेट ।।

बड़ा कोई नहीं दुनियां में यारो मगर कहिए तो सबसे बड़ा पेट ।
हुए पूरे फक़ीरी में वही लोग जिन्होंने सब्र से अपना कसा पेट ।।

लगा पूरब से लेकर ताब: पच्छिम लिए फिरता है सबको जा बजा पेट ।
कई मन किया गया मज़मून का आटा 'नज़ीर' इस रेख्ते का है बड़ा पेट ।।

दुआए तन्दुरुस्ती

है मर्द अब वही, कि जिन्हों का है फन दुरुस्त ।
हुर्मत उन्हों के वास्ते, जिनका चलन दुरुस्त ।।
रहता नहीं किसी का, सदा माल धन दुरुस्त ।
दौलत रही किसी की, न बाग़ो चमन दुरुस्त ।।
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।।
अल्लाह आबरू से रक्खे, और तन्दुरुस्त ।।१।।

दुनियां में अब उन्हों के तईं, कहिये बादशाह ।
जिनके बदन दुरुस्त हैं, दिन रात सालो साह ।।
जिस पास तन्दुरुस्तीयो हुर्मत की हो सिपाह ।
ऐसी फिर और कौन सी, दौलत है वाह, वाह ।।
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।।
अल्लाह आबरू से रखे, और तन्दुरुस्त ।।२।।

जो घर में अपने मीरी व हश्मत पनाही है ।
बिन तन्दुरुस्ती सब, वह खराबी तबाही है ।।
यह तन्दुरुस्ती यारो, बड़ी बादशाही है ।
सच पूछिये तो ऐन, यह फ़ज़्ले इलाही है ।।
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ।।३।।

गर दौलतों से उसका भरा है तमाम घर ।
बीमार है तो ख़ाक से बदतर है सब वह ज़र ।।
हो तन्दुरुस्त गरचे यह मुफ़्लिस है सर बसर ।
फिर न किसी का ख़ौफ़, न हरगिज़ किसी का डर ।।
जितने सुख़न हैं सबमें, यही है सुख़न दुरुस्त ।।
अल्लाह आबरू से रखे, और तन्दुरुस्त ।।४।।

आजिज़ हो या हक़ीर हो पर तन्दुरुस्त हो ।
बे ज़र हो या अमीर हो पर तन्दुरुस्त हो ॥
क़ैदी हो या असीर हो पर तन्दुरुस्त हो ,
मुफ़्लिस हो या फक़ीर हो पर तन्दुरुस्त हो ॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ॥
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥५॥

इसमें तमाम खत्म हैं, आलम की ख़ूबियां ।
हो तन्दुरुस्ती और, मिले हुर्मत से आबो ना ॥
क़िस्मत से जब यह दोनों, मयस्सर हों फिर तो वां ।
फिर ऐसी और कौन सी, नेंमत(१) है मेरी जां ॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे, और तन्दुरुस्त ॥६॥

परवा नहीं अगरचे, लिखा या पढ़ा न हो ।
मोहताज हक़ सिवा, पै(२) किसी और का न हो ॥
हुस्नो, जमालो, इल्मो, हुनर गो मिला न हो ।
एक तन्दुरुस्ती चाहिए, कुछ होवे या न हो ॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे, और तन्दुरुस्त ॥७॥

बीमार गरचे लाख तरह से हो बादशाह ।
तो उसको जानिये यह गदा से भी है तबाह ॥
हम तो उसी को शाह कहें और जहां पनाह ।
अब जिसका तन्दुरुस्त हो, हुर्मत से हो निवाह ॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥८॥

हों गरचे लाख दौलतें, बीमार के कने ।
और नेमतों के ढेर लगे हों, बने ठने ॥
बेहतर हैं मुफ्लिसी के मियां, चाबने चने ।
जो तन्दुरुस्त हैं, वही दूल्हा हैं और बने ॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त ।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥९॥

पाठान्तर—(१) का० जा० दौलत (२) का० श० आ० ये

जब तन्दुरुस्तियों की, रहीं दिल में बस्तियां।
फिर सौ तरह के ऐश हैं और मै परस्तियां॥
खाने को नेमतें हों, व या फाक़ा मस्तियां।
सब ऐश और मज़े हैं, जो हों तन्दुरुस्तियां॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥१०॥

चाहा जो दिल नशे को तो वोही मंगा लिया।
मेहबूब दिल बरों को गले से लगा लिया॥
आया जो ऐश दिल में, खुशी से उड़ा लिया।
जो मिल गया सो पी लिया, चाहा सो खा लिया॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे, और तन्दुरुस्त ॥११॥

आया जो दिल में सैरे चमन को चले गये।
बाज़ार चौक, सैर तमाशे में खुश हुए॥
बैठे उठे ख़ुशी में, हर एक जा चले फिरे।
जागे मज़े में रात को, या खुश हो सो रहे॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥१२॥

कुदरत से यह जो तन की, बनी है हर एक कल।
जब तक यह कल बनी है, तो है आदमी को कल(१)॥
गर हो खुदा नख्वास्ता एक कल भी चल व चल।
फिर न ख़ुशी, ने ऐश, न कुछ जिन्दिगी का फल॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे, और तन्दुरुस्त ॥१३॥

अदना हो या ग़रीब, तवंगर हो या फ़क़ीर।
या बादशाह शहर का, या मुल्क का वज़ीर॥
है सबको तन्दुरुस्तियो हुर्मत ही दिल पज़ीर।
जो तूने अब कहा, सो यही सच है ऐ 'नज़ीर'॥
जितने सुख़न हैं सब में, यही है सुख़न दुरुस्त।
अल्लाह आबरू से रखे और तन्दुरुस्त ॥१४॥

पाठान्तर—(१) का० जा० जभी तक पड़े है कल

शुक्र तन्दुरुस्ती

दुख की दौलत हो तो उसको भी तबाही बूझिये ।
सुख से रहना ख़ल्क़ में, ख़ुश दस्तगाही बूझिये ॥
रोशनी को ग़म की हर जागह स्याही बूझिये ।
सेहतो हुर्मत को, नित हश्मत पनाही बूझिये ॥
तन्दुरुस्ती को निपट, फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना, बादशाही बूझिये ॥१॥

सेहतो हुर्मत से, गर अल्लाह यां करदे निबाह ।
इस बराबर कौन सा है, फिर जहां में इज़्ज़ो जाह ॥
अब तो हम इस बात के, रुतबे को करते हैं निगाह ।
क्या किसी आक़िल ने, यह नुक्ता कहा है वाह-वाह ॥
तन्दुरुस्ती को निपट, फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना, बादशाही बूझिये ॥२॥

उसके सब मोहताज हैं, अब शाह से ले ता गदा ।
जिसके तन सालिम रहे, और पेट हुर्मत से भरा ॥
आबरू और तन्दुरुस्ती जिसको हक़ ने की अता ।
फिर जहां में उस सा यारो, कौन सा है बादशाह ॥
तन्दुरुस्ती को निपट, फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना, बादशाही बूझिये ॥३॥

दौलतें जितनी हैं सब, इन दौलतों से हैं तले ।
आबरू अल्लाह रखे, और उम्र हुर्मत से कटे ॥
इज्ज़तो हुर्मत बड़ी, दौलत है, अल्लाह सबको दे ।
हर घड़ी हर आन, हर दम, ख़ल्क में प्यारे मेरे ॥
तन्दुरुस्ती को निपट, फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना, बादशाही बूझिये ॥४॥

आबरू दुनियां में यारो, मोती की सी आब है ।
तन्दुरुस्ती और भी, फिर ऐश का असबाब है ॥
जिस कने हैं यह, उसी का सब अदब आदाब है ।
यह नहीं और ज़िन्दिगी, तो फिर खयालो ख़्वाब है ॥
तन्दुरुस्ती को निपट, फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना, बादशाही बूझिये ॥५॥

हैं जहां तक ख़ल्क़ में, पीरो, जवां ख़ुर्दो, कबीर ।
आ़लिमो, फ़ाज़िल, गदाओ, बादशाह, मीरो वज़ीर ॥
क्या तवंगर क्या ग़नी, क्या बेनवा और क्या फ़क़ीर ।
सब जहां में हैं, इसी नुक्ते के क़ायल ऐ 'नज़ीर' ॥
तन्दुरुस्ती को निपट, फ़ज़्ले इलाही बूझिये ।
आबरू से जग में रहना, बादशाही बूझिये ॥६॥

ख़ुशामद

दिल ख़ुशामद से, हर एक शख़्स का क्या राज़ी है।
आदमी, जिन्नो, परी, भूत, बला, राज़ी है॥
माई, फ़र्ज़ंद[1] भी ख़ुश, बाप, चचा राज़ी है।
शाह[2] मसरूर[3], ग़नी[4] शाद[5], गदा[6] राज़ी है॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़[7] उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है, कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥१॥

अपना मतलब हो तो मतलब की ख़ुशामद कीजिये।
और न हो काम, तो उस ढब की ख़ुशामद कीजिये॥
औलिया[8] अम्बिया[9] और रब की ख़ुशामद कीजिये।
अपने मक़दूर[10] ग़रज़ सबकी ख़ुशामद कीजिये॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥२॥

चार दिन जिसको ख़ुशामद से किया झुक के सलाम।
वह भी ख़ुश हो गया अपना भी हुआ काम में काम॥
बड़े आक़िल[11] बड़े दाना[12] ने निकाला है यह दाम[13]।
ख़ूब देखा तो ख़ुशामद ही की आमद[14] है तमाम॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥३॥

मुफ़्लिस[15] अदनाओ[16] ग़नी[17] की भी ख़ुशामद कीजिये।
बख़ील[18] और सख़ी[19] की भी ख़ुशामद कीजिये॥
और जो शैतां हो तो उसकी भी ख़ुशामद कीजिये।
गर वली हो तो वली की भी ख़ुशामद कीजिये॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥४॥

---

[1] पुत्र [2] शासक [3] प्रसन्न, आनन्दित [4] धनवान [5] प्रसन्न [6] निर्धन, भिखारी [7] संसार [8] वली गण [9] नबीगण [10] सामर्थ्य [11] बुद्धिमान [12] चतुर [13] फंदा [14] आमदनी [15] निर्धन [16] तुच्छ [17] धनवान [18] कंजूस [19] दानी

प्यार से जोड़ दिये हाथ तरफ जिसके आह ।
वहीं ख़ुश हो गया करते ही वह हाथों पे निगाह ॥
ग़ौर से हमने जो इस बात को देखा वल्लाह ।
कुछ ख़ुशामद ही बड़ी चीज़ है अल्लाह-अल्लाह ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥५॥

पीने और पहनने, खाने की ख़ुशामद कीजिये ।
हीजड़े, भांड, ज़नाने की ख़ुशामद कीजिये ॥
मस्तो हुशियार, दिवाने की ख़ुशामद कीजिये ।
भोले नादान, सियाने की ख़ुशामद कीजिये ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥६॥

ऐश करते हैं वही, है जिनका ख़ुशामद का मिज़ाज[२०] ।
जो नहीं करते वह रहते हैं हमेशा मोहताज ॥
हाथ आता है ख़ुशामद से मकां, मुल्क और ताज ।
क्या ही तासीर[२१] की इस नुस्ख़े ने पाई है रिवाज ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥७॥

गर भला हो तो भले की भी ख़ुशामद कीजिये ।
और बुरा हो तो बुरे की भी ख़ुशामद कीजिये ॥
पाक, नापाक, सड़े की भी ख़ुशामद कीजिये ।
कुत्ते बिल्ली व गधे की भी ख़ुशामद कीजिये ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥८॥

ख़ूब देखा तो ख़ुशामद की बड़ी खेती है ।
गैर क्या अपने ही घर बीच यह सुख देती है ॥
मां ख़ुशामद के सबब[२२] छाती लगा लेती है ।
नानी दादी भी ख़ुशामद से दुआ देती है ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥९॥

---

[२०] स्वभाव [२१] विशेषता [२२] कारण

बी बी कहती है मियां आ तेरे में सदक़े[२३] जाऊं ।
सास बोले कहीं मत जा तेरे सदक़े जाऊं ॥
खाला कहती है कि कुछ खा तेरे सदक़े जाऊं ।
साली कहती है कि भैया तेरे सदक़े जाऊं ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे ख़ुदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥१०॥

आ पड़ा है जो ख़ुशामद से सरोकार[२४] उसे ।
ढूंढते फिरते हैं उलफ़त के ख़रीदार उसे ॥
आश्ना[२५] मिलते हैं और चाहे हैं सब यार उसे ।
अपने बेग़ाने ग़रज़ करते हैं सब प्यार उसे ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥११॥

रूखी और रोग़नी[२६] आबी[२७] की ख़ुशामद कीजिए ।
नानबाई[२८] व कबाबी[२९] की ख़ुशामद कीजिये ॥
साक़ीयो[३०] जाम[३१] शराबी की ख़ुशामद कीजिये ।
पारसा, रिन्द, ख़राबी की ख़ुशामद कीजिए ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥१२॥

जो कि करते हैं ख़ुशामद वह बड़े हैं इंसान ।
जो नहीं करते वह रहते हैं हमेशा हैरान ॥
हाथ आते हैं ख़ुशामद से हज़ारों सामान ।
जिसने यह बात निकाली है मैं उसके कुर्बान[३२] ॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ॥१३॥

---

[२३] न्यौछावर [२४] सम्बन्ध [२५] मित्र, जानने वाले [२६] घी की रोटी [२७] पानी के हाथ की बिना पलेथन की रोटी [२८] नान (तन्दूर में बनी रोटी) बनाने वाला [२९] कबाब बनाने और बेचने वाला [३०] शराब पिलाने वाला [३१] शराब का प्याला [३२] न्यौछावर

कौड़ी, पैसे व टके, ज़र की ख़ुशामद कीजिए।
लालो, नीलम, दुरो गौहर की ख़ुशामद कीजिए॥
और जो पत्थर हो तो पत्थर की ख़ुशामद कीजिए।
नेकोबद[३३] जितने हैं, यक्सर[३४] की ख़ुशामद कीजिए॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥१४॥

हमने हर दिल में ख़ुशामद की मुहब्बत देखी।
प्यार, इख़्लासो[३५] करम[३६], मेहरो[३७] मुहब्बत(१) देखी॥
दिलबरों में भी ख़ुशामद ही की उल्फ़त देखी।
आशिक़ों में भी ख़ुशामद ही की चाहत देखी॥
जो ख़ुशासद करे ख़ल्क़ उससे सदा राजी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥१५॥

पारसा, पीर है, ज़ाहिद[३८] है, मुनाजाती[३९] है।
ज्वारिया, चोर, दग़ाबाज़, खरावाती[४०] है॥
माह[४१] से माही[४२] तलक, च्यूंटी है या हाथी है।
यह ख़ुशामद तो, मियां सबके तई भाती है॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥१६॥

गर न मीठा हो तो कड़वी भी ख़ुशामद कीजिए।
कुछ न हो पास तो ख़ाली भी ख़ुशामद कीजिए॥
जानी दुश्मन हो तो उसकी भी ख़ुशामद कीजिए।
सच अगर पूछो तो झूटी भी ख़ुशामद कीजिए॥
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ी है।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है॥१७॥

---

३३. भले-बुरे ३४. एक जैसी, समान रूप से, हर एक ३५. सच्चा और निष्कपट प्रेम, ३६. कृपा ३७ कृपा ३८. साधक ३९. प्रार्थना करने वाला ४०. मदिरा पान करने वाला ४१. चन्द्रमा ४२. मछली = आकाश से पाताल तक

पाठान्तर—(१) जा० मुरव्बत

मर्दोज़न[४३], तिफ़्लो[४४] जवां, खुर्दोकलाँ[४५], पीरो[४६] फ़क़ीर ।
जितने आलम[४७] में हैं, मोह्ताजो गदा[४८], शाहो वज़ीर ।।
सबके दिल होते हैं फन्दे में ख़ुशामद के असीर[४९] ।
तू भी वल्लाह[५०] बड़ी बात यह कहता है 'नज़ीर' ।।
जो ख़ुशामद करे ख़ल्क़ उससे सदा राज़ा है ।
सच तो यह है कि ख़ुशामद से ख़ुदा राज़ी है ।।१८।।

---

[४३] पुरुष-नारी
[४४] बच्चे
[४५] छोटे-बड़े
[४६] बूढ़े, वृद्ध
[४७] संसार
[४८] भिखारी
[४९] बंदी
[५०] वास्तव में
१. दोस्त

मज़म्मते अहले दुनियां

क्या-क्या फरेब कहिये दुनियां की फ़ित्रतों का ।
मक्रो, दग़ाओ, दुज़दी है काम अक्सरों का ॥
जब दोस्त मिलके लूटें असबाब दोस्तों[1] का ।
फिर किस ज़ुबां से शिकवा अब कीजै दुश्मनों का ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ॥१॥

गर दिन को है उचक्का, तो चोर रात में हैं ।
नटखट की कुछ न पूछो, हर बात-बात में हैं ॥
इसकी बग़ल में गुप्ती(१), तेग़ उसके हात में हैं ।
वह इसकी फ़िक्र में है, यह उसकी घात में हैं ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ॥२॥

देखे कोई है जिनका है गठ कटी वतीरा ।
जामे पे खा रहा है, लुच्चे का दिल हरीरा ॥
लठ मार ताकता है, हर आन सर का चीरा ।
जूती को तक रहा है, हर दम उठाई गीरा ॥
हुशियारी यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ॥३॥

अय्यार और छिछोरा नित अपने कार में है ।
और सुबह ख़ेज़दा[2] भी, अपनी बहार में है ॥
क़ज़्ज़ाक़[3] जिस मकां पर फ़िक्रे सवार में है ।
प्यादा ग़रीब, उस जा, फिर किस शुमार में है ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ॥४॥

---

२. तड़के उठने की आदत वाला ३. लुटेरा
पाठान्तर—(२) श० कत्ती

इस राह में जो आया असवार गह(१) के घोड़ा ।
ठग से बचा तो आगे, क़ज़्ज़ाक़ ने न छोड़ा ॥
सोया सरा में जाके, तो चोर ने झंझोड़ा ।
तेग़ा रहा न भाला, घोड़ा रहा न कोड़ा ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ॥५॥

नादान को पिलाकर, एक भंग का प्याला ।
कपड़े बगल में मारे, और ले लिया दुशाला ॥
दाना मिला, तो उसमें, घोला धतूरा काला ।
होते ही ग़ाफ़िल उसको, फांसी में खींच डाला ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी और माल दोस्तों का ॥६॥

पैसे, रूपे, अशर्फ़ी या सीमो ज़र का पुतरा ।
भर जेब(२) घर में लावे, है कौन ऐसा चतुरा ॥
स्याना भी चूक खाये(३) यह फ़न है वह धतूरा ।
कतरे है जेब चढ़कर हाथी पे जेब कतरा ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी और माल दोस्तों का ॥७॥

चिड़िया ने देख ग़ाफ़िल, कपड़ा उधर घसीटा ।
कौए ने वक़्त पाकर, चिड़िया का पर(४) घसीटा ॥
चीलों ने मार पंजे, कौए का सर घसीटा ।
जो जिसके हाथ आया वह उसने(५) धर घसीटा ॥
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ॥८॥

पठान्तर—(१) क़ा० कह
(२) श० आ० फिर जीत (३) श० आ० मैदान चौक खाई (४) श० जा० घर (५) क़ा० जा० उसने ही धर घसीटा

सैयाद[४] चाहता है हो सैद[५] का गुजारा ।
और सैद चाहे दाना, खाकर करे किनारा ।।
काबू चढ़ा तो उसका दाना वह खा सिधारा ।
और कुछ भी चाल चूका, तो वोही जाल मारा ।।
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तों का ।।६।।

निकला है शेर घर से, गीदड़ का गोश्त खाने ।
गीदड़ की धुन लगावे, खुद शेर को ठिकाने ।।
क्या-क्या करें है बाहम, मक्रो, दग़ा बहाने ।
यां वह बचा 'नज़ीर', अब जिसको रखा ख़ुदा ने ।।
हुशियार, यार जानी, यह दश्त है ठगों का ।
यां टुक निगाह चूकी और माल दोस्तों का ।।१०।।

---

[४] शिकार करने वाला [५] शिकार का जानवर

आदमी नामा

दुनियां में बादशाह(१) है सो है वह भी आदमी।
और मुफ़्लिसो गदा है सो है वह भी आदमी॥
ज़रदार बेनवा है, सो है वह भी आदमी।
नैंमत जो खा रहा है, सो है वह भी आदमी॥
टुकड़े चबा रहा है, सो है वह भी आदमी॥१॥

अब्दाल, कुतुबी, ग़ौस, वली आदमी हुए।
मुन्किर भी आदमी हुए और कुफ्र के भरे॥
क्या-क्या करिश्मे, कश्फो करामात के किए।
हत्ता कि अपने ज़ोरो(२) रियाज़त के ज़ोर से॥
ख़ालिक़ से जा मिला है सो है वह भी आदमी॥२॥

फ़िरओन ने किया था जो दाबा ख़ुदाई का।
शद्दाद भी बहिश्त बनाकर हुआ ख़ुदा॥
नमरूद भी ख़ुदा ही कहाता था बरमला।
यह बात है समझने की आगे कहूं मैं क्या॥
यां तक जो हो चुका है सो है वह भी आदमी॥३॥

यां आदमी ही नार है और आदमी ही नूर।
यां आदमी ही पास है और आदमी ही दूर॥
कुल आदमी का हुस्नो क़बह में है यां ज़हूर।
शैतां भी आदमी है जो करता है मक्रो जूर[1]॥
और हादी रहनुमा है सो है वह भी आदमी॥४॥

---

[1] छल कपट

पाठान्तर—(१) जा० पादशा (२) जा० जहदो

मस्जिद भी आदमी ने बनाई है यां मियां ।
बनते हैं आदमी ही इमाम और ख़ुतबाख़्वां ।।
पढ़ते हैं आदमी ही क़ुरान और नमाज़ यां ।
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियां ।।
जो उनको ताड़ता है सो है वह भी आदमी ।।५।।

यां आदमी पे जान को वारे है आदमी ।
और आदमी पे तेग़ को मारे है आदमी ।।
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी ।
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी ।।
और सुन के दौड़ता है सो है वह भी आदमी ।।६।।

नाचे है आदमी ही बजा तालियों को यार ।
और आदमी ही डाले है अपने इज़ार उतार ।।
नंगा खड़ा उछलता है होकर ज़लीलो ख़्वार ।
सब आदमी ही हंसते हैं देख उसको बार-बार ।।
और वह जो मसखरा है सो है वह भी आदमी ।।७।।

चलता है आदमी ही मुसाफिर हो, ले के माल ।
और आदमी ही मारे है, फांसी गले में डाल ।।
यां आदमी ही सैद[२] है और आदमी ही जाल ।
सच्चा भी आदमी ही निकलता है, मेरे लाल ।।
और झूट का भरा है सो है वह भी आदमी ।।८।।

यां आदमी ही शादी है और आदमी ब्याह ।
क़ाज़ी, वकील आदमी और आदमी गवाह ।।
ताशे बजाते आदमी चलते हैं ख़्वाह मख़्वाह ।
दौड़े हैं आदमी ही तो मशालें जलाके राह ।।
और ब्याहने चढ़ा है सो है वह भी आदमी ।।९।।

---

[२] शिकार

यां आदमी नक़ीब हो बोले है बार-बार ।
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार ।।
हुक्क़ा, सुराही, जूतियां दौड़े बग़ल में मार ।
कांधे पे रख के पालकी हैं आदमी कहार ।।
और उसमें जो(१) चढ़ा है सो है वह भी आदमी ।।१०।।

बैठे हैं आदमी ही दुकानें लगा-लगा ।
और आदमी ही फिरते हैं रख सर पे खोमचा ।।
कहता है कोई 'लो' कोई कहता है 'ला रे ला' ।
किस-किस तरह की बेचें हैं चीज़ें बना-बना ।।
और मोल ले रहा है सो है वह भी आदमी ।।११।।

यां आदमी ही क़हर से लड़ते हैं घूर-घूर ।
और आदमी ही देख उन्हें भागते हैं दूर ।।
चाकर, गुलाम आदमी और आदमी मजूर ।
यां तक कि आदमी ही उठाते हैं जा ज़रूर ।।
और जिसने वह फिरा है सो है वह भी आदमी ।।१२।।

तबले, मजीरे दायरे, सारंगियां बजा ।
गाते हैं आदमी ही हर तरह जा बजा ।।
रंडी भी आदमी ही नचाते हैं गत लगा ।
वह आदमी ही नाचे हैं और देख फिर मज़ा ।।
जो नाच देखता है सो है वह भी आदमी ।।१३।।

यां आदमी ही लालो जवाहर हैं बे बहा ।
और आदमी ही ख़ाक से बदतर है होगया ।।
काला भी आदमी है कि उल्टा है जूं तवा ।
गोरा भी आदमी है कि टुकड़ा सा चांद का ।।
बदशक्ल, बदनुमा है सो है वह भी आदमी ।।१४।।

पाठान्तर—(१) उस पे जो

एक आदमी हैं जिनके यह कुछ ज़र्क बर्क़ हैं ।
रूपे के उनके पांव हैं सोने के फ़र्क हैं ॥
झुमके तमाम ग़र्ब से ले ताबा शर्क़ हैं ।
कमख़्वाब, ताश, शाल दोशालों में ग़र्क हैं ॥
और चीथड़ों लगा है सो है वह भी आदमी ॥१५॥

एक ऐसे हैं कि जिनके बिछे हैं नए पलंग ।
फ़ूलों की सेज उनपे झमकती है ताज़ा रंग ॥
सोते हैं लिपटे छाती से माशूक शोखो संग ।
सौ-सौ तरह से ऐश के करते हैं रंग ढंग ॥
और खाक में पड़ा है सो है वह भी आदमी ॥१६॥

हैरान हूं यारो देखो तो क्या यह स्वांग है ।
और आदमी ही चोर है और आदमी थांग है ॥
है छीना झपटी और कहीं मांग तांग है ।
देखा तो आदमी ही यहां मिस्ले रांग हैं ॥
फौलाद से गढ़ा है सो है वह भी आदमी ॥१७॥

मरने पै आदमी ही कफ़न करते हैं तैयार ।
नहला धुला उठाते हैं कांधे पै कर सवार ॥
कलमा भी पढ़ते जाते हैं रोते हैं ज़ार-ज़ार ।
सब आदमी ही करते हैं, मुर्दे के कारोबार ॥
और वह जो मर गया है सो है वह भी आदमी ॥१८॥

अशराफ़ और कमीने से ले शाह ता वज़ीर ।
हैं आदमी ही साहिबे इज़्ज़त भी और हक़ीर ॥
यां आदमी मुरीद है और आदमी ही पीर ।
अच्छा भी आदमी ही कहाता है ऐ 'नज़ीर' ॥
और सब में जो बुरा है सो है वह भी आदमी ॥१९॥

बुद्धिमानी की बातें

कौड़ी

कौड़ी है जिनके पास वह अहले यकीन[1] हैं।
खाने को उनके नेमतें, सो बेहतरीन हैं॥
कपड़े भी उनके तन में, निहायत महीन हैं।
समझें हैं उनको वह जो बड़े नुक्ता चीन हैं॥
कौड़ी के सब जहान में, नक़्शों नगीन हैं।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं॥१॥

कौड़ी बग़ैर सोते थे ख़ाली जमीन पर।
कौड़ी हुई तो रहने लगे, शह नशीन[2] पर॥
पटके सुनहरे बंध गए जामों[3] की चीन पर।
मोती के गुच्छे लग गए, घोड़ों की ज़ीन पर॥
कौड़ी के सब जहान में, नक्शो नगीन हैं।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं॥२॥

कौड़ी ही चाहती है सदा बादशाह को।
कौड़ी ही थाम लेती है, फौजो सिपाह[4] को॥
लेकर छड़ी रूमाल गदा भी निबाह को।
फिरता है हर दुकान पै कौड़ी की चाह को॥
कौड़ी के सब जहान में नक्शो नगीन हैं।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं॥३॥

---

[1] विश्वासपात्र [2] ऊँची इमारत [3] कपड़ा [4] फौज और सिपाही

कौड़ी न हो तो फिर यह झमेला कहां से हो ।
रथ ख़ाना, फ़ील ख़ाना[५], तवेला[६] कहां से हो ।।
मुंडवा के सर फ़क़ीर का, चेला कहां से हो ।
कौड़ी न हो तो साईं का मेला कहां से हो ।।
कौड़ी के सब जहान में, नक्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।४।।

कांधे पे तेग़ धरते हैं कौड़ी के वास्ते ।
आपस में ख़ून करते हैं कौड़ी के वास्ते ।।
यां तक तो लोग मरते हैं कौड़ी के वास्ते ।
जो जान दे गुज़रते हैं कौड़ी के वास्ते ।।
कौड़ी के सब जहान में नक्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।५।।

गालीयो मार खाते हैं कौड़ी के वास्ते ।
शर्मो हया उठाते हैं कौड़ी के वास्ते ।।
सौ मुल्क छान आते हैं कौड़ी के वास्ते ।
मस्जिद को दम में ढाते हैं कौड़ी के वास्ते ।।
कौड़ी के सब जहान में नक्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।६।।

कितने तो हममें ऐसे हैं कौड़ी के मुब्तिला ।
कौड़ी हो गंदगी में तो लें दांत से उठा ।।
खस्सत नहीं है, ऐसा ही कौड़ी का मर्तबा ।
कोई दांत से उठावे हम आंखों से लें उठा ।।
कौड़ी के सब जहान में नक्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।७।।

---

[५] हाथियों के रखने का स्थान, हाथीखाना [६] घुड़साल, अस्तबल

बिन कौड़ी ख़ुरदिये[७] के बराबर भी पत[८] न थी ।
कौड़ी जब आई पास तो बन बैठे सेठ जी ।।
आके गुमाश्तों[९] की खुली हर तरफ़ वही ।
फिर वह जो कुछ कहें तो वही बात है सही ।।
कौड़ी के सब जहान में नक़्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।८।।

बिन कौड़ी थीं न तेल की बासी मंगौड़ियां ।
कौड़ी हुई तो छटने लगीं लंबी चौड़ियां ।।
यूं ख़ल्क़[१०] दौड़ें मक्खियां, जू गुड़ पे दौड़ियां ।
ख़ालिक ने क्या ही चीज़ बनाई हैं कौड़ियां ।।
कौड़ी के सब जहान में, नक़्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।९।।

ख़ासे महल उठाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ।
पक्के कुंए खुदाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ।।
पुल और सरा[११] बनाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ।
बाग़ो चमन लगाते हैं कौड़ी के ज़ोर से ।।
कौड़ी के सब जहान में नक़्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो सो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।१०।।

ले मुफ्लिस[१२] और फ़क़ीर से ता शाह और वज़ीर ।
कौड़ी वह दिलरुबा[१३] है कि है सब की दिल पज़ीर[१४] ।।
देते हैं जान कौड़ी पे तिफ़्लो[१५] जवानो पीर ।
कौड़ी अजब ही चीज़ है मैं क्या कहूं 'नज़ीर' ।।
कौड़ी के सब जहान में नक़्शो नगीन हैं ।
कौड़ी न हो तो कौड़ी के फिर तीन-तीन हैं ।।११।।

---

[७] फुटकल छोटी मोटी चीज़े बेचने वाला [८] इज्ज़त, आदर [९] बड़े व्यापारी की ओर से वही आदि लिखने, माल खरीदने या बेचने पर नियुक्त व्यक्ति

[१०] दुनिया [११] सराय, मुसाफिरखाना [१२] गरीब [१३] दिल लुभाने वाली [१४] दिल को खुश करने वाली [१५] बच्चा

पैसा (१)

नक़्श[१] यां जिसके मियां, हाथ लगा पैसे का ।
उसने तैयार हर एक ठाठ किया पैसे का ।।
घर भी पाकीज़ा इमारत से बना पैसे का ।
खाना आराम से खाने को मिला पैसे का ।।
कपड़ा तन को भी मिला ज़ेब फ़िज़ा[२] पैसे का ।।१।।

जब हुआ पैसे का, ऐ दोस्तो ! आकर संजोग ।
इश्रतें[३] पास हुई, दूर हुए तन के रोग ।।
खाये जब माल पुए, दूध दही मोहन भोग ।
दिल को आनन्द हुए भाग गए रोग और धोग ।।
ऐसी ख़ूबी है जहाँ, आना हुआ पैसे का ।।२।।

साथ एक दोस्त के एक दिन जो मैं गुलशन में गया ।
वां के सर्वो समनो लालओ गुल को देखा ।।
पूछा उससे कि यह है बाग़ बताओ किसका ।
उसने तब गुल की तरह हंस दिया और मुझसे कहा ।।
मेहरबां मुझसे यह तुम पूछो हो क्या, पैसे का ।।३।।

यह तौ क्या और बड़े ऐसे हैं जो बाग़ो चमन ।
हैं खिले क्यारियों में नर्गिसो, नसरीनो, समन ।।
हौज़ फ़व्वारे हैं, बंगलों में भी पर्दे चिलमन ।
जा बजा क़ुमरीयो[४] बुलबुल की सदा[५] शोर अफ़गन ।।
वां भी देखा तो फ़क़त, गुल है खिला पैसे का ।।४।।

वां कोई आया लिये एक मुरस्सा[६] पिंजड़ा ।
लाल दस्तारो दुपट्टा भी हरा जूं तोता ।।
उसमें एक बैठी है मैना कि हो बुलबुल भी फ़िदा ।
मैंने पूछा 'यह तुम्हारा है' रहा वह चुपका ।।
निकली मनकार से मैना की सदा पैसे का ।।५।।

---

[१] ताबीज़ [२] सुन्दरता बढ़ाने वाला [३] खुशियां [४] सफेद पक्षी [५] आवाज़ [६] जड़ाऊ

वाँ से निकला तो मकाँ एक नज़र आया ऐसा ।
दरो दिवारों से चमके था पड़ा आवे तिला[८] ।।
सीम[९] चूने की जगह उसकी था ईटों से लगा ।
वाह वा करके कहा मैंने, 'यह होगा किसका ?'
अक़्ल ने जब मुझे चुपके से कहा—'पैसे का' ।।६।।

रूठा आशिक़ से जो माशूक कोई हट का भरा ।
और वह मिन्नत से किसी तौर नहीं है मनता ।।
ख़ूबियां पैसे की ऐ यारो ! कहूं मैं क्या-क्या ।
दिल अगर संग[१०] से भी उसका ज्यादा था कड़ा ।।
मोम सा हो गया जब नाम सुना पैसे का ।।७।।

जिस घड़ी होती है ऐ दोस्तो ! पैसे की नुमूद[११] ।
हर तरह होती है खुश वक़्तीयों ख़ूबी वहबूद ।।
ख़ुश दिली, ताज़गी और खुर्रमी[१२] करती है वरूद[१३] ।
जो खुशी चाहिए होती है वही आमौजूद ।।
देखा यारो, तो यह है ऐशो मज़ा पैसे का ।।८।।

पैसे वाले ने अगर बैठ के लोगों में कहा ।
जैसा चाहूं तो मकां वैसा ही डालूं बनवा ।।
हर्फ़े तकरार[१४] किसी की जो ज़ुबा पर आया ।
उसने बनवा के दिया जल्दी से वैसा ही दिखा ।।
उसका यह काम है, ऐ दोस्तो ! या पैसे का ।।९।।

नाच और राग की भी ख़ूब सी तैयारी है ।
हुस्न है नाज़ है ख़ूबी है, तरह दारी हैं ।।
रब्त[१५] है, प्यार है, और दोस्ती है यारी है ।
ग़ौर से देखा तो सब ऐश की बस यारी है ।।
रूप जिस वक़्त हुआ जलवानुमा पैसे का ।।१०।।

---

८. सोने का पानी ९. चांदी १०. पत्थर ११. आमद, बढ़ोतरी १२. प्रसन्नता १३. आगमन १४. वाद-विवाद १५. लगाव-सम्बन्ध

दाम[16] में दाम के यारो, जो मेरा दिल है असीर[17] ।
इसलिए होती है यह मेरी ज़ुबां से तक़रीर ॥
जी मैं खुश रहता है और दिल भी बहुत ऐश पज़ीर ।
जिस क़दर हो सका मैंने किया तहरीर 'नज़ीर' ॥
वस्फ़[18] आगे मैं लिखूं ताबा क़ुजा[19] पैसे का ॥११॥

---

१६. फंदा, बंधन १७. कैदी, बंदी १८. प्रशंसा, तारीफ़ १९. कहां तक, कब तक

पैसा (२)

पैसे ही का अमीर के दिल में ख़याल है ।
पैसे ही का फ़क़ीर भी करता सवाल है ।।
पैसा ही फ़ौज, पैसा ही जाहो जलाल[1] है ।
पैसे ही का तमाम यह तंगो दवाल[2] है ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है ।।१।।

पैसे के ढेर होने से सब सेठ साठ हैं ।
पैसे के ज़ोर शोर हैं पैसे के ठाठ हैं ।।
पसे के कोठे कोठियां, छैः सात आठ हैं ।
पैसा न हो तो पैसे के फिर साठ-साठ हैं ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।।२।।

पैसा न हो तो हाथी भी दमड़ी का दस्ता है ।
पैसे से ऊंट लाख अशर्फ़ी को सस्ता है ।।
हर वक़्त जिसके सामने पैसा बरसता है ।
लादे है ऊंट को कोई, हाथी को कसता है ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।।३।।

पैसा जो होवे पास तो कुन्दन के हैं डले ।
पैसे बग़ैर मिट्टी के उससे डले भले ।।
पैसे से चुन्नी लाख की, एक लाल देके ले ।
पैसा न हो तो कौड़ी को मोती कोई न ले ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।।४।।

---

[1] शानोशौकत, रोबोदौब [2] चालू सिक्का

पैसे से चीरे ताश के तुर्रे सुनहरे हैं ।
सैरो तरब के ऐशो मज़े गहरे-गहरे हैं ।।
हर लहज़ा माहे ईद नुमा शक्लो चेहरे हैं ।
हर दम बसंत, होली, दिवाली दशहरे हैं ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है ।।५।।

पैसा न हो तो बाग़ कुंएं फिर कहां से हों ।
खाने को पूरी और पुए फिर कहां से हों ।।
ऐशो तरब के नक्की दुए फिर कहां से हों ।
हलवा, कचौरी, माल, पुए फिर कहां से हों ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है ।।६।।

पैसा जो हो तो देव की गर्दन को बांध लाये ।
पैसा न हो तो मकड़ी के जाले से खौफ़ खाये ।।
पैसे से 'लाला' 'भैया जी', और चौधरी कहाये ।
बिन पैसे साहूकार भी एक चोर सा दिखाए ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।।७।।

चेहरा भी लाल दरब[3] के दरपन के बीच है ।
गर दरब है तो सैर भी गुलशन के बीच है ।।
पूरी भगत भी पैसे की सुमरन के बीच है ।
दर्शन भी खूब रूप का सब धन के बीच है ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।।८।।

जोड़े चमन बहार है पैसे के वास्ते ।
गहने मुरस्साकार[4] है, पैसे के वास्ते ।।
ख़ुशबू के फूल हार हैं, पैसे के वास्ते ।
सब नक्श और निगार हैं पैसे के वास्ते ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ।।९।।

---

[3] (शुद्ध रूप) द्रव्य [4] रत्नजटित

रौनक बहार होती है पैसे से सब हिसूल[5] ।
और जो न होवे चेहरे पे उड़ती है खाक धूल ॥
पैसा ही सारी चीज है पैसा ही मर्दमूल[6] ।
बे पैसे आदमी है जहां बीच न क़ुबूल ॥
पैसा ही रंग रूप है, पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ॥१०॥

पैसे से मोटी चवन्नी का इज्जो विकार[7] है ।
पैसे से ऐतबार है और इफ्तिख़ार[8] है ॥
पैसे में गर ग़मी हो तो वह भी बहार है ।
पैसे बग़ैर शादी भी होवे तो ख़्वार है ॥
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ॥११॥

पैसा ही बस बनाता है इन्सां की बात को(१) ।
पैसा ही जेब[9] देता है ब्याह और बारात को ॥
भाई सगा भी आन के पूछे न बात को ।
बिन पैसे यार दूल्हा बने आधी रात को ॥
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है ॥१२॥

पैसे ने जिस मकां में बिछाया है अपना जाल ।
फंसते हैं उस मकान में फरिश्तों के परो बाल ॥
पैसे के आगे क्या हैं यह महबूब खुश जमाल ।
पैसा परी को लाये परिस्तान से निकाल ॥
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है ॥१३॥

---

५. हासिल, प्राप्त ६. काम-शक्ति ७. प्रतिष्ठा ८. गर्व, मान ९. रौनक, सुन्दरता

पाठान्तर—(१) श० पैसा ही जस दिलाता है इंसाँ के हाथ को

तेगो सिपर[१०] उठाते हैं पैसे के वास्ते ।
तीरो सनां लगाते हैं पैसे के वास्ते ।।
मैदां में ज़ख़्म खाते हैं पैसे के वास्ते ।
यां तक कि सर कटाते हैं पैसे के वास्ते ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे़ की माल है ।।१४।।

आलम में खैर करते हैं पैसे के ज़ोर से ।
बुनियाद दैर[११] करते हैं पैसे के जोर से ।।
दोज़ख़ में फेर करते हैं पैसे के ज़ोर से ।
जन्नत की सैर करते हैं पैसे के ज़ोर से ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे़ की माल है ।।१५।।

दुनियां में दीनदार कहाना भी नाम है ।
पैसा जहां के बीच वह क़ायम मुकाम है ।।
पैसा ही जिस्मो जान है पैसा ही काम है ।
पैसे ही का 'नज़ीर' यह आदम ग़ुलाम है ।।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है ।
पैसा न हो तो आदमी चर्खे़ की माल है ।।१६।।

---

[१०] ढाल तलवार [११] इबादतखाना

रुपए की फिलासफी

8705

नक्शा है अयां[1] सौ तरबो[2] रक़्स[3] की रै का ।
है रव्ते वहम[4] तबलओ सारंगियो नै[5] का ॥
झंकार मजीरों की है और शोर है ले का ।
मीना की झलक जाम उधर झलके हैं मै[6] का ॥
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ॥१॥

हर आन जहां रूप रुपे के हैं झलकते ।
क्या-क्या ज़रो ज़ेवर के हैं वां रंग दमकते ॥
मोती भी झलकते हैं जवाहर भी चमकते ।
सब ठाठ इसी चिलकी से देखें हैं चिलकते ॥
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ॥२॥

बन ठन के हर एक बज़्म[7] में आते हैं इसी से ।
मेलों में तमाशों में भी जाते हैं इसी से ॥
शीरीनियां मेवे भी मंगाते हैं इसी से ।
खाते हैं और औरों को खिलाते हैं इसी से ॥
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ॥३॥

पोशाक झमकदार बनाते हैं इसी से ।
हश्मत के चमनकार बनाते हैं इसी से ॥
महलात नमूदार बनाते हैं इसी से ।
बाग़ात चमन ज़ार बनाते हैं इसी से ॥
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ॥४॥

---

[1] ज़ाहिर [2] खुशी [3] नृत्य [4] मेल [5] बाँसुरी [6] शराब [7] महफिल

इस रूप से है हुस्न फसूंकार मुहैया ।
इस रूप से फ़रहत के हैं आसार मुहैया ।।
गजरे से लगा तुर्रए ज़र तार मुहैया ।
क्या मोतिया हैं मोतियों के हार मुहैया ।।
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ।।५।।

इस रूप से गर्मी के भी सामान अयां हैं ।
ख़स ख़ाने हैं छिड़के हुए और इत्र फिशां हैं ।।
दिन जो भी जिधर देखिए ठण्डक के निशां हैं ।
और शव के भी सोने को हवा दार मकां हैं ।।
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ।।६।।

इस रूप से बारिश की भी चीज़ें हैं मयस्सर ।
रथ, छतरियां, बारानियां और मोम की चादर ।।
बाहर भी वह देखें हैं बहारों को नज़र भर ।
घर में भी ख़ुशी बैठे हैं सामान बनाकर ।।
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ।।७।।
यह रूप जहां हैं कोई वां दिल नहीं मैला ।

उजले हैं बिछे फ़र्श नहीं कुछ भी कुचैला ।।
देखो जिधर असबाब है ख़ुश वक्ती का फैला ।
भरता है इसी थैली से हर जिन्स का थैला ।।
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ।।८।।

ज़ाहिर में तो ऐ दोस्तो ! राहत है इसी से ।
हर आन दिलो जां को मुसर्रत है इसी से ।।
हर बात की ख़ूबीयो फ़राग़त है इसी से ।
आलम में 'नज़ीर' इश्रतो फ़रहत है इसी से ।।
झमका नज़र आता है हर एक ऐश की शै का ।
दुनियां में अजब रूप झलकता है रुपे का ।।९।।

ज़र

दुनियां में कौन है जो नहीं मुब्तिलाए[1] ज़र ।
जितने हैं सबके दिल में भरी है हवाए ज़र ॥
आंखों में, दिल में, जान में सीने में जाये[2] ज़र ।
हमको भी कुछ तलाश नहीं अब सिवाये ज़र ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है. दिन रात हाये ज़र ॥१॥

कितने तो ज़र को नक़्शे तिलिस्मात कहते हैं ।
और कितने ज़र को कश्फ़ो करामात कहते हैं ॥
कितने ख़ुदा की ऐन[3] इनायात कहते हैं ।
कितने इसी को क़ाज़ियुलहाजात[4] कहते हैं ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥२॥

यह पानी जो अब ज़ीस्त[5] की सबकी निशानी है ।
ज़र की झमक को देख के अब यह भी पानी है ॥
यारो हमारी जिसके सबब ज़िन्दिगानी है ।
यह पानी यह नहीं है, वह सोने का पानी है ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥३॥

आबेतिला[6] की बूंद भी अब जिसके हाथ है ।
वह बूंद क्या है चश्मए आबे हयात[7] है ॥
दुनियां में ऐश, दीन भी इश्रत के साथ है ।
ज़र वह है जिससे दोनों जहां में निजात[8] है ॥
जो हैं सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥४॥

---

[1] ग्रस्त, फंसा हुआ [2] स्थान [3] ख़ास [4] इच्छाओं की पूर्ति करने वाला
[5] जीवन [6] सोने का पानी [7] अमृत [8] मोक्ष, छुटकारा

सुर्मे की जिसके पास तिला[९] की सलाई है ।
आंखों में उसकी आब, बड़ी रोशनाई है ।।
ले अर्श[१०] फर्श[११] सब उसे देता दिखाई है ।
ख़ालिक ने देख नूर की पुतली बनाई है ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ।।५।।

ज़र खान में गड़ा है तो वां भी बहार है ।
शमशीर पर चढ़ा है तो वां भी बहार है ।।
दीवार में लगा है तो वां भी बहार है ।
गर ख़ाक में गिरा है तो वां भी बहार है ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ।।६।।

ज़र के दिये से पीर और उस्ताद नर्म हो ।
ज़र के सबब[१२] से दुश्मने नाशाद[१३] नर्म हो ।।
जो शोख़ संग दिल है परीज़ाद नर्म हो ।
ज़र वह है जिसको देख के फ़ौलाद नर्म हो ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए जर ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ।।७।।

कपड़े पे गर लगा है तिलाई[१४] कलाबतूं ।
मैं उसके तार तार की तारीफ़ क्या कहूँ ।।
हो दस्त रस तो चोर उचक्के को क्या कहूं ।
मेरे भी दिल में है कि मैं ही उसको छीन लूं ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए जर ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ।।८।।

जा लोग रोम, श्याम में ज़र को कमाते हैं ।
माचीन[१५] चींन ज़र के जहाज़ आते जाते हैं ।।
दक्खिन से ज़र के वास्ते सब यां को आते हैं ।
और यां के ज़र के वास्ते दक्खिन को जाते हैं ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ।।९।।

---

९. सोना १०. आसमान ११. ज़मीन १२. कारण १३. नाराज़, अप्रसन्न १४. सुनहरी १५. इंडोचाइना, हिन्द चीन

सोने की जदूले[१६] जो किताबों पे आम हैं ।
वह जदूलें वह रंग वह सोने के काम हैं ॥
जिनके वर्क़ वर्क़ ही सुनहरे तमाम हैं ।
सब में ज़्यादा उनकी ही क़ीमत हैं नाम हैं ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥१०॥

अब जिनके घर में ढेर हैं सोने के दाम के ।
हर एक उम्मीदवार हैं उनके सलाम के ॥
सब मिलके पांव चूमे हैं उनके ग़ुलाम के ।
क्या रुतबे है तिलाए अलैहिस्सलाम के ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ॥
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥११॥

कितनों के दिल में धुन है कि ज़र ही कमाइये ।
कुछ खाइए, खिलाइए और कुछ बनाइए ॥
कहता है कोई हाय कहां ज़र को पाइए ।
क्या कीजिए ज़हर खाइए और मर ही जाइए ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ॥
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥१२॥

सोना अगरचे ज़र्द है या सुर्ख़ फ़ाम[१७] है ।
लेकिन तमाम ख़ल्क़ को उससे ही काम है ॥
सबमें ज्यादा हुस्न की उल्फ़त का दाम है ।
ज़र वह है जिसका हुस्न भी अदना ग़ुलाम है ॥
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ॥
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाये ज़र ॥१३॥

---

[१६] पुस्तक के चारों ओर का हाशिया [१७] लाल रंगवाला

सर पांव से जो सोने के गहने के ज़ैल हैं ।
जो देखता है उसके वही दिल को मैल है ।।
वह चाह यह मिलाप तो ज़र के तुफ़ैल है ।
न पूछते हैं भूत है वह या चुड़ैल है ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ।।१४।।

होती हैं ज़र के वास्ते हर जा चढ़ाइयां ।
कटते हैं हाथ पांव गले और कलाइयां ।।
बन्दूकें और हैं कहीं तोपें लगाइयां ।
कुल ज़र की हो रही हैं जहां में लड़ाइयां ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ।।१५।।

लड़का सलाम करता है झुक झुक के रश्के[१८] माह ।
बूढ़े बड़े सब उसकी तरफ़ प्यार करके वाह ।।
देते हैं यह दुआ उसे तब दिल से ख़्वाहमख़्वाह ।
'ऐ मेरे लाल हो तेरा सोने के सेहरे ब्याह ।।'
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ।।१६।।

जितनी जहां में ख़ल्क़ है क्या शाह क्या वज़ीर ।
पीरो, मुरीद, मुफ्लिसो, मोहताज और फ़क़ीर ।।
सब हैंगे ज़र के जाल में जी जान से असीर ।
क्या क्या कहूं मैं ख़ूबियां ज़र की मियां 'नज़ीर' ।।
जो है सो हो रहा है सदा मुब्तिलाए ज़र ।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ।।१७।।

---

[१८] चांद की प्रभा को मंद कर देने वाले मुखवाला

मुफ़्लिसी

जब आदमी के हाल पे आती है मुफ़्लिसी[1] ।
किस तरह से उसको सताती है मुफ़्लिसी ॥
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफ़्लिसी ।
भूका तमाम रात सुलाती है मुफ़्लिसी ॥
यह दुख वह जाने जिस पे कि आती है मुफ़्लिसी ॥१॥

कहिये तो अब हकीम की सबसे बड़ी है शां ।
ताज़ीम जिसकी करते हैं नवाब और खां ॥
मुफ़्लिस हुए तो हज़रते लुक्मान क्या है यां ।
ईसा भी हो तो कोई नहीं पूछता मियां ॥
हिक्मत हकीम की भी डुबाती है मुफ़्लिसी ॥२॥

जो अहले फ़ज़्ल[2] आलिमो[3] फ़ाज़िल[4] कहाते हैं ।
मुफ़्लिस[5] हुए तो कलमा तलक भूल जाते हैं ॥
पूछे कोई 'अलिफ़' तो उसे 'बे' बताते हैं ।
वह जो ग़रीब ग़ुरबा के लड़के पढ़ाते हैं ॥
उनकी तो उम्र भर नहीं जाती है मुफ़्लिसी ॥३॥

मुफ़्लिस करे जो आन के महफ़िल के बीच हाल ।
सब जानें रोटियों का यह डाला है इसने जाल ॥
गिर-गिर पड़े तो कोई न लेवे उसे संभाल ।
मुफ़्लिस में होवें लाख अगर इल्म और कमाल ॥
सब ख़ाक बीच आके मिलाती है मुफ़्लिसी ॥४॥

---

[1] गरीबी, दरिद्रता [2] दुनियां वालों पर रहम करने वाले [3] स्नातक [4] स्नातक [5] गरीब

जब रोटियों के बंटने का आकर पड़े शुमार ।
मुफ़्लिस को देवे एक तवंगर को चार चार ॥
गर और मांगे वह तो उसे झिड़कें बार-बार ।
उस मुफ़्लिसी का आह, क्यां क्या करूं मैं यार ॥
मुफ़्लिस को उस जगह भी चबाती है मुफ़्लिसी ॥५॥

मुफ़्लिस की कुछ नज़र नहीं रहती है आन पर ।
देता है अपनी जान वह एक-एक नान पर ॥
हर आन टूट पड़ता है रोटी के ख़्वान[७] पर ।
जिस तरह कुत्ते लड़ते हैं एक उस्तुख़्वान[८] पर ॥
वैसा ही मुफ़्लिसों को लड़ाती है मुफ़्लिसी ॥६॥

करता नहीं हया से जो कोई वह काम 'आ-ह' ।
मुफ़्लिस करे है उसके तईं इन्सिराम[९] आह ॥
समझे न कुछ हलाल न जाने हराम आह ।
कहते हैं जिसको शर्मो हया नंगोनाम[१०] आह ॥
वह सब हयाओं शर्म उठाती(१) है मुफ़्लिसी ॥७॥

यह मुफ़्लिसी वह शै है कि जिस घर में भर गई ।
सब चीज़ के यह मिलने को मुहताज कर गई ॥
जन बच्चे रोते हैं, गोया नानी गुज़र गई ।
हमसाये[११] पूछते हैं कि क्या दादी मर गई ॥
बिन मुर्दा घर में शोर मचाती है मुफ़्लिसी ॥८॥

लाज़िम है गर ग़मी में कोई शोरो गुल मचाय ।
मुफ़्लिस बग़ैर ग़म के ही करता है हाय ! हाय ! ॥
मर जावे गर कोई तो कहां से उसे उठाय ।
इस मुफ़्लिसी की ख़्वारियां क्या-क्या कहूं मैं हाय ॥
मुर्दे को बिन कफ़न के गड़ाती है मुफ़्लिसी ॥९॥

---

[६] मालदार [७] दस्तरख़्वान, कपड़ा जिस पर खाना खाते हैं [८] हड्डी [९] प्रबन्ध [१०] लज्जा, ग़ैरत
[११] पड़ोसी

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० उड़ाती

क्या-क्या मुफ़्लिसी की कहूं ख़्वारी फ़कड़ियां ।
झाड़ू बगैर घर में बिखरती है झकड़ियां ।।
कोनों में जाले लिपटे हैं, छप्पर में मकड़ियां ।
पैदा न होवे जिनके जलाने को लकड़ियां ।।
दरिया में उनके मुर्दे बहाती है मुफ़्लिसी ।।१०।।

बीबी की नथ न लड़कों के हाथो कड़े रहे ।
कपड़े मियां के बनिये के घर में पड़े रहे ।।
जब कड़ियां बिक गई, तो खण्डहर में पड़े रहे ।
जंज़ीर न किवाड़ न पत्थर गड़े रहे ।।
आखिर को ईट-ईट खुदाती है मुफ़्लिसी ।।११।।

नक़्क़ाश[१२] पर भी ज़ोर जब आ मुफ़्लिसी करे ।
सब रंग दम में करदे मुसव्विर[१३] के किर-किरे ।।
सूरत ही उसकी देख के मुंह खिच रहे परे ।
तस्वीर और नक़्श में क्या रंग वह भरे ।।
उसके तो मुंह का रंग उड़ाती है मुफ़्लिसी ।।१२।।

जब ख़ूबरू[१४] पे आन के पड़ता है दिन सियाह ।
फिरता है बोसे देता—हर एक को ख़्वामख़्वाह ।।
हर्गिज़ किसी के दिल को नहीं होती उसकी चाह ।
गर हुस्न हो हज़ार रुपे का तो उसको आह ।।
क्या कौड़ियों के मोल बिकाती हैं मुफ़्लिसी ।।१३।।

उस ख़ूबरू को कौन दे अब दाम और दिरम[१५] ।
जो कौड़ी-कौड़ी बोसे को राज़ी हो दम बदम ।।
टोपी पुरानी दो तो वह जाने कुलाहे जम[१६] ।
क्यूंकर न जी को उस चमने हुस्न के हो ग़म ।।
जिसकी बहार मुफ्त लुटाती है मुफ़्लिसी ।।१४।।

---

१२. चित्रकार १३. तस्वीर बनाने वाला १४. सुन्दर, रूपवान
१५. चांदी का छोटा सिक्का, चवन्नी (दिर्हम) १६. ईरान के बादशाह जमशेद का ताज

आशिक़ के हाल पर भी जब आ मुफ़्लिसी पड़े ।
माशूक़ अपने पास न दे उसको बैठने ।।
आवे जो रात को तो निकाले वहीं उसे ।
इस डर से यानी रात को धन्ना कहीं न दे ।।
तुहमत यह आशिक़ों को लगाती है मुफ़्लिसी ।।१५।।

कैसी ही धूमधाम की रंडी हो ख़ुश जमाल ।
जब मुफ़्लिसी का आन पड़े सर पे उसके जाल ।।
देते हैं उसके नाच को ठट्ठे के बीच डाल ।
नाचे है वह तो फ़र्श के ऊपर क़दम संभाल ।।
और उसको उंगलियों पे नचाती है मुफ़्लिसी ।।१६।।

उसका तो दिल ठिकाने नहीं भाव क्या बताये ।
जब हो फटा दुपट्टा तो काहे से मुंह छुपाये ।।
ले शाम से वह सुबह तलक गोकि नाचे गाये ।
औरों को आठ सात, तो वह दो टके ही पाये ।।
इस लाज से उसे भी लजाती है मुफ़्लिसी ।।१७।।

जिस कस्बीरंडी का हो हिलाकत से दिल हुज़ी ।
रखता है उसका जब कोई आकर तमाशबीं ।।
इक पौन पैसे तक भी वह करती नहीं नहीं ।
यह दुख उसी से पूछिये अब आह जिस तईं ।।
लालच में सारी रात जगाती है मुफ़्लिसी ।।१८।।

वह तो यह समझे दिल में कि थैला जो पाऊंगी ।
दमड़ी के पान दमड़ी की मिस्सी मंगाऊंगी ।।
बाक़ी रहे छै दाम सो पानी भराऊंगी ।
फिर दिल में सोचती है कि क्या ख़ाक़ खाऊंगी ।।
आख़िर चबैना उसको चबाती है मुफ़्लिसी ।।१९।।

जब मुफ़्लिसी से होवे कलावंत का दिल उदास ।
फिरता है ले तंबूरे को हर घर के आस पास ।।
एक पाव सेर आटे की दिल में लगाके आस ।
गौरी का वक़्त होवे तो गाता है वह भवास ।।
यां तक हवास उसके उड़ाती है मुफ़्लिसी ।।२०।।

मुफ़्लिस जो ब्याह बेटी का करता है बोल बोल ।
पैसा कहां जो जाके वह लावे जहेज़ मोल ॥
जोरू का वह गला है कि फूटा हो जैसे ढोल(१) ।
घर की हलाल ख़ोरी[17] तलक करती है ठठोल ॥
हैबत तमाम उसकी उठाती है मुफ़्लिसी ॥२१॥

बेटे का ब्याह हो तो बराती न साथी है(२) ।
न रोशनी न बाजे की आवाज़ आती है ॥
मां पीछे एक मैली चदर ओढ़े ज़ाती है ।
बेटा बना है दूल्हा, तो बाबा बराती है ॥
मुफ़्लिस की यह बरात चढ़ाती है मुफ़्लिसी ॥२२॥

गर ब्याह कर चला है सहर[18] को तो यह बला ।
शुहदा, ज़नाना, हीजड़ा, और भाट मुंडचिरा ॥
घेरे(३) हुए उसे चले जाते हैं जा बजा ।
वह आगे-आगे लड़ता हुआ जाता है चला ॥
और पीछे थपड़ियों को बजाती है मुफ़्लिसी ॥२३॥

दरवाज़े पर ज़नाने बजाते हैं तालियां ।
और घर में बैठी डोमिनी देती हैं गालियां ॥
मालिन गले की हार हो दौड़े ले डालियां ।
सक़्क़ा खड़ा सुनाता है बातें रज़ालियां ॥
यह ख़्वारी, यह ख़राबी दिखाती है मुफ़्लिसी ॥२४॥

कोई सूम, बेहया कोई बोला 'निखट्टू' है ।
बेटे(४) ने जाना बाप तो मेरा 'निखट्टू' है ॥
बेटी(५) पुकारती(६) हैं, कि 'बाबा निखट्टू' है ।
बीबी यह दिल में कहती है 'भडुआ निखट्टू' है ॥
आख़िर 'निखट्टू' नाम धराती है मुफ़्लिसी ॥२५॥

---

[17] महतरानी [18] प्रातः काल

पाठान्तर—(१) श० आ० हो जैसे फूटा ढोल (२) क़ा० श० आ० न ब्याही न साती है (३) क़ा० जा० खींचे (४) जा० बेटी (५) क़ा० जा० बेटे (६) क़ा० जा० पुकारते

मुफ़्लिस का दर्द दिल में कोई ठानता नहीं ।
मुफ़्लिस की बात को भी कोई मानता नहीं ।।
जात और हसब नसब को कोई जानता नहीं ।
सूरत भी उसकी फिर कोई पहचानता नहीं ।।
यां तक नज़र से उसको गिराती है मुफ़्लिसी ।।२६।।

जिस वक़्त मुफ़्लिसी से यह आकर हुआ तबाह ।
फिर कोई उसके हाल पे करता नहीं निगाह ।।
दालिद्दरी[१९] कहे कोई ठहरावे रूसियाह ।
जो बातें उम्र भर न सुनी होवें उसने आह ।।
वह बातें उसको आके सुनाती है मुफ़्लिसी ।।२७।।

चूल्हा, तवा, न पानी के मटके में आबी है ।
पीने को कुछ न खाने को और न रिकाबी है ।।
मुफ़्लिस के साथ सबके तई बेहिजाबी[२०] है ।
मुफ़्लिस की जोरू सच है कि हां सबकी भाभी है ।।
इज़्ज़त सब उसके दिल की गंवाती है मुफ़्लिसी ।।२८।।

कैसा ही आदमी हो पर इफ़्लास[२१] के तुफ़ैल[२२] ।
कोई गधा कहे उसे, ठहरावे कोई बैल ।।
कपड़े फटे तमाम, बढ़े बाल फैल-फैल ।
मुंह खुश्क, दांत जर्द, बदन पर जमा है मैल ।।
सब शक्ल कैदियों की बनाती है मुफ़्लिसी ।।२९।।

हर आन दोस्तों की मुहब्बत घटाती है ।
जो आश्ना[२३] हैं उनकी तो उल्फ़त घटाती है ।।
अपने की मेहर ग़ैर की चाहत घटाती है ।
शर्मो हया व इज़्ज़तो हुर्मत[२४] घटाती है ।।
हाँ, नाखून और बाल बढ़ाती है मुफ़्लिसी ।।३०।।

---

१९. दरिद्र २०. बेपर्दगी २१. गरीबी २२. कारण २३. मित्र २४. प्रतिष्ठा, इज़्ज़त

जब मुफ़्लिसी हुई तो शराफ़त कहां रही ।
वह क़द्र ज़ात की वह नजाअत[२५] कहां रही ।।
कपड़े फटे तो लोगों में इज़्ज़त कहां रही ।
ताज़ीम और तवाज़ो की बाबत कहाँ रही ।।
मजलिस की जूतियों पे बिठाती है मुफ़्लिसी ।।३१।।

मुफ़्लिस किसी का लड़का जो ले प्यार से उठा ।
बाप उसका देखे हाथ का और पांव का कड़ा ।।
कहता है कोई 'जूती न लेवे कहीं चुरा' ।
नटखट उचक्का' चोर दग़ाबाज़ गठकटा ।।
सौ-सौ तरह के ऐब लगाती है मुफ़्लिसी ।।३२।।

रखती नहीं किसी की यह ग़ैरत की आन को ।
सब ख़ाक़ में मिलाती है हुर्मत की शान को ।।
सौ मेहनतों में उसकी खपाती है जान को ।
चोरी पे आके डाले है मुफ़्लिस के ध्यान को ।।
आख़िर निदान भीख मंगाती है मुफ़्लिसी ।।३३।।

दुनियां में लेके शाह से, ऐ यारो ता फ़क़ीर ।
ख़ालिक न मुफ़्लिसी में किसी को करे असीर ।
अशराफ़[२६] को बनाती है एक आन में हक़ीर[२७] ।
क्या-क्या मैं मुफ़्लिसी की ख़राबीं कहूं 'नज़ीर' ।।
वह जाने जिसके दिल को जलाती है मुफ़्लिसी ।।३४।।

---

[२५] कुलीनता, शराफत [२६] शरीफ लोग, [२७] तुच्छ, छोटा

इफ़्लास[१] का नक्शा

रख बोझ सर पे निकला, अशतर मिला तो ऐसा ।
घेरा ख़राबियों ने लश्कर मिला तो ऐसा ।।
बढ़ गए जो बाल सर के, अफ़सर मिला तो ऐसा ।
मुफ़्लिस का ज़र्द चेहरा, जो ज़र मिला तो ऐसा ।।
आंसू जो ग़म से टपका, गौहर मिला तो ऐसा ।।१।।

जब मुफ़्लिसी का आकर सर पर पड़े(१) है साया ।
फिरता है मर्द क्या-क्या, दर-दर ख़राबो रुसवा ।।
बनता है मुफ़्लिसी में, मुफ़्लिस का आ यह नक़्शा ।
पूरा हुनर जो सीखा, तो भीख मांगने का ।।
यह बदनसीबी देखो, जौहर मिला तो ऐसा ।।२।।

मुफ़्लिस ने गरचे मरकर की नौकरी किसी की ।
कैसी ही मेहनतें की, लेकिन तलब न पाई ।।
जिधर को हाथ डाला, पाई न फूटी कौड़ी ।
की आशिकी तो सर पर, है एक सड़ी सी टोपी ।।
सो वह भी उससे ले ली, दिलबर मिला तो ऐसा ।।३।।

आख़िर को तंग होकर, जब मुफ़्लिसी के मारे ।
चेला हुआ किसी का, और पहने सेली तागे ।।
वां से सिवा लंगोटी, हरगिज़ न पाई उसने ।
दिन को दिलाई झाड़ू, शब को मंगाए टुकड़े ।।
मुफ़्लिस को पीरो मुर्शिद, रहबर मिला तो ऐसा ।।४।।

---

१. गरीबी

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० पड़ा

आटा मिला तो ईंधन, चूल्हा, तवा नदारद ।
रोटी पकावे किस पर घर में तवा नदारद ।।
गर ठीकरे पे थोपे, तो फिर मज़ा नदारद ।
नौ छेद, पेंदी गायब, जिस पर गला नदारद ।।
पानी का गर्मियों में, झज्जर मिला तो ऐसा ।।५।।

क़ुलये, पुलाव, जर्दे, दूध और मलाई खोये ।
पूरी, कचौरी, लड्डू, सब मुफ़्लिसी ने खोये ।
जब कुछ हुआ मयस्सर, दिन रात रोये धोये ।
या खुश्क टुकड़े चाबे, पानी के या भिगोये(१) ।।
सूखा मिला तो ऐसा, और तर मिला तो ऐसा ।।६।।

कमख़ाब, तास, मशरू, तनज़ेब, ख़ासा, मलमल ।
सब मुफ़्लिसी के हाथों, गए अपने हाथ मल-मल ।।
पगड़ी रही न जामा, पटका रहा न आंचल ।
ले टाट की क़बा[२] पर, जोड़ा पुराना कम्बल ।।
अबरा मिला तो ऐसा, अस्तर मिला तो ऐसा ।।७।।

ना(२) झाड़ू झाड़ने की, पेबन्द की न सूई ।
दालान न सह्नवी, न ताक़ न बुख़ारी ।।
उपला, न आग पानी, चूल्हा, तवा न चक्की ।
टूटा सा एक उसारा, दीवार झांकड़ों की ।।
क़िस्मत की बात देखो, जो घर मिला तो ऐसा ।।८।।

चरपाई बेच खाई और बान को जलाकर ।
रोटी पकाई रो-रो और खाई आह भर-भर ।।
सोने के वक़्त झंगला(३)[३] गुदड़ा रहा न चादर ।
कोहनी पे सर को रखकर सोये फ़क़त ज़मीं पर ।।
तकिया मिला तो ऐसा बिस्तर मिला तो ऐसा ।।९।।

---

२. अंगरखा, चोग़ा ३. टूटे हुए बानों वाली चारपाई

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० या पानी के भिगोये (२) जा० ने (३) जा० झंगा

हो सुबह और सूरज जब आके मुंह दिखावे ।
ले शाम तक उसी के, घर बीच धूप जावे ।।
आंधी चले तो घर में, सब ख़ाक धूल जावे ।
बरसे जो मेंह तो बाहर एक बूंद फिर न जावे ।।
फूटे नसीब देखो, छप्पर मिला तो ऐसा ।।१०।।

जिस दिल जले के ऊपर, दिन मुफ़्लिसी के आये ।
फिर दूर भागे उससे, सब अपने और पराये ।।
आख़िर को मुफ़्लिसी ने, यह दुःख उसे दिखाये ।
खाना जहां था बटता वां जाके धक्के खाये ।।
कमबख़्त को जो खाना अक्सर मिला तो ऐसा ।।११।।

ताज़ीम[४] थी हर एक जा, था पास जब तलक ज़र ।
मुफ़्लिस हुआ तो कोई, देखे न फिर नज़र भर ।।
कपड़े फटों से बैठा, जिस बज़्म[५] में वह जाकर ।
सब फ़र्श से उठा कर, बिठलाया जूतियों पर ।।
मुफ़्लिस को हर मकां में, आदर मिला तो ऐसा ।।१२।।

गर मुफ़्लिसी में उसने दो तीन लड़के पाये ।
और कुनबे वाले लड़के, वां खेलने को आये ।।
देख उनके गहने पाते, आंखों में आंसू लाये ।
सिरकी को छील सच्चे नथ और कड़े बनाये ।।
बदबख़्त के बच्चों को ज़ेवर मिला तो ऐसा ।।१३।।

असबाब था तो क्या-क्या, रखते थे लोग रिश्ता ।
मुफ़्लिस हुआ तो हरगिज़, रिस्ता रहा न नाता ।।
न भाई-भाई कहता, न बेटा कहता बाबा ।
इस पर "नज़ीर" मुझको रोना बहुत है आता ।।
इस मुफ़्लिसी ज़दे को टब्बर मिला तो ऐसा ।।१४।।

---

४. आदर-सत्कार ५. सभा ६-कुंबा, ख़ानदान

आटे दाल का भाव (१)

क्या कहूँ नक़्शा मैं यारों ! ख़ल्क़[1] के अह्वाल का।
अहले दौलत का चलन, या मुफ़्लिसों[2] कंगाल का॥
यह बयां तो वाक़ई है, हर किसी के हाल का।
क्या तवंगर[3], क्या ग़नी, क्या पीर और क्या बालका॥
सबके दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का ॥१॥

गर न आटे दाल का अन्देशा होता सद्दराह[4]।
तो न फिरते मुल्क गीरी को वज़ीरो बादशाह॥
साथ आटे दाल के है हश्मतों[5] फ़ौजो सिपाह[6]।
जा बजा गढ़, कोट से, लड़ते हुए फिरते हैं आह॥
सबके दिल को फ़िक्र है, दिन रात आटे दाल का ॥२॥

गर न आटे दाल का होता, कदम यां दरमियां[7]।
मुंशियो मीरों[8] वज़ीरो, बख़्शियों[9] नव्वाबो खां॥
जागते दरबार में क्यों आधी-आधी रात वां।
क्या अजब नक़्शा पड़ा है आह, क्या कहिये मियां॥
सबके दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का ॥३॥

गर न आटे दाल, का यां खटका होता बार-बार।
दौड़ते काहे को फिरते धूप में प्यादे सवार॥
और जितने हैं जहां मैं पेशेवर और पेशेदार।
एक भी जी पर नहीं है, इस सिवा सब्रो क़रार[10]॥
सबके दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का ॥४॥

---

१. दुनिया २. गरीब ३. तन्दुरुस्त ४. काम में रुकावट डालने वाला ५. नौकर चाकर ६. सेना ७. बीच में ८. अध्यक्ष, सरदार ९. सेना को वेतन बांटने वाला, कस्बों में कर वसूल करने वाला १०. स्थिरता, सुकून

अपने आलम में यह आटा दाल भी क्या फर्द है।
हुस्न की आनो अदा, सब इसके आगे गर्द है।।
आशिक़ों का भी इसी के, इश्क़ से मुंह ज़र्द है।
ताकुजा कहिए कि क्या, वह मर्द क्या नामर्द है।।
सबके दिल को फ़िक्र है, दिन रात आटे दाल का ।।५।।

दिलबरों की चश्म अबरू ज़ुल्फ़ क्या, खतोख़ाल है।
नाज़की, शोख़ी, अदाऐं हुस्न लालों लाल है।।
क्या कमर पतली है काफ़िर, क्या ठुमकती चाल है।
ग़ौर कर देखा है जो कुछ है सो आटा दाल है।।
सबके दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का ।।६।।

अब जिन्हें अल्लाह ने यां कर दिया कामिल फ़क़ीर।
वह तो बेपरवा सख़ी, दाता हैं आप ही दिल पज़ीर।।
और जितने हैं वह सब हैं दाल आटे के असीर।
इन ग़रीबों की भी अब यह शक्ल हैगी ऐ! "नज़ीर"।।
सबके दिल को फ़िक्र है, दिन रात आटे दाल का ।।७।।

आटे दाल का भाव (२)

आटे के वास्ते है हविस मुल्को माल की।
आटा जो पालकी है तो है दाल नालकी[1]।
आटे ही दाल से है, दुरुस्ती यह हाल की।
इससे ही सबकी ख़ूबी, जो है हालो काल[2] की।
सब छोड़ो बात, तूतियो[3] पिदड़ीयो लाल की।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ॥१॥

इस आटे दाल ही का जो आलम में है ज़हूर।
इससे ही मुंह पे नूर है और पेट को सुरूर[4] ॥
इससे ही आके चढ़ता है चेहरे पे सबके नूर।
शाहो गदा, अमीर, इसी के हैं सब मज़ूर ॥
सब छोड़ो बात, तूतियो पिदड़ीयो लाल की।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ॥२॥

क़ुमरी[5] ने क्या हुआ जो कहा 'हक़सर्रहू'।
और फ़ाख़्ता भी बैठ के कहती है क़हक़हू ॥
वह खेल खेलो जिससे हो तुम जग में सुर्ख़ुरू[6]।
सुनते हो ऐ अज़ीज़ो इसी से है आबरू ॥
सब छोड़ो बात, तूतियो पिदड़ीयो लाल की।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ॥३॥

---

[1] इधर-उधर से खुली छाजनदार पालकी [2] कार्य और कथन [3] मैना [4] आनन्द, हल्का नशा [5] सफ़ेद पक्षी [6] सम्मानित

पाठान्तर—(१) श० आ० है जो

मैना के पालने की, अगर दिल में मैल है ।
सच पूछिये, तो यह भी ख़राबी की ज़ैल है ।।
सब इश्क़बाज़ी, रोज़ी के होती तुफ़ैल है ।
रोज़ी न हो तो मैना भी फिर क्या चुड़ैल है ।।
सब छोड़ो बात, तूतियो पिदड़ीयो लाल की ।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ।।४।।

आटा है जिसका नाम, वही ख़ास नूर है ।
और दाल भी परी है, कोई या कि हूर है ।।
इसका भी खेल खेलना सबको ज़रूर है ।
समझे जो इस सख़ुन को, वह साहिबे शऊर है ।।
सब छोड़ो बात, तूतियो पिदड़ीयो लाल की ।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ।।५।।

बुलबुल के पालने में, कहो क्या है फ़ायदा ?
और जो बया भी पाला, तो फिर हाथ क्या लगा ?
कोई दम में पेट मांगेगा, कुछ मुझको ला खिला ।
फिर दाल और आटा ही काम आता है विला[७] ।।
सब छोड़ो बात, तूतियो पिदड़ीयो लाल की ।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ।।६।।

जिन पर हैं चार पैसे वही हैं यहाँ अमीर ।
और जितने पैसेवर हैं यह क्या ख़ुर्द क्या कबीर ।।
और जिनके पास कुछ नहीं वह हैं निरे फ़क़ीर ।
रोटी का सिलसिला है बड़ा क्या कहूँ 'नज़ीर' ।।
सब छोड़ो बात, तूतियो पिदड़ीयो लाल की ।
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो, आटे दाल की ।।७।।

---

[७] दोस्त

भजन—१

ऐ मन हित रख और न दूजा रंग बजावै ।
मुख ते ले हरिनाम ज़रा मुहचंग बजावै ।
तुरत सरंगी की छेड़ गुनी का ढंग वजावै ।
धुर की धुन का ध्यान धरे और पुंग बजावै ।
नेह नून ले संग अरे आ-चंग बजावै ।
भज़न बरन पहिचान पिया मिरदंग बजावै ॥

छिन छिन का रख मान अरे एक छिन मत भूले ।
पल पल जगतें ठान अरे मन दिन मत भूले ।
धनक धनक हो आन अरे धन धन मत भूले ।
गत गत का परमान अरे गुन गुन मत भूले ॥ नेह नून०

जिन चित घुघरू बाँध सतेहा ताल लगाया ।
हित और मन के साथ मंजीरा आन बजाया ।
सुध बुध तबले ठोंक झनक कर ताल मिलाया ।
ऐ मन मेरी मान भजन का भेद बताया ॥ नेह नून०

जाको है टुक ग्यान तंबूरा कंठ लगाया ।
धनक धनक जब ताल वजा तब मन लुभियाना ।
तान मिलाया बाजे से जब ठहरा गाना ।
मान मेरा दिस्टान अरे टुक होकर स्याना ॥ नेह नून०

ढोलक डोरी खींच पुरे पर थाप लगाई ।
बोल निकाले गीत के और उसकी अस्थाई ।
पेम पुरी में बसने को जब जगह पाई ।
ऐ मन मेरे बात यही है छानी ताई ।
ध्यान मुंडेलस बाँध ज्योंही टुक सर उकसाया ।
हित की बीन बजाने में परबीन कहाया ।
डम्मल तन में साध कै और छैना छमकाया ।
ऐ मन मेरे सोच यही तुझको समझाया ॥ नेह नून०

ढोल गले में चाहत का है जिसने डाला ।
टेक उसी की चाली और जो राग निकाला ।
तू भी जब मद पेम का ऐ मन पीकर प्याला ।
कहना मान नज़ीर का अब होकर मतवाला ।
नेह नून ले संग अरे आ चंग बजावे ।
भजन बरन पहिचान पिया मिरदंग बजावे ।।

भजन-२

भूल ठिठक हठ संग लगा करले हठ का बैराग
अरे मन ध्यान लगा दे ।
माला पेम फिरा नित हिरदय भनक जतन से मार ।
जोगी का विस्तार बना और कानों मुंदरे डाल
न ला पर दुबिधा चित में ।
फेरी फिर कर नाद बजा या अस्तल आसन मार । अरे मन०

सीख फकीरी पंथ मियाँ या ठान गृहस्थी धंद—
न दे टुक जी को डिगने ।
जब लागेगी लाग सुरत धर बैठा कर आनंद—
बनज बना व्योपार चला या सब तज हो आजाद
न दे टुक तार बिखरने
ठहर गयी जब याद तो पा फिर भोजन और परसाद । अरे मन०

साथ कहा या संत कहा भक्ती पंथ बिचार,
तनक रख चित को थामे ।
भूलेगी जब दूजी सुध तब ले पीतम दरबार—
अरे मन ध्यान लगा दे ।
कर शब्दों के अर्थ सुना या नित्य कथा को बाँध—
लगाए रख धुन हाँ में ।
जी की खेंचा खेंच गई फिर है तुझको है क्या आँच ।। अरे मन०

भेष बदल या मत बदले ह्यां बैठा रह हर आन
नजर मत फेर उधर से ।
तुझसे नजीर अब कहता है जो ठीक उसी को जान
अरे मन ध्यान लगा दे ।

भजन–३

टुक लीप जमीं को पावों से और उल्टे गन्ने उसमें बो ।
जो आख अखूले नीचे हों और नीचे की जड़ ऊपर हो ।
रख बैल जुये के कांधे पर और पेर उलट कर कोल्हू को ।
जो टपके रस की बूंद कोई उस रस से कान और मुंह को धो ॥
गुरु चेला मिश्री कंद बने जब आन गुरू की खंडित हो ।
ये उल्टे गुरू की बानी है जो उलट पढ़े सो पंडित हो ।
मत गन्नों का गुन खेत उसे ये निरगुन खेती बाड़ी हैं ।
जो इसको रस की ईख कहे वह रसिया निपट अनाड़ी है ।
यह रस की रसिक लटारी है यह बिस की बूटी झाड़ी है ।
जब उलटी इसको काढ़ी है तब इसका नाम उखाड़ी है ॥ गुरू चेला०

ले पानी आतिश[1] फूंक जला ये भट्टी जो भड़काई है ।
घी डाल उलट कर छन्नी में उस घी की यही कढ़ाई है ।
घी सोख लिया जब मैदे ने फिर आगे घोट घुटाई है ।
जब हलवा जल कर खाक हुआ फिर खासा[2] तू हलवाई है ॥ गुरू चेला०

जब हलवा तेरा सख्त हुआ फिर आगे और बखेड़े हैं ।
जब खोया कहवे नुकती को फिर खाते लड्डू पेड़े हैं ।
कुछ बरफी बालूशाही के कुछ खुरमों[3] के उलझेड़े हैं ।
नित फेर पटे पर बेलन को खजलों के पर्त उखेड़े हैं ॥ गुरू चेला०

जब पेठे का भी पेट फटा फिर काम पड़ेगा घेवर से ।
सूराख पड़ेंगे छाती में और आन लगेंगे चक्कर से ।
जब शीरा पानी राब हुआ और सावन भादों आ बरसे ।
फिर तोड़ बताशे बाहर से, और फेर अंदरसे अन्दर से ॥ गुरू चेला०

---

१. अग्नि २. योग्य, ज्ञानी ३. छुहारे

जब सूख अंदरसे सर्द हुए फिर और मिठाई गुप चुप है।
बिस अमृत बान इमरती के और हार गुलाबी चुप चुप हैं।
कुछ लुक लुक च्यूटी मक्खी की कुछ छायी छप्पी छुप छुप है।
जब गुप चुप भी चुप चाप हुई फिर आगे सौदा गुप चुप है।। गुरू चेला०

जब गुप चुप मक्खी चाट गई फिर आगे शकराबाशा है।
वह शकरा सेर छटंकी है और बाशा तोला माशा है।
जब ओला घुलकर रूई हुआ फिर पत का तार तराशा[४] है।
वह गाला बुढ़िया काता है और जवानों का तमाशा है।। गुरू चेला०

जब पेड़े लड्डू टूट चुके फ़िर घेरा घेर ज़लेबी है।
साबूनी रेवड़ी तिलशकरी और बरफी रूह फरेबी[५] है।
क्या अकबरशाही बीरबली क्या कुत्बीखान रकेबी है।
क्या शक्कर पारे नुकुल चने सब तेरी फौज जलेबी है।। गुरू चेला०

जब बुढ़िया भी वो कात चुकी और हुई गंडेली की टक्कर।
और महक इलाची दाने की फिर मूंगा के लड्डू की कर कर।
हो खाली बदन खिलौने का गई दूध और शहद की नहरे भर।
दर मार उठा कर दोज़ख़[६] के धर भिस्त का पत्थर छाती पर।। गुरू चेला०

अबदर भिस्त भी जिस दम ठंठ हुए फिर आगे निपुरन धोबन है।
हैं आरी दंदा मिसरी के और फोंक गजक के सोहन हैं।
फिर तनक तनकती पर आई और फूंकू नर आहत मोहन है।
जब हवला मग़ज़ी खुश्क हुआ फिर खासा हलवा सोहन है।। गुरू चेला०

वह सोहन भी जब रीत चुका फिर मिक़राज़ी भी आवेगा।
वह नोक तिलों की कतरेगा और खील को काट गिरावेगा।
वह सेवा सेव नज़ीर आखिर फिर गूंगे का गुड़ खावेगा।
फिर आगें बूर के लड्डू हैं जो खावेगा पछतावेगा।

---

[४] काट-छांट कर बनाना
[५] आत्मा को धोखा देने वाली
[६] नरक

बचपन

क्या दिन थे यारो वह भी थे जबकि भोले भाले।
निकले थी दाई लेकर फिरते कभी ददा ले।।
चोटी कोई रखा ले बद्घी कोइ पिन्हा ले।
हंसली गले में डाले मिन्नत कोई बढ़ा ले।
मोटें हों या कि दुबले, गोरे हों या कि काले।।
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले।।१।।

दिल में किसी के हरगिज़ ने[1] शर्म ने हया है।
आगा भी खुल रहा है, पीछा भी खुल रहा है।
पहनें फिरे तो क्या है, नंगे फिरे तो क्या है।
यां यूं भी वाह वा है और वूं भी वाह वा है।
कुछ खाले इस तरह से कुछ उस तरह से खाले।
क्या ऐश लूटते हैं, मासूम भोले भाले।।२।।

मर जावे कोई तो भी कुछ उनका ग़म न करना।
ने जाने कुछ बिगड़ना, ने जाने कुछ संवरना।
उनकी बला से घर में हो कैद या कि घिरना।
जिस बात पर यह मचले फिर वो ही कर गुज़रना।
मां ओढ़नी को, बाबा पगड़ी को बेच डाले।
क्या ऐश लूटते हैं, मासूम भोले भाले।।३।।

जो कोई चीज़ देवे नित हाथ ओटते हैं।
गुड़, बेर, मूली; गाजर, ले मुंह में घोटते हैं।।
बाबा की मूंछ मां की चोटी खसोटते हैं।
गर्दों में अट रहे हैं, ख़ाकों में लोटते हैं।।
कुछ मिल गया सो पी लें, कुछ बन गया सो खालें।
क्या ऐश लूटते हैं मासूम भोले भाले।।४।।

---

[1] नहीं है। उर्दू फारसी में 'ने' नहीं के लिए प्रयोग होता है।

जो उनको दो सौ खालें, फीका हो या सलोना।
हैं बादशाह से बेहतर जब मिल गया खिलौना।।
जिस जा पे नींद आई फिर वां ही उनको सोना।
परवा न कुछ पलंग की ने चाहिए बिछौना।।
भोंपू कोई बजा ले, फिरकी कोई फिरा ले।
क्या ऐश लूटते हैं, मासूम भोले भाले।।५।।

ये बालेपन का यारो, आलम अजब बना है।
यह उम्र वो है इसमें जो है सो बादशाह है।।
और सच अगर ये पूछो तो बादशाह भी क्या है।
अब तो "नज़ीर" मेरी सबको यही दुआ है।
जीते रहें सभी के आसो-मुराद वाले।
क्या ऐश लूटते हैं, मासूम भोले भाले।।६।।

---

३. जगह्

बचपन के मज़े

क्या बक़्त था वह हम थे जब दूध के चटोरे।
हर आन आंचलों के मामूर[१] थे कटोरे।
पावों में काले टीके, हाथों में नीले डोरे।
या चांद सी हो सूरत, या सांवरे व गोरे।।
क्या सैर देखते हैं यह तिफ़्ल[२] शीर ख़ोरे[३] ।।१।।

गुल की तरह से हर दम सीने पे फूलते थे।
पी–पी के दूध माँ का खुश होके फूलते थे।।
मां बाप उनकी ख़िदमत सर पर क़ुबूलते थे।
हाथों में खेलते थे झूलों में झूलते थे।।
क्या सैर देखते हैं यह तिफ़्ल शीर खोरे ।।२।।

ने(१) दोस्ती किसी से, ने दिल में उनके कीना[४]।
जानें न बे क़रीना, ने समझें कुछ करीना[५]।।
ने गर्मियों से बाक़िफ़, ने जानते पसीना।
छाती से मां की लिपटे खुश उनको दूध पीना।।
क्या सैर देखते हैं यह तिफ़्ल शीर ख़ोरे ।।३।।

जो देखे उनकी सूरत, ले प्यार से खिलावे।
हाथों उपर उछाले, और छेड़ कर हंसावे।
चूमे कभी दहन[६] को, छाती कभी लगावे।
कोई चुस्नी मुंह में देवे कोई झुनझुना बजावे(२)।
क्या सैर देखते हैं यह तिफ़्ल शीर ख़ोरे ।।४।।

---

१. भरे हुए, नियुक्त २. बच्चे ३. दूध पीने वाले ४. द्वेष ५. ढंग, शिष्टता ६. मुंह

पाठान्तर—(१) अ० कि (२) जा० लगावे

छोटा सा कोई कुर्ता उनका निकालता है ।
या छोटी–छोटी टोपी सर पर संभालता है ।
मां दूध है पिलाती, और बाप पालता है ।
नाना गले लगावे, दादा उछालता है ।
क्या सैर देखते हैं यह तिफ़्ल शीर ख़ोरे ॥५॥

क्या उम्र है अज़ीज़ो और क्या यह वक़्त हैगा ।
जब घुटनियों पे आये फिर और कुछ तमाशा ।
पांवों चले तो वां से फिर और प्यार ठहरा ।
सब ज़िंदगी का ख़त है उनको "नज़ीर" अहा हा ।
क्या सैर देखते हैं यह तिफ़्ल शीर ख़ोरे ॥६॥

जवानी

बना है अपने आलम में वह कुछ आलम जवानी का ।
कि उम्रे खिज्र से बेहतर है एक एक दम जवानी का ॥

नहीं बूढ़ों की दाढ़ी पर मियां यह रंग विस्मे का ।
किया है उनके एक एक बाल ने मातम जवानी का ॥

यह बूढ़े गो कि अपने मुंह से शेख़ी में नहीं कहते ।
भरा है आह पर इन सबके दिल में ग़म जवानी का ॥

यह पीराने जहां इस वास्ते रोते हैं अब हर दम ।
कि क्या-क्या इनका हंगामा हुआ बरहम[1] जवानी का ॥

किसी की पीठ कुबड़ी को भला खातिर में क्या लावे ।
अकड़ में नौ जवानों के जो मारे दम जवानी का ॥

शराबो गुलबदन साक़ी मज़े ऐशोतरब[2] हर दम ।
बहारे ज़िन्दगी कहिये तो है मौसम जवानी का ॥
"नज़ीर" अब हम उड़ाते हैं मज़े क्या-क्या अहा ! हा ! हा
बनाया है अजब अल्लाह ने आलम जवानी का ॥

---

[1] अस्त-व्यस्त [2] आनन्द, हर्ष उल्लास ।

जवानी के मज़े

क्या ऐश की रखती है सब आहंग[1] जवानी ।
करती है बहारों के तईं दंग जवानी ॥
हर आन पिलाती है मै[2] और बंग जवानी ।
करती है कहीं सुलह कहीं जंग जवानी ॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी ।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी ॥१॥

अल्लाह ने जवानी का वह आलम है बनाया ।
जो हर कहीं आशिक़, कहीं रुसवा, कहीं शैदा[3] ॥
फंदे में कहीं जी है, कहीं दिल है तड़पता ।
मरते हैं, सिसकते हैं, बिलखते हैं, अहा ! हा ! ॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी ॥
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी ॥२॥

ने मै[4] का ना माजून[5] के मंगवाने का कुछ ग़म ।
ना(१) दिल के लगाने का, न गुल खाने का कुछ ग़म ॥
गाली का न, आंखों के लड़ाने का कुछ ग़म ।
हंसने का, न छाती से लिपट जाने का कुछ ग़म ॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी ।
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी ॥३॥

लड़ती है कहीं आंख, कहीं दस्त कहीं सैन ।
झूठा है कहीं प्यार, किसी से हैं लगे नैन ।
वादा कहीं, इक़रार कहीं, सैन कहीं, नैन ।
नै जी को फ़राग़त[6] है न आंखों के तईं चैन ।
इस ढब के मज़े रखती हैं और ढंग जवानी ।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी ॥४॥

---

१. इरादा, वक्त २. शराब ३. मुग्ध, आसक्त, पागल ४. शराब ५. कुटी हुई दवाओं का अवलेह ६. फ़ुर्सत
पाठान्तर—जा० ने

उल्फ़त[७] है कहीं, मेहरो[८] मुहब्बत है, कहीं चाह।
करता है कोई चाह, कोई देख रहा राह॥
साक़ी[९] है सुराही है, परीज़ाद[१०] हैं हमराह[११]।
क्या ऐश हैं, क्या ऐश हैं, क्या ऐश हैं वल्लाह[१२]॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी॥५॥

चहरे पे जवानी का जो आकर है चढ़ा नूर।
रह जाती हैं परियां भी ग़रज़ उसके तईं घूर॥
छाती से लिपटती है कोई हुस्न की मग़रूर।
गोदी में पड़ी लोटे है चंचल सी कोई हूर॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजबरंग जवानी॥६॥

गर रात किसी पास रहे ऐश में ग़ल्तां।
और वां से किसी और के मिलने का हुआ ध्यां॥
घबरा के उठे जब तो गिरे पांव पर हर आं।
कहती है "हमें छोड़ के जाते हो किधर जां"॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी॥७॥

रस्ते में निकलते हैं तो होती हैं यह चाहें।
वह शोख़[१३] कि हो बंद जिन्हें देख के राहें॥
खाँसे है कोई हंस के, कोई भरती है आहें।
पड़ती हैं हर एक जा से निगाहों पे निगाहें॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी॥८॥

---

७. प्रेम ८. महरबानी ६. शराब पिलाने वाली १०. परी का पुत्र, अप्सरा-पुत्र ११. साथ १२. ईश्वर की शपथ, खुदा की कसम १३. चंचल

तनते हैं अगर ऐंठ के चलते हैं अजब चाल।
जो पांव कहीं, राह कहीं, सैफ़ कहीं ढाल॥
खींचे हैं कहीं बाल, कहीं तोड़ लिया गाल।
चढ़ बैठें कहीं, हाथ कहीं. मुंह को दिया डाल॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी॥९॥

जाते हैं तवायफ़[१४] में तो वां होती है यह चाव।
कहती है कोई "इनके लिए पान बना लाव"॥
कोई कहती है "यां बैठो," कोई कहती है "वां आव"।
नाचे है कोई शोख़, बताती है कोई भाव॥
इस ढब के मज़ें रखती है और ढंग जवानी॥
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी॥१०॥

हंस हंस के कोई हुस्न की छल बल है दिखाती।
मिस्सी कोई सुरमा, कोई काजल है दिखाती॥
चितवन की लगावट, कोई चंचल है दिखाती।
कुर्ती, कोई अंगिया, कोई आंचल है दिखाती॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी॥११॥

कहती है कोई "रात मेरे पास न आये"।
कहती है कोई "हमको भी ख़ातिर में न लाये"।
कहती है कोई "किसने तुम्हें पान खिलाए"।
कहती है कोई "घर को जो जाये हमें खाए"।
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी॥१२॥

---

[१४]. वेश्या

आया है जो कोई हुस्न का बूटा या कोई झाड़।
जा शोख से झट लिपटे यह पंजों के तई झाड़।
अंगिया के तई चीर के कुर्ती को लिया फाड़।
इख़्लास कहीं, प्यार कहीं, मार कहीं धाड़॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक को दिखाती है अजब रंग जवानी ॥१३॥

क्या तुझ से "नज़ीर" अब मैं जवानी की कहूं बात।
इस पन[15] में गुज़रती है अजब ऐश से औक़ात[16]॥
महबूब परीज़ाद चले आते हैं दिन रात।
सेरें हैं, बहारें, हैं, तवाज़े है मदारात॥
इस ढब के मज़े रखती है और ढंग जवानी।
आशिक़ को दिखाती है अजब रंग जवानी ॥१४॥

---

१५. आयु, उम्र १६. समय

बुढ़ापा

क्या क़हर[1] है यारो जिसे आजाये बुढ़ापा ।
और ऐश जवानी के तईं खाये बुढ़ापा ॥
इश्रत[2] को मिला ख़ाक में ग़म लाये बुढ़ापा ।
हर काम को हर बात को तरसाये बुढ़ापा ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह ! न दिखलाए बुढ़ापा ॥१॥

जो लोग ख़ुशामद से बिठाते थे घड़ी पहर(१) ।
छाती से लिपटते थे मुहब्बत की जता[3] लहर ॥
अब(२) आके बुढ़ापे ने किया, हाय ये कुछ क़हर ।
अब जिनके कने[4] जाते हैं लगते हैं उन्हें ज़हर ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह ! न दिखलाए बुढ़ापा ॥२॥

आगे तो परीज़ाद[5] यह रखते(३) थे हमें घेर ।
आते थे चले आप जो लगती थी ज़रा देर ॥
सो आके बुढ़ापे ने किया हाय यह अन्धेर ।
जो दौड़ के मिलते थे वह(४) अब लेते हैं मुंह फेर ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह ! न दिखलाए बुढ़ापा ॥३॥

---

१. दैवी प्रकोप २. खुशी, आनन्द ३. जाहिर करके ४. पास ५. अप्सरा-पुत्र, माशूक

पाठान्तर— (१) आ० भर (२) क़ा० से आगे, जा० सो आके (३) जा० कहते (४) श० आ० सो

थे जब तलक अय्याम[६] जवानी के हरे रूख ।
महबूब[७] वह मिलते थे न हो देख जिन्हें भूख ।।
बैठें थे परिंद आन के जब तक था हरा रूख ।
अब क्या है जो पतझड़ हुआ, और जड़ ही गई सूख ।।
सब चीज़ कों होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।४।।

आगे थे जहां गुलबदन[८] और यूसुफ़े सानी[९] ।
देते थे हमें प्यार से छल्लों की निशानी ।।
मर जायें तो अब मुंह में न डाले कोई पानी ।
किस दुःख में हमें छोड़ गई 'हाय जवानी' ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।५।।

याद आते हैं हमको जो जवानी के वो हंगाम ।
और जाम दिल आराम, मज़े ऐश और आराम ।।
उन सब में जो देखो तो नहीं एक का अब नाम ।
क्या हम पै सितम कर गई ये गर्दिशे अय्याम[१०] ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।६।।

मजलिस में जवानों की तो साग़र[११] हैं छलकते ।
चुहलें हैं बहारें हैं परीरू[१२] हैं झमकते ।।
हम उनके तयीं दूर से हैं रश्क[१३] से तकते ।
वह ऐशो तरब[१४] करते हैं हम सर हैं पटकते ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।७।।

---

६. दिन ७. प्रियपात्र ८. फूल जैसे कोमल शरीर वाले ९. हज़रत यूसुफ जैसे सुन्दर, अत्यन्त सुन्दर १०. दिनों का फेर ११. शराब के प्याले १२. सुन्दरियां १३. किसी की विशेषता से ईर्ष्या न करके स्वयं वैसा बनने का भाव १४. रास-रंग

अब पांव पड़ें उनके तो हरगिज न बुलावें ।
जा बैठें तो एकदम में ख़फ़ा होके उठावें ।।
इतना तो कहां अब, जो कोई जाम[15] पिलावें ।
गर जान निकलती हो तो पानी न चुआवें ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।८।।

जब ऐश के मेहमान थे, अब ग़म के हुए जैफ़[16] ।
अब ख़ूने जिगर खाते हैं, जब पीते थे सौ कैफ़[17] ।।
जब ऐंठ के चलते थे सिपर[18] बांध उठा सैफ़[19] ।
अब टेक के लाठी के तई चलते हैं सद हैफ़[20] ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।९।।

थे हम भी जवानी में बहुत इश्क़ के पूरे ।
वह कौन से गुलरू[21] थे जो हमने नहीं घूरे[22] ।।
अब आके बुढ़ापे ने किये ऐसे अधूरे ।
पर झड़ गए, दुम उड़ गई, फिरते हैं लडूरे ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।१०।।

क्या यारो, उलट हाय गया हमसे ज़माना ।
जो शोख़[23] कि थे अपनी निगाहों के निशाना ।।
छेड़े है कोई डाल के दादा का बहाना ।
हंस कर कोई कहता है, "कहां जाते हो नाना" ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।११।।

---

१५. शराब का प्याला १६. मेहमान १७. नशा १८. ढाल १९. तलवार २०. सैकड़ों अफसोस
२१. फूल जैसे सुन्दर मुख वाले २२. ताकना, टकटकी लगाकर देखना २३. चंचल

पूछें जिसे कहता है वह क्या पूछे है बुड्ढे ?
आवें तो यह गुल हो कि कहां आवे है बुड्ढे ?
बैठें तो यह हो धूम, कहां बैठे हैं बुड्ढे ?
देखें जिसे कहता है, वह क्या देखे हैं बुड्ढे ?
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥१२॥

क्या यारो कहें गोकि[२४] बुढ़ापा है हमारा ।
पर बूढ़े कहाने का नहीं तो भी सहारा ॥
जब बूढ़ा हमें कहके जहां[२५] हाय ! पुकारा ।
काफ़िर[२६] ने कलेजे में गोया तीर सा मारा ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥१३॥

ख़ूबां[२७] में अगर जावें तो होती है यह फकड़ी[२८] ।
खीचें है कोई हाथ कोई पकड़े है लकड़ी ॥
मूंछें कहीं बत्ती के लिए जाती हैं पकड़ी ।
दाढ़ी को पकड़, खींच कोई झाड़े है मकड़ी ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ॥
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥१४॥

कहता है कोई छीन लो इस बुड्ढे की लाठी ।
कहता है कोई शोख[२९] कि हां खींच लो डाढ़ी ॥
इतनी किसी काफ़िर को समझ अब नहीं आती ।
क्या बूढ़े जो होते हैं तो क्या उनके नहीं जी ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ॥
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥१५॥

---

[२४] यद्यपि [२५] संसार [२६] ईश्वर की दी हुई नेंमतों पर कृतज्ञता प्रकट न करने वाला, दुष्ट, बुरा
[२७] सुन्दरियों, माशूकों [२८] अनादर-पूर्ण मज़ाक [२९] चंचल, माशूक

एक वक़्त वह था हम भी मज़े करते थे गिन-गिन ।
महबूब[३०] परीज़ाद[३१] न रहते थे मिले बिन ।।
एक वक़्त यह है हाय जो सब करते हैं अब घिन[३२] ।
या एक वह अय्याम[३३] थे या एक हैं यह दिन ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।१६।।

बूढ़ों में अगर जावें तो लगता नहीं वां[३४] दिल ।
वां क्यों कि लगे, दिल तो है महबूबो[३५] का मायल[३६] ।।
महबूबों में जावें हैं तो वह सब छेड़े हैं मिल-मिल ।
क्या सख़्त मुसीबत है पड़ी आन के मुश्किल ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।१७।।

पनघट को हमारी अगर असवारी गई है ।
तो वां भी लगी साथ यही ख़्वारी गई है ।।
सुनते हैं कि कहती हुई पनिहारी गई है ।
"लो देखो बुढ़ापे में यह मत मारी गई है ।।"
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।१८।।

पगड़ी हो अगर लाल गुलाबी तो यह आफ़त ।
कहता है हर एक देख के क्या ख़ूब है रंगत ।।
ठट्ठे से कोई कहता है कर शक्ल पै रहमत ।
लाहौल वला[३७] देखिए, बूढ़े की हिमाक़त[३८] ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।१९।।

---

[३०] प्रिय पात्र [३१] अप्सरा पुत्र/पुत्री [३२] घृणा [३३] दिन [३४] वहां [३५] प्रिय पात्र, सुन्दरी
[३६] आसक्त [३७] घृणासूचक वाक्य [३८] मूर्खता

गर ब्याह में जावें तो यह जिल्लत[३९] है उठाना ।
छुटते ही बने बाप निकाही[४०] का निशाना ।।
रिंदों[४१] में अगर जावें तो मुश्किल है फिर आना ।
अफ़सोस किसी जा[४२] नहीं बूढ़े का ठिकाना ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।२०।।

है झांवली[४३] ताली[४४] का जनानों[४५] में जो चर्चा ।
गर उनमें कभी जावें तो है यह सितम आता ।।
दाढ़ी की जगत बोले कोई आंख को मटका ।
ठट्ठे से कोई कहता है आ ! आ ! मेरे दादा ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।२१।।

दरिया के तमाशे को अगर जावें तो यारो ।
कहता है हर एक देख के "जाते हो कहां को ?" ।।
और हँस के शरारत से कोई पूछे है बदखो[४६] ।
"क्यों खैर है, क्या ख़िज़्र[४७] से मिलने को चले हो ?" ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।२२।।

गर आज को होते वह जवानी के ज़माने ।
क़ुदरत थी जो यूं छेड़ते भड़ुए व जनाने ।।
मुश्किल अभी पड़ जाती उन्हें पीछे छुड़ाने ।
एक दम में अभी लगते वोही हाय ! मचाने ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।२३।।

---

३९. क्वारी ४०. निकाह वाली ४१. शराबी, रसिया ४२. जगह ४३. आंख और भौं का इशारा ४४. दोनों हाथों का बजाना ४५. हिजड़ों में ४६. बुरे और कड़ुवे स्वभाववाला ४७. भूले भटकों को राह बताने वाले, अमर पैगम्बर

गर नाच में जावें तो यह हसरत है सताती ।
जो नाचे है काफ़िर वह नहीं ध्यान में लाती ॥
औरों की तरफ़ जावे तो आंखें है लड़ाती ।
पर हमको तो काफ़िर वह अंगूठा है दिखाती ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ॥
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥२४॥

गर नायिका उनमें कोई बूढ़ी है कहाती ।
अलबत्ता बुढ़ापे पै वह टुक रहम है खाती(१) ॥
फीकी सी पुरानी सी, लगावट है जताती ।
पर क़हर[४८] है, वह हमको ज़रा खुश नहीं आती ।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ॥
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा २५॥

चकले[४९] के जो अन्दर की वह कहलाती हैं कस्बी[५०] ।
गर उनमें कभी जावें तो होती है खराबी ॥
मुंह् देखते ही कहती हैं सब "आओ बड़े जी" ॥
"क्या आए हो यां करने को पीरी व मुरीदी[५१] ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ॥
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥२६॥

गर जावें तवायफ[५२] में तो लगती हैं सुनाने(२) ।
क्या आये हो हज़रत हमें क़ुरआन पढ़ाने ॥
हंस–हंस कोई पूछे है नमाजों के दुगाने[५३] ।
ठट्ठे से कोई फेंके है तस्बीह[५४] के दाने ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥२७॥

---

[४८] दैवी प्रकोप [४९] व्यभिचारिणी स्त्रियों या रंडियों का अड्डा [५०] पेशेवर बाज़ारी औरत
[५१] उस्तादी शागिर्दी [५२] वेश्या [५३] शुकराने की नमाज़ की दो रकअतें [५४] माला

पाठान्तर—श० आ० रहम वह लाती (२) जा० सताने

गो[५५] झुक के कमर पांव से सर आन लगा है ।
पर दिल में तो ख़ूबां[५६] का वही ध्यान लगा है ।।
कहते हैं, जिसे हमको यह अरमान लगा है ।
कहता है वह, क्या बूढ़े को शैतान लगा है ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।२८।।

नक़लें कोई इन पोपले होंठों की बनावे ।
चलकर कोई कुबड़े की तरह क़द को झुकावे ।।
दाढ़ी के कने[५७] उंगली को ला ला के नचावे ।
यह ख़्वारी तो अल्लाह ! किसी को न दिखावे ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।२९।।

थे जैसे जवानी में किये धूम धड़क्के ।
वैसे ही बुढ़ापे में छुटे आन के छक्के ।।
सब उड़ गए काफ़िर वह नज़ारे वह झमक्के ।
अब ऐश जवानों को है, और बूढ़ों को धक्के ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।३०।।

गर हिर्स[५८] से दाढ़ी को ख़िज़ाब अपनी लगावें ।
झुर्री जो पड़ी मुंह पे उन्हें कैसे मिटावें ।।
गो मक्र[६०] से हंसने के तईं दांत बंधावे[६१] ।
गर्दन तो पड़ी हिलती है क्या ख़ाक छिपावें ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।३१।।

---

५५. यद्यपि ५६. सुन्दरियों का ५७. पास ५८. लोभ, लालच, इच्छा ५९. बालों को काला करने की दवा ६०. धोखा, चालाकी ६१. बनावटी दांत लगवालें

आंखों से ये दीदार[62] की लज़्ज़त[63] नहीं छुटती।
और दिल से भी महबूब की उलफ़त नहीं छुटती॥
सब छुट गया पर दीद[64] की यह लत नहीं छुटती।
बूढ़े हुए पर हुस्न की चाहत नहीं छुटती॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय! बुढ़ापा।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा॥३२॥

सुनते हो जवानो यह सख़ुन कहते हैं तुमसे।
करने हों जो कर लो वह मज़े ऐशो तरब[65] के॥
जावेगी जवानी तो फिर अफ़सोस करोगे।
तुम जैसे हो, वैसे तो कभी हम भी जवां थे॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय! बुढ़ापा।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा॥३३॥

अब जितने हो माशूक यह सब याद रखो बात।
जो हो सो करो चाहने वालों की मुदारात[66]॥
महबूबो ग़नीमत है जवानी की यह औक़ात[67]।
जब बूढ़े हुए फिर तो हुए ढाक के दो पात॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय! बुढ़ापा।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा॥३४॥

अब जिस से रहें साफ़ तो होता है वह गँदला।
अल्लाह न दिखलाए किसी को यह मलोला[68]॥
इस चर्ख़सितमगार[69] ने सीने में हसद[70] ला।
क्या हमसे जवानी का लिया आह! यह बदला॥
सब चीज को होता है बुरा हाय! बुढ़ापा।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा॥३५॥

---

[62] दर्शन [63] आनन्द प्राप्त करने की आदत [64] दीदार, दर्शन [65] आनन्द, आह्लाद, खुशी [66] आव-भगत, सम्मान [67] वक्त [68] दुःख [69] आस्मान, होनी [70] जलन, ईर्ष्या

थे जैसे जवानी में पिये जाम[७१] सुबू[७२] के ।
वैसे ही बुढ़ापे में पिये घूंट लहू के ॥
जब आके गले लगते थे महबूब भबूके ।
अब कहिये तो बुढ़िया भी कोई मुंह पे न थूके ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥३६॥

यह होंठ जो अब पोपले यारो हैं हमारे ।
इन होंठों ने बोसों[७३] के बड़े रंग है मारे ॥
होते थे जवानी में तो परियों के गुज़ारे ।
और अब तो चुड़ैल आन के(१) एक लात न मारे ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥३७॥

थे जैसे जवानी के चढ़े ज़ोर में सरशख़[७४] ।
वैसे ही बुढ़ापे की पड़ी आन के अब पख ॥
तकला हुआ तन सूख, रूई बाल. रगें नख़ ।
हल्वा हुए, चर्ख़ा हुए, लप्सी हुए चमरख(१) ॥
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥३८॥

महफ़िल में वह मस्ती से बिगड़ना नहीं भूले ।
साक़ी से प्यालों पे झगड़ना नहीं भूले ॥
हंस-हंस के परीज़ादों से लड़ना नहीं भूले ।
वह गालियां, वह बोसों पे अड़ना नहीं भूले ॥
सब चीज को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ॥३९॥

---

[७१] शराब पीने के प्याले [७२] घड़ों के [७३] चुम्बन [७४] मज़बूत

पाठान्तर—(१) ज़ा० आके भी (१) जा० चख़

क्या दौर था सर दुखने का होता था जद अफ़सोस ।
हर गुंचादहन[७५] देख के करता था हद अफ़सोस ।।
अब मर भी अगर जावें तो होता है कद अफ़सोस ।
अफ़सोस, सद अफ़सोस, सद अफ़सोस, सद अफ़सोस ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।४०।।

जब जान के बूढ़ा हमें छेड़ें हैं यह दिलख़्वाह[७६] ।
और छेड़ के मजलिस से उठाते हैं ब इकराह[७७] ।।
उस वक्त तो हम यारो ! दमे सर्द से भर आह ।
रो–रो के यही कहते हैं अब क्यों मेरे अल्लाह ! ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।४१।।

गर होती जवानी तो अभी धूम यह मचती ।
छाती से लिपट दम में कड़क डालते पसली ।।
जब कुर्ती और अंगिया की उड़ा डालते धज्जी ।
पर क्या करें यारो कि बुढ़ापे ने बुरी की ।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।४२।।

वह जोश नहीं जिसके कोई ख़ौफ़ से दहले ।
वह ज़ोम नहीं जिससे कोई बात को सह ले ।।
जब फूस हुए हाथ थके पांव भी पहले ।
फिर जिसके जो कुछ शौक़ में आवे वही कहले ।।
सब चीज़ को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।४३।।

करते थे जवानी में तो सब आपसे आ चाह ।
और हुश्न दिखाते थे वह सब आन के दिल ख़्वाह[७८] ।।
यह क़हर बुढ़ापे ने किया आह "नज़ीर" आह ।
अब कोई नहीं पूछता अल्लाह ! ही अल्लाह ! ।।
सब चीज को होता है बुरा हाय ! बुढ़ापा ।।
आशिक़ को तो अल्लाह न दिखलाए बुढ़ापा ।।४५।।

---

[७५] फूल जैसे मुंह वाला [७६] मनमोहक [७७] घृणा के साथ [७८] मनमोहक

बुढ़ापे की तअ़ल्लियां[1]

जो नौजवां हैं उनके दिल में गुमान क्या है ।
जो हम में कस[2] है उनमें ताबो तुवान[3] क्या है ।
बूढ़ा अधेड़ अमका ढमका फलान क्या है ।
हमसे जो हो मुक़ाबिल पट्ठे में जान क्या है ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ॥१॥

हर वक्त दिल हमारा मुग्दर ही भानता है ।
तीर अब तलक हमारा तूदे[4] ही छानता है ।
हर शोख़[5] गुल वदन[6] से गहरी ही छानता है ।
इस बात को हमारी अल्लाह ही जानता है ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ॥२॥

चाहें तो घूर[7] डालें सौ ख़ूबरू[8] को दम में ।
और मेले छान मारें वह ज़ोर है क़दम में ।
सीना फड़क रहा है ख़ूबां[9] के दर्दो ग़म में ।
पट्ठों[10] में वह कहां है जो गर्मियां हैं हम में ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ॥३॥

दुबले हुए हैं हम तो ख़ूबां[11] के दर्दो ग़म से ।
और झुर्रियां पड़ी हैं उनके ग़मो अलम से ।
मूछें सफ़ेद की हैं इस हिज्र[12] के सितम से ।
बूढ़ा हमें न जानो अल्लाह के करम से ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ॥४॥

---

१. शेखियां २. शक्ति, ताकत ३. शक्ति, सामर्थ्य ४. ढेर ५. चंचल, प्रियपात्र ६. फूले जैसे मुख वाला, वाली ७. टकटकी लगाकर देखना ८. सुन्दर, सुन्दरियां ९. सुन्दर, सुन्दरी १०. जवान, युवा ११. सुन्दरियों १२. जुदाई

कोई भी बाल तन पर मेरे नहीं है काला ।
ख़ूबां के दर्दो ग़म का उन पर पड़ा है पाला[13] ।
आकर जवां मुक़ाबिल होवे कोई हमारा ।
ख़ालिक़ से है यक़ीं यह दिखलाए वह भी पीछा ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ।।५।।

ऐ यार ! सौ बरस की हुई अपनी उम्र आकर ।
और झुर्रियां पड़ी हैं सारे बदन के ऊपर ।
दिखलाते जिस घड़ी हैं मैदाँ में ज़ोर जाकर ।
रुस्तम[14] को भी समझते अपने नहीं बराबर ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या हैं ।।६।।

हम और जवान मिलकर दिल के तईं लगावें ।
और अपने-अपने गुल[15] से मिलने की दिल में लावें ।
जाकर उन्हो के घर पर जब ज़ोर आज़मावें ।
वह गर दिवाल कूदें हम कोठा फांद जावें ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या हैं ।।७।।

जाते हैं रोज़ जितनी ख़ूबां[16] की बस्तियां हैं ।
हर आन[17] दीद बाज़ी[18] और बुत परस्तियां[19] हैं ।
सौ सौ तरह की चुहलें जी में उकस्तियां[20] हैं ।
क्या जोश भर रहे हैं क्या ऐश मस्तियां(१) हैं ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ।।८।।

---

[13] हिमपात, तुषारपात [14] ईरान का एक प्राचीन योद्धा और प्रसिद्ध पहलवान [15] फूल, प्रियपात्र [16] सुन्दर, सुन्दरियों [17] हर समय [18] नज़र लड़ाना, घूरना, ताक झांक करना [19] बुतों की इबादत, माशूकों की इबादत, प्रियपात्रों की पूजा [20] पैदा होना, उकसना

पाठान्तर—(१) जा० जोश मस्तियां

दुनियां में ताक़त अपनी मशहूर इस क़दर है ।
कूंचों में और मकां में देखो जिधर उधर है ।
जंगल में हाथी चीता या कोई शेर नर है ।
हर एक के दिल में अपना ही ख़ौफ़ और ख़तर है ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ॥९॥

करते हैं हम जो यारो ! अब धूम और धड़क्के ।
देखें जवां तो उनके छुट जायें दम में छक्के ।
पीते हैं मै के प्याले, चलते हैं मार धक्के ।
क्या क्या "नजीर" हम भी करते हैं अब झमक्के ।
अब भी हमारे आगे यारो ! जवान क्या है ॥१०॥

बुढ़ापे की आशिक़ी

क़ायम है जिस्म[१] गो[२] कि नहीं कस[३], ग़नीमत[४] अस्त[५] ।
जीते तो हैं, अगरचे[६] नहीं बस ग़नीमत अस्त ।
सौ ऐश[७] हमको गर न मिले दस ग़नीमत अस्त ।
वक्ते ख़िज़ां[८] चौगुल[९] नबूद[१०] ख़स[११] ग़नीमत अस्त[१२] ।
"पीरी के दम ज़िइश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़ शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त[१३] ॥१॥"

करते हैं इस बुढ़ापे में ख़ूबां[१४] की हम तो चाह ।
अहमक़[१५] हैं ख़ूब रू[१६] जो वह हंसते हैं हम पे आह ।
और वह जो कुछ शऊर से रखते हैं दस्तगाह[१७] ।
सो वह तो हमको देख यह कहते हैं वाह ! वाह !
पीरी के दम ज़े इश्क़ ज़िनद बस गनीमत अस्त ।
अज़(१) शाख़े कोहना मेवए नौ रस गनीमत अस्त ॥२॥

जिन दिलवरों से यारो हम अब दिल लगाते हैं ।
वह सब तरस हमारे बुढ़ापे पे खाते हैं ।
बोसा भी हमको देते हैं मै भी पिलाते हैं ।
और राह मुंसिफ़ी[१८] से यह कहते भी जाते हैं ।
पीरी के दम ज़े इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(२) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ॥३॥

---

१. शरीर २. यद्यपि ३. शक्ति ४. अच्छा ५. है ६. यद्यपि ७. आराम ८. पतझड़ के मौसम ९. फूल १० नहीं है। ११. घास १२. है (पतझड़ के मौसम में फूल नहीं हैं घास है यही पर्याप्त है) १३ वृद्धावस्था में प्रेम प्रसंग पर्याप्त है, अच्छा है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार जीर्ण अथवा पुरानी शाखा पर सरस फल का उत्पन्न होना पर्याप्त एवं उत्तम है १४. सुन्दरियों, प्रियतमाओं १५. बुद्धू १६. रूपवान, प्रियतमा १७. योग्यता १८. न्याय, इंसाफ

पाठान्तर—(१) श० आ० वज़ (२) श० आ० वज़

ने तन में अब है ज़ोर न चलते हैं दस्तो पा[१९] ।
और झुकते झुकते सर से क़दम साथ आ लगा ।
इस वक़्त में भी इश्क़ को रखते हैं जा बजा ।
क्यों यारो, सच ही कहियो यह इंसाफ़ की है जा[२०] ।
पीरी के दम ज़े इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(३) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ॥४॥

रोए जो हम चमन में सहर बैठ कर ज़रा ।
बुलबुल से पूछा गुल ने कि बूढ़ा यह क्यूं रोया ।
उसने कहा कि इसका किसी से है दिल लगा ।
जब गुल ने हमको देख के हंस कर यही कहा ।
पीरी के दम ज इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(१) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ॥५॥

ताक़त बदन में कहिए तो अब नाम को नहीं ।
होता है अब भी सैरो तमाशा अगर कहीं ।
जाते हैं लाठी टेक के दिलशाद[२२] हम वहीं ।
जो हमको देखता है वह कहता है आफ़रीं[२३] ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(२) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ॥६॥

कल मैकदे[२४] में हम जो गए बाक़दे दुता[२५] ।
और पी शराब लोट गए शोरो गुल मचा ।
उस दम हमारे देख बुढ़ापे का हौसला ।
हंस-हंस के जब तो पीरेमुगां[२६] ने यही कहा ।
पीरी के दम ज इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(३) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ॥७॥

---

१६. हाथ-पांव २०. जगह २२. प्रसन्न, खुश २३. शाबाश २४. मदिरालय, शराब पीने का स्थान
२५. झुका हुआ शरीर २६. धर्म-गुरू

पाठान्तर—(३) श० आ० वज़ (१) श० आ० वज (२) श० आ० वज़ (३) श० आ० वज

प्यारे तुम्हारे और तो आशिक़ हैं नौ जवां ।
एक हम ही सबसे बूढ़े हैं(४) और पीरे नातवा[२७] ।
वह तो रहेंगे हम हैं कुछ ही दिन के मेहमां ।
बस सबको छोड़ हमसे मिलो किसलिए कि ज़ां ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(१) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ।।८।।

जो हैं जवान उन्हों के तो उलफ़त हैं कारोबार ।
हम बूढ़े होके इश्क़ को रखते हैं बरक़रार[२८] ।
मिलते हैं दिल लगाते हैं, फिरते हैं ख़्वारो-ज़ार[२९] ।
जो हम से हो सके वह ग़नीमत है मेरे यार ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(२) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ।।९।।

दांतों का गरचे मुंह में हमारे नहीं निशां ।
बौसे पे आन अड़ते हैं तो भी हर एक आं ।
इन शोख़ियों[३०] का वक़्त हमारे भला कहां ।
पर दिल में अपने हम भी यह कहते हैं मेरी जां ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(३) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ।।१०।।

जिनको ख़ुदा ने दी है जवानी की दस्तगाह[३१] ।
वह तो हमेशा दिल को लगावेंगे तुम से आह ।
और हम कहां फिर आवेंगे करने तुम्हारी चाह ।
बस तुम अब अपने दिल में इसी पर करो निगाह ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(४) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ।।११।।

---

२७. निर्बल, कमजोर २८. कायम, स्थित २९. निरादृत और अशक्त, बेइज्जत और कमजोर ३०. चुलबुलाहट ३१. शक्ति

पाठान्तर—(४) श० आ० बूढ़े,सबसे हैं (१) श० आ० वज़ (२) श० आ० अज़ (३) श० आ० वज
(४) श० आ० वज़

गो तन तमाम कांपे है और हैं सफ़ेद बाल ।
तो भी निबाहते हैं मुहब्बत की चाल ढाल ।
प्यारे हमारे मिलने से लाओ न कुछ मलाल(५) ।
किस वास्ते करो तुम अब इस बात पर ख्याल ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िदनवस गनीमत अस्त ।
अज़ (१) शाखे कोहना मेवए नौ रस गनीमत अस्त ॥१२॥

होते हैं उल्फतों से जवानी में सब असीर[३२] ।
हम इश्क़ से बुढ़ापे में निकले हैं बन फ़क़ीर ।
जो हमको देखता है अब इस हाल में 'नज़ीर' ।
पढ़ता है शाद होके यही बैठ दिल पज़ीर[३३] ।
पीरी के दम ज़ इश्क़ ज़िनद बस ग़नीमत अस्त ।
अज़(२) शाख़े कोहना मेवए नौ रस ग़नीमत अस्त ॥१३॥

---

[३२] क़ैदी, बन्दी [३३] रुचिकर, जो दिल को पसंद हो ।

पाठान्तर—(५) जा० ख़्याल (१) श० आ० वज़ (२) श० आ० वज़

जवानी बुढ़ापे की लड़ाई

जहां में यारो ख़ुदा की भी क्या ख़ुदाई है ।
कि हर किसी को तकब्बुर[1] है, ख़ुदनुमाई[2] है ।
इधर जवानी बुढ़ापे पे चढ़ के आई है ।
उधर बुढ़ापे की उस पर हुई चढ़ाई है ।
अजब जवानी, बुढ़ापे की अब लड़ाई है ॥१॥

जवानी अपनी जवानी में हो रही सरशार[3] ।
बुढ़ापा अपने बुढ़ापे में दम रहा है मार ।
हुए हैं दोनों जो लड़ने के वास्ते तैयार ।
इधर जवानी ने खींची है तैश[4] से तलवार ।
बुढ़ापे ने भी उधर लाठी एक उठाई है ॥२॥

इधर है तीर सा क़ामत[5] उधर वह पीठ कमां[6] ।
उधर वह टेढ़ा बदन और इधर अकड़ के निशां ।
जवानी कहती है बढ़ करके सुन बुढ़ापे मियां ।
कि तेरी ख़ैर इसी में है, चल सरक इस आं ।
वगरना[7] तेरी अजल[8] मेरे हाथ आई है ॥३॥

मैं आज वह हूं कि रुस्तम को खड़खड़ा डालूं ।
पहाड़ होवे तो एकदम में हिल हिला डालूं ।
दरख़्त जड़ से उखाड़ूं ज़मीं हिला डालूं ।
अभी कहे तो तेरी धज्जियां उड़ा डालूं ।
कि मुझको ज़ोर की, क़ुव्वत[9] की बादशाई है ॥४॥

---

[1] घमंड [2] आत्म-प्रदर्शन [3] मस्त [4] क्रोध [5] शरीर, लम्बा डील डौल [6] धनुष की तरह टेढ़ी
[7] अन्यथा, नहीं तो [8] मौत [9] ताकत, शक्ति

कहा बुढ़ापे ने गर तुझमें ज़ोर है बच्चा ।
तो हां जी, देखें हमारे तू सामने आजा ।
अगरचे[10] ज़ोर हमारे नहीं है तन में रहा ।
मसूड़ों से ही तेरी हड्डियों को डालूं चबा ।
न हम से लड़ कि इसी में तेरी भलाई है ।।५।।

अगरचे तू है नया, हम पुराने हैं लेकिन ।
नया है नौ(१) ही दिन आख़िर पुराना है सौ दिन ।
हज़ार गो कि तेरा ज़ोर पर चढ़ा है सिन[11] ।
पै हम न छोड़ें तेरे कान अब मड़ोड़े बिन ।
कि तूने आके बहुत धूम यां मचाई है ।।६।।

कहा जवानी ने तेरा तो अब है क्या अहवाल ।
तू मेरे कान मड़ोड़े कहां यह तेरी मजाल ।
न तेरे पास तमंचा न तीर, सेफ़ न ढाल ।
अभी घड़ी में बिखरता फिरेगा एक एक बाल ।
यह डाढ़ी तूने जो मुद्दत में अब बढ़ाई है ।।७।।

कहा बुढ़ापे ने सुनकर कि तू अगर है पहाड़ ।
तो हम भी सूख के झड़बेरी[12] के हुए हैं झाड़ ।
अभी कहे तो तेरे कपड़े लत्ते डालें फाड़ ।
ज़रा सी बात में एकदम के बीच लेवें उखाड़ ।
हर एक मूंछ यह तेरी जो ताव खाई है ।।८।।

यह सुनके बोली जवानी कि चल, न कह तू बात ।
अभी जो आन के मारूँ तेरी कमर में लात ।
कहीं हो पांव, कहीं सर, कहीं पड़ा हो हात ।
जिसे तू जीना समझता है, और ख़ुशी की बात ।
वह तेरा जीना नहीं है वह बेहयाई है ।।९।।

---

१०. यद्यपि ११: अवस्था, उम्र १२. जंगली बेर

पाठान्तर—(१) का० दो

यह सुनके बोला बुढ़ापा कि तूने झूठ कहा ।
जो पूछे सच तो हमीं को मज़ा है जीने का ।
शराब हो जो पुरानी तो उड़ चले है नशा ।
पुराने जब हुए चावल तो है उन्हीं में मज़ा ।
क़दीम[१३] है यह मसल[१४] हमने क्या बनाई है ।।१०।।

तेरी तो ख़ल्क़ में है चार दिन की सबको चाह ।
जहां तू हो चुकी फिर बस वहीं है हाल तबाह ।
हमीं हैं वह कि करें हैं तमाम उम्र निबाह ।
तू आप ही देख गिरेबां[१६] में डाल कर मुंह आह[१७] ।
कि अब है किस में वफ़ा[१८] किस में बेवफ़ाई[१९] है ।।११।।

जवानी जब तो यह बोली बुढ़ापे से सुनकर ।
तेरी वफ़ा से मेरी बेवफ़ाई है बेहतर ।
मैं जब तलक हूं, बहारें मज़े हैं सरतासर[२०] ।
जो सल्तनत हो घड़ी भर की तो भी है ख़ुश्तर[२१] ।
मजे तो लूट लिये गो कि फिर गदाई[२२] है ।।१२।।

यह सुनके बोला बुढ़ापा वह सल्तनत है क्या ।
कि जिसके साथ लगा हो ज़वाल[२३] का धड़का ।
हमें मिली वह बुज़ुर्गी की मंजिलत[२४] इस जा ।
कि जब तलक हैं रहेंगी हमारे साथ सदा ।
ख़ुदा ने ऐसी हमें दौलत अब दिलाई है ।।१३।।

कहा जवानी ने चल झूटी अब न कर तकरार[२५] ।
मेरे तो वास्ते ऐशो तरब[२६] है बाग़ो बहार ।
शराब नाच मज़े गुलबदन[२७] गले में हार ।
तेरी ख़राबी यह देखी है हमने कितनी बार ।
के तूने हर कहीं जिल्लत[२८] ही जाके पाई है ।।१४।।

---

१३. पुरानी १४. कहावत, लोकाक्ति १६. कुर्त्ते कमीज आदि का गला १७. अपनी बुराइयों पर स्वयं विचार करना १८. स्वामी या मित्र का तन, मन, धन से साथ देना १९. दगाबाजी, वादा खिलाफी, २०. आदि से अन्त तक २१. बहुत अच्छी २२. फकीरी २३. पतन, अवनति २४. आदर, सत्कार २५. झगड़ा २६. आनन्द, हर्षोल्लास २७. फूल जैसे शरीर वाले २८. ख़्वारी, अपमान

मुझे ख़ुदा ने दिया है वह मर्तबा और शान ।
जिधर को जाऊं उधर ऐश रंग फूल और पान ।
उछल है, कूद है, लज़्ज़त[२९], मज़े, ख़ुशी के ध्यान ।
गले लिपटते हैं महबूब गुल बदन हर आन ।
घड़ी-घड़ी की नई सैर ही उड़ाई है ॥१५॥

कहा बुढ़ापे ने चल झूठ इतना मत बोले ।
फ़िदा तू जिनपे है वह मेरे पांव हैं पड़ते ।
हमें कहें हैं वह "हज़रत" तुझे कहें हैं 'अबे' ।
हज़ारों बार पड़े तुझ पै लात और घूंसे ।
भला बता तू कहीं हमने मार खाई है ? ॥१६॥

तुझे कुचलते हैं वह ख़ूबरू[३०] जो लातों में ।
हम उनको मार उतारे हैं दम की बातों में ।
हम ऐश दिन को उड़ाते हैं और तू रातों में ।
करें हैं इश्क़ को हम जिस तरह की घातों में ।
तुझे कहां अभी इस बात में रसाई[३१] है ॥१७॥

कि जिनके वास्ते गलियों में फिरे है ख़्वार ।
हम उनकी लूटें हैं ऐशो तरब[३२] के बीच बहार ।
तुझे तलाशो तलब[३३] में कटे हैं लैलो[३४] निहार[३५] ।
हम अपनी टट्टी में बैठे ही खेलते हैं शिकार ।
तू क्या वह जाने जो कुछ हमने घात पाई है ॥१८॥

बुढ़ापे ने कहा उस दम जवानी से "बाबा" ।
मेरा तो वस्फ़[३६] किताबों में है लिखा हर जा[३७] ।
बुज़ुर्गी और मशीख़त[३८] बुढ़ापे में है सदा ।
तेरी जो बात का मज़कूर[३९] है कहीं आया ।
तो हर तरीक़ में ख़्वारी ही तुझ पै आई है ॥१९॥

---

२९. स्वाद, आनन्द, लुत्फ ३०. सुन्दर, रूपवान ३१. पहुंच, प्रवेश ३२. हर्षोल्लास ३३. मांगना, चाहना ३४. रात ३५. दिन
३६. गुण, प्रशंसा, तारीफ़ ३७. हर जगह ३८. बुजुर्गी, बड़प्पन ३९. जिक्र

जुंही जवानी ने ख़्वारी का मुंह से नाम दिया।
बुढ़ापा दौड़ जवानी से यूंही आ लिपटा।
मड़ोड़ी मूंछें इधर उसने दाढ़ी को खींचा।
लड़े जो दोनों बड़ा हर तरफ़ यह शोर मचा।
कि यारो दौड़ियो, फरयाद है दुहाई है ॥२०॥

खड़े थे लोग हज़ारों यह दोनों लड़ते थे।
घड़ी पछाड़ते थे और घड़ी पछड़ते थे।
जो बाज़ू[४०] छोड़ते थे तो कमर पकड़ते थे।
हर एक तरफ़ से नए घूंसे लात लड़ते थे।
तो सब यह कहते थे क्या इनके जी में आई है ॥२१॥

यह मार कूट का आपस में जब हुआ चरखा।
"नज़ीर" इसमें वहीं एक अधेड़ पन(१) आया।
कुछ इसको रोका इधर और कुछ उसको समझाया॥
तुम अपने ख़ुश रहो यह अपने ख़ुश रहें हर जा॥
मिलाप ख़ूब है, लड़ने में क्या भलाई(२) है ॥२२॥

---

[४०] बांह

पाठान्तर—(१) श० बन (२) श० बड़ाई

मवाज़नए ज़ोरो कमज़ोरी
(ज़ोर और कमज़ोरी की तुलना)

ज़ोर जब तक कि हमारे बदनो तन में रहा ।
पच गई दम में, अगर कैसी ही असक़ल[1] थी दवा ।
खूंदे(१) गुलज़ारो[2]—चमन[3]—गुलशनो[4]—बाग़ो सहरा[5] ।
दौड़े हर सैर तमाशे में ख़ुशी से हरजा[6] ।
ज़ोर की ख़ूबियां लाखों हैं कहूं मैं क्या क्या ॥१॥

ऐशो इश्रत के मज़े जितने कि जब ज़ोर में हैं ।
ख़ुर्रमी[7] ख़ुशदिलीयो ऐशो तरब[8] ज़ोर में है ।
लज्ज़तें फ़रहतें[9] क्या कहिये अज़ब ज़ोर में हैं ।
ज़िन्दगानी के मज़े जितने हैं सब ज़ोर में हैं ।
सच है यह बात कि है ज़ोर ही में ज़ोर मज़ा ॥२॥

जब से कमज़ोर हुए तब से हुआ यह अहवाल ।
सुस्तियो ज़ोफ़्फ़ो[10] नक़ाहत[11] की चढ़ाई है कमाल ।
हो गये सब वह उछल कूद के नक़्शे पामाल[12] ।
अब जो चाहें कि चलें फिर भी इसी तौर की चाल ।
क़स्द[13] करते हैं बहुत पर कहीं जाता है चला ॥३॥

पानी पीते हैं तो बलग़म वह हुआ जाता है ।
और दही चक्खें तो छींकों का मंढा छाता है ।
पीवें शर्बत तो हवा ज़दगियां वह लाता है ।
और जो कम खायें तो फिर ज़ोफ़[14] से ग़श[15] आता है ।
पेट भर खायें तो फिर चाहिए चूरन को टका ॥४॥

---

१. भारी २. बाग ३. बाग़ ४. बाग़ ५. जंगल ६. हर जगह ७. ख़ुशी ८. आनन्द
९. खुशियां १०. बुढ़ापा ११. कमजोरी १२. बरबाद १३. इरादा १४. बुढ़ापा १५. बेहोशी

पाठान्तर—(१) श० फूंदे

राह चलने में यह कुछ ज़ोफ़[१६] से होते हैं निढाल ।
हर कदम आते हैं पा बोस को सौरंजो मलाल ।
और टुक तुंद हवा चलने लगी तो फ़िलहाल ।
चलनी पड़ती है फिर उस वक़्त तो उस तौर की चाल ।
जैसे कैफ़ी[१७] कोई चलता है बहुत पीके नशा ॥५॥

ऊंची नीची जो ज़मीं आ गई रस्ते में कहीं ।
उसकी यह शक्ल है क्या कहिये नक़ाहत[१८] के तईं[१९] ।
यक बयक दोनों से गुज़रे तो यह ताक़त ही नहीं ।
उतरें नीचे को तो गिर पड़ने के होते हैं क़रीं[२०] ।
और जो ऊंचे पे रक्खें पांव दम आता है चढ़ा ॥६॥

आवे गर जाड़े का मौसम तो ख़राबी यह हो ।
पहने नौ सेर रुई की जो बनाकर दोतो[२१] ।
तो भी हरगिज़ गुल[२२] गरमी की नहीं आती बो ।
हो बदन सरद कि ख़ूं[२३] इसमें हो ऐसा जिस को ।
देखे गर बर्फ़ का थैला तो रहे सर को झुका ॥७॥

और अयां[२४] होवे जो टुक आगे हवा गरमी की ।
उसमें कुछ और ही होती है नक़ाहत[२५] सुस्ती ।
मोम होते हैं जहां तन को ज़रा धूप लगी ।
और पसीनों में यह सूरत है बदन की होती ।
जैसे ग़व्वास[२६] समुन्दर में लगावे गोता ॥८॥

ज़ोफ़[२७] के दाम[२८] में हैं अब तो कुछ इस तौर असीर[२९] ।
जिसमें न ताक़ते तहरीर[३०] न ताबे तक़रीर[३१] ।
ताब[३२] अफ़्सुर्दः[३३], दिल वाज़र्दः[३४] बदन सख़्त हक़ीर[३५] ।
जो जो कमज़ोरियां करती हैं वह क्या कहिये "नज़ीर" ? ।
ऐसे बेबस हैं कि कुछ दम नहीं मारा जाता ॥९॥

---

१६. बुढ़ापा १७. मतवाला, मत्त १८. कमज़ोरी १९. लिए २०. समीप २१. दोता, एक तरह की पोशाक २२. गर्मी के फूल २३. ख़ून २४. प्रकट २५. कमज़ोरी २६. गोताखोर २७. बुढ़ापा २८. बन्धन २९. कैदी, बंदी ३०. लिखना ३१. बोलना ३२. शक्ति ३३. ठिठरा हुआ, नष्ट ३४. सताया हुआ, पीड़ित ३५. तुच्छ, बहुत छोटा

लूली पीर (बूढ़ी वेश्या)

+ + जो + + + कोई हो जाती है बुढ़िया[1] ।
फिर जान कहलाने से वह शरमाती है बुढ़िया ।।
हर काम में हर बात में शरमाती है बुढ़िया ।
दिन रात इसी सोच में ग़म खाती है बुढ़िया ।।
सर धुनती है, उकसाती है, घबराती है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने जो हो जाती है बुढ़िया ।।१।।

जब पेट मलाई सा वह देता था दिखाई ।
खाने को चली आती थी मिश्री व मलाई ।।
और आके बुढ़ापे की हुई जबकि चढ़ाई ।
सब उड़ गई काफ़िर, वह मलाई व मिठाई ।।
इस ग़म से न पीती है, न कुछ खाती है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने, जो हो जाती है बुढ़िया ।।२।।

वह हुस्न कहां जिस से कोई पास बिठावे ।
छाती वह कहां जिसपे कोई हाथ चलावे ।।
जब सूख गया मुंह तो झमक ख़ाक दिखावे ।
आशिक़ तो जवां काहे को फिर नाज़ उठावे ।।
बूढ़े को भी हरगिज़ नहीं ख़ुश आती है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने, जो हो जाती है बुढ़िया ।।३।।

---

[1] १. कुल्लियातों में + + + चिह्न वाले स्थान खाली छूटे हुए हैं । अश्लीलता सूचक शब्दों को अन्य पद्यों में भी इसी भांति छोड़ दिया गया है ।

जब मुंह में न हो दांत तो मिस्सी मले क्या ख़ाक ।
और सर के झड़े बाल तो कंघी करे क्या ख़ाक ॥
पलकों में सफ़ेदी हो तो काजल लगे क्या ख़ाक ।
जब नाक ही सूखी हो तो फिर नथ खुले क्या ख़ाक[2] ॥
इस ख़्वारी, ख़राबी में फिर आजाती है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने जो हो जाती है बुढ़िया ॥४॥

जब तक कि नई उम्र थी चढ़ती थी जवानी ।
हर कोई यह कहता था 'कहां जाती हो जानी' ॥
जब बूढ़ी हुई फिर लगीं कहलाने पुरानी ।
ठहरी कहीं 'खाला' कहीं 'दादी' कहीं 'नानी' ॥
हैं नाम तो अच्छे यह कि शरमाती है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने जो हो जाती है बुढ़िया ॥५॥

बुढ़िया को बुढ़ापे में यह दुख होता है लेना ।
नोची[3] को किसी ढब की नसीहत हो जो देना ॥
मुंह पीट वह हमसाये से कहती है कि भैना ।
नाहक़ की लड़ाई है, न लेना है न देना ॥
एक चार घड़ी से मुझे पुनवाती[4] है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने जो हो जाती है बुढ़िया ॥६॥

टुक देखियो ! यारो ! यह बुढ़ापे की है ख़्वारी ।
हमसाये के सुनते ही लगी दिल में कटारी ॥
नोची की तरफ़दार हो घर में से पुकारी ।
क्या बात हुई तुझ से वह कुछ मुझको बतारी ॥
जिस बात पे दोपहर से टर्राती है बुढ़िया ।
यह दर्द वही जाने, जो हो जाती है बुढ़िया ॥७॥

---

[2] तवायफ़ों में यह रिवाज़ है कि जवान लड़की की नथ किसी सम्पत्तिशाली प्रेमी द्वारा खुलवाई जाती है। वह नथ खोलने की रस्म अदा करने के बदले में लड़की को खूब धन दौलत देता है।

[3] नवयुवती [4] गालियाँ सुनवाना

वह कहती है 'भैना' यह गुज़रती नहीं ढड्डो।
और क़हर ख़ुदा से भी यह डरती नहीं ढड्डो॥
लब अपने ज़रा बंद यह करती नहीं ढड्डो।
क्या सख़्त ख़रावी है, यह मरती नहीं ढड्डो॥
इस हाल को आख़िर को पहुंच जाती है बुढ़िया।
यह दर्द वही जाने, जो हो जाती है बुढ़िया॥८॥

ऐसा जो मेरे पास लगे जायगी झांपो।
एक रोज़ मुझे घर से निकलवायेगी झांपो॥
सब खा चुकी मुझको भी यह अब खायेगी झांपो।
वह कौन सा दिन होगा जो मर जायेगी झांपो॥
अब तो मुझे डायन सी नज़र आती है बुढ़िया।
यह दर्द वही जाने जो हो जाती है बुढ़िया॥९॥

नोची जो वफ़ादार कोई पास रही आ।
तो रोटी मिली वर्ना लगी कातने चरखा॥
जब कुबड़ी कमर हो गई और सर हुआ गाला।
मुंह सूख के चमरख़ हुआ और तन हुआ तकला॥
फिर रोटी को चरख़े से कमा खाती है बुढ़िया।
यह दर्द वही जाने, जो हो जाती है बुढ़िया॥१०॥

क्या वक़्त बुढ़ापे का बुरा होता है 'वल्लाह'।
बेगाने तो क्या अपने को फिर होती नहीं चाह॥
इस ख़्वार ख़राबी से भी सह कर ग़मे जांकाह।
रुक-रुक के जवानी की मुसीबत में 'नज़ीर' आह॥
आख़िर को इसी सोच में मर जाती है बुढ़िया।
यह दर्द वही जाने, जो हो जाती है बुढ़िया॥११॥

त्यौहार

(मुस्लिम त्यौहार)

शब्बरात[+] —१

क्योंकर करे न अपनी नमूदारी[1] शब्बरात।
चल्पक[2], चपाती, हलवे से है भारी शब्बरात॥
जिन्दों की है ज़ुबां की मज़ेदारी शब्बरात।
मुर्दों की रूह की है मददगारी शब्बरात॥
लगती है सबके दिल को गरज़ प्यारी शब्बरात ॥१॥

शक्कर का जिनके हलवा हुआ वह तो पूरे हैं।
गुड़ का हुआ है जिनके वह उनसे अधूरे हैं॥
शक्कर न गुड़ का जिनके वह परकट लंडूरे हैं।
औरों के बैठे(१) हलवे चपाती को घूरे हैं॥
उनकी न आधी पाव न कुछ सारी शब्बरात ॥२॥

दुनियां की दौलतों में जो ज़रदार[3] हैं बड़े।
क़न्दों[4] के हलवे, रोग़नी नानें[5], नए घड़े(२)॥
पहुंचाते ख़्वान[6] फिरते हैं नौकर कई पड़े।
ज़िंदे भी राह तकते हैं, मुर्दे भी हैं खड़े॥
इन खूबियों की रखती है तैयारी शब्बरात ॥३॥

[+] माह शाबान की पन्द्रहवीं रात। इस रात में ख़ुदा के हुक्म से फ़रिश्ते बन्दों की उम्र का और खाने के बांटने का हिसाब करते हैं। मुसलमान रात में जागकर खुदा की इबादत करते हैं। मीठी चीज़े बनाकर अपने गुजरे हुए अजीज़ रिश्तेदारों की रूहों के लिए मुल्लाओं से फ़ातिहा दिलाते हैं। बच्चे फुलझड़ियां, पटाखे आदि छोड़कर खुशियाँ मनाते हैं।

१. ज़ाहिरी २. पूड़ी ३. धनवान ४. शकर ५. चुपड़ी रोटी ६. थाल

पाठान्तर—(१) जा० मीठे (२) श० आ० लिए खड़े

ठिलिया, चपाती हलवे की तो सबमें चाल है।
अदना ग़रीब के तईं यह भी मुहाल[७] है॥
काले से गुड़ की लपटी[८] कढ़ी की मिसाल है।
पानी की(१) हांड़ी, गेंहू की रोटी भी लाल है॥
करती है ऐसी दुखिया पिसनहारी शब्बरात ॥४॥

और मुफ़्लिसों[९] की है यह तमन्ना कि फ़ातिहा[१०]।
दरिया पे जाके देते हैं बाबा की फ़ातिहा॥
भटियारी के तनूर[११] पै नाना की फ़ातिहा।
हलवाई की दुकान पे दादा की फ़ातिहा॥
यां तक तो उनपे लाती है नाचारी शब्बरात ॥५॥

वारिस[१२] हैं जिनके जीते वह मुर्दे भी आनकर।
हलवे चपाती ख़ूब ही चखते हैं पेट भर॥
जिनका कोई नहीं है वह फिरते हैं दरबदर[१३]।
औरों के लगते फिरते हैं कोनों से घर व घर॥
उनकी है खारी नोंन से भी खारी शब्बरात ॥६॥

मुल्ला जो देने फ़ातिहा घर घर में जाते हैं।
हलवा कहीं, कहीं वह चपाती उड़ाते हैं॥
मुफ़्लिस कोई बुलावे तो मुंह को छुपाते हैं।
शक्कर का हल्वा सुनते ही बस दौड़े जाते हैं॥
कहते हुए यह दिल में अहा! हा! री शब्बरात ॥७॥

---

७. कठिन ८. (कीई सरेश नुमा सय्याल गिज़ा-बुरी किस्म का हल्वा जिसका क़िवाम गोंद या सरेश का सा मैला ओ नफरत अग्रेज हो, कु० न० शहवाज पृ० ४४) आटे और गुड़ को मिलाकर तेल में पकाई हुई लपसी ९. गरीब लोग १०. कुरान शरीफ की आयतें पढ़कर खाने का सवाब मृतक अज़ीजों की रूहों को भेजना, नियाज़ दिलाना ११. तन्दूर १२. उत्तराधिकारी १३. दरवाज़े-दरवाज़े, लोकप्रचलित है कि शब्बरात को रूहें हलवा खाने के लिए दरवाज़ों से आ लगती हैं, अपने वारिस नहीं होते तो दूसरों के दरवाज़ों से लगती हैं

पाठान्तर—(१) का० श० आ० से

छोड़ें है लट्टू तोंबड़ी हरदम बनाके जो ।
हाकिम का प्यादा कहता है यूं उससे तल्ख़[14] हो ॥
कपड़े, बदन बचाके जो चाहो सो छोड़ दो ।
छप्पर जलाओगे तो दिलावेगी सुबह को ॥
तुमसे चबूतरे[15] में गुनहगारी शब्बरात ॥८॥

फिरते हैं इश्क़ बाज़ जो लड़के की घात में ।
टोंटा[16] ही लेके देते हैं लड़के के हाथ में ॥
महताबी[17] आके छोड़े हैं लड़के जो रात में ।
क्या ज़रकियां[18] सी छोड़े हैं हंस हंस के हाथ में ॥
करती है काम उनके भी यूं जारी शब्बरात ॥९॥

जो रंडीबाज़ हैं वह बहुत दिल में शाद हो ।
क्या-क्या अनार[19] छोड़े हैं बश्नी[20] हो रूबरू ॥
ऐ बी ! तुम अपनी कुल्हिया हमें छोड़ने को दो ।
और चाहो तुम हमारा यह हतफूल छोड़ लो ॥
हो जाए जिसके छुटते ही फुलवारी शब्बरात ॥१०॥

और जो बहारें हुस्न के हैं पाक बाज़[21] यार ।
गुलकारी[22] छोड़े हैं जहां महबूब गुल अज़ार[23] ॥
कहते हैं उनको देख के आंखों में करके प्यार ।
क्या चाहिए मियां तुम्हें हतफूल और अनार ॥
तुम पै तो आप होती है अब वारी शब्बरात ॥११॥

---

१४. नाराज १५. कोतवाली या थाना, उस काल में ऊंचे चबूतरे पर थाना बगैरह होता था १६. एक प्रकार की आतिशबाजी १७. मोमबत्ती के आकार की आतिशबाज़ी जिसे छोड़ने से चांदनी सी छिटक जाती है १८. सोने के वर्कों का चूरा १९. एक आतिशबाज़ी, अनार फल के समान मिट्टी का एक पात्र, जिसमें लोहचून और बारूद भरा होता है और जिसके मुंह पर आग लगाने पर चिनगारियों का पेड़ सा बन जाता है २०. आश्ना (कु० न० शहवाज पृ० ४५) मित्र, यार, यह शब्द व्यसनी प्रतीत होता है २१. सदाचारी २२. फुलझड़ी २३. गुलाब जैसे सुकुमार और कोमल गालों वाला

घनचक्कर[२४] अपने दम में कहीं चर्ख़ खाते हैं ।
टोंटे हवाई[२५] सींक(१) कहीं क़हक़हाते हैं ॥
ज़ींपट ज़पट पटाखे कहीं गुल मचाते हैं ।
लड़कों के बांध ग़ोल कहीं लड़ने जाते हैं ॥
करती है(२) फिर तो ऐसी धुँआधारी शब्बरात ॥१२॥

आकर किसी के सर पै छछूंदर लगी कड़ी ।
ऊपर से और हवाई की आकर पड़ी छड़ी ॥
हो गई गले का हार पटाखे की हर लड़ी ।
पांव से लिपटी शोर मचाकर क़लमतड़ी(३) ॥
करती है फिर तो ऐसी सितमगारी शब्बरात ॥१३॥

चेहरा किसी का जल गया आंखें झुलस(४) गईं ।
छाती किसी की जल गई बाहें झुलस गईं ॥
टांगें बची किसी की तो रानें झुलस गईं ।
मूंछें किसी की फुंक गई पलकें झुलस गईं ॥
रक्खे किसी की दाढ़ी पै चिनगारी शब्बरात ॥१४॥

कोई दोस्तों को दिल में समझता है अपने ग़ैर ।
कोई दुश्मनों से दिल का निकाले है अपने वैर ॥
कहता है वां "नज़ीर" भी आतिश की देख सैर ।
"यारब तू सबकी कीजियो बरसा बरस की ख़ैर ॥
बेतरह कर रही है नमूदारी शब्बरात+ ॥१५॥

---

२४. गोलाकार में छूटने वाली आतिशबाजी २५. चक्कर २६. एक प्रकार की आतिशबाजी आसमानी, खतनगा या खदनग, डिब्बी जैसी होती है इसमें आग लगाने पर आसमान को उड़ती है

पाठान्तर—(१) आ० सेंक (२) का० जा० करते हैं (३) आ० नड़ी (४) क़ा० श० आ० झुलस

+ इस पद्य में निम्नलिखित आतिशबाज़ियों के नाम आए हैं—
१. लट्टू २. तोंकड़ी ३. टोंटा ४. महताबी ५. ज़रकियां ६. अनार ७. कुल्हिया ८. हथफूल ९. गुलकारी १०. घनचक्कर ११. हवाई १२. जींपट १३. ज़पट १४. पटाखा १५. छछूंदर १६. कलमतड़ी

उस काल में यह आतिशबाजियां आमतौर पर शब्बरात की रात को छुड़ाते थे। यहां पुरुषों से सम्बन्ध रखने वाली आतिशबाज़ियों के नाम पुल्लिंग तथा स्त्रियों या महबूबों से सम्बन्ध रखने वाली आतिशबाजियों के नाम स्त्रीलिंग में है ।

शब-बरात-(२)

आलम के बीच जिस घड़ी आती है शबबरात ।
क्या-क्या जहूरे[१] नूर[२] दिखाती है शब-बरात ॥

देखे है बन्दिगी[३] में जिसे जागता तो फिर ।
फूली नहीं बदन में समाती है शब-बरात ॥

रोशन हैं दिल जिन्होंके इबादत के नूर से ।
उनको तमाम रात जगाती है शब-बरात ॥

बख़िशश[४] ख़ुदा की राह में करते हैं जो मुहिब[५] ।
बरकत[६] हमेशा उनकी बढ़ाती है शब-बरात ॥

ख़ालिक[७] की बन्दिगी करो और नेकियों के दम ।
यह बात हर किसी को सुनाती है शब-बरात ॥

ग़ाफ़िल[८] न बन्दिगी से हो और ख़ैर से ज़रा ।
हर लहज़ा[९] यह सभों को जताती है शब-बरात ॥

हुस्ने अमल[१०] करके जो भला आक़िबत[११] में हो ।
सबको यह नेक राह बताती है शब-बरात ॥

लेकर हमीर हमज़ा के हर बार नाम को ।
ख़ल्क़त[१२] को उनकी याद दिलाती है शब-बरात ॥

क्या क्या मैं इस शब-बरात की ख़ूबी कहूं "नज़ीर" ।
लाखों तरह की ख़ूबियां लाती है शब-बरात ॥

---

१. प्रकट करना २. प्रकाश ३. पूजा, इबादत ४. ख़ैरात ५. प्रेमी ६. कल्याण ७. ईश्वर
८. बेखबर ९. हर समय १०. शुभ कार्य ११. यमलोक १२. संसार

शब-बरात+ ३

आई शबबरात खिला दिल का गुलझड़ा ।
हलवे चपातियों का हर इक घर में फुलझड़ा ।।
हथफूल और अनार की झड़ियों से गुलझड़ा ।
तोड़े के आशिकों के यही आके गुलझड़ा ।।
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ।।१।।

गंधक हज़ार मन है तो शोरा है लाख मन ।
और कोयलों के वास्ते फूकूंगा एक वन ।।
लोहे के कूटने से भी टूटे हैं कई घन[1] ।
अब इस तरह के वज़न का आकर खिला चमन ।।
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ।।२।।

पहले तो इसने छूट के मारा पहर[2] का दम ।
फिर तीन चार बार में ग्यारह पहर का दम ।।
था उसका अगले बरस में बारह पहर का दम ।
और अबके साथ में तो अठारह पहर का दम ।।
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ।।३।।

आगे तो छोड़ते थे इसे चढ़के झाड़ पर ।
फिर कितनी बार छोड़ा है कड़ियों की पाड़ पर[3] ।।
और इसके रफ्ता रफ्ता एक ऊंचे से ताड़ पर ।
और अबके इसको छोड़े हैं चढ़कर पहाड़ पर ।।
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ।।४।।

---

[1] लुहार का भारी हथौड़ा [2] तीन घंटे का समय [3] मचान

+ डा० श्री गुरुमुख राम टण्डन के सौजन्य से प्राप्त ।

सहरी को हंसके देखियो ज़रा यार इस घड़ी ।
मोटी बड़े सतूल से जिसकी है इक खड़ी ॥
फूटा अनार, फुलझड़ी दर से उगल पड़ी ।
भागे मचाके शोर छछूंदर, कलमनड़ी ॥
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥५॥

पहुंची है आसमान तलक उसकी धूमधाम ।
इतना बड़ा है तिस पै धुंए का नहीं है नाम ॥
उस्ताद जानते हैं यह क्या है, क्या है नाम ?
आरिफ़ भी आज होता तो करता हमें सलाम ॥
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥६॥

हाथी जो शब्बरात के आए हैं रात हूल ।
यह फुलझड़ा इस हाथी की है टाट का फिज़ूल ॥
कोसों तलक ज़मीं पै पड़े छूटते हैं फूल ।
क्यों कर भला न हम कहें इस वक्त फूल—फूल ॥
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥७॥

छुटने में क्या मज़ाल जो उगले कहीं ज़रा ।
बुर्राक इस क़दर है कि चांदी का क्या भला ॥
उस्ताद ही खड़े हो तुम ऐ यार ! जा वजाह ।
ऐसा भला चढ़ाया है किसी ने वाह ! वाह !
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥८॥

महताबी इसके सामने मुंह ज़र्द हो गई ।
नसरी व जाई जूही भी दिल सर्द हो गई ॥
चादर भी उसके सामने पे पर्द हो गई ।
गुलकारी किस क़द्र थी वह सब गर्द हो गई ॥
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥९॥

जी चाहता था इससे बनायें ज़रा बड़ा ।
क़ालिद[४] पड़ा हुआ बड़ा कोई ले गया चुरा ॥
जल्दी में शब्बरात के कुछ भी न हो सका ।
लाचार होके हमने यह इतना ही भर लिया ॥
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥१०॥

---

[४] ढांचा

बे रोज़गारियों से सभों के हैं दिलबुझे ।
इस वक़्त में जरा कोई ज़र्की तो छोड़ते ॥
सौ आफरीं[५] हमें हैं कि सौ क़र्ज़ दाम ले ।
छोटासा इक अदद तो बनाके हैं छोड़ते ॥
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥११॥

पैसा हमारे पास जो होता तो यारो आह !
सौ दो सौ ऐसे छोड़ते हम आज ख़्वामख़्वाह ॥
करना पड़ा है अब तो हमें पेट का निवाह ।
वह भी मियां "नज़ीर" ग़नीमत है वाह ! वाह ! ।
क्या छूटता है देखिए ! यारों का फुलझड़ा ॥१२॥

---

[५] शाबाश

ईद

शाद था जब दिल वह था और ही ज़माना ईद का ।
अब तो यक्सां है हमें आना न जाना ईद का ॥

दिल का ख़ून होता है जब आता है अपना हमको याद ।
आधी–आधी रात तक मेंहदी लगाना ईद का ।

आंसू आते हैं भरे जब ध्यान में गुज़रे है आह ।
पिछले पहर से वह उठ-उठ कर नहाना ईद का ।

हश्र[1] तक जाती नहीं ख़ातिर से इस हसरत की बू ।
इत्र बग़लों में वह भर-भर कर लगाना ईद का ।

होंठ जब होते थे लाल, अब आंखें हो जाती हैं सुर्ख़ ।
याद आता है जो हमको पान खाना ईद का ।

दिल के हो जाते हैं टुकड़े जिस घड़ी आता है याद ।
ईदगाह तक दिलबरों के साथ जाना ईद का ।

गुलइज़ारों[2] के मियां मिलने की ख़ातिर जब तो हम ।
ठान रखते थे महीनों से बहाना ईद का ।

अब तो यूं छुपते हैं जैसे तीर से भागे कोई ।
तब बने फिरते थे हम आप ही निशाना ईद का ।

नींद आती थी न हरगिज़, भूक लगती थी ज़रा ।
यह खुशी होती थी जब होता था आना ईद का ।

---

[1] कयामत, प्रलय [2] गुलाब जैसे सकुमार और कोमल गालों वाली

ईद-२

यूं लब से अपने निकले हैं अब बार-बार आह ।
करता है जिस तरह कि दिले बेक़रार आह ।
आलम ने क्या ही ऐश की लूटी बहार आह ।
हमसे तो आज भी न मिला वह निगार[१] आह ।
हम ईद के, भी दिन रहे उम्मीदवार, आह ! ॥१॥

हो जी में अपने ईद की फ़रहत[२] से शाद[३] काम[४] ।
खूबां[५] से अपने-अपने लिए सबसे दिल के काम ।
दिल खोल-खोल सब मिले आपस में ख़ासोआम ।
आग़ोशे[६] ख़ल्क़[७] गुल बदनों[८] से भरे तमाम ।
खाली रहा पर एक हमारा किनार[९], आह ॥२॥

क्या पूंछते हो शोख[१०] से मिलने की अब खबर ।
कितना ही जुस्तुजू[११] में फिरे हम इधर-उधर ।
लेकिन मिला न हमसे वह अय्यार[१२] फ़ितना गर[१३] ।
मिलना तो एक तरफ़ है, अज़ीज़ो[१४] ! कि भर नज़र ।
पोशाक की भी हमने न देखी बहार, आह ! ॥३॥

रखते थे हम उम्मीद यह दिल में कि ईद को ।
क्या-क्या गले लगायेंगे दिलवर[१५] को शाद हो ।
सो तो वह आज भी न मिला शोख़ हीलागो[१६] ।
थी आस ईद की सो गई वह भी दोस्तो ।
अब देखें क्या करे दिले उम्मीदवार, आह ! ॥४॥

---

१. प्रेमपात्र २. खुशी ३. प्रसन्न ४. मनोरथ ५. सुन्दर स्त्रियां, प्रियतमाएं ६. बगल ७. दुनियां के लोग ८. फूल जैसे कोमल शरीर वाले ९. गोद, बगल १०. चंचल ११. तलाश १२. छली १३. बहुत ही नटखट १४. प्रियजन, मित्रो १५. दिल लेने वाला, प्रेमपात्र १६. बहाने बनाने वाला

उस संगदिल[१७] की हमने ग़रज़ जबसे चाह की ।
देखा न अपने दिल को कभी एकदम ख़ुशी ।
कुछ अब ही उसकी ज़ोरो तअ़द्दी[१८] नहीं नयी ।
हर ईद में हमें तो सदा यास[१९] ही रही ।
काफ़िर[२०] कभी न हमसे हुआ हम किनार,[२१] आह ! ॥५॥

इक़रार[२२] हमसे था कई दिन आगे ईद से ।
यानी कि ईदगाह को जायेंगे तुमको ले ।
आख़िर को हमको छोड़ गए साथ और के ।
हम हाथ मलते रह गए और राह देखते ।
क्या-क्या गरज़ सहा, सितमे[२३] इन्तज़ार आह ! ॥६॥

क्योंकर लगें न दिल में मेरे हस्रतों[२४] के तीर ।
दिन ईद के भी मुझसे हुआ वह किनारा गीर[२५] ।
इस दर्द को वह समझे जो हो इश्क़[२६] का असीर[२७] ।
जिस ईद में कि यार से मिलना न हो 'नज़ीर' ।
उसके ऊपर तो हैफ़[२८] है और सद[२९] हज़ार आह ! ॥७॥

---

१७. बेरहम १८. जुल्म
१९. निराशा २०. प्रेमपात्र, माशूक २१. आलिंगित २२. प्रतिज्ञा, वचन २३. अत्याचार २४. तमन्ना
२५. कोंना पकड़ने वाला, दूर २६. प्रेम, अनुराग २७. बंदी २८. अफसोस २९. सैकड़ों

ईदुलफ़ित्र ३

है आबिदों[1] को ताअ़तो-तज़रीद[2] की ख़ुशी ।
और ज़ाहिदों[3] को ज़ुहद[4] की तमहीद[5] की ख़ुशी ।
रिंद[6] आशिक़ों को है कई उम्मीद की ख़ुशी ।
कुछ दिलबरों[7] के वस्ल[8] की कुछ दीद[9] की ख़ुशी ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ।।१।।

रोज़े की ख़ुश्कियों से जो हैं ज़र्द-ज़र्द[10] गाल ।
ख़ुश हो गए वह देखते ही ईद का हिलाल[11] ।
पोशाकें तन में ज़र्द, सुनहरी, सफ़ेद, लाल ।
दिल क्या कि हंस रहा है पड़ा तन का बाल-बाल ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ।।२।।

पिछले पहर से उठके नहाने की धूम है ।
शीरो[12]-शकर सिवैयां पकाने की धूम है ।
पीरो[13]—जवां को नेअ़मते[14] खाने की धूम है ।
लड़कों को ईदगाह के जाने की धूम है ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ।।३।।

---

१. उपासक, इबादत करने वाला, भक्त २. उपासना, आराधना, इबादत ३. कर्मकाण्डियों ४. धार्मिक कृत्य, संयम ५. पालन ६. मद्यप, रसिया, धार्मिक बन्धनों से मुक्त
७. प्रेमपात्र ८. प्रेमी, प्रेमिका का मिलन ९. दर्शन, दीदार १०. पीले ११. बालचन्द्र, नया चांद
१२. दूध १३. वृद्ध १४. अच्छी चीजें

+ ईद के दिन सिवैयां या चावल जो दूध में डालकर पकाए जाते हैं शीर कहलाते हैं

बैठे हैं फूल-फूल के मैख़ाना[१५] में कलाल[१६] ।
और भंग ख़ानों में भी हैं सरसब्जियां कमाल ।
छनती हैं भंगें, उड़ते हैं चरसों के दम निढाल ।
देखो जिधर को सैर मज़ा ऐश क़ीलोक़ाल[१७] ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥४॥

कोई तो मस्त फिरता है जामे[१८]—शराब से ।
कोई पुकारता है कि छूटे अज़ाब[१९] से ।
कल्ला किसी का फूला है लड्डू की चाव(१) से ।
चटकारें जी में भरते हैं नानो[२०]—कबाब से ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥५॥

महबूब दिलबरों से है जिनकी लगी लगन ।
उनके गले से आन लगा है जो गुल बदन ।
सौ सौ तरह की चाह से मिल-मिल के तन से तन ।
कहते हैं तुमको ईद मुबारक हो जानेमन[२१] ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥६॥

क्या ही मुआनक़े[२२] की मची है उलट पलट ।
मिलते हैं दौड़-दौड़ के बाहम[२३] झपट-झपट ।
फिरते हैं दिलबरों के भी गलियों में ग़ट के ग़ट[२४] ।
आशिक मज़े उड़ाते हैं हर दम लिपट-लिपट ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥७॥

---

१५. मधुशाला १६. शराब बेचने वाले १७. वाद विवाद, बहस-मुवाहिसा
१८. चषक, शराब का प्याला १९. पापों का यमलोक में मिलने वाला दण्ड, दुःख २०. रोटी
२१. प्रिय २२. गले मिलना २३. आपस २४. झुंड के झुंड

पाठान्तर—(१) आ० चाप, जा० चाट

काजल हिना[25] ग़जब मिसी-व-पान की धड़ी ।
पिश्वाजें[26] सुर्ख़, सोसनी[27] लाही[28] की फुलझड़ी ।
कुर्ती कभी दिखा कभी अंगिया कसी कड़ी ।
कह ईद-ईद लूटे हैं दिल को घड़ी-घड़ी ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥८॥

जो जो कि उनके हुश्न की रखते हैं दिल से चाह ।
जाते हैं उनके साथ लगे ताब[29] ईदगाह ।
तोपों के शोर और दुगानों[30] की रस्मो राह ।
मियाने, खिलौने, सैर मज़े ऐश वाह-वाह ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥९॥

रोज़ों की सख़्तियों में न होते अगर असीर[31] ।
तो ऐसी ईद की न ख़ुशी होती दिल पज़ीर[32] ।
सब शाद हैं गदा[33] से लगा-शाह[34]-ता-वज़ीर ।
देखा जो हमने ख़ूब तो सच है मियां "नज़ीर" ।
ऐसी न शब्बरात न बक़रीद की ख़ुशी ।
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी ॥१०॥

---

२५. मेंहदी २६. नृत्य के समय पहना जाने वाला लहंगा, लहंगा । २७. नीले रंग की २८. रेशम
२९. तक, ईदगाह तक ३०. शुक्राने की नमाज की दो रक़अतें ३१. बंदी, परेशान ३२. दिल पसंद
३३. फ़क़ीर ३४. बादशाह

ईदगाह अकबराबाद (आगरा)

है धूम आज मदरसओ ख़ानकाह[1] में ।
तांते बंधे हैं मस्जिदे जामा[2] की राह में ।
गुलशन से खिल रहे हैं हर इक(१) कज कुलाह[3] में ।
सौ-सौ चमन झमकते हैं एक-एक निगाह में ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ॥१॥

झमका है हर तरफ़ का जो आ बादला(१) ज़री[4] ।
पोशाक में झमकते हैं सब तन ज़री-जरी[5] ।
गुलरू[6] चमकते फिरते हैं जूं माहो[7] मुश्तरी[8] ।
है सबके ईद-ईद की दिल में खुशी भरी ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ॥२॥

आते हैं घर से अपने जो बन-बन के कज कुलाह ।
सहने चमन है जितनी है सब सहने ईदगाह ।
छाती से लिपटे जाते हैं हंस-हंस के ख़्वामख़्वाह ।
दिल बाग़[9]-सबके होते(२) हैं फरहत[10] से वाह-वाह ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज इदगाह में ॥३॥

---

१. फकीरों और साधुओं के रहने का स्थान, आश्रम २. वह मसजिद जिसमें जुमा (शुक्रवार) की नमाज़ पढ़ी जाती है, जामा मसजिद ३. टेढ़ी टोपी पहनने वाला, माशूक । ४. दो कपड़ों के नाम, बादला-सोने और चांदी के चिपटे चमकीले तार जो गोटा बुनने और कलाबत्तू बटने के काम आते हैं । ज़री का कपड़ा जो रेशम और चांदी के तारों से बुना जाता है । ज़री बादले से बुना जाने वाला कपड़ा । इसका ताना रेशम का और बाना ज़री का होता है । ५. सुनहरी ६. फूल जैसे सुन्दर सुकोमल मुख वाली नायिका ७. चांद ८. वृहस्पति (यह छठे आसमान पर है) ९. बहुत खुश १०. खुशी

पाठान्तर—(१) जा० अजब (२) जा० अजब (३) क़ा०, जा० आया दिला ज़री

कुछ भीड़ सी है भीड़ कि बेहदो बेशुमार ।
खल्क़त[11] के ठठ के ठठ हैं बंधे हर तरफ़ हज़ार ।
हाथी व घोड़े, बैलो, रथ व ऊंट की कतार ।
गुलशोर बाले भोले खिलौनों की है पुकार(३) ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ।।४।।

पहने फिरें हैं शोख़[12] कड़े और हंसलियां ।
फूलों की पगड़ियों में हैं शाखें उड़सलियां ।
कमरें सभों ने मिलने की ख़ातिर हैं कस लियां ।
मिलते हैं यूं कि छाती की कड़के हैं पसलियां ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ।।५।।

आते हैं मिलते-मिलते जो आजिज़ परीरुखां[13] ।
देते हैं मिलने वालों को घबरा के गालियां ।
तिस पर भी लिपटे जाते हैं जूं गुड़ पे मक्खियां ।
दामन के टुकड़े उड़ते हैं फटती हैं चोलियां(४) ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ।।६।।

हैं मिलते-मिलते तन जो पसीनों में तर वतर ।
मिलने के डर से फिरते हैं छिपते इधर-उधर ।
छिपते फिरें हैं लोग भी जाते हैं वह जिधर ।
ठट्ठा हंसी व सैर तमाशे जिधर तिधर ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ।।७।।

हैं करते वस्ल शहर के सब ख़ुर्द[14] और कबीर[15] ।
अदना[16], ग़रीब, अमीर से ले शाह ता वज़ीर ।
हर दम गले लिपट के मेरे यार दिल पज़ीर[17] ।
हंस-हंस के मुझ से कहता है यूं क्यूं मियां 'नज़ीर' ।
क्या-क्या मज़े हैं ईद के आज ईदगाह में ।।८।।

---

११. जनता १२. चंचल, प्रिय पात्र १३. परियों जैसी शक्ल सूरत वाले १४. छोटे १५. बड़े
१६. साधारण आदमी १७. दिलपसंद

पाठान्तर—(३) जा० बाग़-बाग़ (४) आ० छातियां

हिन्दू त्यौहार

होली—१

हुआ जो आके निशां आश्कार[१] होली का ।
बजा रबाब[२] से मिलकर सितार होली का ।
सुरूद[३] रक़्स[४] हुआ बे शुमार होली का ।
हंसी ख़ुशी में बढ़ा कारोबार होली का ।
जुबां पे नाम हुआ बार-बार होली का ॥१॥

ख़ुशी की धूम से हर घर में रग बनवाए ।
गुलाल[५] अबीर[६] के भर-भर के थाल रखवाए ।
नशों के जोश हुए राग रंग ठहराये ।
झमकते रूप के बन-बन के स्वांग दिखलाए ।
हुआ हुजूम अजब हर किनार होली का ॥२॥

गली में कूचे में गुल शोर हो रहे अक्सर ।
छिड़कने रंग लगे यार हर घड़ी भर-भर ।
बदन में भीगे हैं कपड़े, गुलाल चेहरों पर ।
मची यह धूम तो अपने घरों से ख़ुश होकर ।
तमाशा देखने निकले निगार[७] होली का ॥३॥

बहार छिड़कवां कपड़ों की जब नज़र आई ।
हर इश्क बाज़ ने दिल की मुराद भर पाई ।
निगाह लड़ाके पुकारा हर एक शैदाई[८] ।
मियां ये तुमने जो पोशाक अपनी दिखलाई ।
ख़ुश आया अब हमें, नक़्शों निगार[९] होली का ॥४॥

---

१. व्यक्त, ज़ाहिर २. सारंगी की तरह का एक बाजा ३. गाना ४. नृत्य ५. (फा० गुलैलालह) एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिन्दू लोग होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं ६. श्वेत रंग की सुगन्ध मिली बुकनी जो बल्लभ कुल के मन्दिरों में होली में उड़ाई जाती है। अभ्रक का चूर्ण जिसे होली में लोग अपने मित्रों के मुख पर मलते हैं। एक रंगीन बुकनी जिसे लोग होली के दिनों में अपने इष्ट मित्रों पर डालते हैं ७. प्रेमपात्र ८. प्रेमी, आशिक ९. बेल-बूटे, फूलपत्ती

तुम्हारे देख के मुंह पर गुलाल की लाली ।
हमारे दिल को हुई हर तरह की ख़ुशहाली ।
निगाह ने दी, मये[१०] गुल रंग की भरी प्याली ।
जो हंस के दो हमें प्यारे तुम इस घड़ी गाली ।
तो हम भी जानें कि ऐसा है प्यार होली का ।।५।।

जो की है तुमने यह होली की तरफ़ा(१) तैयारी ।
तो हंस के देखो इधर को भी जान यक बारी ।
तुम्हारी आन बहुत हमको लगती है प्यारी ।
लगादो हाथ से अपने जो एक पिचकारी ।
तो हम भी देखें बदन पर सिंगार होली का ।।६।।

तुम्हारे मिलने का रखकर हम अपने दिल में ध्यान ।
खड़े हैं आस लगाकर कि देख लें एक आन ।
यह ख़ुशदिली का जो ठहरा है आन कर सामान ।
गले में डाल कर बाहें ख़ुशी से तुम ऐ जान ! ।
पिन्हाओ हमको भी एक दम यह हार होली का ।।७।।

उधर से रंग लिये आओ तुम इधर से हम ।
गुलाल अबीर मलें मुंह पे होके ख़ुश हर दम ।
ख़ुशी से बोलें हंसे होली खेल कर बाहम[११] ।
बहुत दिनों से हमें तो तुम्हारे सर की कसम ।
इसी उम्मीद में था इन्तिज़ार होली का ।।८।।

बुतों[१२] की गालियां हंस-हंस के कोई सहता है ।
गुलाल पड़ता है कपड़ों से रंग बहता है ।
लगा के ताक कोई मुंह को देख रहता है ।
'नज़ीर' यार से अपने खड़ा यह कहता है ।
'मज़ा दिखा हमें कुछ तू भी यार होली का ।।९।।'

---

१०. शराब ११. आपस में १२. प्रिय पात्र

पाठान्तर—(१) जा० तरका

होली २

क़ातिल[१] जो मेरा ओढ़े इक सुर्ख़ शाल आया।
खा-खा के पान ज़ालिम कर होंठ लाल आया।
गोया निकल शफ़क़[२] से बदरे कमाल[३] आया।
जब मुंह में वह परीरू[४] मल कर गुलाल आया।
एक दम तो देख उसको होली को हाल[५] जाया ॥१॥

ऐशो तरब[६] का सामां है आज सब घर उसके।
अब तो नहीं है कोई दुनियां में हमसर[७] उसके।
अज़ माहताब माही[८] बन्दे[९] हैं बेज़र उसके।
कल वक़्ते शाम सूरज मलने को मुंह पर उसके।
रखकर शफ़क़ के सरपर तश्ते गुलाल[१०] आया ॥२॥

ख़ालिस कहीं से ताज़ी एक ज़ाफ़रां[११] मंगाकर।
मुश्को गुलाब[१] में भी मल कर उसे बसाकर।
शीशे में भर के निकला चुपके लगा छुपा कर।
मुद्दत से आरज़ू थी इक दम अकेला पाकर।
इक दिन सनम[१३] पे जाकर में रंग डाल आया ॥३॥

---

१. (अ० वि०) कत्ल करने वाला, मार डालने वाला, प्रिय पात्र। व्यंग्यार्थ–वह प्रिय–पात्र जिसे देखकर दिल काबू में न रहे २. (अ० स्त्री) उषा, शाम की लाली ३. खूबियों से भरा चांद ४. (फा० वि०) परियों जैसी शक्ल-सूरत वाला (वाली) ५. ईश्वर प्रेम परक रचना या गीत सुनकर अथवा सुन्दर दृश्य देखकर सुध-बुध खोकर आनन्द विह्वल हो जाना ६. सुख, भोग-विलास, हर्षोल्लास ७. समान ८. चांद से लेकर मछली तक, आकाश से पाताल तक ९. सेवक १०. गुलाल भरा थाल ११. केसर १२. कस्तूरी और गुलाब १३. प्रिय पात्र

अर्बाबेबज़्म[१४] फिर (१) तो वह शाह अपने लेकर।
सब हमनशीन[१५] हस्बे दिलख्वाह[१६] अपने लेकर।
चालाक चुस्त काफ़िर गुमराह अपने लेकर।
दस-बीस गुलरुखों[१७] को हमराह अपने लेकर।
यों ही भिगोने मुझको वह खुशजमाल[१८] आयां ॥४॥

इश्रत[१९] का उस घड़ी था असबाब[२०] सब मुहय्या[२१]।
बहता था हुस्न का भी उस जा पे एक दरिया।
हाथों में दिलबरों के साग़र[२२] किसी के शीशा[२३]।
कमरों में झोलियों में सेरों गुलाल बांधा।
और रंग की भी भर कर मश्को पखाल[२४] आया ॥५॥

अय्यारगी[२५] से पहले अपने तईं छिपाकर।
चाहा कि मैं भी निकलूं उनमें से छट छटाकर।
दौड़े कई यह कहकर जाता है दम(२) चुराकर।
इतने में घेर मुझको और शोरो ग़ुल मचाकर।
उस दम कमर-कमर तक रंगो गुलाल आया ॥६॥

यह चुहल तो कुछ अपनी क़िस्मत से मच रही थी।
यह आबरू की पर्दा हिर्फ़त[२६] से बच रही थी।
कैसा समां था कैसी शादी सी रच रही थी।
उस वक्त मेरे सर पर एक धूम मच रही थी।
उस धूम में भी मुझको जो कुछ ख़याल आया ॥७॥

लाज़िम न थी यह हरकत ऐ खुश-सफ़ीर[२७] तुझको।
अज़हर[२८] है सब कहे हैं मिलकर शरीर[२९] तुझको।
करते हैं अब मलामत[३०] खुर्दो कबीर[३१] तुझको।
लाहौल[३२] पढ़ के शैतां,[३३] बोला "नजीर" तुझको।
अब होली खेलने का पूरा कमाल आया ॥८॥

---

१४. महफिल के साथी १५. साथी १६. मनमाने १७. फूल जैसे सुन्दर मुख वाले १८. सुन्दर, हसीन। १९. आनन्द, खुशी २०. सामान, २१ मौजूद २२. प्याला २३. बोतल २४. मशक, पुर, पानी भरने की बड़ी मशक २५. चालाकी २६. चालाकी, छल २७. खुशी लाने वाले २८. जाहिर २९. चंचल ३०. निन्दा ३१. छोटे-बड़े ३२. घृणा और उपेक्षासूचक वाक्य ३३. शरारती

पाठान्तर—(१) आ० भर (२) दुम

होली (३)

फिर आन के इश्रत[1] का मचा ढंग ज़मी पर।
और ऐश ने अर्श[2] है किया तंग ज़मी पर।
हर दिल को खुशी का हुआ आहंग[3] ज़मी पर।
होता है कहीं राग कहीं रंग ज़मीं पर।
बजते हैं कहीं ताल कहीं जंग ज़मी पर॥
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मीं पर ॥१॥

घुंघरू की पड़ी आन के फिर कान में झंकार।
सारंगी हुई बीन तंबूरो[4] की मददगार॥
तबलों के ठुके तबल[5] यह साज़ों के बजे तार।
रागों के कहीं गुल कहीं नाचों के बंधे तार॥
ढोलक कहीं झनकारे हैं मरदंग[6] ज़मी पर।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ॥२।

इस रुत (१) में चमन पर भी अजब रंग चढ़ा है।
और जंगलो बन पर भी अ़जब रंग-चढ़ा है।
हर शोख[7] के तन पर भी अ़जब रंग चढ़ा है।
आशिक़ के बदन पर भी अजब रंग चढ़ा है।
सब ऐश के रंगों में हैं हमरंग ज़मी पर।
होली ने मचाया है अजब रंग ज़मी पर ॥३॥

---

[1] सुख, भोग-विलास का सुख [2] क्षेत्र [3] इरादा [4] तानापूरा या तुम्बुरु। बीन या सितार की तरह का बाजा [5] तबला में से दाहिले हाथ से बजने वाला तबल और बांए हाथ से बजने वाला 'बायां,' ठेका या डुग्गी कहा जाता है [6] पखावज की तरह की, किन्तु उससे ज्यादा लम्बी और पतली पुरानी किस्म की ढ़ोलक जो तबले की तरह बजाई जाती है [7] चंचल, प्रियपात्र

मारा है निपट होली के रंगों ने अ़जब जोश।
जो रंग में इक ख़ल्क[८] बनी फिरती है गुलपोश[९]।
हैं नाच कहीं, राग कहीं, रग कहीं जोश[१०]।
पीते हैं नशे ऐश में सब लोटे हैं मदहोश[११]।
माजू[१२] कहीं पीते हैं कहीं भंग (२) ज़मीं पर।
होली ने मचाया है अजब रंग ज़मीं पर ।।४।।

मैख़ानों में देखो तो अजब सैर है यारो।
वां मस्त पड़े लोटे हैं और करते हैं हो! हो!।
मस्ती से सिवा ऐश नहीं होश किसी को।
शीशों में, प्यालों में, सुराही में ख़ुशी हो।
उछले हैं पड़ी बादए-गुलरंग ज़मी पर।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ।।५।।

"गा गा" की पुकारें हैं कहीं रंगों की छिड़क है।
मीना[१३](१) की भभक और कहीं सागर[१४] की झलक है।
तबलों की सदाएं[१५] कहीं तालों की झनक है।
ताली की बहारें कहीं ठिलिया[१६] की खड़क है।
बजता है कहीं डफ़[१७] कहीं मुरचंग[१८] ज़मी पर।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ।।६।।

मस्ती में उठा आंख जिधर देखो अहा! हा!
नाचे है तवायफ़[१९] कहीं मटके है भवय्या[२०]।
चलते हैं कहीं जाम कहीं स्वांग का चर्चा।
और रंग को गलियों में जो देखो तो हर इक जा।
बहती हैं उमड़ कर जमनो गंग ज़मी पर।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ।।७।।

---

८. जनता, अवाम, दुनियां ९. फूलों से लदी हुई १०. स्वादिष्ट पेय, पीना। ११. नशे में चूर। १२. पिसी हुई भांग जो चाशनी में डालकर जमा ली जाती है १३. शराब की बोतल, सुराही १४. शराब का प्याला १५. स्वर, आवाज १६. छोटा घड़ा, गगरी १७. डफ़, लकड़ी के गोल बड़े मेंडरे पर चमड़ा मढ़कर बनाया गया बड़ा बाजा जो लकड़ी से बजाया जाता है। होली में इसे बजाते हुए निकलते हैं १८. मुंह में पकड़कर उंगलियों से बजाया जाने वाला सुरीली आवाज वाला बाजा १९. वैश्या २०. भाव बता बताकर नाचने वाला

पाठान्तर—(१) जा० मीनाई

मामूर[२१] है ख़ूबां[२२] से गली कूच ओ बाज़ार ।
उड़ता है अबीर और कहीं पिचकारी की है मार ।
छाया है गुलालों का हर इक जा पै धुआंधार ।
पड़ती है जिधर देखो उधर रंग की बौछार(१) ।
है रंग छिड़कने से हर एक दंग[२३] ज़मी पर ।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ।।८।।

भागे है कहीं रंग किसी पर जो कोई डाल ।
वह पोटली मारे है उसे दौड़ के फ़िलहाल ।
यह टांग घसीटे है(१) तो वह खीचे पकड़(२) बाल ।
वह हाथ मरोड़े तो यह तोड़े है खड़ा गाल ।
इस ढब के हर इक जा पे मचे ढंग ज़मी पर ।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ।।९।।

बैठे हैं सब आपस में नहीं एक भी कड़वा ।
पिचकारी उठाकर कोई झमकावे है घड़वा ।
भरते हैं कहीं मश्क कहीं रंग का गड़वा[२४] ।
क्या शाद वह होता है जिसे कहते हैं भड़वा[२५] ।
सुनते हैं यहां तक नहीं अब नंग ज़मी पर ।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मीं पर ।।१०।।

होली की 'नजीर' अब जो बहारें हैं अहा ! हा !
महबूब रंगीलों की कतारें हैं अहा ! हा !
कपड़ों पै ज़मी रंग की धारें हैं अहा ! हा !
सब होली है, होली है पुकारें हैं अहा ! हा !
क्या ऐश है, क्या रंग है क्या ढंग ज़मी पर ।
होली ने मचाया है अ़जब रंग ज़मी पर ।।११।।

---

२१. भरे हुए २२. सुन्दरियां २३. हैरान २४. लोटा २५. सफरदाई, रंडियों की दलाली करने वाला

पाठान्तर— (२) आ० पौछार (१) जा० घसीटे तो (२) क़ा०, जा० खीचे है पकड़

होली–४

मियां तू हमसे न रख कुछ ग़ुबार[१] होली में ।
कि रूठे मिलते हैं आपस में यार होली में ।
मची है रंग की कैसी बहार होली में ।
हुआ है ज़ोरे चमन आश्कार[२] होली में ।
अ़जब यह हिन्द की देखी बहार होली में ॥१॥

अब इस महीने में पहुंची हैं यां तलक यह चाल ।
फ़लक[३] का जामा पहन सुर्ख़ी शफ़क़[४] से लाल ।
बनाके चांद और सूरज के आस्मा पर थाल ।
फरिश्ते[५] खेले हैं होली बना अबीरो गुलाल ।
तो आदमी का भला क्या शुमार होली में ॥१॥

सुनाके होली जो ज़हरा बजाती है तंबूर ।
तो उसके राग से बारह बरूज़ हैं मामूर ।
छओं सितारों के ऊपर पड़ा है रंग का नूर ।
सभों के सर पै हरदम पुकारती हैं हूर ।
कि रंग से कोई मत कीजो आर होली में ॥२॥

जो घिर के अब्र कभी इस मज़े में आता है ।
तो बादलों में वह क्या–क्या ही रंग लाता है ।
खुशी से राँद भी ढोलक की गत लगाता है ।
हवा की होलियां गा–गा के क्या नचाता है ।
तमाम रंग से पुर है बहार होली में ॥४॥

चमन में देखो तो दिन रात होली रहती है ।
शराब नाब[६] की गुलशन[७] में नहर बहती है ।
नसीम[८] प्यार से गुंचे[९] का हाथ गहती है ।
और बाग़वान[१०] से बुलबुल खड़ी यह कहती है ।
न छेड़ मुझको तू ऐ बदशिआर[११] होली में ॥५॥

---

१. मनोमालिन्य २. प्रकट ३. आकाश ४. उषा, शाम की लाली ५. ईश्वर के दूत ६. खालिस, निर्मल ७. बाटिका, बाग़ ८. ठंडी और धीमी हवा ९. कली १०. माली ११. दुष्प्रकृति वाले

गुलों[12] ने पहने हैं क्या क्या ही जोड़े रंग–बिरंग ।
कि जैसे लड़के यह माशूक पहनते हैं तंग ।
हवा से पत्तों के बजते हैं ताल और मरदंग ।
तमाम बाग़ में खेले हैं होली गुल के संग ।
अजब तरह की मची है बहार होली में ।।६।।

मज़े की होती है होली भी राव राजों के यां ।
कई महीनों से होता है फाग का सामां ।
महकती होलियां गाती हैं गायनें खड़ियां ।
गुलाल अबीर भी छाया है दर ज़मीनो ज़मां ।
चहार तरफ़ है रंगों की मार होली में ।।७।।

अमीर जितने हैं सब अपने घर में है ख़ुशहाल ।
क़बाएं[13] पहने हुए तंग तंग गुल की मिसाल[14] ।
बनाके गहरी तरह हौज़ मिल के सब फिलहाल ।
मचाते होलियां आपस में ले अबीरो गुलाल ।
बने हैं(१) रंग से रंगी निगार[15] होली में ।।८।।

यह सैर होली की हमने तो ब्रज में देखी ।
कहीं न होवेगी इस लुत्फ़ की मियां होली ।
कोई तो डूबा है दामन[16] से लेके ता चोली ।
कोई तो मुरली बजाता है कह 'कन्हैयाजी' ।
है धूमधाम यह बेइख़्तियार[17] होली में ।।९।।

घरों से सांवरी और गौरियां निकल चलियां ।
कुसुंभी ओढ़नी और मस्ती करती अचपलियां ।
जिधर को देखें उधर मच रही हैं रंगरलियां ।
तमाम ब्रज की परियों से भर रही गलियां ।
मज़ा है, सैर है, दर हर किनार[18] होली में ।।१०।।

---

१२. फूल १३. दोहरा लंबा अंगरखा, चोग़ा १४. समान १५. प्रेमपात्र, महबूब १६. अंचल १७. बेतहाशा, अत्यधिक १८. अलग

पाठान्तर—(१) जा० यही हैं

जो कोई हुस्न की मदमाती गोरी है वाली ।
तो उसके चेहरे से चमके हैं रंग की लाली ।
कोई तो दौड़ती फिरती है मस्त रुखवाली ।
किसी की कुर्ती भी अंगिया भी रंग से रंग डाली ।
किसी को ऐश[१९] सिवा कुछ न कार[२०] होली में ।।११।।

जो कुछ कहाती हैं अबला बहुत पियाप्यारी ।
चली है अपने पिया पास लेके पिचकारी ।
गुलाल देख के फिर छाती खोल दी सारी ।
पिया की छाती से लगती वह चाव की मारी ।
न ताव[२१] दिल को रही ने क़रार[२२] होली में ।।१२।।

जो कोई स्यानी है उनमें तो कोई है नाकंद[२३] ।
वह शोर बोर थी सब रंग से निपट(१) यक चंद ।
कोई दिलाती है साथिन को यार की सौगंद ।
कि अब तो जामा व अंगिया के टूटे हैं सब बंद ।
'फिर आके खेलेंगे होकर दो चार होली में ।।१३।।'

कोई तो शर्म से घूंघट में सैन करती है ।
और अपने यार के नैनों में नैन करती है ।
कोई तो दोनों की बातों को ग़ैन करती है ।
कोई निगाहों से आशिक़ को चैन करती है ।
ग़रज तमाशे हैं होते हज़ार होली(२) में ।।१४।।

'नज़ीर' होली का मौसम जो जग में आता है ।
वह ऐसा कौन है होली नहीं मनाता है ।
कोई तो रंग छिड़कता है कोई गाता है ।
जो ख़ाली रहता है वह देखने को जाता है ।
जो ऐश चाहो सो मिलता है यार होली में ।।१५।।

---

१९. भोग विलास २०. कार्य २१. शक्ति २२, सान्त्वना २३. नादान

पाठान्तर—(१) क़ा० चट (२) का२ श० आ० में यह पूरा बंद ही नहीं है

होली—५

जुदा न हमसे हो ऐ ख़ुश जमाल[१] होली में ।
कि यार फिरते हैं यारों(१) के नाल[२] होली में ।
हर एक ऐश से हैगा बहाल होली में ।
बहार और कुछ अब की(२) है साल होली में ।
मज़ा है सैर है हर सू[३] कमाल होली में ॥१॥

सभों के ऐश को फागुन का यह महीना है ।
सफ़ेदो ज़र्द[४] में लेकिन कमाल कीना[५] है ।
तिला[६] का ज़र्दकने[७] सर ब सर ख़ज़ीना[८] है ।
सफ़ेद पास फ़क़त सीम[९] का दफ़ीना[१०] है ।
हर एक दिल में हैं रुस्तमो[११] जाल[१२] होली में ॥२॥

कहा सफ़ेद से आख़िर को ज़र्द ने यह पयाम[१३] ।
कि ऐ सफ़ेद ! तू अब छोड़ दे जहां का मुक़ाम ।
मैं आया अब तो मेरा वन्दोबस्त होगा तमाम ।
तू मुझसे आन के मिल छोड़ अपनी ज़िद का कलाम[१४]
वगरना खींचेगा तू अनफ़आल होली में ॥३॥

मिलेगा मुझसे तो मैं तुझको फिर बढ़ाऊँगा ।
बनाके आपसा पास अपने ले बिठाऊँगा ।
कहा सफ़ेद ने मैं मुत्लक़न[१५] न आऊंगा ।
तुझी को बाद कई दिन के मैं भगाऊंगा ।
तू अपना देखियो क्या होगा हाल होली में ॥४॥

---

१. अच्छे सौन्दर्य वाले, सुन्दर २. साथ ३. तरफ, ओर ४. केसरया ५. खुंस, रंजिश ६. सोना ७. केसरया के पास ८. खज़ाना ९. चांदी १०. खज़ाना ११. प्रसिद्ध ईरानी पहलवान वीर, योद्धा १२. रुस्तम पहलवान का पिता १३. संदेश १४. कथन १५. कदापि

पाठान्तर—(१) क़ा० शा० की (२) आ० जा० अबके

यह सुनके तैश[१६] में आज़र्द का सिपह सालार[१७] ।
चढ़ आया फ़ौज को लेकर सफ़ेद पर यकबार ।
इधर सफ़ेद भी लड़ने को होके आया सवार ।
सफ़[१८] मुक़ाबला दोनों की जब हुई तैयार ।
हुआ करख़्त[१९] जवाबो सवाल होली में ।।५।।

मिला(२) इधर से सफ़ेद और उधर से ज़र्द बहार ।
घटाएं रंग बिरंग फ़ौजों की झुकीं सरशार[२०] ।
पखालें[२१] मशके[२२] छुटीं रंग की पड़ी बौछार ।
और चार तरफ़ से पिचकारियों की मारामार ।
उड़ा ज़मीं से ज़मां[२३] तक गुलाल होली में ।।६।।

यहां तो दोनों में आपस में हो रही यह जंग[२४] ।
उधर से आया जो एक शोख़[२५] बारुख़ गुल रंग ।
हज़ारों नाज़नीं[२६] माशूक़ और उसके संग ।
नशे में मस्त, खुली ज़ुल्फ़, जोड़े रंग बरंग ।
कहा कि पूछो तो क्या है यह हाल होली में ।।७।।

कहा किसी ने कि ऐ बादशाहे ! महरुमा !।
सफ़ेदो ज़र्द यह आपस में लड़ रहे हैं यहां ।
यह सुन के आप वह दोनों के आगया दरमियां ।
इधर से थांबा उसे और उधर से उसको कि हां ।
तुम इस क़दर न करो इख़्तिलाल[२७] होली में ।।८।।

कहा तुम्हारी ख़ुसूमत[२८] का माजरा[२९] है क्या ।
कहा सफ़ेद ने नाहक यह ज़र्द है लड़ता ।
यह सुनके उसने वहीं अपना एक मगा जोड़ा ।
फिर अपने हाथ से जोड़े को छिड़कवा रंगवा ।
कहा कि दोनों रहो शामिल हाल होली में ।।९।।

---

[१६] क्रोध
[१७] सेनापति
[१८] पंक्ति, क़तार
[१९] कठोर, कर्कश, सख़्त
[२०] परिपूर्ण, मस्त
[२१] बड़ी मशक
[२२] पानी भरने को चमड़े की खाल
[२३] संसार, विश्व
[२४] लड़ाई
[२५] चंचल, चपल
[२६] सुकुमारी, सुन्दरी
[२७] विघ्न, गड़बड़ी
[२८] शत्रुता, दुश्मनी
[२९] हाल

फिर अपने तन में जो पहनी वह ख़िलअतें[३०] रंगीं ।
सभों को हुक्म किया(१) तुम भी पहनों अव यूं ही ।
हज़ारों लड़कों ने पहने वह जोड़े फिर वूं हीं ।
पुकारी खल्क़[३१] कि इन्साफ़ चाहिए यूं ही ।
हुआ फिर और ही हुस्नो जमाल होली में ॥१०॥

मियां मैं क्या कहूं फिर इस मज़े की ठहरी बहार ।
जिधर को आंख उठाकर नज़र करो एक बार ।
हज़ारों बाग रवाँ हैं करोड़ों हैं गुलज़ार ।
चमन चमन पड़े फिरते हैं सरव गुल रुख़सार[३२] ।
अजव बहार के हैं नौनिहाल होली में ॥११॥

जो नहर(२) हुस्न की है मौज मार चलती है ।
अलम[३३] लिए हुए आगे बहार चलती है ।
अगाड़ी मस्त सफ़े गुल इज़ार चलती है ।
पिछाड़ी आशिक़ों की सव क़तार चलती है ।
सभों के दिल में ख़ुशी का खयाल होली में ॥१२॥

गुलाल अबीर से कितने भरे हैं चौपाये ।
तमाम हाथों में गड़ुवे भी रंग के लाये ।
कोई कहे है किसी से 'कि हम भी लो आये' ।
तो उससे कहता वह हंसकर कि 'आ मेरे जाये' ।
हंसी ख़ुशी का है क़ालोमक़ाल[३४] होली में ॥१३॥

---

[३०] राज्य की ओर से सम्मानार्थ दिए जाने वाले वस्त्र [३१] दुनियाँ के लोग [३२] फूल जैसे गालों वाले [३३] झंडा [३४] वाद-विवाद

पाठान्तर—(१) जा० हुआ (२) जा० लहर

इसी बहार से गोकुलपुरे में जा पहुंचे ।
और मंडी नाई की और सईद खां की मंडी से ।
सब आलम गंज में शाहगंजो ताजगंज फिरे ।
हैं शहर में नहीं और गिर्द शहर के रहते ।
हुआ हुजूम[३५] का बहरे कमाल होली में ॥१४॥

सभों को लेके किनारी वजार में आये ।
फिर मोती कटरे फुलट्ठी के लोग सब धाये ।
कि पीपल मंडी व पन्नीगली के भी आये ।
जहां तहां से यह घिर घिर के लोग सब धाये ।
कि बेनवाओं[३६] के देखें जमाल होली में ॥१५॥

हुई जो सब में शरीफों[३७] रज़ील[३८] में होली ।
तो पहले रंग की पिचकारियों की मार हुई ।
किसी का भर गया जामा किसी की पगड़ी भरी ।
किसी के मुंह पे लगाई गुलाल की मुट्ठी ।
तो रफ़्ता रफ़्ता हुई फिर यह चाल होली में ॥१६॥

घटाएं मशकों पखालों की झूम कर आई ।
सुनहरी बिजलियां पिचकारियों की चमकाई ।
सबा[३९] ने रंग की बौछारें आके बरसाई–
हवा ने आन के सावन की झड़ियां बनवाई ।
लगी बरसने को मशको पखाल होली में ॥१७॥

इधर गुलाल का बादल भी छा गया घनघोर ।
सदाये[४०] राद[४१] हुई हर किसी का ग़ुल और शोर ।
यह लड़के नाज़नी[४२] बोलें हैं कोकिला जों मोर ।
तमाम रंग की बौछार से है शोराबोर ।
अजब है रंग, लगी बरशकाल[४३] होली में ॥१८॥

---

३५. भीड़ ३६. दीन-हीन, दरिद्र ३७. कुलीन, सज्जन, सभ्य ३८. नीच, अधम, कमीना ३९. शीतलमंद समीर ४०. आवाज़ ४१. बादल का कड़कना ४२. सुकुमार सुन्दर ४३. वर्षाऋतु

लगा के चौक से और चार शू[४४] तलक देखा।
कि जगह् एक भी तिल धरने की नहीं है ज़रा।
तमाम भीड़ से हर तरफ़ बन्द है रस्ता।
तिस ऊपर रंग का बादल है इस क़दर बरसा।
कि हर गली में बहा ढोलीखाल[४५] होली में ॥१६॥

'नज़ीर' होली तो है हर नगर में अच्छी खूब।
वलेक[४६] ख़त्म हुआ आगरे पे ये असलूब[४७]।
कहां हैं ऐसे सनम[४८] और कहां हैं ये महबूब।
जिन्हों के देखे से आशिक़ का होवे ताज़ा क़लूब[४९]।
तेरी निराली है यां चाल ढाल होली में+। ।२०॥

---

[४४] तरफ [४५] आगरे में घटिया नामक मुहल्ले से पश्चिम का एक मुहल्ला [४६] लेकिन [४७] तरीका, तौर [४८] प्रिय [४९] दिल

+ गोकुलपुरा, नाई की मंडी, मंडी सईदखां, आलमगंज, शाहगंज, किनारी बाजार, मोती कटरा, फुलट्टी, पीपल मंडी, पन्नी गली, ढोली खाल यह सब आगरे के मुहल्लों के नाम हैं।

होली—६

मिलने का तेरे रखते हैं हम ध्यान इधर देख।
भाती है बहुत हमको तेरी आन इधर देख।
हम चाहने वाले हैं तेरे जान ! इधर देख।
होली है सनम, हंस के तो एक आन इधर देख।
ऐ ! रंग भरे नौ[१] गुले खंदान[२] इधर देख ॥१॥

हम देखने तेरा यह जमाल इस घड़ी ऐ जाँन ! ।
आये हैं यही करके ख़याल इस घड़ी ऐ जाँन ! ।
तू दिल में न रख हमसे मलाल इस घड़ी ऐ जाँन ! ।
मुखड़े पे तेरे देख गुलाल इस घड़ी ऐ जाँन ! ।
होली भी यही कहती है ऐ जान ! इधर देख ॥२॥

अब ज़र्द यह चीरा जो तेरे सर पे जमा[३] है।
और इस पे यह तुर्रा[४] जो ज़री[५] का भी धरा है।
नीमा[६] भी तेरा रंग से केसर के भरा है।
पोशाक पे तेरी गुले (१) सद बर्ग[७] फ़िदा है।
नर्गिस तेरी आखों पे है क़ुर्बान इधर देख ॥३॥

होली की तरब[८] है जो हर इक जा में नमूदार।
सुनते हैं कहीं राग कहीं मै से[९] हैं सरशार।
है दिल में हमें तो तेरी नज़रों से सरोकार।
पिचकारी हमारे तो लगा, या न लगा यार।
हमको तो फ़क़त है यही अरमान इधर देख ॥४॥

---

[१] नये [२] फूल जैसी मुस्कराहट वाली। वाले [३] सजा [४] सुनहरी तारों का गुच्छा [५] सोने का बना हुआ [६] एक प्रकार का ऊंचा पाजामा [७] सौ पत्तियों वाला, शतदल, गेंदे का फूल [८] आनन्द, खुशी [९] शराब

पाठान्तर—(१) यह गुल

है धूम से होली के कहीं शोर, कहीं गुल ।
होता नहीं टुक रंग छिड़कने में तअम्मुल[10] ।
दफ़ बजते हैं सब हंसते हैं और धूम है बिल्कुल ।
होली की खुशी में तू न कर हमसे तग़ाफ़ुल[11] ।
ऐ जाँन ! हमारा भी कहा मान इधर देख ।।५।।

है दीद[12] की हर आन तलब[13] दिल को हमारे ।
जीते हैं फ़क़त[14] तेरी निगाहों के सहारे ।
हैं याँ जो खड़े आन के इस शौक़ (१) के मारे ।
हम एक निगाह के तेरे मुश्ताक़[15] हैं प्यारे ।
टुक प्यार की नज़रों से मेरी जान ! इधर देख ।।६।।

हर चार तरफ़ होली की धूमें हैं अहा ! हा ! ।
देखो जिधर आता है नज़र रोज़ तमाशा ।
हर आन झमकता है अजब ऐश का चर्चा ।
होली को 'नज़ीर' अब तू खड़ा देखे है यां क्या ।
महबूब यह आया, अरे नादान इधर देख ।।७।।

---

१०. सोच-विचार ११. देर, विलम्ब १२. दर्शन १३. इच्छा, उत्कंठा १४. सिर्फ, केवल १५. अभिलाषी, उत्सुक १६. प्रियपात्र

पाठान्तर— (१) जा० शोख़

होली की बहारें-७

जब फ़ागुन रंग़ झमकते हों तब देख बहारें होली की ।
और दफ़ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की ।
परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की ।
ख़म शीशए[1] जाम[2] छलकते हों तब देख बहारें होली की ।
महबूब नशे में छकते(१) हो तब देख बहारें होली की ।।१।।

हो नाच रंगीली परियों का बैठे हों गुलरू[3] रंग भरे ।
कुछ भीगी(२) तानें होली की कुछ नाज़ो अदा के ढंग भरे ।
दिल भूले देख बहारों को और कानों में आहंग[4] भरे ।
कुछ तबले खड़के रंग भरे कुछ ऐश के दम मुंहचंग भरे ।
कुछ घुंघरू ताल झनकते हों तब देख बहारें होली की ।।२।।

सामान जहां तक होता है इस इश्रत[5] के मतलूबों[6] का ।।
वह सब सामान मुहैया हो और बाग़ खिला हो ख़ूबों[7] का ।
हर आन शराबें ढलती हों और ठठ हो रंग के डूबों का ।
इस ऐश मज़े के आ़लम में एक ग़ोल खड़ा महबूबों का ।
कपड़ों पर रंग छिड़कते हों तब देख बहारें होली की ।।३।।

गुलज़ार[8] खिले हों परियों के और मजलिस की तैयारी हो ।
कपड़ों पर रंग के छींटों से खुश रंग अजब गुलकारी हो ।
मुंह लाल, गुलाबी आंखें हो और हाथों में पिचकारी हो ।
उस रंग भरी पिचकारी को अंगिया पर तक कर मारी हो ।
सीनों से रंग ढलकते हों तब देख बहारें होली की ।।४।।

---

१. सागर २. शराब का प्याला। ३. फूल जैसे सुन्दर, सुकोमल और सुकुमार मुख वाली नायिका
४. गान ५. सुख, आनन्द, खुशी ६. इच्छुक, प्रेमी ७. सुन्दर, माशूक, प्रियतमाएं ८. बाग़

पाठान्तर—(१) जा० झुकते (२) का० भीगे

उस रंग रंगीली मजलिस में वह रंडी नाचने वाली हो ।
मुंह जिसका चांद का टुकड़ा हो और आंख भी मै[९] की प्याली हो ।
बदमस्त, बड़ी मतवाली हो, हर आन बजाती ताली हो ।
मै नोशी[१०] हो वेहोशी हो भड़ुए की मुंह में गाली हो ।
भड़ुए[११] भी भड़वा[१२] बकते हो, तब देख बहारें होली की ॥५॥

और एक तरफ़ दिल लेने को महबूब भवैयों[१३] के लड़के ।
हर आन घड़ी गत भरते हों कुछ घट-घट के कुछ बढ़-बढ़के ।
कुछ नाज़ जतावें लड़ लड़के कुछ होली गावें अड़-अड़ के ।
कुछ लचकें शोख़ कमर पतली कुछ हाथ चले कुछ तन फ़ड़के ।
कुछ काफ़िर नैन मटकते हों तब देख बहारें होली की ॥६॥

यह धूम मची हो होली की और ऐश मज़ें का छक्कड़ हो ।
उस खींचा खींच घसीटी पर भड़ुए रंडी का फक्कड़ हो ।
माजून[१४] शरावें नाच मज़ा और टिकिया[१५] सुलफ़ा[१६] कक्कड़[१७] हो ।
लड़ भिड़के 'नज़ीर' फिर निकला हो कीचड़ में लत्थड़ पत्थड़ हो ।
जब ऐसे ऐश झमकते हों तब देख बहारें होली की ॥७॥

---

९. शराब १०. शराब पीना ११. वेश्याओं के साथ नकल करने वाले १२. नकल, मज़ाक १३. भाव बताकर नाचने वाले १४. कुटी हुई दवाओं को शहद या शंकर के क़िवाम में मिलाकर बनाया हुआ अवलेह १५. चरस, गांजे वगैरह की गोल टिकिया जो चिलम में रखकर पीते हैं १६. चरस १७. जल्द सुलग जाने के लिए, गीले और सूखे तम्बाकू को मिलाकर भुरभुरा बनाया हुआ पीने का तम्बाकू। एक भांति का लम्बे नेचे का हुक्का। मिट्टी का बड़ा हुक्का ।

होली–८

आ झमके ऐशो[१] तरब[२] क्या क्या, जव हुश्न दिखाया होली ने ।
हर आन ख़ुशी की धूम हुई, यूं लुत्फ़ जताया होली ने ।
हर ख़ातिर को ख़रसन्द[३] किया, हर दिल को लुभाया होली ने ।
दफ़[४] रंगी नक्श[५] सुनहरी का, जिस वक्त बजाया होली ने ।
बाज़ार गली और कूचों में ग़ुल शोर मचाया होली ने ॥१॥

या स्वांग कहूं, या रंग कहूं, या हुस्न बताऊं होली का ।
सब अवरन तन पर झमक रहा और केसर का माथे टीका ।
हंस देना हर दम, नाज़ भरा, दिखलाना सजधज शोख़ी का ।
हर गाली मिसरी, क़न्द भरी, हर एक कदम अटखेली का ।
दिल शाद किया और मोह लिया, यह जोवन पाया होली ने ॥२॥

कुछ तबले खड़के ताल बजें कुछ ढोलक और मरदंग बजे ।
कुछ छड़पें बीन रबाबों[६] की कुछ सारंगी और चंग[७] बजे ।
कुछ तार तंबूरों[८] के झनके कुछ ढमढमी[९] और मुहचंग[१०] बजे ।
कुछ घुंघरू छनके छम-छम-छम कुछ गत-गत पर आहंग[११] बजे ।
है हर दम नाचने गाने का यह तार बंधाया होली ने ॥३॥

हर जागह थाल गुलालों से खुश रंगत की गुलकारी है ।
और ढेर अबीरों के लागे, सौ इश्रत की तैयारी है ।
हैं राग बहारें दिखलाते और रंग भरी पिचकारी है।
मुंह सुर्ख़ी से गुलनार[१२] हुए तन केसर की सी क्यारी है ।
यह रूप झमकता दिखलाया यह रंग दिखाया होली ने ॥४॥

---

१. आराम २. आनन्द, खुशी ३. खुश ४. डफ़ ५. आकृति, शक्ल ६. सितार के प्रकार का एक बाजा ७. डफ की शक्ल का एक बाजा ८. तानपूरा ९. डफ़/डफ़ली/खंजड़ी १०. मुंह में दबाकर उंगलियों से बजाया जाने वाला एक बाजा ११. गान १२. अनार के फूल

पोशाकें छिड़कीं रंगों की और हर दम रंग अफ़्सानी है ।
हर वक़्त ख़ुशी की झमकें हैं पिचकारियों की रख़शानी[१३] है ।
कहीं होती है धींगा मुश्ती कहीं ठहरी खींचा तानी है ।
कहीं लुटियां झमकती रंग भरी कहीं पड़ता कीचड़ पानी है ।
हर चार तरफ़ ख़ुशहाली का यह जोश(१) बढ़ाया होली ने ॥५॥

हर आन ख़ुशी से आपस में सब हंस-हंस रंग छिड़कते हैं ।
रुख़सार[१४] गुलालों से गुलगूं[१५], कपड़ों से रंग टपकते हैं ।
कुछ राग और रंग झमकते हैं कुछ मै के जाम[१६] छलकते हैं ।
कुछ कूदे हैं, कुछ उछले हैं, कुछ हंसते हैं, कुछ बकते हैं ।
यह तौर ये नक़्शा इश्रत का, हर आन बनाया होली ने ॥६॥

महबूब परीरू[१७] प्यारों की हर जानिब[१८] नोका झोंकी है ।
कुछ आन रंगीली चलती है कुछ बान उधर से रोकी है ।
कुछ सैनें तिरछी सहर[१९] भरी कुछ घात लगावट(२) जो की है ।
कुछ शोर अहा ! हा ! हा ! हा ! का कुछ धूम अहो ! हो ! हो ! की है ।
यह ऐश यह हिज़(३)[२०] यह काम, यह ढब, हर आन जताया होली ने ॥७॥

माजूनों[२१] से रंग लाल हुए कहीं चलती मै की प्याली है ।
कहीं साज तरब[२२] के बजते हैं दिल शादां मुंह पर लाली है ।
सौ कसरत[२३] ऐश मुसर्रत[२४] की खुश वक्ती और खुश हाली है ।
कुछ बोली ठोली प्यार भरी, कुछ गाली है कुछ ताली(४) है ।
इन चर्चों का इन चुहलों का यह तार लगाया होली ने ॥८॥

हैं क्या-क्या सर में रंग भरे और स्वांग भी क्या-क्या आते हैं ।
कर बातें हर दम चुहल भरी, खुश हंसते और हंसाते हैं ।
कुछ जोगी चेले बैठे हैं कुछ कामिनियों की गाते हैं ।
कुछ और तरह के स्वांग बनें कुछ नाचते हैं कुछ गाते हैं ।
हर आन 'नज़ीर' इस फ़रहत का, सामान दिखाया होली ने* ॥९॥

---

१३. चमक १४. कपोल, गाल १५. गुलाब जैसे रंग वाले १६. प्याले १७. परी जैसी शक्ल सूरत वाले १८. तरफ १९. बेदारी, जाग्रति २०. आनन्द, मज़ा २१. कुटी हुई दवाओं को शहद या शकर के क़िवाम में मिलाकर बनाया हुआ अवलेह २२. आनन्द २३. अधिकता २४. खुशी, आनन्द

पाठान्तर—(१) जा० हर्ष (२) क़ा० श० आ० ख़ू (३) आ० ख़त (४) जा० पाली

* इस पद्य में दफ़, तबले, ढोलक, मृदंग, बीन, रबाब, सारंगी, चंग, तंबूरा, ढमढमी, मुंहचंग बाजों के नाम आए हैं

होली—९

आलम[१] में फिर आई तरब[२] उनवान[३] से होली ।
फ़रहत[४] को दिखाती ही गई शान से होली ।
रंगी हुई रंगों की फ़रावान[५] से होली ।
गुलगूं[६] है गुलालों की गुल अफ़्शान[७] से होली ।
झमकी तरबो ऐश के सामान से होली ॥१॥

दफ़ बजने लगे हर कहीं गुल शोर की ठहरी ।
गलियों में हुई ख़ुशदिली और कूंचों में खूबी ।
यह नाच लगे होने कि दिल ख़ुश हुए और जी ।
और राग ख़ुश आवाज हुए ऐसे कि जिनकी ।
हर तान लगी खेलने हर कान से होली ॥२॥

है फ़रहतो इश्रत[८] जो हर एक जा में फ़रावां ।
चर्चे हैं बड़े धूम के चुहलें हैं नुमायां[९] ।
आये हैं तमाशे के लिए नाज़नीं[१०] खूबां[११] ।
होली का अजब हुस्न बढ़ाते हैं यह हर आं[१२] ।
जब कहते हैं अपने लबे ख़न्दां[१३] से 'होली' ॥३॥

चेहरों पे गुलाल उनके लगा है जो बहुत सा ।
आता है नजर हुस्न का कुछ ज़ोर ही नक्शा ।
है रंग में और रूप में झमका जो परी का ।
देख उनकी बहारें यही कहते हैं अहा हा ।
दुनियां में यह आई है परिस्तान से 'होली' ॥४॥

---

१. संसार २. आनन्द ३. शीर्षक ४. खुशी, आनन्द ५. अत्यधिकता, बहुत अधिक होने से ६. गुलाब जैसे रंग वाली ७. फूल बरसाने वाली ८. खुशी ९. प्रकट, ज़ाहिर १०. सुकुमार ११. सुन्दर स्त्रियां, प्रियतमाएं, माशूक १२. क्षण, पल १३. हंसते हुए होंठ

चमके हैं यह कुछ हुस्न परी चेहरों के 'यारो' ।
सब उनकी झमक देख के कहते हैं 'उहो हो' ।
फिरते हैं लगे चाहने वाले भी जो ख़ुश हो ।
पोशाक छिड़कवां से यह जाते हैं जिधर को ।
वां उनके लगी फिरती है दामान से होली ।।५।।

महबूबों में ठहरा है अजब होली का चर्चा ।
जो रंग झमकता है पड़ा नाज़ो अदा का ।
हर आन जताते हैं खड़े शोख़ियां[14] क्या-क्या ।
और पान जो खाते हैं तो वह पान भी गोया ।
खेले हैं बुतों के लबो दन्दान[15] से होली ।।६।।

मुखड़े पे गुलाल आता है जिस दम नज़र उनके ।
होते हैं निगाहों में अजब हुस्न के नक़्शे ।
पिचकारियां हंस हंस के जो हर दम हैं लगाते ।
वह हाथ हिंनाबस्ता[16] भी कुछ मलते हैं ऐसे ।
जो खेलें हैं आशिक़ के गिरीबान[17] से होली ।।७।।

वह शोख़ लिए रंग इधर जिस घड़ी आया ।
फिर उस पे वहीं रंग बहुत हमने भी छिड़का ।
उसने हमें और हमने उसे ख़ूब भिगोया ।
इस ऐश के नक़्शे को 'नज़ीर' आगे कहूं क्या ।
हम खेले यह महबूब के एहसान से होली ।।८।।

होली–१०

होली की बहार आई फ़रहत[1] की खिलीं कलियां ।
बाजों की सदाओं[2] से कूचे भरे और गलियां ।
दिलबर[3] से कहा हमने टुक छोड़िये छलबलियां ।
अब रंग गुलालों की कुछ कीजिये रंग रलियां ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां[4] ।।१।।

---

१४. चंचलता १५. होंठ और दांत १६. मेंहदी रचे हुए १७. कुर्ते या कमीज़ का गला, दामन, सिरा

१. ख़ुशी, आनन्द २. स्वर, आवाज़ों ३. प्रेमपात्र, प्रिय ४. भली

है सब में मची होली अब तुम भी यह चर्चा लो ।
रखवाओ अबीर ऐ जां ! और मैप[5] को भी मंगवाओ ।
हम हाथ में लोटा लें तुम हाथ में लुटिया[6] लो ।
हम तुमको भिगो डालें तुम हमको भिगो डालो ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ।।२।।

है तर्ज़ जो होली की उस तर्ज़ हंसो-बोलो ।
जो छेड़ हैं इश्रत[7] की अब तुम भी वही छेड़ो ।
हम डालें गुलाल ऐ जां ! तुम रंग इधर छिड़को ।
हम बोलें 'अहा हा हा' तुम बोलो ''उहो हो हो' ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ।।३।।

इस दम तो मियां हम तुम इस ऐश की ठहरावें ।
फिर रंग से हाथों में पिचकारियां चमकावें ।
कपड़ों को भिगो डालें और ढंग कई लावें ।
भीगे हुए कपड़ों से आपस में लिपट जावें ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ।।४।।

हम छेड़ें तुम्हें हंस हंस, तुम छेड़ की ठहरा दो ।
हम बोसे[8] भी ले लेवें तुम प्यार से बहला दो ।
हम छाती से आ लिपटें तुम सीने को दिखलादो ।
हम फेंकें गुलाल ऐ जां ! तुम रंग को छलकादो ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ।।५।।

यह वक़्त ख़ुशी का है मत काम रखो रम[9] से ।
ले रंग गुलाल ऐ जां ! और नाज़ की ख़म चम से ।
हंस हंस के बहम[10] लिपटें इस ऐश के आलम से ।
हम 'छोड़' कहें तुमसे, तुम 'छोड़' कहो हमसे ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ।।६।।

---

५. शराब ६. छोटा लोटा ७. ख़ुशी, आनन्द ८. चुम्बन ९. भागना १०. आपस में

कपड़ों पे जो आपस में अब रंग पड़े ढलकें ।
और पड़के गुलाल ऐ जां ! रंगीं हों भवें पलकें ।
कुछ हाथ इधर तर हों कुछ भीगें उधर अलकें ।
हर आन हंसे कूदें, इश्रत के मज़े झलकें ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ॥७॥

तुम रंग इधर लाओ और हम भी उधर आवें ।
कर ऐश की तैयारी धुन होली की बर लावें ।
और रंग से छीटों की आपस में जो ठहरावें ।
जब खेल चुकें होली फिर सीनों से लग जावें ।
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ॥८॥

इस वक़्त मुहैया[11] है सब ऐशो-तरब[12] की शै[13] ।
दफ़ बजते हैं हर जानिब और बीनो-रुबावो नै[14] ।
हो तुम में भी और हममें होली की है जो कुछ रे[15] ।
सुनकर यह 'नज़ीर' उसने हंस कर यह कहा 'सच है ।'
होली में यही धूमें लगती हैं बहुत भलियां ॥९॥

होली-११

जब आई होली रंग भरी, सो नाज़ो अदा[1] से मटकमटक ।
और घूंघट के पट खोल दिये, वह रूप दिखाया(१) चमक-चमक ।
कुछ मुखड़ा करता दमक-दमक कुछ अबरन[2] करता झलक-झलक ।
जब पांव रखा ख़ुशवक़्ती[3] से तब पायल बाजी झनक-झनक ।
कुछ उछलें, सैनें नाज़ भरें, कुछ कूदें(२) आहें थिरक-थिरक ॥१॥

---

११. एकत्र, उपस्थित १२. विलास १३. चीज़ १४. वीन, रुबाब और बांसुरी १५. राय

१. नाज़, अंदाज २. आभूषण ३. समय की अनुकूलता सौभाग्य

पाठान्तर—(१) आ० दिखला (२) गोदें

यह रूप दिखाकर होली के, जब नैन रसीले टुक मटके ।
मंगवाये थाल गुलालों के, भर डाले रंगों से मटके ।
फिर स्वांग बहुत तैयार हुए, और ठाठ ख़ुशी के झुरमुटके ।
गुल शोर हुए ख़ुश हाली के, और नाचने गाने के खटके ।
मरदंगें बाजी, ताल बजे, कुछ खनक-खनक कुछ धनक-धनक ।।२।।

पोशाक छिड़कवां से हर जा, तैयारी रंगी पोशों[4] की ।
और भीगी जागह रंगों से, हर कुंज गली और कूचों की ।
हर जागह जर्द लिबासों[5] से, हुई ज़ीनत[6] सब आगोशों[7] की ।
सौ ऐशो तरब[8] की धूमें हैं, और महफ़िल में मै नोशों[9] की ।
मै[10] निकली जाम गुलाबी से, कुछ लहक-लहक-कुछ छलक-छलक ।।३।।

हर चार तरफ़ ख़ुशवक़्ती से दफ़[11] बाजे, रंग और रंग हुए ।
कुछ धूमें फ़रहत[12]–इश्रत की, कुछ ऐश ख़ुशी के रंग हुए ।
दिल शाद हुए ख़ुशहाली से, और इश्रत के सौ ढंग हुए ।
यह झमकी रंगत होली की जो देखने वाले दंग हुए ।
महबूब परीरू[13] भी निकले कुछ झिजक-झिजक कुछ ठिठक-ठिठक ।।४।।

जब ख़ूबां[14] आये रंग भरें, फिर क्या-क्या होली झमक उठी ।
कुछ हुश्न की झमकें नाज़ भरीं, कुछ शोख़ी[15] नाज़ अदाओं की ।
सब चाहने वाले गिर्द खड़े, नज़्ज़ारा[16] करते हंसी ख़ुशी ।
महबूब नशे की ख़ूबी में, फिर आशिक़ ऊपर घड़ी-घड़ी ।
हैं रंग छिड़कते सुर्ख़ी के, कुछ लपक-लपक कुछ झपक-झपक ।।५।।

है धूमख़ुशी की हर जानिब[17], और कसरत[18] है ख़ुश वक़्ती की ।
हैं चर्चे होते फ़रहत के, और इश्रत की भी धूम मची ।
ख़ूबां के रंगीं चेहरों पर हर आन निगाहें हैं लड़तीं ।
महबूब भिगोएं आशिक़ को, और आशिक़ हंसकर उनको भी ।
ख़ुश होकर उनको भिगोवें हैं, कुछ अटक-अटक कुछ हुमक-हुमक ।।६।।

---

[4] वस्त्र [5] कैसरिया कपड़े [6] सुन्दरता [7] बग़ल, गोद [8] आनन्द [9] शराब पीने वाले [10] शराब [11] डफ—एक गोलाकार खाल मढ़ा हुआ बाजा [12] खुशी [13] परियों जैसी शक्ल सूरत वाले [14] खूबसूरत [15] चपलता, चुलबुलाहट [16] दर्शन [17] तरफ़ [18] अधिकता

वह शोख़ रंगीला जब आया, यां होली की कर तैयारी ।
पोशाक सुनहरी, ज़ेब बदन, और हाथ चमकती पिचकारी ।
की रंग छिड़कने से क्या-क्या, उस शोख ने हरदम अय्यारी ।
हमने भी "नज़ीर" उस चंचल को, फिर ख़ूब भिगोया हर बारी ।
फिर क्या-क्या रंग बहे उस दम कुछ ढलक-ढलक कुछ चिपक-चिपक ।।७।।

होली-१२

होली की रंग फ़िशानी से है रंग यह कुछ पैराहन[1] का ।
जो रंगारंग बहारों में हो सहन चमन और गुलशन का ।

जिस ख़ूबी और रंगीनी से गुलजार खिले हैं आलम में ।
हर आन छिड़कवां जोड़ों से है हुश्न कुछ ऐसा ही तनका ।

ले जाम लबालब भर दीना फिर साक़ी[2] को कुछ ध्यान नहीं ।
यह साग़र[3] पहुंचे दोस्त तलक या हाथ लपक ले दुश्मन का ।

हर महफ़िल में रक़्क़ासों[4] का क्या सहर[5] दिलों पर करता है ।
वह हुश्न जताना गानों का, और जोश दिखाना जोवन का ।

है रूप अबीरों का महवश[6] और रंग गुलालों का गुलगूं[7] ।
हैं भरते जिसमें रंग नया, है रंग अजब इस बर्तन का ।

उस गुल गूं ने यूं हम से कहा, क्या मस्ती और मदहोशी है ।
ना ध्यान हमें कुछ चोली का, ना होश तुम्हें कुछ दामन का ।

जब हमने "नज़ीर" उस गुलरू से यह बात कही हंसकर उस दम ।
क्या पूछे है, ऐ ! रंग भरी है मस्त महीना फागुन का ।

---

[1] वस्त्र, लिबास
[2] शराब पिलाने वाला
[3] शराब का प्याला, चषक
[4] नर्तक, नाचने वाले
[5] जादू, जागृति
[५] आकृति वाला
[7] गुलाब जैसे रंग वाला

होली १३

बुतों के ज़र्द पैराहन[१] में इत्र चम्पा जब महका ।
हुआ नक्शा अयां होली की क्या क्या रस्म और रहका ॥
गुलाल आलूद:[२] गुलचहरों के वस्फे रुख[३] में निकले हैं ।
मज़ा क्या क्या ज़रीरे कल्क[४] से बुलबुल की चहचहका ।
गुलाबी आंखड़ियों के हर निगाह से जाम मिल पीकर ।
कोई खरखुश,[५] कोई बेखुद[६], कोई लोटा, कोई बहका ॥
खिडकवां रंग खूबां पर अज़ब शोखी[७] दिखाता है ।
कभी कुछ ताज़गी वह, वह कभी अंदाज़ रह रह का ॥
भिगोया दिलवरों ने जब "नज़ीर" अपने को होली में ।
तो क्या क्या तालियों का ग़ुल हुआ और शोर क़ह क़ह का ॥

होली–१४

हिन्द के गुलशन में जब आती है होली की बहार ।
जांफिशानी[१] चाही कर जाती है होली की बहार ॥
एक तरफ से रंग पड़ता, इक तरफ उड़ता गुलाल ।
ज़िन्दगी की लज्ज़तें लाती हैं, होली की बहार ॥
ज़ाफरानी सजके चीरा आ मेरे शाक़ी शिताब ।
मुझको तुझ बिन यार तरसाती है होली की बहार ॥
तू बग़ल में हो जो प्यारे, रंग में भीगा हुआ ।
तब तो मुझको यार खुश आती है होली की बहार ॥
और जो हो दूर या कुछ ख़फ़ा हो हमसे मियां ।
तो तो काफ़िर हो जिसे भाती है होली की बहार ॥
नौ बहारों से तू होली खेलले इस दम "नज़ीर" ।
फिर बरस दिन के उपर जाती है होली की बहार ॥

---

[१] पैरहन–वस्त्र [२] गुलाल लगे हुए [३] अच्छे चेहरों और कपोलों [४] बगल [५] नशे में मस्त [६] बेसुध [७] चपलता

[१] महनत

होली पिचकारी–१५

हां इधर को भी ऐ गुंचादहन[1] पिचकारी ।
देखें कैसी है तेरी रंगविरंग[2] पिचकारी ॥१॥

तेरी पिचकारी की तक़दीद में ऐ गुल हर सुबह ।
साथ ले निकले है सूरज की किरन पिचकारी ॥२॥

जिस पे हो रंग फिशां उसको बना देती है ।
सर से ले पांव तल्क रश्के चमन पिचकारी ।।३।।

बात कुछ बस की नहीं वर्ना तेरे हाथों में ।
अभी आ बैठें यहीं बनकर हमतंग[3] पिचकारी ॥४॥

हो न हो दिल ही किसी आशिके शैदा का "नज़ीर" ।
पहुंचा है हाथ में उसके बनकर पिचकारी ॥५॥

होली–१६

बजा लो तब्लो तरब इस्तमाल होली का ।
हुआ नुमूद में रंगों जमाल होली का ॥
भरा सदाओं में, रागो ख़याल होली का ।
बढ़ा ख़ुशी के चमन में निहाल होली का ॥
अज़ब बहार में आया, जमाल होली का ॥१॥

हर तरफ से लगे रंगो रूप कुछ सजने ।
चमक के हाथों में कुछ तालियां लगी बजने ॥
किया ज़हूर हंसी और खुशी की सजधज ने ।
सितारो ढोलो मृदंग दफ़ लगे बजने ॥
धमक के तबलों पै खटके है ताल होली का ॥२॥

---

[1] कली जैसे सुन्दर और छोटे मुंह वाला [2] रंग फेंकने वाली रंग विरंगी [3] समान, पिचकारी के समान ।

जिधर को देखो उधर ऐशो चुहलके खटके ।
हैं भीगे रंग से दस्तारो जाम और पटके ।।
भरे हैं हौज़ कहीं रंग के कहीं मटके ।
कोई ख़ुशी से खड़ा थिरके और मटके ।।
यह रंग ढंग है रंगी खिसाल[1] होली का ।।३।।

निशातो ऐश से चलते तमाशे झमकेरे ।
बदन में छिड़कवां जोड़े सुनहरे बहुतेरे ।।
खड़े हैं रंग लिए कूच औ गली घेरे ।
पुकारते हैं कि भड़ुआ हो अब जो मुंह फेरे ।।
यह कहके देते हैं झट रंग डाल होली का ।।४।।

जरूफ बादए गुलरंग से चमकते हैं ।
सुराही उछले है औ जाम भी छलकते हैं ।।
नशों के जोश में महबूब भी झमकते हैं ।
इधर अबीर उधर रंग ला छिड़कते हैं ।।
उधर लगाते हैं भर भर गुलाल होली का ।।५।।

जो रंग पड़ने से कपड़ों तईं छिपाते हैं ।
तो उनको दौड़ के अक्सर पकड़ के लाते हैं ।।
लिपट के उनपे घड़े रंग के झुकाते हैं ।
गुलाल मुंह पै लगा गुलमचा सुनाते हैं ।।
यही है हुक्म अब ऐश इस्तमाल होली का ।।६।।

गुलाल चहरए ख़ूबां पै यों झमकता है ।
कि रश्क़ से गुले-खुर्शीद[2] उसको तकता है ।।
उधर अबीर भी अफ़शां[3] नमित चमकता है ।
हरेक के ज़ुल्फ़ से रंग इस तरह टपकता है ।।
कि जिससे होता है खुश्क बाल बाल होली का ।।७।।

---

[1] स्वभाव, आदत [2] सूरजमुखी का फूल [3] स्त्रियों के बालों अथवा गालों पर छिड़कने का सुनहला या रुपहला चूर्ण

कहीं तो रंग छिड़क कर कहें कि होली है ।
कोई खुशी से ललक कर कहें कि होली है ॥
अबीर फेंकें हैं तक कर कहें कि होली है ।
गुलाल मलके लपक कर कहें कि होली है ॥
हरेक तरफ से है यह कुछ इत्तिसाल[4] होली का ॥८॥

यह हुस्न होली के रंगीन अदाए मलियां है ।
जो गलियां हैं तो मिश्री की वह भी डलियां हैं ॥
चमन हैं कूंचा सभी सहनो बाग गलियां हैं ।
तरब[5] है ऐश है, चुहलें हैं, रंग रलियां हैं ॥
अजब "नज़ीर" है फ़रख़ुन्दा[6] हाल होली का ॥९॥

होली–१७

सनम तू हमसे न हो बदगुमान होली में ।
कि यार रखते हैं यारो का मान होली में ॥
वह अपनी छोड़ दे अब ज़िद की आन होली में ।
हमारे साथ तू चल महरबान होली में ।
फिर तेरी घट न जावेगी शान होली में ॥१॥

जरा तू घर से निकल देख क़ुदरते अल्लाह ।
कि रंग में भीग रहे हैं तमाम माहियों माह[1] ॥
खड़े हैं पीरो जवां तिफ्ल नाजनीं सरे राह ।
किसी की सुर्ख है पगड़ी किसी की जर्द कुलाह[2] ॥
खुशी से मस्त है यक्सर जहान होली में ॥२॥

---

[4] मेल-मिलाप [5] आनन्द [6] खुशी का

[1] मछली और चांद पाताल से आकाश तक [2] टोपी

नशे में कितने तो माशूक हैंगे मतवाले ।
जल्वे उनके हज़ारों हैं देखने वाले ॥
किसी के हाथ में शीशे किसी के हैं प्याले ।
किसी ने हाथ किसी के गले में हैं डाले ॥
करे हैं ऐश सभी मैकशान[३] होली में ॥३॥

कोई तो बांधे है दस्तार गुलनारी ।
किसी के हाथ में हैगा गुलाल पिचकारी ॥
किसी की रंग में पोशाक ग़र्क़ है सारी ।
किसी के गाल पे है सुर्ख़ रंग की धारी ॥
अ़जब बहार जो ठहरी है आन होली में ॥४॥

कहीं जो देखा तो है नाज़नीं बहुत चंचल ।
कि जिसको देखके आशिक का दिल न पावै कल ॥
गले और बाज़ू में पहने है नौरतन[४] हैकल[५] ।
चले जो राह कमर में पड़े हैं सौ सौ बल ॥
है इस तरह का वह नाज़ुक मियान[६] होली में ॥५॥

तमाम शहर में हरसू मची हैं रंगरलियां ।
गुलाल अबीर से गुलज़ार हैं सभी गलियां ॥
कोई किसी के साथ कर रहा है अचपलियां ।
गरज़ कि ज़ोर हवाएं हैं ऐश की चलियां ॥
किसी को ऐश सिवा कुछ न ध्यान होली में ॥६॥

'नज़ीर' होली तो हरजा हो रही होगी ।
पर हमने सैर यह इक बाग़ में अजब देखी ॥
दीवारें बाग की यक्सर सुनहरी नक़्क़ाशी ।
और उनके बीच में एक नौबहार बारहदरी ॥
ज़री का उसमें खिचा सायबान होली में ॥७॥

---

[३] शराब पीने वाले [४] नौ नगा नाम का गहना [५] चौकोर पान के तथा अन्य प्रकार के आकार के कई जंतरों से बना गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना, हुमेल [६] नाज़ुक कमरवाला

हर एक ने अपने मुआफ़िक़ दिया है फ़र्श बिछा ।
ख़ुशी से बैठा हुआ सैर बाग की करता ।।
है भीड़ भाड़ का अब इस ज़हूर का चर्चा ।
कि बीच बाग़ के तिल धरने को नहीं है जा ।।
रहा था न कोई खाली मकान होली में ।।८।।

हुई है किसी परविश मुखविचों[7] की दुकान ।
तरह तरह की शराबों का किया सामान ।।
कोई कहे है कि मेरी गुलाबी भर दे जान ।
रुपया अशर्फी का इस क़दर है वारान ।।
कि वह दुकान हुई ज़र की खान होली में ।।९।।

और कितने ऐसे हैं सूरत के उनके मतवाले ।
कि उनकी आंख से पीते हैं दम बदम प्याले ।।
कहते हैं 'हाय' 'हाय' रे इन ज़ालिमों ने घर घाले ।
कहीं हज़ारों व लाखों हैं देखने वाले ।।
खड़े हैं सामने घेरे दुकान होली में ।।१०।।

हज़ारों खोमचे वाले फिर हैं लालो लाल ।
पुकारते हैं मिठाई है और मोंठ की दाल ।।
तमोली बैठे हैं बीड़ों से अपना मुंह कर लाल ।
कोई पुकारे है क्या ज़ोर है नशे रंग लाल ।।
कोई नशा, कोई खाता है पान होली में ।।११।।

कोई तो हुस्न में अपने कहे हैं गुलशन हूं ।
कोई बहार दिखाकर कहे हैं लालन हूं ।।
लुभा के दिल के और बोला कि मैं तो मोहन हूं ।
कोई पुकारे है आशिक मैं बामन हूं ।।
दिलाओ अब कोई बोसे का दान होली में ।।१२।।

कोई किसी के ऊपर ला घड़ा छुड़ाता है ।
कोई गुलाल किसी के मुंह पे फेंक जाता है ।।
कोई किसी के तई गालियां सुनाता है ।
मुआफ़िक़ अपने हरेक होली को मनाता है ।।
गरज़ कि दोनों ही की है आन बान होली में ।।१३।।

---

[7] शराब बेचने वाले

होली–१८

होली हुई नुमायां सौ फ़रहतें सभलियां।
डफ बजने लागे हरजां, और इशरतें और छलियां॥
बातें हंसी ख़ुशी की, हर लब से फिर निकलियां।
मै[2] के नशों ने हरदम तर्ज़े खुर्द की छलियां॥
रंग और गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंग रलियां॥१॥

पड़ने से रंग हर जां आपस में यार भीगे।
गुलशोर भी मचाए और बार-बार भीगे॥
रंगत के जो खड़े थे उम्मीदवार भीगे।
आशिक भी तरवतर है और गुल इज़ार[3] भीगे॥
रंग ओ गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां॥
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंगरलियाँ॥२॥

कुछ ठाठ आके ठहरे कुछ स्वांग रूप चमके।
कुछ गिर्द उनके खुश हो अम्बोह आन धमके॥
अश्शाक़ में भी हरदम रंग उल्फ़तों के दमके।
ख़ूबा के भी हर इक जा हुस्नोजमाल झमके॥
रंग औ गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंग रलियां॥३॥

देखो जिधर उधर को है सैर और तमाशा।
कुछ नाचने के खटके कुछ राग रंग ठहरा॥
ठठ्ठे हंसी के चर्चे ऐशो तरब का चर्चा।
सौ सौ बहारें चुहलें आई नज़र अहा हा॥
रंग औ गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंग रलियां॥४॥

---

१. आनन्द २. शराब ३. गुलाब जैसे सुकुमार गालों वाला।

हैं रंग साथ लेकर आपस में यार फिरते ।
आया जो उनके आगे खूब उसपे रंग छिड़के ।।
कोई किसी से भागें कोई किसी को पकड़े ।
भीगे बदन सरापा[4] मुंह लाल जर्द कपड़े ।।
रंग औ गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां ।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंगरलियां ।।५।।

होती हैं चुहलें क्या क्या नाज़ो अदा की भीगें ।
मुंह पर गुलाल, भौंहें उस आश्ना[5] की भीगें ।
ज़ुल्फ़ें भी रंग से हैं हर दिलरुबा की भीगें ।
पोशाक़ें बदन में हर दिलरुबा की भीगें ।
रंग और गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां ।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंग रलियां ।।६।।

हैं रंग से जो भीगे महबूब हुस्न वाले ।
हंसते हैं सब ख़ुशी से बांहें गले में डाले ।।
कपड़े छिड़कवां उनके हर दिल को खुश हैं आते ।
मुखड़े हैं जगमगाते तुर्रे हैं झमझमाते ।।
रंग और गुलाल पड़के रंगी हुई हैं गलियां ।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंग रलियां ।।७।।

होली की यारो क्या-क्या कहने में आती खूबी ।
क़ुछ जोर ही मजे की हरदम बहार देखी ।।
सुनते ही आए क्या ! क्या ! बातें हंसी खुशी की ।
आगे 'नज़ीर' अब तो क्या कहिए वाह ! वाह ! जी ।।
रंग और गुलाल पड़ के रंगी हुई हैं गलियां ।
दिखलाई अपनी क्या-क्या होली ने रंग रलियां ।।८।।

---

[4] सिर से पैर तक [5] मित्त, यार

होली–१९

जब खेली होली नंद ललन हँस हँस नंदगाँव बसैयन में।
नर नारी को आनन्द हुए ख़ुशवक्ती छोरी छैयन में।।
कुछ भीड़ हुई उन गलियों में कुछ लोग ठठ्ठ अटैयन में।
ख़ुशहाली झमकी चार तरफ कुछ घर-घर कुछ चौपय्यन में।।
डफ बाजे, राग और रंग हुए, होली खेलन की झमकन में।।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।१।।

हर जगह होरी खेलन की तैयारी सब रंग जतन।
अम्बोह हुए खुशवक्ती के और ऐश खुशी के रूप बरन।
पिचकारी झमकी हाथों में और झमके तन के सब अबरन।।
हर आन हर इक नर नारी से होरी खेलन लागे नंद ललन।
डफ बाजे राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।२।।

कुछ बांधे साथ अबीर अपने कुछ रंग उठाए बर्तन में।
कुछ कूदें उछलें खुश होकर कुछ लपकें होरी खेलन में।।
कुछ रंगी सबके हाथ भरे कुछ कपड़े भीग रहे तन में।
हर वक्त खुशी हर आन हंसी सौ खूबी घर औ आंगन में।
डफ बाजे राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।३।।

नंदगांव में जब यह ठाठ हुए, बरसाने में भी धूम मची ।
श्री किशन चले होली खेलन को ले अपने ग्वाल औ बाल सभी ।।
आ पहुंचे वट के बिरछन में हर आन खुशी चमकी झमकी ।
वां आई राधा गोरी भी ले संग सहेली सब अपनी ।।
डफ बाजे राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में ।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।४।।

घनश्याम इधर से जब आए वां होरी की कर तैयारी ।
और आई उधर से रंग लिए खुश होती वां राधा प्यारी ।।
जब श्याम ने राधा गोरी के इक भर कर मारी पिचकारी ।
तब मुख पर छीटें आन पड़ी और भीज गई तन की सारी ।।
डफ बाजे राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में ।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।५।।

जब ठहरी लपधप होरी की और चलने लगीं पिचकारी भी ।
कुछ सुर्ख़ी रंग गुलालों की, कुछ केसर की ज़रकारी भी ।।
होरी खेलें हंस-हंस मनमोहन और उनसे राधा प्यारी भी ।
यह भीगीं सर से पांव तलक और भीगे किशन मुरारी भी ।।
डफ बाजें राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में ।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।६।।

जब देर तलक मनमोहन ने वां होरी खेली रंग भरी ।
सब भीगी भीड़ जो आई थी साथ उनके ग्वालों बालों की ।।
तन भीगा किशन कन्हैया का यों रंगों की बौछार हुई ।
और भीगी राधागोरी भी और उनकी संग सहेली भी ।।
डफ बाजें राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में ।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े, हुई धूम कदम की छैयन में ।।७।।

चर्चे चुहलें जब यों ठहरी खुशहाल हुए दिल हर बारी ।
कुछ आज ख़ुशी औ ख़ूबी की कुछ बातें हुई प्यारी-प्यारी ।।
यों होरी राधा प्यारी से जब हंस हंस खेले बनवारी ।
वह रूप "नज़ीर" आके झमके उन रूपों की हो बलिहारी ।।
डफ बाजें राग औ रंग हुए होली खेलन की झमकन में ।
गुलशोर गुलाल और रंग पड़े हुई धूम कदम की छैयन में ।।८।।

होली—२०

जो ज़र्द जोड़े से ऐ यार ! तू खेले होली ।
आके मुखड़े की बलाएं अभी ले ले होली ।।

रात छाती से लिपट रंग छिड़क मल के गुलाल ।
क्या हम शोख़ से खेले हैं ले ले होली ।।

गालियां देते हैं और मलते हैं कीचड़ मुंह पर ।
तुम से ऐ यार ! जो भड़ुआ हो सो खेले होली ।।

पहन कर आते हैं यह गुलरू जो छिड़कवां जोड़े ।
उनका आशिक़ जो कोई हो वही खेले होली ।।

सब तो हैं आशिक़ माशूक़ व लेकिन प्यारे ।
क्या मज़े के वह दिखाती है झमेले होली ॥
कहीं गाली कहीं झिड़की, कहीं कोहनी, कहीं लात ।
सौ अदाओं के बहा देती है रेले होली ॥

शुक्र है आज तो मुद्दत में बना रंग "नज़ीर" ।
अपने हम यार से दिल खोल के खेले होली ॥

फ़क़ीर की होली

उनकी होली तो है निराली जो हैं मांग भरी ।
साथ फिरती हैं कई रंग भरी राग भरी ।
अपनी होली तो उसी यार की है राग भरी ।
जिसके दरवाज़े पर बैठीं हैं कई फाग भरी ।
आह के शोले हैं और सीने में है आग भरी ।
हम फ़कीरों की सदा होली है वैराग भरी ॥

छिड़कवां जोड़ा जो गुदड़ी का पड़ा भारी है ।
जिस पर उस दीदयेखूंखार[1] की गुलकारी है ।
आंसू का रंग है और पलकों की पिचकारी है ।
किसकी होली में भला कहिये ये तैयारी है ॥ आह०

ये जो रो रो के हम करते हैं आँखों को लाल ।
और हाथों से और आँखों से उड़ाते हैं गुलाल ।
सामने रंग छिड़कता है खड़ा सर पर वह लाल ।
दम के बजते हैं पड़े तबलाओं सारंगी ओ ताल ॥ आह०

तन से टपके हैं पसीने के जो कतरात[2] पड़े ।
रंग यों बरसे हैं ज्यूं ख़ल्क़ में बरसात पड़े ।
भीगे रंगों से जो दिलवर के गले हाथ पड़े ।
होली उस यार से खेले हैं जो दिन रात बड़े ॥ आह०

---

[1] भयानक दृष्टि [2] बूंदे [3] संसार

अपनी ही खाक अबीरों की बंधी झोली है ।
अपना ही रंग और अपना ही दिल रोली है ।
अपने ही साथ हर एक बोली है और ठठोली है ।
आप ही हँस हँस के पुकारे हैं खड़े होली है ।। आह०

आस को तोड़ दिया आस के फिर आस न पास ।
रंग में रंग मुहब्बत का हमें आया है रास ।
अपने बेगाने[4] का कुछ दिल में न खतरा न हिरास[5] ।
होली उस यार से खेलें हैं खड़े हो बिश्वास ।। आह०

और तो पीते हैं होली में मिल मिल के शराब ।
हम मुहब्बत के नशे में हैं हमेशा ग़रक़ाब[6] ।
चश्म[7] के प्यालें हैं और आंसू की मै दिल के कबाब ।
गम में पी-पी के लहू लोटें हैं नित मस्त खराब ।। आह०

है कढ़ाई धरी कर कासये सर[8] के टुकड़े ।
मैदा घी तेल शकर शान ओ बर के टुकड़े ।
तकते हैं शामो-सहर[9] करके कमर के टुकड़े ।
क्याही पकवान उतरते हैं जिगर के टुकड़े ।। आह०

पूछता है जो कोई राहे मुहब्बत से आ ।
तुमने सामान किया होली का अबके क्या क्या ।
रंग ज़र्द अपना दिखा देते हैं उसको ये सुना ।
देखले आन के क्या पूछे है मुझसे बाबा ।। आह०

सब से हैं रूठ रहे हमने मनाई होली ।
आपको खो दिया जब हमने मनाई होली ।
दिल जिगर जोड़ कर मैदां में लगाई होली ।
तन को होला किया तब हमने जलाई होली ।। आह०

तन को है ख़ाक किया होके मुहब्बत में असीर[10] ।
रात दिन उसका उड़ाते हैं गुलाल और अबीर ।
ऐसी होली है उन्हीं की जो हैं दिलबर के फकीर ।
साल भर अपने तो घर होली ही रहती है 'नज़ीर' ।।

---

[4] पराया [5] चिन्ता, दु:ख [6] डूबे हुए [7] आँख [8] खोपड़ी, कपाल [9] शाम सुबह
[10] बन्दी

दिवाली—१

दोस्तो ! क्या क्या दिवाली में निशातो ऐश[1] है ।
सब मुहैया हैं जो इस हंगाम के शायान[2] हैं शै[3] ।।

इस तरह हैं कूच ओ बाज़ार पुर नक्शो निगार[4] ।
हो अयां[5] हुस्ने निगारिस्तां[6] की जिन से खूब रे ।।

गर्मजोशी अपनी बाजाम चिरागां[7] लुत्फ से ।
क्याही रोशन कर रही हैं हर तरफ रोग़न की मै ।।

माइले सैरे चिरागां नख़्ल[8] हर जा दम ब दम ।
हासिले नज़्ज़ारा हुस्ने शमा रो यां पे ब पे ।।

आशिकां कहते हैं माशूकों से बा इज्जो नियाज़ ।
है अगर मंजूर कुछ लेना तो हाज़िर हैं रुपे ।।

गर मुकर्रर अर्ज़ करते हैं तो कहते हैं वह शोख ।
हमसे लेते हो मियां तकरारो हुज्जत ताबके ।।

कहते हैं अहलेक़िमार[9] आपस में गर्म इख़्तिलात ।
हम तो डब में सौ रुपे रखते हैं तुम रखते हो कै ।।

जीत का पड़ता है जिसका दांव वह कहता है यूं ।
सूए दस्ते रास्त है मेरे कोई फ़रख़ुन्दा पे ।।

है दसहरे में भी यूं गो फ़रहतो ज़ीनत 'नज़ीर' ।
पर दिवाली भी अजब पाकीज़ातर त्यौहार है ।।

---

१. खुशी और आराम २. मुनासिब ३. चीज़ ४. चित्रित ५. प्रकट ६. चित्रशाला ७. जलते हुए चिरागों की कतारें ८. वृक्ष ९. जुआरी

सामान दिवाली का–२

हर इक मकां में जला फिर दिया दिवाली का ।
हर इक तरफ़ को उजाला हुआ दिवाली का ।
सभी के दिल में(१) समां भा गया दिवाली का ।
किसी के दिल को मजा ख़ुश लगा दिवाली का ।
अजब बहार का है दिन बना दिवाली का ॥१॥

जहां में यारो अजब तरह का है यह त्यौहार ।
किसी ने नक़द लिया और कोई करे है उधार ।
खिलौने खीलों बताशों का गरम है बाजार ।
हर एक दुकां में चिरागों की हो रही है बहार ।
सभों को फ़िक्र है अब जा बजा[१] दिवाली का ॥२॥

खिलौने मिट्टी के घर में कोई ले आता है ।
चिराग़दान कोई हड़ियां मगाता है ।
सिवई गूंजा व मटरी कोई पकाता है ।
दीवाली पूजे है हंस-हंस दिये जलाता है ।
हर एक घर में समां छा गया दिवाली का ॥३॥

जहां में वह जो कहाते हैं सेठ साहूकार ।
दोशाला, शाल, ज़री[२], ताश[३] बादले[४] की बहार ।
खिलौने खीलों, बताशों के लग रहे अम्बार ।
चिराग़ जलते हैं, घर हो रहा है सब गुलज़ार ।
खिला है सामने इक बाग़ सा दिवालीं का ॥४॥

---

१. जगह-जगह २. सुनहरे तारों का बना हुआ ३. एक किस्म का जरी का कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना ज़री का होता है ४. ज़री का कपड़ा ज़ो रेशम और चांदी के तारों से बुना जाता है

पाठान्तर—(१) जा० जी को

मिठाइयों की दुकानें लगा के हलवाई ।
पुकारते हैं कि ‘लाला दिवाली है आई’ ।
बताशे ले कोई बर्फ़ी किसी ने तुलवाई ।
खिलौने वालों की उनसे ज़्यादा वन आई ।
गोया इन्हों के वां राज आ गया दिवाली का ॥५॥

कोई कहे है ‘इस हाथी का वोलो क्या लोगे’ ।
‘यह दो जो घोड़े हैं इनका भी क्या भला लोगे’ ।
कोई कहे हैं कि इस बैल का टका[5] लोगे ।
वह कहता है कि ‘मियां जाओ बैठो क्या लोगे” ।
टके को ले लो कोई चौघड़ा[6] दिवाली का ॥६॥

कोई खड़ा फ़कत इक चौघड़ा चुकाने को ।
कोई जो गुजरी[7] का पैसा लगा बताने को ।
वह कहता है कि मैं बेचूंगा पांच आने को ।
यह पैसा रक्खो तुम अपने अफ़ीम खाने को ।
कि जिसकी लहर में देखो मज़ा दिवाली का ।'७॥

हठा[8] है मोर पे लड़का किसी का या चेला ।
कोई गिलहरी के नौ दाम[9] दे है या धेला[10] ।
वह धेला फेंक के इसका कुम्हार अलवेला ।
खिलौना छीन के कहता है ‘चल मुझे दे ला ।`
तू ही तो आया है गाहक बड़ा दिवाली का ॥८॥

कबूतरों का किसी ने लिया ने बेल चुका ।
कोई छदाम[11] को रखता है बहू बेल चुका ।
वह कहता है कि “मियां लो जी” इसका मेल चुका ।
यह धुन है दिल में तो लड़का तुम्हारा खेल चुका ।
चबैना लड़के को दो तुम दिला दिवाली का ॥९॥+

---

५. दो पैसे, दो पैसों के वरावर तांबे का सिक्का ६. मिट्टी का बना खिलौना जिसमें एक दूसरे से जुड़ी चार कुल्हियां होती हैं ७. मिट्टी की गुड़िया ८. हठ करना ९. पैसे का चौबीसवां या पच्चीसवां भाग, एक दमड़ी का तीसरा भाग १०. अधेला, आधा पैसा, एक छोटा तांबे का सिक्का जो सन् १९५९ ई० तक चलता था, जो पैसे का आधा होता है ११. पैसे का चौथाई भाग

+ यह पद गुलज़ारे नज़ीर (सं० सलीम जाफर) में ही है ।

इधर यह धूम, उधर जोश पर जुये खाने।
क़िमार बाज़[१२] लगें जा बजा[१३] से वां आने।
अशर्फ़ी[१४], कौड़ी[१५] व पैसे रुपे लगे आने।
तमाम जुआरी हुए मालो ज़र के दीवाने।
सभों के सर पे चढ़ा भूत सा दिवाली का ॥१०॥

सिर्फ़ हराम की कौड़ी का जिन का है व्यौपार।
उन्होंने खाया है उस दिन के वास्ते ही उधार।
कहे हैं हंस के क़र्जख्वाह[१६] से हर इक इक बार।
"दिवाली आई है सब दे दिलायेंगें(१) ऐ यार"।
"ख़ुदा के फ़ज़्ल से है आसरा दिवाली का" ॥११॥

हुआ मिलाप सभों में गई दिलों की रूठ।
हर एक हाथ लगे दावं आने सच और झूठ।
चढ़ा है मीर[१७] विसातों[१८] के मुंह पे रंग अनूठ।
सुल्लियां[१९] फेंकते हैं और कहे है नक्की मूठ।
कि जिसके शोर से घर भर गया दिवाली का ॥१२॥

मकान लीप के ठिलिया[२०] जो कोरी रखवाई।
जला चिराग़ को, कौड़ी वह जल्द झनकाई।
असल ज्वारी थे उनमें तो जान सी आई।
खुशी से कूद उछल कर पुकारे 'ओ भाई।
"शगुन पहले करो तुम ज़रा दिवाली का" ॥१३॥

---

१२. (अ० फा० वि०) जुआ खेलने वाले। जुआरी १३. (फा० वि०) जगह-जगह १४. सोने का एक पुराना सिक्का जो सोलह रुपये से लेकर पच्चीस रुपये तक का होता था। मोहर १५. घोंघे, शंख आदि के वर्ग के कीड़े का अस्थिकोश जो विनिमय के साधन के रूप में भी काम लाया जाता है। पैसे के आधे का अधेला, चौथाई को टुकड़ा या छदाम और अष्टमांश को दमड़ी कहा जाता था। एक पैसे में प्रायः ८० कौड़ियां २५ दाम माने जाते थे तीन छदाम की एक दमड़ी, छै दाम का एक टुकड़ा और साढ़े बारह दाम का एक अधेला माना जाता था १६. कर्ज वसूल करने वाले १७. ताश या गंजीफे के बादशाह का पत्तां १८. कपड़ा जिस पर चौसर या शतरंज खेला जाए १९. गोट २०. छोटा घड़ा, गगरी

पाठांतर—(१) श० आ० चलाएंगे।

शगुन की बाज़ी लगी पहली बार(१) गंडे[२१] की।
फिर उससे बढ़के लगी तीन चार गंडे की।
फिरी(२) जो ऐसी तरह बार बार गन्डे की।
तो आगे लगने लगी फिर हज़ार गंडे की।
कमाल निर्ख़[२२] लगा फिर तो आ दिवाली का ॥१४॥

किसी ने घर की हवेली गिरू रखा, हारी।
जो कुछ थी जिंस[२३] मयस्सर बना बना हारी।
किसी ने चीज़ किसी की चुरा छुपा हारी।
किसी ने गठरी पड़ोसिन की अपनी ला हारी।
यह हार जीत का चर्चा पड़ा दिवाली का ॥१५॥

किसी को दांव पे ला नक्कीमूठ ने मारा।
किसी के घर पे धरा, सोख्ते[२४] ने अंगारा।
किसी को नर्द[२५] ने चोपड़ के कर दिया ज़ारा[२६]।
लंगोटी बांध(३) के बैठा इज़ार[२७] तक हारा।
यह शोर आ के मचा जा बजा दिवाली का ॥१६॥

किसी की जोरू[२८] कहे है पुकार "दे भड़ुए"।
बहू की नौगरी[२९] बेटे के हाथ के खड़ुए।
जो घर में आवे तो सब मिल कहे हैं सौ घड़ुए[३०]।
निकल तू यां से तेरा काम यां नहीं भड़ुए।
खुदा ने तुझको तो शुह्दा[३१] किया दिवाली का ॥१७॥

वह उसके झोंटे पकड़ कर कहे है मारूंगा।
तेरा जो गहना है सब तार-तार उतारूंगा।
हवेली अपनी तो एक दाव पर मैं हारूंगा।
यह सब तो हारा हूं खन्दी[३३] तुझे भी हारूंगा।
चढ़ा है मुझको भी अब तो नशा दिवाली का ॥१८॥

---

२१. पैसा कौड़ी आदि गिनने में चार की संख्या का एक समूह २२. भाव, दर २३. चीज, वस्तु २४. वह जला हुआ कपड़ा जिस पर पत्थर और चकमक से आग निकालते हैं। एक प्रकार का जुआ—कु० न० आसी, पृ० ४४२ २५. चौसर की गोट २६. तबाहहाल २७. पाजामा २८. पत्नी २९. हाथ में पहनने का एक गहना जिसमें नौ कंगूरेदार दाने पाट में गुंथे रहते हैं ३०. गुंडा, बदमाश ३१. दीवाना ३२. बिखरे हुए रूखे, लम्बे, मैले बाल ३३. नीच औरत

पाठान्तर—(१) जा० बढ़ी (२) क़ा० बाँधे (३) क़ा० बांधे

तुझे ख़बर नहीं खन्दी यह लत वह प्यारी है।
किसी ज़माने में आगे हुआ जो जुआरी है।
तो उसने जोरू की नथ[३४] और इज़ार[३५] उतारी है।
इज़ार क्या है, कि जोरू तलक भी हारी है।
सुना यह तूने नहीं माजरा दिवाली का ॥१९॥

जहां में यह जो दिवाली की सैर होती है।
जो ज़र से होती है और ज़र बग़ैर होती है।
जो हारे उनपे ख़राबी की फ़ैर[३६] होती है।
और उनमें आन के जिन जिन की खैर होती है।
तो आड़े आता है उनके दिया दिवाली का ॥२०॥

यह बातें सच हैं, न झूठ इनको जानियो यारो।
नसीहतें हैं, इन्हें दिल से मानियो(१) यारो।
जहां को जाओ यह किस्सा बखानियो यारो।
जो जुआरी हो न बुरा उसका मानियो यारो।
'नज़ीर' आप भी है जुआरिया दिवाली का ॥२१॥

*दिवाली–३

हमें अदाएं दिवाली की ज़ोर भाती हैं।
कि लाखों झमकें हरएक घर में जगमगाती हैं।
चिराग जलते हैं और लोएं झिलमिलाती हैं।
मकां मकां में बहारें ही झमझमाती हैं।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिल खिलाती हैं॥१॥

---

३४. वृत्ताकार वाली की तरह का सोने आदि का तार खींचकर बनाया हुआ ज़ेवर, इसमें गूंज के साथ चंदक या मोतियों की जोड़ी पहनाई जाती है, नथ सौभाग्य का चिह्न समझी जाती है, सौभाग्य सूचक नथ भी उतार ली
३५. पाजामा (लसत गूजरी ऊजरी विलसत लाल इज़ार, मतिराम ग्र० पृ० २९२) ३६. (इं० फायर) तमंचे, बन्दूक या तोप का दगना

पाठान्तर—(१) क़ा० दिल में ठानियो

* श्री डा० गुरुमुखराम टंडन के सौजन्य से प्राप्त, यह पद्य किसी कुल्लियात में नहीं छपी

गुलाबी बर्फ़ियों के मुंह चमकते फिरते हैं ।
जलेबियों के भी पहिए ढुलकते फिरते हैं ।।
हर एक दांत से पेड़े अटकते फिरते हैं ।
इमरती उछले है लड्डू ढुलकते फिरते हैं ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिल खिलाती हैं ।।२।।

मिठाइयों के भरे थाल सब इकट्ठे हैं ।
तो उन पै क्या ही खरीदारों के झपट्टे हैं ।।
नबात[1], सेव, शकरकंद, मिश्री गट्टे हैं ।
तिलंगी नंगी है गट्टों के चट्टे बट्टे हैं ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।३।।

जो बालूशाही भी तकिया लगाए बैठे हैं ।
तो लौंज खजले यही मसनद लगाए बैठे हैं ।।
इलायची दाने भी मोती लगाए बैठे हैं ।
तिल अपनी रेवड़ी में ही समाए बैठे हैं ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।४।।

उठाते थाल में गर्दन हैं बैठे मोहन भोग ।
यह लेने वाले को देते हैं दम में सौ सौ भोग ।।
मगध का मूंग के लड्डू से बन रहा संजोग ।
दुकां दुकां पे तमाशे यह देखते हैं लोग ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।५।।

दुकां सब में जो कमतर है और लंडूरी है ।
तो आज उसमें भी पकती कचौरी पूरी है ।।
कोई जली कोई साबित कोई अधूरी है ।
कचौरी कच्ची है पूरी की बात पूरी है ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।६।।

---

[1] मिश्री

कोई खिलौनों की सूरत को देख हंसता है ।
कोई बताशों और चिड़ों के ढ़ेर कसता है ॥
बेचने वाले पुकारे हैं लो जी सस्ता है ।
तमाम खीलों बताशों का मीना बरसता है ॥
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ॥७॥

और चिरागों की दुहरी बंध रही कतारें हैं ।
और हरसू कुमकुमे कंदीले रंग मारे हैं ॥
हुजूम, भीड़, झमक, शोरोगुल पुकारे हैं ।
अजब मज़ा है, अजब सैर है अजब बहारें हैं ।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ॥८॥

अटारी, छज्जे दरो बाम पर बहाली है ।
दिवाल एक नहीं लीपने से खाली है ॥
जिधर को देखो उधर रोशनी उजाली है ।
गरज़ में क्या कहूं ईंट ईंट पर दिवाली है ॥
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ॥९॥

जो गुलाबरू हैं सो हैं उनके हाथ में छड़ियां ।
निगाहें आशिकों की हार हो गले पड़ियां ॥
झमक झमक की दिखावट से अंखड़ियां लड़ियां ।
इधर चिराग़ उधर छूटती हैं फुलझड़ियां ॥
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ॥१०॥

कलम कुम्हार की क्या क्या हुनर जताती है ।
कि हर तरह के खिलौने नए दिखाती है ॥
चूहा अटेरे है चर्खा चूही चलाती है ।
गिलहरी तो नव रुई पोइयां बनाती हैं ॥
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंससे हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ॥११॥

कबूतरों को देखो तो गुट गुटाते हैं ।
टटीरी बोले है और हंस मोती खाते हैं ।।
हिरन उछले हैं, चीते लपक दिखाते हैं ।
भड़कते हाथी हैं और घोड़े हिनहिनाते हैं ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।१२।।

किसी के कांधे ऊपर गुजरियों का जोड़ा है ।
किसी के हाथ में हाथी बग़ल में घोड़ा है ।।
किसी ने शेर की गर्दन को धर मरोड़ा है ।
अजब दिवाली ने यारो यह लटका जोड़ा है ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।१३।।

धरे हैं तोते अजब रंग के दुकान दुकान ।
गोया दरख्त से ही उड़कर हैं बैठे आन ।।
मुसलमां कहते हैं "हक़ अल्लाह" बोलो मिट्ठू जान ।
हनूद कहते हैं पढ़ें जी श्री भगवान ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।१४।।

कहीं तो कौड़ियों पैसों की खनखनाहट है ।
कहीं हनुमान पवन वीर की मनावट है ।।
कहीं कढ़ाइयों में घी की छनछनाहट है ।
अजब मज़े की चखावट है और खिलावट है ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलाती हैं ।।१५।।

"नज़ीर" इतनी जो अब सैर है अहा हा हा ।
फ़क़त दिवाली की सब सैर है अहा हा ! हा ।।
निशात ऐशो तरब सैर है अहा हा हा ।
जिधर को देखो अजब सैर है अहा हा हा ।।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं ।
बताशे हंसते हैं और खीलें खिलखिलाती हैं ।।१६।।

राखी

चली आती है अब तो हर कहीं बाज़ार की राखी ।
सुनहरी, सब्ज, रेशम, ज़र्द और गुलनार[1] की राखी ।
बनी है गो[2] कि नादिर[3] ख़ूब हर सरदार की राखी ।
सलूनों में अज़ब रंगीं है उस दिलदार[4] की राखी ।
न पहुंचे एक गुल[5] को यार जिस गुलज़ार[6] की राखी ॥१॥

अयां[7] है अब तो राखी भी, चमन भी, गुल भी, शबनम[8] भी ।
झमक जाता है मोती और झलक जाता है रेशम भी ।
तमाशा है अहा ! हा ! हा ग़नीमत है यह आलम भी ।
उठाना हाथ, प्यारे वाह वा टुक देख लें हम भी ।
तुम्हारी मोतियों की और ज़री[9] के तार की राखी ॥२॥

मची है हर तरफ क्या क्या सलूनों की बहार अब तो ।
हर एक गुलरू[10] फिरे है राखी बांधे हाथ में खुश हो ।
हवस[11] जो दिल में ग़ुजरे है कहूं क्या आह में तुमको ।
यही आता है जी में बनके बाम्हन आज तो यारो ।
मैं अपने हाथ से प्यारे के बांधू प्यार की राखी ॥३॥

हुई है ज़ेबो ज़ीनत[12] और ख़ूबां[13] को तो राखी से ।
व लेकिन तुमसे अब जान और कुछ राखी के गुल फूले ।
दिवानी बुलबुलें हों देख गुल चुनने लगीं तिनके ।
तुम्हारे हाथ ने मेंहदी ने अंगश्तों[14] ने नाखुन ने ।
गुलिस्तां[15] की, चमन[16] की, बाग की गुलज़ार[17] की राखी ॥४॥

---

१. अनार का फूल २. यद्यपि, अगरचे ३. अद्भुत, श्रेष्ठ ४. प्रेमपात्र ५. फूल ६. बाग़ ७. प्रकट, जाहिर ८. ओस ९. सोने चांदी के तार १०. फूल जैसे सुन्दर और सुकुमार मुख वाली नायिका ११. उत्कंठा, लालसा १२. शृंगार और सजावट १३. सुन्दर स्त्रियां, प्रियतमाएं १४. उंगलियां १५. बाग़ १६. बाग़ १७. (फ० वि०) हरी भरी शोभायुक्त, रौनकदार

अदा से हाथ उठने(१) में गुले राखी जो हिलते हैं।
कलेजे देखने वालों के क्या क्या आह छिलते हैं।
कहां नाजुक यह पहुंचे और कहां यह रंग मिलते हैं।
चमन में शाख़ पर कब इस तरह के फूल खिलते हैं।
जो कुछ ख़ूबी में है उस शोख़ गुल रुख़सार[18] की राखी ॥५॥

फिरें हैं राखियां बांधे जो हर दम हुस्न के मारे।
तो उनकी राखियों को देख ऐ! जां! चाव के मारे(२)।
पहन जुन्नार[19] और क़श्क़:[20] लगा माथे ऊपर बारे।
"नज़ीर" आया है बाम्हन बनके राखी बांधने प्यारे।
बंधा लो उससे तुम हंसकर अब इस त्यौहार की राखी ॥६॥

---

१८. कपोल, गाल, चंचल फूल जैसे गालों वाली १९. यज्ञोपवीत, जनेऊ २०. तिलक

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० उठते हैं (२) श० आ० तारे

मेले

हज़रत सलीम चिश्ती का उर्स

है यह मजमां[1] निको[2] सिरिश्ती[3] का ।
ज़िक्र क्या यां गुनाह की ज़िश्ती[4] का ।
बहर है आरिफ़ों[5] की किश्ती[6] का ।
फ़ख्र[7] है हर्फ़े[8] सर नविश्ती का ।
रश्क(१) है गुलशने बहिश्ती[9] का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

बाग़े जन्नत है आज यह दरगाह ।
फूल फ़ूले हैं फ़ैज़[10] के दिलख़्वाह[11] ।
देखो रिज़वां[12] बहार यां की वाह ।
दिल में कहता है दम बदम बल्लाह ।
रश्क[13] है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

यह तजल्ली[14] न सीमो ज़र[15] से है ।
अब्रेरहमत[16] का नूर बरसे है ।
हूरो[17] गिल्मां[18] की रूह तरसे है ।
और इशारा यही नज़र से है ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

---

१. झुंड २. उत्तम, श्रेष्ठ ३. स्वभाव वाले, अच्छे स्वभाव वाले ४. बुराई ५. ब्रह्मज्ञानी, सूफी ६. नौका, नाव ७. गर्व ८. भाग्य का लेख ९. जन्नत के बाग़ के लिए भी स्पर्धा का विषय है १०. लाभ ११. मर्ज़ी के मुताबिक १२. जन्नत के दरोगा १३. स्पर्द्धा, किसी को बढ़ते देखकर आगे बढ़ने की इच्छा १४. प्रकाश, तेज १५. सोना-चांदी, धन-दौलत १६. रहमत के बादल १७. स्वर्गांगना, स्वर्ग में रहने वाली सुन्दर स्त्रियां १८. स्वर्ग के बालक

पाठान्तर—आ० रंग

सहन दरगाह है बाग़ और बुस्तां[19] ।
और वहीं ज़व्यार[20] सब गुलो रेहां[21] ।
जी में सब फूल फूल हो शादां[22] ।
यही कहते हैं हर घड़ी हर आं ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

बसकि खिल्क़त[23] भरी है लालों लाल ।
घर मकां है गुलों से मालामाल ।
हुस्न राग और मशाइख़ों[24] के हाल ।
भीड़, गुल, शोर, और क़ालमक़ाल[25] ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

खिल रहा है चमन जो फ़ैज[26] भरा ।
झरना गोया है हौज़े कौसर[27] का ।
क़ुदसियां[28] देख वह बहिश्त सरा[29] ।
सब पुकारे हैं यूं "अहा ! हा ! हा ! ।"
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

कितने दरगह में फ़ैन उठाते हैं ।
कितने झरने में जा नहाते हैं ।
कितने नज़रो नियाज़ लाते हैं ।
कितने ख़ुश हो यही सुनाते हैं ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ॥

---

१६. बाग़ २०. ज़यारत करने वाले २१. खुशबूदार घास के फूल २२. खुश २३. सृष्टि, जनता २४. पीर और सूफी लोग २५. लम्बी-चौड़ी बातचीत २६. लाभ, उपकार २७. स्वर्ग का एक हौज़ २८. फरिश्ते २६. मकान

उर्स दरगाह के जो देखे वाह ।
और ही गुल खिले हैं ख़ातिरख़्वाह[३०] ।
बुलबुलों की तरह चहक कर आह ।
सब यही कह रहे हैं करके निगाह ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स है हज़रत सलीम चिश्ती का ।।

है बहम[३१] दूर दूर का आलम ।
सब्ज़ो सुर्खो सफ़ेदो जर्द बहम ।
सब ख़ुशी होके जूं गुल शबनम ।
देख सैरें यह कहते हैं हर दम ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ।।

भीड़, अम्बोह ख़ल्क की तक़सीर ।
बादशाहो गदाओ मीरो वज़ीर ।
तिफ़्लो[३२] पीरो जवां गरीबो, फ़क़ीर ।
पर सभी की ज़ुबां पे यह तक़रीर ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ।।

कितने वां सीमतन[३३] भी फिरते हैं ।
गुंचलब[३४] गुलबदन भी फिरते हैं ।
शोख़[३५] गुलपैरहन[३६] भी फिरते हैं ।
दिलरुबा[३७] दिल शिकन[३८] भी फिरते हैं ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ।।

---

३०. मनचाहा ३१. आपस में ३२. बच्चा ३३. चांदी जैसे शरीर वाले ३४. कली जैसे होठों वाले ३५. चंचल ३६. गुलाब के फूल जैसे रंगीन, कोमल और सुगन्धित कपड़े पहनने वाले ३७. माशूक, दिल को उचक ले जाने वाले ३८. दिल को तोड़ने वाले

कितने नज़रों से ज़ख्मी होते हैं ।
कितने दिल अपना मुफ़्त खोते हैं ।
कितने उल्फ़त के तुख़्म[३९] बोते हैं ।
कितने मोती खड़े पिरोते हैं ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ।।

जा नशीं[४०] हैं जो साहिबे मसनद ।
आ़रिफ़ुल हक़[४१] मियां अली अहमद[४२] ।
उनकी ख़ूबी नज़ीर है बेहद ।
सब पुकारें हैं ख़ल्क़ बेहदो अद[४३] ।
रश्क है गुलशने बहिश्ती का ।
उर्स हज़रत सलीम चिश्ती का ।।

बल्देव जी का मेला+

क्या वह दिलबर[१] कोई नवेला है ?
नाथ है, और कहीं वह चेला है ।
मोतिया हैं, चंबेली, बेला है ।
भीड़ अम्बोह[२] है, अकेला है ।
शहरी, क़स्बाती[३] और गंवेला[४] है ।
ज़र[५] अशर्फी है, पैसा, धेला है ।

---

३९. बीज ४०. उत्तराधिकारी ४१. ईश्वर को पहचानने वाले, ब्रह्मज्ञानी ४२. नज़ीर अकबरावादी के ज़माने में हज़रत सलीम चिश्ती की दरगाह (फतेहपुर सीकरी) के जानशीं मियां अली अहमद साहब थे ४३. अद-गिनना, बेहदो अद अत्यधिक, अपार, बेशुमार

१. (फा० पु०) दिल उड़ा ले जाने वाला, प्रेमपात्र, माशूक २. समूह, भीड़, जमाव ३. कस्बे का ४. गांव का रहने वाला ५. धन, दौलत

+ मथुरा के समीप बल्देव (दाऊजी) नामक स्थान है। यहाँ श्री बल्देव जी (कृष्ण के भाई बलराम) और रेवती जी (उनकी पत्नी) का पुराना मन्दिर है। वहाँ प्रतिवर्ष अगहन मास की पूर्णमासी से "बल्देव जी का मेला" लगता है। यह लगभग दस दिन रहता है, बहुत बड़ी संख्या में लोग जमा होते हैं। बल्देव के कुंड या क्षीरसागर में स्नान करते और मंदिर में दर्शन करते हैं। मियां नज़ीर अकबरावादी ने उसी बल्देव जी के मेले का वर्णन किया है।

एक वया–क्या वह खेल खेला है ।
भीड़ है ख़ल्क़तों[६] का रेला है ।
रंग है रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है । ॥१॥

है कहीं यार और कहीं अग़यार[७] ।
कहीं आशिक़ है, और कहीं दिलदार ।
कहीं बस्ती है और कहीं गुलज़ार[८] ।
कहीं जंगल है, और कहीं बाज़ार ।
वही भगती है, और वही औतार ।
उसकी लीलाएं किससे हों इज़हार[९] ।
आप आता है देखने को बहार ।
आप कहता है यूं पुकार पुकार ।
रंग है रूप है झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥२॥

है कहीं राम, और कहीं लक्ष्मन ।
कहीं कछमछ[१०] है और कहीं रावन ।
कहीं बाराह, कहीं मदनमोहन ।
कहीं बल्देव और कहीं श्रीकिशन[११] ।
सब सरूपों में हैं उसी के जतन ।
कहीं नरसिंह[१२] है वह नारायन ।
कहीं निकला है सैर को बनबन ।
कहीं कहता फिरे हैं यूं बन-बन ।
रंग है, रूप है झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥३॥

---

[६] दुनिया, भीड़ [७] (अ० पु०) "ग़ैर" का बहुवचन, ग़ैर लोग [८] (फा० पु०) बाग [९] प्रकट, ज़ाहिर
[१०] कच्छपावतार, मत्स्यावतार [११] श्रीकृष्ण [१२] नृसिंहावतार

आज मेले का यां जो है सामान ।
आये हैं दूर-दूर से इंसान ।
कोई दर्शन, कोई दुआएं मान ।
सबकी होती हैं मुश्किलें आसान ।
हर तरफ खिल रहे गुलो रेहान ।
हार, बद्धी[13], मिठाई और पकवान ।
भीड़—अम्बोह[14], गुल[15] दुकान-दुकान ।
और यही शोर, हर घड़ी, हर आन ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।४।।

हर तरफ़ हुस्न की पुकारें हैं ।
दिल रुवा सौ बरन संवारे हैं ।
इक तरफ़ नौबतें झनकारें हैं ।
झांझ, मरदंग रासधारें हैं ।
कहीं आशिक़ नज़ारे मारे हैं ।
सौ निगाहों की जीत हारें हैं ।
सैर है, दीद है, बहारें हैं ।
करके 'जै' जै यही पुकारे हैं ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।५।।

इतने लोगों के ठठ लगे हैं आ ।
जो कि तिल धरने की नहीं है जा[16] ।
लेके मंदिर से दो-दो कोस लगा ।
बाग़ों बन भर रहे हैं सब हर जा ।
है हज़ारों बिसाती और सौदा ।
लाखों बिकते हैं गहने और माला ।
भीड़, अम्बोह और धरम धक्का ।
जिस तरफ़ देखिए अहा ! हा ! हा !
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।६।।

---

[13] कंधे पर से जनेऊ की तरह पड़ी हुई फूल माला [14] भीड़भाड़ [15] (फा० पु०) कोलाहल, शोर
[16] (फा० स्त्री) जगह

बसकि उमड़े हैं ख़ल्क़तों के दल
जा बजा भर(१) रहे हैं जड़ जंगल ।
चौक़ बाजार, फौज, और दंगल ।
जंगलों में है मच रहे मंगल ।
कोई अम्बोह में रहा है कुचल ।
कोई धक्कों में कर रहा दल मल ।
कितने करते हैं जस्त कूद उछल ।
कितने कहते हैं मोरछल झल-झल ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।७।।

हैं हज़ारों ही जिन्स के हट्टे[१७] ।
मोती, मूंगा और आरसी बट्टे ।
पेड़ें, लड्डू, जलेबी और गट्टे ।
कोले, नारंगी, संगतरे, खट्टे ।
कोई तो कर रहा है छल बट्टे ।
कोई चढ़ाता है खीर के चट्टे ।
पुर[१८] हैं मन्दिर के कोठे और अट्टे ।
बूढ़े, लड़के, जवान और कट्टे ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।८।।

लोग चारों तरफ के आते हैं ।
आके ऐशो–तरब[१९] मनाते हैं ।
दिल से सब दर्शनों को जाते हैं ।
अपने दिल की मुराद पाते हैं ।
झांझ, मरदंग, दफ़ बजाते हैं ।
रास मंडल भजन सुनाते हैं ।
दिल में फूले नहीं समाते हैं ।
सब यह हंस-हंस के कहते जाते हैं ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।९।।

---

१७. हाट बाजार १८. (फा० वि०) भरे हुए १९. (अ० पु०) आनन्द
पाठान्तर— (१) क़ा० फिर

हर तरफ़ गुल बदन रंगीले हैं ।
नुक पलक, गुंचा लब, सजीले हैं ।
बात के तिरछे और कटीले हैं ।
दिल के लेने को सब हठीले हैं ।
ख़ुश्क, तर, नर्म, सूखे, गीले हैं ।
टेढ़े, बलदार और नुकीले हैं ।
जोड़े भी सुर्ख़, सब्ज़, पीले हैं ।
प्यार, उलफ़त, बहाने, हीले हैं ।
रंग, है रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥१०॥

ख़ल्क[20] आती है सब जुड़ी(१) जबड़ी ।
चीज़ रखते हैं बांध कर जकड़ी ।
कोई दौड़े है हाथ ले लकड़ी ।
'दौड़ियो चोर ले चला गठड़ी' ।
जेब कतरी, कहीं गई पकड़ी ।
कहीं लूटी दुकान और हटड़ी[21] ।
चोर ने ताक ली कहीं पगड़ी(२) ।
सौ तमाशे, हंसी, खुशी, फ़कड़ी[22] ।
रंग हैं, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥११॥

नाज़नीं हैं वह सांवरी, गोरी ।
जिनकी नाज़ुक हर एक परी पोरी ।
करके चितवन निगाह की डोरी ।
दिल को छीने हैं सब बरा ज़ोरी ।
धूम, नाज़ो-अदा झकाझोरी ।
ब्रज में जैसी मच रही होरी ।
घूंघटों में हैं कर रही चोरी ।
चोरी कैसी कि साफ़ सिर ज़ोरी ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥१२॥

---

२०. (अ० पु०) दुनियां २१. छोटी दुकान (पँजाबी भाषा में) २२. फक्कड़पन

पाठान्तर—(१) क़ा० फिर आ० जड़ी जबड़ी (२) श० आ० चोर की ताक से कहीं पकड़ी

कुंड पर ही नहान होते हैं।
जिसमें गंगा वरन के सोते हैं।
पानी ले हाथ मुंह को धोते हैं।
कितने कंठी खड़े पिरोते हैं।
कितने जाकर बनों में सोते हैं।
बन्दरों में चनों को बोते हैं।
इन बहारों में होश खोते हैं।
सौ मज़े, सौ तमाशे होते हैं।
रंग है, रूप है, झमेला हैं।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥१३॥

कोई आकर वहाने और मिससे।
मिल रहा है, मिला है दिल जिससे।
होते हैं आ मिलाप जिस तिस से।
लड़ रहा है कोई कहीं रिस[२४] से।
कोई खोया गया है मज्लिस से।
कौन चिल्लाए पूछिए किस से।
कोहनी, बाज़ू में लग रहे घिस्से।
और धक्का पेल, और धमांधिस्से।
रंग है, रूप है, झमेला है।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥१४॥

नाच और राग के खड़ाके हैं।
घुंघरू और ताल के झनाके हैं।
नक़लें, किस्से, कहानी, साके हैं।
खंड दोहरे, कवित, कथा के हैं।
कहीं आगोश[२५] के लपाके हैं।
कहीं बोसों के सौ झपाके हैं।
थरथरी, दांत पर कड़ाके हैं।
तिस पै जाड़े के सौ झड़ाके हैं।
रंग है रूप है, झमेला है।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥१५॥

---

[२४] क्रोध, गुस्सा [२५] (फा० उभ०) गोद, बगल मिलना [२६] (फा० पु०) चुंबन

सहन मन्दिर का सबसे है आला।
उसका गुम्बद है आलमे बाला[२७]।
हो रहा झांकियों का उजियाला।
पर्दे जैसे हैं चांद पर हाला[२८]।
है कोई दर्शनों का मतवाला।
कोई जपता है ध्यान में माला।
कोई दण्डवतें कर रहा लाला।
कोई जै जै करे हैं धन वाला।
रंग है, रूप है, झमेला है।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है॥

हैं जो मन्दिर में आप वह लालन।
हर घड़ी में बदल रहे अभरन।
नई पोशाक, और नये भोजन।
नई झांकी है, और नये दर्शन।
आरती की कहीं मची ठन-ठन।
कहीं घंटों की हो रही छन-छन।
ताल, मरदंग, झांझ की झन-झन।
ख़ास परशाद मिश्री और माखन।
रंग है, रूप है, झमेला है।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है॥१७॥

कोई चंचल चले है ठुमकी चाल।
कुछ वह पतली कमर, वह लम्बे बाल।
आंखों में हुस्न के नशे, रंग लाल।
मिश्री, माखन के हाथों ऊपर थाल।
कुछ वह पोशाक, कुछ वह हुस्नो जमाल।
मालिनों का ज़्यादा उनसे कमाल।
डाल दें हार का गले में जाल।
बद्धी होकर, लें साफ़ दिल को निकाल।
रंग है, रूप है, झमेला है।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है॥१८॥

---

२७. (अ० पु०) आकाश, देवलोक तक २८. (हालः, फा० पु०) चांद के चारों ओर पड़ने वाला घेरा, मंडल, परिवेश

बस कि आते हैं राजा ओरानी ।
और लाखों हैं रानी और नानी ।
भीड़, अम्बोह की फरावानी ।
और हुजूमों[२९] की लाख तुग़यानी[३०] ।
पालकी, हाथी, घोड़े, रथ बानी ।
जोगी, बैरागी, ज्ञानी और ध्यानी ।
कुछ नहीं मोल-तोल क्या मानी ।
पानी का दूध, दूध का पानी ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।१९।।

कितने कच्चे हैं, कितने पक्के हैं ।
ओंगे(१) मुंह[३१], और उछाल छक्के हैं ।
चोर, नट-खट हैं, और उचक्के हैं ।
दूध, खोया, मलाई, चक्के हैं ।
भीड़, अम्बोह और भड़क्के हैं ।
धूम धौंसों की और धड़क्के हैं ।
पालकी, हाथी, घोड़े, ढक्के हैं ।
सौ तमाशे हैं, सौ झमक्के हैं ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।२०।।

लाखों बैठे बिसाती और मनिहार ।
अपना सब गर्म कर रहे बाज़ार ।
चूड़ी, बगडी की इक तरफ़ झंकार ।
नौगरी[३२], पोथ[३३], अंगूठी, छल्ले हार ।
टूटे पड़ते गंवारी और गंवार ।
जिस गंवारी को चलिये धक्का मार ।

---

२९. (अ० पु०) भीड़ ३०. (अ० स्त्री०) बाढ़ ३१. ऊंगते हुए से, सुस्त मुंह वाले ३२. हाथ में पहनने का एक गहना जिसमें नौ कंगूरेदारदाने पाट में गुंथे रहते हैं ३३. कांच के सूराखदार छोटे-छोटे दाने जो मोतियों की तरह होते हैं

पाठान्तर—(१) श० आ० उनके

गिर के दे गाली, यूं कहे है पुकार ।
"कैसो इठला चले हैं दाढ़ी जार[३४] ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥२१॥

मिट्टी और काठ के खिलौने ढ़ेर ।
कोई लेवे है कोई देवे फेर ।
कोई कुम्हारी के कर रहा हथफेर ।
कोई काछिन के चुन रहा है बेर ।
कोई कुंजड़िन से लड़ रहा मुंह फेर ।
कोई बनिये को मारता है सेर ।
गाली, डुक(१), मारकूट, सांझ सवेर ।
लाठी-पाठी है, शोर-गुल, अंधेर ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥२२॥

सैकड़ों रंग-रंग की छड़ियां ।
फूल गेंदों के हार की लड़ियां ।
कहीं छूटें अनार, फुलझड़ियां ।
कहीं खिलती हैं, दिल की गुलझड़ियां ।
कहीं उलफ़त से अंखड़ियां लड़ियां ।
कहीं बाहें गले में है पड़ियां ।
ऐश इश्रत की लुट रही धड़ियां ।
दाल मोठें मंगोड़ी और बड़ियां ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ॥२३॥

---

[३४]. कुपित होने पर ग्रामीण स्त्रियों द्वारा पुरुषों को दी जाने वाली गाली

पाठान्तर-- (१) श० आ० दे

लग रही भीड़ इस क़दर ठठ हो ।
राह आगे को और न पीछे को ।
जो जहां था, वहीं फंसा फिर वो ।
जिसको खींचे हैं, गिर पड़े है सो ।
बैठे कहते हैं खाके धक्कों को ।
"जै महाराज राम-राम भजो" ।
और गंवार दल पुकार कर "हो-हो" !
अब तो लठवारो है लगाने को ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
ज़ोर बल्देव जी का मेला है ।।२४।।

क्या मची है बहार "जै बल्देव" ।
ऐश के कारोबार "जै बल्देव" ।
धूम लैलो निहार[३५] "जै बल्देव" ।
हर कहीं आश्कार[३६] "जै बल्देव" ।
हर ज़ुबां पर हज़ार "जै बल्देव" ।
दम बदम यादगार "जै बल्देव" ।
कह "नज़ीर" अब पुकार "जै बल्देव" ।
सब कहो एक बार "जै बल्देव" ।
रंग है, रूप है, झमेला है ।
जोर बल्देव जी का मेला है ।।२५।।

---

[३५] रात-दिन [३६] (फा० वि०) व्यक्त, ज़ाहिर

कंस का मेला +

जो हो कहीं तमाशा वह देखना बजा है।
ख़ूबी का देख लेना, हर तौर पर बजा है।।
अम्बोह[1] ख़ुश दिली का हर आन दिलकुशा[2] है।
जो सैर हो ख़ुशी की, वह देखनी रवा[3] है।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।१।।

आते है लोग जिसदम कपड़े बदल-बदल कर।
बाज़ार में फ़राहम[4] होते हैं घर से चलकर।
गाते हैं कितने होली, क्या-क्या संभल-संभल कर।
कितने हैं डफ़ बजाते, हर दम उछल-उछल कर।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।२।।

बोली में अपनी कितने कुछ-कुछ हैं गीत गाते।
कुछ कूद-कूद लम्बे हाथों को हैं बढ़ाते।।
चकफेरियों से कितने हैं मोरछल हिलाते।
हरदम हंसी ख़ुशी से फूले नहीं समाते।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।३।।

---

[1] भीड़ [2] (फा० वि०) रमणीक, दिल को आनन्द देने वाला [3] (फा० वि०) उचित [4] (फा० वि०) एकत्र, इकट्ठा

+ कंस का मेला आगरा में गोकुल (राजामण्डी के समीपवर्त्ती और नागरी प्रचारिणी सभा के पीछे) मुहल्ले में दो स्थानों पर दो तिथियों में लगता है। एक होली की पड़वा के दिन और दूसरा होली के बाद तेरस के दिन। पडवा के दिन शाम को गोकुलपुरा की गली में गणेश मंदिर से बलराम और कृष्ण की सवारी तांगे में निकलती है जो उसी गोकुलपुरा की गली के दूसरे किनारे पर जो कंसगेट कहलाता है, तक जाती है। यहां कृष्ण द्वारा कंस का वध किया जाता है।

—— तेरस के कंस के मेला में गोकुलपुरा के हाटकेश्वर मंदिर से कृष्ण बलराम की सवारी निकलती है, जो राजामण्डी, वल्काबस्ती होती हुई अशोक नगर के समीपवर्त्ती (कुंए के पास) मंदिर पर आती है और वहीं कंस का वध होता है। इसी मेले का वर्णन मियां नज़ीर अकबरावादी ने 'कंस का मेला' नामक पद्य में किया है।

डा० श्री गुरुमुखराम टण्डन के सौजन्य से प्राप्त। यह पद्य किसी कुल्लियात में प्रकाशित नहीं हुई।

कुछ स्वांग अच्छे-अच्छे हैं हर तरफ़ से वाते।
गहने झमकते उनके, और रूप जगमगाते॥
कुछ होलियां खुशी से हैं साथ उनके गाते।
मृदंग ताल, तबले मिल-मिल के हैं बजाते।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥४॥

कुछ हैं दुकां में खुशदिल, कुछ बैठकों में हसते।
अम्बोह कोठे-कोठे और भीड़ छज्जे-छज्जे॥
बाज़ार में खुशी के होते हैं जब यह नक्शे।
हर सू[५] हुजूम होकर लोगों के ठठ हैं लगते॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥५॥

यह ठाठ हर तरफ़ को हैं आन कर झलकते।
धिच-पिच यह कुछ कि जिससे हैं हर क़दम ठिठकते॥
आशिक़ निगाहें भर-भर महबूबों को हैं तकते।
देखो जिधर, उधर को हैं हुस्न के झमकते॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥६॥

होकर सवार इसमें निकले है जब कन्हैया।
होता है फिर तो जाहिर नक़्शा अजब तरह का॥
हौदे में बैठ जाते हैं, सर पर मुकुट झलकता।
होते हैं शोर हर दम जय बोलने के क्या-क्या॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥७॥

निकले हैं आके जिमदम श्रीकिशन, मुकुट धारी।
मोहन, गुपाल, नंदन, प्रभु, नवल बिहारी॥
जाती है झांकियों में जब उनकी छबि निहारी।
जै हर क़दम पे क्या-क्या बोले हैं बारी-बारी॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥८॥

---

[५] (फा० स्त्री) ओर, तरफ़

हैं साथ में जो उनके बनकर सवार चलते।
बाजों के शोरग़ुल से घोड़े भी हैं उछलते॥
दोनों तरफ़ रुपहले क्या-क्या चंवर हैं झलते।
यों दर्शन अपना देते हैं मुरलीधर निकलते॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥९॥

माथे मुकुट विराजे, मुखड़े पै छूटीं अलकें।
रूप और सरूप ऐसा, जो देख झुकें पलकें॥
पोशाक जगमगाती, कुंदन की जैसे ढलकें।
आती हैं हर तरफ़ से क्या-क्या मुकुट की झलकें॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥१०॥

होता है ठाठ यां तो मौजूद इस निमत का।
अब वां की बात सुनिए रुकते हैं कंस जिस जा॥
तन कंस का भी चकला क़द भी बहुत बड़ा सा।
तेगो सिपर[६] संभाले टीले पै रखते हैं ला॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥११॥

होते हैं गिर्द उसके लोगों के ठठ जो आकर।
कुछ बैठते, कुछ उठते, फिरते हैं इधर उधर॥
पैकार भी हैं फिरते, सब खोमचों को भर कर।
गट्टे, गंडेली, मेवे, फल, बूट[७], बेल, गाजर॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है॥१२॥

हैं पान भी मुहैया, और हार भी गलों के।
हुक़्क़े भी जा बजा हैं, और आब के कटोरे॥
सुर्मा भी लाते हर जा, और ताड़ के पपैये[८]।
ख़ूबां के साथ हर दम हैं इश्क़बाज़ फिरते॥
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-बाह है॥१३॥

---

[६] (फा० स्त्री०) ढाल [७] चने का हरा पौधा, दाना [८] ताड़ के पत्ते को गोल मोड़ कर बनाया हुआ बच्चों का मुंह से बजाने का बाजा

फिरते हैं एक तरफ़ को महबूब भी रंगीले ।
चीरे सुनहरे बांधे, या सुर्ख़, या कि पीले ।।
कुछ नाज के सजीले, कुछ आन के हठीले ।
क्या-क्या बहार उस दम होती है टीले-टीले ।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है ।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।१४।।

कहता है कोई "प्यारे ! ईधर निगाह कीजै" ।
कहता है कोई "ऐ जां ! दुश्नाम[६] हंस के दीजै" ।।
कहता है कोई "हुक़्क़ा हाथों से मेरे पीजै" ।
कहता है कोई "जो कुछ दरकार हो सो कीजै" ।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है ।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।१५।।

क्या-क्या हंसी-ख़ुशी की होती हैं बातें हर जा ।
ठहरा है हर तरफ को ऐशो तरब का चर्चा ।।
कुछ हैं खिलौने बिकते, कुछ हो रहा तमाशा ।
क्या-क्या हुजूम, क्या-क्या होते हैं ठठ अहा हा ।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है ।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।१६।।

फिर उसमें जब कन्हैया हैं, इक तरफ़ को आते ।
और एक छड़ी उठाकर हैं कंस को गिराते ।।
लोग उस घड़ी का नक़्शा जिस दम हैं देख पाते ।
क्या-क्या "नज़ीर" उस दम है शोरो-गुल मचाते ।।
होली के बाद ठहरा यह मेला कंस का है ।
एक पहर भर की यह ही मेले की वाह-वाह है ।।१७।।

---

[६] गाली

लल्लू जगधर का मेला[+]

है धूम आज यारो क्या ! आगरे के अन्दर ।
ख़ल्क़त[1] के ठठ बंधे हैं हर एक तरफ़ से आकर ॥
ग़ुल, शोर, सैर, चर्चा अम्बोह के सरासर ।
क्या सैर मच रही है, सुनता है मेरे दिलवर ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥१॥

---

१. जनता

+ अलाउद्दीन खिलजी के ज़माने की एक घटना है। उस ज़माने में बादशाहों के दरबारों में अधिकतर खत्री लोग ही मंत्री तथा अन्य उत्तरदायी पदों पर होते थे। अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में एक वज़ीर उधारमल खत्री थे। एक बार लड़ाई में जब ज्यादा खत्री काम आए तो उनकी विधवाओं में बहुत रोना-धोना हुआ। बहुत सी विधवाएं तो सती हो गई। शेष की बुरी हालत देखकर बादशाह ने उधारमल से कहा ! क्यों न इनकी दूसरी शादी कर दी जावे। उधारमल ने कहा हुज़ूर ! हमारे यहां दूसरे विवाह का रिवाज़ नहीं। सती होना पसंद किया जाता है दूसरा विवाह नहीं। हुज़ूर का हुक्म है तो मैं कोशिश ज़रूर करूंगा। उन्होंने हर जगह के खत्रियों के चौधरियों को यह संदेश भेजा। आगरा के खत्रियों के चौधरी जगधरमल ताजगंज में रहते थे। उन्होंने इस काम को अंजाम देने का बीड़ा उठाया। सब चौधरियों में कोशिश की। आगरे के खत्रियों की पंचायत की। इस पंचायत का उलटा ही असर पड़ा, सब खत्री चौधरी साहब के खिलाफ हो गए। खत्रियों के जत्थे के जत्थे इनके यहाँ आकर इनको बेहूदा गालियां सुनाते थे। साल की कुछ निश्चित् तिथियों में चौधरी साहब की ज़िन्दगी भर और उनके बाद भी यह क्रम चलता रहा। यहां तक कि इसने एक मेले का रूप धारण कर लिया। केवल खत्री ही नहीं हर कौम के लोग इसमें शामिल होने लगे। तरह-तरह के गीत और कवित्त बन गए। मेले में लल्लू जगधर को हर शख्स गालियां देता था। कुछ लोग जगधर को लल्लू मल का बाप कहते हैं वैसे लल्लू का बाप जगधर था। मियां नज़ीर के ज़माने में भी वह मेला उसी रूप में लगता था। उसी के बारे में उन्होंने यह पद्य कही है।

डा० श्री गुरुमुखराम टण्डन के सौजन्य से प्राप्त अप्रकाशित पद्य।

उपर्युक्त मेले की पृष्ठभूमि डा० गुरुमुखराम टण्डन जी द्वारा बताई गई है।

रोज़ा में ताजगंज के अम्बोह हो रहा है ।
महबूब गुलरुखों का इक बाग सा लगा है ॥
माजून और मिठाई, कोला है, संगतरा है ।
इक दम का यह नज़ारा ऐ यारो ! वाह-वाह है ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
घी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥२॥

ओढ़े है साल कोई महबूब शोख लाला ।
चीरा ज़री का सर पर या सुर्ख़ है दुशाला ॥
माशूक़ गुलबदन है आशिक है दीद वाला[2] ।
लग्गड़ पिला के हरदम कहता है हुक्का वाला ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
घी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥३॥

हर जा कदम कदम पर गुलज़ार बन रहे हैं ।
नातें,[3] कहानी, किस्से हर जा बखन रहे हैं ॥
सुल्फ़ों के दम हैं उड़ते सब्ज़ी भी छन रहे हैं ।
हर भंग के कदह[4] पर यह शोर ठन रहे हैं ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
घी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥४॥

गजरों का हर तरफ़ को बाज़ार लग रहा है ।
गन्ने, सिंघाड़े, मूली, तरबूज भी धरा है ॥
अदना चबैने वाला परमल जो बेचता है ।
वह भी चला जो घर से कहता यही चला है ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
घी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥५॥

जो ख़ूबरू तवायफ़ है हुस्न की घमंडी ।
सीना लगे से जिसके हो जाय छाती ठंडी ॥
देख आश्ना[5] का चहरा और घेरदार बंडी ।
हर दम यह उससे हंस हंस कहती है शोख़ रंडी ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
घी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥६॥

---

२. दीद (फा० स्त्री) दर्शन दीदार, वाला हिन्दी प्रत्यय दर्शन करने वाला ३. (अ० स्त्री) हजरत मुहम्मद साहब की छन्दोबद्ध स्तुति, स्तुतिगान ४. (अ० पु०) चषक, पानपात्र, प्याला ५. (फा० पु०) मित्र

रंडी जो अचपली है टुक दीद की लड़ारी ।
कुछ लोग उसके आगे कुछ आश्ना पिछाड़ी ।।
रथवान से कहे है सुन ओ ! मियां पहाड़ी ।
क्या ऊंगता है जल्दी लो हांक अपनी गाड़ी ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।७।।

है हुस्न की जो अपने सरशार बाई नूरन ।
जिसका मिलाप यारो सौ बाइयों का चूरन ।।
हैं यार उनके मिर्ज़ा और या कि शेख घूरन ।
मिन्नत से कह रहे हैं सुनती है बी जहूरन ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।८।।

दो रंडियां तवायफ़ जोवन है जिनका वाला ।
बरसे हैं जिनके मुंह पर सर पांव से छिनाला ।।
कोई कहे है "ऐ है" काफ़िर ने मार डाला ।
कोई पुकारता है ओ ! नौ बहार लाला ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।९।।

जो गुलबदन चले हैं सीना उठा उठाके ।
क़फ़दों की खटखटाहट पाज़ेब के झनाके ।।
आती है धज बनाके जब आश्ना के आगे ।
कहता है वह अहा ! हा ! ओ चित लगन अदा के ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।१०।।

जो नौ बहार रंडी टुक हुश्न की है काली ।
बाला हिलाके हरदम दे है हर एक को गाली ।।
देख उस परी का वाला औ कुरतियों की जाली ।
हर एक पुकारता है ओ आ जा ! बाले वाली !
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।११।।

कोई आश्ना से अपने लड़ती है ख़ुद पसंदी ।
हरगिज़ न जावे यां से बिन रुपए के बंदी ।।
वह दे है आठ आने लेती नहीं यह गंदी ।
कहता है जब तो जलकर क्या चल रही है ख़ंदी ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।१२।।

रस्ते में गर किसी जा दो लड़ रहे हैं झड़वे ।
करते हैं गाली दे-दे आपस में भड़वे-भड़वे ।।
कोई उसको रोकता है चल छोड़ मुझको भड़वे ।
कोई उसको कह रहा है क्या लड़ रहा है भड़वे ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।१३।।

जो हीजड़े ज़नाने आए हैं करके हल्ले ।
हाथों में महदियां हैं और पोर-पोर छल्ले ।।
जो उनके आश्ना हैं देख उनको होके झल्ले ।
हँस-हँस पुकारते हैं ओ ! जानी प्यारे छल्ले ?
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।१४।।

कोई उनसे कह रहा है ऐ ! नौ बहार काहू !
तेरी तो झावनी ने दिल कर दिया है मजनूं ।।
वह सुन के बात उसकी मटका के आंखें कर हू ।
ताली बजाके हर आँ कहता है "क्या है मामूं" ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।१५।।

जो आश्ना हैं अपने लोंडे के इश्क़ मारे ।
फिरते हैं शाद दिल में लोंडे को घेर घारे ।।
लाते हैं लड्डू पेड़े कर हुस्न के नज़ारे ।
हर शोख गुलवदन से कहते हैं यों "कि प्यारे" ।।
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ।।१६।।

हर आन सुर्मावाला सुर्मा सवारता है ।
औ प्यारी आंखड़ियों से आशिक को मारता है ॥
सक़्क़ा जो छुल लगाकर पानी को ढालता है ।
वह भी कटोरे छनका हरदम पुकारता है ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे, लल्लू का बाप जगधर ॥१७॥

इस्हाक़ शाह जो आशिक़ इक रिंद आ रहे हैं ।
हर शोख गुलबदन से आँखे मिला रहे हैं ॥
लोग उनके रेख़्तों पर गर्दन हिला रहे हैं ।
वह भी हर इक सुखुन पर यह ही सुना रहे हैं ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥१८॥

क़ब्बाल या अताई जो गीत जोड़ता है ।
मुंहचंग, ढ़मढमी से लच्छे ही छोड़ता है ॥
जब गतगिरी में लाकर आवाज़ मोड़ता है ।
वह भी उसी के ऊपर ला तान तोड़ता है ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥१९॥

मुफ़्लिस ग़रीब अदना कुछ होवे या न होवे ।
आया है देखने को तो ग़म को दिल से धोवे ॥
कहता चला है दिल से कोई रात भूका सोवे ।
धेले की कौड़ियों में चल होनी हो सो होवे ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥२०॥

ढलाई रोशनी से मामूर हो रही है ।
घर जगमगा अटारी पुर नूर हो रही है ॥
हर ईंट ईंट उसकी सिन्दूर हो रही है ।
यह बात तो जहां में मशहूर हो रही है ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥२१॥

नौ कारखाने वाले नौबत को सज रहे हैं ।
रंडी कहरवा नाचे धोंसे गरज रहे हैं ॥
इस बात पै तो यारो नक्कारे बज रहे हैं ।
आये हैं जो भी यां पर सब होश तज रहे हैं ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥२२॥

यह भीड़ है कि रस्ता घोड़े को, न बहल को ।
हो दल के दल जहां पर क्या दोष है कुचल को ॥
निकले हैं मारधक्के जब चीर फाड़ दल को ।
सब उस घड़ी हैं कहते ललकार इस मसल को ॥
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥२३॥

होता है बरसवें दिन यह आगरे में मेला ।
मुद्दत से लल्लू जगधर है नाम उसका ठहरा ॥
सौ भीड़ और भड़के अम्बोह और तमाशा ।
हरदम "नज़ीर" भी अब कहता है यों अहा ! हा !
टुक देख रोशनी को अब ताजगंज अन्दर ।
धी का टना मरावे लल्लू का बाप जगधर ॥२४॥

आगरे की तैराकी+

जब पैरने की रुत में दिलदार[1] पैरते हैं ।
आशिक़ भी साथ उनके ग़मख़्वार[2] पैरते हैं ।
भोले, सियाने, नादां, हुशियार पैरते हैं ।
पीरो[3]-जवां, व लड़के, अय्यार[4] पैरते हैं ।
अदना[5], ग़रीबो-मुफ़्लिस[6], ज़रदार[7] पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥१॥

झरने से लेके यारो सहजानकाता व नाला(१) ।
छतरी से बुर्ज ख़ूनी, दारा का चोंतरा क्या ।
महताब बाग़, सैयद तेली, किला व रोज़ा ।
गुल शोर की बहारें अम्बोह सैर दरिया(२) ।
हर इक मकां में होकर हुशियार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥२॥

---

१. (फा० वि०) प्यारे, प्रेमपात्र २. (अ० फा० वि) सहानुभूति रखने वाले, हमदर्द ३. (फा० वि०) वृद्ध ४. (अ० वि) चालाक, तेज़ ५. साधारण, छोटे ६. (अ० वि०) ग़रीब ७. (फा० वि०) मालदार

+ आगरे में भादों में तैराकी का मेला होता है ।

इस पद्य में आगरा के विभिन्न स्थानों के निम्नलिखित नाम आए हैं—झरना, सहजानकाता, नाला, छतरी, बुर्ज़खूनी, दारा का चोंतरा, महताब बाग, सैयद तेली किला, रोजा, हक़ीम बाग़, शिवदास का चमन ।

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० जा० सजा का ता प्याला (२) श० आ० चर्चा

बाग़े हकीम, और जो शिवदास का चमन है ।
उनमें जगह जगह पर मजलिस है, अंजुमन[८] है ।
मेवा, मिठाई, खाने, और नाच दिल लगन है ।
कुछ पैरने की धूमें कुछ ऐश का चलन है ।
इश्रत में मस्त होकर हर बार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥३॥

बरसात में जो आकर चढ़ता है ख़ूब दरिया ।
हर जा खुरी[९] व चादर[१०] बन्द[११] और नांद[१२] चकवा[१३] ।
मेड़ा, भंवर, उछालन[१४], चक्कर[१५] समेट माला(२) ।
बेंडा घमीर[१६], तख़्ता,[१७] कस्सी, पछाड़, कर्रा[१८] ।
वां भी हुनर से अपने हुशियार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥४॥

तिरबेनी में अहा हा होती हैं क्या बहारें ।
ख़ल्क़त[१९] के ठठ हज़ारों पैराक की क़तारें ।
पैरें, नहावें, उछलें, कूदें, लड़ें, पुकारें ।
ले ले वह छींट, ग़ोते खा-खा के हाथ मारें ।
क्या-क्या तमाशे कर-कर इज़्हार[२०] पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥५॥

जमुना के पाट गोया सहने–चमन[२१] हैं बारे ।
पैराक उसमें पैरें, जैसे कि चांद तारे ।
मुंह चांद के से टुकड़े, तन गोरे प्यारे-प्यारे ।
परियों से भर रहे हैं मंझधार और किनारे ।
कुछ वार पैरते हैं, कुछ पार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥६॥

---

[८] (फा० स्त्री०) सभा [९] (संज्ञा० स्त्री० देशज) इतना नेज़ बहने वाला पानी जिसके विरुद्ध नाव न चल या चढ़ सके [१०] (संज्ञा०, स्त्री०) ऊपर से गिरती हुई पानी की चौड़ी धार [११] ऐसा बांध जहाँ पानी रुका हुआ हो [१२] अधिक पानी का गहरा चौड़ा वृत्त [१३] स्थिर अधिक जल [१४] पानी का वेग से उछलना [१५] पानी का भंवर [१६] गहरा पानी जिसकी थाह न मिले [१७] सीधा खड़ा हुआ पानी [१८] (सं० पु०) बहते हुए पानी का थपेड़ा [१९] जनसाधारण, जनता [२०] प्रकट [२१] बाग का सहन

पाठान्तर—(१) जा० समेट नाला (२) श० आ० कित्ते, क़ा० लते

कितने खड़े ही पैरें अपना दिखा के सीना ।
सीना चमक रहा है हीरे का जूं नगीना ।
आधे वदन पै पानी आधे पै है पसीना ।
सर्वो[२२] का बह चला है गोया कि एक क़रीना[२३] ।
दामन कमर पे, बांधे दस्तार[२४] पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥७॥

जाते हैं उनमें कितने पानी पै साफ़ सोते ।
कितनों के हाथ पिंजरे, कितनों के सर पै तोते ।
कितने पतंग उड़ाते, कितने सुई पिरोते ।
हुक्कों का दम लगाते, हंस-हंस के शाद[२५] होते ।
सौ-सौ तरह का कर-कर बिस्तार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥८॥

कुछ नाच की बहारें पानी के कुछ किनारे(१) ।
दरिया में मच रहे हैं इन्दर के सौ अखाड़े ।
लबरेज़[२६] गुलरुखों[२७] से दोनों तरफ़ करारे ।
बजरे[२८] व नाव, चप्पू[२९], डोंगे बने निवाड़े[३०] ।
इन झमघटों से होकर सरशार[३१] पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥९॥

नावों में वह जो गुलरू[३२] नाचों में छक रहे हैं ।
जोड़े बदन में रंगीं, गहने भभक रहे हैं ।
तानें हवा में उड़तीं, तबले खड़क रहे हैं ।
ऐशो-तरब[३३] की धूमें, पानी छपक रहे हैं ।
सौ ठाठ के, बनाकर अतवार[३४], पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥१०॥

---

२२. (अ० पु०) सर्व का सीधा और सुन्दर वृक्ष २३. (अ० पु०) क्रम २४. (फा० स्त्री) पगड़ी २५. (फा० वि०) खुश २६. (फा० वि०) भरे हुए २७. (फा० वि०) सुन्दर व्यक्तियों से २८. एक प्रकार की बड़ी और पटी हुई नाव २९. नाव खेने का लम्बा बल्ला ३०. बिना पाल की छोटी नाव ३१. (फा० वि०) मस्त ३२. (फा० वि०) सुन्दर मुखवाले ३३. विलासता ३४. ढंग

पाठान्तर—(१) श० आ० लताड़े

हर आन बोलते हैं सय्यद कबीर की जै ।
फिर उसके बाद अपने उस्ताद पीर की जै ।
मोर-ओ-मुकुट कन्हैया, जमुना के तीर की जै ।
फिर ग़ोल[३५] के सब अपने ख़ुर्दो-कबीर[३६] की जै ।
हरदम यह कर ख़ुशी की गुफ़्तार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥११॥

क्या-क्या "नज़ीर" यां के हैं पैरने के बानी[३७] ।
हैं जिनके पैरने की मुल्कों में आन मानी ।
उस्ताद और ख़लीफ़ा, शागिर्द, यार जानी ।
सब ख़ुश रहें—"है जब तक जमुना के बीच पानी" ।
क्या-क्या हंसी-ख़ुशी से हर बार पैरते हैं ।
इस आगरे में क्या-क्या ऐ यार पैरते हैं ॥१२॥

कनकौए[१] और पतंग

(निर्जला[+])

यां जिन दिनों में होता है आना पतंग का ।
ठहरे हैं हर मकां में बनाना पतंग का ।
होता है कसरतों[२] से मंगाना पतंग का ।
करता है शाद[३] दिल को उड़ाना पतंग का ।
क्या ! क्या ! कहूं मैं शोर मचाना पतंग का ॥१॥

---

[३५] (फा० पु०) झुंड [३६] छोटे-बड़े [३७] आविष्कारक' शुरुआत करने वाले

[१] कागज की बड़ीं पतंग, गुड्डी [२] अधिकता [३] (फा० वि०) प्रसन्न

[+] जेठ के महीने की एकादशी के दिन हिन्दू लोग व्रत रखते हैं और पानी नहीं पीते। इसी दिन होने वाले पतंग के मेले को आगरे में "निर्जला" कहा गया है। इस पद्य में अनेक प्रकार की पतंगों का वर्णन हुआ है।

उड़ना दोबाज़[४] का है वह शोख़ी[५] की दस्तगाह[६] ।
देखे तो बाज़ जुर्रे[७] को हो इसकी दिल से चाह ।
शिकरे[८] की बाज़ आवे न उस जा कभी निगाह ।
बहरी कुही[९] भी देख यह कहती हैं वाह-वाह ।
ऐसा है नाज़ो हुस्न दिखाना पतंग का ।।२।।

हर लहज़ा इस बहार से उड़ता है ललपरा[१०] ।
बुलबुल समझ के गुल जिसे हो जावे मुब्तिला ।
घायल[११] के उड़ने की भी सिफ़त[१२] अब कहूं मैं क्या ।
घायल जो इश्क़ के हैं यह कहते हैं बरमला[१३] ।
है दिल में ख़ूब शौक़ बढ़ाना पतंग का ।।३।।

उड़ना लंगोटिये[१४] का है ऐसा कुछ अर्जुमन्द[१५] ।
गोशे[१६] से जिसको देखने आवे लंगोट बन्द[१७] ।
और चांद तारे की भी चमक चांद से दो चन्द ।
उड़ना पहाड़िये[१८] का भी है इस क़दर बुलन्द ।
उखड़े तो फिर फ़लक पै हो पाना पतंग का ।।४।।

हैं मौज दरियां[१९] की भी कुछ ऐसी चढ़ाइयां ।
मौजें[२०] गोया ख़ुशी के तलातुम[२१] में आइयां ।
बूयें इलाएचे की (हवा में समाइयां ।
झंडी को देखे तो कुछ ऐसी उंचाईयां ।
मुश्किल है वां से जाके फिर आना पतंग का ।।५।।

---

४. दोबाज–वह पतंग जिसके दोनों बाज़ू असल रंग के खिलाफ लगाए गए हैं ५. (फा० स्त्री०) चपलता ६. शक्ति ७. बाज़ जुर्रा–नर बाज ८. शिकर: (फा० पु०) बाज़ से छोटी एक शिकारी चिड़िया ९. बाजबहरी एक किस्म की शिकारी चिड़िया, इसे कुट्टी भी कहा जाता है १०. लाल परों वाली पतंग ११. विशेष रंग की पतंग १२. (अ० स्त्री) प्रशंसा १३. (फा० वि०) सामने, मुंह पर १४. एक प्रकार की पतंग जिसके बीच में पट्टीं लगी होती है १५. (फा० वि०) सफल १६. (फा० पु०) एकान्त १७. लंगोटधारी, पहलवान एक प्रकार की पतंग १८. बड़ी किस्म की एक पतंग १९. रंग विरंगी कागज की पट्टियों से बनी हुई पतंग २०. लहरें २१. (अ० पु०) पानी की हिलोरें, बाढ़

बगले[22] के उड़ने में भी वह ख़ूबी है आश्कार ।
मछली निगाह को देख के हो जिसको बेक़रार ।
पन्ने के मोल का भी दो पन्ना है ख़ुश निगार ।
धय्यड भी अबलक़े[23] को चढ़ाता है बार बार ।
चंचल पन इस क़दर है जताना पतंग का ॥६॥

उड़ना गिलहरिये का भी मैं क्या करूं बयां ।
देखें दरख़्त पर जिसे चढ़कर गिलहरियां ।
और है दुधारिये की भी कुछ और आनबां ।
हैरां हो जिससे तेग़े निगाहे परीरुख़ां[24] ।
फिर किस तरह न दिल हो दिवाना पतंग का ॥७॥

उड़ता है इस तरीक़ से है वह जो मांग दार ।
होता है जिसपे गौहरे दिल देख कर निसार[25] ।
ख़रबूज़िये की कांप का झुकना यह लाल दार(१) ।
और पेंदी पान की भी कुछ इस तौर की बहार ।
गोया हवा में गुल है खिलाना पतंग का ॥८॥

बमना भी अपनी देता है जिस वक़्त खूबी खोल ।
निकले हैं वाह-वाह के हर इक ज़ुबां से बोल ।
और है दो कोनिये की भी इक-इक अदा अमोल ।
उड़ता है कुलसिरे में भी शीराज़ियों का ग़ोल ।
जीधर है नोक झोक दिखाना पतंग का ॥९॥

चुपके भी वस्फ़[26] करने में चुपका रहूं मैं क्या ।
शर्मिन्दा हो कबूतरे चुप जिस से दायमा ।
ग़ायब है ककड़ी उड़ने पे ककड़ी का मर्तबा ।
चौकन्नी चुरचलें हों उड़े जबकि चौधड़ा ।
इस ज़ोर से हवा पे है जाना पतंग का ॥१०॥

---

२२. सफेद रंग की पतंग २३. दो रंगा, सफेद और काली या सफेद और लाल रंग की पतंग २४. (फा० वि०) परियों जैसी शक्ल सूरत वाली २५. (अ० पु०) वलि, कुर्बान २६. (अ० पु०) प्रशंसा

पाठान्तर—(१) श० ही लालदार

उड़ते हैं इस हिज़ूम से कनकौए चमचके ।
कौआ पकड़ने से गोया कौए हैं उड़ रहे ।
छोटी भी तुक्कल[२७] ऐसी कि नख़ से फ़क़त उड़े ।
झंझाव हैं मढ़ाव में कुछ इस क़दर बड़े ।
लाज़िम है गर कहीं उन्हें लाना पतंग का ॥११॥

++महबूब भी उड़ाते हैं इस ढब से तुक्कलें ।
जिनकी अदाओं आन दिलों की कलें छलें ।
मिलने से दस्तो पा के जो ग़ैरों से दिल मिलें ।
उश्शाक़ क्यों न रश्क[२८] से फिर इस तरह जलें ।
हो जिस तरह से शम्मा पे आना पतंग का ॥१२॥

पतली कमर को मोड़े हैं जिस वक़्त कज कुलाह ।
बाहें दराज़ करते हैं लबझप से ख़्वाह मख़्वाह ।
यह शक्ल देखकर कोई कहता है वाह वाह ।
अब इस तरफ़ लड़ेगी भला काहे को निगाह ।
दिल में तो रूप रहा है लड़ाना पतंग का ॥१३॥

लाता है फेर फार के तुक्कल जो अपनी वां ।
कहता है कोई उनसे ख़बरदार हो, मियां ।"
अब पेच पड़ने को हैं न दो इतनी ठुमकियां ।
घबरा के कन्ने इसके न फंसने दो मेरी जां ।
अच्छा नहीं है मुफ़्त कटाना पतंग का ॥१४॥

गर पेच पड़ गए तो यह कहते हैं देखियो ।
रह रह इसी तरह से न अब दीजै ढील को ।
"पहले तो यूं क़दम के तई "ओ मियां" रखो" ।
फिर एक रगड़ा देके अभी इसको काट दो ।
हैगा इसी में फ़तह का पाना पतंग का ॥१५॥

---

[२७] विशेष प्रकार का कनकौआ जिसमें दो कांपें लगी होता हैं ऊंची, स्थिर [२८] (फा० पु०) प्रतिस्पर्द्धा

++ शहवाज साहब के कुल्लियात में यह पद नहीं है

++और जो किसी से अपनी तुक्कल को लें बचा ।
यानी है मांझा खूब मंझा उस की डोर का ।
करता है वाह वाह कोई शोर गुल मचा ।
कोई पुकारता है कि ऐ ! जां ! कहूं मैं क्या ।
अच्छा है तुमको याद बचाना पतंग का ॥१६॥

++लड़ते हैं जिस मकां में पतंग आन कर यहां ।
होता बड़ा हुजूम है ग्यारस के रोज वां ।
डोरों की गोली और पतंगें बहुत अयां[२९] ।
सौ सौ खड़े इकट्ठें उड़ाते हैं शादमां[३०] ।
उस दिन बड़ा हुनर है जताना पतंग का ॥१७॥

कटता है जो पतंग तो फिर लूटने उसे ।
दो-दो हज़ार दौड़ते हैं, छोटे और बड़े ।
काग़ज़ ज़रा सा मिलता है या टुकड़े कांप के ।
जव इस तरह की सैर भला आन कर पड़े ।
फिर सोचिये तो क्या है ठिकाना पतंग का ॥१८॥

इस आगरे में यह भी तमाशा है दिलपज़ीर[३१] ।
होते हैं देख शाद जिसे ख़ुर्द[३२] और कबीर[३३] ।
क्यों कर न दिल पतंग की हो डोर में असीर[३४] ।
ख़ूबां[३५] के देखने के लिए क्या मियां नज़ीर ।
है यह भी एक तरफ़ा बहाना पतंग का ॥१९॥

---

२९. (अ० वि०) स्पष्ट, जाहिर ३०. (फा० वि०) प्रसन्नचित्त, प्रसन्न ३१. दिल पसंद ३२. (फा० वि०) छोटा ३३. (अ० वि०) बड़ा ३४. (अ० वि०) बंदी, क़ैदी ३५. (फा०) सुन्दर स्त्रियां

++ यह दोनों पद शहबाज साहब के कुल्लियात में नहीं हैं

खेल तमाशे

कबूतर बाज़ी

हैं आलमे बाज़ी[१] में जो मुम्ताज़[२] कबूतर।
और शौक़ के ताइर[३] से हैं अम्बाज़[४] कबूतर।
भाते हैं बहुत हमको यह तन्नाज़[५] कबूतर।
मुद्दत से जो समझें हमें हमराफ़[६] कबूतर।
फिर हमसे भला क्योंकि रहें बाज़ कबूतर ॥१॥

हैवान हैं गरचे अज़ब अन्दाज के पर हैं।
सूरत में परीवार[७] तो सीरत[८] में बशर[९] हैं।
आवाज़ से वाक़िफ़[१०] हैं इशारों से ख़बर हैं।
परवाज़[११] में हमशहपरे अनक़ाए नज़र हैं।
क्या गोले हों, और क्या हों गिरहबाज़ कबूतर ॥२॥

क्या बुलबुलों, कुमरीओ चहे पिदड़ियों पिद्दे।
चंडूल, अगिन, लाल, बए अबलक़े, तोते।
क्या तूतियो मैना व पबई तीतरो शिकरे।
तायर हैं ग़रज़ बाज़ीए अशग़ाल[१२] के जितने।
की ग़ौर तो हैं सबसे सरअफ़राज़[१३] कबूतर ॥३॥

हैं बसरई और काबुली शीराज़ी निसावर।
चोया चन्दनो सब्जमुक्खी शस्तरो अक्कर(१)।
ताऊसियो, कुल पोटिये, नीले, गुली थय्यड़।
तारों के वह अन्दाज़ नहीं बामे फ़लक पर।
जो करते हैं छतरी के ऊपर नाज़ कबूतर ॥४॥

---

१. (फा० स्त्री०) खेल तमाशा २. (अ० वि०) ख़ास ३. (अ० पु०) उड़ने बाले पक्षी ४. मिले हुए ५. (अ० वि०) इठलाकर चलने वाले ६. (फा० वि०) मित्र, दोस्त ७. अप्सरा जैसे सुन्दर ८. (अ० स्त्री०) स्वभाव ९. (अ० पु०) आदमी १०. परिचित ११. उड़ने में १२. काम १३. सिर ऊंचा उठाने वाले

पाठान्तर—(१) जा० अवसर

लक्क़ें हैं इधर अपनी कसावट को दिखाते।
चीते (२) हैं उधर सीम बरी अपनी जताते।
हैं जोगिये भी रंग कई जोग के लाते।
परियों के परे देख के हैं चर्ख़[१४] में आते।
जब हल्क़ा ज़नां करते हैं परवाज़ कबूतर ॥५॥

खीरे व टपीतो, चुपो, नुफ़्ते व मुखेरे।
ज़रचे, व गुल आंख ललआंख, ऊदे व ज़र्दे।
कुछ कावरे तीरे मसी व तूसी व पल्के।
फिरते हैं ठुमक चाल सुनाते हैं खुशी से।
क्या क्या वह ग़ुटरग़ूं की खुश आवाज़ कबूतर ॥

सीमाविये और घाघरे तम्बोलिये पान लाल।
कुछ अगरई और सुरमई और अम्बरी और ख़ाल।
भूरे मग़्सी तांबड़े बबरे भी खुश अहवाल।
फिर हस्तरे और कासनी लोटन भी सुबुक बाल।
खोले हैं गिरह दिल की गिरह बाज़ कबूतर ॥७॥

'कू' करके जिधर के तई छीपी को हिलावें।
कुछ होवे ग़रज फिर वह उसी सिम्त को जावें।
कुट्टी को न फड़कावें तो फिर तह को न आवें।
छोड़ उनको 'नज़ीर' अपना दिल अब किससे लगावें।
अपने तो लड़कपन से है दम साज़ कबूतर ॥८॥

---

१४. (फा० पु०) आसमान

पाठान्तर—(२) जा० जितने

बुलबुलों की लड़ाई

कल बुलबुलें जो नौ दस क़ाबू में अपने आई।
उसमें से दो पकड़ कर कुश्ती में धर भिड़ाई।
यह शोर सुनके ख़ल्क़त[1], दौड़ आई दाईं बाईं।
कोई बोला 'वाह हज़रत' कोई बोला 'वाह साईं।
सौ सौ तरह की धूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारो कल बुलबुलें लड़ाई ।।१।।

दस में तो दोनों कट कट लड़ती थीं करके गड्डा(१)।
जब तीसरी को छोड़ा फिर तो हुआ तिगड्डा।
ख़ल्क़त भी आके टूटी, छोड़ अपना अपना अड्डा।
कड़की किसी की पसली टूटा किसी का हड्डा।
सौ सौ तरह की धूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारो कल बुलबुलें लड़ाई ।।२।।

थी तीन की यह कुश्ती चौथी को उसमें छोड़ा।
उसने तो ख़म बजाकर तीनों को धर झंझोड़ा।
फिर तो यह फटका आकर इन कुश्तियों का कोड़ा।
छूटा किसी का हाथी, भागा किसी का घोड़ा।
सौ सौ तरह की धूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारों कल बुलबुलें लड़ाई ।।३।।

एक कंकरी जो मारी पढ़ हमने फिर फ़ुसूं की।
कुश्ती में गठरी बंध गई उन चारों बुलबुलों की।
सुन सुन के चीख़े उनकी लड़ने में ग़र्रगूं की।
सब बोले वाह हज़रत अच्छी यह पढ़के फूंकी।
सौ सौ तरह की धूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारो कल बुलबुलें लड़ाई ।।४।।

१—(अ० स्त्री०) जनता

पाठान्तर—(१) जा० कड्डा

सुन सुनके चीख़े(२) उनकी चिड़ियां जो चूं चूं आई।
कौए पुकारे ग़ां ग़ां चीलें भी चिलचिलाईं।
सारद बटेर, मैना, चिमगादड़े भी आई।
मुर्ग़ों ने कुकड़ूं कूं की, गलगलियां फड़फ़ड़ाईं।
सौ सौ तरह की धूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारो कल बुलबुलें लड़ाई।।

चिल्लाए मोर, सारस और फड़फड़ाए घग्गू।
गिद और चुग़द दहाड़े और फड़फ़ड़ाए उल्लू।
कुत्ते भी भौंके भौं भौं, गीदड़ पुकारे हू-हू।
भड़वे गधे भी रेंके, कर अपनी ढेंचू-ढेंचू।
सौ सौ तरह की धूमें एकदम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारों कल बुलबुलें लड़ाई।।६।।

जब ले चले वहां से हम बुलबुलों का लश्कर।
सब लोग हंस के बोले उस दम दुआएं देकर।
सब में मियां "नज़ीर" अब तुम हो बड़े क़लन्दर।
यह खेल आगरे में अब ख़त्म है तुम्हीं पर।
सौ सौ तरह की धूमें एक दम में कर दिखाई।
इस ढब से हमने यारो कल बुलबुलें लड़ाई।।७।।

पशु-पक्षी वर्णन

बया

अब हाथ पर मेरे जो नमूदार[1] है बया।
ज़र्दी में अपने रंग की ज़रदार है बया।
ख़ूबां के देखने का तलब गार है बया।
आशिक़ दिलों की गर्मीए बाजार है बया।
जितने बये हैं, सब में यह सरदार है बया।।१।।

---

१. (फा० वि०) ज़ाहिर २. (फा०) प्रियतमा, सुन्दर स्त्री
पाठान्तर - (२) आ० सुन सुन दो चीखें (३) आ० कलकलियां

जिस दिन से मेरे हाथ यह अय्यार है लगा ।
क्या क्या परीरुखों[३] की बहारें हैं दी दिखा ।
कौड़ी कभी उठा, कभी मेंहदी उतार ला ।
पेटी से उसकी यारो यह डोरा नहीं बंधा ।
लड़कों की उल्फ़तों में गिरफ्तार है बया ।।२।।

करने को दीद[४] जब से लिया है यह हमने मोल ।
फिरते हैं साथ तब से कई, दिलबरों के ग़ोल ।
छल्ला, अंगूठी लाता है, हर दम गिरह से खोल ।
पानी कुंऐं से खींचे है, कर पोस्तों के डोल ।
ऐसा हुनर में अपने नुमूदार है बया ।।३।।

गर यह तमाशे पर कभी अपने उतर पड़े ।
लड़के अमीरों के फिरें ईधर उधर पड़ें ।
पर मुझको यह यक़ीं है अगर टुक नज़र पड़े ।
हाथी से बादशाह का भी लड़का उतर पड़े ।
ऐसा हमारे पास यह तैयार है बया ।।४।।

आगे हमारे पास था बच्चा गिलहरी का ।
तोता बनेटी, और था बगला सधा हुआ ।
उनको तो हाय चोर कोई ले गया चुरा ।
अब इसका है हमारे तईं, यारो आसरा ।
इस बेकसी में अब तो मददगार है बया ।।५।।

गर यह हमारे पास न होता तो आ मियां ।
पूछे था कौन हमसे ग़रीबों की बात यां ।
इस दर्दो ग़म में हक़ के सिवा अब तो इस मकां ।
अपना न कोई दोस्त, न मुश्फ़िक़[५] न मेहरबां ।
गर है तो अब जहां में यही यार है बया ।।६।।

---

[३] (फा० वि०) परियों जैसी शक्ल सूरत वाली
[४] (फा० स्त्री०) दर्शन
[५] (अ० वि०) मित्र, दयालु

लड़का जो कोई शोख़ हटीला हो अचपला ।
फंसता न हो किसी से किसी जाल में जो आ ।
यारो ! यह वह बया है, दिया जिस घड़ी दिखा ।
बस देखते ही आन में लट्टू हो आ मिला ।
काफ़िर यह इस तरह का झमक दार है बया ॥७॥

करता है आके बेंदी व टिकुली पे जब यह चोट ।
बालों की लट दिखाओ तो लावे वहीं खसोट ।
बूढ़ों का दिल तमाशे में होता है जिसके लोट ।
लड़का तो एक दम में हो बस देख लोट पोट ।
यह तो कहीं का ज़ोर तरह दार है बया ॥८॥

जब मांगता है मुझ से बहुत होके बेक़रार ।
कहता हूं उस से जब तो मैं, "ऐ ! शोख़[६] गुलइज़ार[७] ।
यह क्या बया है, इसको न लो प्यारे ज़ीनहार[८] ।
गर साथ मेरे आओ तो दिखलाऊं तुमको यार ।
इस से भी और एक मज़ेदार है बया ॥९॥"

इस दम के बीच जब वह परीज़ाद लग चला ।
फिर यूं ही कौड़ियों का दिया झाड़ उसे दिखा ।
बोसे भी ख़ूब ले लिये मतलब भी कर लिया ।
और यूं कहा कि "जान न तुम मानना बुरा ।
मेरी ख़ता नहीं यह गुनहगार है बया" ॥१०॥

यह सुनके मुझसे कहता है जब होके वह ख़फ़ा ।
"लो अब बया तो दो मुझे, होना था सो हुआ ।
तब हाथ जोड़ उसको यह देता हूं मैं सुना ।
तुमको तो ऐसे लाख मिलेंगे ऐ ! दिल रुबा ! ।
मुझको तो मिलना फिर कहीं दुश्वार है बया" ॥११॥

---

[६] (फा० वि०) चंचल, चपल
[७] (फा० अ० वि०) गुलाब जैसे सुकुमार और सुन्दर गालों वाला
[८] (फा० अव्य०) कदापि, हरगिज़

"ऐसे बये तो लाखों करूं तुम पे मैं निसार ।
ले जाके इसको तुम कहीं डालोगे मुफ़्त मार ।
और मुझ गरीब का तो इसी पर है रोज़गार ।
हर दम इसी का इससे ही चलता है कारोबार ।
सच पूछिये तो मेरा यह व्यौपार है बया" ।।१२।।

ऐसा बया है अब तो सज़ावार दिल पज़ीर[९] ।
लड़के जहां तलक हैं परी ज़ाद बेनज़ीर ।
क्या शोख़, क्या शरीर, ग़रीब और क्या अमीर ।
सब मिन्नतों से कहते हैं आकर मियां "नज़ीर" ।
"एक दो घड़ी तो हमको यह दरकार[१०] है बया" ।।१३।।

गिलहरी का बच्चा

लिये फिरता है, यूं तो हर बशर[१] बच्चा गिलहरी का ।
हर एक उस्ताद के रहता है, घर बच्चा गिलहरी का ।
व लेकिन है हमारा इस क़दर बच्चा गिलहरी का ।
दिखा दें हम किसी लड़के को, गर बच्चा गिलहरी का ।
तो दम में लोट जाये देख कर बच्चा गिलहरी का ।।१।।

सफेदी में वह काली धारियां ऐसी रही हैं बन ।
कि जैसे गाल पर लड़कों के छूटे ज़ुल्फ़ की(१) नागिन ।
किनारीदार पट्टा, जिसमें घुंघरू कर रहे छन-छन ।
गले में हंसली, पांवों में कड़े, और नाक में लटकन ।
रहा है सरबसर[२] गहने में भर, बच्चा गिलहरी का ।।२।।

---

[९] दिल को पसंद आने वाला, दिल को स्वीकार होने वाला [१०] (फा० अव्य०) वांछित, अभिलषित

[१] (अ० पुं०) मनुष्य । [२] (फा० वि०) नितान्त, बिल्कुल

पाठान्तर—(१) ज़ा० सी

किसी सरदार के दिल में यह आया एक दिन यारो ।
कि देखे घर बुलाकर इश्क़ बाज़ों के हुनर को वो ।
कहा उसने कि हां इस ढब से उस्तादों को ले आओ ।
सो नौकर उसका सब में ढूंढ चुनकर ले गया हमको ।
न था हम पास उस दम कुछ मगर बच्चा गिलहरी का ॥३॥

वह देखे तो बुरी सूरत, बुरा हाल और फटे कपड़े ।
बढ़े दाढ़ी के बाल, और ज़र्द मुंह, आंखों में आंसू से ।
बँधी मैली सी पगड़ी सर पे, और टुकड़े अंगरखे के ।
वह कपड़े गो फटे थे पर हम अपने फ़न में थे पूरे ।
लगा रखते थे ऐसे वक़्त पर बच्चा गिलहरी का ॥४॥

जूं ही इतने में हमको इस बुरे अहवाल से देखा ।
कहा उसने कि फँसता होगा इनसे किस तरह लड़का ।
नज़र से उसकी मैंने जब तो वां इस बात को ताड़ा ।
कमर को देख ढूंढी जेब, पगड़ी को टटोला उस जा ।
वहीं हमने निकाला, ढंढ कर बच्चा गिलहरी का ॥५॥

कहीं बैठा था वां उसका बरस बारह का एक लड़का ।
वह गोरा, गुदगुदा, बच्चा परी सा चांद का टुकड़ा ।
जूं ही उसने वह बच्चा आह यारो एक नज़र देखा ।
वहीं लट्टू हुआ बोला(१) "यही लूंगा यही लूंगा" ।
बिठा दो जल्द मेरे हाथ पर बच्चा गिलहारी का ॥६॥

यह कहकर बेक़रारी से वह लड़का शौक़ में ग़श हो ।
वहीं घबरा के आ पहुंचा जहां हम थे खड़े यारो ।
लगा सौ मिन्नतों से मांगने वह, यह तो हमको दो ।
वह बाप उसका पुकारा ! "हां निकालो जल्दी से उसको(२) ।
ग़ज़ब जादू का रखता है असर बच्चा गिलहरी का" ॥७॥

पड़ी उल्फ़त है, जब से ऐ 'नज़ीर' इस शोख़[३] बच्चे की ।
उड़ाई तब से सैरें हमने क्या-क्या, कुछ तमाशे की ।
न ख़्वाहिश लाल की है, अब न पिदड़ी की, न पिद्दे की ।
न उल्फ़त कुछ कबूतर की, न तोते की, न बगले की ।
हमें काफ़ी है अब तो उम्र भर बच्चा गिलहरी का ॥८॥

---

[३] (फ़० वि०) चंचल

पाठान्तर—(१) शहबाज आ० लट्टू होकर (२) श० आ० उनको

रीछ का बच्चा

कल राह में जाते जो मिला रीछ का बच्चा ।
ले आए वहीं हम भी उठा रीछ का बच्चा ।
सौ नेमतें[1] खा-खा के पला रीछ का बच्चा ।
जिस वक़्त बड़ा रीछ हुआ रीछ का बच्चा ।
जब हम भी चले, साथ चला रीछ का बच्चा ॥१॥

था हाथ में इक अपने सवा मन का जो सोटा ।
लोहे की कड़ी जिस पे खड़कती थी सरापा[2] ।
कांधे पे चढ़ा झूलना और हाथ में प्याला ।
बाज़ार में ले आये दिखाने को तमाशा ।
आगे तो हम और पीछे वह था रीछ का बच्चा ॥२॥

था रीछ के बच्चे पे वह गहना जो सरासर ।
हाथों में कडे सोने के बजते थे झमक कर ।
कानों में दुर[3], और घुंघरू पड़े पांव के अन्दर ।
वह डोर भी रेशम की बनाई थी, जो पुर ज़र[4] ।
जिस डोर से यारो था बंधा रीछ का बच्चा ॥३॥

झुमके वह झमकते थे, पड़े जिस पे करनफूल ।
मुक़्क़ैश[5] की लड़ियों की पड़ी पीठ उपर झूल ।
और उनके सिवा कितने बिठाए थे जो गुलफूल ।
यूं लोग गिरे पड़ते थे सर पांव की सुध भूल ।
गोया वह परी था, कि न था, रीछ का बच्चा ॥४॥

---

१. (अ० स्त्री०) अच्छी चीज़ें २. (फा० पु०) ऊपर से नीचे तक, सर से पांव तक ३. (फा० पु०) मोती
४. (फा० वि०) धन से भरी हुई कीमती ५. (फा० पु०) चांदी सोने के तारों के काम की

एक तरफ़ को थीं सैकड़ों लड़कों की पुकारें ।
एक तरफ़ को थीं, पीरो[६] जवानों की कतारें ।
कुछ हाथियों की क़ीक़ और ऊंटों की डकारें(१) ।
गुल शोर, मज़े भीड़ ठठ, अम्बोह[७] बहारें ।
जब हमने किया लाके खड़ा रीछ का बच्चा ॥५॥

कहता था कोई हमसे, मियां आओ क़लन्दर[८] ।
वह क्या हुए, अगले जो तुम्हारे थे वह बन्दर ।
हम उनसे यह कहते थे "यह पेशा है 'क़लन्दर' ।
हां छोड़ दिया बाबा उन्हें जंगल के अन्दर ।
जिस दिन से ख़ुदा ने यह दिया, रीछ का बच्चा" ॥६॥

मुद्दत में अब इस बच्चे को, हमने है सधाया ।
लड़ने के सिवा नाच भी इसको है सिखाया ।
यह कहके जो ढपली के तईं गत पै बजाया ।
इस ढब से उसे चौक के जमघट में नचाया ।
जो सबकी निगाहों में खपा "रीछ का बच्चा" ॥७॥

फिर नाच के वह राग भी गाया, तो वहाँ वाह ।
फिर कहरवा नाचा, तो हर एक बोली ज़ुबां "वाह" ।
हर चार तरफ सेती[९] कहीं पीरो जवां "वाह" ।
सब हँस के यह कहते थे "मियां वाह मियां वाह" ।
क्या तुमने दिया ख़ूब नचा रीछ का बच्चा ॥८॥

इस रीछ के बच्चे में था इस नाच का ईजाद ।
करता था कोई क़ुदरते ख़ालिक़ के तईं याद ।
हर कोई यह कहता था ख़ुदा तुमको रखे शाद[१०] ।
और कोई यह कहता था 'अरे वाह रे उस्ताद' ।
"तू भी जिये और तेरा सदा रीछ का बच्चा" ॥९॥

---

६. (फा० वि०) वृद्ध ७. भीड़ ८. (फा० पु०) मस्त और आज़ाद रहने वाले फ़क़ीर, रीछ और बंदर नचाने वाले व्यक्ति ९. से १०. ख़ुश

पाठान्तर—(१) श० आ० कतारें

जब हमने उठा हाथ, कड़ों को जो हिलाया ।
ख़म ठोंक पहलवां की तरह सामने आया ।
लिपटा(१) तो यह कुश्ती का हुनर आन दिखाया ।
वां छोटे बड़े जितने थे उन सबको रिझाया ।
इस ढब से अखाड़े में लड़ा रीछ का बच्चा ॥१०॥

जब कुश्ती की ठहरी तो वहीं सर को जो झाड़ा ।
ललकारते ही उसने हमें आन लताड़ा(२) ।
गह हमने पछाड़ा उसे, गह उसने पछाड़ा ।
एक डेढ़ पहर फिर हुआ(३) कुश्ती का अखाड़ा ।
गर हम भी न हारे, न हटा रीछ का बच्चा ॥११॥

यह दांव में पेचों में जो कुश्ती में हुई देर ।
यूं पड़ते रूपे-पैसे कि आंधी में गोया बेर ।
सब नक़द हुए आके सवा लाख रूपे ढेर ।
जो कहता था हर एक से इस तरह से मुंह फेर ।
"यारो तो लड़ा देखो ज़रा रीछ का बच्चा" ॥१२॥

कहता था खड़ा कोई जो कर आह अहा हा ।
इसके तुम्हीं उस्ताद हो वल्लाह[११] "अहा हा" ।
यह सहर[१२] किया तुमने तो नागाह[१३] "अहा हा" ।
क्या कहिये ग़रज आख़िरश ऐ वाह "अहा हा" ।
ऐसा तो न देखा, न सुना रीछ का बच्चा ॥१३॥

जिस दिन से "नज़ीर" अपने तो दिलशाद यही हैं ।
जाते हैं जिधर को उधर इरशाद[१४] यही हैं ।
सब कहते हैं वह साहिबे ईजाद[१५] यही हैं ।
क्या देखते हो तुम खड़े ? उस्ताद यही हैं ।
कल चौक में था जिनका लड़ा रीछ का बच्चा ॥१४॥

---

[११] (अ० वाक्य) ईश्वर की सौगन्ध [१२] जागृति, जादू [१३] (फा० वि०) अचानक
[१४] (अ० पु०) आज्ञा [१५] (अ० स्त्री०) आविष्कारक

पाठान्तर—(१) जा० लिपटा वह तो (२) आ० लथाड़ा (३) श० आ० पहर हो गया

अज़दहे का बच्चा

बेचे है अब तो कोई बुलबुल बये का बच्चा ।
और बेचता है कोई तोते हरे का बच्चा ।
मैना, बया, लटूरा और अवलक़े[1] का बच्चा ।
तीतर, बटेर, सारस, शकरे, लवे का बच्चा ।
सब बेचते हैं आकर, चीते, खरे का बच्चा ।
हम बेचते हैं यारो लो अज़दहे का बच्चा ।।१।।

खाते थे हमतो इससे आगे पुलाव क़लिया[2] ।
या रूखी सूखी रोटी या बाजरे का दलिया ।
फिरते हैं सर पै रख कर चालीस मन की डलिया ।
अब कोई आगरे में ऐसा नहीं है वलिया ।
सब बेचते हैं आकर, चीते, खरे का बच्चा ।
हम बेचते हैं यारो लो अज़दहे का बच्चा ।।२।।

जब बेचते थे यारो, हम अज़दहा पुराना ।
सौ-सौ तरह का जब तो आता था हमको खाना ।
अब गाहकी जो कम है, तो है यह दिल में ठाना ।
एक बच्चा रोज़ लाना, और रोज़ बेच खाना ।
सब बेचते हैं आकर, चीते, खरे का बच्चा ।
हम बेचते हैं यारो लो अज़दहे का बच्चा ।।३।।

गाहक न कोई बोला, है यह बुरा जमाना ।
आज इसको सर पै रखकर सब शहर हमने छाना ।
अब भी बिका तो वेहतर नहीं फिर पड़ेगा लाना ।
है इससे ही हमारी नित रोटी का ठिकाना ।
सब बेचते हैं आकर, चीते, खरे का बच्चा ।
हम बेचते हैं यारो लो अज़दहे का बच्चा ।।४।।

---

[1] अबलखा—मैना की जाति का एक काला पक्षी जिसके पर स्याह और पेट सफ़ेद होता है [2] कलीय : (अ० पु०) भुना हुआ गोश्त

है डर हम इसको रक्ख, या फेर कर ले जावें।
तो क्या हम आप खावें, और क्या इसे खिलावें।
कुछ बन नहीं है आता, यह दुख किसे सुनावें।
जी चाहता है अब तो यह शहर छोड़ जावें।
सब बेचते हैं आकर, चीते खरे का बच्चा।
हम बेचते हैं यारो लो अज़दहे का बच्चा ॥५॥

सौ मन गेहूं का हर दिन खाने को कहां से आवे।
और सौ पखाल[३] पानी कब तक कोई पिलावे।
जब रात हो तो हर दम, यह ख़ौफ़ जी में आवे।
शायद इसे चुरा कर, कोई चोर ले न जावे।
सब बेचते हैं आकर चीते, खरे का बच्चा।
हम बेचते हैं यारो लो अज़दहे का बच्चा ॥६॥

रोज़ी के अब तो ऐसे घर-घर में हैं कसाले।
हाथी व घोड़े अपने देते हैं लोग ढाले।
जब तंग होवे रोज़ी, कौन अज़दहे को पाले।
इसकी भी और हमारी यारो ख़बर ख़ुदा ले।
सब बेचते हैं आकर चीते, खरे का बच्चा।
हम बेचते हैं यारो, लो अज़दहे का बच्चा ॥७॥

नौ(१) दस हज़ार तक तो छूने इसे न देंगे।
इतने रुपे तो इसके एक परके हम न लेंगे।
सत्तर हज़ार तक भी सौदा नहीं करेंगे।
अस्सी हज़ार देगा तो हम भी दे चुकेंगे।
सब बेचते हैं आकर चीते, खरे का बच्चा।
हम बेचते हैं यारो, लो अज़दहे का बच्चा ॥८॥

---

[३] पानी भरने की चमड़े की बड़ी मशक़ जिसमें दो हिस्से होते हैं और जिसे भर कर जानवर की पीठ पर डाल कर ले जाते हैं।

पाठान्तर—(१) श० आ० लो

सब उठ गए जहां से वह थे जो लोग जसिया[४] ।
वह रह गए हैं जिनके घर में नहीं है हंसिया ।
इस बात को तो उम्दा हो भोग का बिलसिया ।
जो अज़दहे को पाले ऐसा है कौन रसिया ।
सब बेचते हैं आकर चीते, खरे का बच्चा ।
हम बेचते हैं यारो, लो अज़दहे का बच्चा ।।९।।

आगे तो घर बघर थे अक्सर तमामदाता ।
सीमुर्ग़[५] पालते थे करने को नाम दाता ।
अपने तो कोई हरगिज़ आया न काम दाता ।
सच है "नज़ीर" आख़िर अजगर के राम दाता ।
सब बेचते हैं आकर चीते, खरे का बच्चा ।
हम बेचते हैं यारो, लो अज़दहे का बच्चा ।।१०।।

---

[४] ख़ुशनसीब [५] काफ़ पहाड़ में रहने वाला एक बहुत बड़ा पक्षी

रात

खींच कर उस माह रू को आज यां लाई है रात ।
यह ख़ुदा ने मुद्दतों में हमको दिखलाई है रात ।।
चांदनी है रात है ख़िल्वत है सहने बाग़ है ।
जाम भर साक़ी कि यह क़िस्मत से हाथ आई है रात ।।
बे हिजाब और बे तकल्लुफ़ होके मिलने के लिए ।
वह तो ठहराते थे दिन पर हमने ठहराई है रात ।।
जब मैं कहता हूं "किसी शब को तू काफ़िर यां भी आ" ।
हंस के कहता है "मियां हां वह भी बनवाई है रात" ।।
क्या मज़ा हो हाथ में जुल्फ़ें हों और यूं पूछिये ।
ऐ ! मेरी जां ! सच कहो तो कितनी अब आई है रात ।।
जब नशे को लहर में बाल उस परी के खुल गए ।
सुबह तक फिर तो चमन में क्या ही लहराई है रात ।।
दौर में हुस्ने बयां के हमने देखा बारहा ।
रुख़ से घबराया है दिन, जुल्फ़ों से घबराई है रात ।।
है शबे वस्ल आज तो दिल भर के सोवेगा "नज़ीर" ।
उसने यह कितने दिनों में ऐश की पाई है रात ।।

बहार

शब को चमन में वाह ! वाह ! क्या ही बहार थी मची ।
फूल खिले थे फूल-फूल, गुंचे खिले कली-कली ।।
बेला, चमेली, रायबेल, मोतिया जूही सेवती ।
बादेसबा[१] भी चलती थी, इत्रो गुलाब में बसी ।।
हौज पड़े छलकते थे, नहरें हिलोरें लेती थी ।
शोख़[२] बग़ल में ग़ुंचा लब[३] मै[४] के नशों की ताज़गी ।।
ऐशो–तरब[५] की लहर में, रात जब आधी ढल गई ।
इसमें कहीं से है ग़ज़ब, निकली जो मकर चांदनी ।।
    सुबह के डर से हड़बड़ा, यार ने घर की राह ली ।
    हम भी दग़ा में आ गए, मुफ़्त बहार लुट गई ।।१।।

रात तो क्या ही ऐश की ठहरी थी आके अंजुमन[६] ।
तारे खिले थे मह रतन[७], फूल खिले चमन चमन ।।
नरगिसो नारो[८] यासमन[९], सोसनो[१०] तुर्रे नस्तरन ।
कब्को[११] नज़रो ख़न्दा ज़न[१२], बुलबुलो कुमरी[१३] नाराज़न ।।
यार बग़ल में गुलबदन, सुर्ख़ गले में पैरहन[१४] ।
सीना व सीना, तन बत न, ऐशो तरब के सब बरन ।।
इसमें रक़ीबे[१५] दिल शिकन[१६], आया गजर का करके फ़न ।
थाली कहीं से ला-शिताब[१७], दी है बजा ठनन ठनन ।।
    सुबह के डर से हड़बड़ा, यार ने घर की राह ली ।
    हम भी दग़ा में आ गए, मुफ़्त बहार लुट गई ।।२।।

---

१. प्रातः:काल की हवा २. चंचल ३. कली जैसे कोमल गुलाबी होठों वाला, वाली ४. शराब
५. रास-विलास ६. महफिल ७. चमकते मोती ८. अनार ९. चमेली १०. नीला फूल
११. चकोर १२. प्रसन्न १३. सफेद पक्षी १४. वस्त्र, कुर्ता १५. किसी स्त्री से प्रेम करने वाले दो व्यक्ति परस्पर रक़ीब होते हैं १६. दिल तोड़ने वाला १७. शीघ्र

बाग में शब को वाह ! वाह क्या ही मज़ों के घोर थे ।
तोते व बगले, मोर थे, फ़ाख्तों के भी शोर थे ॥
शोख़ पर अपने जोर थे, उसके बरन भी(१) ज़ोर थे ।
तोड़े कड़े दबोर[१८] थे, छल्ले भी पोर पोर थे ॥
यार हमारा चांद था, चांद के हम चकोर थे ।
दोनों चकई व चकवा थे, दोनों पतंग व डोर थे ॥
मै के नशों के शोर थे, कपड़े भी शोर बोर थे ।
बोला रक़ीब[१९] दिन दिये, दौड़ियो यारो चोर थे ॥
सुबह के डर से हड़बड़ा यार ने घर की राह ली ।
हम भी दग़ा में आगए, मुफ़्त बहार लुट गई ॥३॥

क्या ही मज़े थे रात को, यारो मैं तुमसे क्या कहूं ।
सहने चमन इरम[२०] नमूं[२१], डालियां झूमें सर निगूं[२२] ॥
शोख़[२३] बगल में फनूं[२४], ऐशो तरब फ़ुजूं फ़ुजूं[२५] ।
मै के बहे थे आके ख़ूं, चेहरे नशों में लालागूं[२६] ॥
यार के नाज़ और फ़ुसूं[२७], अपने भी इश्क़ और जुनूं ।
जाम पुकारे मुंह लगूं, ऐश पुकारे दम न लूं ॥
इसमें रक़ीब बदशगूं[२८] कुछ न बना तो वह ज़ुबूं ।
पिछले ही पहर बनके मुर्ग़, बोला ही आके कुकड़ूं कूं ॥
सुबह के डर से हड़बड़ा, यार ने घर की राह ली ।
हम भी दग़ा में आगए, मुफ्त बहार लुट गई ॥४॥

लूटे हैं क्या ही हमने वाह ! रात मज़े बहार के ।
अंखड़ियों सुर्मे दार के, लाल मिस्सी निगार[२९] के ॥
काकुले[३०] मुश्कबार[३१] के, तुर्रए[३२] ताबदार[३३] के ।
मै के नशों के तार के, फूलों के शाख़सार[३४] के ॥

---

१८. चांदी या सोने के फूल, एक किस्म का जेवर, पांव के छोटे-छोटे घुंघरू १९. किसी स्त्री से प्रेम करने वाले दो व्यक्ति आपस में रक़ीब होते हैं २०. स्वर्ग २१. शुद्ध रूप, बिल्कुल वैसी ही २२. अधोमुख, उलटी, नीचे झुकी हुई २३. चंचल, चुलबुला २४. करतब दिखाने वाला २५. अधिकाधिक २६. पद्मराग जैसे रक्त-वर्ण का २७. जादू २८. अशुभ २९. प्रेयसी, प्रेमपात्र ३०. बालों की लट ३१. कस्तूरी जैसी सुगन्ध फैलाने वाली ३२. अलक, बालों की लट ३३. ज्योतिर्मय ३४. जहां बहुत से पेड़ हों

पाठान्तर—(१) जा० भी हम पे

बांहे गले में यार के, बोसो किनार प्यार के ।
हाथों में गजरे तार के, लच्छे गलों में हार के ।।
भागा रक़ीब हार(१) के, हाथों पे हाथ मार के ।
कुछ न बना तो दी अज़ां, कोठे पे जा पुकार के ।।
सुबह के डर से हड़बड़ा यार ने घर की राह ली ।
हम भी दग़ा में आ गए, मुफ़्त बहार लुट गई ।।५।।

रात हुए(२) थे वाह! वाह! क्या ही नशे रसा-रसा ।
पीते थे मै बसा बसा, फूलों में हम बसा-बसा ।।
शोख़ बग़ल में चांद सा, देता था बोसे हंस हंसा ।
जुल्फ़ों में उसकी दिल फंसा, आनो अदा में जी बसा ।।
जामा बदन में चुसचुसा, फूल हुआ था बस बसा ।
नींदों में यार रसमसा ले था जमाई कसमसा ।।
इसमें रक़ीब करकसा[३५](३) करके सहर का वस्वसा[३६] ।
लाके नक़्क़ारा या दुहल[३७], घूं घूं बजाया कसकसां ।।
सुबह के डर से हड़बड़ा, यार ने घर की राह ली ।
हम भी दग़ा में आगए, मुफ़्त बहार लुट गई ।।६।।

क्या ही "नज़ीर" रात को ऐश के थे मुक़ाबले ।
मै के नशे उबल चले, दिल के पराव़ हौसले ।।
जी पे ख़ुशी के दर खुले रंजोतअब[३९] के हौसले(१) ।
शोख़ के नाज़ चुलबुले, बोसों के थे ये मामले ।।
नाज़ो अदा के चोंचले, ऐशो तरब के गुलगुले ।
यार लिपट रहा गले; दिल में ख़ुशी के वलवले ।।
इसमें रक़ीब दम न ले, बोला ही करके अश़ग़ले[४०] ।
बांधो कमर मुसाफ़िरो, कूच करें हैं क़ाफ़िले[४१] ।।
सुबह के डर से हड़बड़ा, यार ने घर की राह ली ।
हम भी दग़ा में आगए, मुफ़्त बहार लुट गई ।।७।।

---

[३५] लड़ाका [३६] अनिष्ट की शंका, शक, वहम [३७] धोंसा, ढोल [३८] ऊंचे उत्साह [३९] तकलीफ
[४०] अधिक काम धंधे [४१] यात्री-दल

पाठान्तर—(१) जा० यार (२) श० आ० हुई थे (३) जा० गरगसा (१) श० आ० फ़ासले

चांदनी

सहन चमन में वाह ! वाह ! ज़ोर ब्रिछी थी चांदनी ।
चांद हिलोरे लेता था, और खिली थी चांदनी ।
आया था यार गुल(१) बदन पहन के बादला[१] ज़री[२] ।
चमके थी तार तार में, मै की झलक ज़री ज़री ।
बोसो किनार[३] जामो मै ऐशो तरव[४] हंसी ख़ुशी ।
इसमें कहीं से यक बयक, मुर्गे सहर[५] ने बांग दी ।
सुबह हुई गजर बजा, फूल खिले हवा चली ।
यार बगल से उठ गया, जी ही की जी में रह गई ॥१॥

क्या ही मज़ों(२) से ऐश की रात थी कामयाबियां ।
छूटें थी माहताब[६] की नहरो में माहताबियां[७] ।
आगे चुनीं थीं सफ़ व सफ़[८] मै की कई गुलाबियां ।
हमको नशों की मस्तियां, यार को नीम ख़्वाबियां[९] ।
सीनों में इज़तराबियां[१०] आंखों में बे हिजाबियां[११] ।
इसमें फ़लक ने रश्क[१२] से डाली यह कुछ ख़राबियां ।
सुबह हुई गजर बजा, फूल खिले हवा चली ।
यार बग़ल से उठ गया, जी ही की जी मैं रह गई ॥२॥

शव को दिलों में वाह वाह ज़ोर मज़ों के तार थे ।
हमसे दो चार यार था, यार से हम दो चार थे ।
दोनों दिलों में प्यार थे, दोनों गलों में हार थे ।
वस्ल से बेक़रार[१३](३) थे, ऐश के कारोबार थे ।
सीने में आसमान के, तीर हसद[१४] के पार थे ।
एक पलक में नागहां[१५], सब वह मज़े फ़रार[१६](४) थे ।
सुबह हुई गजर बजा, फूल खिले हवा चली ।
यार बग़ल से उठ गया जी ही की जी में रह गई ॥३॥

---

१. सोने या चांदी जैसे तारों से बना हुआ कपड़ा २. सुनहरा कपड़ा ३. चुंबन ४. आनन्द उल्लास ५. सबेरे बोलने वाले पक्षी ६. चांद ७. चांद की किरणें ८, पंक्तिबद्ध ९. कच्ची नींद से जागने की दशा १०. व्याकुलता, बेचैनी ११. बेपर्दगी, घूघंट उठा देना १२. प्रत्यस्पर्द्धा १३. बेचैन १४. ईर्ष्या १५. अकस्मात १६. भागे हुए

पाठान्तर—(१) जा० आया था गुलबदन (२) क़ा० आ० मज़े (३) क़ा० आ० था (४) क़ा० आ० शरार

चांदनी वाह चांदनी, करती थी क्या झलक झलक ।
चहक रही थी बुलबुलें, बाग़ रहा था सब महक ।
जाम के लब से हर घड़ी, निकले थी मै छलक छलक ।
यार बगल में गुंचा लब[१७], बोसों की सू[१८] लपक झपक(१) ।
एशो तरब की लज़्ज़तें होने लगी जो यक बयक ।
ऐसे मज़े में ऐश में आह कहीं से हक न धक ।
सुबह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली ।
यार बग़ल से उठ गया, जी ही की जी में रह गई ।।४।।

एक तरफ तो नूर[१९] में माह रहा था जगमगा ।
एक तरफ वह रश्के मह[२०] मेरी बग़ल में था पड़ा ।
दोनों दिलों में लज़्ज़तें दोनों जियो में ऐश था ।
मै थी गुलाबी हाथ में आंखों में छा रहा नशा ।
होठों से होठ लग रहे सीने से सीना मिल रहा ।
इतने में आह यक बयक क्या ही ग़ज़ब यह हो गया ।
सुबह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली ।
यार बगल से उठ गया, जी ही की जी में रह गई ।।५।।

वाह हुई थीं रात क्या चांदनी की उजालियां ।
झूम रहीं बाग़ में सुम्बुल व गुल की डालियां ।
शोख़ बग़ल में नाज़ से खोले था ज़ुल्फ़ें कालियां ।
ख़ुश हो गले लिपट लिपट देता था मीठी गालियां ।
हम भी नशे में मस्त थे साक़ी की पीके प्यालियां ।
जल के फ़लक ने इसमें हा आफ़तें ला यह डालियां ।
सुबह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली ।
यार बगल से उठ गया, जी ही की जी में रह गई ।।६।।

---

[१७] कली जैसे कोमल गुलाबी होठों वाला/वाली [१८] ओर, तरफ [१९] प्रकाश, ज्योति [२०] चांद को तिरस्कृत करने वाली-वाला

पाठान्तर—(१) क़ा० आ० लपक लपक

क्या ही चमन में शब को वाह बरसी थी नूर की झड़ी ।
तार नशों के थे बंधे लोटी थी चांदनी पड़ी ।
गुंचा दहन था बेख़बर ली थी जो मै कड़ी-कड़ी ।
देता था बोसे प्यार के सीने से मिल घड़ी-घड़ी ।
चश्म से चश्म, लब से लब, छाती से छाती जब लड़ी ।
क्या ही घड़ी थी ऐश की उसमें बला यह आ पड़ी ।
सुबह हुई गजर बजा, फूल खिले हवा चली ।
यार बगल से उठ गया जी ही की जी में रह गई ।।७।।

बाग़ था या कि खिल्द[21] वह, या कि बहिश्त या इरम[22] ।
यार था कि हूर था, या कि परी वह, या सनम ।
चांदनी थी वह चांदनी, चांदी का रंग जिससे कम ।
पीते थे मै घड़ी घड़ी, लेते थे बोसे दम बदम ।
दोनों नशों में मस्त हो, सोये पलंग पे जबकि हम ।
ऐन मज़ा था वस्ल था उसमें "नज़ीर" है सितम ।
सुबह हुई गजर बजा, फूल खिले हवा चली ।
यार बगल से उठ गया, जी ही की जी में रह गई ।।८।।

चांदनी रात

जिस दम चमन में चांद की हों ख़ुश जमालियां ।
और झूमती हों बाग में फूलों की डालियां ।।
बहती हों मै के जोश से इश्रत की नालियां ।
कानों में नाज़नीं के झलकती हों बालियां ।।
ऐशो तरब की धूम नशों की बहालियां ।
जब चांदनी की देखिए ! रातें उजालियां ।।२।।

बैठी हो चांदनी सी वह जो सुर्ख़ गुलइज़ार ।
और बादले का तन में झलकता है तार-तार ।।
हाथों में गजरा, कान में गुच्छे, गले में हार ।
हर दम नशे में प्यार से हंस-हंस के बार-बार ।।
हम छेड़ते हों उसको वह देती हो गालियां ।
जब चांदनी की देखिए ! रातें उजालियां ।।२।।

---

[21] जन्नत, स्वर्ग [22] स्वर्ग

ऐसी ही चांदनी की बनाकर वह फबन ।
चम्पाकली जड़ाऊ वह हीरे का नौ रतन ॥
गहने से चांदनी के झमकता हो गुल बदन ।
और चांद की झलक से वह गोरा सा उसका तन ॥
दिखला रहा हो कुर्ता औ अंगिया की जालियां ।
जब चांदनी की देखिए ! रातें उजालियां ॥३॥

दी हो इधर तो चांद ने और चांदनी बिछा ।
उधर वह चांदनी सा जो वह सुर्ख़ महलक़ा ॥
मै की गुलाबियां भी झलकती हों जा बजा ।
और नाज़नीं नशे में सुराही उठा-उठा ॥
देती हो अपने हाथ से भर-भर के प्यालियां ।
जब चांदनी की देखिए ! रातें उजालियां ॥४॥

वह गुलबदन कि हुस्न का जिसके मचा हो शोर ।
करती हो बैठी नाज़ से सौ चांदनी पे ज़ोर ॥
छल्ले भी उँगलियों में झलकते हों पोर-पोर ।
हम भी हों पास शोख़ के ज्यों चांद औ चकोर ॥
दोनों गले में प्यार से बाहें हों डालियां ।
जब चांदनी की देखिए ! रातें उजालियां ॥५॥

गुलशन में बिछ रहा हो रुपहला सा इक पलंग ।
होती हो उस पलंग उपर उल्फ़तों की जंग ॥
उस वक्त ऐसे होते हों ऐशो तरब के रंग ।
जो चांदनी में देखके इश्रत के रंग ढंग ॥
मै से भी झमकें ऐश की हों दिल में डालियां ।
जब चाँदनी की देखिए ! रातें उजालियां ॥६॥

ईधर तो हुस्ने बाग़ उधर चांद की झलक ।
ऊधर वह नाज़नीं भी नशे में रही चहक ॥
देती हो बोसा प्यार से हरदम चहक-चहक ।
हर आन बैठती हो बग़ल में सरक-सरक ॥
मुंह पै नशों की सुर्ख़ियां आंखों में लालियां ।
जब चांदनी की देखिए ! रातें उजालियां ॥७॥

निखरा हो चांद नूर में ढलती चली हो रात ?
फूलों की बास आती हो हरदम हवा के साथ ॥
वह नाज़नीं कि चांद भी होता है जिससे मात ।
बैठी हो सौ बनाव से डाले गले में हाथ ॥
गाती हो और नशे में बजाती हो तालियां ।
जब चांदनी की देखें ! रातें उजालियां ॥८॥

आकर इधर तो चांदनी छिटकी हो दिल पज़ीर ।
और उस तरफ बग़ल में जो हो अचपली शरीर ॥
दिल उस परी के नाज़ो अदा बीच हो असीर ।
ले शाम से सहर तईं ऐश हो "नज़ीर" ॥
सब दिल की हस्रतें हों खुशी से निकालिआं ।
जब चांदनी की देखें ! रातें उजालियां ॥९॥

अंधेरी रात

लाती है जब अपनी यह शुरूआत अंधेरी ।
करती है उजाले के तईं मात अंधेरी ।
देती है ग़रीबों को मुकाफ़ात[1] अंधेरी ।
दिखलाती है खूबां की मुलाकात अंधेरी ।
हर ऐश की करती हैं इनायात[2] अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ॥१॥

जिस वक़्त हुई रात अंधेरे से धुआं धार ।
जो शोख़ मिला, शौक़ से, जा भिड़ गए ललकार ।
गर इसमें कहीं शोर या ग़ुल हुआ एक बार ।
इधर से उधर हो गए दो चार क़दम मार ।
पर(१) लाती है इस ढब की मुहिम्मात[3] अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ॥२॥

---

१. गुनाह की सजा, पाप का दण्ड २. कृपा ३. बड़े-बड़े काम

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ बर

जब यार चला ओढ़ के काला सा दुशाला ।
कम्बल को इधर हमने भी कांधे पै संभाला ।
जा मिल गए और दिल का भी अरमान निकाला ।
मुंह उसके रक़ीबों[४] का किया ख़ूब सा काला ।
क्या वस्ल की रखती है करामात अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।३।।

कल यार ने और हमने जो पी मै भी गुलाबी ।
और ऐश लगे करने जो हो, हो के शराबी ।
इतने में रक़ीब आ गया, बू सूंघ शिताबी[५] ।
गर चांदनी होती तो बड़ी होती ख़राबी ।
टाले है सब आई हुई आफ़ात[६] अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।४।।

सोते थे जो हम इसमें सुने गैर के खटके ।
छुप-छुप गए उठ दोनों वहीं नीचे पलंग के ।
हम हंसते रहे उसने ढबक ढब्बे जो मारे ।
कितना ही टटोला जो उजाला हो तो पावे ।
चोरी की भी रख लेती है क्या बात अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।५।।

मामूल[७] है जब चांद का छुपता है उजाला ।
होता है अजब खेल परी[८] रू से दोबाला ।
महबूब परी शक्ल सुराही व प्याला ।
ने रोकने वाला न कोई टोकने वाला ।
इस लूट की करती है मदारात अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।६।।

जिस कूँचे में चाहा वहीं करने लगे फेरी ।
बैठे कहीं उठ्ठे, कहीं जल्दी, कहीं देरी ।
और इसमें कहीं मिल गई गर हुस्न को ढेरी ।
फिर जब तू न कह मेरी, न मैं कुछ कहूं तेरी ।
काम ऐश के लाती है लगा साथ अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।७।।

---

[४] किसी स्त्री से प्रेम करने वाले दो व्यक्ति आपस में रकीब होते हैं [५] शीघ्रता से [६] आफतें, मुसीबतें
[७] दस्तूर, नियम [८] परी की तरह सुन्दर

था शोख़[९] से कल रात अजब सैर का खटका ।
बोसों की मुदारात[१०] का सीनों की लिपट का ।
आया जो चुग़ल ख़ोर तों बंदा वहीं सटका ।
वह टक्करें खाता हुआ, फिरता रहा भटका ।
रद करती है सब सर की बल्लियात[११] अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।८।।

थी शब को अंधेरी तो अजब ढब की "नज़ीर" आह ।
सौ ऐशो तरब से थे हम उस यार के हमराह ।
निकले थे हमें ढूँढ़ने उस दम कई बदख़्वाह ।
मिल-मिल भी गए तो भी न देखा हमें वल्लांह ।
क्या ऐश की रखती है तिलस्मात अंधेरी ।
काम आती है आशिक़ के बहुत रात अंधेरी ।।९।।

आंधी

न हो क्यूंकर जहां यारो, ज़बर और ज़ेर[१] आंधी में ।
कि होकर बावले फिरते हैं, बनके शेर आंधी में ।
लगा लेते जो कल दामन हवा का घेर आंधी में ।
बगूले उठ चले थे, और न थी कुछ देर आंधी में ।
कि हमसे यार से आ हो गई मुठभेड़ आंधी में ।।१।।

कहा मैंने अजी कुछ ख़ैर है जाते हो तुम किधर ।
हवा पर भी तुम्हें कुछ है नज़र ऐ नाज़नीं[२] दिलबर[३] ।
चलो भागो, शिताबी[४], वर्ना आंधी आ गई सिर पर ।
जता कर ख़ाक का उड़ना दिखाकर गर्द का चक्कर ।
वहीं हम ले चले उस गुल बदन को घेर आंधी में ।।२।।

---

९. चंचल १०. आवभगत, सम्मान ११. विपत्तियां, आपदाएं
१. ऊँच-नीच २. नाज़ुक, मृदुल, कोमल ३. प्रेमपात्र, माशूक ४. शीघ्रता से

यह सुनते ही फिरी डर कर वह चंचच नाज़नीं गुलरो[५] ।
चली इस चाल से उस(१) दम कि मेरा जी गया ग़श हो ।
कि इसमें आके एक झोंका, अंधेरा कर गया यारो ।
रक़ीबों ने जो देखा, यह उड़ाकर ले चला उसको ।
पुकारे "हाय" यह कैसा हुआ अंधेर आंधी में ॥३॥

यह कहकर खड़खड़ा, तेगोसिपर[६] और मिल के सब दौड़े ।
पुकारे ले चलो जाने न पावे इसको जल्दी से ।
कहां का दौड़ना(२) और किसका लेना, हम जो धर भागे ।
वह दौड़े तो बहुत, लेकिन उन्हें आंधी में क्या सूझे ।
जबसे हम उस परी को लाये घर में घेर आंधी में ॥४॥

चले उसमें हवा के फिर तो आकर और सन्नाटे ।
अंधेरा हो गया यकसर[७] मनों ख़ाकें लगीं उड़ने ।
उन्हीं झोकों में हमने उस परी चंचल को जल्दी से ।
चढ़ा कोठे पे, दरवाजे को मूंद, और खोलकर पर्दे ।
लगा छाती, लिये बोसे, किया हथफेर आंधी में ॥५॥

इधर तो आके आंधी से अंधेरा हो गया हरसूं[८] ।
खबर किसको किसी की, मैं कहां हूं और कहां है तू ।
अहा ! हा ! हा ! अजब इश्रत की इसदम बह गई इक जू ।
वह कोठे का मकां, वह काली आंधी, वह सनम गुलरू ।
अजब रंगों की ठहरी आके हेराफेर आंधी में ॥६॥

उसी आंधी ने गुलशन कर दिया यारो मेरे घर को ।
बिछाया शाद हो मैंने पलंग पर झाड़ बिस्तर को ।
सुराही की ख़बर ली, और संभाला जाके साग़र को ।
उठाकर ताक़ से शीशा लगा छाती से दिलवर को ।
नशों में ऐश के क्या ! क्या ! किया दिल शेर आंधी में ॥७॥

---

५. फूल जैसे सुन्दर मुख वाली ६. ढाल तलवार ७. नितान्त ८. हर तरफ़

पाठान्तर—(१) क़ा० आ० हाल (२) क़ा० श० आ० वह भला

चमन सा खिल गया यारो ! मेरे कोठे के ज़ीने पर ।
हुई पंखों की मारामार गर्मी के पसीने पर ।
लगे फिर ऐशो इश्रत जब तो होने इस करीने पर ।
कभी बोसा, कभी अंगिया पे हाथ और गाह सीने पर ।।
लगे लुटने मज़े के संतरे और बेर आंधी में ।।८।।

यह ठहरा जब तो फिर वां ऐश के बादल लगे घिरने ।
जो डूबी हस्रतें थीं दिल में सब उस दम लगीं तरने ।
लिपट की ठहरी और भी हाथ सीने पर लगे फिरने ।
मज़े ऐशो तरब, लज़्ज़त लगे यों लौटकर करने ।
कि जैसे टूट कर मेवों के फैले ढेर आंधी में ।।९।।

उस आंधी में अहा ! हा ! हा ! अजब हमने मज़े मारे ।
फलक[९] पर ऐशो इश्रत के दिखाई दे गए तारे ।
रक़ीबों की मैं अब ख़्वारी, ख़राबी क्या लिखूं बारे ।
तले कोठे के बैठे अट गए सब गर्द के मारे ।
भरी नथनों में उनके खाक दस-दस सेर आंधी में ।।१०।।

किसी ने भाग कर जल्दी से, जा घर का लिया आंगन ।
गिरा कोई गढ़े में और कोई भागा कहीं दुश्मन ।
किसी के छिन गए कपड़े, उचक्कों की गई वां बन ।
किसी की उड़ गई पगड़ी किसी का फट गया दामन ।
गई ढाल और किसी की गिर पड़ी शमशेर आंधी में ।।११।।

यह दिन आंधी के यारो ! यूं तो सबके होश खोते हैं ।
जिन्हें हैं ऐश वह आंधी में मोती से पिरोते हैं ।
मज़ा है जिनको हंसते हैं जिन्हें ग़म है सो रोते हैं ।
"नज़ीर" आंधी में कहते हैं कि अक्सर देव होते हैं ।
मियां ! हमको तो ले जाती हैं परियां घेर आंधी में ।।१२।।

---

[९] आकाश

शबे ऐश (झड़ी)

रात लगी थी वाह वाह क्या ही बहार की झड़ी ।
मौसम ख़ुश बहार था अब्रो[1] हवा की धूम थी ।
शमओ[2] चिराग, गुल बदन[3], बारह दरी थी बाग की ।
यार बग़ल में गुंचा लब[4], रात अंधेरी झुक रही ।
मेंह के मज़े, हवा के गुल, मै के नशे घड़ी-घड़ी ।
इसमें कहीं से है(१) सितम, ऐसी एक आ पवन चली ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदे थमीं, सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह बहार वह गई ।।१।।

शब को हुई अहा अहा ! ज़ोर मज़ों की मस्तियां ।
बिजली की शक्लें हस्तियां(२) बूंदें पड़ी बरस्तियां ।
सब्ज दिलों की बस्तियां जिन्स[5] खुशी की सस्तियां ।
धूम जियों में बस्तियां, चुहलें निराली उकस्तियां ।
इसमें फ़लक ने यक बयक, लूटीं दिलों की बस्तियां ।
सारे नशे वह लुट गए खो गई मै परस्तियां ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदें थमीं सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह बहार बह गई ।।२।।

बरसें थी क्या ही झूम-झूम रात घटाएं कालियां ।
कोयलें बोलीं कालियां, बह चले नाले नालियां ।
बिजलियों की उजालियां, बारह दरी की जालियां ।
ऐश की झूमीं डालियां, बाहें गलों में डालियां ।
चलती थीं मै की प्यालियां, मुंह पे नशों की लालियां ।
इसमें फलक ने दौड़कर सब वह हवाएं खालियां ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदें थमीं, सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह बहार बह गई ।।३।।

---

१. बादल २. मोमबत्ती, दीपक, चिराग ३. फूल जैसे कोमल और मृदुल अंगों वाला ४. कली जैसे कोमल मृदुल और गुलाबी होठों वाला/वाली ५. चीज़ें

पाठान्तर—(१) क़ा० हाय (२) क़ा० जा० बनतियां

अब्रो[6] हवा के वाह वाह, शब को अजब ही ज़ोर थे ।
भीग रहा था सब चमन, मेंह के झड़ाके ज़ोर थे ।
ग़ोक[7] पपीहे मोर थे, झींगरों के भी शोर थे ।
बादा कशी[8] के दौर थे, ऐशो तरब के छोर थे ।
बाग़ से ताबा बाग़बां, जितने थे शोर बोर थे ।
आ पड़े इसमें नागहां[9], यह जो ख़ुशी के चोर थे ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदें थमीं सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह वहार बह गई ।।४।।

चार तरफ़ से अब्र की वाह उठी थी क्या घटा ।
बिजली की जगमगाहटें राद[10] रहा था गड़गड़ा ।
बरसे था मेह भी झूम-झूम, छाजों उमंड़ उमंड़ पड़ा ।
झोके हवा के चल रहे, यार बग़ल में लोटता ।
हम भी हवा की लहर में पीते थे मै बढ़ा बढ़ा ।
देख हमें इस ऐश में, सीना फलक का फट गया ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदें थमीं सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह बहार वह गई ।।५।।

ज़ोर मज़ों से रात को बरसे था मेह झमक-झमक ।
बूंदें पड़ी टपक-टपक पानी पड़े झपक-झपक ।
जाम रहे छलक-छलक शीशे रहे भबक-भबक ।
यार बग़ल में बानमक[11] ऐशो तरब थे बेधड़क ।
हम भी नशों में ख़ूब छक लोटते थे बहक-बहक ।
क्या ही समां था ऐश का, इतने में आह यक बयक ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदें थमीं सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह बहार बह गई ।।६।।

क्या ही मज़ा था वाह वाह, अब्रो हवा का यारो कल ।
बरसे था मेंह संभल-संभल, आगे रही थी शम अजल ।
ऐशो[12] निशात[13] बरमहल[14], बारह दरी का था महल ।
शोख़ से भर रही बग़ल, दिल में क़रार[15] जी में कल ।

---

[6] बादल, मेघ [7] दादुर, मेंढक [8] मद्यपान, शराब पीना [9] अकस्मात [10] बादलों का देवता [11] मज़ेदार [12] आराम [13] खुशी [14] ठीक मौके पर [15] चैन, आराम

पीते थे मै मचल-मचल, लेते थे बोसे पल व पल ।
इसमें "नज़ीर" यक बयक, आके ये मच गए ख़लल ।
अब्र खुला, हवा घुटी, बूंदें थमीं, सहर हुई ।
पहलू से यार उठ गया, सब वह बहार वह गई ॥७॥

बरसात और फ़िसलन

बरसात का जहान में लश्कर फिसल पड़ा ।
बादल भी हर तरफ़ से हवा पर फिसल पड़ा ।
झड़ियों का मेह भी आके सरासर फिसल पड़ा ।
छज्जा किसी का शोर मचा कर फ़िसल पड़ा ।
कोठा झुका अटारी गिरी(१) दर[1] फ़िसल पड़ा ॥१॥

जिनके नये-नये थे मकां और महल सरा ।
उनकी छतें टपकती हैं छलनी(२) हो जा बजा ।
दीवारें बैठती हैं छल्लों[2](३) का गुल मचा ।
लाठी को टेक कर जो सुतूं[3] है खड़ा किया(४) ।
छज्जा गिरा मुंडेरी का पत्थर फिसल पड़ा ॥२॥

झड़ियों ने इस तरह का दिया आके झड़ लगा ।
सुनिये जिधर उधर है धड़ाके ही की सदा ।
कोई पुकारे है मेरा दरवाज़ा गिर चला ।
कोई कहे है "हाय" कहूं तुमसे अब मैं क्या(१) ?
"तुम दर को झींकते हो मेरा घर फिसल पड़ा ॥३॥"

---

[1] दरवाजा [2] एक तरफ से पक्की और दूसरी तरफ से कच्ची दीवार [3] खम्भा

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० झुकी (२) का० चलनी (३) क़ा० छलों छलों का है (४) क़ा० श० आ० खड़ा तो किया (५) क़ा० जा०कहो मैं बताऊं क्या

बारां[४] जब आके पुख़्ता मकां के तईं हिलाय ।
कच्चा मकां फिर उसकी भला क्योंकि ताव लाय ।
हर झोपड़े में शोर है हर घर में हाय हाय ।
कहते हैं "यारो, दौड़ियो, "जल्दी से" वाय वाय ।
पाखे[५] पछीत[६] सो गए छप्पर फिसल पड़ा ॥४॥

आकर गिरा है आय किसी रंडी का जो मकां ।
और उसके आशना की भी छत गिरती है जहां ।
कहता है ठट्ठे बाज़ हर एक उनसे आके वां ।
क्या बैठे छत को रोते हो तुम ऐ मियां यहां ।
वां चित[७](२) लगन का आपके सब घर फ़िसल पड़ा ॥५॥

यां तक हर एक मकां के फिसलने(३) की है ज़मीं ।
निकले जो घर से उसको फिसलने का है यक़ीं ।
मुफ़्लिस[८]-ग़रीब पर ही यह मौक़ूफ़[९] कुछ कुछ नहीं ।
क्या फ़ील[१०] का सवार है क्या पालकी नशीं[११] ।
आया जो इस ज़मीन के ऊपर फिसल पड़ा ॥६॥

देखो जिधर तिधर को यही ग़ुल पुकार है ।
कोई फंसा है और कोई कीचड़ में ख़्वार है ।
प्यादा उठा जो मरके, तो पिछड़ा सवार है ।
गिरने की धूमधाम यह कुछ बे शुमार है ।
जो हाथी रपटा, ऊंट गिरा, खर[१२] फिसल पड़ा ॥७॥

चिकनी ज़मी पै यां कहीं कीचड़ है बेशुमार ।
कैसा ही होशियार पै फिसले है एक बार ।
नौकर का बस कुछ उसमें न आक़ा का इख़्तियार ।
क़ूंचे गली में हमने तो देखा है कितनी बार ।
आक़ा जो डगमगाए तो नौकर फिसल पड़ा ॥८॥

---

४. बरसात ५. दीवार ६. पीछे का ७. प्यारी ८. गरीब ९. निर्भर, त्यक्त १०. हाथी ११. पालकी में बैठा हुआ १२. गधा १३. मालिक

पाठान्तर-- (२) जा० चित (३) श० आ० फिसलने

कूंचे में कोई, और कोई बाज़ार में गिरा ।
कोई गली में गिर के है कीचड़ में लोटता ।
रस्ते के बीच पांव किसी का रपट गया ।
उस सब जगह के गिरने से आया जो बच बचा ।
वह अपने घर के सहन में आकर फिसल पड़ा ॥९॥

दलदल जो हो रही है हर एक जा पै रसमसी ।
मर मर उठा है मर्द तो औरत रही फंसी ।
क्या सख्त मुश्किलात हैं क्या सख्त बेकसी ।
उसकी बड़ी खराबी हुई और बड़ी हंसी ।
जो अपने जा ज़रूर के अन्दर फिसल पड़ा ॥१०॥

करती है गरचे सबको फिसलनी ज़मीन ख़्वार ।
आशिक़ को पर दिखाती है कुछ और ही बहार ।
आया जो सामने कोई मेहबूब गुलइज़ार[१४] ।
गिरने का मक्र[१५] करके उछल कूद एक बार ।
उस शोख़[१६] गुलबदन से लिपट कर फ़िसल पड़ा ॥११॥

कीचड़ से हर मकान की तो बचता बहुत फिरा ।
पर जब दिखाई दी खुले बालों की एक घटा ।
बिजली भी चमकी हुस्न की मेंह बरसा नाज़ का ।
फिसलन जब ऐसी आई तो फिर कुछ न बस चला ।
आखिर को वां "नज़ीर" भी जाकर फिसल पड़ा ॥१२॥

बरसात का तमाशा

अहले सुखन को हैगा, एक बात का तमाशा ।
और आरिफ़ों[१] की ख़ातिर है ज़ात[२] का तमाशा ।

---

१४. फूल जैसे कोमल गालों वाला १५. बहाना १६. चंचल
१. ज्ञानी २. अस्तित्व

दुनियां के साहिबों को दिन रात का तमाशा ।
हम आशिक़ों को हैगा, सब घात का तमाशा ।
आ यार ! चलके देखें, बरसात का तमाशा ॥१॥

ख़ुर्शीद[3] गर्म होकर निकला है अपने घर से ।
लेता है मोल बादल कर कर तलाश ज़र से ।
कोई हवा भी लेकर, बादल को हर नगर से ।
आधे असाढ़ तो अब, दुश्मन के घर से बरसे ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥२॥

क़ासिद[4] सबा[5] के दौड़े, हरतरफ़ मुंह उठा कर ।
हर कोहो[6] दश्त[7] को भी, कहते हैं यूं सुनाकर ।
हां सब्ज जोड़े पहनो, हर दम नहा नहा कर ।
कोई दम को मेघ राजा, देखेगा सबको आकर ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥३॥

जब यह नवेद[8] पहुंची, सहरा[9] में एक बारी ।
होने लगी वहां फिर, बरसात की तयारी ।
चश्मों[10] में कोह[11] के भी, हुई सबकी इन्तिज़ारी ।
मौसम के जानवर भी आते हैं बारी बारी ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥४॥

सावन के(१) बादलों से फिर आ घटा जो छाई ।
बिजली ने अपनी सूरत, फिर आन कर दिखाई ।
हो मस्त राद[12] गरजा, कोयल की कूक आई ।
बदली ने क्या मज़े की रिम झिम झड़ी लगाई ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥५॥

जिन साहिबों के दिल को कुछ ऐश से है बहरा ।
वह इस हवा में जाकर, देखें है कोहो सहरा ।
हर तरफ़ आब सब्ज़ा और गुल बदन सुनहरा ।
जंगल में आज मंगल, किस किस तरह का लहरा ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥६॥

---

३. सूरज ४. दूत ५. ठंडी हवा ६. पहाड़ ७. जंगल ८. शुभ सूचना ९. जंगल १०. झरना ११. पहाड़ १२. बादलों का देवता

पाठान्तर—(१) ज़ा० ने

कोई अपने दिलरुबा[13] से कहता है "देखें जंगला" ।
"चीरे[14] को तू गुलाबी", या गुल अनार रंग ला ।
और साग़रो सुराही मै की तू अपने संग ला ।
पी पी नशों में सैरें, देखें बनाके बंगला ।
आ यार ! चलके देखें, बरसात का तमाशा ।।७।।

हरगुलबदन के तन में पोशाक़ है इकहरी ।
पगड़ी गुलाबी, हलकी, या गुल अनार गहरी ।
सहने चमन में है जो, बारह दरी सुनहरी ।
उसमें सभों की आकर है बज़्मे ऐश ठहरी ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ।।८।।

माशूक आशिक़ों में क्या बज़्म बानमक है ।
शीशा, गुलाबी, साक़ी और जाम और गज़क है ।
झंकार ताल की है और तबले की खड़क है ।
गौरी, मलार के साथ आवाज़ की गमक(१) है ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ।।९।।

आकर कहीं मज़े की(२) नन्हीं फुहार बरसे ।
चीरों का रंग छुटकर हुस्नो निगार बरसे ।
एक तरफ औलती[15] की, बाहम क़तार बरसे ।
छाजों उमंड के पानी, मूसल की धार बरसे ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ।।१०।।

हर कोह की कमर तक, सब्ज़ा है लहलहाता ।
बरसे है मेंह झड़झड़, पानी बहा है जाता ।
बहशो[16] तयूर[17] हर इक मल-मल के है नहाता ।
गू गां करे हैं मेंढ़क, झींगुर है गुल मचाता ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ।।११।।

---

१३. प्रियपात्र १४ पगड़ी १५. औलाती छप्पर के नीचे का भाग १६. जंगली जानवर
१७. चिड़ियां, पक्षी

पाठान्तर—(१) क़ा० कमक (२) क़ा० के

गुलशन में आ फिरे हैं, सब गुल बदन नुकीले ।
साथ उनके लग रहे हैं, आशिक़ जो हैं रंगीले ।
कहता कोई किसी से "ऐ दिलरुबा हटीले ।
एक ही गुलाबी मै की हाथों से मेरे पीले" ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥१२॥

काली घटा है हर दम बरसें है मेह की धारें ।
और जिसमें उड़ रही हैं बगलों की सौ कतारें ।
कोयल पपीहे कूकें, और कूक कर पुकारें ।
और मोर मस्त होकर जूं कोकिला चिंघारें(१) ।
आ यार ! चलके देखें, बरसात का तमाशा ॥१३॥

काली घटाएं आकर, हो मस्त तुल रही हैं ।
दस्तारें सुर्ख़ उसमें, क्या खूब खुल रही हैं ।
रुख़सारों[१८] पर बहारें, हर इक के ढुल रही हैं ।
शबनम[१९] की बूंदें जैसे, हर गुल पे तुल रही हैं ।
आ यार ! चलके देखें, बरसात का तमाशा ॥१४॥

सावन की काली रातें और बर्क़[२०] के इशारे ।
जुगनू चमकते फिरते, जूं आसमां पे तारे ।
लिपटे गले से सोते, माशूक माह[२१] पारे ।
गिरती है छत किसी की, कोई खड़ा पुकारे ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥१५॥

हाथों में हैं हर इक के फूलों की लाल छड़ियां ।
बिजली चमकती फिरती, और लग रही हैं झड़ियां ।
कुल बूंदों के जो ऊपर, बूंदें हैं मेंह की पड़ियां ।
बरसें गोया हज़ारों, अब मोतियों की लड़ियां ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥१६॥

---

[१८] गाल [१९] ओस [२०] बिजली [२१] चांद के टुकड़े

पाठान्तर—क़ा० श० चिगारें

हर एक उनमें बेहतर महबूब गुल बदन है ।
ख़ूबी में बर्ग गुल[22] से बेहतर हर एक का तन है ।
तिस पर यह अब्र[22] बारां, और गुल है और चमन है ।
आशिक़ के दिल से पूछो क्या ऐश का चलन है ।
आ यार ! चलके देखें, बरसात का तमाशा ॥१७॥

शहरों के बीच हर जा, उम्दों के जो मकां हैं ।
बारां[24] के देखने की बामो अटारियां[25] हैं ।
बैठे हुए बग़ल में, माशूक़ दिल सतां हैं ।
हर रंग हर तरह की मै की गुलाबियां हैं ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥१८॥

बंगले सभों ने(१) हरजा, ऊंचे छवाए ज़र्दे[26] ।
मेवे, मिठाई, अम्बा, अंगूर और सर्दे ।
पकवान ताज़े ताज़े, ख़ासे पुलाव ज़र्दे ।
बरसे है अब्र बारां[27], खुलवा दिये हैं पर्दे ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥१९॥

अब शहर में जहां तक ओबाश[28] पेशावर हैं ।
बैठे दुकान ऊपर, बे खौफ़ो बे खतर हैं ।
माशूक हैं बग़ल में, महबूब सीम[29] बर हैं ।
और सब ग़रीबो–गुरबा, दिलशाद अपने घर हैं ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥२०॥

आगे दुकां के नाला है मौज मार चलता ।
आ़लम तरह तरह का आगे से है निकलता ।
कोई छपकता पानी और कोई है फिसलता ।
ठट्ठा है और मज़ा है आबे अनब[30] है ढलता ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ॥२१॥

---

२२. गुलाब की पंखड़ी २३. बरसता हुआ बादल २४. बरसात २५. छत्त, अटारी २६. हरे २७. बरसात का बादल २८. बदमाश २९. चांदी जैसी गोरी और सख्त वक्षस्थल वाली नायिका ३०. अंगूरी शराब

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० के

मामूर[३१] हैं जहां की सब ताल और तलैयां ।
सब भर रहा है पानी हो नहर या नहरियां(१) ।
और डालियां चमन की बूंदों से झुक हैं रहियां ।
बादल भरे हैं जैसे माशूक़ हैं दो गनियां ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ।।२२।।

है जो "नज़ीर" जिसकी(२) धूमें उकस्तियां हैं ।
सबसे ज़्यादा उसको, अब ऐश मस्तियां हैं ।
माशूक़ हैं बग़ल में, और मै परस्तियां हैं ।
शेरों से मोतियों की बूंदें बरस्तियां हैं ।
आ यार ! चलके देखें बरसात का तमाशा ।।२३।।

बरसात की बहारें

हैं इस हवा में क्या-क्या बरसात की बहारें ।
सब्जों की लहलहाहट, बाग़ात की बहारें ।
बूंदों की झमझमाहट, क़तरात की बहारें ।
हर बात के तमाशे, हर घात की बहारें ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ।।१।।

बादल हवा के ऊपर, हो मस्त छा रहे हैं ।
झाड़ियों की मस्तियों से धूमें मचा रहे हैं ।
पड़ते हैं पानी हरजा[१], जल थल बना रहे हैं ।
गुलज़ार[२] भीगते हैं सब्ज़े नहा रहे हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ।।२।।

---

[३१] भरी हुई

[१] हर जगह [२] बाग

पाठान्तर—(१) श० सैर अम्बरियां (२) श० आ० जिनकी, जा० जी में

मारे हैं मौज डाबर, दरिया उमंड़ रहे हैं ।
मोरो पपीहे कोयल, क्या क्या रुमंड़ रहे हैं ।
झड़ कर रही हैं झड़ियां नाले उमंड़ रहे हैं ।
बरसे हैं मेंह झड़ाझड़, बादल घुमंड़ रहे हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३॥

जंगल सब अपने तन पर, हरियाली सज रहे हैं ।
गुल फूल झाड़ बूटे कर अपनी धज कर रहे हैं ।
बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं ।
अल्लाह के नक़ारे, नौबत के बज रहे हैं ।
क्या-क्या मची है यारो बरसात की बहारें ॥४॥

बादल लगा टकोरें नौबत की गत लगावें ।
झींगर झंगार अपनी सुरनाइयां बजावें ।
कर शोर मोर बगले, झड़ियों का मुंह बुलावें ।
पी पी करें, पपीहे, मेंढ़क मल्हारें गावें ।
क्या क्या मची है, यारो बरसात की बहारें ॥५॥

हर जा बिछा रहा है सब्ज़ा हरे बिछौने ।
क़ुदरत के बिछ रहे हैं,(१) हर जा हरे बिछौने ।
जंगलों में हो रहे हैं पैदा हरे बिछौने ।
बिछवा दिये हैं हक़ ने क्या-क्या हरे बिछौने ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥६॥

सब्जों की लहलहाहट कुछ अब्र[३] की सियाही ।
और छा रही घटाएं, सुर्ख़ और सफ़ेद, काही ।
सब भीगते हैं घर-घर, ले माह ताब[४] माही[५] ।
यह रंग कौन रंगे, तेरे सिवा इलाही ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥७॥

---

[३] बादल [४] चांद [५] मछली आकाश से पाताल तक

पाठान्तर—(१) क़ा० श० जा० बुलावें

क्या-क्या रखे है या रब, सामान तेरी क़ुदरत ।
बदले हैं रंग क्या-क्या, हर आन तेरी क़ुदरत ।
सब मस्त हो रहे हैं, पहचान तेरी क़ुदरत ।
तीतर पुकारते हैं, "सुब्हान तेरी क़ुदरत ।"
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥८॥

कोयल की कूक में भी, तेरा ही नाम हैगा ।
और मोर की जटल[६] में तेरा पयाम हैगा ।
यह रंग सौ मज़े(१) का जो सुबहो शाम हैगा ।
यह और का नहीं है तेरा ही काम हैगा ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥९॥

बोलें बये बटेरें, क़ुमरी पुकारें कू कू ।
पी पी करें पपीहा, बगुले पुकारें तू तू ।
क्या हुदहुदों की हक़ हक़, क्या फ़ाख़्तों की हू हू ।
सब रट रहे हैं तुझको क्या पंख क्या पखेरू ।
क्या-क्या मची है यारो बरसात की बहारें ॥१०॥

जो मस्त हों उधर के कर शोर नाचते हैं ।
प्यारे का नाम लेकर क्या ज़ोर नाचते हैं ।
बादल हवा से गिर गिर, घनघोर नाचते हैं ।
मेंढ़क उछल रहे हैं, और मोर नाचते हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥११॥

फूलों की सेज ऊपर सोते हैं कितने बन बन ।
सोहैं गुलाबी जोड़े फूलों के हार अबरन ।
कितनों को घर है खाता सूना लगे है आंगन ।
कोने से पड़ रही हैं सर यूं लपेटे सोगन[८] ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१२॥

---

[६]. मोर की आवाज़ [७]. संदेश [८]. शोक में डूबी हुई ।

पाठान्तर—(२) क़ा० जा० बड़े

जो ख़ुश हैं वह ख़ुशी में काटें हैं रात सारी ।
जो ग़म में हैं उन्हों पर, गुज़रे है रात सारी ।
सीनों से लग रही हैं, जो हैं पिया की प्यारी ।
छाती फटे है उनकी, जो हैं विरह की मारी ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१३॥

जो वस्ल में हैं उनके जोड़े महक रहे हैं ।
झूलों में झूलते हैं, गहने झमक(१) रहे हैं ।
जो दुख में हैं उनके सीने फड़क रहे हैं ।
आहें निकल रही हैं, आंसू टपक रहे हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१४॥

अब बिरहनों के ऊपर है सख़्त बेकरारी ।
हर बूंद मारती है सीने उपर कटारी ।
बदली की देख सूरत कहती है बारी बारी ।
हैं हैं न ली पिया ने अबके भी सुध हमारी ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१५॥

जब कोयल अपनी उनको आवाज है सुनाती ।
सुनते ही ग़म के मारे छाती है उमड़ी आती(२) ।
पी पी की धुन को सुनकर बेकल है कहती जाती ।
मत बोल ऐ पपीहे, फटती है मेरी छाती ।
क्या-क्या मची है यारो बरसात की बहारें ॥१६॥

है जिनकी सेज सूनी और खाली चारपाई ।
रो रो उन्होंने हर दम, यह बात है सुनाई ।
परदेशी ने हमारी अबके भी सुध भुलाई ।
अबके भी छावनी जा, परदेश में ही छाई ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१७॥

कितनों ने अपनी ग़म से अब है यह गत बनाई ।
मैले कुचैले कपड़े, आखें भी डबडबाई ।
ने घर में झूला डाला, ने ओढ़नी रंगाई ।
फूटा पड़ा है चूल्हा, टूटी पड़ी कढ़ाई ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१८॥

पाठान्तर—(१) जा० चमक (२) क़ा० जा० उमड़ी जाती

गाती है गीत कोई, झूले पे करके फेरा ।
"मारू जी, आज कीजै यां रैन का बसेरा ।"
है खुश कोई, किसी को है(१)दर्दो ग़म ने घेरा ।
मुंह ज़र्द[९], बाल बिखरे, और आंखों में अंधेरा ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥१९॥

और जिनको अब मुहय्या, हुस्नों की ढ़ेरियां हैं ।
सुर्ख़ और सुनहरे कपड़े, इश्रत की घेरियां हैं ।
महबूब दिलबरों की ज़ुल्फ़ें बिखेरियां हैं ।
जुगनू चमक रहे हैं, रातें अंधेरियां हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२०॥

कितने तो भंग पी पी, कपड़े भिगो रहे हैं ।
बाहें गलों में डाले झूलों में सो रहे हैं ।
कितने विरह के मारे, सुध अपनी खो रहे हैं ।
झूले की देख सूरत, हर आन रो रहे हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२१॥

बैठे हैं कितने ख़ुश हो, ऊंचे हवा के बंगले ।
पीते हैं मै के प्याले, और देखते हैं जंगले ।
कितने फिरे हैं बाहर, ख़ूवां[१०] को अपने संग ले ।
सब शाद[११] हो रहे हैं, उम्दा, ग़रीब, कंगले ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२२॥

कितनों को महलों अन्दर, है, ऐश का नज़ारा ।
या सायबान सुथरा, या बांस का उसारा[१२] ।
करता है सैर कोई कोठे का ले सहारा ।
मुफ़्लिस भी कर रहा हैं, पूले[१३] तले गुज़ारा ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२३॥

---

[९] पीला [१०] सुन्दरियों [११] खुश [१२] बरामदे का छाजन (छप्पर) [१३] फूस-मूंज आदि का बंधा हुआ मुट्ठा

पाठान्तर—(१) का० श० आकर है।

छत गिरने का किसी जा, गुल शोर हो रहा है ।
दीवार का भी धड़का, कुछ होश खो रहा है ।
डर डर(१) हवेली वाला हर आन रो रहा है ।
मुफ़्लिस[१४] सो झोंपड़े में दिल शाद[१५] हो रहा है ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२४॥

मुद्दत से हो रहा है, जिनका मकां पुराना ।
उठके है उनको मेंह में, हर आन छत पे जाना ।
कोई पुकारता है "टुक मोरी खोल आना" ।
कोई कहे है चल भी क्यों हो गया दिवाना ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२५॥

कोई पुकारता है लो, यह मकान टपका ।
गिरती है छत की मिट्टी और सायबान टपका ।
छलनी हुई अटारी कोठी निदान टपका ।
बाकी था एक उसारा, सो वह भी आन टपका ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२६॥

ऊंचा मकान जिसका है पच खनां[१६](२) सवाया ।
ऊपर का खन टपक कर जब पानी नीचे आया ।
उसने तो अपने घर में, है शोरो गुल मचाया ।
मुफ़्लिस पुकारते हैं जाने हमारा जाया ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२७॥

सब्जों पे वीरबहूटी, टीलों ऊपर धतूरे ।
पिस्सू से मच्छड़ों से, रोये कोई बिसूरे ।
बिच्छू किसी को काटे, कीड़ा किसी को घूरे ।
आंगन में कनसलाई, कोनों में कनखजूरे ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२८॥

---

१४. गरीब १५. खुश १६. पांच मंजिल का, आगे-पीछे पाँच दालानों वाला

पाठान्तर—(१) का० श० दर दर (२) क़ा० आ० खण्डा

फुंसी किसी के तन में, सर पर किसी के फोड़े ।
छाती पे गर्मी दाने और पीठ में ददौड़े ।
खा पूरियां किसी को हैं लग रहे मड़ोड़े ।
आते हैं दस्त जैसे दौड़ें इराक़ी[17] घोड़े ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥२९॥

पतली जहां किसी ने दाल और कढ़ी पकाई ।
मक्खी ने त्यूं ही बोली आ ऊंट की बुलाई ।
कोई पुकारता है क्यूं ख़ैर तो है भाई ।
ऐसे जो खांसते हों क्या काली मिर्च खाई ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३०॥

जिस गुल बदन के तन में पोशाक सोसनी है ।
सो वह परी तो ख़ासी काली घटा बनी है ।
और जिस पे सुर्ख़ जोड़ा, या ऊदी ओढ़नी है ।
उस पर तो सब घुलावट, बरसात की छनी है ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३१॥

बदनों में खप रहे हैं ख़ूबों के लाल जोड़े ।
झमकें दिखा रहे हैं परियों के लाल जोड़ें ।
लहरें बना रहे हैं, लड़कों के लाल जोड़ें ।
आंखों में चुभ रहे हैं, प्यारों के लाल जोड़े ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३२॥

और जिस सनम के तन में, जोड़ा है ज़ाफ़रानी ।
गुलनार[18] या गुलाबी या ज़र्द, सुर्ख़, धानी ।
कुछ हुस्न की चढ़ाई और कुछ नई जवानी ।
झूलों में झूलते हैं, ऊपर पड़े है पानी ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३३॥

कोई तो झूलने में, झूले के डोर छोड़े ।
या साथियों में अपने, पांवों से पांव जोड़े ।
बादल खड़े हैं सर पर, बरसे हैं थोड़े-थोड़े ।
बूंदों से भीगते हैं लाल और गुलाबी जोड़े ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३४॥

---

[17] इराक के [18] अनार के फूल के रंग जैसे

कितनों को हो रही है इस ऐश की निशानी ।
सोते हैं साथ जिसके कहती है वह सियानी ।
"इस वक्त तुम न जाओ ऐ मेरे यार जानी ।
देखो तो किस मज़े से बरसे है आज पानी" ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३५॥

कितने शराब पीकर हो मस्त छक रहे हैं ।
मै के गुलाबी आगे प्याले छलक रहे हैं ।
होता है नाच घर-घर घुंघरू झनक रहे हैं ।
पड़ता है मेह झड़ाझड़ तबले खड़क रहे हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३६॥

हैं जिनके तन मुलायम, मैदे की जैसे लोई ।
वह इस हवा में खासी ओढ़े फिरें हैं लोई ।
और जिनकी मुफ़्लिसी ने, शर्मो हया है खोई ।
है उनके सर पे सिरकी या बोरिये की खोई ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३७॥

कितने फिरें हैं ओढ़े पानी में सुर्ख़ पट्टू ।
जो देख सुर्ख़ बदली, होती है उनपे लट्टू ।
कितनों के गाड़ी रथ हैं, कितनों के घोड़े टट्टू ।
जिस पास कुछ नहीं है वह हमसा है निखट्टू ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३८॥

जो इस हवा में यारो दौलत में कुछ बड़े हैं ।
है उनके सर पर छतरी, हाथी ऊपर चढ़े हैं ।
हमसे ग़रीब ग़ुरबा कीचड़ में गिर पड़े हैं ।
हाथों में जूतियां हैं और पांयचे चढ़े हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥३९॥

है जिन कने मुहैया पक्का पकाया खाना ।
उनको पलंग पे बैठे झड़ियों का हिज़[१९] उड़ाना ।
है जिनको अपने घर का(१) यां नोन तेल लाना ।
है सर पै उनके पंखा, या छाज है पुराना ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४०॥

---

[१९] आनन्द, मज़ा, सुख
पाठान्तर—(१) क़ा० श० में

कितने ख़ुशी से बैठे, खाते हैं ख़ुश महल में ।
कितने चले हैं लेने, बनिये से कर्ज़ पल में ।
कांधे पै दाल, आटा, हल्दी गिरह की बल में ।
हाथों में घी की प्याली और लकड़ियां बग़ल में ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४१॥

कोई रात को पुकारे "प्यारे मैं भीगती हूं" ।
"क्या तेरी उल्फ़तों की मारी मैं भीगती हूं" ।
"आई हूं तेरी ख़ातिर आ रे मैं भीगती हूं" ।
"कुछ तो तरस तू मेरा खारे मैं भीगती हूं" ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४२॥

कोई पुकारती है "दिल सख़्त भीगती हूं ।"
"कांपे है मेरी छाती, यकलख़्त भीगती हूं ।"
"कपड़े भी तर बतर हैं और सख़्त भीगती हूं ।"
"जल्दी बुला ले मुझको कमबख़्त भीगती हूं ।"
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४३॥

कोई पुकारती है "क्या क्या मुझे भिगोया ।"
कोई पुकारती है "कैसा मुझे भिगोया ।"
"नाहक़ क़रार करके, झूठा, मुझे भिगोया ।"
"यूं दूर से बुलाकर, अच्छा मुझे भिगोया ।"
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४४॥

जिन दिलबरों की ख़ातिर, भीगे हैं जिनके जोड़े ।
वह देख उनकी उल्फ़त होते हैं थोड़े-थोड़े ।
ले उनके भीगे कपड़े हाथों में धर निचोड़े ।
चीरा कोई सुखावे, जामा कोई निचोड़े ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४५॥

कीचड़ से हो रही है, जिस जा ज़मीं[२०] फिसलनी ।
मुश्किल हुई है वां से हर एक को राह चलनी ।
फिसला जो पांव पगड़ी मुश्किल है फिर संभलनी ।
जूती गड़ी तो वाँ से(१) क्या ताब फिर निकलनी ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४६॥

---

[२०] स्थान, जगह

पाठान्तर—(१) श० बाँ से

कितने तो कीचड़ों की दलदल में फंस रहे हैं ।
कपड़े तमाम गंदे दलदल में बस रहे हैं ।
कितने उठे हैं मर-मर, कितने उकस रहे हैं ।
वह दुःख में फंस रहे हैं और लोग हंस रहे हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४७॥

कहता है कोई गिर कर, यह ऐ ख़ुदाए लीजो ।
कोई डगमगा के हर दम कहता है वाये लीजो ।
कोई हाथ उठा पुकारे मुझको भी हाय लीजो ।
कोई शोर कर पुकारे गिरने न पाये लीजो ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४८॥

गिर कर किसी के कपड़े दलदल में हैं मुअत्तर[21] ।
फिसला कोई किसी का कीचड़ में मुंह गया भर ।
एक दो नहीं फिसलते, कुछ इसमें जान अक्सर ।
होते हैं सैकड़ों के सर नीचे पांव ऊपर ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥४९॥

यह रुत वह है कि जिसमें खुर्दो कबीर[22] ख़ुश हैं ।
अदना, गरीब, मुफ़्लिस, शाहो वज़ीर ख़ुश हैं ।
माशूक शादो[23] ख़ुर्रम[24], आशिक़ असीर[25](१) खुश हैं ।
जितने हैं अब जहां में, सब ऐ "नज़ीर" खुश हैं ।
क्या-क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें ॥५०॥

---

२१. महका हुआ, भीगे हुए २२. बड़ा २३. खुश २४. प्रसन्न, खुश २५. बंदी, कैदी

पाठान्तर--(१) जा० अमीर

बरसात की उमस

क्या अब्र की गर्मी में घड़ी पहर है उमस ।
गर्मी के बढ़ाने की अज़ब लहर है उमस ।
पानी से पसीनों की बड़ी नहर है उमस ।
हर बाग में हर दश्त[1] में हर शहर है उमस ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर[2] है उमस ।।१।।

कितने तो इस उमस के तई कहते हैं गरमाव ।
यानी कि घिरा अब्र[3] हो और आके रुके बाव[4] ।
उस वक़्त तो पड़ता है गज़ब जान में घबराव ।
दिल सीने में बेकल हो यही कहता है खा ताव ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ।।२।।

बदली के जो घिर आने से होती है हवा बंद ।
फिर बंद सी गर्मी वह ग़ज़ब पड़ती है यकचंद[5] ।
पंखे कोई पकड़े, कोई खोले है खड़ा बंद ।
दम रुक के घुला जाता है गर्मी से हर एक बंद ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ।।३।।

ईधर तो पसीनों से पड़ी भीगें हैं खाटें ।
गर्मी से उधर मैल की कुछ च्यूंटियां काटें ।
कपड़ा जो पहनिये तो पसीने उसे आटें(१) ।
नंगा जो बदन रखिये तो फिर मक्खियां चाटें ।
बरसात के मौसम में निकट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ।।४।।

---

१. जंगल २. अज़ाब, दैवी आपत्ति ३. बादल ४. वायु, हवा ५. थोड़ा, किंचित्

पाठान्तर—(१) का० आएं

रुकने से हवा के, जो बुरा होता है अहवाल ।
पंखा कोई आंचल, कोई दामन, कोई रुमाल ।
दम धोंकने लगता है लुहारों की गोया खाल ।
कुछ रूह को बेताबियाँ, कुछ जान को जंजाल ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥५॥

घबरा के दम आता है, कभी जाता है फूला(२) ।
आराम जो दिल का है, सभी जाता है भूला ।
आता है कभी होश, कभी जाता है भूला ।
कपड़े भी बुरे लगते हैं, जी जाता है भूला ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥६॥

होती है उमस जो कभी एक रात को आकर ।
कर डालती है फिर तो क़यामत ही मुक़र्रर ।
ईधर तो हवा बंद उधर पिस्सुओ मच्छर ।
पानी कोई पीवे तो वह अदहन[६] से भी बदतर ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥७॥

जिस वक़्त हवा बंद हो और आके घटा छाये ।
फिर कहिये दिल उस गर्मी में किस तरह न घबराये ।
ओढ़ो तो पसीना जो न ओढ़ो तो ग़जब आये ।
पिस्सू कभी, मच्छर कभी, खटमल ही लिपट जाये ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥८॥

गर इसमें हवा खुल गई और पानी भी लाई ।
तो जी में जी और जान में कुछ जान सी आई ।
और इसमें जो फिर हो गई उमस की चढ़ाई ।
तो फिर वही रोना, वही ग़ुल शोर, दुहाई ।
बरसात के मौसम में निपट जहर है उमस
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥९॥

---

[६] खूब खौलता हुआ पानी
पाठान्तर—(२) श० भूला

उमस में तो लाज़िम है न(१) पंखा न हवा हो ।
एक कोठरी हो जिसमें धुंआ आके भरा हो ।
और मक्खियों के वास्ते गुड़ तन से मला हो ।
उस वक़्त मज़ा देखिए उमस का कि क्या हो ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥१०॥

इस रुत में बल्लाह अजब ऐश है दिलख़्वाह ।
मेंह बरसे है और सर्द हवा आती है हरगाह ।
जंगल भी हरे, गुल भी खिले, सब्ज चरागाह ।
उमस ही मगर दिल को सताती है "नज़ीर" आह ।
बरसात के मौसम में निपट ज़हर है उमस ।
सब चीज़ तो अच्छी है पर एक क़हर है उमस ॥११॥

आशिक का झूला

आलम में अयां अब तो है बरसात का झूला ।
बाग़ों में दरख़्तों का मकानात का झूला ॥
बदली का है हर जां पै अयानात का झूला ।
सावन में तो पड़ता है यों हर ज़ात का झूला ॥
पर गुलबदनों का है अजब घात का झूला ॥१॥

इस अब्र में रोने का मेरे शोर है घर-घर ।
बिजली भी जली आह से बदली भी हुई तर ॥
ज़ालिम मेरी आंखों की तरफ़ कुछ तो नज़र कर ।
झूले है मेरा शामो सहर दिल तेरे ऊपर ॥
है मुझको तेरे ग़म में यह दिन रात का झूला ॥२॥

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० कि

तुझको तो मैं ज़ालिम न किसी हाल में भूलूं ।
झूले का हो मौसम तो मैं झूले में न झूलूं ।।
ख़ूबां तो हैं क्या चीज़ जो मैं उनको क़ुबूलूं ।
परियों के भी ऐ जाना ! कभी साथ न झूलूं ।।
गर मुझको पता होवे तेरे साथ का झूला ।।३।।

झूले में तो रहता हूं तेरे पास मैं हर आँ ।
पर ख़ूब निकलता नहीं दिल का मेरे अरमाँ ।।
सुथरा सा मकां हो और ऐश का सामां ।
झूले की वहारें तो मची हों उस घड़ी ऐ जां ! ।।
जव मेरे गले में हो तेरे हाथ का झूला ।।४।।

इस रुत में मेरी जान न किसी ग़ैर के झूलो ।
यह रश्क़ का हाथी मेरे सीने पै न हूलो ।।
हर्गिज़ मेरे कहने को तुम ऐ जान ! न भूलो ।
झूलो तो अकेले ही मेरे सामने झूलो ।।
सूना है क्या अबके यह बरसात का झूला ।।५।।

रेशम की भी डोरी का अज़ब रंग है गहरा ।
मुक्क़ैश के बानों से खटोला रहा लहरा ।।
गुच्छा कहीं मोती का है दुहरा व इकहरा ।
जैसा तेरा झूला है रुपहरा व सुनहरा ।।
ऐसा तो न परियों का न जिन्नात का झूला ।।६।।

करता है हर इक पैंग में बातें यह हवा से ।
बदली के तईं मारे है रातें यह हवा से ।।
इश्रत की दिखाता है बरातें यह हवा से ।
विन झोटे के करता है जो बातें यह हवा से ।।
झूलों में तेरा है यह करामात का झूला ।।७।।

जैसा कि है झूले में तू अब झूलने वाला ।
ऐसा है न कोई शख़्श न झूला कोई ऐसा ।।
जिसने कि तुझें झूले पै अब झूलते देखा ।
झूला हो किया पर वह दिवाना हो सरापा ।।
डाल अपने तसब्बुर में खयालात का झूला ।।८।।

आया जो ज़रा शब को मेरे पास वह दिलख़्वाह ।
झूला ही किया साथ मेरे ता ब सहरगाह ॥
क्या ऐश मयस्सर हुए हैं अल्लाह ही अल्लाह ।
झूला हूं बहुत यों तो मैं आगे भी "नज़ीर" आह ॥
पर यार न भूलेगा मुझे इस रात का झूला ॥८॥

जाड़े की बहारें

जब माह अगहन का ढलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ।
और हँस हंस पूस संभलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ।
दिन जल्दी जल्दी चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ।
पाला भी बर्फ़ पिघलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ।
चिल्ला ख़म ठोंक उछलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ॥१॥

तन(१) ठोकर मार पछाड़ा हो, दिल से होती हो कुश्ती सी ।
थर-थर का ज़ोर अखाड़ा हो, बजती हो सबकी बत्तीसी ।
हो शोर पफू हू-हू-हू का, और धूम हो सी-सी-सी-सी की ।
कल्ले पे कल्ला[१] लग लग कर, चलती हो मुंह में चक्की सी ।
हर दांत चने से दलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ॥२॥

हर एक मकां में सर्दी ने, आ बांध दिया हो यह चक्कर ।
जो हर दम कप-कप होती हो, हर आन कड़ाकड़ और थर-थर ।
पैठी हो सर्दी रग रग में, और बर्फ पिघलता हो पत्थर ।
झड़ बांध महावट पड़ती हो, और तिस पर लहरें ले लेकर ।
सन्नाटा वायु का चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ॥३॥

तरकीब बनी हो मजलिस की, और काफ़िर नाचने वाले हों ।
मुंह उनके चांद के टुकड़े हों, तन उनके रुई के गाले हों ।
पोशाकें नाजुक रंगों की और ओढ़े शाल दुशाले हों ।
कुछ नाच और रंग की धूमें हों, कुछ ऐश में हम मतवाले हों ।
प्याले पर प्याला चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ॥४॥

---

१. जवड़ा
पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० दिल

हर चार तरफ़ से सर्दी हो और सहन खुला हो कोठे का ।
और तन में नीमा शबनम का हो जिसमें ख़स का इत्र लगा ।
छिड़काव हुआ हो पानी का और ख़ूब पलंग भी हो भीगा ।
हाथों में प्याला शर्बत का हो आगे एक फ़र्राश खड़ा ।
फ़र्राश भी पंखा झलता हो तब देख बहारें जाड़े की ।।५।।

जब ऐसी सर्दी हो ऐ दिल ! तब ज़ोर मज़े की घातें हों ।
कुछ नर्म बिछौने मख़मल के कुछ ऐश की लम्बी रातें हों ।
महबूब गले से लिपटा हो, और कोहनी, चुटकी लाते हों ।
कुछ बोसे मिलते जाते हों कुछ मीठी-मीठी बातें हों ।
दिल ऐशो तरब में पलता हो तब देख बहारें जाड़े की ।।६।।

हो फ़र्श बिछा गालीचों का और पर्दे छूटे हों आकर ।
एक गर्म अंगीठी जलती हो और शमा हो रौशन तिस पर ।
वह दिलबर शोख़ परी चंचल, है धूम मची जिसकी घर-घर ।
रेशम की नर्म निहाली पर सौ नाज़ो अदा से हंस हंस कर ।
पहलू के बीच मचलता हो तब देख बहारें जाड़े की ।।७।।

हर एक मकां हो ख़िल्वत का और ऐश की सब तैयारी हो ।
वह जान कि जिस पर जी गश हो सौ नाज़ से आ झनकारी हो ।
दिल देख "नज़ीर" उसकी छवि को, हर आन अदा पर वारी हो ।
सब ऐश मुहैया हों आकर जिस जिस अरमान की बारी हो ।
जब सब अरमान निकलता हो, तब देख बहारें जाड़े की ।।८।।

जाड़े के मौसम में तिल के लड्डू

जाड़े में फिर ख़ुदा ने खिलवाए तिल के लड्डू ।
हर एक खोंमचे में दिखलाए तिल के लड्डू ।
कूचे गली में हर जा, बिकवाए तिल के लड्डू ।
हमको भी हैंगे दिल से, ख़ुश आये तिल के लड्डू ।
जीते रहे तो यारो, फिर खाये तिल के लड्डू ।।१।।

उम्दों ने सौ तरह की, याक़ूतियां बनाई ।
लौंगों में दारचीनी, शक्कर भी ले मिलाई ।
सर्दी में दौलतों की, सौ गर्म चीजें खाई ।
औरों ने डाल मिश्री गर पेड़ियां बनाई ।
हमने भी गुड़ मंगाकर, बंधवाए तिल के लड्डू ।।२।।

रख खोमंचे को सर पर पैकार यों पुकारा ।
बादाम भूना चाबो और कुरकुरा छुहारा ।
जाड़ा लगे तो इसका करता हूं मैं इजारा ।
जिसका कलेजा यारो, सर्दी ने होवे मारा ।
नौ दाम के वह मुझसे, ले जाये तिल के लड्डू ।।३।।

जाड़ा तो अपने दिल में था पहलवां झझाड़ा ।
पर एक तिल ने उसको रग-रग से है उखाड़ा ।
जिस दम दिलो जिगर को, सर्दी ने आ लताड़ा ।
ख़म ठोंक बोहीं हमने जाड़े को धर पछाड़ा ।
तन फेर ऐसा भबका, जब खाये तिल के लड्डू ।।४।।

कल यार से जो अपने, मिलने के तईं गए हम ।
कुछ पेड़े उसकी खातिर खाने को ले गए हम ।
महबूब हंस के बोला, हैरत में हो रहे हम ।
पेड़ों को देख दिल में ऐसे खुशी हुए हम ।
गोया हमारी ख़ातिर तुम लाये तिल के लड्डू ।।५।।

जब उस सनम के मुझको जाड़े पे ध्यान आया ।
सब सौदा थोड़ा थोड़ा बाज़ार से मंगाया ।
आगे जो लाके रक्खा कुछ उसको ख़ुश न आया ।
चीजें तो वह बहुत थीं, पर उसने कुछ न खाया ।
जब ख़ुश हुआ वह उसने जब पाये तिल के लड्डू ।।६।।

जाड़े में जिसको हर दम पेशाब है सताता ।
उट्ठे तो जाडा लिपटे नहीं पेशाब निकला जाता ।
उनकी दवा भी कोई, पूछो हकीम से जा ।
बतलाए कितने नुस्ख़े, पर एक बन न आया ।
आख़िर इलाज उसका ठहराए तिल के लड्डू ।।७।।

जाड़े में अब जो यारो यह तिल गए हैं भूने ।
महबूबों के भी तिल से इनके मज़े हैं दूने ।
दिल ले लिया हमारा, तिल शकरियों की रू ने ।
यह भी "नज़ीर" लड्डू ऐसे बनाए तूने ।
सुन-सुन के जिसकी लज्ज़त, घबराए तिल के लड्डू ॥८॥

बहार

गुलशने-आ़लम[१] में जब तशरीफ़ लाती है बहार ।
रंगो बू के हुस्न क्या क्या कुछ दिखाती है बहार ॥
सुबह को लाकर नसीमे[२] दिल कुशा[३] हर शाख़ पर ।
ताजा तर किस किस तरह के गुल खिलाती है बहार ॥
नौनिहालों[४] की दिखा कर दमबदम नशवो नुमा ।
जिस्म में रूहो[५] रवाँ क्या क्या बढ़ाती है बहार ॥
बुलबुलें चहकारती हैं शाख़ें गुल पर जा बजा[६] ।
बुलबुलें क्या फ़िलहक़ीकत चहचहाती है बहार ॥
होजों, फ़व्वारों को देकर आबरू फिर लुत्फ़ से ।
क्या मुतर्रा फ़र्श सब्ज़े को बिछाती है बहार ॥
जुम्बिशे[७] बादे सबा[८] से होके हमदोशे[९] निशात[१०] ।
साथ हर सब्ज़े के क्या-क्या लहलहाती है बहार ॥
ख़ल्क़ को हर लहजा अपने हुस्न की रंगत दिखा ।
बे तकल्लुफ़ क्या ही हर दिल में समाती है बहार ॥
मजमए[११] ख़ूबां[१२] हुजूम[१३] आशिक़ां और जोशे गुल ।
देख इन रंगों को क्या क्या खिलखिलाती है बहार ॥
गुल रुख़ों[१४] की देख कर गुल बाज़ियां हर दम "नज़ीर" ।
गुल उधर ख़न्दां[१५], इधर धूमें मचाती है बहार ॥

---

[१] दुनिया के बाग में
[२] शीतल मंद समीर
[३] दिल को खुश करने वाली
[४] नौ उम्र
[५] जान
[६] जगह-जगह
[७] कंपन
[८] सबेरे की शीतल वायु
[९] बराबर-बराबर, मिल-जुलकर
[१०] ख़ुश
[११] भीड़
[१२] सुन्दर स्त्रियां
[१३] भीड़
[१४] फूल जैसे सुन्दर
[१५] खिले हुए

बसंत–१

मिलकर सनम[१] से अपने हंगाम[२] दिल कुशाई[३] ।
हंसकर कहा यह हमने ऐ जां ! बसंत आई ।
सुनते ही उस परी ने गुल गुल[४] शगुफ़्ता[५] होकर ।
पोशाक ज़र फ़िशानी[६] अपनी वोंही रंगाई ।
जब रंग के आई उसकी पोशाक पुर नज़ाकत[७] ।
सरसों की शाख़[८] पुर गुल[९] फिर जल्द एक मंगाई ।
एक पंखुड़ी उठाकर नाज़ुक सी उंगलियों में ।
रंगत फिर उसकी अपनी पोशाक से मिलाई ।
जिस दम किया मुक़ाबिल[१०] कसवत से अपने उसको ।
देखा तो उसकी रंगत उस पर हुई सवाई ।
फिर तो बसद[११] मुसर्रत[१२] और सौ नज़ाकतों[१३] से ।
नाज़ुक बदन पर अपने पोशाक वह खपाई ।
चम्पे का इत्र मलकर मोती से फिर खुशी हो ।
सीमीं[१४] कलाइयों में डाले कड़े तिलाई[१५] ।
बन ठन के इस तरह से फिर राह ली चमन की ।
देखी वहार गुलशन बहरे तरब[१६] फ़िज़ाई[१७] ।
जिस जिस रविश[१८] के ऊपर जाकर हुआ नुमाया[१९] ।
किस किस रविश से अपनी आनो अदा[२०] दिखाई ।
क्या क्या बयां हो जैसे चमकी चमन-चमन में ।
वह ज़र्द पोशी उसकी, वह तर्ज़े दिलरुबाई[२१] ।
सदबर्ग[२२] ने सिफ़त[२३] की नरगिस ने बेतअम्मुल[२४] ।
लिखने को वस्फ़[२५] उसका अपनी क़लम उठाई ।

---

१. प्रिय पात्र २. कोलाहल ३. दिल को आनन्द देने वाला ४. फूलों से ५. प्रसन्न (फूलों से सजकर) ६. सोना बिखेरने वाली सुनहरी किरणें ७. नज़ाकत से भरी हुई ८. टहनी ९. फूलों से लदी हुई १०. सामने ११. सैकड़ों १२. खुशी १३. कोमल १४. चांदी जैसी १५. सुनहरे रंग के १६. आनन्द १७. बढ़ाने वाली १८. चाल, पद्धति १९. प्रकट २०. हाव-भाव २१. हाव-भाव २२. सौ पत्तियों वाला गेंदा २३. प्रशंसा २४. निःसंकोच, बेखटके २५. गुण

फिर सहन में चमन के आया बहुस्नो[२६] ख़ूबी ।
और तरफ़ा तर[२७] बसंती एक अन्जुमन[२८] बनाई ।
उस अन्जुमन में बैठा जब नाज़ो[२९] तमकनत[३०] से ।
गुलदस्ता[३१] उसके आगे हंस-हंस बसंत लाई ।
की मुतरिबो[३२] ने ख़ुश ख़ुश आग़ाज़े[३३] नग़मा साज़ी[३४] ।
साक़ी[३५] ने जामे ज़र्री[३६] भर भर के मै[३७] पिलाई ।
देख उसको और महफ़िल उसकी "नज़ीर" हरदम ।
क्या-क्या बसंत आकर उस वक़्त जगमगाई ॥

बसंत—२

जब फूल का सरसों के हुआ आके खिलन्ता ।
और ऐश की नज़रों से निगाहों का लड़न्ता ।
हमने भी दिल अपने के तईं करके पुखन्ता ।
और हंस के कहा यार से ऐ लकड़ भवन्ता ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥१॥

एक फूल का गेंदों के मंगा यार से बजरा ।
दस मन का लिया हार गुंधा, आठ(१) का गजरा ।
जब आंख से सूरज के ढला रात का कजरा(२) ।
जा यार से मिलकर यह कहा ऐ ! मेरे रजरा ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥२॥

थे अपने गले में तो कई मन के पड़े हार ।
और यार के गजरे भी थे एक धवन की मिक़दार ।
आंखों में नशे मै के उबलते थे धुआँ धार ।
जो सामने आता था यही कहते थे ललकार ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥३॥

---

२६. सुन्दरता के साथ २७. तत्कालीन २८. महफिल २९. हाव-भाव ३०. अभिमान, गर्व, घमंड
३१. फूलों का गुच्छा ३२. गायक, रागी ३३. प्रारम्भ ३४. सुरीला गान ३५. शराब पिलाने वाला
३६. सुनहरा मदिरा पात्र ३७. शराब

पाठान्तर—क़ा० श० आ० हाथ का (२) क़ा० गजरा

पगड़ी में हमारी थे जो गेंदों के कई पेड़ ।
हर झोंक में लगती थी बसन्तों के तईं एड़ ।
साक़ी ने भी मटके से दिया मुंह के तईं भेड़ ।
हर बात में होती थी इसी बात की आ छेड़ ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥४॥

फिर राग बसन्ती का हुआ आन के खटका ।
धोंसे के बराबर वह लगा बाजने मटका ।
दिल खेत में सरसों के हर एक फूल से अटका ।
हर बात में होता था इसी बात का लटका ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥५॥

जब खेत पे सरसों के दिया जाके कदम गाड़ ।
सब खेत उठा सर के ऊपर रख लिया झंझाड़ ।
महबूब रंगीलों की भी एक साथ लगी झाड़ ।
हर झाड़ से सरसों के भी कहती थी अभी झाड़ ।
सबकी तो वसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥६॥

साथ लगा जब तो अ़जब ऐश का दहाड़ा ।
जिस बाग़ में गेंदों के गए उसको उजाड़ा ।
देखी कभी सरसों कभी नरगिस को उजाड़ा ।
कहते थे इसी बात को बन, झाड़, पहाड़ा ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥७॥

ख़ुश बैठे हैं सब शाहो वज़ीर आज अहा हा ! ।
दिल शाद हैं अदनाओ फ़क़ीर आज अहा हा ! ।
बुलबुल की निकलती है सफ़ीर[1] आज अहा हा ! ।
कहता यही फिरता है "नज़ीर" आज अहा हा ! ।
सबकी तो बसन्तें हैं पै यारों का बसन्ता ॥८॥

---

[1] आवाज

बसंत—३

जोशे निशातो ऐश है हर जा बसंत का ।
हर तरफ़ा रोज़गारे तरब जा बसंत का ॥
बाग़ों में लुत्फ़ नश्वोनुमा की हैं कसरतें ।
बज़्मों में नग़मा ख़ुश दिली अफ़ज़ा बसंत का ॥
फिरते हैं कर लिबास बसंती वह दिलबरां ।
है जिनसे ज़र निगार सरापा बसंत का ॥
जा दर पै यार के यह कहा हमने सुबह दम ।
ऐ जान है अब तो हर कहीं चर्चा बसंत का ॥
तशरीफ़ तुम न लाये जो कर कर बसंती पोश ।
कहिये गुनाह हमने क्या किया बसंत का ?
सुनते ही इस बहार से निकला कि जिसके तईं ।
दिल देखते ही हो गया शैदा बसंत का ॥
अपना वह ख़ुश लिबास बसंती दिखा "नज़ीर" !
चमकाया हुस्न यार ने क्या-क्या बसंत का ॥

बसंत—४

निकले हो किस बहार से तुम ज़र्द पोश हो !
जिसकी नवेद पहुंची है रंगे बसंत को ।
दी बर में अब लिबास बसंती को जैसे जा ।
ऐसे ही तुम हमारे भी सीने से आ लगो ।
गर हम नशे में "बोसा" कहें, दो तो लुत्फ़ से ।
तुम पास मुंह को लाके यह हंस कर कहो कि "लो" ।
बैठो चमन में, नर्गिसो सदबर्ग की तरफ़ ।
नज़्ज़ारा करके ऐशो मुसर्रत की दाद दो ।
सुनकर बसंत मुतरिब ज़र्रीं लिबास से ।
भर भर के जाम फिर मयेगुल रंग के पियो ।

कुछ क़ुमरियों के नग़मे को दो सामए में राह ।
कुछ बुलबुलों का ज़मज़मए दिल कुशा सुनो ।
मतलब है यह "नज़ीर" का यूं देखकर बसंत ।
हो तुम भी शाद दिल को हमारे भी ख़ुश करो ।

बसंत-५

करके बसंती लिबास सबसे बरस दिन के दिन ।
यार मिला आन कर हमसे बरस दिन के दिन ।
खेत पै सरसों के जा, जाम सुराही मगा ।
दिल की निकाली मियां ! हमने हविस दिन के दिन ।
सबकी निगाहों में दी ऐश की सरसों खिला ।
साक़ी ने क्या ही लिया वाह यह जस दिन के दिन ।
ख़ल्क में शोरे बसन्त यों तो बहुत दिन से था ।
हमने तो लूटी बहार ऐश की बस दिन के दिन ।
आगे तो फिरता रहा ग़ैरों में हो ज़र्द पोश ।
हमसे मिला पर वह शोख खाके तरस दिन के दिन ।
गर्चे यह त्यौहार की पहली ख़ुशी है ज़्यादः ।
ऐन जो रस है सो वह निकले है रस दिन के दिन ।
लूटेगा फिर साल भर गुलबदनों की बहार ।
यार से मिलले 'नज़ीर' आज बरस दिन के दिन ।।

बसंत—६[+]

जहां में फिर हुई ऐ ! यारो आश्कार बसंत ।
हुई बहार के तौसन पै अब सवार बसंत ।।
निकाल आई खिजाओं को चमन से पार बसंत ।
मची है ज़ोर हर यक जा वो हर कनार बसंत ।।
अजब बहार से आई है अबकी बार बसंत ।।१।।

जहां में आई बहार और खिज़ा के दिन भूले ।
चमन में गुल खिले और वन में राय वन फूले ।।
गुलों ने डालियों के डाले बाग़ में झूले ।
समाते फूल नहीं पैरहन में अब फूले ।।
दिखा रही है अजब तरह की बहार बसंत ।।२।।

दरख्त झाड़ हर इक पात झाड़ लहराए ।
गुलों के सर पै पर बुलबुलों के मंडराए ।।
चमन हरे हुए बागों में आम भी आए ।
शगूफे खिल गए भौंरे भी गूंजने आए ।।
यह कुछ बहार के लाई है वर्गो बार बसंत ।।३।।

कहीं तो केसर असली में कपड़े रंगते हैं ।
तुन और कुसूम की जर्दी में कपड़े रंगते हैं ।।
कहीं सिंगार की डंडी में कपड़े रंगते हैं ।
गरीब दमड़ी की हल्दी में कपड़े रंगते हैं ।।
गर्ज़ हरेक का बनाती है अब सिंगार बसंत ।।४।।

कहीं दुकान सुनहरी लगा के बैठे हैं ।
वसंती जोड़े पहन और पहना के बैठे हैं ।।
गरीब खेत में सरसों के जाके बैठे हैं ।
चमन में बाग में मजलिस बनाके बैठे हैं ।।
पुकारते हैं अहा ! हा ! री ज़र निगार बसंत ।।५।।

[+] डा० गुरुमुख राम टंडन के सौजन्य से प्राप्त

कहीं बसंत गवा हुरकियों से सुनते हैं ।
मज़ीरा तबला व सारंगियों से सुनते हैं ।।
कहीं खाबी व मुंहचंगियों से सुनते हैं ।
गरीब ठिल्लियों और तालियों से सुनते हैं ।।
बंधा रही है समद का हर एक तार बसंत ।।६।।

जो गुलबदन हैं अजब सज के हंसते फिरते हैं ।
बसंती जोड़े में क्या-क्या चहकते फिरते हैं ।।
सरों पै तुर्रे सुनहरे झमकते फिरते हैं ।
गरीब फूल ही गेंदे के रखते फिरते हैं ।।
हुई है सबके गले की गरज कि हार बसंत ।।७।।

तवायफ़ों में है अब यह बसंत का आदर ।
कि हर तरफ को बना गड़ुए रख के हाथों पर ।।
गेहूं की बालियाँ और सरसों की डालियाँ लेकर ।
फिरें उम्दों के कूंचे व कूंचे घर-घर ।।
रखे हैं आगे सबों के बना संवार बसंत ।।८।।

मियां बसंत के यां तक तो रंग गहरे हैं ।
कि जिससे कूंचे औ बाज़ार सब सुनहरे हैं ।।
जो लड़के नाज़नी और तन के कुछ इकहरे हैं ।
वह इस मज़े के बसंती लिबास पहरे हैं ।।
कि जिन पै होती है जी जान से निसार बसंत ।।९।।

बहा है ज़ोर जहां में बसंत का दरिया ।
किसी का ज़र्द है जोड़ा किसी का केसरिया ।।
जिधर को देखो उधर ज़र्द पोश का रेला ।
बने हैं कूच 'ओ बाज़ार खेत सरसों का ।।
बिखर रही है ग़रज़ आके बे शुमार बसंत ।।१०।।

"नज़ीर" खल्क में यह रुत जो आन फिरती है ।
सुनहरे करती महल और दुकान फिरती है ।।
दिखाती हुस्न सुनहरी की शान फिरती है ।
गोया वही हुई सोने की कान फिरती है ।।
सबों को ऐश की रहती है यादगार बसंत ।।११।।

बसंत—७[+]

फिर आलम में तशरीफ लाई बसंत ।
हर एक गुलबदन ने मनाई बसंत ।।
तबायफ़ ने हरजां उठाई बसंत ।
इधर औ उधर जगमगाई बसंत ।।
हमें फिर खुदा ने दिखाई बसंत ।।१।।

मेरा दिल है जिस नाज़नी पर फ़िदा ।
वह काफ़िर भी जोड़ा बसंती बना ।।
सरापा वह सरसों का बन खेत सा ।
वह नाज़ुक से हाथों से गड़ुवा उठा ।।
अज़ब ढंग से मुझ पास लाई बसंत ।।२।।

वह कुर्ती बसंती वह गेंदे के हार ।
वह कमख़्वाब का ज़र्द काफ़िर इज़ार ।।
दुपट्टा फिर ज़र्द संजगाफ़दार ।
जो देखी मैं उसकी बसंती बहार ।।
तो भूली मुझे याद आई बसंत ।।३।।

वह कड़वा जो था उसके हाथों में फूल ।
गया उसकी पोशाक को देख भूल ।।
कि इस्लाम तू अल्लाह ने कर कबूल ।
निकाला इसे और छिपाई बसंत ।।४।।

वह अंगिया जो थी ज़र्द और जालदार ।
टकी ज़र्द गोटे की जिस पर कतार ।।
वह दो ज़र्द लेमू को देख आश्कार ।
ख़ुशी होके सीने में दिल एक बार ।।
पुकारा कि अब मैंने पाई बसंत ।।५।।

[+] डा० गुरुमुखराम टण्डन के सौजन्य से प्राप्त

वह जोड़ा बसंती जो था ख़ुश अदा।
झमक अपने आलम की उसमें दिखा।।
उठा आंख औ नाज़ से मुस्करा।
कहा लो मुबारक हो दिन आज का।।
कि यां हमको लेकर है आई बसंत ।।६।।

पड़ी उस परी पर जो मेरी निगाह।
तो मैं हाथ उसके पकड़ ख़्वामख़्वाह।।
गले से लिपटा लिया करके चाह।
लगी ज़र्द अंगिया जो सीने से आह।।
तो क्या क्या जिगर में समाई बसंत ।।७।।

वह पोशाक ज़र्द और मुंह चांद सा।
वह भीगा हुआ हुस्न ज़र्दी मिला।।
फिर उसमें जो ले साज़ खीची सदा।
समां छा गया हर तरफ राग का।।
इस आलम से काफिर ने गाई बसंत ।।८।।

बंधा फिर वह राग बसंती का तार।
हर एक तान होने लगी दिल के पार।।
वह गाने की देख उसकी उसदम बहार।
हुई ज़र्द दीवारोदर एक बार।।
गरज़ उसकी आंखों में छाई बसंत ।।९।।

यह देख उसके हुस्न और गाने की शां।
किया मैंने उससे यह हसकर बयां।।
यह आ़लम तो बस खत्म है तुम पै यां।
किसी को नहीं बन पड़ी ऐसी जां।।
तुम्हें आज जैसी बन आई बसंत ।।१०।।

यह वह रुत है देखो जो हर को मियां।
बना है हर इक तख़्तए ज़अ़फ़िरां।।
कहीं ज़र, कहीं ज़र्द गेंदा अयां।
निकलते हैं जिधर बसंती तबां।।
पुकारे हैं ऐ वह है आई बसंत ।।११।।

वहारे बसंती पै रखकर निगाह ।
बुलाकर परीज़ादा और कज कुलाह ।।
मै ओ मुतरिब व साक़ी रश्कमाह ।
सहर से लगा शाम तक वाह वाह ।।
"नज़ीर" आज हमने मनाई बसंत ।।१२।।

बसंत—८

आ़लम में जब वहार की आकर लगंत हो ।
दिल को नहीं लगन हो मज़े की लगंत हो ।।
महबूब दिलवरों से निगह की लड़ंत हो ।
इश्रत हो सुख हो ऐश हो और जी निश्चन्त हो ।।
जब देखिए बसंत कि(१) कैसी बसंत हो ।।१।।

अव्वल तो जाफ़रां से मक़ां ज़र्द ज़र्द हों ।
सहरा ओ बाग़ो अहले जहां ज़र्द ज़र्द हों ।।
जोड़ें बसंतियों से निहां जर्द-ज़र्द हों ।
इकदम तो सब ज़मीनो जमां ज़र्द-ज़र्द हों ।।
जब देखिए बसंत तो कैसी बसंत हो ।।२।।

मैदां हों सब्ज़ साफ़ चमकती भी रेत हो ।
साक़ी भी अपने जाम सुराही समेत हो ।।
कोई नशे में मस्त हो कोई सचेत हो ।
दिलबर गले लिपटते हों सरसों का खेत हो ।।
जब देखिए बसंत कि कैसी बसंत हो ।।३।।

आंखों में छा रहे हों बहारों के आवो रंग ।
महबूब गुलबदन हों खिचे हो बगल में तंग ।।
बजते हों ताल ढोलक व सारंगी ओ मुंहचंग ।
चलते हों जाम ऐश के होते हों रंग रंग ।।
जब देखिए बसंत कि कैसी बसंत हो ।।४।।

पाठान्तर—(१) तो

चारों तरफ़ से ऐशो तरब के निशान हों ।
सुथरे बिछे हों फर्श धरे हार पान हों ।।
बैठे हुए बग़ल में कई आह जान हों ।
पर्दे पड़ें हों ज़र्द सुनहरी मकान हों ।।
जब देखिए बसंत कि कैसी बसंत हो ।।५।।

कसरत से तायफ़ों की मची हो उलट पुलट ।
चोली किसी की मसकी हो अंगिया रही हो कट ।।
बैठे हों बनके नाज़नीं परियों के ग़ट के ग़ट ।
जाते हों दौड़-दौड़ गले से लिपट-लिपट ।।
अब देखिए बसंत कि कैसी बसंत हो ।।६।।

वह सैर हो कि जावे जिधर की तरफ निगाह ।
जो बाल भी ज़र्द चमके हो कज कुलाह ।।
पी-पी शराब मस्त हों हंसते हों वाह वाह ।
इसमें मियां "नज़ीर" भी पीते हों वाह वाह ।।
जब देखिए बसंत कि कैसी बसंत हो ।।७।।

बसंत—६

जोशे निशातो ऐश है तरब ज़ा बसंत का ।
है तरफ़ा रोज़गार तरब ज़ा बसंत का ।।
बागों में लुत्फ़ नश्वोनुमा की हैं कसरतें ।
बज़्मों में नक्शा खुशदिली अफ़ज़ा बसंत का ।।
फिरते हैं कर लिवास बसंती वह दिलवरा ।
है जिनसे ज़र निगार सरापा बसंत का ।।
जा दरपे यार के यह कहा हमने सुबह दम ।
ऐ जां है अब तो हर कहीं चर्चा बसंत का ।।

तशरीफ़ तुम न लाए जो होकर बसंत पोश।
कहिए गुनाह हमने किया क्या बसंत का॥
सुनते ही इस बहार से निकला कि जिस तईं।
दिल देखते ही हो गया शैदा बसंत का॥
अपना वह ख़ुश लिबास बसंती दिखा "नज़ीर"।
चमकाया हुस्न यार ने क्या-क्या बसंत का॥

बसंत--१०

आने को आज धूम इधर है बसंत की।
कुछ तुमको मेरी जान खबर है बसंत की॥
होते हैं जिससे ज़र्द ज़मीं ओ ज़मां तमाम।
ऐ महर तलअतो वह सहर है बसंत की॥
लचके है ज़र्द जामा में खूबां की जो कमर।
उसकी कमर नहीं वह कमर है बसंत की॥
जोड़ा बसंती तुमको सुहाता नहीं ज़रा।
मेरी नज़र में है वह नज़र है बसंत की॥
आता है यार तेरा वह होके बसंत रू।
तुझको भी कुछ "नज़ीर" खबर है बसंत की॥

बसंत--११

चम्पे का इत्र मलकर मौक़े[१] से फिर खुशी हो।
सीमीं[२] कलाइयों में, डाले कड़े तिलाई[३]।
बन ठनके इस तरह से, फिर राह ली चमन की।
देखी बहारे गुलशन, बहरे[४] तरबफ़िज़ाई[५]।

---

१. अवसर २. चाँदी जैसी ३. सोने की ४. लिए, वास्ते ५. आनन्दमय वातावरण

जिस जिस रविश के ऊपर, जाकर हुआ नुमायां[६] ।
किस किस रविश से अपनी आनो अदा दिखाई ।
क्या क्या बयां हो जैसे चमकी चमन चमन में ।
वह ज़र्द पोशी[७] उसकी वह तर्ज़े दिल रुबाई ।
सद बर्ग ने सिफ़त[८] की, नरगिस ने बेतअम्मुल[९] ।
लिखने को वस्फ़[१०] उसका, अपनी कलम उठाई ।
फिर सहन[११] में चमन के, आया बहुस्नो[१२] ख़ूबी ।
और तरफ़ा तर बसंती, एक अंजुमन[१३] बनाई ।
उस अंजुमन में बैठा, जब नाज़ो तमकुनत[१४] से ।
गुलदस्ता उसके आगे, हंस हंस बसंत लाई ।
की मुतरिबों[१५] ने ख़ुश हो, आग़ाज़े[१६] नग़मा साज़ी[१७] ।
साक़ी ने जाम ज़र्री, भर भर के मै पिलाई ।
देख उसको और महफिल, उसकी "नज़ीर" हर दम ।
क्या-क्या बसंत आकर उस वक़्त जगमगाई ॥

---

[६], प्रकट [७]. पीले वस्त्र, बसंती आवरण [८]. प्रशंसा [९]. निःसंकोच [१०]. विशेषता [११]. आँगन, परिसर [१२]. सौन्दर्यपूर्ण [१३]. सभा, महफ़िल [१४]. गर्व [१५]. गायक [१६]. आरम्भ [१७]. गायन

नगर वर्णन

शहर अकबराबाद[१] (आगरा) की तारीफ़

शहरे सुख़ुन(१) में अब जो मिला हैं मुझे मकां ।
क्यूं कर न अपने शहर की खूबी करूं बयां ।
देखी हैं आगरे में बहुत हमने खूबियां ।
हर वक़्त इसमें शाद रहे हैं जहाँ तहाँ ।
रखियो इलाही इसको तू आबाद जाविदां[२] ॥१॥

हर सुबह इसकी रखती है वह नूरे गुस्तरी[३] ।
शर्मिन्दा जिसको देख के हो आ़रिज़े परी[४] ।
हर शाम भी वह मुश्के मलाहत[५] से है भरी ।
लैला की जाद[६] कर न सके जिसकी हमसरी[७] ।
दिन रूए[८] मेहरे[९] तिलअतो[१०], शब[११] जुल्फ़े महवशां[१२] ॥२॥

बाग़ात[१३] पुर बहार, इमारात[१४] पुर निगार[१५] ।
बाज़ार वह कि जिस पै चमन दिल से हो निसार[१६] ।
महबूब[१७] दिलफ़रेब[१८] गुलअन्दामो[१९] गुलइज़ार[२०] ।
गलियां(२) कहीं हैं आपको गुलज़ार पुर बहार ।
कूंचे कहीं हैं अपने तईं सहने गुलिस्तां ॥३॥

---

१. आगरा २. (फा० वि०) हमेशा ३. प्रकाश को फैलाने वाली ४. अप्सरा के कपोल ५. कस्तूरी के सौन्दर्य ६. घुंघराली केशराशि ७. (फा०) समानता ८. मुंह ९. सूरज १०. दीदार दर्शन ११, रात १२. प्रेम पात्र (दिन सूरज के चेहरे की रोशनी की तरह हैं और रात प्रेमपात्रों की केशराशि की की तरह हैं) १३. बाग का बहुवचन (बहुत से बाग) १४. इमारतें १५. चित्रों और नक्काशी के काम से भरी हुई १६. निछावर १७. प्रियपात्र १८. दिल को लुभाने वाले १९. फूल जैसे सुकुमार और सुगंधित शरीर वाले २०, गुलाब जैसे सुकुमार और कोमल गालों वाले

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० मकां (२) क़ा० जा० गुलबन

आबो हवा के लुत्फ कोई क्या-क्या अब कहे ।
देखो जिधर उधर गुल इश्रत[२१] हैं खिल रहे ।
ईधर को क़हक़हे हैं तो ऊधर को चहचहे ।
अशजार[२२] बाग़ो शहर वह सरसब्ज़ लहलहे ।
सब्ज़ी को जिनके देख के हैरां हो आसमां ॥४॥

हर फसल में वह होते हैं पाकीज़ा मेवाजात ।
देखे तो फिर नबात[२३] से कुछ आवे बन न बात ।
शहद उनपे आठ पहर लगाये रहे है घात ।
क़न्दो शकर भी दिल से फ़िदा होएं दिन और रात ।
रहते हैं इनके वस्फ़[२४] में हर दम शकर फ़िशा[२५] ॥५॥

बह्‌रे चमन को देखो तो जैसे जमन की नह्‌र ।
लाखों बहारें रखती है एक एक जिसकी लह्‌र ।
कोई नहावे और कोई मुंह धोवे शाद बह्‌र ।
इस पर हुजूम[२६] रखते हैं यूं साकिनाने[२७] शह्‌र ।
शमशाद-सर्व होते हैं जूं नहर पर अयां[२८] ॥६॥

दरिया[२९] के पैरने का करूं वस्फ़[३०] मैं रक़म ।
तो बहरे सफ़हा[३१] बीच लगे पैरने क़लम ।
पैरें हैं इस रविश[३२] कि बहारों से हो बहम[३३] ।
सौ सौ चमन भरे हुए शवनम के दम बदम ।
आ जाते हैं नज़र वहीं दरिया के दरमियां ॥७॥

अहले शना[३४] जो करते हैं सौ सौ तरह शना[३५] ।
लहरें निशातो-ऐश[३६] की उठती हैं दिल में आ ।
मिलता नहीं किनार कुछ इश्रत के बह्‌र का ।
साहिल[३७] पे जोशे ख़ल्क़ से मिलती नहीं है जा ।
होता है वह हजूम भी एक बह्‌रे बेकरां ॥८॥

---

२१. खुशी के फूल २२. वृक्ष समूह २३. पेड़ पौधे वनस्पति २४. प्रशंसा २५. शकर बिखेरने वाला
२६. झुन्ड २७. निवासी २८. प्रकट, ज़ाहिर २९. नदी ३०. गुण, प्रशंसा ३१. पृष्ठों के समुद्र
३२. चाल, तरीका ३३. साथ-साथ, मिलकर ३४. पानी में तैरने वाले ३५. तैराकी ३६. हास-विलास
३७. किनारा

यारो अ़जब तरह का यह दिलचस्प है मुक़ाम ।
होते हैं ऐसे कितने ही ख़ूबी के अज़दहाम[३८] ।
हर तौर दिल रहे है ख़ुश और तबा शाद काम ।
मेरी "नज़ीर" दिल से यही है दुआ मदाम[३९] ।
बसता रहे यह शहर बसद[४०] अमन और अमां[४१] ॥९॥

ताजगंज का रोज़ा

(ताज महल)

यारो जो ताजगंज यहां आश्कार[१] है ।
मशहूर इसका नाम ये शहरो दयार[२] है ।
ख़ूबी में सब तरह का इसे ऐतबार है ।
रोज़ा जो उस मकान में दरिया किनार है ।
नक्शे में अपने यह भी अ़जब ख़ुश निगार[३] है ॥१॥

रूए[४] ज़मीं पे यूं तो मकां खूब हैं यहां ।
पर इस मकां की खूबियां क्या-क्या करूं बयां ।
संगे सफ़ेद[५] से जो बना है क़मर निशां[६] ।
ऐसा चमक रहा है तजल्ली[७] से यह मकां ।
जिससे बिल्लौर की भी चमक शर्मसार[८] है ॥२॥

गुंबद है इसका जोर बुलन्दी से बहरा मंद[९] ।
गिर्द इसके गुम्दियां भी चमकती हुई हैं चंद ।
और वह कलस जो है सरे गुम्बद से सर बुलंद ।
ऐसा हिलाल[१०] उसमें सुनहरा है दिल पसंद ।
हर माह जिसके ख़म[११] पै महे[१२] नौ निसार है ॥३॥

---

३८. भीड़ ३९. हमेशा ४०. बुरी नज़र से बचा हुआ ४१. सुखचैन के साथ ।

१. ज़ाहिर है २. देश ३. सुन्दर चित्रित ४. पृथ्वी की सतह ५. सफेद पत्थर, संगमरमर ६. चांद जैसा ७. आभा, प्रकाश ८. लज्जित, तिरस्कृत ९. सौभाग्यशाली १०. चांद ११. टेढ़ेपन १२. नयाचांद

गुम्बद के नीचे और मकां हैं जो आसपास ।
वह भी बरंगे सीम[१३] चमकते हैं ख़ुश असास[१४] ।
बरसों तक उसमें रहिये तो होवे न जी उदास ।
आती है हर तरफ़ से गुले यासमन[१५] की बास ।
होता है शाद उसमें जो करता गुज़ार है ।।४।।

हैं बीच में मकां के वह दो मरक़दे[१६] जो यां ।
गिर्द उनके एक जाली मुहज्जिर है दुरफ़िशां[१७] ।
संगीन[१८] गुल[१९] जो उसमें बनाये हैं तह निशां[२०] ।
पत्ती, कली, सुहाग रगो[२१] रंग है अयां[२२] ।
जो नक्श[२३] उसमें है वह जवाहर निगार[२४] है ।।५।।

दीवारों पर हैं संग[२५] में नाज़ुक अज़ब निगार[२६] ।
आईने भी लगे हैं मुजल्ला[२७] हो ताब दार[२८] ।
दरवाज़े पर लिखा खत तुग़्रां[२९] है तरफ़ाकार ।
हर गोशे[३०] पर खड़े हैं जो मीनार उसके चार ।
चारों से तरफ़ा ओज[३१] की ख़ूबी दो चार है ।।६।।

पहलू में एक बुर्ज बसी कहते हैं उसे ।
आते नज़र हैं उससे मकां दूर दूर के ।
मस्जिद ऐसी कि जिसकी सिफ़त[३२] किससे हो सके ।
फिर और भी मकां हैं इधर और उधर खड़े ।
दरवाज़ए कलां भी बुलन्द उस्तवार[३३] है ।।७।।

जो सहन बाग़ का है वह ऐसा है दिलकुशा[३४] ।
आती है जिसमें गुलशने फ़िरदौस[३५] की हवा ।
हर सू[३६] नसीम[३७] चलती है और हर तरफ़ हवा ।
हिलती हैं डालियां सभी हर गुल है झूलता ।
क्या क्या रविश-रविश[३८] पै हुजूमे[३९] बहार है ।।८।।

---

१३. चांदी १४. सामान १५. चमेली के फूल १६. क़ब्रें, समाधियां १७. लहराती हुई, हिलता हुआ १८. बड़े बड़े १९. फूल २०. नीचे से २१. नस २२. प्रकट २३. चित्र, उभरे हुए चित्र २४. प्रतिभा को दिखाने वाले। २५. पत्थर, संगमरमर २६. चित्र २७. प्रकाशमान, रोशन २८. चमकदार २९. दीवारों पर बेल-बूटे, तस्वीरें बनाने या लिखने की लिपि ३०. कोने ३१. टेढ़ा, वक्र ३२. प्रशंसा, तारीफ़ ३३. दृढ़ मज़बूत ३४. रमणीक ३५. स्वर्ग के बाग़ ३६. हर तरफ ३७. ठंडी हवा ३८. बाग के अन्दर के पतले रास्ते ३९. बहार की भीड़

सर्वो सही खड़े हैं करीने[४०] से नस्तरन[४१] ।
कू-कू करे हैं कुमरियां[४२] होकर शकर शिकन[४३] ।
रावील सेवती से भरे हैं चमन-चमन ।
गुलनार[४४] लालओ[४५] गुलो नसरीनो नस्तरन ।
फव्वारे छुट रहे हैं रवाँ जूए बार[४६] है ॥६॥

वह ताजदार शाहजहां साहिबे सरीर ।
बनवाया है उन्होंने लगा सीमो-ज़र[४७] कमीर[४८] ।
जो देखता है उसके यह होता है दिल पज़ीर[४९] ।
तारीफ इस मकां की मैं क्या-क्या करूं "नज़ीर" ।
इसकी सिफ़त[५०] तो मुश्तहरे[५१] रोज़गार[५२] है ॥१०॥

शहर आगरा

रखता है गो क़दीम[१] से बुनियाद आगरा ।
अकबर के नाम से हुआ आबाद आगरा ॥
यां के खण्डहर, न और जगह की इमारतें ।
यारो अ़जब मुक़ाम है दिल शाद[२] आगरा ॥
शद्दाद[३] ज़र लगा न बनाता बहिश्त को ।
गर जानता कि होवेगा आबाद आगरा ॥
तोड़े कोई क़िले को कोई लूटे शहर को ।
अब किस से अपनी मांगे भला दाद आगरा ॥

---

४०. क्रम ४१. सेवती के फूल ४२. प्रसिद्ध सफेद पक्षी ४३. मिष्टभाषी ४४. अनार के फूल ४५. पोस्त के फूल, एक लाल फूल ४६. नहर (नहरें बह रही हैं) ४७. मालो दौलत ४८. अत्यधिक ४९. दिल पसंद ५०. प्रशंसा ५१. प्रसिद्ध ५२. ज़माना (इसकी प्रशंसा ज़माने में प्रसिद्ध है)

१. (अ० वि०) आदि काल से २. (फा० वि०) प्रसन्नचित्त ३. (अ० पु०) बहुत अधिक अत्याचार करने वाला एक प्राचीन बादशाह जो अपने को ईश्वर कहलवाता था, उसने दौलत लगाकर एक कृत्रिम स्वर्ग बनवाया था, परन्तु उसमें प्रवेश करते समय घोड़े से गिरकर मर गया ।

अब तो ज़रा सा गांव है, बेटी न दे इसे ।
लगता था वर्ना चीन का दामाद आगरा ।।
एक बारगी तो अब मुझे यारब तू फिर बसा ।
करता है अब ख़ुदा से यह फ़र्याद[4] आगरा ।।
एक ख़ूबरू[5] नहीं है यहां वर्ना एक दिन ।
था रश्के हुस्न बलख़ो नौशाद आगरा[6] ।।
हरगिज वतन की याद न आवे उसे कभी ।
जो करके अपनी जां को करे शाद आगरा ।।
इसमें सदा ख़ुशी से रहा है तेरा "नज़ीर" ।
यारब हमेशा रखियो तू आबाद आगरा ।।

शहरे आशोब[1]

(शहर आगरा की दुर्दशा)

है अब तो कुछ सुख़न[2] का मेरे कारोबार बंद ।
रहती है तबअ[3] सोच में लैलो निहार[4] बंद ।
दरिया सुख़न की फ़िक्र का है मौज दार बंद ।
हो किस तरह न मुंह में ज़ुबां बार बार बंद ।
जब आगरे की ख़ल्क़ का हो रोज़गार बंद ।।१।।

बेरोजगारी ने यह दिखाई है मुफ़्लिसी[6] ।
कोठे की छत नहीं हैं यह छाई है मुफ़्लिसी ।
दीवारो दर के बीच समाई है मुफ़्लिसी ।
हर घर में इस तरह से भर आई है मुफ़्लिसी ।
पानी का टूट जावे है जूं एक बार बंद ।।२।।

---

४. (फा० स्त्री०) सहायता के लिए पुकार ५. (फ़ा० वि०) रूपवान् ६. आगरे पर बलख नगर भी जलन करता था

१. बरबाद नगर २. कविता, काव्य, शायरी ३. तबियत ४. रात-दिन ५. लहरदार ६. ग़रीबी

कड़ियां जो साल की थीं बिकीं वह तो अगले साल ।
लाचार कर्ज़ों दाम से छप्पर लिए हैं डाल ।
फूस और ठठेरे इसके हैं जूं सरके बिखरे बाल ।
उस बिखरे फूस से है यह उन छप्परों का हाल ।
गोया कि उनके भूल गए हैं चमार, बंद ॥३॥

दुनिया में अब क़दीम[७] से है ज़र[८] का बन्दोबस्त[९] ।
और बेज़री[१०] में घर का न बाहर का बन्दोबस्त ।
आक़ा[११] का इन्तिज़ाम न नौकर का बन्दोबस्त ।
मुफ़्लिस[१२] जो मुफ़्लिसी में करे घर का बन्दोबस्त ।
मकड़ी के तार का है वह नाउस्तुवार[१३] बंद ॥४॥

कपड़ा न गठड़ी बीच, न थैली में ज़र रहा ।
ख़तरा न चोर का न उचक्के का डर रहा ।
रहने को बिन किवाड़ का फूटा खंडहर रहा ।
खंखार[१४] जागने का, न मुतलक़[१५] असर रहा ।
आने से भी जो होगए चोरो चकार बंद ॥५॥

अब आगरे में जितने हैं सब लोग है तबाह ।
आता नज़र किसी का नहीं एक दम निबाह ।
मांगो अज़ीज़ो ऐसे बुरे वक्त से पनाह ।
वह लोग एक कौड़ी के मोहताज अब हैं आह ।
कस्बो[१६] हुनर के याद हैं जिनको हज़ार बंद ॥६॥

सर्राफ़, बनिये, जौहरी और सेठ, साहूकार ।
देते थे सबको नक़्द, सो खाते हैं अब उधार ।
बाजार में उड़े है पड़ी ख़ाक बे शुमार ।
बैठें हैं यूं दुकानों में अपनी दुकानदार ।
जैसे कि चोर बैठे हों क़ैदी कतार बंद ॥७॥

---

[७] पुराने समय से [८] दौलत [९] प्रबन्ध [१०] गरीबी [११] मालिक [१२] गरीब [१३] कमज़ोर
[१४] खांसने मठारने का [१५] बिल्कुल [१६] उद्योगधंधे, उपार्जन

सौदागरों को सूद, न ब्यौपारी को फ़लाह[17] ।
बज़्ज़ाज़ को है नफ़ा न पनसारी को फ़लाह ।
दल्लाल को है याफ़्त[18], न बाज़ारी को फ़लाह ।
दुखिया को फ़ायदा न पिसनहारी को फ़लाह ।
यां तक हुआ है आन के लोगों का कार बंद ॥८॥

मारें है हाथ हाथ पे सब यां के दस्तकार ।
और जितने पेशावर[19] हैं सो रोते हैं ज़ार ज़ार ।
कूटे है तन लोहार तो पीटे है सर सुनार ।
कुछ एक दो के काम का रोना नहीं है यार ।
छत्तीस पेशे वालों के हैं कारोबार बंद ॥९॥

ज़र के भी जितने काम थे वह सब दुबक[20] गए ।
और रेशमी क़िवाम[21] भी यकसर चिपक(१) गए ।
ज़रदार उठ गए तो बटैये[22] सरक गए ।
चलने से काम तारकशों[23] के भी थक गए ।
क्या हाल बाल खींचे जो हो जाय तार बंद ॥१०॥

बैठे बिसाती राह में तिनके से चुनते हैं ।
जलते हैं नानबाई[24] तो भड़भूजे[25] भुनते हैं ।
धुनिये भी हाथ मलते हैं और सर को धुनते हैं ।
रोते हैं वह जो मशरुओ[26] दाराई[27] बुनते हैं ।
और वह तो मर गए जो बुनें थे इज़ार बंद ॥११॥

गर काग़ज़ी के हाल के काग़ज़ को देखिए ।
मुतलक़ उसे ख़बर नहीं कागज के भाव से ।
रद्दी, क़लम दुकान में, न टुकड़े हैं टाट के ।
यां तक कि अपनी चिट्ठी के लिखने के वास्ते ।
कागज का मांगता है हर इक से उधार बंद ॥१२॥

---

१७. भलाई, कल्याण १८. लाभ, आमदनी १९. रोज़गार करने वाले २०. छिप गए २१. तत्त्व २२. बटैये-कलावत्तू वग़ैरह बटने वाले २३. धातुओं के तार बनाने वाले २४. नान (रोटी) बनाने वाले २५. अनाज भूनने वाले २६. उस समय स्त्रियों के पाजामों वाला कपड़ा २७. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० चटक

लूटे हैं गरदो पेश[२८] जो क़ज़्ज़ाक[२९] राह मार ।
व्यापारी आते जाते नहीं डर से ज़िनहार[३०] ।
कुतवाल रोवें, ख़ाक उड़ाते हैं चौकी दार ।
मल्लाहों का भी काम नहीं चलता मेरे यार ।
नावें हैं घाट-घाट की सब वार पार बंद ।।१३।।

हर दम कमां गरों[३१] के ऊपर पेचो ताब हैं ।
सहोफ़े[३२] अपने हाल में ग़म की किताब हैं ।
मरते हैं मीनाकार मुसव्विर[३३] कबाब हैं ।
नक़्क़ास[३४] इन सभों से ज्यादा खराब हैं ।
रंगो क़लम के होगए नक़्शो निगार[३५] बंद ।।१४।।

वैचैन थे वह जो गूंध के फूलों के बध्धी हार ।
मुरझा रही है दिल की कली जी है दाग़दार ।
जब आधी रात तक न बिकी, जिन्स आबदार ।
लाचार फिर वह टोकरी अपनी ज़मी पे मार ।
जाते हैं कर(१) दुकान को आखिर वह हार बंद ।।१५।।

हज्जाम[३६] पर भी यां तईं है मुफ़्लिसी का ज़ोर ।
पैसा कहां जो सान पे हो उस्तरों का शोर ।
कांपे है सर भिगोते हुए उसकी पोर पोर ।
क्या बात एक बाल कटे या तराशे कोर ।
यां तक हैं उस्तरे व नहरनी की धार बंद ।।१६।।

डमरू(२) बजाके वह जो उतारे हैं ज़हर मार ।
आप ही वह खेलते हैं, हिला सर ज़मीं पे मार ।
मन्तर तो जब चले कि जो हो पेट का आधार ।
जब मुफ़्लिसी का सांप हो उनके गले का हार ।
क्या ख़ाक फिर वो बांधें कहीं जाके मार बंद ।।१८।।

---

२८. आसपास-रास्ते में २९. लूटने वाले, लुटेरा ३०. हरगिज ३१. धनुष बनाने वाले ३२. पुस्तक विक्रेता ३३. तस्वीर बनाने वाले, चित्रकार ३४. बेल-बूटे, फूलपत्ती बनाने वाले ३५. बेल-बूटे, फूल-पत्ती बनाना ३६. नाई

पाठान्तर—(१) श० गर
(२) श० आ० डेरू

लज़्ज़त[३७] है ज़िक्रो हुस्न[३८] के नक़्शो निगार[३९] से ।
महबूब है जो गुन्चे दहन[४०] गुल इज़ार[४१] से ।
आवें अगर वह लाख तरह की बहार से ।
कोई न देखे उनको नज़र भर के प्यार से ।
ऐसे दिलों के होगए आपस में कार बंद ॥१८॥

फिरते हैं नौकरी को जो बनकर रिसालादार[४२] ।
घोड़ों की (१) हैं लगाम न ऊंटों के है महार[४३] ।
कपड़ा न लत्ता, पाल न परतल न बोझ मार ।
यूं हर मकां में आके उतरते हैं सोगवार ।
जंगल में जैसे देते हैं लाकर उतार बंद ॥१९॥

कोई पुकारता है पड़ा 'भेज' या 'ख़ुदा' ।
अब तो हमारा काम थका भेज या ख़ुदा ।
कोई कहे है हाथ उठा भेज या ख़ुदा ।
ले जान अब हमारी तू या भेज या ख़ुदा ।
क्यूं रोज़ी यूं है कि मेरे परवरदिगार[४४] बंद ॥२०॥

मेहनत से हाथ पांव के कौड़ी न हाथ आये ।
बेकार कब तलक कोई कर्ज़ो उधार खाये ।
देखूं जिसे वह करता है रो-रो के हाय ! हाय ! ।
आता है ऐसे हाल पे रोना हमें तो हाय ।
दुश्मन का भी ख़ुदा न करे कारोबार बंद ॥२१॥

---

[३७] आनन्द [३८] सुन्दरता [३९] बेल बूटे, सौन्दर्य-प्रसाधन [४०] कली जैसे सुन्दर और छोटे मुँह वाले [४१] गुलाब जैसे सुन्दर और कोमल गालों वाला/वाली [४२] सवारों की एक टुकड़ी का नायक [४३] नकेल [४४] पालने वाले, ईश्वर ।

पाठान्तर—(१) श० आ० घोड़े के

आमद[45] न ख़ादिमों[46] के तईं मक़बरों[47] के बीच ।
बाम्हन(१) भी सर पटकते हैं सब मन्दिरों के बीच ।
आजिज़ हैं इल्म वाले भी सब मदरसों के बीच ।
हैरां हैं पीरज़ादे[48] भी अपने घरों के बीच ।
नज़रो नियाज़[49] हो गई सब एक बार बंद ॥२२॥

इस शहर के फकीर भिखारी जो हैं तबाह ।
जिस घर पे जा(२) सवाल वह करते हैं ख्वाह मख्वाह ।
भूखे हैं कुछ भिजाइयो बाबा खुदा की राह ।
वां से सदा[50] यह आती है 'फिर मांगो' जब तो आह ।
करते हैं होंट अपने वह हो शर्म सार बंद ॥२३॥

क्या छोटे काम वाले वह क्या पेशेवर नजीब[51] ।
रोज़ी के आज हाथ से आजिज़[52] हैं सब ग़रीब ।
होती है बैठे बैठे जब आ शाम अनक़रीब ।
उठते हैं सब दुकान से कहकर के या नसीब[53] ।
किस्मत हमारी हो गई बेइख़्तियार बंद ॥२४॥

किस्मत से चार पैसे जिन्हें हाथ आते हैं ।
अलबत्ता रूखी सूखी वह रोटी पकाते हैं ।
जो खाली आते हैं वह क़र्ज़ लेते जाते हैं ।
यूं भी न पाया कुछ तो फ़क़त ग़म ही खाते हैं ।
सोते हैं कर किवाड़ को एक आह मार बंद ॥२५॥

क्यूंकर भला न मांगिये इस वक़्त से पनाह ।
मोहताज[54] हो जो फिरने लगे दरबदर[55] सिपाह[56] ।
यां तक अमीर ज़ादे सिपाही हुए तबाह ।
जिनके जिलू[57] में चलते थे हाथी व घोड़े आह ।
वह दौड़ते हैं और के पकड़े शिकार बंद[58] ॥२६॥

---

४५. आमदनी ४६. सेवक ४७. कब्र जिस पर इमारत या गुंबद हो ४८. पीर के लड़के, धमगुरु के लड़के ४९. चढ़ावे की मिठाई आदि ५०. आवाज़ ५१. कुलीन, शुद्ध रक्त वाले जिनके खानदान में रक्त का मेल न हो ५२. परेशान ५३. भाग्य ५४. बेसहारा ५५. द्वार द्वार ५६. सेना, सिपाही ५७. सवारी में ५८. रस्सी

पाठान्तर—(१) श० आ० बामन (२) श० आ० में

है जिन सिपाहियों कने[५९] बन्दूक और सनां[६०] ।
कुन्दे का उनके नाम न चिल्ले का है निशां ।
चांदी के बंद तार तो पीतल के हैं कहां ।
लाचार अपनी रोज़ी का बाअस[६१] समझ के हां ।
रस्सी के उनमें बांधे हैं प्यादे सवार बंद ॥२७॥

जो घोड़ा अपना बेच के ज़ीन[६२] को गिरूं[६३] रखें ।
या तेग और सिपर[६४] को लिए चौक में फिरें ।
पटका[६५] जो बिकता आवे तो क्या ख़ाक देके लें ।
वह(१) पेश कबुज[६६] बिक के पड़े रोटी पेट में ।
फिर उसका कौन मोल ले वह लच्छेदार बंद ॥२८॥

जितने सिपाही यां थे न जाने किधर गए ।
दक्खिन के तईं निकल गए यो पेशतर[६७] गए ।
हथियार बेच होके गदा[६८] घर ब घर गए ।
जब घोड़े भाले वाले भी यूं दर बदर[६९] गए ।
फिर कौन पूछे उनको जो अब हैं कटार बंद ॥२९॥

ऐसा सिपाह[७०] मद का दुश्मन ज़माना है ।
रोटी सवार को है, न घोड़े को दाना है ।
तनख़्वाह न तलब है न पीना न खाना है ।
प्यादे[७१] दिवाल(२) बंद[७२] का फिर क्या ठिकाना है ।
दर-दर ख़राब फिरने लगे जब नक़ार बंद[७३] ॥३०॥

जितने हैं आज आगरे में कारख़ान जात ।
सब पर पड़ी है आन के रोज़ी की मुश्किलात ।
किस किस के दुःख को रोइये और किस की कहिए बात ।
रोज़ी के अब दरख़्त का हिलता नहीं है पात ।
ऐसी हवा कुछ आके हुई एक बार बंद ॥३१॥

---

५९. पास, अधिकार में ६०. तीर ६१. कारण, सबब ६२. ज़ीन ६३. गिरवीं ६४. ढाल ६५. कमर पर बांधे जाने का दुपट्टा ६६. छोटी कटार, भुजाली ६७. आगे ६८. भिखारी ६९. घर-घर ७०. सेना के ७१. पैदल सिपाही ७२. वह सिपाही जिसकी कमर पर चमड़ा या चमड़े की पेटी बंधती हो ७३. नक्कारे वाले, जिनके यहां नकारे बजते थे

पाठान्तर—(१) श० आ० जब (२) श० आ० प्यादे ब दाल

है कौन सा वह दिल जिसे फरसूदगी[७४] नहीं ।
वह घर नहीं कि रोज़ी की नाबूदगी[७५] नहीं ।
हरगिज़ किसी के हाल में बहबूदगी[७६] नहीं ।
अब आगरे में नाम को आसूदगीं नहीं ।
कौड़ी के आके ऐसे हुए रह गुज़ार[७७] बंद ॥३२॥

हैं बाग़ जितने यां के सो ऐसे पड़े हैं ख्वार ।
काँटे का नाम उनमें नहीं(१) फूल दरकिनार[७८] ।
सूखे हुए खड़े हैं दरख़्ताने[७९] मेवादार ।
क्यारी में ख़ाक धूल, रविश[८०] पर उड़े(२) ग़ुबार ।
ऐसी ख़िज़ां[८१] के हाथों हुई है बहार[८२] बंद ॥३३॥

देखे कोई चमन तो पड़ा उजाड़ सा ।
गुंचा[८३] न फल, न फूल, न सब्ज़ा हरा भरा ।
आवाज़ कुमरियों[८४] की, न बुलबुल की है सदा ।
न हौज़ में है आब न पानी है नहर का ।
चादर पड़ी है ख़ुश्क तो है आबशार[८५] बंद ॥३४॥

वे वारसी से आगरा ऐसा हुआ तबाह ।
फूटी हवेलियां हैं तो टूटी शहर पनाह ।
होता है बाग़बां[८७] से, हर एक बाग़ का निबाह ।
वह बाग़ किस तरह न लुटे और उजड़े आह ।
जिसका न बाग़वां हो, न मालिक न ख़ार बंद[८८] ॥३५॥

क्यों यारों इस मकां में यह कैसी चली हवा ।
जो मुफ़्लिसी से होश किसी का नहीं बचा ।
जो है सो इस हवा में दिवाना सा हो रहा ।
सौदा हुआ मिज़ाज ज़माने को या ख़ुदा ।
तू है हकीम खोल दे अब इसके चार बंद ॥३६॥

---

७४. क्षीण दशा होना, रंजीदगी ७५. बरबादगी ७६. अच्छाई ७७. आमदरफ़्त ७८. अलग, एक तरफ ७९. वृक्ष ८०. बाग़ के अन्दर के पतले रास्ते ८१. पतझड़ ८२. बसन्त ८३. कली, कलिका ८४. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी ८५. झरना, प्रपात ८६. संरक्षकहीनता ८७. माली ८८. आसपास काँटों की बाड़ लगाने वाला ।

पाठान्तर-- (१) श० आ० कांटे का उनमें नाम नहीं (२) श० आ० पड़े

है मेरी हक़ से अब यह दुआ शाम और सहर ।
कर(१) आगरे की ख़ल्क पै फिर मेहर की नज़र ।
सब खावें पीवें, याद रखें अपने-अपने घर ।
इस टूटे शहर पर इलाही तू फ़ज़्ल कर ।
खुल जावें एक बार तो सब कारोबार बंद ।।३७।।

आशिक़ कहो, असीर[९०] कहो, आगरे का है ।
मुल्ला कहो, दबीर[९१] कहो, आगरे का है ।
मुफ़्लिस[९२] कहो, फ़क़ीर कहो, आगरे का है ।
शायर कहो, नज़ीर कहो, आगरे का है ।
इस वास्ते यह उसने लिखे पांच चार बंद ।।३८।।

भूचालनामा[+]

भूचाल का जो हक़ ने यह नक़्शा दिखा दिया ।
क़ुदरत का अपनी ज़ोर जहां को दिखा दिया ।।
रोशन दिलों के नूर नज़र को बढ़ा दिया ।
ग़फ़लत ज़दों को मार के ठोकर जगा दिया ।।
दरियाओ[१], कोह[२], शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ।।१।।

---

९०. बंदी, कैदी ९१. मुहर्रिरं, लेख़क ९२. कंगाल, दरिद्र, गरीब

[+] नज़ीर अकबरावादी के समय में भूकम्प आया था उसी का वर्णन किया गया है ।

१. नदी २. पहाड़

पाठान्तर—(१) श० आ० हो

जिन मुन्किरों[3] को नूह के तूफ़ां[4] का सुबह था ।
और दोज़ख़ो बहिश्त समझे है तोतिया ॥
क़ायल न कब्र के थे न ख़तरा था हश्र का ।
इस ज़लज़ले ने सबके दिये वसवसे[5] मिटा ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥२॥

सन् बारह सौ अठारह में यह वारदात थी ।
अव्वल जमादी बारहवीं तारीख सात थी ॥
दिन बुध का जुमेरात की वह आधी रात थी[6] ।
भूचाल क्या था क़ुदरते हक़ की यह बात थी ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥३॥

थी आधी रात जो हुआ भूचाल का गुज़र ।
पत्ता सा थर थरा गया पत्ताल का जिगर ॥
सातों तबक़ के हिल गए सकान[7] सर बसर ।
दर बोले अल हफ़ीज़[8] तो दीवारें अल हज़र[9] ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥४॥

अजज़ाए[10] अर्ज़[11] क़ाफले ताक़ाफ़[12] हिल पड़ें ।
अजगर अटल अचल के कलेजे उबल पड़ें ॥
इंसा घरों में दश्त[13] में वहशी[14] निकल पड़े ।
तायर[15] भी आशयानों[16] में अपने उछल पड़े ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥५॥

---

३. (अ० फा० पु०) नास्तिक ४. (अ० पु०) एक पैगम्बर जिनके समय में पानी का भयानक तूफान आया था, जिसमें सारा संसार नष्ट हो गया था, कुछ आदमी बचे थे जिनकी संतान इस समय है ५. शक, सन्देह ६. बारह जमादीउल अव्वल सन् १२१८ हिजरी, तदनुसार २५ अगस्त सन् १८०३ ई० ७. निवासी ८. हिफ़ाज़त कर ९. क़ायम रख १०. टुकड़े ११. ज़मीन १२. ज़मीन के टुकड़े सारी दुनियां में फैल गए १३. जंगल १४. जंगली १५. पक्षी १६. घोसलों में

गढ़, कोट, क़िला, रूए ज़मीं पर दहल गए ।
कांपने लगीं बुर्ज, कंगूरे भी हिल गए ॥
संगीं मकां महल जो बने थे उसल गए ।
ईंटों के ज़ोहरे[17] फट पड़े पत्थर पिघल गए ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥६॥

बाहम किवाड़ गिर पड़े, ज़ंजीर हिल गईं ।
कड़ियां कड़क कड़क के छतों से निकल गईं ॥
छज्जे सुतून[18] कांपे, मुंडेरे दहल गईं ।
दीवारें झूम झूम के पंखें सी झल गईं ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥७॥

घर-घर में शोर हो गया, और ग़ुल गली गली ।
रूए ज़मीं पे पड़ गई एकदम में खलबली ॥
कोई अल्लाह-अल्लाह कह उठा, कोई राम-राम जी ।
कोई हुसैन कह उठा, कोई अली-अली ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥८॥

लरज़े में आके डालियां नख़्लों[19] की हिल गईं ।
दहशत से चल बिचल हो, जड़ें भी कुचल गईं ॥
थर्रा के माहो[20] माही[21] की चूलें उसल गईं ।
जल, थल के होश उड़ गए, रेखें निकल गईं ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ॥९॥

जो अर्ज़[22] सब जहां में बोझों के तई सहे ।
जब वह थर थराईं तो फिर हम कहां रहे ॥
जिन्नात, देव, शेर, शुतर, फ़ील, अज़्दहे ।
इक हूं में सबके तनके ग़रज़ खिल गए चहे ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँब। दिया ॥१०॥

---

१७. कलेजे १८. खम्भा १९. पेड़ २०. चांद २१. मछली, २२. ज़मीन

क़ुदरत की तेग़ की है यक कुछ आबे दरदरी ।
खिंचते ही सबके पड़ गई सीनों में थर थरी ।।
दाराई[23] काम आई न कुछ यहां सिकन्दरी[24] ।
इक दम में थरथरा गई सब ख़ुश्की और तरी ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थँबा दिया ।।११।।

भूचाल की धमक का वह सुनते ही कड़कड़ा ।
जी धक से तन में हो गया और दम निकल चला ।।
औरों के दिल की क्या कहूं ! जाने वही ख़ुदा ।
पर मैं तो जाना सूरे इस्राफ़ील[25] फुक गया ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१२।।

आंखों से मेरे उस घड़ी आंसू अजब चले ।
गुज़रा यह जी में हाय ! हुआ क्या ! ग़जब चले ।।
तहतुस्सरा[26] की सैर को हम सबके सब चले ।
दिल में यही यक़ीन हुआ यानी अब चले ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१३।।

हैबत के मारे पहले तो दिल हो गया दो नीम ।
जब थम गया तो होगया वह वहीं मुस्तक़ीम[27] ।।
यह क़ुदरतों की देख के शाने उमीदो वीम ।[28]
सर को झुका के मैंने कहा वहीं या करीम ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१४।।

---

[23] बादशाहत, बुद्धि
[24] बादशाहत, वीरता दारा ईरान का एक बादशाह जिसे यूनान के बादशाह सिकन्दर ने जीता था
[25] कयामत के दिन फरिश्ते इस्राफील द्वारा बजाई जाने वाली तुरही
[26] जमीन का सबसे नीचे का हिस्सा, पाताल
[27] सीधा, स्थिर
[28] आशा-निराशा, सोच-विचार

भूचाल में कहां था यह नक़्शा मजाल का ।
सब हुक्म था यह हज़रते एज़दताल[२९] का ।।
इक पल में यों बढ़ा दिया शोला जलाल का ।
इक दम में फिर घटा दिया नक़्शा ख़याल का ।।
दरियाओ, कोह, शहरों, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१५।।

भूचाल का तो कहने की ख़ातिर ही नाम था ।
यह ज़ोर शोर और की क़ुदरत का काम था ।।
अहकाम[३०] जुल मिनन[३१] का जहां अहतिमाम[३२] था ।
यह जलजला वहां का एक अदना गुलाम था ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१६।।

थीं जितनी-जितनी अस्ल ज़मीं की रसाइयां ।
इक जलजले ने सबको पकड़ के हिलाइयां ।।
भूचाल ने यह जैसी हवाऐं दिखाइयां ।
ऐसी हज़ारों उसकी हैं क़ुदरत नुमाइयां ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१७।।

दस्ते[३३] क़ज़ा की उंगली की छोटी यह पोर है ।
हिलने से जिसके कांपा हर इक मार मोर[३४] है ।।
भूचाल का तो यारो यह अदना सा शोर है ।
सौ दर्जे उससे उसकी तो क़ुदरत में ज़ोर है ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१८।।

जैसा कि उसके हुक्म से आया था ज़लज़ला ।
कांपी तमाम रूए ज़मीं जिस से थर थरा ।।
ऐसा ही गर वह हुक्म से अपने न रोकता ।
फिर कुछ न था जहां में फ़क़त पानी-पानी था ।।
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ।।१९।।

---

२९. ख़ुदा ३०. आदेश ३१. बहुत अधिक नेंमते देने वाला, ईश्वर ३२. प्रबन्ध ३३. मृत्यु के हाथ
३४. सांप और मोर

भूचाल के तो हमको खयालातो ख़ाम थे।
यह छोड़ने, यह रोकने क़ुदरत के काम थे॥
था डौल तो वही कि न ख़ासो आम थे।
रहम आ गया वग़रना वहीं सब तमाम थे॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया॥
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया॥२०॥

सिज़दा करो खुदा के तईं यारो दम बदम।
आख़िर करीम था, तो किया उसने फिर करम॥
बाक़ी तो कुछ रहा न था फिर थम गए क़दम।
वर्ना अभी घड़ी में फिर न तुम थे और न हम॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया॥
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया॥२१॥

भूचाल क्या वह चाहे तो इक पल के मारते।
कर डाले आसमानो ज़मीं को उपर तले॥
उड़ने लगे पहाड़ रुई की तरह पड़े।
क़ादिर[३५] क़दीर[३६] दम में जो चाहे सो कुछ करे॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया॥
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया॥२२॥

कहते हैं यों हकीम कि फिरती है सब हवा।
आता है उससे रूए ज़मीं पर यह जलज़ला॥
ख़ालिक का भेद ही यह किसी पर नहीं खुला।
हम तो उसी के हुक्म का जाने हैं दबदबा॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया॥२३॥

---

[३५] शक्तिशाली [३६] सर्वशक्तिमान, असम्भव को सम्भव बनाने वाला

महकूम[37] सब हैं उसके ही हाकिम वही इलाह ।
ताबे[38] हैं जिसके रम्ज़[39] के माही से ताब माह[40] ॥
जब उसका हुक्म आवे तो हो कौन सद्दे राह[41] ।
क्या हुक्म है अज़ीज़ो ज़रा देखो वाह ! वाह ! ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ॥२४॥

हाकिम वही, हकीम[42] वही, हक़ वही, कबीर ।
ख़ालिक़ वही, ख़ुदा वही, दाता वही ख़बीर[43] ॥
मालिक वही, मलिक[44] वही, क़ादिर वही, क़दीर ।
क़ुदरत का उसकी एक करिश्मा था ऐ "नज़ीर" ॥
दरियाओ, कोह, शहरो, जंगल सब हिला दिया ।
एक आन में हिला दिया और फिर थंबा दिया ॥२५॥

---

३७. आदेश का पालन करने वाले ३८. ताबेदार, आज्ञाकारी ३९. रहस्य ४०. मछली से चाँद तक, नीचे से ऊपर तक ४१. रुकावट ४२. विद्वान, बुद्धिमान, ४३. खबर रखने वाला ४४. बादशाह

विविधि-वर्णन

ज़ुल्फ़ के फन्दे

चहरे पै स्याह नागिन छूटी है जो लहरा कर ।
किस पेच से आई है रुख़सार पै बल खाकर ।।
जिस काकुलेमुश्कीं[1] में फंसते हैं मलक[2] आकर ।
उस ज़ुल्फ़ के फन्दों ने रक्खा मुझे उलझाकर ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।१।।

जिस दिन से हुआ आकर उस जुल्फ का ज़न्दानी[3] ।
इक हो गई यह मेरो ख़ातिर की परेशानी ।।
भर उम्र न जावेगी अब जी से पशेमानी[4] ।
अफ़सोस, कहूं किससे मैं अपनी यह नादानी ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।२।।

जिस वक्त लिखी होवे क़िस्मत में गिरफ़्तारी ।
कुछ काम नहीं आती फिर अक़्ल की हुशियारी ।।
यह क़ैद मेरे ऊपर ऐसी ही पड़ी भारी ।
रोना मुझे आता है इस बात पै हर बारी ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।३।।

उस ज़ुल्फ़ के हर्बों[5] ने लाखों के तईं मारा ।
अल्लाह की ख़्वाहिश से बन्दे का नहीं चारा ।।
कुछ बन नहीं आता है, ताक़त है न कुछ यारा ।
अब काहे को होता है इस क़ैद से छुटकारा ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।४।।

---

१. कस्तूरी केश २. फरिश्ते, देवता ३. क़ैदी ४. लज्जा, पछतावा ५. साँग, हथियार

उस जुल्फ़ तलक मुझको काहे को रसाई थी ।
क़िस्मत ने मेरी ख़ातिर ज़ंजीर बनाई थी ।।
तक़दीर मेरे आगे जिस दम उसे लाई थी ।
शायद कि अजल मेरी बनकर वही आई थी ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।५।।

गर चाहे ज़नख़दाँ[६] में मैं डूब के दुख पाता ।
यूसुफ की तरह इक दिन आख़िर में निकल आता ।।
उस जुल्फ़ की ज़न्दां से कुछ पेश नहीं जाता ।
आख़िर यही कह कह कर फिरता हूं मैं घबड़ाता ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।६।।

इसको तो मेरे दिल के डसने की शिताबी है ।
और जिसकी वह नागिन है वह मस्त शराबी है ।।
इस ग़म से लहू रोकर पुर चश्मे गुलाबी है ।
क्या तुर्फ़ा मुसीबत है, क्या सख़्त ख़राबी है ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।७।।

हर बन्द मेरे तन का इस क़ैद में गलता है ।
सर पावों से जकड़ा हूं कुछ बस नहीं चलता है ।।
जी सीने में तड़पे है, अश्क आंख से ढलता है ।
हर वक़्त यही मिस्रा अब मुंह से निकलता है ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।८।।

इस क़ैद की सख्ती में संभला हूं, न संभलूंगा ।
इस काली बला से मैं जुज़ रंज के क्या लूंगा ।।
इस मूज़ी के चंगुल से छूटा हूं न छूटूंगा ।
आख़िर को यही कह कह इक रोज़ में जी दूंगा ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।९।।

यह क़ैदे फ़रंग ऐसी दुनिया में बुरी शै है ।
छूटा न असीर इसका इस क़ैद की वह रै है ।।
अब चश्म का साग़र है और ख़ूने जिगर मै है ।
कुछ बन नहीं आता है, कैसी फ़िक्र करूं ऐ है ।।
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ।।१०।।

---

[६] ठोड़ी का गड्ढा [७] क़ैद

कहने को मेरे यारो मत दिल से भुला दीजो ।
ज़ंजीर कोई लाकर पांवों में पिन्हा दीजो ॥
मर जाऊं तो फिर मेरा आसार[8] बना दीजो ।
मरक़द[9] पै यही मिस्रा तुम मेरे खुदा दीजो ॥
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ॥१॥

उस ज़ुल्फ़ के फंदे में यों कौन अटकता है ।
ज्यों चोर किसी जागह रस्से में लटकता है ॥
कांटे की तरह दिल में ग़म आके खटकता है ।
यह कहके "नज़ीर" अपना सर ग़म से पटकता है ॥
दिल बन्द हुआ, यारो ! देखो तो कहां जाकर ॥१२॥

परी का सरापा[1]

खूंरेज़करिश्मा[2], नाज़ो सितम, गम्ज़ों[3] की झुकावट वैसी ही ।
मिज़गाँ[4] की सनां[5], नज़रों की अनी[6] अब्रू[7] की खिंचावट वैसी ही ॥
क़त्ताल[8] निगाह और दिष्ट ग़ज़ब आंखों की लगावट वैसी ही ।
पलकों की झपक, पुतली की फिरत, सुर्मे की लगावट वैसी ही ॥
अय्यार नज़र, मक्कार अदा, त्योरी की चढ़ावट वैसी ही ॥१॥

बेदर्द, सितमगर, बेपरवा, बेकल, चंचल, चटकीली सी ।
दिल सख़्त क़यामत पत्थर सा और बातें नर्म रसीली सी ॥
आनों की बान हटीली सी, काजल की आंख कटीली सी ।
वह अंखियां मस्त नशीली सी कुछ काली सी कुछ पीली सी ॥
चितवन की दग़ा, नज़रों की कपट, सैनों की लड़ावट वैसी ही ॥२॥

---

[8] निशान [9] क़ब्र

[1] शिखनख वर्णन [2] खून बरसाने वाला चमत्कार [3] हावभाव [4] पलक [5] बरछी [6] नोंक [7] भोंह [8] क़त्ल करने वाली

थी खूब अदा से सर ऊपर संजाफ दुपट्टे की उल्टी ।
बलदार लटें, तस्वीर जबीं[9] जकड़ी मेंढ़ी, नीची कंघी ।।
दिल लोट न जावे अब क्योंकर, और देख न उलझे कैसे जी ।
वह रात अंधेरी बालों की, वह मांग चमकती बिजली सी ।।
जुल्फों की खुलत, पट्टी की जमत(१), चोटी की गुंधावट वैसी ही ।।३।।

उस काफ़िर बीनी[10] और नथ के अन्दाज़ क़यामत शान भरे ।
और गहरे चाहे ज़नख़न्दाँ[11] में, सौ आफ़त के तूफान भरे ।।
वह नर्मो साफ़ सितारा से और मोती से दामान भरे ।
वह कान जवाहरकान भरे कन फूलों, बाले जान भरे ।।
बुन्दों की लटक, झुमकों की झमक(२), बाले की हिलावट वैसी ही ।।४।।

चेहरे पर हुस्न की गर्मी से हर आन झमकते मोती से ।
ख़ुशरंग पसीने की बूंदें, सौ बार झमकते मोती से ।।
हँसने की अदा में फूल झड़ें, बातों में टपकते मोती से ।
वह पतले पतले होंठ ग़ज़ब वह दांत चमकते मोती से ।।
पानों की रंगावट क़हर सितम, धड़ियों की जमावट वैसी ही ।।५।।

उस सीने का वह चाक सितम, उस कुर्ती का तनज़ेब ग़ज़ब ।
उस क़द की ज़ीनत[12] क़हर बला उस काफ़िर छवि का ज़ेब ग़ज़ब ।।
उन डिबियों का आज़ार बुरा, उन गेंदों का आसेब[13] ग़ज़ब ।
वह छोटी छोटी सख़्त कुचें, वह कच्चे कच्चे सेब ग़ज़ब ।।
अंगिया की भड़क, गोटों की झमक, बुन्दों की कसावट वैसी ही ।।६।।

थी पहने दोनों हाथों में काफ़िर जो कड़े गंगा जमुनी ।
कुछ शोख़ कड़ों की झनकारें, कुछ झनके चूड़ी बाहों की ।।
यह देख के आलम आशिक़ का सीने में न तडपे क्यूँ कर जी ।
वह पतली पतली अंगुश्तें, पोरें वह नाज़ुक नाज़ुक सी ।।
मेंहदी की रँगत, फ़न्दक़[14] की बनत, छल्लों की छलावट वैसी ही ।।७।।

---

९. माथा १०. नाक ११. ठोड़ी का गड्ढा १२. सौन्दर्य १३. ख़तरा, भूत-बाधा १४. मेंहदी से रंगे उंगलियों के सिरे

पाठान्तर—(१) आ० चमत (२) श० जमक

तक़रीर बयां से बाहर है, वह काफ़िर हुस्न, अहा ! हा ! हा ! ।
कुछ आप नई कुछ हुस्न नया, कुछ जोश जवानी उठती का ॥
लपकें, झपकें उन बाहों की यारों मैं आह ! कहूं क्या-क्या ।
वह बांके बाज़ू होशरुबा[15], आशिक़ से खेले बांक पटा ॥
पहुंची की पहुंच, पहुंचे पै ग़जब, बांकों की बंधावट वैसी ही ॥८॥

वह काफ़िर धज, जी देख जिसे सौ बार क़यामत का लरज़े ।
पाज़ेब, कड़े, पायल, घुंघरू, कड़ियां, छड़ियां, गजरे, तोड़े ॥
हर जुम्बिश में सौ झंकारें, हर एक क़दम पर सौ झमके ।
वह चंचल चाल जवानी की, ऊंची एड़ी नीचे पंजे ॥
कफ़्शों[16] की खटक, दामन की झटक, ठोकर की लगावट वैसी ही ॥९॥

एक शोरे क़यामत साथ चले, निकले काफ़िर जिस दम बन ठन ।
बलदार कमर रफ़्तार ग़जब, दिल की क़ातिल जी की दुश्मन ॥
मज़कूर[17] करूं मैं अब यारों उस शोख़ के क्या क्या चंचलपन ।
कुछ हाथ हिलें कुछ पांव हिलें, फड़कें बाज़ू थिरके सब तन ॥
गाली वह बला, ताली वह सितम, उंगली की नचावट वैसी ही ॥१०॥

यह होश क़यामत काफ़िर का, जो बात कहो वह सब समझे ।
रूठे, मचले, सौ स्वांग करे, बातों में लड़े, नज़रों में मिले ॥
यह शोख़ी फुर्ती बेताबी एक आन कभी निचली न रहे ।
चंचल अचपल मटके चटके, सर खोले ढांके हँस-हँस के ॥
कहकह की हंसावट और ग़ज़ब, ठट्ठों की उड़ावट वैसी ही ॥११॥

कोहनी मारे, चुटकी लेले छेड़े, झिड़के, देवे गाली ।
हर आन 'चे ख़ुश', हर दम 'अच्छा', हर बात ख़ुशी की चुहल भरी ॥
नज़रों में साफ़ उड़ाले दिल, इस ढब की काफ़िर अय्यारी ।
और हट जावे सौ कोस परे, गर बात कहो कुछ मतलब की ॥
रम्ज़ो[18] के ज़िले[19], गम्ज़ों की जुगत, ठट्ठों की उड़ावट वैसी ही ॥१२॥

---

[15] होश उड़ाने वाले [16] पादुका, जूती [17] वर्णन [18] संकेत [19] छाया, परछाइं

कातिल हर आन नये आलम, काफ़िर हर आन नई झमकें ।
बाँकी नज़रें तिरछी, पलकें, भोली सूरत, मीठी बातें ॥
दिल बस करने के लाखों ढब, जी लेने की सौ सौ घातें ।
हर वक़्त फ़बन, हर आन सजन, दम दम में बदले लाख धजें ॥
बाहों की झमक, घूंघट की अदा, जोवन की दिखावट वैसी ही ॥१३॥

जो उस पर हुस्न का आलम है, वह आलम हूर कहां पावे ।
गर पर्दा मुंह से दूर करे, खुर्शीद को चक्कर आ जावे ॥
जब ऐसा हुस्न भभूका हो, दिल ताब भला क्यूंकर लावे ।
वह मुखड़ा चांद का टुकड़ा, सा जो, देख परी को गश आवे ॥
गालों की दमक, चोटी की झमक रंगों की खिलावट वैसी ही ॥१४॥

तस्वीर का आलम नख सिख से छब तख्ती साफ़ परी की सी ।
कुछ चीनें जबीं पर ऐंठ रही और होंठों में कुछ गाली सी ॥
बेदर्दी सख़्ती बहुतेरी; और मेहरों मुहब्बत थोड़ी सी ।
झूठी अय्यारी नाक चढ़ी, भोली भाली पक्की बीसी ॥
बातों की लगावट क़हर सितम, नज़रों की मिलावट वैसी ही ॥१५॥

कुछ नाज़ो अदा कुछ मग़रूरी, कुछ शर्मो हया कुछ बांकपना ।
कुछ आमद हुस्न के मौसम की, कुछ काफिरजिस्म रहा गदरा ॥
कुछ शोर जवानी उठती का चढ़ता है उमंड कर जूं दरिया ।
वह सीना उभरा जोश भरा, वह आलम जिसका झूम रहा ॥
शानों[२१] की अकड़, जोबन की तकड़, सज धज की सजावट वैसी ही ॥१६॥

यह काफिर गुद्दी का आलम घबराये परी भी देख जिसे ।
वह गोरा साफ गला ऐसा, बह जावे मोती देख जिसे ॥
दिल लोटे तड़पे हाथ मले, और ग़श खावे जी देख जिसे ।
वह गर्दन ऊंची हुस्न भरी, कट जाय सुराही देख जिसे ॥
दायें की मुड़त बायें की फिरत, मोढ़ों की खिंचावट वैसी ही ॥१७॥

---

२०. माथे का बल जो अप्रसन्नता का चिह्न है   २१. कंधा

इस गोरे नाज़ुक सीने पर वह गहने के गुलज़ार खिले ।
चंपे की कली, हीरे की जड़ी तोड़े जुगनू हैकल[22] बद्धी ॥
दिल लोटे तड़पे हाथ मले और जाय नज़र हर दम फिसली ।
वह पेट मलाई सा काफ़िर वह नाफ़ चमकती तारा सी ॥
शोख़ी की खुलावट और सितम शर्मों की छिपावट वैसी ही ॥१८॥

हर आन निराली हर इक से उस शोख़ परी की महबूबी ।
कुछ नाज़ो अदा की मरग़ूबी[23] कुछ शर्मों हया की महबूबी ॥
अब गहने की तारीफ करूँ या काफ़िर जोड़े की ख़ूबी ।
पोशाक सुनहरी इत्र भरी सर पाँव जवाहर में डूबी ॥
जुगनू की दमक, हीना की सफा, कुर्ती की फँसावट वैसी ही ॥१९॥

जब ऐसा हुस्न का दरिया हो किस तौर न लहरों में बहिए ।
गर मेहरो मुहब्बत हो भीतर और जोरो जफ़ा हो तो सहिए ॥
दिल लोट गया है ग़श खाकर बस और तो आगे क्या कहिए ।
मिल जाय "नज़ीर" ऐसी जो परी छाती से लिपट कर सो रहिए ॥
बोसों की चपक, बग़लों की लपक, सीनों की मिलावट वैसी ही ॥२०॥

---

[22] गले की माला [23] रुचिकर, आकर्षण

समधिन—१

करूं किस मुंह से ये यारो बयां मैं शान समधिन की ।
लगी है अब तो मेरे दिल को प्यारी आन समधिन की ।।
चमन में हुस्न के हों उसके रुख़ और जुल्फ़ पर क़ुर्बां ।
अगर देखें ज़रा सूरत गुले रेहान[२] समधिन की ।।
कमर नाज़ुक मटकती चाल आंखें शोख़, तन गोरा ।
नज़र चंचल, अदा अछपल, यह है पहचान समधिन की ।।
सुनहरी ताश का लंहगा, रुपहली गोट की अंगिया ।
चमकता हुस्न जोवन का, झमकती आन समधिन की ।।
मलाई सा शिकम[३], सीना मुसफ़्फ़ा[४], ख़ुशनुमा साक़ें[५] ।
सफ़ा ज़ानू[६] का आईना, मुलायम रान समधिन की ।।
कहूं कुछ और भी आगे जो समधिन हुक्म फ़रमावें ।
सिफ़त मंज़ूर है हमको तो अब हर आन समधिन की ।।
बड़ा ऐहसान मानें हम तुम्हारा आज समधी जी ।
मयस्सर[७] हो अगर सोहबत हमें एक आन समधिन की ।।
हमें एक दो घड़ी के वास्ते दूल्हा दिला दो तुम ।
जो कुछ लंहगे के अन्दर चीज़ है पिनहान[८] समधिन की ।।
नज़ीर अब आफ़रीं[९] है यार तेरी तब्अ[१०] को हर दम ।
कही तारीफ़ तूने ख़ूब आलीशान समधिन की ।।

समधिन—२

सरापा[१] हुस्ने समधिन गोया गुलशन की क्यारी है ।
परी भी अब तो बाजी हुस्न में समधिन से हारी है ।
खिची कंघी, गुंथी चोटी, अभी पट्टी लगा काजल ।

---

१. ये कविताएँ लाला विलासराय के पुत्र के विवाह में न्योंतनी के समय कवि ने पढ़ी थीं २. एक सुगन्धितफूल ३. पेट ४. स्वच्छ ५. पिंडलियाँ ६. जाँघ ७. उपलब्ध ८. गुप्त ९. शाबाश १०. प्रकृति

१. सिर से पैर तक का, शिखनख

कमां अब्रू[2] नज़र जादू निगह हर एक दुलारी है ।
जबीं[3] माहताब[4], आंखें शोख़, शीरीं लब, गोहर दन्दां[5] ।
बदन मोती, दहन गुंचा, अदा हंसने की प्यारी है ।
नया कमख़्वाब का लहंगा झमकते ताश की अंगिया ।
कुचें तस्वीर सी जिन पर लगा गोटा किनारी है ।
मुलायम पेट मख़मल सा कली सी नाफ़[6] की सूरत ।
उठा सीना सफ़ा पेड़ू अजब जोवन की नारी है ।
लटकती चाल मदमाती चले बिछुओं[7] को झनकाती ।
भरे जोवन में इतराती झमक अंगिया की दिखलाती ।
कमर लंहगे से बल खाती लटक घूंघट की भारी है ।

सच्चे नफ़्स कुश हीजड़े

बेटा हुआ किसी के जो सुन पावें हीजड़े ।
सुनते ही उसके घर में फिर आजावें हीजड़े ॥
नाचें बजाके तालियां और गावें हीजड़े ।
ले लेके बेल भाव भी बतलावें हीजड़े ॥
उसके बड़े नसीब जहां जावें हीजड़े ॥

ज़ाहिर में गरचे पेट के अपने मजूरे हैं ।
पर दिल में अपने फ़क्र के गहने को घूरे हैं ॥
.... न इनके पास न दोनों.............. हैं ।
ख़ासे लंगोट बंद ख़ुदा के यह पूरे हैं ॥
बेटा दुआ से बाँझ के जनवावें हीजड़े ॥

---

[2] भवें कमान की तरह [3] ललाट [4] चांद [5] मोती जैसे दांत [6] नाभि [7] बिछुआ-पैर की उंगलियों में पहने जाने वाला जेबर

.... अश्लील होने के कारण यहाँ के शब्द सभी कुल्लियातों में इसी तरह छोड़ दिए गए हैं

पूरे फ़क़ीर नफ़्स कुशी[1] का करें है शग़ल ।
इनमें भी बाज़े रखते हैं कितने ख़ुदा से वस्ल ।।
जो नफ़्स मारते हैं वह करते हैं उनकी नक़ल ।
सच पूछिये तो नफ़्स उन्होंने किया है कत्ल ।।
क्या मर्दमी कि मर्द हैं कहलावें हीजड़े ।।

यूं देखने में गरचे यह हल्के से माल हैं ।
नाचे हैं नेग जोग का करते सवाल हैं ।।
हमको तो पर उन्हों से अदब के ख़याल हैं ।
अक्सर उन्हों के भेस में साहिब कमाल हैं ।।
जो कुछ मुराद मांगो यह बर लावें हीजड़े ।।

बातें भी उनकी साफ़ हैं मिलना भी साफ़ है ।
सीना भी उनका आइना मुखड़ा भी साफ है ।।
ज़ाहिर भी उनका साफ़ है जेवडा भी साफ़ है ।
आगा भी उनका साफ़ है पीछा भी साफ़ है ।।
जब ऐसे ज़िन्दा दिल हों तो कहलावें हीजड़े ।।

चलते हैं अपने हाल में क्या क्या मटकती चाल ।
कुछ ऊंची ऊंची चोलियां कुछ लम्बे लम्बे बाल ।।
आता है उनको देख मुजर्रद[2] के दिल को हाल ।
………… को लात मारके एक दम में दे निकाल ।।
वह मरदुआ कि जिसके तईं भावें हीजड़े ।।

यह जान छल्ले अब जो कहाते हैं ख़ुश सफ़ीर[3] ।
है दिल हमारा उनकी मुहब्बत में अब असीर[4] ।।
मुद्दत से हो रहा है इरादा यह दिल पज़ीर ।
अल्लाह हमें भी देवे जो बेटा तो ऐ "नज़ीर" ।।
हम भी बुला के ख़ूब से नचवावें हीजड़े ।।

---

[1] इन्द्रिय-दमन [2] एकाकी, अविवाहित [3] शुभ-संदेशक [4] क़ैद

मोती+

रहे हैं अब तो पास उस शेख़ के शामो सहर मोती ।
ज़बीं पर मोती और वेसर(१) में मोती मांग पर मोती ।।
इधर जुगनू उधर कुछ बालियों में जलवागर[1] मोती ।
भरे हैं उस परी में अब तो यारो सर बसर मोती ।।
गले में कान में नथ में जिधर देखो उधर मोती ।।

कोई उस चांद से माथे के टीके में उछलता है ।
कोई बुन्दों से मिलकर कान की(२) नर्मी में मिलता है ।।
लिपट कर धुगदुगी में कोई सीने पर मचलता है ।
कोई झुमकों में झूले हैं कोई बाली में हिलता है ।।
यह कुछ लज़्ज़त[2] है जब अपना छिदावे है जिगर मोती ।।

कभी वह नाज़ में हंसकर जो कुछ बातें बनाती है ।
तो एक एक बात में मोती को पानी में बहाती है ।।
अदाओ नाज़ में चंचल अज़ब आलम दिखाती है ।
वह सुमरन मोतियों की उंगलियों में जब फिराती है ।।
तो सदके उसके होते हैं पड़े हर पोर पर मोती ।।

ग़लत है उस लबे रंगी[3] को बर्गे गुल[4] से क्या निस्बत[5] ।
कि जिनकी है अक़ीक़ और पन्ने और याक़ूत को हसरत[6] ।।
उदाहट कुछ मिसी की, और कुछ उस पर पान की रंगत ।
वह हंसती है तो खिलता है जवाहर ख़ानए क़ुदरत[7] ।।
इधर लाल और उधर नीलम, इधर मरजां[8] उधर मोती ।।

+ कहा जाता है कि मोतीबाई नामक वैश्या से मियाँ नज़ीर अकबरावादी का प्रेम था ।

१. शोभायमान २. आनन्द, स्वाद ३. सुरंग होंठ ४. गुलाब की पंखुड़ी ५. सम्बन्ध ६. अभिलाषा, लालसा ७. प्रकृति कारत्नागार ८. मूंगा

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० सर (२) क़ा० जा० के

कभी जो बाल बाल अपने में वह मोती पिरोती है ।
नज़ाकत[९] से अर्क़ की बूंद भी मुखड़े को धोती है ।।
बदन भी मोती, सर ता पांव से पहने भी मोती है ।
सरापा मोतियों का फिर तो एक गुच्छा वह होती है ।।
कि कुछ वह ख़ुश्क मोती, कुछ पसीने के वह तर मोती ।।

गले में उसके जिस दम मोतियों के हार होते हैं ।
चमन के गुल सब उसके वस्फ़ में मोती पिरोते हैं ।।
न तनहा रश्क से क़तराते शबनम[१०] दिल में रोते हैं ।
फ़लक पर देख कर तारे भी अपना होश खोते हैं ।।
पहन कर जिस घड़ी बैठे है वह रश्के क़मर मोती ।।

वह ज़ेवर मोतियों का वाह, और कुछ तन वह मोती सा ।
फिर उस पर मोतिया के हार, बाज़ू बंद और गजरा ।।
सरापा ज़ेबो ज़ीनत में वह आलम देख कर उसका ।
जो कहता हूं अरे ज़ालिम, टुक अपना नाम तो बतला ।।
तो हंसकर मुझसे यूं कहती है वह जादू नज़र 'मोती' ।।

कड़े पाज़ेब, तोड़े जिस घड़ी आपस में लड़ते हैं ।
तो हर झनकार में किस-किस तरह बाहम[११] झगड़ते हैं ।।
किसी दिल से बिगड़ते हैं, किसी के जी पे अड़ते हैं ।
कड़े सोने के क्या मोती भी उसके पांव पड़ते हैं ।।
अगर बावर नहीं देखो हैं उसकी कफ़्श[१२] पर मोती ।।

ख़फ़ा हो इन दिनों कुछ रूठ बैठी है जो हम से वह ।
तो उसके ग़म में जो हम पर गुज़रता है सो मत पूछो ।।
चले आते हैं आंसू, दिल पड़ा है हिज्र[१३] में ग़श हो ।
वह दरिया मोतियों का हम से रूठा हो तो फिर यारो ।।
भला क्यूंकर न बरसावे हमारी चश्मेतर[१४] मोती ।।

---

[९] कोमलता
[१०] ओस की बूंदें
[११] परस्पर
[१२] पादुका, जूता
[१३] विरह
[१४] सजल नयन

शफ़क[१५] में इत्तिफ़ाक़न[१६] जैसे सूरज डूब कर निकले ।
व या अब्रे गुलाबी में कहीं बिजली चमक जावे ॥
बयां हो किस तरह से, आह उस आ़लम को क्या कहिये ।
तबस्सुम[१७] की झलक में यूं झमक जाते हैं दांत उसके ॥
किसी के यक बयक जिस तौर जाते हैं बिखर मोती ॥

हमें क्यूंकर परीज़ादों से बोसों के न हों लहने ।
जड़ाऊ मोतियों के इस ग़जल पर वारिये गहने ॥
सख़ुन की कुछ जो उसके दिल में है उल्फ़त लगी रहने ।
"नज़ीर" इस रेख़्ता को सुन वह हंस कर यूं लगी कहने ॥
अगर होते तो मैं देती तुम्हें एक थाल भर मोती ॥

मोती

परीज़ादों में है नामे ख़ुदा जिस शान पर मोती ।
कोई ऐसा नहीं मोती, मगर मोती, मगर मोती ॥
झमक जावे निगाहों में जवाहर ख़ानए क़ुदरत[१] ।
जो खा कर पान और मल कर किसी हंस दे मगर मोती ॥
रगेगुल[२] इस कमर के सामने भरती फिरे पानी ।
लचक में और नज़ाकत में जो रखती है कमर मोती ॥
इधर हर एक मकां पर मोतियों के ढेर हो जावें ।
अदा से नाज़ से हंस कर कदम रक्खे जिधर मोती ॥
सदा सुनकर हर एक की चश्म से मोती टपकते हैं ।
फ़क़त बैठे ही गाने में यह रखती है असर मोती ॥

---

[१५] शाम की लालिमा [१६] अकस्मात्, अचानक [१७] मुस्कान

[१] प्राकृतिक रत्नागार [२] फूल की नस

अज़ब नक़शा अज़ब सज धज अज़ब आंखें अज़ब नज़रें ।
बड़े ताले[3] बड़ी किस्मत जो देखे एक नज़र मोती ॥
शरफ़[4] पन्ने को पन्ने पर शरफ़ हीरे को हीरे पर ।
शरफ़ शरफन को लालों पर, रही है जिसके घर मोती ॥
हर एक दन्दान मोती, हुस्न मोती, नाम भी मोती ।
सरापा[5] चश्म मोती, तिस पै पहने सरबसर मोती ॥
जो ख़ूबां[6] बेनज़ीर इस दौर में हैं नाजुको रंगी ।
शरफ़ रखती है यारो, अब तो सबके हुस्न पर मोती ॥

आरसी

बनवा के एक आरसी हमने कहा कि लो ।
पकड़ी कलाई उसकी जो वह शाख़सार[1] सी ।
लेकर बड़े दिमाग और देख यक बयक ।
त्योरी चढ़ा के नाज़ में कुछ करके आरसी ।
झुंझला के दूर फेंक दी और यूं कहा चै ख़ुश ।
हम मारते हैं ऐसी अंगूठे पै आरसी ।

पहुंची

क्यों न उसकी हो दिलरुबा पहुंची ।
जिसके पहुंचे पै हो किफ़ा पहुंची ।
गर पहुंच हो तो हम मलें आँखें ।
ऐसी इसकी है ख़ुशनुमा पहुंची ।
दिल को पहुंचे है रंज क्या-क्या वह ।
अपनी लेता है जब छिपा पहुंची ।

---

[3] भाग्य [4] श्रेष्ठता [5] सर से पैर तक [6] सुन्दरियाँ
[1] शाख़ जैसी, कोमल

एक छड़ी गुल की भेजकर इसको ।
फ़िक्र थी वह न पहुंची या पहुंची ।
सुबह पूंछी रसीद जब तो "नज़ीर" ।
दी हमें शोख ने दिखा पहुंची ।।

बाला—१

अज़ब ढंग से चमकता है वह बाला उसके बाला सा ।
कि हर झोंक में होता है वह बिजली का उजाला सा ।।

न बाला ही फ़क़त कुछ दिल को भटकाने में डाले है ।
जो देखा खूब तो बाली भी बहलगती है बाला सा ।।

वह बाला सा कद उसका और वह बाला कान का यारो ।
करे हैं उस परी के बाले जोवन को दोबाला सा ।।

न झमकों ही की झोंकें तीर सी लगती हैं सीने में ।
करनफूलों की नोंकें भी लगा जाती हैं भाला सा ।।

मुझे कल इत्तफ़ाकन देख उस ऐयार ने पूछा ?
कि उसकी चश्म से बहता है क्यों अश्कों का नाला सा ।।

अगर चाहे कि हमको दाम में लावे तो क्या क़ुदरत ।
कहां हम हुस्न के शेर और कहां मकड़ी का जाला सा ।।

किसी ने कह दिया उससे "नज़ीर" इसको ही कहते हैं ।
परों पर आज परियों के हैं उसके इश्क का लाला ।।

जहां गोरा बदन और चांद सा रुख़सार होता है ।
तो वां यह शख़्स भी रहता है उसके गिर्द हाला सा ।।

बड़े हैं ख़ूबरू हैं इस से डरते हैं तो तुम क्या हो ।
तुम्हें तो जानता है एक हलुए के निबाला सा ।।

इसे हलका न जानो तुम अजी साहब कयामत है ।
यह ठिगना सा, यह दुबला सा, वह सूखा सा यह काला सा ।।

बाला—२

कुछ आप परी कुछ वह परी कान का बाला ।
हो नामे ख़ुदा क्यों न तेरा हुस्न दो बाला ।।
है वह तो मेरी जान कि आगे को तेरे बन कर ।
चलता है जिलों में तेरे परियों का रिसाला ।।
बाली तो पड़ी कान में छेदे कि कलेजा ।
बाले की तिलावट ने तो बस मार ही डाला ।।
सूरज को शफ़क़ शाम के पर्दे में छिपा ले ।
तू ओढ़ के निकले जो कभी सुर्ख़ दुशाला ।।
आँखों में चमकता है सितारा सा सहर को ।
सीने की सफा पर तेरे जुगनूं का उजाला ।।
पत्ती की जमावट की तरह और है काफ़िर ।
चोटी की गुदावट का कुछ आलम है निराला ।।
मांगा जो मैं बोसा तो मटक कर कहा है वाह ।
क्या तू ही नया है मेरा एक चाहने वाला ।।
अँगिया की खिचावट ने दिल खींच के बांधा ।
पर जाली की कुर्ती ने बड़े जाल में डाला ।।
पहुंचा जो मेरा हाथ शिकम पर तो यह समझा ।
मख़मल है मलाई है या रेशम का है गाला ।।
इस बात को पूछा तो लगी कहने झमक कर ।
चल दूर मेरी जूती यह सहती है कसाला ।।
तू इश्क में बूढ़ा भी हो तो भी "नज़ीर" आह ।
अब तक तेरी बातों में टपकता है छिनाला ।।

बाला—३

अब तो हर शोख़ परीवश[१] ने संभाला बाला ।
हर कहीं जोर दिखाता है उजाला बाला ।
सबके बालों से तुम्हारा है निराला बाला ।
तुमने जिस दिन से सनम कान में डाला बाला ।
हो गया चांद से रुख़सार का हाला बाला ।।

---

[१] अप्सरा जैसी सुन्दर

आई वह शोख़ जो कल नाज़ो अदा से इस जा ।
थी वह सज धज कि परी देख के होजाये फ़िदा[2] ।
फुरतियां ग़म्ज़ों की अब उसके कहूँ मै क्या-क्या ।
नौके मिज़गां को ख़बर होने न दी आह ज़रा ।
दिल को यूं उसकी निगाह ले गई बाला बाला ॥

चाल चलती है अजब आन से वह नाज़ भरी ।
हर क़दम पर मेरे सीने में है ठोकर लगती ।
मस्तियां वाह मैं क्या-क्या कहूं इस जोबन की ।
जब हिलाती है सुराही सी वह गर्दन अपनी ।
नशए हुस्न[3] को करता है दो बाला बाला ॥

उसकी पलकों की जो लगती है मेरे दिल में नोक ।
ऐ दिल उस शोख़ के तू बाले से जोबन को न टोक ।
आह सीने में करूं अपने मैं किस किस की रोक ।
एक तो क़ह्र है कानों में किरन फूल की झोक ।
तिस पे काफ़िर है जिगर छेदने वाला बाला ॥

बाले भटकावे के अन्दाज ये करते क्या क्या ।
जुज़[4] ख़िजल[5] होने के कुछ जी न बन आता था ।
यह जो हर झोंक में है अपनी झलक दिखलाता ।
ऐ दिल उस बाले की हरगिज़ तू लगावट पे न जा ।
तुझको बतलावेगा बाली पै यह बाला बाला ॥

जब वह बन ठन के निकलते हैं बना हुस्न की शान ।
उसकी हर आन पे होती है फ़िदा मेरी जान ।
तर्ज़ चितवन की लगावट में दिखा सहरे निशान[6] ।
वह भी क्या आन का ढब है कि दिखाता हर आन ।
कान के पास से सरका के दोशाला बाला ॥

हो गया जब से दिल उस शोख़ के बाले में असीर[7] ।
कोई बन आती नहीं वस्ल[8] की उसके तदबीर ।
यां तक उस बाले ने की है मेरे जी में तासीर ।
अब तो रह रह के मेरा दिल यही कहता है "नजीर" ।
एक नजर चलके मुझे उसका दिखा ला बाला ॥

---

२. मुग्ध ३. सौन्दर्य की मादकता ४. अतिरिक्त ५. लज्जित होना ६. जादुई ७. क़ैद ८. मिलन

अंगिया

सफ़ाई उसकी झलकती है गोरे सीने में ।
चमक कहां है यह अलमास के नगीने में ॥
न तूई है, न किनारी, न गोखरू तिस पर ।
सजी है शोख़ ने अंगिया बनत के मीने में ॥
जो पूछा मैं कि "कहां थी" तो हंस के यों बोली ।
मैं लग रही थी इस अंगिया मुई के सीने में ॥
पड़ा जो हाथ मेरा सीने पर तो हाथ झटक ।
पुकारी आग लगे आह ! इस करीने में ॥
जो ऐसा ही है तो अब हम न रोज़ आवेंगे ।
कभू जो आए तो हफ़्ते में या महीने में ॥
कभू मटक, कभू बस बस, कभू प्याला पटक ।
दिमाग करती थी क्या क्या शराब पीने में ॥
चढ़ी जो दौड़ के कोठे पे वह परी इक बार ।
तो मैंने जा लिया उसको उधर के ज़ीने में ॥
वह पहना करती थी अंगिया जो सुर्ख़ लाही की ।
लिपट के तन से वह तर हो गई पसीने में ॥
यह सुर्ख़ अंगिया जो देखी है उस परी की "नज़ीर" ।
मुझे तो आग सी कुछ लग रही है सीने में ॥

इज़ार बंद (कमर बंद)

छोटा बड़ा न कम, न मंझौला इज़ार बंद ।
है उस परी का सबसे अमोला इज़ार बंद ॥
हर एक क़दम पे शोख़ के ज़ानू के दरमियां ।
खाता है किस झलक से झकोला इज़ार बंद ॥
गोटा, किनारी, बादला, मुक़्क़ेश के सिवा ।
थे चार तोले मोती, जो तोला इज़ार बंद ॥

हंसने में हाथ मेरा कहीं लग गया तो वह ।
लौंडी से बोली "जा मेरा धोला इज़ार बंद" ।।
"और धो नहीं, तो फेंक दे, नापाक हो गया" ।
वह दूसरा जो है, सो पिरो ला इज़ार बंद ।।
एक दिन कहा यह मैंने कि ऐ जान, आपका ।
हमने कभी मज़े में न खोला इज़ार बंद ।।
सुनकर लगी यह कहने कि "ऐ वा छड़े च ख़ुश" ।
ऐसा भी क्या मैं रखती हूं पोला "इज़ार बंद" ।।
आ जावे इस तरह से जो अब हर किसी के हाथ ।
वैसा तो कुछ नहीं मेरा भोला इज़ार बंद ।।
एक रात मेरे साथ वह अय्यार, मक्रबाज़ ।
लेटी छुपा के अपना ममोला इज़ार बंद ।।
जब सो गई तो मैंने भी दहशत से उसकी आ ।
पहले तो चुपके चुपके टटोला इज़ार बंद ।।
आख़िर बड़ी तलाश से उस शोख़ का "नज़ीर" ।
जब आधी रात गुज़री तो खोला इज़ार बंद ।।

बटुआ

देख तेरा यह झमकता हुआ ऐ जां ! बटुआ ।
सुबह ने फेंक दिया मेहर का रख़शां[1] बटुआ ।।
चांदनी में तेरे बटुए के मुक़ाबिल होने ।
बनके निकला है फ़लक पर महेताबां[2] बटुआ ।।
गर चमन में तुझे बटुए की तलब हो तो वहीं ।
ज़र भरा गुन्चे का लादें गुलेख़न्दां[3] बटुआ ।।
हाथ नाज़ुक हैं तेरे और वह हैं संगीं वरना ।
बनके आ जावे अभी लाल बदख़्शां बटुआ ।।

---

१. प्रकाशमान २. चांद ३. खिला हुआ फूल

यूं कहा मैं कि यह बटुआ ज़रा हमको दीजे।
हम भी बनवाऐंगे ऐसा ही दुरख़शां[४] बटुआ ॥
सुनके बटुए को दिखाकर यह कहा वाह रे शऊर[५] ।
अरे बन सकता है ऐसा कोई अब याँ बटुआ ॥
जब कहा मैंने सबब[६] क्या तो हँस के "नज़ीर" ।
यह तो लायी हैं मेरे वास्ते परियां बटुआ ॥

बटुआ—२

तुम्हारे हाथ से होता नहीं एक दम जुदा बटुआ ।
यह किस उल्फ़त भरी ने सच कहो तुमको दिया बटुआ ॥
मुअ़त्तर[१] हो रहा है निगहतज़ो[२] ज़ोक़रनफ़िल से ।
कहूं मैं इत्रदां[३] क्यूं साहब इस बटुए को या बटुआ ॥
घड़ी गुन्चा घड़ी गुल, फिर घड़ी में गुल से गुंचा हो ।
तुम्हारे आगे क्या क्या रंग बदले है पड़ा बटुआ ॥
तुम्हें हम चाहें तुम बटुए को चाहो क्या तमाशा है ।
हमारे दिल रुबा तुम और तुम्हारा दिलरुबा बटुआ ॥
जो तुमने बदले एक बटुए के एक बोसा ही ठहराया ।
तो साहब याद रखियो यह हमारा है छटा बटुआ ॥
निहायत[४] पुरतकल्लुफ़[५] और बहुत ख़ुशक़िता[६] नाज़ुक सा ।
बसद ताकीद[७] बनवाया था हमने एक नया बटुआ ॥
गए हम इत्तिफ़ाक़न उस परी रू से जो मिलने को ।
तो क्या कहिये वही उस दम हमारे पास था बटुआ ॥
यकायक आ पड़ी उसकी नज़र इस पर तो ले हम से ।
कहा, यह तो बनाया है किसी ने वाह क्या बटुआ ॥

---

[४] प्रकाशमान [५] विवेक, सभ्यता [६] कारण

[१] सुगन्धित [२] सुगन्ध से भरपूर [३] सुगन्ध-पात्र [४] अत्यन्त [५] सजा हुआ, सुसज्जित [६] सुन्दर [७] सौ बार हठ करके

बहुत तारीफ़ की और हंस दिया जब दिल में हम समझे ।
कि यह तारीफ़ कुछ ख़ाली न जावेगी चला बटुआ ।।
कभी यूं और कभी वूं देख आख़िर यूं कहा हंस कर ।
यह किसका है क़यामत पुर नज़ाकत ख़ुशनुमा बटुआ ।।
कहा जब मैंने हंसकर सौ नियाज़ोंइज्ज़[8] से ऐ जां ।
इसे मैला न कीजिये, यह है एक महबूब का बटुआ ।।
मैं भूले से ले आया था अगर दरकार हो तुमको ।
तो मैं इससे भी बेहतर और दू तुमको मंगा बटुआ ।।
कहा हम तो यही लेंगे, तो मैंने फिर कहा साहब ।
मैं बेगाना तुम्हें अब किस तरह से दूं भला बटुआ ।।
जूं ही यह बात निकली मेरे मुंह से फिर तो झुंझलाकर ।
वहीं उस शोख़ ने मारा, मेरे मुंह पर उठा बटुआ ।।
कहा मैंने ख़फा होते हो क्यूं चाहो तुम्हीं ले लो ।
यह कहकर मैंने फिर उसकी तरफ़ ढलका दिया बटुआ ।।
चला जब वह ढलकता उसकी जानिब देखिये शामत ।
कहीं नागह सरे ज़ानू मैं उसके जा लगा बटुआ ।।
तो ले बटुए को और ज़ानू पकड़ कर यूं कहा दुश्मन ।
यह तूने आपसे मारा मेरे, वारूं तेरा बटुआ ।।
जला दूं टुकड़ें कर डालूं वले[9] तुझको न दूं हरगिज़[10] ।
लगा मेरे बहुत, अब तो यह मेरा हो चुका बटुआ ।।
न बटुआ दूं "नज़ीर" और तुझसे ज़ानू का भी बदला लूं ।
यही धमकी दिखाकर आख़िर उसने ले लिया बटुआ ।।

ताबीज़

अब तो लिख दो हज़रत मुझे कोई ऐसा ताबीज़ ।
हो रहूं जिससे मैं गुल के गले का ताबीज़ ।।

---

[8] नम्र निवेदन [9] मगर, लेकिन [10] कदापि

हम तो क्या हैं कि फरिश्ते के दिल छल लें ।
आन ऐसा है यह हाथ का छल्ला ताबीज़ ॥
क्यों न हैकल[1] में असर होवे कि उसका हर एक ।
हुस्न में सीना पसीना है यह पहुंचा ताबीज़ ॥
कुछ न कुछ आज तो हम तुमसे निशाना लेंगे ।
या यह ज़ंजीर नई या सुनहरा ताबीज ॥
तप तिजारी के लिए चाहिए गंडा ताबीज़ ।
और जिन्हें इश्क का तप हो उन्हें क्या ताबीज़ ॥
उसके नीमा[2] से जो मिलता मुझे एक तार "नज़ीर" ।
तो बनाता उसे मैं अपने गले का ताबीज़ ॥

ताबीज़—२

हो कुछ आसेब[1] तो वाँ चाहिए गंडा ताबीज़ ।
और जो हो इश्क़ का साया तो करे क्या ताबीज़ ।
दिल को जिस वक्त यह जिन आन के लिपटा फिर तो ।
क्या करें वां वह जो लिखते हैं फ़लीता ताबीज़ ।
हम तो जब होश में आवें तो कहीं से पावें ।
यार के हाथ का, बाजू का, गले का ताबीज़ ।
ज़ोर ताबीज़ का चलता तो अरब में यारो ।
क्या कोई एक भी मजनूं को न देता ताबीज़ ।
कोहकन[2] कोह[3] को किस वास्ते काटा करता ।

---

१. गले का हार   २. ऊंचा पाजामा

१. प्रेत बाधा   २. पहाड़ काटने वाला, शीरीं के प्रेमी फरहाद की उपाधि जिसने शीरीं के लिए पहाड़ काटते हुए अपने प्राण दे दिए   ३. पहाड़

देते ग़मख़्वार न क्या इसके तईं ला ताबीज़ ।
आख़िर इसके भी गया दिल का धड़कना उस रोज़ ।
क़ब्र का तेश[4] ने जब इसके तराशा ताबीज़ ।
हमको भी कितने ही लोगों ने दिए आह "नज़ीर" ।
पर किसी का भी कोई काम न आया ताबीज़ ।
इश्क़ का दूर करे दिल से जो धड़का ताबीज़ ।
इस धड़ाके का कोई हमने न देखा ताबीज़ ।।

ख़त

"क़ासिद[1]" सनम ने ख़त को मेरे देख क्या कहा ?
हर्फ़े इताब[2], या सुखुने दिल कुशा[3] कहा ?
तुझको क़सम है, कीजो न पोशीदा मुझसे तू ।
कहियो वही जो उसने मुझे बरमला[4] कहा ।
क़ासिद ने जब तो सुनके कहा "क्या कहूं मैं यार" ।
पहले मुझी को उसने बहुत नासज़ा[5] कहा ।
फिर तुझको सौ इताब से झुझंला के दम ब दम ।
क्या क्या कहूं मैं तुझसे कि क्या क्या बुरा कहा ।
इसका मज़ा चखाऊंगा जाकर उसे शिताब ।
रह रह इसी सुख़न के तईं बारहा कहा ।
मेरी तो कुछ खता नहीं तू ही समझ इसे ।
बेजा कहा यह उसने मुझे या बजा कहा ।
कहता था मैं तुझे कि न भेज उसको ख़त मियां ।
लेकिन "नज़ीर" तूने न माना मेरा कहा ।।

---

[4] तेशः, कुदाल

[1] पत्नवाहक [2] क्रोध भरे शब्द । जाने क्या लिख गया था उन्हें मैं इताब में, क़ासिद की लाश आई है खत के जबाव में [3] दिल खुश करने वाले शब्द [4] सामने मुंह पर [5] फा० वि० अनुचित

मेंहदी—१

तुमने हाथों में सनम जब से लगाई मेंहदी ।
रंग में हुस्न के फूली न समाई मेंहदी ॥१॥

किस तरह देखके दिल पर न क़यामत गुज़रे ।
एक तो हाथ ग़ज़ब जिस पँ रचाई मेंहदी ॥२॥

दिल धड़कता है मेरा आज ख़ुदा खैर करे ।
देख करती है यह किस किससे लड़ाई मेंहदी ॥३॥

दिल तड़फता है मेरा जिससे कि मछली की तरह ।
इस तड़ाके की वह चंचल ने लगाई मेंहदी ॥४॥

हुस्न मेंहदी ने दिया आपके हाथों को बड़ा ।
ऐसे जब हाथ थे जिस हक़ ने बनाई मेंहदी ॥५॥

क्या खता हमसे हुई थी कि हमें देखकर आह ।
तुमने ऐ जान दुपट्टा में छिपाई मेंहदी ॥६॥

ग़श हुए, लोट गए, कट गए, बेताब हुए ।
उस परी ने हमें जब आके दिखाई मेंहदी ॥७॥

देखे जिस दिन से वह मेंहदी भरे हाथ उसके "नज़ीर" ।
फिर किसी की हमें उस दिन से न भाई मेंहदी ॥८॥

मेंहदी—२

मियां यह किस परी के हाथ पर आशिक़ हुई मेंहदी ।
कि बातिन[1] में हुई है सुर्ख़ ज़ाहिर में हरी मेंहदी ॥
करे खूनीं दिलों से क्यूं न हर दम हमसरी[2] मेंहदी ।
कही, कुचली गई, टूटी, छनी, भीगी, पिसी, मेंहदी ॥
जब इतने दुख सहे तब उसके हाथों में लगी मेंहदी ॥१॥

---

१. गुप्तरूप २. बराबरी

हिना की मछलियां उसके कफ़े रंगी में जो देखीं ।
निगाह में आनकर उस दम अ़जब रंगीनियां झमकीं ॥
कहूं क्या-क्या मैं उन मेंहदी भरे हाथों की अब तेज़ी ।
शफ़क़ में डूब कर जूं पंजएख़ुर्शीद[3] हो रंगीं ॥
चमक में रंग में सुर्ख़ी में कुछ ऐसी ही थी मेंहदी ॥२॥

हतेली चांद सी हो जिन की और नाख़ुन सितारे हों ।
वह पतली उंगलियां जिनसे नज़ाकत के सहारे हों ॥
तलाईनुक़रई[4] हीरों के छल्लों के करारे हों ।
जो गोरे गोरे हाथ और नर्मोनाज़ुक[5] प्यारे प्यारे हों ॥
तो बस वह जान हैं मेंहदी की और उनका है जी मेंहदी ॥३॥

वह पहुंचे जिनमें पहुंची सो नियाज़ोइज्ज़[6] से पहुंची ।
और इन पोरों के मिलने से बढ़ी है शान छल्लों की ॥
अ़जब तुम भीगती हो और अबस पत्थर से हो पिसती ।
कफ़ेनाज़ुक[7] पर उसके तो है असली रंग की सुर्ख़ी ॥
तुम्हारी दाल यां गलती नहीं सुनती हो बी मेंहदी ॥४॥

जो देखा मैंने उन मेंहदी भरे हाथों का हिल जाना ।
अंगूठी बांक छल्ले आरसी का फिर नज़र आना ॥
मेरा दिल हो गया उस शम्मा रू चंचल का परवाना ।
भला क्यूंकर न हूं यारो मैं उसको देख दीवाना ॥
कि होवें जिस परी के परी हाथ और परी मेंहदी ॥५॥

यकायक देखकर मुझको वह चंचल नाज़नी भरमी ।
उधर मैंने भी देखा ख़ूब उसको करके बेशर्मी ॥
कहूं क्या क्या मैं उसकी अब नज़ाकत वाह और नरमी ।
हुई यां तक उसे मेरी निगाहे गर्म की गर्मी ॥
कि दस्तो पा में उसके देर तक मसली गई मेंहदी ॥६॥

कहां तक गुलइज़ारों के भी हाथों को रसाई है ।
कि जिनके वास्ते अल्लाह ने मेंहदी बनाई है ॥
यह सुर्ख़ी लाल ने पंजएमरजां[8] ने पाई है ।
"नज़ीर" उस गुलबदन ने और ही मेंहदी लगाई है ॥
मुबारक बाद अच्छा वाह वा ख़ासी रची मेंहदी ॥७॥

---

३. सूर्य का हाथ ४. सोने-चाँदी की ५. अत्यन्त कोमल ६. नम्र निवेदन ७. कोमल हाथ ८. मूंगे का हाथ

हिना (मेंहदी)

कुछ दिल फ़रेब हाथ वह कुछ दिल रुबा हिना ।
लगती है उस परी की अजब ख़ुशनुमा हिना ॥
देखे हैं जब से दिल ने हिनाबस्ता[1] उसके हाथ ।
रातों को चौंक पड़ता है कह कर हिना हिना ॥
है सुर्ख़ यां तलक कि जो छल्दे हैं नक़रई ।
करती है उसके हाथ में, उनको तिला हिना ॥
यह फ़नदक़ें नहीं मेरे क़ातिल के हाथ में ।
होती है पोर पोर पै उसके फ़िदा हिना ॥
ख़ूने शफ़क़ में पंजए ख़ुर्शीद रश्क से ।
डूबा ही था अगर वह न लेता छुपा हिना ॥
ग़ुरफ़े[2] से हाथ खोल के और फिर लिया जो खींच ।
बिजली सी कुछ चमक गई काफ़िर बला हिना ॥
शब[3] के ख़िलाफ़ेवादा[4] का जब बन सका न उज्ऱ[5] ।
नाचार फिर तो हंस दिया और दिखा दी हिना ॥
कल मुझसे हंस के उस गुले ख़ूबी ने यूं कहा ।
पांव में तू ही आज तो मेरे रचा हिना ॥
वह छोटी प्यारी उगलियां वह गोरे गोरे पांव ।
हाथों में अपने ले, मैं लगाने लगा हिना ॥
उस वक़्त जैसी निकलीं मेरी हसरतें "नज़ीर" ।
इन लज़्ज़तों को दिल ही समझता है या हिना ॥

कोरा बर्तन

कोरे बर्तन हैं क्यारी गुलशन की ।
जिस से ख़िलती है हर कली तन की ।

---

[1] मेंहदी लगे [2] खिड़की [3] रात [4] वायदे के विरुद्ध [5] बहाना, कारण

बूंद पानी की उनमें जब खनकी ।
क्या वह प्यारी सदा है सन सन की ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

पानी की आप अब बड़ी है ज़ात ।
क़तरा क़तरा है जिसका आबेहयात[1] ।
कोरे बर्तन में जबकि आया हात ।
फिर तो आबे हयात भी है मात ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

वह जो पानी की कोरी गोली है ।
वही आने के मोल को ली है ।
क्या ही ठण्डी दवा की गोली है ।
क्या कहूं गोली गोली कोली है ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

यह जो गोली की बोलियां बांधी ।
हमने पानी की गोलियां बांधी ।
सोंधी सोंधी ठठोलियां बांधी ।
दिल ने फूलों की झोलियां बांधी ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

कोरा पनिहारी का जो है मटका ।
उसका जोबन कुछ और ही मटका ।
ले गया जान पांव का खटका ।
दिल घड़े की तरह से दे पटका ।।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

---

१. अमृत

कोरी ठिलिया यह देख कर लोटा ।
दिल लगा होने कुछ खरा खोटा ।
गरचे लोटा वह क़द का है छोटा ।
जिसने देखा उसी का दिल लोटा ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

कोरे कूज़ों[२] को देख आलम में ।
कूज़े मिश्री के भर गए ग़म में ।
यूं वह रिसते हैं आब के नम में ।
जैसे डूबे हों फूल शबनम में ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

वाह जो कोरा सफ़ेद झज्जर है ।
जिसकी जागीर मुल्क झज्जर है ।
बेल बूटे से इस झमक पर है ।
ताश, कमख़्वाब. या मुशज्जर है ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

जिस सुराही में सर्द पानी है ।
मोती की आब पानी पानी है ।
जिन्दगी की यही निशानी है ।
दोस्तो यह भी बात मानी है ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

जितने नज़रो नियाज करते हैं ।
और जो पीरों से अपने डरते हैं ।
जबकि ला फूल पान धरते हैं ।
वह भी कोरी ही ठिलिया भरते हैं ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

---

[२] मिट्टी के शकोरे

ख़ाक से जबकि उनको गढ़ते हैं ।
बन्दिगी से यह अपनी बढ़ते हैं ।
कोरों पर फूल हार चढ़ते हैं ।
हूरौ ग़ुल्मां दुरूद पढ़ते हैं ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

कोरों पे जो "नज़ीर" जोबन है ।
जोजरे[3] में कहां वह खन खन है ।
जिस घड़ोची पे कोरा बासन है ।
वह घड़ौची नहीं है गुलशन है ।
ताज़गी जी की और तरी तन की ।
वाह, क्या बात कोरे बर्तन की ।।

पान

यह रंगे पान से जो दहन[1] उसका लाल है ।
आज इन लबों से लाल की पूरी मिमाल है ।।
अस्तग़फ़िरुल्लाह[2] लाल कहां और यह लब कहां ।
ऐ बेवक़ूफ़ कुछ भी तुझे इनफिजाल[3] है ।।
ख़ुर्शीद जिससे लाल की होती है तरबियत[4] ।
वह इन लबों के पान का अदना[5] उगाल है ।।
यों लाल गर्चे सुर्ख़ है पर संगे सख़्त है ।
गो नर्म भी हुआ तो यह उसकी मजाल है ।।
कहते हैं लाल टूट के होता नहीं दुरुस्त ।
सच है, पर अपने दिल में तो और ही ख़याल है ।।
हर दम सुखुन में टूट के बनता है लाल लब ।
यह मोजिज़ा[6] है या कोई सहरे हलाल है ।।
बस लाल लब से लाल को निस्वत है क्या "नज़ीर" ।
यां लाल की भी अब तो ज़ुबां मुंह में लाल है ।।

---

[3] पुराना बर्तन

[1] मुंह [2] अल्लाह क्षमा करे [3] लज्जा [4] प्रशिक्षण [5] तुच्छ [6] चमत्कार

हुक्का

जब से हुक़्क़ा तुझ लबेजांबख़्श[1] का हमराज़ है ।
तब से हक़ हक़ क्या कि क़ौ क़ौ की सी कुछ आवाज़ है ।

यह जो उड़ता है धुआं अब तेरे मुंह से ऐ परी ।
इस धुऐं वालानसब[2] की अर्श तक परवाज़[3] है ।

पेचवाँ पीने में किस किस आन का खुलता है पेच ।
गुड़गड़ी पीने में काफ़िर और ही अन्दाज़ है ।
पेचवां को अपने पेचों पर नहीं इतना ग़ुरूर[4] ।
जितना तेरी गुड़गड़ी को डेढ़ ख़म पर नाज़ है ।

दिल जलाने को तो अभी आशिक़े जां बाज़ है ।
आब ने हुक़्क़े तवे नैचे को यह रुतवा कहां ।।
मुंह से लगने में तो अब मनहाल भी मुमताज़[5] है ।
गर तुझे होना है गुल ऐ दिल तो जल और दम न मार ।।

देख तम्बाकू को क्या क्या सोज़[6] है और साज़ है ।
गुल किया दम भर में तम्बाकू जलाकर आग में ।।

ऐ परी रो तेरे दम में तो यह कुछ ग़म्माज़ है ।
है कहां टुक बोल उठ जल्दी ख़ुदा के वास्ते ।।

ओ मियां हुक़्के अज़ब प्यारी तेरी आवाज़ है ।
क्यों न तुझको मुंह लगावें ख़ल्क़ में शाहो गदा ।।

तू तो परियों के लबों का हमदमो हमराज़ है ।
पेचवाँ पर पेच खाती है पड़ी हूरों की ज़ुल्फ़ ।।

गुड़गुड़ी एक दमड़ी की महकिया को रहे आजिज़ सदा ।
हमको क्या क्या गुड़गुड़ी और पेचवां पर नाज़ है ।।

ग़ौर कर देखा तो अब यह वह मसल है ऐ नज़ीर ।
बाप ने पिदड़ी न मारी बेटा तीरन्दाज़ है ।।

---

[1] होंठों को जीवन देने वाला [2] उच्चकुल [3] उड़ान [4] गर्व [5] सम्मानित [6] जलन

पंखा

क्या मौसम गर्मी में नमूदार[1] है पंखा ।
ख़ूबों के पसीनों का ख़रीदार है पंखा ॥
गुलरू का हर एक जा पे तलबगार है पंखा ।
अब पास मेरे यार के हर बार है पंखा ॥
गर्मी से मुहब्बत की बड़ा यार है पंखा ॥१॥

क्यूं कर न उठे दिल से मेरे शोलएजांकाह[2] ? ।
जब शोख़ की पंखे के तई जी से हुई चाह ॥
जल जावे जिगर क्यूं न भला रश्क से अब आह ।
आगे दिले सदचाक[3] हमारा था हुआ ख़्वाह[4] ॥
और अब तो दिलो जां से हवादार है पंखा ॥२॥

क्या क्या तुझे उल्फ़त की जताता है वफ़ाऐं ।
धूप आवे तो करता है पड़ा हाथ से छाऐं ॥
बेताब हो कर-कर के ख़ुशामद की हवाऐं ।
लेता है हर एक दम तेरे मुखड़े की बलायें ॥
ऐसा तेरी उल्फ़त में गिरफ्तार है पंखा ॥३॥

यह उंगलियां नाज़ुक जो तुम्हारी हैं नुमायां[5] ।
डरता हूं कहीं फांस से होवें न यह हैरां ॥
इन नर्म से हाथों का तरस चाहिए हर आं ।
पंखे को खजूरी के न लो हाथ में ऐ जां ॥
तुमको तो मेरे दिल का सज़ावार है पंखा ॥४॥

छेड़ा जो मेरे दिल की मुहब्बत के असर ने ।
गर्मी में कहीं बैठ के पंखा तुझे करने ॥
रंग चश्म के डोरों के तई ख़ूने जिगर ने ।
सीख़ों से मिज़ा[6] की मेरी गूंधा है नज़र ने ॥
पंखे तो बहुत हैं पै यह नूर कार है पंखा ॥५॥

---

[1] प्रकट [2] प्राणों को घुलाने वाली चिंगारी [3] सौ प्रकार से कटा हुआ [4] चाहने वाला [5] प्रकट
[6] पलकों की नोक

दिल बाग़ हुआ जाता है फूलों की भबक से ।
और रूह बसी जाती है ख़ुशबू की महक से ॥
कुछ ख़स से कुछ उस पानी की बूदों की टपक से ।
नींद आती है आंखों में चली जिनकी झपक से ॥
क्या यार के झूलने का मज़ेदार है पंखा ॥६॥

जाड़े में जो रहते थे हम उस गुल के कने सो ।
गर्मी ने जुदा कर दिया गर्मी का बुरा हो ॥
हसरत से भला फूंकिये क्यूंकर न जिगर को ।
क्या गर्दिशेअय्यामे[7] हैं देखो तो अज़ीजो[8] ॥
जब यार के हम यार थे अब यार है पंखा ॥७॥

नर्मी से सफ़ाई से नज़ाकत से भड़क से ।
गोटों की लगावट से और अबरक की चमक से ॥
मुक़्क़ैश के झड़ते हैं पड़े तार झपक से ।
दरियाई व गोटे व किनारी की झमक से ॥
क्या हाथ में काफ़िर के झमकदार है पंखा ॥८॥

एक दम तो मेरी जां तेरे पंखे की हवा लूं ।
गर्मी तो पंखे की है टुक उसको निकालूं ॥
आंखों से मलूं प्यार करूं छाती लगा लूं ।
गर हुक्म करे तू तो मेरी जान उठा लूं ॥
एक चार घड़ी को मुझे दरकार है पंखा ॥९॥

इस धूप में ऐ जां कहीं मत पांव निकाले ।
जलती है ज़मीं आग सी पड़ जायेंगे छाले ॥
गर्मी है ज़रा तन के पसीने को सुखा ले ।
आंखों में मेरी बैठ के टुक सर्द हवा ले ॥
दीदार का तेरे ही तलबगार है पंखा ॥१०॥

रखती है तेरे हुस्न से सामाने चमन चश्म ।
सूरत से तेरी रखती है नित उसकी लगन चश्म ॥
सूराख़ से हर जाल से हर लहर से बन चश्म ।
देखे हैं तेरे मुंह को यह होकर हमातन[9] चश्म ॥
यां तक तो तेरा तालिबेदीदार[10] है पंखा ॥११॥

---

[7] दिनों का चक्कर [8] मित्रों, प्रियजनों [9] ध्यानपूर्वक, टकटकी लगाकर [10] दर्शनाभिलाषी

है यह वह हवादार जहां इसका गुज़र हो :
फिर गर्मी तो वां अपने पसीने में चले रो ।।
करता है ख़ुशी रूह को देता है अर्क़ खो ।
रखता है सदा अपने वह क़ब्ज़े में हवा को ।।
सच पूछो तो कुछ साहिबेअसरार[11] है पंखा ।।१२।।

ले शाम से गर्मी में सदा ताबा सहर गाह ।
रहता है हर एक वक़्त परीज़ादों के हमराह ।।
आशिक़ के तईं उसकी भला क्यूंकि न हो चाह ? ।
फूलों की गुंथावट से अब उस गुल का "नज़ीर" आह ।।
रश्क चमनो हसरते गुलज़ार है पंखा ।।१३।।

पंखा २

बर्ग गुलो लाला का न बनवाइये पंखा ।
इस से भी सुबक[1] और कोई मंगवाइये पंखा ।।
हम तर हैं पसीने में तो क्या आपको साहब ।
ख़ुश बैठे हुए आप तो झमकाइये पंखा ।।
मुद्दत के तुम्हारे हैं हवादार हम ऐ जां ।
एक चार घड़ी हमसे भी झलवाइए पंखा ।।
सुनकर यह कहा ख़ैर अगर है यूं ही दिल में ।
तो जाके शिताबी[2] अभी ले आइए पंखा ।।
जब हमने कहा यां तो खजूरों के हैं अक्सर ।
मुक्केश का ले आवें जो फ़रमाइए पंखा ।।
फ़रमाया किसी का हो पे नाज़ुक हो सुबुक हो ।
ऐसा न हो जो फिर के बदलवाइए पंखा ।।

---

११. भेद छुपाने वाला

१. हल्का २. तुरन्त

बनवा के बसदज़ेब[३] कहा हमने यह आकर ।
हम शर्त बदें ऐसा जो दिखलाइए पंखा ।।
जब हंस के कहा छेड़ तुम्हारी नहीं जाती ।
अब जी में है मुंह पर कोई लगवाइये पंखा ।।
अलक़िस्सा[४] जोही झलने लगे हम उसे ख़ुश हो ।
बोला वहीं बस बस ज़रा ठहराइए पंखा ।।
हलक़े मेरी ज़ुल्फ़ों के खुले जाते हैं हिल हिल ।
ऐसा भी तो लपझप से न झपकाइये पंखा ।।
पंखे के भी झलने का नहीं तुमको शऊर[५] अब ।
मालूम हुआ बस जी इधर लाइये पंखा ।।
एक दिन अर्क़आलूद[६] हो घबरा के कहा मैं ।
इस वक़्त तो हमको कोई दिलवाइये पंखा ।।
बोला कि चे ख़ुश फ़ायदा क्या अब जो तुम्हारे ।
इन खुरखुरे हाथों से पकड़वाइये पंखा ।।
इस छोटे से पंखे की हवा कब तुम्हें आये ।
बे फ़ायदा जागह से न हिलवाइये पंखा ।।
ऐसा ही जो झलना है "नज़ीर" अब तुम्हें तो आप ।
गुढ पंख के पर का कोई बनवाइये पंखा ।।

पंखिया

क्यूं न झमक कर करे जलवा गरी पंखिया ।
कुछ कफ़ेनाज़ुक परी[१], कुछ वह परी पंखिया ।।
देख चमन में सहर[२], इसकी जबीं[३] पर अर्क़[४] ।
लाई उधर से नसीम[५], इत्र भरी पंखिया ।।

---

३. अत्यधिक मनोरम ४. अतः ५. ढंग ६. पसीने-पसीने होना लज्जित होना

१. अप्सरा का सुन्दर हाथ २. प्रातः ३. माथा ४. पसीना ५. शीतल मंद पवन

शाख़ ने गुल की इधर वर्ग जो थी सब्ज़ तर ।
उनकी बनाकर झली उसको हरी पंखिया ॥
गर्मी में एक दिन गये उससे जो मिलने को हम ।
छोटी सी आगे थी एक उसके धरी पंखिया ॥
हम थे पसीने में तर, बैठते ही यक बयक ।
हाथ बढ़ाकर जो ली, उसकी ज़री पंखिया ॥
उसने वहीं छीन ली और यह कहा वाह वाह ।
तूने छूई क्यूं मेरी, ज़ेब भरी पंखिया ॥
कुछ थी अर्क़ की तरी, कुछ हुई ख़िजलत[6] "नज़ीर" ।
और तरी के ऊपर लाई तरी पंखिया ॥

आईना

ले आईने को हाथ में, और बार बार देख ।
सूरत में अपनी क़ुदरते परवरदिगार देख ॥
ख़ालेस्याह[1] और ख़तेमुश्कबार[2] देख ।
जुल्फ़े दराज़ तुर्रए अम्बर निसार देख ॥
हरलहज़ा[3] अपने जिस्म के, नक़्शोनिगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की, आप ही बहार देख ॥१॥

आईना क्या है ? जान, तेरा पाक साफ़ दिल ।
और ख़ाल क्या हैं ? तेरे सुवैदा[3] के रुख के तिल ॥
जुल्फ़े दराज़[4], फ़हमरसा[5] से, रही हैं मिल ।
लाखों तरह के फूल रहे हैं तुझी में खिल ॥
हर लहज़ा अपने जिस्म के, नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की, आप ही बहार देख ॥२॥

---

५. शीतल मंद-पवन ६. लज्जा

१. काल तिल २. सुगन्धित मुखावरण ३. प्रत्येक क्षण ३. काला तिल जो हृदय पर होता है
४. लम्बे केश ५. कोयल जैसी काली

मुश्के ततारो मुश्के ख़ुतन[६], भी तुझी में है ।
याक़ूत सुर्ख़ो लाल यमन भी तुझी में है ।
नसरीनो मोतियाओ समन भी तुझी में हैं ।
अलक़िस्सा क्या कहूं मैं, चमन भी तुझी में है ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के, नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की आप ही बहार देख ।।३।।

सूरजमुखी के गुल की अगर दिल में ताब है ।
तू अपने मुंह को देख, कि ख़ुद आफ़ताब है ।
गुल और गुलाब का भी तुझी में हिसाब है ।
रुख़सार[७] तेरा गुल है, पसीना गुलाब है ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के, नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की, आप ही बहार देख ।।४।।

नरगिस के फूल पर, तू न अपना गुमान कर ।
और सर्व से भी दिल न लगा अपना जान कर ।
अपने सिवा किसी पे, न हरगिज़ तू ध्यान कर ।
यह सब समा रहे हैं तुझी में तो आन कर ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के, नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की, आप ही बहार देख ।।५।।

नरगिस वह क्या है ? जान तेरी चश्मे ख़ुश निगाह ।
और सर्व क्या है ? यह तेरा क़द्देदराज़[८], आह ।
गर सैरे बाग़ चाहे, तो अपनी ही कर तू चाह ।
हक़ ने तुझी को बाग़, बनाया है वाह वाह ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के, नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की, आप ही बहार देख ।।६।।

---

६. तातार और तिब्बत की कस्तूरी ७. गाल ८. लम्बा क़द

गर दिल में तेरे क़ुमरियो बुलबुल का ध्यान है ।
तो होंठ तेरे क़ुमरी हैं, बुलबुल ज़ुबान है ।
है तू ही बाग़ और तू ही बाग़बान है ।
बाग़ो चमन हैं जितने, तू उन सबकी जान है ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के नक़्शों निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की आप ही बहार देख ।।७।।

बेला, गुलाब, सेवती, नसरीनौ नस्तरन ।
दाऊदी, जूही, लालाओ, राबेल यासमन ।
जितनी जहां में फूली हैं, फूलों की अंजुमन ।
यह सब तुझी में फूल रही हैं चमन चमन ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के, नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की, आप ही बहार देख ।।८।।

बागो चमन के गुंचओ गुल में न हो असीर ।
क़ुमरी की सुन सफ़ीर[६], न बुलबुल की सुन सफ़ीर ।
अपने तईं तो देख कि क्या है ? तू ऐ "नज़ीर" ।
हैं हर्फ़ेमन तरफ़ के यही मानी ऐ "नज़ीर" ।
हर लहज़ा अपने जिस्म के नक़्शो निगार देख ।
ऐ गुल तू अपने हुस्न की आप ही बहार देख ।।९।।

आगरे की ककड़ी

पहुंचे न इसको हरगिज़ काबुल दरे की ककड़ी ।
ने पूरब और न पच्छिम, ख़ूबी भरे की ककड़ी ।
ने चीन के परे की और ने वरे की ककड़ी ।
दक्खिन की और न हरगिज़, उससे परे की ककड़ी ।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी ।
और जिसमें ख़ास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी ।

---

[६] सीटी की आवाज़, पक्षियों की आवाज़

क्या प्यारी-प्यारी मीठी और पतली पतलियां हैं।
गन्ने की पोरियां हैं, रेशम की तकलियां हैं।
फ़रहाद की निगाहें, शीरीं की हसलियां हैं।
मजनूं की सर्द आहें, लैला की उंगलियां हैं।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक इस आगरे कीं ककड़ी।
और जिसमें ख़ासकाफिर इस्कंन्दरे की ककड़ी।

कोई है ज़र्दी मायल(१), कोई हरी भरी है।
पुखराज मुनफ़अल[1] है, पन्ने को थरथरी है।
टेढ़ी है सो तो चूड़ी वह हीर(२) की हरी है।
सीधी है सो वह यारो, रांझा की बांसुरी है।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक इस आगरे की ककड़ी।
और जिसमें ख़ास काफिर, इस्कन्दरे की ककड़ी॥

मीठी है जिसको बर्फ़ी कहिए गुलाबी कहिए।
या हल्क़े देख उसको ताज़ी जलेबी कहिए।
तिल शकरियों की फांके, अब या इमरती कहिए।
सच पूछिये तो इसको दनदाने मिश्री कहिए।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी।
और जिसमें ख़ास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी।

छूने में बर्गे गुल है, खाने में कुरकुरी है।
गर्मी के मारने को एक तीर की सरी है।
आंखों में सुख कलेजे, ठंडक हरी भरी है।
ककड़ी न कहिये इसको, ककड़ी नहीं परी है।
क्या खूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी।
और जिसमें ख़ास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी॥

---

[1] लज्जित

पाठान्तर—(१) क़ा० जर्द मायल (२) जा० हीरे

बेल उसकी ऐसी नाज़ुक, जूं जुल्फ़ पेच खाई ।
बीज ऐसे छोटे छोटे, ख़शख़ाश या कि राई ।
देख उसकी ऐसी नरमी बारीकी और गुलाई ।
आती है याद हमको महबूब की कलाई ।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी ।
और जिसमें ख़ास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी ॥

लेते हैं मोल इसको गुल की तरह से खिल के ।
माशूक़ और आशिक़ खाते हैं दोनों मिलके ।
आशिक़ तो हैं बुझाते शोलों को अपने दिल के ।
माशूक़ हैं लगाते, माथे पै अपने छिलके ।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी ।
और जिसमें खास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी ॥

मशहूर जैसी हरजा, यां की जमालियां हैं ।
वैसी ही ककड़ी ने भी धूमें यह डालियां हैं ।
मीठी हैं सो तो गोया, शक्कर की थालियां हैं ।
कड़वी हैं सो भी गोया, ख़ूबां की गालियां हैं ।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी ।
और जिसमें ख़ास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी ॥

जो एक बार यारो, इस जा की खाये ककड़ी ।
फिर जा कहीं की उसको हरगिज़ न भाए ककड़ी ।
दिल तो "नज़ीर" ग़श है यानी मंगाए ककड़ी ।
ककड़ी है या क़यामत, क्या कहिए हाय ककड़ी ।
क्या ख़ूब नर्मो नाज़ुक, इस आगरे की ककड़ी ।
और जिसमें ख़ास काफ़िर, इस्कन्दरे की ककड़ी ॥

तरबूज़

क्यू न हो सब्ज़ ज़ुमुर्रद के बराबर तरबूज़ ।
करता है ख़ुश्क कलेजे के तईं तर तरबूज़ ।
दिल की गर्मी को निकाले है यह अक्सर तरबूज़ ।
जिस तरफ़ देखिए बेहतर से है बेहतर तरबूज़ ।
अब तो बाज़ार में बिकते हैं सरासर तरबूज़ ॥

कितने हैं खाते नज़ाकत से तराश[1] ओस में धर ।
ताकि सीना हो खुनुक(१)[2], सर्दी से ठंडा हो जिगर ।
कितने शर्बत ही के पीते हैं कटोरे भर-भर ।
कितने बीजों को खुटकते हैं खुशी हो-हो कर ।
कितने खाते हैं किफ़ायत से मंगा कर तरबूज़ ॥

मीठे और सर्द हैं इतने कि ज़रा नाम लिए ।
होंठ चिपके हैं जुदा, दांत हैं कड़कड़(२) बजते ।
शब को दो चार मंगा कर जो तराशे मैंने ।
क्या कहूं मैं कि मिठाई में वह(१) कैसे निकले ।
कोई ओला कोई मिश्री, कोई शक्कर तरबूज ? ॥

मुझसे कल यार ने मंगवाया जो देकर पैसा ।
उसमें(२) टांकी जो लगाई, तो वह कच्चा निकला ।
देख त्यौरी को चढ़ा, होके ग़ज़ब, तैश में आ ।
कुछ न बन आया तो फिर घूर के यह कहने लगा ।
क्यूं बे लाया है उठाकर यह मेरा सर तरबूज़ ॥

जब कहा मैंने मियां यह तो नहीं है कच्चा ।
और कच्चा है तो मैं पेट में पैठा(३) तो न था ।
इसके सुनते ही ग़जब होके वह लाल अंगारा ।
लाठी पाठी जो न पाई तो फिर आखिर झुंझला ।
खींच मारा मेरे सीने पे उठाकर तरबूज़ ॥

क्यूं मियां हमको जो तुम करते हो ककड़ी खीरा ।
कोसना हर घड़ी हर आन का होता है बुरा ।
तुमको तो पड़ गया मिलने का रक़ीबों से मज़ा ।
झूठी क़स्में यह मेरे सर की जो खाते हो भला ।
क्या मेरे सर को किया तुमने मुक़र्रर तरबूज़ ॥

---

१. काटकर २. ठण्डा

पाठान्तर—(१) क़ा० खुश्क (२) क़ा० श० आ० कर कर (१) क़ा० श० आ० कि (२) क़ा श० जा० के
(३) आ० बैठा

प्यार से जब है वह तरबूज कभी मंगवाता ।
छिलका उसका मुझे टोपी की तरह देवै पिन्हा ।
और यह कहता है कि फेंका तो चखाऊंगा मज़ा ।
क्या कहूं यारो में उस शोख़ के डर का मारा ।
दो दो दिन रक्खे हुए फिरता हूं सर पर तरबूज ।

एक वेदर्द सितमगर है वह काफ़िर ख़ूंख्वार ।
क़त्ल करता है अज़ीज़ों[3] के तईं लैलो निहार[4] ।
कल मेरा उसकी गली में जो हुआ आके(१) गुज़ार ।
इस तरह सरके शहीदों का पड़ा था अंबार ।
जैसे बाज़ार में तरबूज़ के ऊपर तरबूज़ ॥

थी जिन्हें आगे तेरे कंद से होठों पे निगाह ।
आरज़ू ही में वह सब मरके हुए ख़ाक स्याह ।
उन शहीदों की भी कुछ तुझको ख़बर है वल्लाह ।
बोसे लेने की तमन्ना में थे ख़ाक स्याह ।
वही हसरत ज़दा अब निकले हैं बनकर तरबूज़ ॥

रात उस शोख़ से मैंने यह पहेली में कहा ।
भीगी बकरी किसे कहते हैं बताओ तो भला ।
इस पहेली के तईं सुन के बड़े सोच में आ ।
जब न समझा तो कहा, हार के अब तू ही बता ।
हंस के जब मैंने कहा ऐ मेरे दिलबर तरबूज़ ॥

अब तो उस शोख का तरबूज ही लूटे है मज़ा ।
वह तो ठण्डा है वले मेरा जिगर है जलता ।
रोना किस तौर "नज़ीर" अब न मुझे आवे भला ।
फांक बीजों की भरी, लेहै वह जब मुंह से लगा ।
तब लिपट जाता है क्या प्यार से हंस कर तरबूज़ ॥

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० सुनके

[3] मित्रों [4] दिन-रात

संतरा

क्या क्या हर एक दरख़्त पे आया है संतरा ।
फल ज़ोर ही मज़े का कहाया है संतरा ।
नारंगी और अनार कब अच्छे लगें उसे ।
जिस रस भरी के दिल में समाया है संतरा ।
छाती पे हाथ रखके कहा मैंने उससे जान ।
मुद्दत में मेरे हाथ यह आया है संतरा ।
गर तुम बुरा न मानो तो एक बात मैं कहूं ।
यह तो किसी का तुमने चुराया है संतरा ।
तुम तोड़ती थीं, आन पड़ा इसमें बागबां ।
अंगिया में उसके डर से छुपाया है संतरा ।
यह सुनके उसने हंस दिया और यूं कहा मुझे ।
अब हमने इस तरह से यह पाया है संतरा ।
एक बाग़ हुस्न का हैं जवानी है उसका नाम ।
वां से हमारे हाथ यह आया है संतरा ।
जोबन के बागवान ने, उठती बहार से ।
ताज़ा अभी यह हमको भिजाया है संतरा ।
कूल्हे ही लग रहा है हमारे तमाम उम्र ।
जिसको कभी यह हमने दिखाया है संतरा ।
जब तो नज़ीर मैं ने यह हंस कर कहा उसे ।
मेवा ख़ुदा ने ख़ूब बनाया है संतरा ॥

खरबूज़े

अब तो बाज़ार के हैं ज़ेबफ़िज़ा[1] ख़रबूज़े ।
हैं जिधर देखो उधर जलवानुमा[2] ख़रबूज़े ।

---

[1] सुशोभित [2] शोभायमान

क़न्दो मिश्री की हिलावत[३] तो अयां है लेकिन ।
कन्दो मिश्री के भी हैं होश रुबा ख़रबूज़े ।
दिलकश इतने हैं कि बाज़ार में लेने तरबूज़ ।
गर कोई, जावे तो लाता है तुला ख़रबूज़े ।
नाशपाती को लगाकर अगर अमरूदो अनार ।
हों मुक़ाबिल तो उन्हें गिनते हैं क्या ख़रबूज़े ।
सो बढ़ल लेके कठहल भी अगर आवे पक कर ।
अपने एक क़ाश[४] से दें उसको हटा ख़रबूज़े ।
यार आया तो कहा हमने मंगा दें लड्डू ।
हंस के उस शोख़ शकर लब ने कहा ख़रबूज़े ।
खिन्नियां फ़ालसे मंगवादें तो झुंझलाके कहा ।
पूछते क्या हो, तुम्हें कह तो दिया ख़रबूजे ।
हमने देखा कि इधर रग़बतेख़ातिर[५] है बहुत ।
हुक्म करते ही दिये ढेर लगा ख़रबूज़े ।
छूलिया सेब ज़क़न[६] को तो कहा वाह चह ख़ुश ।
तुमने मंगवाए इसी वास्ते क्या ख़रबूज़े ।
अब के शफ़तालुए लब से कोई लोगे बोसा ।
अच्छी हुर्फ़त को लिये तुमने मंगा ख़रबूज़े ।
शक्करें मेवे हों और सबको वहम पहुंचे बहुत ।
सो "नज़ीर" ऐसे तो तरबूज़ हैं या ख़रबूजे ॥

नारंगी

अब तो हर बाग़ में आई है भली नारंगी ।
है हर एक पेड़ की मिसरी की डली नारंगी ।
हुस्न वालों के भी सीने की फली नारंगी ।
देख कर उसकी वह अंगिया की पली नारंगी ।
हमने तो आज यह जाना कि चली नारंगी ॥

---

३. मिठास ४. फाँक ५. पसन्द ६. ठुड्डी

सैर को बाग़ की जाती है चंचल जो ज़रा ।
खाके नारंगियां फेंके है वह हम पर छिलका ।
सामने अपने वह बाज़ार सा कोलों का लगा ।
दम बदम छेड़ के कहती है यह अंगिया को दिखा ।
तुमने पैसे की कभी हमसे न ली नारंगी ॥

जब नज़र आई मुझे शोख़ के सीने की बहार ।
खट्टा मीठा सा लगा होने मेरा दिल एक बार ।
जा पड़ा जो सीने की तरफ़ खोके क़रार ।
इस क़दर थी वह कुचें शोख़ सितम गर की तैयार ।
जिस क़दर सेब हो या जैसे भली नारंगी ॥

मिल गया हमको जो कल एक मकां ख़िलवत[1] का ।
बागवां की न अटक और न किसी का खतरा ।
क्या कहें शब को अजब ऐश का लूटा वह मज़ा ।
हर घड़ी उस शजरे हुस्न को छाती से लगा ।
क्या ही बोसे लिये और क्या ही भली नारंगी ॥

जिन दिनों शोख़ के आलम का नया मौसम था ।
जब ही मिल लेते तो दिल क्या ही सदा फल पाता ।
अब तो वह वक़्त गया तो है यही हैफ़[2] आता ।
आह इस हाथ से इस हुस्न की डाली को झुका ।
हमने अफ़सोस जभी तोड़ न ली नारंगी ॥

जब से आई है नज़र शोख कुचों की तस्वीर ।
तब से लगते हैं वह लोगों के जिगर में सौ तीर ।
दिल भी सीने में तड़पता है नज़र हैगी असीर ।
संतरों की न हवस है न है थोलों की "नज़ीर" ।
अब तो सबसे हमें लगती है भली नारंगी ॥

---

[1] एकांत [2] दुःख, अफ़सोस

जलेबियां

उस लब शकर ने जबकि मंगाई जलेबियां ।
फूली मज़े में तब न समाई जलेबियां ॥
गर लब तुम्हारे कंद से मीठे न थे तो जां ।
चख फेरी करती किसलिए आई जलेबियां ॥
बातें जो एर-फेर के करते हो मुझसे तुम ।
यार किसी ने तुमको खिलाई जलेबियां ॥
लेते हो तुम जो नाम जलेबी का बार-बार ।
समझा यह तुमने मुझ पै जमाई जलेबियां ॥
खाकर मेरी जलेबियां आए न मेरे पास ।
काफ़िर ने आज की भी पचाई जलेबियां ॥
मांगा जो मैंने बोसा तो हंसकर कहा कि वाह ।
क्या तुमने कुछ मुझे ही खिलाई जलेबियां ॥
मिलना तुम्हारा आज मेरे हक़ में यों हुआ ।
भूखें ने जैसे भूख में पाई जलेबियां ॥
मिलना मेरी मुराद का क्योंकर हुआ रवा ।
दरगाहों पर भी हमने चढ़ाई जलेबियां ॥
इन पतले पतले होठों का बोसा मैं क्या कहूं ।
गोया तुरत की गरम छपाई जलेबियां ॥
दीं गालियां जो रात को चुनके हमको आह ।
किस किस मज़े की हमको वह भाई जलेबियां ॥
जैसे कमाल रूप की शिद्दत में पेट भर ।
भूखे किसी फ़क़ीर ने पाई जलेबियां ॥
आए जो मेरे पास वह शाहे नबादिरात ।
जब मैंने उनके आगे रखाई जलेबियां ॥
मुंह देख देख मेरा कहा उसने हंस के यों ।
कब कब तुम्हारी हमने हैं खाई जलेबियां ॥
लो बांधो मुश्कें[१] मेरी जलेबी के तार से ।
जो मैंने होंठ से हों लगाई जलेबियां ॥

---

[१] भुजाएँ

ऐ बी ! मुकरती क्यों हो वह खंदी तो जीती है ।
है जिसके हाथ हमने भिजाई जलेबियां ।।
मैं दो बरस से भेजता रहता हूँ रात दिन ।
तुमने अभी से मेरी भुलाई जलेबियां ।।
यह बात सुनके हंस दी और यह कहा मियां ।
ऐसी ही हमने कितनी उड़ाई जलेबियां ।।
हलवाई तो बनाते हैं मैदे की ऐ "नज़ीर" ।
हमने यह एक सुख़ुन की बनाई जलेबियां ।।

कोठा

रहे जो शब को हम उस गुल के साथ कोठे पर ।
तो क्या बहार से गुज़री है रात कोठे पर।।
यह धूमधाम रही सुबह तक अहा हा हा ।
किसी की उतरे है जैसे बरात कोठे पर ।।
मकां जो ऐश का हाथ आया ग़ैर से खाली ।
पटे के चलने लगे फिर तो हाथ कोठे पर ।।
गिराया शोर किया गालियां दी धूम मची ।
अ़जब तरह की हुई वारदात[1] कोठे पर ।।
लिखें हम ऐश की तख़्ती को किस तरह ऐ जां ।
क़लम ज़मीन के ऊपर, दवात कोठे पर ।।
कमद जुल्फ़ की लटका के दिल को ले लीजे ।
यह जिन्स[2] यूंनहीं आने की हाथ कोठे पर ।।
ख़ुदा के वास्ते ज़ीने की राह बतलाओ ।
हमें भी कहनी है कुछ तुम से बात कोठे पर ।।
लिपट के सोये जो उस गुलबदन के साथ "नज़ीर' ।
तमाम हो गईं हल मुश्किलात कोठे पर ।।

---

[1] घटना [2] वस्तु

कोठा—२

कभी तो आओ हमारे भी जान कोठे पर ।
लिया है हमने अकेला मकान कोठे पर ।।

खड़े होते हो तुम आन आन कोठे पर ।
करोगे हुस्न की क्या तुम दुकान कोठे पर ।।

तुम्हें जो शाम को देखा था बाम पर मैंने ।
तमाम रात रहा मेरा ध्यान कोठे पर ।।

यकीं है बल्कि मेरी जान जबकि निकलेगी ।
तो आ रहेगी तुम्हारे ही जान कोठे पर ।।

मुझे यह डर है किसी की नज़र न लग जावे ।
फिरो न तुम खुले बालों से जान कोठे पर ।।

बशर तो क्या है फ़रिश्ते का जी निकल जावे ।
तुम्हारे हुस्न की देख आन बान कोठे पर ।।

झमक दिखाके हमें और भी फंसाना है ।
जभी तो चढ़ते हो तुम रोज़ जान कोठे पर ।।

तुम्हें तो क्या है व लेकिन मेंरी ख़राबी हो ।
किसी का आन पड़े अब जो ध्यान कोठे पर ।।

गो चूने कारी में होती है सुर्ख़ी तो ऐसी ।
किसी के ख़ून का यह है निशान कोठें पर ।।

यह आर्ज़ू है किसी दिन तो अपने दिल का दर्द ।
करें हम आन के तुमसे बयान कोठे पर ।।

लड़ाओ ग़ैर से आखें कहो हो हम से आह ।
कि था हमें तो तुम्हारा ही ध्यान कोठे पर ।।

ख़ुदा के वास्ते इतना तो झूठ मत बोलो ।
कहीं न टूट पड़े आसमान कोठे पर ।।

कमंद जुल्फ़ की लटका के उस सनम ने 'नज़ीर' ।
चढ़ा लिया मुझे अपने निदान कोठे पर ।।

कोठे पर

हमेशा आके वह वाला सिफ़ात[1] कोठे पर ।
सुख़ुन के घोले है कंदो नबात कोठें पर ।
लगा रक़ीब की दहशत[2] से घात कोठे पर ।
रहे जो शब को हम उस गुल के साथ कोठे पर ।
तो क्या बहार से गुज़री है रात कोठे पर ।।

इधर से साक़ीयो मुतरिब[3] भी हो गये यक जा ।
इधर वह पार उधर नाच राग भी ठहरा ।
अ़जब वहार की एक अन्जुमन हुई बरपा ।
यह धूम धाम रही सुबह तक, अहा, हा, हा ।
किसी की उतरे है जैसे बरात कोठे पर ।।

हिजाब[4] दूर हुआ दौरे जाम की ठहरी ।
लगीं निकलने जो कुछ हसरतें थीं दिल में भरी ।
बहुत दिनों से इसी बात की तमन्ना थी ।
मकां जो ऐश का हाथ आया ग़ैर से ख़ाली ।
पटे के चलने लगे फिर तो हाथ कोठे पर ।।

यह ऐश सुनके रक़ीबों के दिल में आग लगी ।
तो चोर बन के चढ़े, और मुंडेर आ पकड़ी ।
इधर वह यार, उधर हमने लाठी पाठी की ।
गिराया, शोर किया, गालियां दीं, धूम मची ।
अजब तरह की हुई वारदात कोठें पर ।।

अकेले बैठे हो तुम पुश्ते बाम पर इस आन ।
हमें बुलाओ तो कुछ ऐश का भी हो सामान ।
यह वात पर वही परदे में लीजै अब पहचान ।
लिखें हम ऐश की तख़्ती को किस तरह ऐ जान ?
क़लम ज़मीन के ऊपर, दवात कोठे पर ।

---

१. उच्च विशेषताओं वाला २. भय ३. गायक ४. परदा, लज्जा

मियां यह हाथ पे हम दिल जो अब लिये हैं खड़े ।
और एक बोसे की क़ीमत पे बेचते हैंगे ।
जो लीजिए तो यह तरकीब ख़ूब है प्यारे ।
कमंद ज़ुल्फ़ की लटका के दिल को ले लीजे ।
यह जिन्स यूं नहीं आने की हाथ कोठे पर ।

किधर छुपे हो ? ज़रा मुंह तो हमको दिखलाओ ।
हमारे हाल के ऊपर भी कुछ तरस खाओ ।
सभों से सुनते हो, हर एक से कहते हो आओ ।
ख़ुदा के वास्ते जीने की राह बतलाओ ।
हमें भी कहनी है कुछ तुमसे बात कोठे पर ।।

हुआ जो वस्ल मयस्सर[५] बफ़ज़्ले रब्बे क़दीर[६]
किनारो बोस की आपस में फिर हुई तदबीर ।
हुए जो ऐश, तो किस किस की अब करें तक़रीर ?
लिपट के सोये जो उस गुलबदन के साथ "नज़ीर" ।
तमाम हो गईं हल मुश्किलात कोठे पर ।।

चूहों का अचार+

फिर गर्म हुआ आन के बाज़ार चूहों का ।
हमने भी किया खोमचा तय्यार चूहों का ।
सर पांव कुचल कूट के दो चार चूहों का ।
जल्दी से कचूमर सा किया मार चूहों का ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।१।।

आगे थे कई अब तो हमीं एक हैं चूहे मार ।
मुद्दत से हमारा है इस आचार का व्योपार ।।
गलियों में हमें ढूंढते फिरते हैं ख़रीदार ।
बरसे हैं पड़ी कौड़ी, रूपे पैसों की बौछार ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।२।।

---

[५] प्राप्त [६] अल्लाह की कृपा से

+ पंसारी द्वारा मियाँ के लिए भेजे गए अचार में मरी हुई चुहिया निकली । उसी को मजाक बनाते हुए यह नज़्म लिखी गई है ।

सूखे जिसे तरकारी से तलने के हों दरकार ।
तो सूखे भी खूंटी पे लटकते हैं कई हार ।।
कुछ तेल के कुछ पानी के कुछ चटनी है तय्यार ।
किस तरह की लज़्ज़त[1] है तू चख देख मेरे यार ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।३।।

दीमक की मिर्च लाल सड़ी लीकों की राई ।
दुम टांग नली खोपरी नस नस है सड़ाई ।।
और जिस पे सड़ी मोरी की कीचड़ है मिलाई ।
जब ऐसी बनी ज़ोर मज़ेदार खटाई ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।४।।

कुछ केंचुए कुछ बिच्छू हैं, कुछ नाग हैं काले ।
भूने हुए च्यूंटे भी कई सेर हैं डाले ।।
कुछ टुकड़ियां कुछ मक्खियां कुछ मकड़ी के जाले ।
और उनके सिवा कितने मसाले हैं जो डाले ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।५।।

कुछ इसमें अकेले न चूहे सेर पड़े हैं ।
घूंस और छछूंदर के कई ढेर पड़े हैं ।।
जूं पिस्सू मच्छर और कई सेर पड़े हैं ।
और खाट के खटमल भी सवा सेर पड़े हैं ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।६।।

अव्वल तो चूहे छांटे हुए क़द के बड़े हैं ।
और सेर सवा सेर के मेंढ़क भी पड़े हैं ।।
चख देख मेरे यार यह अब कैसे कड़े हैं ।
चालीस बरस गुज़रे हैं जब ऐसे सड़े हैं ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।७।।

---

[1] स्वाद, आनन्द

चिमगादड़ अबाबील की टांटे भी पड़ी हैं ।
उल्लू के पर और गिद्ध की बीटें भी पड़ी हैं ।।
गोबर की डली बीट की खातें भी पड़ी हैं ।
सर कौवों के और चील की आंतें भी पड़ी हैं ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।८।।

चूहों का जुदा चूहों की मूछों का जुदा है ।
दुम का वह जुदा कान का आंखों का जुदा है ।।
लोटे में सड़ी खाल का बालों का जुदा है ।
प्याली में निरी सूत सी आंतों का जुदा है ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।९।।

खावे जो इस आचार की एक मूंछ की झुंडी ।
खुल जावे सब उसके वह दिलो जान की घुंडी ।।
आती है चली मुल्कों से हुंडी पे जो हुंडी ।
जो सर है चूहे का सो मज़े में है वह मुंडी ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।१०।।

गर पांच रूपे होवें तो एक छिपकली ले लो ।
और एक अशरफ़ी को छछूंदर सड़ी ले लो ।।
मत घूंस के तईं देख के तरसाओ जी ले लो ।
ले लो अजी ले लो, अजी ले लो अजी ले लो ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।११।।

जब दांत तले खोपरी भरती है चराके ।
खुल जाते हैं लज़्ज़त के दिलों बीच भभाके ।।
चखते ही ज़ुबां भरती है इस ढब के तड़ाके ।
शबरात में जिस तरह से छुटते हैं पटाके ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।१२।।

लाता है कोई चिकने घड़े और कोई कोरे ।
प्याला कोई थाली कोई पीतल के कटोरे ।।
क्या लेंगे अब उसको कि जो मुफ़्लिस हैं छछोरे ।
खावेंगे वही जोकि हैं दौलत के चटोरे ।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।।१३।।

पाचन के उपर अब तो यह चूरन का चचा है ।
जो खावे तो फिर पेट का पत्थर भी पचा है ।।
तुरशी में खटाई में यह अब ऐसा रचा है ।
जो आम का वावा है तो लीमू का चचा है ।।
क्या ज़ोर मज़ेंदार है आचार चूहों का ।।१४।।

आगे जो बनाया तो बिका तीस रुपे सेर ।
और गहकी गये ले इसे पचीस रुपे सेर ।।
जाड़ों में यह बिकता रहा बत्तीस रुपे सेर ।
और होलियों में बिकता है चालीस रुपे सेर ।।
क्या ज़ोर मज़ेंदार है आचार चूहों का ।।१५।।

रोज़ी तो हमारी यह उतारी है ख़ुदा ने ।
दिन रात पड़े हमको यह आचार बनाने ।।
और पेट के भी वास्ते दो पैसे कमाने ।
लज्ज़त को "नज़ीर" इसकी जो खावे वही जाने ।।
क्या ज़ोर मज़ेंदार है आचार चूहों का ।।१६।।

मक्खियां

यारो में चुप रहूं भला ताकि ? ।
मक्खियां तो बहुत हुई दर पै ॥
चले आते हैं ग़ोल पै दर पै ।
शोर है ग़ुल है भन भनाहट है ॥
कोई थूके कोई करे है क़ै ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥१॥

पहले मज़कूर[1] किया है खाने का ।
खाके फिर ज़िक्र किया पचाने का ॥
कोई पीने का और न खाने का ।
यह बुरा हाल है ज़माने का ॥
सख़्त मुश्किल बड़ी खराबी है ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥२॥

दो चनों से जो मुंह चलाता है ।
उसमें सौ मक्खियां वह खाता है ॥
दाल रोटी पे क़हर आता है ।
और जो मीठी चीज़ खाता है ॥
उसने अल्लाह जाने खाई कै ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥३॥

कपड़े उजले हैं या कि मैले हैं ।
सब पै गू मक्खियों के फैले हैं ॥
सर से ता पा सड़े कुचैले हैं ।
आदमी क्या कि गुड़ के भेले हैं ॥
लद गये तार-तार सब रगों पै[2] ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥४॥

---

[1] वर्णन [2] नस और पट्ठे, सारा शरीर

दिलबरों की यह शमत आई है ।
आंख मक्खी ने काट खाई है ॥
ठोड़ी भौं आंख सब सुजाई है ।
हुस्न की भी यह बद नुमाई है ॥
रो गई रंग रूप की सब रै ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥५॥

रंडियां कस्बी अब जो गाती हैं ।
मक्खियां मुंह में बैठ जाती हैं ॥
दम बदम थूकने को जाती हैं ।
खांस खंकार सर हिलाती हैं ॥
तो भी बंधती नहीं है उनकी लै ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥६॥

तबले वाले तो कुछ उड़ाते हैं ।
ताल वाले भी खटखटाते हैं ॥
ढोल वाले भी कुछ हिलाते हैं ।
उनकी कमबख़्ती जो बजाते हैं ॥
भोंपू नरसिंगा और तुरई करने ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥७॥

कपड़ा जिनका फटा पुराना है ।
वह तो कुल मक्खियों ने साना है ॥
पायजामा तमाम छाना है ।
बाक़ी अन्दर का पैठ जाना है ॥
वह भी मंज़िल वह अब करेंगी तैं ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥८॥

दूध में मक्खियां ही दाबी हैं ।
खाने में मक्खियां ही चाबी हैं ॥
पानी में तो यह मुर्ग़आबी[३] हैं ।
अलग़रज़ जो बड़े शराबी हैं ॥
वह भी सब ओकते हैं पीकर मैं ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥९॥

---

[३] जल-पक्षी

कोई ओके है रोटियां खाकर ।
कोई डाले है पानी मतलाकर ॥
कोई खांसे है ख़ाली उबका कर ।
हद तो यह है कि सख़्त घवराकर ॥
भूख में भी कोई करे है क़ै ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥१०॥

है "नज़ीर" अब तो शान में मक्खी ।
घर के हर एक मकान में मक्खी ॥
शहर की हर दुकान में मक्खी ।
भर गई सब जहान में मक्खी ॥
कोई खाली नहीं ग़रज़ अब शै[४] ।
इस क़दर धूम मक्खियों की है ॥११॥

---

[४] वस्तु

कथा-कहानियां

जनम कन्हैया जी

है रीत जनम की यों होती, जिस घर में बाला होता है ।
उस मंडल में हर मन भीतर सुख चैन दोबाला होता है ।।
सब बात बिथा की भूले हैं, जब भोला-भाला होता है ।
आनन्द मंदीले(१) बाजत हैं, नित भवन उजाला होता है ।।
यों नेक नछत्तर लेते हैं, इस दुनियां में संसार जनम ।
पर उनके और ही लच्छन हैं जब लेते हैं अवतार जनम ।।१।।

सुभ साअत[1] से यों दुनियां में अवतार गरभ में आते हैं ।
जो नारद मुनि हैं ध्यान भले सब उनका भेद बताते हैं ।।
वह नेक महूरत से जिस दम इस सृष्टि में जन्मे जाते हैं ।
जो लीला रचनी होती है वह रूप यह(२) जा दिखलाते हैं ।।
यों देखने में और कहने में, वह रूप तो बाले होते हैं ।
पर बाले ही पन में उनके उपकार निराले होते हैं ।।२।।

यह बात कही जो मैंने, अब यों समझो इसको ध्यान लगा ।
है पण्डित पुस्तक बीच लिखा, था कंस जो राजा मथुरा का ।।
धन ढेर बहुत बल तेज निपट, सामान अनेक(३) और डील बड़ा ।
गज और तुरंग अच्छे नीके(४), अम्बारी होदे ज़ीन सजा ।।
जब बन ठन ऊंचे हस्ती पर, वह पापी आन(५) निकलता था ।
सब साज़ झलाझल करता था, और संग कटक(६) दल चलता(७) था ।।३।।

पाठान्तर—(१) क़ा० मंडेली (२) क़ा० रूपैं (३) जा० अनेक (४) क़ा० बंगे (५) जा० बाने बांध
(६) क़ा० कनक (७) क़ा० जाता था ।

[1] पल

एक रोज़ जो अपने भुज बल पर, वह कंस बहुत मग़रूर हुआ।
और हंस कर बोला दुनियां में, है दूजा कौन बली मुझ सा ॥
एक बान लगाकर पर्बत को, चाहूं तो अभी दूं पल में गिरा।
इस देस के बड़ बल जितने हैं, है कौन जो मुझसे होवे सिवा ॥
जो दुष्ट कोई आ जुद्ध करे, कब मो(१) पर वाका जोर(२) चले।
वह सामने मेरे ऐसा हो, जों चींटीं हाथी पांव तले ॥४॥

वह ऐसे ऐसे कितने ही, जो बोल गर्व के कहता था।
सब लोग सभा के सुनते थे, क्या ताब जो बोले कोई ज़रा ॥
था एक पुरुष वह यों बोला, तू भूला अपने बल पर क्या ?।
जो तेरा मारन हारा है, सो वह भी जनम अब लेवेगा ॥
तू अपने बल पर हे(३) मूरख, इस आन अबस अहंकार(४) किया।
वह तुझको मार गिरावेगा यों, जैसे भुनगा मार लिया ॥५॥

यह बात सुनी जब कंस ने वां, तब सुनकर उसके होश उड़े।
भय मन के भीतर आन भरा और बोल गरब सिगरे बिसरे ॥
यों पूछा वह किस देस में है और कौन भवन(५) आकर जन्मे।
कौन उसके मात पिता होवें, जो पालें उसको चाहत से ॥
वह बोला मथुरा नगरी में, एक रोज़ जनम वह पावेगा।
जब स्याना होगा तब तुझको एक पल में मार गिरावेगा ॥६॥

यह बात सुनाई कंस को फिर, फिर(६) आठ लकीरें वां खींची।
बसुदेव पिता का नाम कहा, और देवकी माता ठहराई ॥
उन आठ लकीरों की बातें, फिर कंस को उसने समझाई।
सब छोरा छोरी देवकी के, हैं जग में होते आठ यों ही(७) ॥
बल तेज गरब में तूने तो, सब कारज ज्ञान बिसारा है।
जो पाछे रेखा खींची(८) है, वह तेरा मारन हारा है ॥७॥

पाठान्तर—(१) क़ा० हों, जा० हवन (२) जा० बार (३) ऐ (४) क़ा० जा० बनकार (५) क़ा० हो यां (६) जा० और (७) क़ा० सब छोरा छोरी देवकी की, यूं जग में होती हैं जाई। (८) क़ा० जो वाछे रेखा खेंचे है।

इस बात को सुनकर कंस बहुत, तब मन में अपने घबराया ।
जब नारद मुनि उस पास गए तब उनसे उसने भेद कहा ।।
तब नारद मुनि ने भी उसको, कुछ और तरह से समझाया ।
फिर कंस को वां इस बात सिवा कुछ और न मारग बन आया ।।
जो अपनी जान बचाने का कर सोच यह उसने फंद किया ।
बुलवा वसुदेव और देवकी को, एक मन्दिर भीतर बंद किया ।।८।।

जब क़ैद किया उन दोनों को, तब चौकीदार दिये बिठला ।
एक आन न निकसन पावें यह, फिर उन सबको यह हुक्म दिया ।।
सामान रसोई का जो था सब उनके पास दिया रखवा ।
और द्वार दिये उस मन्दिर के, तब भारी ताले भी जड़वा ।।
हुशियार लगे यों रहने वां नित चौकी के देने हारे ।
क्या ताब जो कोठे छज्जे पर एक आन परिन्दा पर मारे ।।९।।

भय बैठा था जो कंस के मन वह भर कर नींद न सोता था ।
कुछ बात सुहाती ना उसको नित अपनी पलक भिगोता था ।।
उस मन्दिर में उन दोनों के, जब कोई बालक होता था ।
कंस आन उसे झट(१) मारे था, मन मात पिता का रोता था ।।
इक मुद्दत तक उन दोनों का, उस मन्दिर में यह हाल रहा ।
जो बालक उनके घर जन्मा, सो मारता वह चंडाल रहा ।।१०।।

फिर आया वाँ एक वक़्त ऐसा जो आए गर्भ में मनमोहन ।
गोपाल, मनोहर, मुरलीधर, श्रीकिशन, किशोर न, कंवल नयन ।।
घनश्याम, मुरारी, बनवारी, गिरधारी, सुन्दर श्याम बरन ।
प्रभुनाथ बिहारी कान्ह लला, सुखदाई, जग के दुःख भंजन ।।
जब साअत परगट होने की, वां आई मुकुट धरैया की ।
अब आगे बात जनम की है, जै बोलो किशन कन्हैया की ।।११।।

था(२) नेक महीना भादों का, और दिन बुध, गिनती आठन की ।
फिर आधी रात हुई जिस दम और हुआ नछत्तर रोहिनी भी ।।
सुभ साअत नेक महूरत से, वां जनमें आकर किशन जभी ।
उस मन्दिर की अंधियारी में, जो और उजाली आन भरी ।।
बसुदेव से बोलीं देवकी जी, मत डर भय मन में ढेर(३) करो ।
इस बालक को तुम गोकुल में, ले पहुंचो और मत देर करो ।।१२।।

पाठान्तर— (१) श० आ० छुप (२) क़ा० आया (३) क़ा० दर भौवन में खैर करो

जो उसके तुम ले जाने में, यां टुक(१) भी देर लगाओगे ।
वह दुष्ट इसे भी मारेगा, पछताते ही रह जाओगे ॥
इस आन संभल कर तुम, इसको जो गोकुल में पहुंचाओगे ।
इस बात में यह फल पाओगे, जो इसकी जान बचाओगे ॥
वां गोकुल वासी जो इसको, ले अपनी गोद संभालेगा ।
कुछ नाम वह इसका रख लेगा और मेहर दया से पालेगा ॥१३॥

जो हाल यह वां जा पहुंचेगा, तो इसका जी बच जावेगा ।
जो करम लिखी हैं तो फिर भी, मुख हमको आन दिखावेगा ॥
जिस घर के बीच पलेगा यह, वह घर हमको बतलावेगा ।
हम इससे मिलने जावेंगे, यह हमसे मिलने आवेगा ॥
ना काम हमें कुछ दावा से न झगड़ा और परेखे से ।
जब देखने को मन भटके गा, सुख पावेंगे उसके देखे से ॥१४॥

है आधी रात अभी तो यां ले जाओ इसे तुम हाल उधर ।
लिपटा लो अपनी छाती से, दे आओ जाके और के घर ॥
मन बीच उन्हों के था यह डर, दिन होवेगा तो कंस आकर ।
एक आन में उसको मारेगा, रह जावेंगे हम आंसू भर ॥
यह बात न थी मालूम उन्हें यह बालक जग निस्तारेगा ।
कब मार सकेगा कंस इसे, यह कंस को आपही मारेगा ॥१५॥

जब देवकी ने बसदेव से वां, रो रो कर तब यह बात कही ।
वह बोले क्यों कर ले जाऊं, है बाहर तो चौकी बैठी ॥
और द्वार लगे हैं ताले कुल, कुछ बात नहीं मेरे बस की ।
तब देवकी बोली "ले जाओ मन ईश्वर की रख आस अभी" ॥
वह बालक को जब ले निकले, सब सांकर पट पट छूट गए ।
थे ताले जितने द्वार लगे, उस आन झड़ाझड़ टूट गए ॥१६॥

जब आए चौकीदारों में तब वां भी यह सूरत देखी ।
सब सोते पाए उस साअत, हर आन जो देते थे चौकी ॥
जब सोता देखा उन सबको, हो निरभै निकले वां से भी ।
फिर आए जमना तीर ज्योंहीं, फिर जमना देखी बहुत चढ़ी ॥
यह सोच हुआ मन बीच उन्हें, पैर इस जल में कैसे धरिए ।
है रैन अंधेरी संग बालक, इस बिपता में अब क्या करिए ॥१७॥

पाठान्तर—(१) क्रा० तक

यों मन में ठहराफिर चलिए, फिर आप ही मन मज़बूत हुआ ।
भगवान दया पर आस लगा, वां जमना जी पर ध्यान धरा ।।
यह जों जों पांव बढ़ाते थे, वह पानी चढ़ता आता था ।
यह बात लगी जब होने वां, बसुदेव गए मन में घबरा ।।
तब पांव बढ़ाए बालक ने जो आपसे और भीगे जल में ।
जब जमना ने पग चूम लिये, जा पहुंचे पार वह इक पल में ।।१८।।

जब आन बिराजे गोकुल में, सब फाटक वां भी पाए खुले ।
तब वां से चलते चलते, वह फिर नन्द के द्वारे आ पहुंचे ।।
वां नन्द महल के द्वारे भी, सब देखे पट-पट द्वार खुले ।
जो चौकी वाले सोते थे, अब कौन उन्हें रोके टोके ।।
जब बीच महल के जा पहुंचे, सब सोते वां घर वाले थे ।
हर चार तरफ़ उजियाली थी, जों सांझ में दीवे बाले थे ।।१९।।

इक और अचम्भा यह देखो, जो रात जनम श्रीकिशन की थी ।
उस रात जशोदा के घर भी जन्मी थी यारो इक लड़की ।।
वां सोते देख जशोदा को और बदली कर इस बालक की ।
उस लड़की को वह आप उठा, ले निकले आये मथुरा जी ।।
जब लड़की लाए मन्दिर में, सब ताले मन्दिर लाग उठे ।
जो चौकी देने वाले थे, फिर वह भी उस दम जाग उठे ।।२०।।

जब भोर हुई तब घबरा कर, सुध कंस ने ली उस मन्दिर की ।
जब ताले खुलवा बीच गया, तब लड़की जन्मी एक देखी ।।
ले हाथ फिराया चक्कर दे तो पटके, वह बिन पटके ही ।
यों जैसे बिजली कौंदे हैं जब छूट हवा पर जा पहुंची ।।
यह कहती निकली "ऐ मूरख, क्या तूने सोच बिचारा है ।
वह जीता अब तो सीस मुकुट, जो तेरा मारन हारा है" २१।।

जब कंस ने वां यह बात सुनी, मन बीच बहुत सा लजियाया ।
जो कारज होने वाला है, वह टाले से कब है टलता ।।
सौ फ़िक्र करो, सौ पेच करो, सौ बात सुनाओ, हासिल क्या ।
हर आन वही यां होना है, जो माथे के है बीच लिखा ।।
हैं कहते बुद्धि जिसे अब यां, वह सोच बड़े ठहराती है ।
तक़दीर के आगे पर यारो, तदबीर नहीं काम आती है ।।२२।।

अब नन्द के घर की बात सुनो, वां एक अचम्भा यह ठहरा ।
जो रात को जन्मी थी लड़की और भोर को देखा तो लड़का ॥
घुड़नालें छूटी नाच हुआ, और नौबत का गुल शोर मचा ।
फिर किशन गरग(१) ने नाम रखा, सब कुनबे के मिल बैंठे आ ॥
नंद और जसोदा और कवात, करने वां हेरा फेर(२) लगे ।
पकवान मिठाई मेवे के, नर नारी आगे ढेर लगे ॥२३॥

सब नारी आई गोकुल(३) की और पास पड़ोसिन आ बैठीं ।
कुछ ढोल मजीरे लाती थीं, कुछ गीत जचा के गाती थीं ॥
कुछ हर दम मुख इस बालक का बलिहारी होकर देख रहीं ।
कुछ थाल पंजीरी के रखतीं, कुछ सोंठ सठौरा करतीं थीं ॥
कुछ कहती थीं "हम बैंठे हैं नेग आज के दिन का लेने को" ।
कुछ कहतीं "हम तो आए हैं, आनन्द बधावा देने को" ॥२४॥

कोई घुट्टी बैंठी(४) गरम करे, कोई डाले इस्पन्द और भूसी ।
कोई लायी हंसली और खड़ुवे. कोई कुर्ता टोपी मेवा घी ॥
कोई देखे रूप उस बालक का, कोई माथा चूमे मेहेर भरी ।
कोई भोंवों की तारीफ करे कोई आंखों की, कोई पलकों की ॥
कोई कहती उम्र बड़ी होवे, ऐ बीर ! तुम्हारे बालक की ।
कोई कहती ब्याह बहू लाओ, इस आस मुरादों वाले की ॥२५॥

कोई कहती बालक ख़ूब हुआ ऐ बहना ! तेरी नेक रती ।
यह बाले उनको मिलते हैं, जो दुनियां में हैं बड़ भागी ॥
इस कुनबे की भी शान बढ़ी और भाग बड़े इस घर के भी ।
यह बातें सबकी सुन सुनकर, यह बात जसोदा कहती थी ॥
ऐ बीर ! यह बालक जो ऐसा, अब मेरे घर में जन्मा है ।
कुछ और कहूं मैं क्या तुमसे, भगवान की मोपे कृपा है ॥२६॥

थी कोने कोने ख़ुशवक़्ती[2] और तबले ताल खनकते थे ।
कोई नाच रही, कोई कूद रही, कोई हंस-हंस के कुछ रूप सजे ॥
हर चार तरफ़ आनन्दें थीं, वां घर में नंद-जसोदा के ।
कुछ आंगन बीच बिराजें थीं, कोई बैंठी कोठे और छज्जे ॥
सौ ख़ूबी और ख़ुश हाली से दिखलाती थी सामान खड़ी ।
सच बात है बालक होने की, है दुनियां में आनन्द बड़ी ॥२७॥

पाठान्तर—(१) जा० गरम (२) क़ा० हरेर (३) क़ा०, जा० गोने (४) क़ा० खट्टी मीठी गरम करे

[2] शुभ समय

फिर और ख़ुशी की बात हुई जब रीत हुई दधिकांदों की ।
रखवाई दूध की मटकी भर(१), और डाली हल्दी बहुतेरी ।।
यह इस पर फेंके भर-भर कर, वह उस पर डालें घड़ी-घड़ी ।
कोई पोछे(२) मुख और बाहन को कोई सिखरनी(३) फेंकें और मठड़ी ।।
इसविधि की भी रंग रलियों में रूप और हुआ नर-नारी का ।
और तन के अबरन यों भीगे ज्यों रंग हो केसर क्यारी का ।।२८।।

सुख मंडल में यह धूम मची, और बाहर नेगी जोगी भी ।
कुछ नाचें भांड भगतिए भी, कुछ हिजड़ें पावें बेल बड़ी ।।
आनन्द बधावे बाज रहे, नरसिंगे सुरना और तुरई ।
रंगीन सुनहरे पालने भी ले हाथ खड़े कितने बिरती(४) ।।
हर आन उठाती थीं मानिक, क्या गिनती रूपे-सोने की ।
नंद और जसोदा ने ऐसी, की शादी बालक होने की ।।२९।।

जो नेगी-जोगी थे उनको उस आन निपट ख़ुश हाल किया ।
पहराये बागे रेशम के, और ज़र भी बख़्शा बहुतेरा ।।
और जितने नाचने वाले, असबाब[३] उन्हें भी ख़ूब दिया ।
मेहमान जो घर में आए थे, सब उनका भी अरमान रखा ।।
दिन-रात छटी के होने तक, मन ख़ुश(५) किया लोग-लुगाई का ।
भर थाल रुपे और मोहरें दीं, जब नेग चुकाया दाई का ।।३०।।

नंद और जसोदा बालक को, वां हाथों छांव में थे रखते ।
नित प्यार करें तन मन वारें, सुनहरी अबरन(६) गहने बाँके ।।
जी बहलाते मन परचाते और ख़ूब खिलौने मंगवाते ।
हर आन झुलाते पालने में, वह ईधर और ऊधर बैठे ।।
कर याद "नज़ीर" अब हर साअत, उस पालने और उस झूले की ।
आनन्द से बैठो चैन करो, जय बोलो कान्ह झंडूले की ।।३१।।

पाठान्तर—(१) क़ा० जा० फिर (२) क़ा० जा० पूजे (३) क़ा० सिखरी फेंके और मंतरी (४) क़ा० जा० पर भी (५) क़ा० खुश दिल किया जा० खुश दिल (६) क़ा० सुनहरी अबरन की बनके, जा० सुथरे

३. सामान

बालपन-बाँसुरी बजैया का

यारो सुनो ! यह दधि के लुटैया का बालपन ।
और मधुपुरी नगर के बसैया का बालपन ॥
मोहन सरूप निरत करैया का बालपन ।
बन-बन के ग्वाल गौएँ चरैया का बालपन ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥१॥

जाहिर में सुत वह नन्द जसोदा के आप थे ।
वर्ना वह आप माई थे और आप बाप थे(१) ॥
पर्दे में बालपन के यह उनके मिलाप थे ।
जोती सरूप कहिये जिन्हें सो वह आप थे ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥२॥

उनको तो बालपन से न था काम कुछ ज़रा ।
संसार की जो रीति थी उसको रखा बजा ॥
मालिक थे वह तो आपी उन्हें बालपन से क्या ।
वां बालपन, जवानी, बुढ़ापा, सब एक था ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥३॥

मालिक जो होवे उसको सभी ठाठ यां सरे ।
चाहे वह नंगे पांव फिरे या मुकुट धरे ॥
सब रूप हैं उसी के वह जो चाहे सो करे ।
चाहे जवां हो, चाहे लड़कपन से मन हरे ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥४॥

पाठान्तर—(१) का० श० आ० वर्ना वह आप ही माई थे और आपी बाप थे ।

बाले हो ब्रज राज जो दुनियां में आ गए ।
लीला के लाख रंग तमाशे दिखा गए ।।
इस बालपन के रूप में कितनों को भा गए ।
इक यह भी लहर थी कि जहां को जता गए ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।५।।

यूं बालपन तो होता है हर तिफ़्ल[1] का भला ।
पर उनके बालपन में तो कुछ और भेद था ।।
इस भेद की भला जी, किसी को ख़बर है क्या ।
क्या जाने अपने खेलने आये थे क्या कला ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।६।।

राधारमन तो यारो अ़जब जायेगौर[2] थे ।
लड़कों में वह कहां है, जो कुछ उनमें तौर थे ।।
आप ही वह प्रभू नाथ थे आप ही वह दौर थे ।
उनके तो बालपन ही में तेवर कुछ और थे ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।७।।

वह बालपन में देखते जीधर नज़र उठा ।
पत्थर भी एक बार तो बन जाता मोम सा(१) ।।
उस रूप को ज्ञानी कोई देखता जो आ ।
दंडवत ही वह करता था माथा झुका झुका ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।८।।

---

[1] बच्चा   [2] विचार करने योग्य

पाठान्तर—(१) क्रा० का

पर्दा न बालपन का वह करते अगर ज़रा ।
क्या ताब थी जो कोई नज़र भर के देखता ॥
झाड़ और पहाड़ देते सभी अपना सर झुका ।
पर कौन जानता था जो कुछ उनका भेद था ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥९॥

मोहन, मदन, गोपाल, हरी(२) बंस, मन हरन ।
बलिहारी उनके नाम पै मेरा यह तन बदन ॥
गिरधारी, नन्दलाल, हरि नाथ, गोवरधन ।
लाखों किये बनाव, हज़ारों किये जतन ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥१०॥

पैदा तो मधु पुरी(३) में हुए श्याम जी मुरार ।
गोकुल में आके नन्द के घर में लिया क़रार[३] ॥
नन्द उनको देख होवे था जी जान से निसार[४] ।
माई जसोदा पीती थी पानी को वार वार ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥११॥

जब तक कि दूध पीते रहे ग्वाल ब्रज राज ।
सबके गले के कठुले थे और सबके सर के ताज ॥
सुन्दर जो नारियां थीं वह करतीं थी कामो-काज ।
रसिया का उन दिनों तो अजब रस का था मिज़ाज ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥१२॥

बदशक्ल से तो रोके सदा दूर हटते थे ।
और ख़ूबरू को देखके हंस-हंस चिमटते थे ॥
जिन नारियों से उनके ग़मो-दर्द बंटते थे ।
उनके तो दौड़-दौड़ गले से लिपटते थे ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥१३॥

---

[३] ठहराव [४] न्यौछावर

पाठान्तर—(२) क़ा० गरी बंस (३) क़ा० श० आ०—मदनपुर

अब घुटनियों का उनके मैं चलना बयां करूं ।
या मीठी बातें मुंह से निकलना बयां करूं ।।
या बालकों की तरह(१) से पलना बयां करूं ।
या गोदियों में उनका मचलना बयां करूं ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।१४।।

पाटी पकड़के चलने लगे जब मदन गोपाल ।
धरती तमाम हो गई एक आन में निहाल[५] ।।
बासुक चरन छूने को चले छोड़ कर पताल(१) ।
आकास पर भी धूम मची देख उनकी चाल ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।१५।।

थी उनकी चाल की तो अ़जब, यारो चाल-ढाल ।
पांवों में घुंघरू बाजते, सर पर झंडूले(२) बाल ।।
चलते ठुमक-ठुमक के जो वह डगमगाती चाल ।
थांबें कभी जसोदा कभी नन्द लें संभाल ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।१६।।

पहने झगा(३) गले में जो वह दखिनी चीर का ।
गहने में भर रहा गोया लड़का अमीर का ।।
जाता था होश देख के शाहो वजीर का ।
मैं किस तरह कहूं इसे छोरा अहीर का ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।१७।।

---

[५] समृद्ध

पाठान्तर—(१) क़ा० या बालकों में इस तरह (१) क़ा० श०, आ० निहाल (२) श० झंडले (३) का०; जा० जगा(४) का० श० असीर

जब पांवों चलने लागे बिहारी न किशोर ।
माखन उचक्के ठहरे, मलाई दही के चोर ॥
मुंह हाथ दूध से भरे कपड़े भी शोर-बोर ।
डाला तमाम ब्रज की गलियों में अपना शोर ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ॥
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥१८॥

करने लगे यह धूम, जो गिरधारी(१) नन्द लाल ।
इक आप और दूसरे साथ उनके ग्वाल बाल(२) ॥
माखन दही चुराने लगे सबके देख भाल ।
दी अपनी दधि की चोरी की घर घर में धूम डाल ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥१९॥

थे घर जो(३) ग्वालिनों के लगे घर से जा-बजा(४) ।
जिस घर को ख़ाली देखा उसी घर में जा फिरा ॥
माखन मलाई, दूध, जो पाया सो खा लिया ।
कुछ खाया, कुछ ख़राब किया, कुछ गिरा दिया ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ॥
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥२०॥

कोठी में होवे फिर तो उसी को ढंढोरना ।
गोली में हो तो उसमें भी जा मुंह को बोरना ॥
ऊंचा हो तो भी कांधे पै चढ़ कर न छोड़ना ।
पहुंचा न हाथ तो उसे मुरली से फोड़ना ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥२१॥

गर चोरी करते आ गई ग्वालिन कोई वहां ।
और उसने आ पकड़ लिया तो उससे बोले हां ॥
मैं तो तेरे दही की उड़ाता था मक्खियां ।
खाता नहीं मैं उसकी निकाले था चूंटियां ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूँ मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥

पाठान्तर--(१) क़ा० करधारी (२) क़ा० श० आ० ग्वाल पाल (३) जा० वो (४) जा० जाबेजा

गर मारने को हाथ उठाती कोई ज़रा ।
तो उसकी अंगिया फाड़ते घूसे लगा लगा ।।
चिल्लाते गाली देते, मचल जाते जा बजा ।
हर तरह वां से भाग निकलते उड़ा छुड़ा ।।
ऐसा था वांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।२३।।

ग़ुस्से मैं कोई हाथ पकड़ती जो आन कर ।
तो उसको वह सरूप दिखाते थे मुरलीधर ।।
जो आपी लाके धरती वह माखन कटोरी भर ।
ग़ुस्सा वह उनका आन में जाता वहीं उतर ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।२४।।

उनको तो देख ग्वालिनें जी जान पाती थीं ।
घर में इसी बहाने से उनको बुलाती थीं ।।
ज़ाहिर में उनके हाथ से वह ग़ुल मचाती थीं ।
पर्दे में सब वह किशन के वलिहारी जाती थीं ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।२५।।

कहतीं थीं दिल में दूध जो अब हम छिपाऐंगे ।
श्रीकिशन इसी बहाने हमें मुंह दिखाऐंगे ।।
और जो हमारे घर में यह माखन न पाऐंगे ।
तो उनको क्या ग़रज़ है यह काहे को आऐंगे ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।२६।।

सब मिल जसोदा पास यह कहती थी आके बीर ।
अब तो तुम्हारा कान्ह हुआ है बड़ा शरीर ।।
देता है हमको गालियां फिर(१) फाड़ता है चीर ।
छोड़े दही न दूध, न माखन, मही न खीर ।।
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ।।२७।।

पाठान्तर—(१) क़ा० श० और

माता जसोदा उनकी बहुत करती मिनतियां ।
और कान्ह को डराती उठा बन की सांटियां ॥
जब कान्ह जी जसोदा से करते यही बयां ।
तुम सच न जानो माता, यह सारी हैं झूटियां ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥२८॥

माता कभी यह मेरी छुंगलिया छुपाती हैं ।
जाता हूं राह में तो मुझे छेड़ जाती हैं ॥
आप ही मुझे रुठाती हैं आपी मनाती हैं ।
मारो इन्हें यह मुझको बहुत सा सताती हैं ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥२९॥

माता कभी यह मुझको पकड़ कर ले जाती है ।
गाने में अपने साथ मुझे भी गवाती हैं ॥
सब(१) नाचती हैं आप मुझे भी नचाती हैं ।
आप ही तुम्हारे पास यह फ़रयादी[६] आती हैं ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥३०॥

एक रोज़ मुंह में कान्ह ने माखन झुका दिया ।
पूछा जसोदा ने तो वहीं मुंह बना दिया ॥
मुंह खोल तीन लोक का आलम दिखा दिया ।
एक आन में दिखा दिया और फिर भुला दिया ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥३१॥

थे कान्ह जी तो नंद जसोदा के घर के माह ।
मोहन नवल किशोर की थी सबके दिल में चाह ॥
उनको जो देखता था सो कहता था वाह-वाह ।
ऐसा तो बालपन न हुआ है किसी का आह ॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन ।
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन ॥३२॥

पाठान्तर—(१) जा० जब

[६] गुहार लेकर

सब मिलके यारो किशन मुरारी की बोलो जै।
गोबिन्द छैल कुंज बिहारी की बोलो जै॥
दधिचोर गोपी नाथ, बिहारी की बोलो जै।
तुम भी "नज़ीर" किशन बिहारी की बोलो जै॥
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन॥
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन॥३३॥

बाँसरी

जब मुरलीधर ने मुरली को अपनी अधर धरी।
क्या-क्या प्रेम प्रीति(१) भरी इसमें धुन भरी॥
लै उसमें राधे-राधे की हर दम भरी खरी।
लहराई धुन जो उसकी इधर और उधर ज़री(२)॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी॥१॥

कितने तो उसकी सुनने से धुन हो गए धनी।
कितनों की सुध बिसर गई जिस दम वह धुन सुनी॥
कितनों के मन से कल गई और व्याकुली चुनी।
क्या नर से लेके नारियां, क्या कूढ़ क्या गुनी॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी॥२॥

जिस आन कान्ह जी को वह बंसी बजावनी।
जिस कान में वह आवनी(३) वां सुध भुलावनी॥
हर मन की होके मोहनी और चित लुभावनी।
निकली जहां धुन, उसकी वह मीठी सुहावनी॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी॥३॥

पाठान्तर—(१) श० सैत (२) क़ा० डरी (३) का० श० आवती, भुलावती

जिस दिन से अपनी बंशी वह श्रीकिशन ने सजी(१) ।
उस सांवरे बदन पे निपट आन कर फबी(२) ॥
नर(३) ने भुलाया आपको, नारी ने सुध तजी ।
उनकी उधर से आके वह बंसी जिधर बजी ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी ॥४॥

ग्वालों में नंदलाल बजाते वह जिस घड़ी ।
गौऐं धुन उसकी सुनने को रह जातीं सब खड़ी ॥
गलियों में जब बजाते तो वह उसकी धुन बड़ी ।
ले ले के इतनी(४) लहर जहां कान में पड़ी ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी ॥५॥

बंसी को मुरलीधर जी बजाते(५) गए जिधर ।
फैली(६) धुन उसकी रोज़(७) हर एक दिल में कर असर ॥
सुनते ही उसकी धुन की हलावत[1] इधर उधर ।
मुंह चंग और नै की धुनें दिल से भूल कर ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी ॥६॥

बन में अगर बजाते तो वां(८) थी यह उसकी चाह ।
करती धुन उसकी पंछी बटोही के दिल में राह ॥
बस्ती में जो बजाते तो क्या शाम(९) क्या पगाह ।
पड़ते(१०) ही धुन वह कान में बलिहारी होके वाह(११) ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी ॥७॥

पाठान्तर—(१) जा० आ० राजी (२) श० आ० सजी (३) का० मुरली (४) का० आ० श० इतने (५) का० बजाने (६) क़ा० पहले (७) क़ा० जा० ज़ोर (८) क़ा० आ० श० मी (९) जा० श्याम वा (१०) जा० पड़ती (११) क़ा० जा० चाह

१. मिठास

कितने तो उसकी धुन के लिए रहते बेक़रार ।
कितने लगाए कान उधर रखते बार-बार ॥
कितने खड़े हो राह में कर रहते इन्तिज़ार ।
आए जिधर बजाते हुए श्याम(१२) जी मुरार ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी ॥८॥

मोहन की बांसुरी के मैं क्या क्या कहूं जतन ।
लय उसकी मन की मोहनी धुन उसकी चित हरन ॥
उस बांसुरी का आन के जिस जा हुआ बजन ।
क्या जल पवन "नज़ीर" पखेरू व क्या हिरन ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरी-हरी ।
ऐसी बजाई किशन कन्हैया ने बांसरी ॥९॥

खेल कूद कन्हैया जी का

(कालिय दमन)

तारीफ़ करूं मैं अब क्या क्या उस मुरली अधर बजैया की ।
नित सेवा कुंज(१) फिरैया की और बन बन गऊ चरैया की ॥
गोपाल बिहारी बनवारी दुख हरना(२) मेहर करैया की ॥
गिरधारी सुन्दर श्याम बरन और हलधर जू(३) के भैया की ॥
यह लीला है उस नंद ललन, मनमोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो, डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ॥१॥

एक रोज़ ख़ुशी से गेंद तड़ी(४) की, मोहन जमुना तीर गए ।
वां खेलन लागे हंस-हंस के, यह कहकर ग्वाल और बालन से ॥
जो गेंद पड़े(५) जा जमना में फिर जाकर लावे जो फेंकें ।
वह आपी अन्तरजामी थे क्या उनका भेद कोई पावे ॥
यह लीला है उस नंद ललन, मनमोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ॥२॥

पाठान्तर—(१२) क़ा० आते, का० स्याम (१) श० आ० गुंज (२) श० का० आ० भरना
(३) श० आ० पन्दड़ (४) श० आ० तड़ी की (५) श० आ० क़ा० गेंद तड़ी

वां किशन मदन मनमोहन ने सब ग्वालन से यह बात कही ।
और आपही से झट(६) गेंद उठा उस काली दह में डाल दई ॥
फिर आपही झट(७) से कूद पड़े और जमुना जी में डुबकी ली(८) ।
सब ग्वाल सखा हैरान रहे, पर भेद न समझे एक रई(९) ॥
यह लीला है उस नंद ललन, मनमोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ॥३॥

यह बात सुनी ब्रज बासिन ने, तब घर घर इसकी धूम मची ।
नंद और जसोदा आ पहुंचे(१०), सुध भूल के(११) अपने तत मन की ॥
आ जमुना पर ग़ुल शोर हुआ और ठठ बंधे(१२) और भीड़ लगी ।
कोई आंसू डाले हाथ मले, पर भेद न जाने कोई भी ॥
यह लीला है उस नंद ललन, मन मोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो जय बोलो किशन कन्हैया की ॥४॥

जिस दह में कूदे मन मोहन, वां आन छुपा था एक काली ।
सर पांव से उनके आ लिपटा, उस दह के भीतर देखते ही ॥
फन मारे कई और ज़ोर किये और पहरों तक वां कुश्ती की ।
फुंकारें ली(१३) बल तेज किये, पर किशन रहे वां हंसते ही ॥
यह लीला है उस नंद ललन, मन मोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ॥५॥

जब काली ने सो पेच किये फिर एक कला वां श्याम ने की ।
इस तौर बढ़ाया तन अपना जो उसका निकसन लागा जी ॥
फिर नाथ लिया उस काली को एक पल भर भी(१४) ना देर लगी ।
वह हार गया(१५) और स्तुति की, हर नागिन भी फिर पांव पड़ी ॥
यह लीला है उस नंद ललन, मन मोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ॥६॥

पाठान्तर—(६) का० छप (७) क़ा० छप (८) क़ा० की (९) आ० रत्ती (१०) आ० क़ा० श० पहुंची (११) क़ा जा० भूल गई (१२) क़ा० बंधी (१३) क़ा० फुंकारें कीं (१४) जा० में (१५) श० आ० वार किया

उस दह् में सुन्दर श्याम बरन उस काली को जब नाथ चुके ।
ले नाथ को उसकी(१६) हाथ अपने, हर फन के ऊपर निरत गए ।।
कर अपने बस में काली(१७) को मुसकाने मुरली अधर धरे ।
जब बाहर आये मनमोहन, सब ख़ुश हो जय जय बोल उठे ।।
यह लीला है उस नंद ललन, मन मोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ।।७।।

थे जमुना पर उस वक़्त खड़े, वां जितने आकर नर नारी ।
देख उनको सब ख़ुश हाल हुए, जब बाहर निकले बनवारी ।।
दुख चिन्ता मन से दूर हुए आनन्द की आई फिर बारी ।
सब दर्शन पाकर शाद हुए और बोले जय जय बलिहारी ।।
यह लीला है उस नंद ललन मन मोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो जय बोलो किशन कन्हैया की ।।८।।

नंद और जसोदा के मन में, सुध भूली बिसरी फिर आई ।
सुख चैन हुए दुख भूल गए(१८) कुछ दान और पुन की ठहराई ।।
सब ब्रज बासिन के हिरदै में आनन्द ख़ुशी उस दम छाई ।
उस रोज उन्होंने यह भी "नज़ीर" एक लीला अपनी दिखलाई ।।
यह लीला है उस नंद ललन मन मोहन जसुमत छैया की ।
रख ध्यान सुनो डंडौत करो, जय बोलो किशन कन्हैया की ।।९।।

पाठान्तर—(१६) श० आ० उसके (१७) क़ा० काले (१८) क़ा० गह भूल गई

कन्हैया जी की रास

क्या आज रात फ़रहतो[1] इश्रत[2] असास है ।
हर गुल बदन का रंगींओज़री[3] लिबास है ।।
महबूब दिलबरों का हुजूम आस पास है ।
बज़्मेतरब[4] है ऐश है फूलों की बास है ।।
हर आन गोपियों का यही मुख विलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।१।।

बिखरे पड़े हैं फ़र्श पे मुक़्क़ैश और ज़री ।
बजते हैं ताल घुंघरुओं मरदंग खंजरी ।।
सखियाँ फिरें हैं ऐसी कि जूं हूर और परी ।
सुन सुन के उस हुजूम में मोहन की बांसरी ।।
हर आन गोपियों का यही मुख विलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।२।।

आए हैं धूम से जो तमाशे को गुल बदन ।
गोया कि खिल रहे हैं गुलों के चमन-चमन ।।
करते हैं नृत्य(१) कुंज बिहारी व सद बरन ।
और घुंघरुओं की सुन के सदाएँ छनन छनन ।।
हर आन गोपियों का यही मुख विलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।३।।

पहुंचे हैं आस्मां तईं मरदंग की गमक(२) ।
आवाज़ घुंघरुओं की क़यामत झनक झनक ।।
करती है मस्त दिल को मुकुट की हर एक झलक ।
ऐसा समां बंधा है कि हर दम ललक ललक ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।४।।

पाठान्तर—(१) जा० तुरत (२) जा० कमक

[1] आनन्द [2] प्रसन्नता [3] भड़कीला और सुनहरा [4] खुशी की महफ़िल

हलक़ा बनाके किशन जो नाचे हैं हाथ जोड़ ।
फिरते हैं इस मज़े से कि लेते हैं दिल मरोड़(३) ।।
आकर किसी को पकड़े हैं, दे हैं किसी को छोड़ ।
यह देख देख किशन का(४) आपस में जोड़ जोड़ ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।५।।

नाचे हैं इस बहार से बन ठन के नंद लाल ।
सर पर मुकुट बिराजे है, पोशाक तन में लाल ।।
हंसते हैं छेड़ते हैं हर एक को दिखा जमाल ।
सखियों के साथ देख के यह कान्ह जी का हाल ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।६।।

है रूप किशन जी का जो देखो अजब(५) अनूप ।
और उनके साथ चमके है सब गोपियों का रूप ।।
महताबियां छुटें हैं गोया खिल रही है धूप ।
इस रोशनी में देख के वह रूप और सरूप ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।७।।

हंसती हुई जो फिरती हैं साथ उनके गोपियां ।
हैं राधा उनमें ऐसी कि तारों में चन्द्रमा ।।
करती हैं कृष्ण जी से हर एक आन, आन बां ।
आपस में उनके रम्ज़ोइशारात[५] का करके ध्यां ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।८।।

पाठान्तर—(३) जा० आ० मड़ोड़ (४) आ० किसी का (५) आ० अजीब

[५] रहस्य और संकेत

यूं यक तरफ़ ख़ुशी से जो करते हैं नृत्य कान्ह ।
और यक तरफ़ को राधिका जी बा हज़ार शान ।।
आपस में गोपियों के खुले हैं निशान बान ।
दिल से पसन्द करके उस अन्दाज का समान ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।९।।

गर मान-लीला देखो तो दिल से है पुर बहार ।
और राधे जी का रूठना और किशन की पुकार ।।
बाहम कब्त[६] का पढ़ना व अन्दोहे बे शुमार ।
इस हिज्र, इस फ़िराक़ पे, सौ जी से हो निसार ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।१०।।

लीला यहां तलक हैं कहां तक लूं उनका नाम ।
करते हैं किशन राधे बहम उनका इख़्तिताम[७] ।।
दर्शन उन्होंके देख के हैं मस्त ख़ासो आम ।
दंडौत करके बादएफ़र्हत[८] के पी के जाम ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।११।।

इस शहर में 'नज़ीर' जो बेकस ग़रीब है ।
रहता है मस्त हाल में अपने बग़ैर मै ।।
शब को गया था रास में कुछ करके राह तै ।
जाकर जो देखता है तो वां सच है, करके जै ।।
हर आन गोपियों का यही मुख बिलास है ।
देखो बहारें आज कन्हैया की रास है ।।१२।।

---

[६] तिरस्कार भरी शिकायत [७] समाप्ति [८] आनन्द-मदिरा

ब्याह कन्हैया का

जहां में जिस वक़्त किशन जी की, अवस्था सुध बुध की यारो आई ।
संभाला होश और हुए सियाने, वह बालपन की अदा भुलाई ॥
हुआ(१) क़द उनका कुछ इस तरह से, कि क़ुमरी जिसकी फ़िदा कहाई ।
निकालीं तर्ज़ें फिर और ही कुछ, बदन की सज धज नई बनाई ॥
हुए(२) ख़ुशी नंद अपने मन में(३) बहुत हुई ख़ुश जशोदा माई ॥१॥

जो सुध संभाली तो किशन क्या क्या, लगे फिर अपनी छबें(४) दिखाने ।
जगह-जगह पर लगे ठिठकने(५), अदा से बंसी लगे बजाने ॥
वह बिछड़ी गौओं को साथ लेकर, लगे ख़ुशी(६) से बनों में जाने ।
जो देखा नंद और जसोदा ने यह कि श्याम अब तो हुए सियाने ॥
यह ठहरी दोनों के मन में आकर करें अब उनकी कहीं सगाई ॥२॥

फिर आप ही वह यह मन में सोचे कि इनकी अब ऐसी जा हो निस्बत[1] ।
बड़ा हो घर दर, बड़ें हों सामां, बहुत हो दौलत, बहुत हो हश्मत[2] ॥
हमारे(७) गोकुल में है जो ख़ूबी, इसी तरह की हो उनकी हुर्मत[3] ।
वह लड़की जिससे कि हो सगाई, सो वह भी ऐसी हो खूबसूरत ॥
हैं जैसे सुन्दर किशोर मोहन(८) नवल दुलारे, कुंवर कन्हाई ॥३॥

कई जो नारी वह बूढ़ियां थीं, जसोदा जी ने उन्हें बुलाया ।
किसी को ईधर किसी को उधर सगाई ढूंढन कहीं भिजाया ॥
जो भेद था अपने मन के भीतर, सो उन सभों के तईं जताया ।
फिरीं बहुत ढूंढ़ती वह नारी यह था जसोदा ने जो सुनाया ॥
न देखा वैसा घर इक उन्होंने न वैसी कोई दुलारी पाई ॥४॥

पाठान्तर—(१) बढ़ा (२) जा० हुई (३) जा० के जो मन में (४) जा० फबन (५) क़ा० श० भटकने (६) क़ा० खुशी से (७) क़ा० जा० हमारी (८) आ० श० जैसे किशोर मोहन

[1] सम्बन्ध, रिश्ता [2] मान सम्मान [3] सम्मान

वह नारियां जब यूंही फिर आई तो बोली यूं और एक नारी ।
है यह जो बरसाना इसमें हैगी बृषभानु की नवल दुलारी ।।
है राधिका नाम उसका कहते बहुत है सुन्दर निपट पियारी ।
कही यह मैंने तो बात तुमसे अब आगे मर्ज़ी जो हो तुम्हारी ।।
करो सगाई लगन की उस जा कि इसमें हैगी बहुत भलाई ।।५।।

यह सुन जसोदा ने जब खुशी हो उधर को नारी कई पठाई ।
चलीं वह गोकुल से दिल में खुश हो वहीं वह बरसाने बीच आई ।।
जहां वह घर कि बयां किया था वह नारियां सब उधर को धाई ।
उन्होंने आदर बहुत सा करके मन्दिर के भीतर वह सब बिठाई ।।
जो बैठीं यह तो लगीं सुनाने, इधर उधर की बहुत बड़ाई ।।६।।

जो कह चुकीं यह इधर उधर की तो फिर सगाई की बात खोली ।
बड़े हो तुम भी, बड़े हैं वह भी, यह बात होवे तो ख़ूब होगी ।।
है जैसा सुन्दर उन्होंका लड़का, तुम्हारी सुन्दर है वैसी लड़की ।
इधर भी दौलत उधर भी हश्मत, खुशी व खूबी तरह तरह की ।।
उन्होंने अपनी बहुत जमाई, पर उनके दिल में न कुछ समाई ।।७।।

जो राधिका की वह मां थीं कीरत यह सुनके बातें वह बोलीं हँस कर ।
वह ऐसे क्या हैं जो अब हमारे जस(९) और दौलत के हों बराबर ।।
हैं जैसे वह तो सो ऐसे हैंगे हमारे घर के तो कितने चाकर ।
हम अपनी लड़की उन्हें न देंगे, वह ऐसा क्या घर वह ऐसा क्या बर ।।
करो हमारे न घर में तुम यां, अब इस सगाई की तब कहाई ।।८।।

सुना जब उन नारियों ने यह तो चलीं इधर से वह शर्म खायीं ।
बहुत ही मन में हो सुस्त अपने, वह फिरके गोकुल के बीच आई ।।
सुनी जो बातें थी वां उन्होंने, वह सब जसोदा को आ सुनाई ।
यह बातें सुनकर जसोदा मन में बहुत ख़फ़ा हो बहुत लजाई ।।
सिवाय ख़फ़गी[४] के आगे कुछ वां, जसोदा माई से बन न आई ।।९।।

पाठान्तर—(९) क़ा० हश,

४. अप्रसन्नता

जब उस सगाई न होने से वां बुरा जसोदा ने मन में माना ।
तो भेद उनका कला से अपनी यह बिन जताये(१०) ही हरि ने जाना ।।
कहा यह मन में कि कोई लीला को चाहिए अब उधर दिखाना ।
बना के मोहन सरूप नित प्रति ही ख़ूब बरसाने बीच जाना ।।
गए वही हरि फिर उस मकां में और अपनी बंसी वह जा बजाई ।।१०।।

बजी जो मोहन की बांसुरी वां तो धुन कुछ इसकी अजब ही निकली ।
पड़ी वह जिस-जिस के कान में आ, उसे सुध अपने बदन की बिसरी ।।
भुलाई बंसी ने कुछ तो सुध-बुध, उधर झलक जो सरूप की थी ।
हर एक तरफ़ को हर एक मकां पर, झलक वह हरि की कुछ ऐसी झमकी ।।
कि जिसकी हर एक झलक के देखें, तमाम बस्ती वह जगमगाई ।।११।।

सहेलियों संग राधिका जी, कहीं उधर को जो आन निकली ।
सरूप देखा वह किशन जी का, उधर से उनकी सुनी वह मुरली ।।
जूं ही वहाँ(११) राधिका जी आई, सो ऐसी मोहन ने मोहनी की ।
दिखाया अपना सरूप ऐसा, कि उनकी सूरत को देखते ही ।।
इधर तो राधा के होश खोये, हर एक सहेली की सुध भुलाई ।।१२।।

दिखाके रूप और बजा के मुरली, फिर आये गोकुल में नंद लाला ।
फिर एक कला की वह कितने दिन में, कि राधा गोरी को मांदा डाला ।।
बहुत दवाऐं उन्होंने की वां, पै फ़ायदे ने न सर निकाला ।
फिर आप मोहन ने बैद वनकर, दवा की थैली को वां संभाला ।।
पुकारे बरसाने बीच जाकर कि अच्छी करते हैं हम दवाई ।।१३।।

इधर थे हारे दवाएं करके, सुनी उन्होंने जो बात उनकी ।
बुलाके जल्दी मन्दिर के भीतर दिखाई राधा जो वह दुखी थी ।।
उन्होंने वां कुछ दवा भी दी और दिखाए कुछ छू छू(१२) मंतरे भी ।
पढ़ंत क्या थी वह एक कला थी, हुई वहीं अच्छी राधिका जी ।।
हर एक ने की वाह-वाह हर दम, और अपनी गर्दन बहुत झुकाई ।।१४।।

हुई जो चंगी वह राधिका जी, तो सब मन्दिर(१३) में ख़ुशी बिराजी ।
वह बृषभानु और सभी कुटुम के, यह बात मन बीच आके ठहरी ।।
कि राधिका की सगाई इनसे करें तो हैगी(१४) यह बात अच्छी ।
जो रस्म होती सगाई की है, वह सब उन्होंने ख़ुशी से कर दी ।।
"नज़ीर" कहते हैं इस तरह से हुई है श्री किशन की सगाई ।।१५।।

पाठान्तर--(१०) क़ा० श० आ० है (११) क़ा० बां (१२) क़ा० छू छू के (१३) क़ा० जा० जब (१४) जा० श० होगी

दसम कथा

(रुकिमनी का ब्याह)

ऐ दोस्तो ! यह हाल सुनो ध्यान रख ज़रा ।
और हर तरफ़ से ध्यान के तईं(१) टुक इधर को ला ॥
चर्चा है(२) इसका वास्ते सबके तईं भला ।
कहता हूं मैं यह अगले ज़माने का माजरा[1] ॥
है नाम इस बयान का यारो दसम कथा ॥१॥

सुकदेव ने(३) कथा यह पहले परीक्षत से है कही ।
उसने सुनी तो उसका हुआ दिल बहुत ख़ुशी ॥
फिर भीकम एक राजा मन्दिर की थी मन्दिरी(४) ।
थे पांच बेटे उसके बहुत सुन्दर और बली ॥
घर बार उसका दौलतोहश्मत[2] से भर रहा ॥२॥

बेटा बड़ा था उसका सो उसका रुकम था नाम ।
और रुक्मनी(५) है बेटी बहुत ख़ूब ख़ुश ख़राम ॥
रूप और सरूप उसमें थे सर पांव से तमाम ।
सखियों सहेलियों में वह रहती थीं ख़ुश ख़राम ॥
गहना लिबास तन पै बहुत था(६) झमक रहा ॥३॥

नारद मुनि इक दिन आये जहां पर थी रुक्मनी ।
और उससे बात उन्होंने वह श्री किशन की कही ॥
लीला सुनाई वह सभी रूप और सरूप की ।
जब रुक्मनी ने ख़ूबी वह श्रीकिशन की सुनी ॥
सुनते ही उनकी हो गई जी जान से फ़िदा ॥४॥

पाठान्तर—(१) श० आ० बहुत (२) जो चाहे उसका वास्ते सबके तईं भला (३) श० आ० का० कथा यह (४) का० श० आ० जो मन्दिरी थी (५) श० आ० थी (६) क़ा० श० आ० रहा था

[1] कथा, कहानी, क़िस्सा [2] धन-सम्मान

ठहरी यह रुक्मनी के वहीं दिल में आन कर ।
बरनी जभी मैं जाऊं मिले जब वह मुझको बर ॥
दिन रात ध्यान अपना लगी रखने वह उधर ।
आंखों को अपनी करने लगी आंसुओं से तर ॥
बेचैन दिल में रहने लगी सब से हो ख़फ़ा ॥५॥

छुपती नहीं छुपाये से सूरत जो चाह की ।
सखियां सहेलियां जो थीं और लड़कियां सभी ॥
देखी जो रुक्मनी की उन्होंने यह(१) बेकली ।
जाना कि रुक्मनी का लगा साथ हरि के जी ॥
कहने लगीं उन्हीं की वह बातें बना बना ॥६॥

बोलीं(२) वह सब कृश्न तो अवतार हैं बड़े ।
जो ख़ूबियां हैं उनमें कहां तक कोई कहे ॥
रूप और सरूप उनके की क्या क्या सिफ़त[3] करे ।
लीला हुई हैं उनसे जो हों कब वह और से ॥
मा देवकी है उनकी वह वसुदेव जी पिता ॥७॥

जन्मे(३) वह मधुपुरी(४) में तो जब आधी रात थी ।
बसुदेव उनको ले चले गोकुल उसी घड़ी ॥
जमुना ने उनके छू के चरन जल्द राह दी ।
पहुंचे जो घर में नंद जसोदा के कान्ह जी ॥
सब नेगियों ने नेग बधाई का वां लिया ॥८॥

बसुदेव जी ने भेजा गरग(१) पण्डिता को वां ।
जो नाम उनका जाके वहां पर करे बयां(२) ॥
सुभ(३) नाम जो कि होवे बयां कर उसे अयां ।
गोकुल में आ मिसर ने बहुत होके शादमां[4] ॥
उनका श्रीकृष्ण नाम बहुत सोध कर रखा ॥९॥

पाठान्तर—(१) क़ा० वह (२) क़ा०जा० बोले (३) जा० का० जन्मी (४) क़ा० श० आ० बधपुरी
(१) क़ा० श० आ० करक (२) श० आ० कर बहुत ध्यां (३) क़ा० सुमिता

३. प्रशंसा ४. प्रसन्न

थे बालपन में झूलते हर दम कृष्ण जी ।
जब कंस ने यह पूतना भेजी कि लेवे जी ॥
उसने जो छाती ज़हर भरी उनके मुंह में दी ।
मुंह लगते ही उन्होंने वह जान उसकी खेंच ली ॥
उसके पिरान कढ़(१) गए और कुछ न बस चला ॥१०॥

कागासुर आया दुष्ट लिया उसको मार भी ।
फिर तृनावर्त्त की भी हवा दूर की सभी ॥
सकटासुर आया उसकी भी गाड़ी उलट ही दी ।
आया सिरीधर उसकी भी मट्टी ख़राब की ॥
जितने वह दुष्ट आये सभों को उलट दिया ॥११॥

फिर पांव चलने लगे जो धरती पै नंदलाल ।
आये वह जिनकी गोद में उनको किया निहाल ॥
स्याने हुए तो साथ लिये अपने ग्वाल बाल ।
मुरली की धुन सुनाके किया सबका जो निढ़ाल ॥
गौएं चराई बन में वह बंसी बजा-बजा ॥१२॥

धमका के ग्वालिनों से लिये दूध और दही ।
खाने खिलाए उनको जो थे साथ में सभी ॥
जब ग्वालिनों ने आके जसोदा से यह कही ।
झिड़का उन्होंने सांटी(२) उठाकर जो उस घड़ी ॥
त्रिलोक खोल मुंह उन्हें हरि ने दिखा दिया ॥१३॥

जमला व अर्जुन और वह दो देवता जो थे ।
दो ताड़ बन गए थे किसी के(३) सराप से ॥
मुद्दत तलक वह बन में यूंही थे खड़े हुए ।
लीला से अपनी कृश्न(४) ने उस बन में आन के ॥
वैसा ही देवता उन्हें एक पल में कर दिया ॥१४॥

पाठान्तर—(१) क़ा० गढ़ (२) क़ा० श० आ० सांटे (३) जा० किसी की (४) क़ा० श० कंस

राछस बहुत जो किशन पै आने लगे वहां ।
नंद और जसोदा की लगी देख उनसे जाने जां ॥
लेकर कुटुम सब अपना जो थे ख़ुर्द[5] और कलां[6] ।
आकर वह वृन्दावन के लगे रहने दरमियां ॥
गोकुल का बास(१) सवने उसी दिन से फिर तजा ॥१५॥

ले ग्वाल बाल जाने लगे श्याम मन हरन ।
गौऐं लगे चराने जहां है यह गोवरधन ॥
वां भी बघासुर आया बकासुर भी बगुला(२) बन ।
मारा और उसकी चोंच को चीरा समेत तन ॥
आया अघासुर(३) उसके भी सर को उड़ा दिया ॥१६॥

दिखलाई अपनी हरि ने जो लीला वह बछ हरन ।
देख उसको सबने चूम लिये कृश्न के चरन ॥
ढिग राक्षस आया फिर जो बनाकर वह मक्रोफ़न[7] ।
मारा उसे भी हरि ने जहां है यह ताल बन ॥
काली(४) को दह में नाथ किया नीर निरमला(५) ॥१७॥

गौऐं खड़े चराते थे बन में जो श्याम जी ।
उस(६) बन में एक दिन जूं ही आग आन कर लगी ॥
सव ग्वाल बाल छक(७) रहे गौऐं खड़ी सभी ।
लीला से वां भी हरि ने वह देख उनकी बेबसी ॥
उस आग से सभों को लिया आन में बचा ॥१८॥

फिर की जो लीला चीर हरन हरि ने ख़ूब तर ।
सुरपति ने फिर वह कोप किया उनपे आन कर ॥
पर्वत(८) को वां उठा लिया बंसी ऊपर अधर ।
फिर सर्द समय(९) में श्याम ने ली नारियां सुन्दर ॥
मुरली(१०) बजा के नृत्य(११) किया रास को बना ॥१९॥

पाठान्तर—(१) क़ा० पास (२) क़ा० श० आ० निकला (३) क़ा० श० लखासुर (४) का० काले (५) क़ा० सब्ज नर (६) जा० इस (७) श० आ० छकरी, क़ा० झंकरी (८) सरपत (९) श० आ० सर्द समीं, क़ा० सरदिन सीमीं (१०) क़ा० जा० तुरत (११) क़ा० श० आ० संघ

[5] छोटे [6] बड़े [7] धोखा और चतुराई

मारा वह सांप पांव पे लिपटा जो नंद के ।
लीं गोपियां छुड़ा वहीं फिर शंख(१) चूड़(२) से ॥
हरका सुर(३) और केशी(४) व भौमासुर आ गए ।
अपने से मक्र हरि से उन्होंने बहुत किये ॥
हरि ने उन्हें भी मार के भू(५) पर दिया गिरा ॥२०॥

एक रोज़ वृन्दावन से ले आये उन्हें जो वां ।
चलने को साथ उनके हटीं सब वह गोपियां ॥
जमना में फिर नहाये जो एक रोज़ शादमां[८] ।
हरि ने दिखाये वां उन्हें लीला से यह निशां ॥
जो हरि ही हरि दिखाई दिये उनको जा बजा ॥२१॥

जब वृन्दावन में आये तो धोबी को कंस के ।
मारा वहीं और उसके लिये चीर जितने थे ॥
सूजी से ले लिबास[९] दिये फिर बहुत उसे ।
चन्दन जो कुब्जा लाई तो ख़ुश होके श्याम(६) ने ॥
सब खो दिया जहां तईं कुबड़ापन(७) उसका था ॥२२॥

डयोढ़ी पे आये जब तो वह तोड़ा धनुष के तईं ।
रंग भूमि में गिरा दिया परबल को बर जमीं ॥
दर्शन दिये वह राजा जो क़ैदी थे सहमगी(८) ।
फिर कंस के भी केस पकड़ खींच कर वहीं ॥
सर उसका एक इशारे में तन से जुदा किया ॥२३॥

फिर आये वां जहां थे वह बसुदेव देवकी ।
चरनों पै सीस रख के बहुत सी असीस ली ॥
यह बातें हरि की सुनके वहां रुक्मनी ने भी ।
चाहा यही कि देखूं मैं सूरत कृश्न की ॥
बेताबोबेक़रार[१०] लगी रहने सुख गवा ॥२४॥

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० चूर (२) क़ा० श० आ० सरकासुर (३) क़ा० श० आ० कवसी (४) क़ा० जा० भवन (५) क़ा० जा० भवन (६) क़ा० स्याम (७) क़ा० तन (८) क़ा० समगीन

८. प्रसन्न ९. वस्त्र १०. बेचैन

उसको यह बातें कृश्न की ख़ुश आई थीं सभी ।
सुनती वह साथियों से उन्हीं को घड़ी घड़ी ॥
मां बाप रुक्मनी के भी और चारों भाई भी ।
बर(१) रुक्मनी के हों वही थे(२) चाहते(३) यही ॥
पर रुक्म जो बड़ा था सो पसंद उसको यह न था ॥२५॥

रखता(४) था नाम उसका तो जदु बंस(५) है जनम ।
कांधे पे उसके कामरी रहती है दम ब दम ॥
गौवें चराता फिरता है बन बन में रख क़दम ।
दौलत में और ज़ात में उससे बड़े हैं हम ॥
शिशुपाल चन्देरी का जो बर हो तो है भला ॥२६॥

यह बातें वां रुकम से जो सुनती थी रुक्मनी ।
बेकल बहुत वह(६) होती थी और दिल में कुढ़ती थी ॥
जब बेकली बहुत हुई और रह सका न जी ।
एक चिट्ठी अपने हाल की हरि के तईं लिखी ॥
बाम्हन(७) के हाथ द्वारिका में दी वहीं भिजा ॥२७॥

बाम्हन(८) जो हरि की ड्योढ़ी पे आ पहुंचा राह से ।
देखा तो वहां(९) है चेरी औ चाकर बहुत खड़े ॥
जाने में थे मन्दिर के जो दरबान रोकते ।
सुनकर ख़बर यह हरि ने बुलाया वहीं उसे ॥
परनाम करके ऊंचे मकां पर दिया बिठा(१०) ॥२८॥

बाम्हन(११) की विनती करके लगे कहने किशन जी ।
तुमने हमारे हाल पै कृपा बड़ी यह की ॥
उसने ज़बानी[११] कहके जो अहवाल था सभी ।
फिर रुक्मनी की चिट्ठी जो लाया सो हरि को दी ॥
हरि ने पढ़ा उसे तो यह अहवाल था लिखा(२) ॥२९॥

पाठान्तर—(१) क़ा० पर (२) क़ा० थी (३) क़ा० चाहती (४) क़ा० रखा (५) जा० उसका जदुबंस (६) श० आ० क़ा० वह बहुत (७) श० आ० क़ा० बामन (८) क़ा० श० आ० बामन (९) श० आ० देखा तो वां (१०) बिठा दिया (१) जा० कि जो अहवाल उसमें था, क़ा० तो यह बहवाल (११) क़ा० श० आ० बामन

[११] मौखिक

''ऐ ब्रजराज'' ''कृष्ण'' ''मनोहर'' मदन गोपाल ।
मैं दर्शनों की आपके मुस्ताक़[12] हूं कमाल[13] ।।
दिन रात तुमसे मिलने को रहती हूं मैं निढाल ।
दर्शन से अपने मुझको भी आकर करो निहाल ।।
सब ध्यान में तुम्हारे ही रहता है मन लगा ।।३०।।

शिशुपाल ब्याहने को मेरे अब तो आता है ।
सब राजे और साथ जरासंघ लाता है ।।
यह ग़म तो मेरे दिल को निहायत सताता है ।
इस अपनी बेबसी पै मुझे रोना आता है ।।
तुम हरि हो मेरें मन की करो दूर सब बिथा ।।३१।।

ऐ किशन जी तुम आओ कि अब वक़्त है यही ।
अपने चरन से लाज रखो मेरी इस घड़ी ।।
हरि ने वह चिट्ठी पढ़के मंगा रथ वह जगमगी ।
होकर सवार जल्द चले वां से किशन जी ।।
बाम्हन(३) भी अपने साथ वह रथ में लिया बिठा ।।३२।।

शिशुपाल इसमें आन के पहुंचा शिताब[14] वां ।
अगवानी उसकी(४) लेने को भीकम गया वो बाँ ।।
बाजे मंदीले घर में लगीं गाने नारियां ।
आंखों से रुकमनी के वह आंसू हुए रवां ।।
सुन्दरि का मुंह(५) वह आंसू के बहने से भर गया ।।३३।।

जो जो वह हरि के आने में वां देर होती थी ।
कोठे पर अपने रुकमनी वां चढ़के रोती थी ।।
तकती थी हरि की राह न खाती न सोती थी ।
बेकल की तरह फिरती थी और होश खोती थी ।।
कुछ रुकमनी को(६) रोने सिवा बन न आता था ।।३४।।

पाठान्तर—(३) श० आ० अगवानी के (४) क़ा० मठ (५) क़ा० मठ (६) श० आ० से

१२. अभिलाषो १३. अत्याधिक १४. शीघ्र

कहती थी क्यूं यह कृष्ण मुरारी ने देर की ।
मोहन नवल किशोर बिहारी ने देर की ॥
ब्रज राज, रूप, मुकुट संवारी ने देर की ।
या चाह बे असर यह हमारी ने देर की ॥
बाम्हन(७) जो मैंने भेजा था वह भी नहीं फिरा ॥३५॥

इसमें मुकन्दपुर के जो हरि आये अनक़रीब[१५] ।
झलके(८) कलस वह रथ के, हुई रोशनी अजीब ॥
ख़ुश रुकमनी का जी हुआ जूं गुल से अंदलीब[१६] ।
बोली ख़ुशी हो मन में कि, जागे मेरे नसीब[१७] ॥
बाम्हन(९) ने भी वह आने को हरि के दिया सुना ॥३६॥

बन ठन के जब ख़ुशी से(१०) वह पूजा के तईं चली ।
साथ उसके नारियां, चलीं गाती बहुत ख़ुशी ॥
सुन्दरि की जाती पांव की पायल जो बाजती ।
रूप और सरूप उसका बयां क्या करे कोई ॥
पहुंची ख़ुशी से वां जहां थी पूजने की जा ॥३७॥

जिस जिसको पूजा वां यही उसने किया बयां ।
किरपा करो जो मुझको मिलें ब्रज राज यां ॥
लेने को दर्सन(११) उसके हुई हूं मैं नीमजां[१८] ।
जल्दी मिलाओ तुम जो रहे लाज मेरी यां(१२) ॥
हर देवता से वह यही करती थी इल्तिजा ॥३८॥

जब देवी देवता की यह परिक्रमा(१३) दे चुकी ।
सुन्दरि दुलारी आगे को चल कर ठिठक रही ॥
इस वास्ते कहीं मुझे दर्शन दें किशन जी ।
तो देख वह सरूप मेरी होवे ज़िन्दगी ॥
बच जावे जी यह(१४) लाज भी मेरी रहे बजा ॥३९॥

पाठान्तर—(७) क़ा० श० आ० बामन (८) क़ा० जा० झलकी (९) क़ा० श० आ० बामन (१०)आ० से, श० वह (११) क़ा० श० आ० दर्शन, जा० दरस (१२) श० आ० हां (१३) क़ा० जब देवे देवता की वह परिगरमा (१४) क़ा० श० आ० पे

१५. समीप १६. बुलबुल १७. भाग्य १८. अर्द्धमुई

सुन्दर नवेली रूप का मैं क्या करूं बयां ।
मुख वां(१५) झमक रहा था कि जूं माह आसमां ॥
पोशाक भी बदन पै चमकती(१६) थी ज़रफ़िशां[१९] ।
सर पांव से भरी(१७) थी वह गहने(१८) के दरमियां ॥
क्या वस्फ़[२०] उसका हो सके ज़ेबोनिगार[२१](१९) का ॥४०॥

देखा जो मुकन्दपुर के(२०) लोगों ने हरि को वां ।
सब दर्शन उनके पाके हुए जी में शादमां ॥
आपस में सब वह कहते थे नर और नारियां ।
वर रुकमनी के यह हों तो हर मन को सुख हो यां ॥
हर दम इसी मुराद की मागें थे सब(२१) दुआ ॥४१॥

भीकम जो हरि के लेने को आया बहुत ख़ुशी ।
दर्शन जो हरि के पाये तो विनती बहुत सी की ॥
इतने में रुकमनी जो थी हरि के लिए खड़ी ।
दर्शन जो पाये आगया वां उसके जी में जी ॥
हरि ने पकड़ के हाथ लिया रथ में वां बिठा ॥४२॥

शिशुपाल अपने लेके कटक(२२) आ गया वहां ।
बान उसके हरि ने काट भगाया उसे निदाँ ॥
आया रुकम जो बान(२३) धनुक लेके और सनां[२२] ।
उसको भी हरि ने बांध लिया काट उसकी बाँ ॥
विनती से रुकमनी ने दिया उसका जी छुटा ॥४३॥

शिशुपाल का भी हरि ने दिया पल में गरब(२४) खो ।
जो था गुरूर उसका सो सब डाला दम में धो ॥
आया रुकम वली जो बहुत करके गरब(२५) को ।
बालों से उसके हाथ बंधे और रहा वह रो ॥
सच कहते हैं कि गरब(२६) है, जग में बहुत बुरा ॥४४॥

पाठान्तर—(१५) श० आ० यूं (१६) क़ा० जा० झमकती (१७) श० आ० भरे (१८) क़ा० कहने (१९) क़ा० श० आ० निगार (२०) क़ा० की, श० आ० से (२१) क़ा० श० आ० थीं (२२) क़ा० श० कतक (२३) क़ा० बान पे (२४) क़ा० श० आ० गरभ (२५) क़ा० गरभ (२६) क़ा० श० आ० गरभ

[१९] सुनहरी [२०] प्रशंसा [२१] सुन्दरता [२२] तीर, बरछा, भाला

जब रुकमनी से कहने लगे हंस के वां यह हरि ।
शिशुपाल को गरब(२७) ने किया सब में ख़्वारतर[२३] ।।
खोया रुकम को और जरासंघ को उधर ।
आये थे जिस गरब(२८) से वह लड़ने को अब इधर ।।
आख़िर उसी गरब(२९) ने दिया उनका सर झुका ।।४५।।

शिशुपाल और रुकम का हुआ जब यह हाल वां ।
बलदेव जी ने उनके(३०) कटक सब भगाए(३१) वां ।।
ले रुकमनी को हरि हुए फिर द्वारिकारवाँ ।
जब आन पहुंचे ख़ुश हुए सब नर(३२) व नारियां ।।
देखा जमाल उनका तो पाया बहुत भला ।।४६।।

फिर देवकी जो आई बहुत होके ख़ुश इधर ।
पानी पिया उन्होंने वहीं हरि पे वार कर ।।
सब नारियां भी आन के बैठीं इधर उधर ।
जितना सहन था घर का रहा सब वह उनसे भर ।।
शादी के बाजे बजने लगे शोरो गुल मचा ।।४७।।

सब द्वारिका में धूम यह शादी की मच गई ।
बाजे, मजीरे तबले दमामें और तुरई ।।
दर पर बरातियों की वहुत भीड़ आ लगी ।
सोभा से द्वारा पर वह बंधन बार भी बंधी ।।
पण्डित बुला सगुन से वह फेरे दिये फिरा ।।४८।।

बैठे थे द्वारका के वहां, ख़ुर्द और कबीर[२४] ।
होते थे राग रंग ख़ुशी थे जवानों पीर[२५] ।।
सामान थे हज़ारों ही शादी के दिलपज़ीर[२६] ।
जो ख़ूबियां हुई सो वह क्या क्या कहे "नज़ीर" ।।
इस ठाठ से वह ब्याह अजब कृष्ण क़ा हुआ ।।४९।।

पाठान्तर—(२७) क़ा० श० आ० गरभ (२८) क़ा० श० आ० गरभ (२९) क़ा० श० आ० गरभ (३०) क़ा० जा० उनकी (३१) क़ा० जा० भगाई (३२) क़ा० मर्द

२३. अपमानित २४. छोटे और बड़े २५. युवक और वृद्ध २६. मनोरम

हरि की तारीफ़

मैं क्या क्या वस्फ़[१] कहुं, यारो उस श्याम बरन अवतारी के।
श्रीकृष्ण, कन्हैया, मुरलीधर मनमोहन, कुंज विहारी के॥
गोपाल, मनोहर, सांवलिया, घनश्याम, अटल बनवारी के।
नंद लाल, दुलारे, सुन्दर छबि, ब्रज, चंद मुकुट झलकारी के॥
कर घूम लुटैया दधि माखन, नरछोर नवल, गिरधारी के।
बन कुंज फिरैया रास रचन, सुखदाई, कान्ह मुरारी के॥
हर आन दिखैया रूप नए, हर लीला न्यारी न्यारी के।
पत लाज रखैया दुख भंजन, हर भगती, भगता धारी(१) के॥
नित हरि भज, हरि भज रे बाबा, जो हरि से ध्यान लगाते हैं।
जो(२) हरि की आसा रखते हैं, हरि उनकी आस पुजाते(३) हैं॥१॥

जो भगती हैं सो उनको तो नित हरि का नाम(४) सुहाता है।
जिस ज्ञान में हरि से नेह बढ़े, वह ज्ञान उन्हें ख़ुश आता है॥
नित मन में हरि हरि भजते हैं, हरि भजना उनको भाता है।
सुख मन में उनके लाता है, दुख उनके जी से जाता है॥
मन उनका अपने सीने में, दिन रात भजन ठहराता है।
हरि नाम की सुमरन करते हैं, सुख चैन उन्हें दिखलाता है॥
जो ध्यान बंधा है चाहत का, वह उनका मन बहलाता है।
दिल उनका हरि हरि कहने से, हर आन नया सुख पाता॥
हरि नाम के ज़पने से मन को, ख़ुश नेह जतन से रखते हैं।
नित भगति(५) जतन में रहते हैं, और काम भजन से रखते हैं॥२॥

जो मन में अपने निश्चय कर हैं(६), द्वारे हरि के आन पड़े।
हर वक़्त मगन हर आन ख़ुशी कुछ नही मन चिन्ता लाते(७)॥
हरि नाम भजन की परवाह है, और काम उसी से हैं रखते।
है मन में हरि की याद लगी, हरि सुमिरन में खुश हैं रहते॥

पाठान्तर—(१) जा० भक्त अधारी (२) का० श० आ० वह (३) का० बुझाते (४) का० जा० श० आ० नानूं (५) जा० श० आ० का० भगता (६) क़ा० करें (७) क़ा० जा० श० आ० लाए

[१] गुण, प्रशंसा

कुछ ध्यान न ईधर ऊधर का, हरि आसा पर हैं मन धरते।
जिस काम से हरि का ध्यान रहे, हैं काम वही हर दम करते।।
कुछ आन अटक जब पड़ती है, मन बीच नहीं चिन्ता करते(८)।
नित आस लगाए रहते हैं, मन भीतर हरि की किरपा से।।
 हर कारज में हरि किरपा से, वह मन में बात निहारत हैं।
 मन मोहन अपनी किरपा से नित उनके काज संवारत हैं ।।३।।

श्री कृष्ण की जो जो किरपा हैं, कब मुझसे उनकी हो गिनती।
हैं जितनी उनकी किरपाएं, एक यह भी किरपा है उनकी ।।
मज़कूर[२] करूं जिस किरपा का, वह मैंने हैं(६) इस भांति सुनी।
जो एक बस्ती है जूनागढ़, वां रहते थे महता नरसी ।।
थी नरसी की उस नगरी में, दूकान बड़ी सर्राफे की।
व्योपार बड़ा सर्राफ़ी का था, बस्ता लेखन और वही।।
था रूप घना(१०) और फ़र्श बिछा, परतीत बहुत और साख बड़ी।
थे मिलते जुलते हर एक से और लोग थे उनसे बहुत ख़ुशी।।
 कुछ लेते थे, कुछ देते थे, और बहियां देखा करते थे।
 जो लेन देन की बातें थीं, फिर(११) उनका लेखा करते थे ।।४।।

दिन कितने में फिर नरसी का, श्री कृष्ण चरन से ध्यान लगा।
जब भगती हरि के कहलाये, सब लेखा जोखा भूल गया।।
सब काज बिसारे काम तजे हरि नांव(१२) भजन से लागा।
जा बैठे साधु और संतों में, नित सुनते रहते कृष्ण कथा ।।
था जो कुछ दुकां बीच रखा, वह दरब जमा और पूंजी का।
मद प्रेम के होकर मतवाले, सब साधों को हरि नांव दिया ।।
हो बैठे हरि के द्वारे पर सब मीत(१३) कुटुम से हाथ उठा।
सब छोड़ बखेड़े दुनियां के, नित हरि सुमरन का ध्यान लगा ।।
 हरि सुमरन से जब ध्यान लगा, फिर और किसी का ध्यान कहां।
 जब चाहत की दूकान हुई, फिर पहली वह दूकान कहां ।।५।।

पाठान्तर—(८) क़ा० भरते (६) क़ा० तैने, आसी० बिनती (१०) जा० घटा (११) श० नित (१२) क़ा० नाद (१३) क़ा० जा० मनत

[२] चर्चा, ज़िक्र, वर्णन

क्या काम किसी से उस मन को, जिस मन को हरि की आस लगी ।
फिर याद किसी की क्या उसको, जिस मन ने हरि की सुमरन की ॥
सुख चैन से बैठे हरि द्वारे(१४), सन्तोख मिला आनन्द हुई ।
व्योपार हुआ जब चाहत का, फिर कैसी लेखन और बही ॥
न(१५) कपड़े लत्ते की परवा, न चिन्ता लुटिया थाली की ।
जब मन को हरि की पीत हुई, फिर और ही कुछ तरतीब(१६) हुई ॥
धुन जितनी लेन और देन की थी, सब मन को भूली और बिसरी ।
नित ध्यान लगा हरि किरपा से, हर आन ख़ुशी और ख़ुश वक़्ती ॥
　　थी मन में हरि की पीत भरी, और थैले(१७) करके रीते(१८) थे ।
　　कुछ फ़िक्र न थी(१९), सन्देह न था, हरि नाम भरोसे जीते थे ॥६॥

नित मन में हरि की आस धरे, ख़ुश रहते थे वां वो(२०) नरसी ।
एक बेटी आलख जन्मी थी, सो दूर कहीं वह ब्याही थी ॥
और बेटी के घर जब शादी[४], वां ठहरी बालक होने की ।
तब आई ईधर उधर से सब नारियां इसके कुनबे की ॥
मिल बैठीं घर में ढोल बजा, आनन्द ख़ुशी की धूम मची ।
सब नाचें गायें आपस में, है रीत जो शादी की होती ॥
कुछ शादी की ख़ुश वक़्ती थी, कुछ सोंठ सठोरे की ठहरी ।
कुछ चमक झमक(२१) थी अबरन की कुछ ख़ूबी काजल मेंहदी की ॥
　　है रस्म यही घर बेटी के, जब बालक मुंह दिखलाता है ।
　　तब सामाँ(२२) उसकी छोछक का ननिहाल से भी कुछ जाता है ॥७॥

वां नारियां जितनी बैठी थीं, समध्याने में आ नरसी के ।
जब नरसी की वां बेटी से, यह बोलीं हंस कर ताना दे ॥
कुछ रीत नहीं आई अब तक, ऐ लाल तुम्हारे(२३) मैके से ।
और दिल में थीं यह जानती सब वह क्या हैं और क्या भेजेंगे ॥
तब बोली बेटी नरसी की, उन नारियों के आकर आगे ।
वह भगती हैं, बैरागी हैं, जो घर में था सो खो बैठे ॥

पाठान्तर—(१४) क़ा० श० आ० हरि के द्वारे पर (१५) क़ा० जा० श० आ० ने (१६) क़ा० श० आ० तरतीब (१७) क़ा० जा० थैली (१८) क़ा० कर नो रीते (१९) क़ा० जा० श० आ० था (२०) क़ा० श० आ० यूं (२१) जा० झमक झमक, श० आ० चमक, झमक (२२) जा० मालिक (२३) क़ा० श० लाली तिहारे

[४] खुशी

वह(२४) बोलीं कुछ तो लिख भेजो, यह बोली क्या उनको लिखिए ।
कुछ उनके पास धरा होता, तो आप ही वह भिजवा देते ॥
जो चिट्ठी में लिख भेजूँगी(२५), वह बांच उसे पछतावेंगे ।
एक दमड़ी उनके पास नहीं, वह छोछक क्या भिजवावेंगे ॥८॥

उन नारियों को तो करनी थी, उस वक़्त हंसी वां नरसी की ।
बुलवा के लिखैया जल्दी से, यह बात उन्होंने लिखवा दी ॥
सामान हैं जितने छोछक के, सब भेजो चिट्ठी पढ़ते ही ।
सब चीज़े इतनी लिखवाई, बन आएं न उनसे एक कमी ॥
कुछ जेठ जिठानी का कहना, कुछ बातें सास और ननदों की ।
कुछ देवरानी की बात लिखी, कुछ उनकी जो जो थे नेगी ॥
थी एक टहलनी घर की जो सब बोलीं, तू भी कुछ कहती(२६) ।
वह बोली उनसे हंस कर वां 'मंगवाऊं क्या मैं पत्थर जी' ॥
वह लिखना क्या था वां लोगो, मन चुहल हंसी पर धरना था ।
इन(२७) चीज़ों के लिख भेजने से, शर्मिन्दा उनको करना था ॥९॥

जब चिट्ठी नरसी पास गई, तब बांचते ही घबराय गए ।
लजियाए(२८) मन में और कहा यह हो सकता है क्या मुझ से ॥
यह एक नहीं बन आता है, हैं जो जो चिट्ठी बीच लिखे ।
है यह तो काम कठिन इस दम, वां क्यूंकर मेरी लाज रहे ॥
वह भेजे इतनी(२९) चीज़ों को, यां कुछ भी हो मक़दूर[५] जिसे ।
कुछ छोटी सी यह बात नहीं, इस आन भला किससे कहिये ॥
इस वक़्त बड़ी लाचारी(३०) है, कुछ बन नहीं आता क्या कीजे ।
फिर ध्यान लगा हरि आसा पर, और मन को धीरज अपने दे ॥
वह टूटी सी एक गाड़ी थी, चढ़ उस पर बे विसवास चले ।
सामान कुछ उनके पास न था, रख श्याम की मन में आस चले ॥१०॥

हरि नाम भरोसा रख मन में, चल निकले वां से जब नरसी ।
गो पल्ले(३१) में कुछ चीज न थी, पर मन में हरि की आसा थी ॥
थी सर पर मैली सी पगड़ी, और चोली जामे की मसकी ।
कुछ ज़ाहिर में असबाब न था, कुछ सूरत भी लजियाई सी ॥

पाठान्तर—(२४) क़ा० और (२५) भेजूंगी (२६) क़ा० लिखती (२७) क़ा० जा० वां (२८) क़ा० जा० पछताए (२९) जा० ऐसी (३०) क़ा० जा० नाचारी (३१) मैले

[५] शक्ति, सामर्थ्य

थे जाते रस्ते बीच चले, थी आस लगी हरि किरपा की ।
कुछ इस दम मेरे पास नहीं, वां चाहिएं चीज़ें बहुतेरी ॥
वां इतना कुछ है लिख भेजा, मैं फ़िक्र करूं अब किस किस की ।
जो ध्यान में अपने लाते थे, कुछ बात वहीं बन आती थी ॥
जब उस नगरी में जा पहुंचे, सब बोले नरसी आते(३२) हैं ।
और लाने की जो बात(३३) कहो, एक टूटी गाड़ी लाते(३४) हैं ॥११॥

कोई बात न आया पूछने को, जाके(३५) देखा नरसी को ।
और जितना जितना ध्यान किया, कुछ पास न देखा उनके तो ॥
जब बेटी ने यह बात सुनी, कह भेजा क्या क्या लाये हो ?
जो छोछक के सामान किये, सब घर में जल्दी भिजवा दो ॥
दो हंस-हंस अपने हाथों से, यां देना है अब जिस जिस को ।
यह बोले तब उस बेटी से, हरि किरपा ऊपर ध्यान धरो ॥
था पास क्या बेटी अब लाने की(३६) कुछ मत पूछो ।
कुछ ध्यान जो लाने का होवे, "श्री कृष्ण कहो" "श्रीकृष्ण कहो" ॥
इस आन जो हरि ने चाहा है, एक पल में ठाठ बनावेंगे ।
है जो जो यां से लिख भेजा, एक आन में सब भिजवा देंगे ॥१२॥

श्रीकृष्ण भरोसे जब नरसी, यह बात जो मुंह(३७) से कह बैठे ।
क्या देखते हैं वां आते ही,(३८) सब ठाठ वह उस जा आ पहुंचे ॥
कुछ छकड़ों पर असबाब कसे, कुछ भैंसों पर कुछ ऊँट लदे ।
थे हंसली खड़ुए सोने के, और ताश की टोपी और कुर्ते ॥
कुल कपड़ों पर अंबार हुए और ढेर किनारी गोटों के ।
कुछ गहनें झमकें चार तरफ़, कुछ चमके(३९) चीर झलाझल के ॥
था नेग में देना एक जिसे, सो उसको बीस और तीस दिये ।
अब वाह वाह की एक धूम मची ओर शोर अहा ! हा ! के ठहरे(४०) ॥
थी वह जो टहलनी उनके हां(४१) वह भोली जिस दम ध्यान पड़ी ।
सो उसके लिए फिर ऊपर से एक सोने की सिल आन पड़ी ॥१३॥

पाठान्तर—(३२) क़ा० जा० आए हैं (३३) आ० जो कुछ बात (३४) क़ा० जा० श० आ० लाए (३५) क़ा० श० आ० जाके (३६) क़ा० श० आ० लाने की (३७) क़ा० श० आ० मन (३८) क़ा० जा० उतरे हैं (३९) जा झमके (४०) क़ा० ठहरी (४१) क़ा० श० आ० उसकी मां

वां जिस दम हरि की किरपा ने, यूं नरसी की तब(४२) लाज रखी।
उस नगरी भीतर घर-घर में, तब नरसी की तारीफ़ हुई ॥
बहुतेरे आदर मान हुए, और नाम बड़ाई की ठहरी।
जो लिख भेजी थी ताने से, हरि माया से वह सांच हुई।
सब लोग कुटम के शाद[6] हुए, ख़ुश वक़्त हुई फिर बेटी भी।
वह नेगी भी ख़ुश हाल हुए, तारीफ़ें कर कर(४३) नरसी की ॥
वां लोग सब आये देखने, को, और द्वारे ऊपर भीड़ लगी।
यह ठाठ जो देखे(३४) छोछक के, सब बस्ती भीतर धूम पड़ी।
जो हरि से काम रखें उनका फिर पूरा क्यूं कर काम न हो।
जो हर दम हरि का नाम भजें, फिर क्यूंकर हरि का नाम न हो ॥१४॥

श्रीकृष्ण ने वां जब पूरी की, सब नरसी के मन की आसा।
एक पल में कर दी दूर सभी, जो उनके मन की थी चिन्ता ॥
यह ऐसी छोछक ले जाते, सो इनमें था मक़दूर[7] यह क्या।
यह आदर मान वहां पाते, यह इनसे कब हो सकता था ॥
जो हरि किरपा ने ठाठ किया, वह एक न इनसे बन आता।
यह इतनी जिसकी धूम मची, सो ठाठ वह था हरि किरपा का।
यह किरपा उन पर होती है, जो रखते हैं हरि की आसा।
हरि किरपा का जो वस्फ़[8] कहूं, वह बातें हैं सब ठीक बजा ॥
है शाह "नज़ीर" अब हर दम वह, जो हरि के नित बलिहारी हैं।
श्रीकृष्ण कहो, श्रीकृष्ण कहो, श्रीकृष्ण बड़े अवतारी हैं ॥१५॥

पाठान्तर—(४२) जा० तप (४३) क़ा करके (४४) क़ा जा० जो थे

[6] प्रसन्न [7] सामर्थ्य [8] प्रशंसा, गुण

श्रीकृष्ण व नरसी मेहता

दुनियां के शहरों में मियां, जिस जिस जगह बाज़ार हैं ।
किस किस तरह के हैं हुनर, किस किस तरह के कार हैं ॥
कितने इसी बाज़ार में, ज़र के ही पेशेवार हैं ।
बैठें हैं कर कर कोठियां, ज़र के लगे अम्बार हैं ॥
सब लोग कहते हैं उन्हें, यह सेठ साहूकार हैं ॥१॥

हैं फ़र्श कोठी में बिछे(१), तकिये लगे हैं ज़रफ़िशां[1] ।
बहियां खुलीं हैं सामने लिखते हैं लक्खी(२) कारवां ॥
कुछ पीठ की कुछ पर्त की, आती हैं(३) बातें दरमियां ।
लाखों की लिखते दर्शनी, सौ सैंकड़ों की हुंडियां ॥
क्या क्या मिती और सूद की, करते सदा तक़रार[2] हैं ॥२॥

कुछ मोल का मज़कूर[3] हैं(४), कुछ ब्याज का है ठक ठका ।
फैलावटें घर बीच की बीजक का चर्चा हो रहा ॥
दल्लाल हुंडी पीठ के बाम्हन(५) परखिये सुध सिवा ।
आढ़त(६) बिठाते(७) हर जगह, चिट्ठी लिखाते जा बजा ॥
कुछ रखने वाले के पते, कुछ जोग के इक़रार हैं ॥३॥

थोड़ी सी पूंजी जिनके है, बैठे(८) हैं वह भी मिलके(९) यां ।
ईधर टके दस बीस के, ऊधर धरी हैं कौड़ियां ॥
और जो हैं हद टुट पूंजिये वह कौड़ियों की थैलियां ।
कांधों पै रख जाते हैं वां, लगती जहां हैं(१०) गुदड़ियां ॥
देखा तो यह सब पेट के, धन्धें हैं और बिस्तार हैं ॥४॥

पाठान्तर—(१) क़ा॰ लगे (२) जा॰ लखिये (३) क़ा॰ आई (४) क़ा॰ श॰ आ॰ मोल का मज़कूर है
(५) श॰ आ॰ बामन (६) क़ा॰ श॰ आ॰ आरट (७) क़ा॰ बिठाले (८) क़ा बैठी
(९) क़ा॰ वह मिलके (१०) क़ा॰ जहां में

[1] सुनहरी [2] विवाद [3] वर्णन

है यह जो सर्राफ़ा मियां, हैं इनमें कितने और भी ।
हित के परेखे का दरब, चाहत की चोखी अशरफ़ी ॥
जो ज्ञानी ध्यानी हैं बड़े, कहते उन्हीं को सेठ जी ।
धन ध्यान के कुल ढेर हैं, कोठी भी है कोठी बड़ी ॥
मन के(११) प्रेम और प्रीत का करते सदा व्योपार हैं ॥५॥

हैं रूप दर्शन(१२) आस के, चित के(१३) रूपे मन में भरे ।
हुंडी लिखें उस साह को, जाते ही जो पल में मिले(१४) ॥
लेखन से लेखा चाह का, चित की(१५) सूरत से लिख रहे ।
जिस लोक(१६) में है मन लगा, उस बास की बंसनी बजे ॥
नित प्रेम की हों बीच में, बहियां धरीं दो चार हैं ॥६॥

बीजक लगाते हैं जहां, धोका नहीं पज़ता ज़रा ।
जिस बात की मद्दें लिखें, वह ठीक पड़ती हैं सदा ॥
है जमा दिल हर बात से, मन अस्ल मतलब से लगा ।
हाजत[४] तक़ाज़े[५] की नहीं, लेना सब आता है चला ॥
जो बात करने(१७) जोग है, उसमें बड़े हुशियार हैं ॥७॥

रहते हैं ख़ुश जी में सदा, दिल गीर कुछ रहते नहीं ।
व्योपार करते हैं बड़ें, हर आन रहते हैं वहीं ॥
झगड़ा नहीं करते ज़रा, गुस्सा नहीं होते कहीं ।
मत की सुनी से मन लगा, सुख चैन है जी के तईं ॥
खोटे मिलत से काम क्या(१८), उनके खरे हितकार हैं ॥८॥

करते हैं नित उस काम को, जो है समाया ज्ञान में ।
जो ध्यान है मन में बंधा, रहते हैं खुश उस ध्यान में ॥
सन्देह का पैसा टका, रखते नहीं दूकान में ।
नित मन की सुमरन साध कर, हर वक़्त में हर आन में ॥
जिस नार का आधार है, उससे लगाये नार हैं ॥९॥

पाठान्तर—(११) क़ा० श० आ० की (१२) क़ा० दर्सन (१३) क़ा० श० आ० चलके (१४) श० पटे (१५) क़० जा० के (१६) जा० श० जोग, का० लोग (१७) आ० क़ा० करनी (१८) आ० लिया

[४] आवश्यकता [५] बार-बार कहना

जिस मन हरन महबूब से, मन की लगाई चाह है ।
सब लेन की और देन की, उनको उसी से राह है ।।
जो दिल की लेखन से लिखा, उससे वही आगाह है ।
उनको उसी से साख है, उनकी वही एक राह है ।।
कौड़ी से लेकर लाख तक, उनके वही व्योपार हैं ।।१०।।

इस भेद का ऐ दोस्तों, इस बात में देखो पता ।
थे नरसी महता एक जो, सर्राफ़ी करते थे सदा ।।
महफ़ूज़[६] थे ख़ुश हाल थे, दूकान में ज़र था भरा ।
श्री कृष्ण जी के ध्यान में, रहता था उनका मन लगा ।।
सुन लो यह उनकी प्रीत और परतीत के अबकार हैं ।।११।।

जूं जूं बढ़ा हिरदै में मत, मधु प्रेम(१९) का प्याला पिया ।
पैसा टका जो पास था, सब साधु सन्तों को दिया ।।
सब कुछ तजा हरि ध्यान में, और नाम हरि का ले लिया ।
नित दास मतवाले बने(२०), हरि का भजन हरदम किया ।।
परघट किये सब देह पर जो नेह(२१) के आसार हैं ।।१२।।

सब तज दिया हरि ध्यान में, यह पीत का ठहरा जतन ।
करते भजन श्रीकृष्ण का, हर हाल में रहते मगन ।।
नरसी की परसी हो गई, देकर मदनमोहन को मन ।
चाहत में सांवल साह की, अपना भुलाया तन बदन ।।
सब भगत बातें साथ लीं, जो इष्ट में दरकार हैं ।।१३।।

दिन रात की माला फिरी श्रीकृष्ण जी श्रीकृष्ण जी ।
ठहरा जुबां पर हर घड़ी, श्रीकृष्ण जी, श्रीकृष्ण जी ।।
कहता सदा सीने में जी, श्रीकृष्ण जी, श्रीकृष्ण जी ।
जाते जहां कहते यही, श्रीकृष्ण जी, श्रीकृष्ण जी ।।
जो प्रेम के पूरे हुए, उनके यही अतवार हैं ।।१४।।

पाठान्तर—(१९) का० जा० आ० मद पेम (२०) श० क़ा० भी (२१) क़ा० जा० पंथ

[६] सुरक्षित

कहते हैं यूं एक देस में, रहते जो कितने साधु थे ।
वह दर्शनों(२२) के वास्ते जब द्वारिका जी को चले ॥
आ पहुंचे उस गारी में जब, नरसी जहां थे हित भरे ।
उतरे ख़ुशी से आन कर, और वां कई दिन तक रहे ॥
पूजा भजन करने लगे, साधुओं(२३) के जो अतवार हैं ॥१५॥

वह साधु जो उतरे थे वां, कुछ थे रूपे उनके कने ।
चाहा उन्होंने दर्शनी, हुंडी लिखा लें सेठ से ॥
लेवें रुपे हुंडी दिखा, जब द्वारिका में पहुंच के ।
कारज संवारें धरम के, जो नेक नामी वां मिले ॥
करते हैं कारज प्रेम के, जाके जो उस दरबार हैं ॥१६॥

लोगों से जब इस बात का, साधुओं ने वां चर्चा किया ।
और हर किसी के उस घड़ी, घर पूछा साहूकार का ॥
उस छोटी नगरी में बड़ा, नरसी का यह व्योपार था ।
श्रीकृष्ण जी की चाह में बैठे थे सब अपना गवां ॥
मुफ़्लिस[७] से कब वह काम हों, करते जो अब ज़रदार[८] हैं ॥१७॥

कितने जो ठट्ठे बाज़ थे जिस दम उन्होंने यह सुना ।
दिल में हंसी की राह से, साधुओं से यूं जाकर कहा ॥
एक नरसी महता है बड़े, सर्राफ़ यां के वाह ! वा ।
तुम दर्शनी हुंडी जो है(२४), लो हाथ से उनके लिखा ॥
है साख उनकी यां बड़ी, जितने यह साहूकार हैं ॥१८॥

वह साधु क्या जानें कि यां, यह करते हैं हमसे हंसी ।
लेकर रूपे और पूछने, आये बहुत होकर ख़ुशी ॥
नरसी के आये पास जब, यह दिल की बात(२५) अपने कही ।
लिख दो हमें किरपा से तुम, इस वक़्त हुंडी दर्शनी ॥
हम द्वारिका को आजकल जल्दी से चलने हार हैं ॥१९॥

पाठान्तर—(२२) क़ा० श० दोस्तों (२३) क़ा० जा० आ० श० साधों (२४) क़ा० हुंडी है
(२५) क़ा० श० आ० दिल की वह बात

[७] ग़रीब [८] धनवान

नरसी ने यूं सुनकर कहा, मैं तो ग़रीब अदना हूं जी ।
साधू मेरी दूकान तो मुद्दत से है ख़ाली पड़ी ॥
ने है मेरी आड़त कहीं, ने मीत मेरा है कोई ।
ने पास मेरे लेखनी, ने एक टूटी सी बही ॥
यह बात वां कहिये जहां, नित हुंडियां हर बार हैं ॥२०॥

जाकर लिखाओ और से, परतीत साधू क्या मेरी ।
है मेरे पड़ रहने को यां, टूटी सी अब एक झोपड़ी ॥
तन पर मेरे कपड़ा नहीं, ने घर में थाली, करछली ।
मैं तो सिड़ी, ख़ब्ती सा हूं, क्या साख मेरी बात की ॥
सब नाम रखते(२६) हैं, मुझे जो मेरे नातेदार हैं ॥२१॥

यह बात सुनकर साधु वां, नरसी से बोले उस घड़ी ।
लिख दो हमें किरपा से(२७) तुम, हमको यह हुंडी दर्शनी ॥
कर याद सांवल साह की, नरसी ने वां हुंडी लिखी ।
साधुओं ने(२८) हुंडी लेके वां से द्वारिका की राह ली ॥
कहते चले लेने रुपै, अब वां तो बेतकरार[९] हैं ॥२२॥

लोगों ने जाना अब बहुत, नरसी की ख़्वारी[१०] होवेगी ।
लिख दी उन्होंने अब जो यां, काहे को यह हुंडी पटी ॥
यह(२९) द्वारिका से साधु(३०)यां, आवेंगे फिर कर जिस घड़ी ।
पकड़ेंगे उनको आनकर, लोगों में होवेगी हंसी ॥
खोये है पति इन्सान की, झूठे जो कारोबार हैं ॥२३॥

नरसी ने वह लेकर रुपै, रख ध्यान हरि की आस का ।
थे जितने साधु और संत वां, सबको लिया उस दम बुला ॥
पूरी कचौरी और दही, शक्कर, मिठाई भी मंगा ।
सबको खिलाया कितने दिन, और सब ग़रीबों से कहा ॥
मन मानता खाओ पियो, यह जो लगे अंबार हैं ॥२४॥

पाठान्तर—(२६) जा० श० आ० नानों रखते, क़ा० नातों घरते (२७) क़ा० श० आ० उन्हीं के जोग (२८) क़ा० साधों से (२९) श० आ० फिर (३०) आ० शाध

[९] निर्विवाद [१०] अपमान

बर्फ़ी, जलेबी और लड्डू(३१), सबको वहां बरता दिये ।
जब सोच आया मन में यूं, होता है क्या अब देखिये ।।
वह साधु हुंडी दर्शनी, ले द्वारका में जब गये ।
कोठी को सांवल साह की, वां ढूंढते हर जा फिरे ।।
हम जिनको हैं यां ढूंढते, यां वह नहीं ज़िनहार हैं ।।२५।।

बे आस होकर जिस घड़ी, वह साधु बैठे सर झुका ।
इतने में देखा दूर से, एक रथ है वां जाता चला ।।
कलसी झमकती जगमगा, छतरी सुनहरी ख़ुशनुमा[11] ।
एक शख़्स[12] बैठा उसमें है, सांवल बरन मोहन अदा ।।
रथ की झलक से उसकी वां, रौशन अजब अनवार[13] हैं ।।२६।।

वह साधु देख उस ठाठ को, कुछ मन में घबरा से गये ।
जल्दी उठे और सामने, रथ के हुए आकर खड़े ।।
पूछा उन्होंने कौन हो, तब साधु यूं कहने लगे ।
नरसी की हुंडी दर्शनी, है जोग सांवल साह के ।।
सो हमको वह मिलते नहीं, अब हम बहुत नाचार हैं ।।२७।।

यह कहके हुंडी दर्शनी, जिस दम उन्होंने दी दिखा ।
श्रीकृष्ण जी ने प्यार से, हर हर्फ़[14] हुंडी का पढ़ा ।।
जितने रुपै थे वां लिखे, वह सब दिये उनको दिला ।
वह ख़ुश हुए जब कृष्ण ने, यूं हंस के साधुओं से कहा ।।
यह अब जिन्होंने है लिखी, हम उनसे रखते प्यार हैं ।।२८।।

अब जो मिलोगे उनसे तुम, कहियो हमारी ओर से ।
जो थे रुपै तुमने लिखे, वह हमने सब उनको दिये ।।
यह काम क्या तुमने किया, थोड़े रुपै जो अब लिखे ।
आगे को अब समझो यही, इतने रुपै क्या चीज़ थे ।।
लाखों लिखोगे तुम अगर, देने को हम तैयार हैं ।।२९।।

पाठान्तर—(३१) मुकद

११. सुन्दर १२. व्यक्ति १३. तेज, प्रकाश १४. अक्षर

वह साधु अपने ले रुपे(३२), फिर शहर के भीतर गए ।
कारज जो करने थे उन्हें, मन मानते वह सब किये ॥
फिर द्वारिका से चलके वह, नरसी की नगरी में गये ।
नरसी से लोगों ने कहा, नरसी बहुत दिल में डरे ॥
दूंगा कहां से मैं रुपे, यह तो बिपत(३३) के भार हैं ॥३०॥

जब साधु मिलने को गये, नरसी वहीं छुपने लगे ।
वह मिनतियां करने लगे, और पांव नरसी के छुए ॥
परशाद लाये और रुपे, कुछ रूबरू उनके धरे ।
और जो सन्देसा था दिया, सब वह बचन उनसे कहे ॥
नरसी ने जाना कृष्ण की किरपा के यह असरार[१५] हैं ॥३१॥

मन में जो नरसी ख़ुश हुए, सब साधु यूं कहने लगे ।
सब हमने भर पाये रुपे, और हरि के दर्शन भी किये ॥
हुंडी बड़ी लिखते रहो, हरि ने कहा है आप से ।
नरसी यह बोले उनसे वां, अब किससे हो किरपा सके(३४) ॥
जो जो कहा सब ठीक है, वह तो महा औतार हैं ॥३२॥

नरसी की सांवल साह ने, जब इस तरह की पत रखी ।
और यूं कहा आगे को तुम, लिखते रहो हुंडी बड़ी ॥
बलिहारी नरसी हो गए, श्रीकृष्ण ने कृपा यह की ।
जिसको "नज़ीर" ऐसों की है, जी जान से चाहत लगी ॥
वह सब तरह हर हाल में, उसके निबाहन हार हैं ॥३३॥

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० ले अपने रुपें (२) क़ा० श० आ० बहुत की (३) क़ा० श० आ० किस से हो कृपा सके

[१५] भेद, रहस्य

सुदामा चरित[+]

हर दम सुदामा याद करे कृष्ण मुरारी ।
रहता है मस्त हाले दलिद्दर में भारी ।।
और दिल में किसी आन नहीं सोच बिचारी ।
करता है गुज़र मांग के वह भीख भिखारी ।।
हर आन दिल में कहता है धन है तू बिहारी ।। हरदम ।।१।।

देखो सुदामा तन पै तो साबुत न चीर है ।
फेंटा बंधा है सिर के ऊपर सो भी लीर है ।।
जामे के टुकड़े उड़ गये दामन धजीर है ।
गर जिस्म उसका देखो तो दुर्बल हक़ीर[1] है ।।
सौ पेवंदों से सी सी के धोती को सुधारी ।। हरदम ।।२।।

जागह तवे की ठीकरा हैगा दराड़ दार ।
लुटिया है एक छोटी सी सो भी है छेददार ।।
लोहे की करछी तिसके भी फूटे हुए किनार ।
पेवन्ददार हांडी रसोई का यह सिंगार ।।
पथरौटा फूटा तिसको भी थाती सी सुधारी ।। हरदम ।।३।।

छप्पर पै गौर कीजिये चलनी सा हो रहा ।
तिसको भी घास पात से सारा रफ़ू किया ।।
फूटी दिवार चारों तरफ़ जो खंडहर पड़ा ।
स्यारों ने घर किया वहां पंछी ने घोंसला ।।
अब ऐसी झोंपड़ी जो सुदामा ने सुधारी ।। हरदम ।।४।।

[+] डा० गुरुमुखराम टण्डन जी के सौजन्य से प्राप्त ।

[1] तुच्छ, निर्बल

गोशे[2] के बीच अपने लिए ख़्वाबगाह[3] करी ।
पाये दिवार लकड़ी लगा खाट सी धरी ॥
तिस पर है फ़र्श ओढ़ने को गेहूं की नरी ।
सोवे हैं रात उस पै जपें मुंह से उठ हरी ॥
साधुओं के बीच रह के उमर अपनी गुज़ारी ॥ हरदम ॥५॥

उनको जब इस तरह से हुआ दर्द दुख कमाल ।
एक रोज़ दिल में स्त्री के यों हुआ ख़याल ॥
हैंगे क़दीम यार तुम्हारे मदन गुपाल ।
जाओ उन्हों के पास करेंगे बहुत निहाल ॥
तुमसे उन्हों से गहरी हमेशा है यारी ॥ हरदम ॥६॥

औरत की बात सुनके सुदामा दिया जवाब ।
तुमको है ज़र की चाह, वह पानी का जो हुबाब[4] ॥
कहने लगी जब स्त्री हमको कहां है ताब[5] ।
जब देखा हाल आपका हमने निपट खराब ॥
तब अर्ज़ की है ज़ाने की, तक़सीर[6] हमारी ॥ हरदम ॥७॥

उनपे मुकुट जड़ाऊ है और सिर मेरा खाली ।
कुंडल है उनके कानों में मुझपै नहीं बाली ॥
उनपै पीतंबर हैगा मैं कमली रखूं काली ।
वे हैं बड़े तुम छोटे यों बोली वह घर वाली ॥
क़दमों में उनके जाओं ख़बर लेंगे तुम्हारी ॥ हरदम ॥८॥

तेरी यह बात ख़ूब मैं समझा हूं नेकतर[7] ।
अब हाल पर तू मेरे नहीं करती है नज़र ॥
वे तीन लोकनाथ हैं मुझसे मिले क्यों कर ।
फिर ज़न कहे हैं जाओ वहां तुम जो बेख़तर[8] ॥
हर एक तरह से खड़ी समझावे है नारी ॥ हरदम ॥९॥

---

[2] कोना [3] सोने का स्थान [4] पानी का बुलबुला [5] शक्ति [6] ख़ता, त्रुटि [7] अत्यधिक भली
[8] निर्भय

ज़र[९] बिन धरम करम नहीं होता है कुछ यहां ।
ज़र बिन नहीं मिले हैं आदर किसी मकां ॥
ज़र से जो ऐस चाहो मिले हैं जहां तहां ।
तुम हरि के पास जाओ कहै कामिनी वहां ॥
बख्‌सेंगे ज़र बहुत सा तुम्हें वे गिरवरधारी ॥ हरदम ॥१०॥

ज़र के लिए तो दिल में हज़ारों फ़िकर करें ।
ज़र के लिए तो यार से हरगिज़ नहीं मिलें ॥
इससे भला है मरना नहीं जाके कुछ कहें ।
उसही का नाम दिल में सदा अपने हम जपें ॥
है विर्त अपनी मांगना हर रोज़ बज़ारी ॥ हरदम ॥११॥

देकर जवाब स्त्री कहती है वे हैं स्याम ।
लाखों उन्होंने भगतों के अपने किये हैं काम ॥
यह बात जाके पूछ लो नहीं ख़ास है, यह आम ।
मानो हमारी सीख उधर को करो पयाम ॥
इस बात से दिल में कभी हूजे नहीं आरी ॥ हरदम ॥१२॥

वे जादोंनाथ हैंगे बड़े कृष्ण कन्हाई ।
क्या लीजे भेंट घर में नहीं दे हैं दिखाई ॥
जब स्त्री पड़ोस से एक तौफ़ा ले आई ।
चादर में चौतह चावलों की किनकी बंधाई ॥
फिर की है सुदामा ने जो चलने की तयारी ॥ हरदम ॥१३॥

ले बग़ल में बिरंज[१०] सुदामा वहां चले ।
रस्ते में शाम जब हुई एक शहर में बसे ॥
वहां से द्वारिका रखा श्री कृष्ण ने उसे ।
सोते हुए सुदामा सबेरे जभी उठे ॥
चारों तरफ़ से द्वारका सोने की निहारी ॥ हरदम ॥१४॥

---

[९] धन [१०] चावल

दिल में कहै सुदामा यह देखू हूं मैं क्या ख़्वाब ।
जब कृष्ण जी नज़र पड़े करने लगा हिजाब[11] ॥
हरि ने जो अपने पास बुलाया वहीं शिताब[12] ।
चरनों को धोके सिरपै चढ़ाया सभों ने आब ॥
दरसन को मिलके आई हैं रानी जो थीं सारी ॥ हरदम ॥१५॥

ख़ुश होके सुदामा से कृष्ण उठ लिपट गए ।
दोनों के गले मिलते ही आनंद सुख भए ॥
मिलते हैं कब किसी को ह्यां भागों से आ गए ।
आदर से आप ले गए सिंहासन पर नए ॥
जब छेम कुसल पूछी रही वह न नदारी ॥ हरदम ॥१६॥

नहाने को उनके वास्ते पानी गरम किया ।
भोजन अनेक तरह का तैयार कर लिया ॥
स्नान ध्यान करके सुदामा ने जल पिया ।
बागा तरह तरह का सुदामा को जब दिया ॥
उनमें लगा है बादला गोटा और किनारी ॥ हरदम ॥१७॥

श्रीकृष्ण बोले दो जो हमें दीना है भाभी ।
यह बात सुन सुदामा ने गांठ और भी दाबी ॥
हरि ने चला के हाथ वहीं खेंच ली आपी ।
दो मुट्ठी मुंह में डालते धरती सभी कांपी ॥
और तीसरी के भरते ही रुकमनि जी पुकारी ॥ हरदम ॥१८॥

ताना दिया फिर वोंही कि देखे तुम्हारे यार ।
आए हैं मांगते हुए ऐसे ख़राब ख़्वार ॥
तिर्लोक दे चुकोगे कुछ अपना भी है सुमार ।
श्रीकृष्ण बोले तुमको क्या अपना करो जो कार ॥
यह मंगता नहीं हैगा सुन प्रान पियारी ॥ हदरम ॥१९॥

ऐसे निहंग लाड़ले देखे कहीं कहीं ।
ख़ुश हैं यह अपने हाल में परवाह इन्हें नहीं ।
कुछ मिल गया तो खाया नहीं बिस्तरा ज़मीं ।
एक दममें चाहे जो मिलें इनको है क्या कमी ॥
ये जब के यार हैंगे कोई यार न थारी ॥ हरदम ॥२०॥

---

[11] लज्जा, छुपना [12] शीघ्र

श्रीकृष्ण ने विश्वकर्मा को बुलवा कहा पुकार ।
सोने के महल ख़ूब सुदामा के हों तैयार ।।
एक दममें बाग़ो महल बनाए बहार दार ।
कोठे किवाड़ खिड़कियां छज्जे बहारदार ।।
चौबारे मीने बंगले जड़ाऊ हैं अटारी ।। हरदम ।।२१।।

फिर गुफ़्तगू[१३] में बात लड़कपन की चलाई ।
वह दिन भी तुमको याद है कुछ या नहीं भाई ।।
भेजा गुरू ने लकड़ी को मेंह आंधी ले आई ।
मुट्ठी चने की बैठ वहां तुमने जो खाई ।।
और हमने रात काटी है पी पानी वह खारी ।। हरदम ।।२२।।

कुछ दिन सुदामा कृष्ण के ह्वां द्वारका रहे ।
पटरानी भाई बंधु सभी टहल में लगे ।।
घर घर दिखाई द्वारिका सब संग हरि फिरे ।
मांगी बिदा सुदामा ने चलने की कृष्ण से ।।
सब आन के हाज़िर हुए जो जो थे दरबारी ।। हरदम ।।२३।।

पहुंचावने सुदामा को जादों चले सारे ।
बलदेव कृष्ण दोनों भये पांवों नियारे ।।
और संग साथ वली बड़े जोधा जो भारे ।
नगगर शहर सभी हुआ आ शहर दुआरे ।।
होते विदा के सबने किया चश्मों को जारी ।। हरदम ।।२४।।

रुख़सत[१४] हुआ सुदामा वहां सेति जब चला ।
जब राह बीच आया हुआ सोच यह बड़ा ।।
औरत कहेगी लाए हो क्या मुझको दो दिखा ।
इस जिंदगी से मौत भली क्या कहेंगे जा ।।
किस वास्ते वह रांड़ बहुत हैगी खहारी ।। हरदम ।।२५।।

यह सोच करते करते पुरी पास आ गई ।।
देखे तो घर न छप्पर आफ़त बड़ी भई ।।
ने ब्राह्मनी निशान न घर क्या कहूं दई ।
दीना हमें सो देखा करी घात यह नई ।।
वह भी लिया यह मार अज़ब भीतरी मारी ।। हरदम ।।२६।।

---

[१३] बात-चीत
[१४] बिदा

फिरता महल के गिर्द सुदामा नज़र पड़ी ।
देखें तो एक स्त्री कोठे पे है खड़ी ॥
वह वहां से बुलावे सुदामा को हर घड़ी ।
दिल में सुदामा कहै यह रानी है कोई बड़ी ॥
जाऊं जो घर में मारेंगे दरबान हज़ारी ॥ हरदम ॥२७॥

क्या बार-बार मुझको बुलाये है क्या सबब[१५] ।
शायद मुझे पसंद किया अपने दिल में अब ॥
इतने में वह महल से उतर पास आई जब ।
कहने लगी यह देखो विभव है उन्हीं की सब ॥
माया यह हरि की देख हमें ऐसी बिसारी ॥ हरदम ॥२८॥

फिर बांह पकड़ ले गई चौकी पे बिठाया ।
खुशबू लगा उबटन मला ख़ूब न्हिलाया ॥
ले टहलुए ने ख़ूब पितंबर जो पहराया ।
पूजा करी सुदामा ने हरि ध्यान लगाया ॥
ख़िदमत में चेरियां खड़ी ले हाथ में झारी ॥ हरदम ॥२९॥

नित उठ सुदामा अपन करें येही खटकरम ।
और पुन्न दान पूजा करें उसका जो धरम ॥
हरि बिन नहीं तो जाने कोई उसका अब मरम ।
कई दिन गुज़ारे इस तरह भोजन किये गरम ॥
सोवे यह हरि के ध्यान में खा पान सुपारी ॥ हरदम ॥३०॥

इस तरह जो 'नज़ीर' रहें हरि के ध्यान में ।
यह भक्ति जोग हैगा कठिन कर धियान में ॥
यह बात है लिखी हुई वेद औ पुरान में ।
श्रीकृष्ण नाम ले ले हरेक आन आन में ॥
बैकुंठ धाम पावें जो हैं हरि के पुजारी ॥ हरदम ॥३१॥

---

[१५] कारण

महा देव जी का ब्याह

पहले नाम गनेश का, लीजै सीस नवाय ।
जासे कारज सिद्ध हों सदा महूरत लाय ॥
बोल बचन आनन्द के, प्रेम, पीत और चाह ।
सुन लो यारो, ध्यान धर महादेव का ब्याह ॥

जोगी जंगम(१) से सुना, वह भी किया बयान ।
और कथा में जो सुना, उसका भी परमान ॥
सुनने वाले भी रहें, हंसी ख़ुशी दिनरैन ।
और पढ़ें जो याद कर, उनको भी सुख चैन ॥

और जिसने इस ब्याह की, महिमा कही बनाय ।
उसके भी हर हाल में शिव जी रहें सहाय ॥
ख़ुशी रहे दिन रात वह, कभी न हो दिलगीर ।
महिमा उसकी(२) भी रहे, जिसका नाम 'नज़ीर' ॥

यूं कहते हैं इस दुनियां में, एक राजापती हिमाचल(३) था ।
वह धर्मी अदली नेक जोति मुख(४) चन्द दिलावर भुज बल था ॥
गढ़ कोट बड़े गिरि(५) पर्वत से और फ़ौज सिपह का दंगल था ।
गज हस्ती ऊंचे झूलज़री, अम्बारी होदे कुंजल था ॥
रथ, बहले(६) मियान[१], लालरथें(७), चंडोल पुरअतलस[२] मखमल था ।

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० जंगी (२) ज़ा० का० उसके (३) का० महाजल, ज़ा० हीमाचल (४) क़ा० जर मुख, ज़ा० चतुर मुख, श० आ० ज्योमुख (५) क़ा० कर (६) क़ा० ज़ा० पै थीं

[१] एक प्रकार की छोटी पालकी
[२] रेशमी कपड़ा

ख़ुश रंग, तुरंगें, तेज कदम पर(७) ज़ीन झमकता हर पल था ॥
सब साज़ जड़ाऊ गज गाहन(८), कोई चंचल था कोई कोतल था ।
हर बस्तर चीर झलाझल का, धन दौलत पल्लू आंचल था ॥
पुखराज ज़ुमुर्रुद लाल मनों मनिमुक्ता भी बे अटकल था ।
महलात[2] सुनहरे रंग भरे, दरबारी और सुख मंडल था ॥
कुल बर्तन सोने रूपे के और चेरा चेरी का दल था ।
बाग़ात बड़ी तैयारी के, हर डाली पर गुल और फल था ॥
ज़र ज़ेवर ठाठ असबाब[3] बहुत, और ऐश ख़ुशी का भर दल(९) था ।
घर जगमग जगमग करता था, सुख चैन आनन्द और मंगल था ॥
हर आन तरब हर दम चुहलें, जी जान हर एक औक़ात[4] ख़ुशी ।
वह राजा भी हर वक्त ख़ुशी, और परजा भी दिन रात ख़ुशी ॥१॥
अब यां से आगे सुनो, ख़ूबी से रख ध्यान ।
पार्वती के वस्फ़ का, जितना हुआ बखान ॥

इस राजा हिमाचल के घर में एक बाली(१०) सुन्दर बेटी थी ।
मुख उसका चन्द्रगगन का था, नाम उसका गौरा पारबती ॥
लब लाले यमन और गुचां दहन, तन बर्गे समन क़द सर्व सही ।
पोशाक झलकती ताश ज़री, अनगिनती पहने मनि मोती(१२) ॥
वह कठले कंगन कुंदन के वह बाज़ू छल्ले और मुंदरी ।
वह झांझन बजती चांदी की और जोड़े घुंघरू चौरासी ॥
मां बाप की प्यारी नाज़ भरी, आंखों आगे निस दिन फिरती ।
नित रहती हाथों छांओं में और मानी आस मुरादों की ॥
सुख भोजन नौरस और मेवे, पकवान मिठाई दूध दही ।
सौ साठ सहेली साथ फिरें, हम उम्रें भी बाली भोली ॥
सब प्यार करें तन मन वारें, संग खेलें, जिसमें बहले जी ।
सब गहने में सर पांव लदी, तन(१३) सोहे सालू और चुनरी ॥
कोई उछले कूदे स्वांग करे, कोई हंस हंस करती अठखेली ।
दिन रात हंसे और चैन करें, हर आन की ख़ूबी ख़ुश वक्ती ॥

पाठान्तर—(७) क़ा० श० आ० हर (८) क़ा० गंज काहन, श० गाहें (९) श० आ० फिर
(१०) श० आ० माली (११) क़ा० चन्दलगन (१२) क़ा० जा० श० आ० मनमोती
(१३) क़ा० बन

[2] महल (बहु०) [3] सामान [4] समय

थी रहती गोरा पारबती; इन रूप सरूपों अबरन में ।
सब तौर ख़ुशी से फिरती थी, नित अपने घर और आंगन में ।।
अब यां से आगे सुनो उसकी यह तक़रीर ।
जैसे गोरा की हुई निस्बत[5], की तदबीर ।।

एक रात वह राजा रानी थे सुख बैठे अपने मंडल से ।
मुख पान बिराजें दोनों के और हंस हंस बातें करते थे ।।
वह बाली सुन्दर पारबती, ख़ुश बैठी आगे दोनों के ।
हर चेरी बांधे हाथखड़ी, पोशाकें पहने और गहने ।।
मुख देख दुलारी कन्या का, यूं बोले राजा रानी से ।
अब अपनी गोरा प्यारी की, कुछ फ़िक्र सगाई की करिये ।।
तब बोली रानी राजा से, कर जोड़ बहुत बिनती करके ।
जो आपके मन में सोच हुआ है सोच वो ही मन में मेरे(१४) ।।
तुम साहब हो तुम मालिक हो, है सोभा सबकी अब तुमसे ।
दो हुक्म पुरोहित को अपने, रख ध्यान सगाई का उसके ।।
जो राजपती घर ऊंचा हो, हर शहर नगर में जा ढूंढे ।
वह बर भी ऐसा सुन्दर हो, जो मेरी गोरा को सोहे ।।
है जैसी गोरा चन्द्रमुखी, वैसा ही बर उसका होवे ।
यह बात जो ठहरी दोनों में, रख मन में इसको सोय रहे ।।
जब सुबह हुई तो राजा के मन में था वो ही ध्यान भरा ।
दरबार में आये ख़ुश होते, सिंहासन ऊपर पांव धरा ।।
अब यां के आगे सुनो और बचन इस आन ।
निस्बत गौरा की हुई जग में जिस उनवान[6] ।।

जब राजा अपने महलों से, सिंहासन पर बैठे आकर ।
दरबार हुआ गुल लाला सा, सब हाज़िर नौकर और चाकर(१५) ।।
यह बात कही जब राजा ने, ले आओ पुरोहित को जाकर ।
उस वक़्त पुरोहित आ पहुंचे आशीर्वचन रसना(१६) लाकर ।।
सर पाग बड़ाई की सोहे और चंदन रोली(१७) माथे पर ।
तनजामा[7] ख़ासा मल मल का, इकलाई(१८) रंगी पीतम्बर ।।

पाठान्तर—(१४) क़ा० वह ही है मन में मेरे, ज़ा० वह ही मन में है मेरे (१५) क़ा० श० आ० चाकर और नौकर (१६) क़ा अ० श० रसता (१७) क़ा० श० आ० रुपै (१८) क़ा० अकलाली

५. रिश्ता, सम्बन्ध ६. जिस प्रकार ७. शरीर के वस्त्र

मुख पान गले मोती माला और मूंगा सोना भी अक्सर ।
ख़ुश सूरत सीरत नेक बचन, क़ाबिल[८] आक़िल दानिशवर[९] ॥
मुख देख पुरोहित का अपने यूं राजा बोले खुश होकर ।
तुम जाओ सगाई गोरा की, अब ढूंढ़ो अच्छी साअत पर ॥
हैं जितने शहर फिरो उनमें और सैर करो मुल्क और नगर ।
जिस देश में देखो राजपती हो ऊंचा घर और बर सुन्दर ॥
ठहराओ सगाई गोरा की, शुभ साअत से तुम उसके घर ।
जब ठहर चुके वां ख़ूबी से, दो उसकी हमको आन ख़बर ॥
जिस वक़्त पुरोहित से अपने, यह राजा ने फ़रमान[१०] किया ।
खुश हाल पुरोहित ने होकर, वां ढूंढ़ने का सामान किया ॥
अब यां से आगे सुनो, बात पुरोहित मान ।
चले सगाई ढूंढने, गोरा की, रख ध्यान ॥

हो शाद[११] पुरोहित चलने को, इस शहर से जब तैयार हुए ।
यूं जल्द चले उस नगरी से, जूं पवन सहर[१२] के वक़्त चले ॥
हर दीप गए, हर नगर गए, हर शहर बसे, हर देश फिरे ।
पर एक न पाया ऐसा बर, जो राजा के परसंद पड़े ॥
मक़दूर[१३] तलक तो देख फिरे, और अपने बस तक ढूंढ चुके ।
तदबीर बहुत सी की लेकिन, जो चाहे सो तक़दीर करे ॥
जो बात लिखी हो कर्मों में, हर तौर वही आकर होवे ।
जो चाहे फेरे कोई उसे क्या ताब(१९) जो तिल भर फेर सके ॥
जब खेंची बाग नसीबों ने, फिर उसके आगे हार गए ।
वां फिरते फिरते आख़िर को, कैलास के ऊपर जा पहुंचे ॥
क्या देखें वां कैलास ऊपर, शिव आप अकेले बैठे हैं ।
की स्तुति और ख़ुश वक़्त हुए, सुख पाये उनके दर्शन से ॥
जब मन को सुख आनन्द हुई, फिर थोड़ी सी वां केसर ले ।
कर टीका उसका जल्द बहुत ख़ुश होकर माथे पर शिव के ।
जिस आन पुरोहित खींच चुके,(२०) वह केसर टीका शादी का ।
फिर वां से अपने देश फिरे, कर काज मुबारकबादी[१४] का ॥
अब यां से आगे सुनो, इसका किया बयान ।
बात पुरोहित ने कही, राजा से जब आन ॥

पाठान्तर—(१९) क़ा० जा० बात (२०) क़ा० सके

[८] योग्य [९] बुद्धिमान [१०] आदेश [११] प्रसन्न [१२] सुबह [१३] सामर्थ्य [१४] शुभ कामना

दिन कितने में वां राजा से इस टीके की आ बात कही ।
सुन नाम सदा(२१) शिव शंकर का, हुई राजा के घर बहुत ख़ुशी ।।
सब ख़्वेश[१५] कुटुम दिल शाद हुए, और परजा को हुई ख़ुश वक्ती ।
घर बार मंदीले ढोल बजा, आनन्द ख़ुशी की धूम मची ।।
कोई बोली हर दम ख़ुश होकर, हो आई सगाई गोरा की ।
कोई गोद चढ़ाकर कहती थी, आ मेरी गोरा पार्वती ।।
कोई आंखें चूमे प्यार करे, कोई दौड़ बलायें लेती थी ।
जब घर घर में मशहूर हुई, यह बात ख़ुशी आनन्द भरी ।।
तब राजा ने हर पंडित से, वां लगन महूरत की पूछी ।
सब बोले माह महीने की, सुभ साअत है और नेक घड़ी ।।
दिन ठहरा ब्याहने आने का, सुभ साअत शादी लगन धरी ।
तब राजा ने शिव शंकर को, इस बात की पत्री लिख भेजी ।।
वह पत्री शिव के पास गई ले हाथ उन्होंने सब बांची ।
हो नादिया पर असवार चले और आये नगरी राजा की ।।
वा आन के उतरे ब्याहने को, था उस जा एक मैदान बड़ा ।
ख़ुश वक्त नवेले चाव भरे, कर जोगी का सामान बड़ा ।।
अब यां से आगे सुनो, यह बरनन इस आन ।
जब वां से शिव ने किया जोगी का सामान ।।

वां जाने बूझे कौन उन्हें, थे यह तो उतरे जोगी बन ।
त्रिसूल चक्र था कांधे पर और राख भरा मुख और तन ।।
एक मैली गुदड़ी पीठ पड़ी और आक धतूरे का भोजन ।
वह संख पद्म था माल मता वह घंटा खप्पर झोली धन ।।
जलपान करें वां शिव जिसमें वह तूंबा तूंबी का बर्तन ।
और सीस लटाऐं बिखर रहीं, मृग छाला का डाले आसन ।।
मुख राख भरा और लाल आंखे कन मुंदरे कर में एक सुमरन(२२) ।
इस जोगी पन में शिव जी का, था दूल्हा का यही ज़ोर बरन ।।
वह राख मली जो मुख तन पर, वह राख न थी वह था उबटन ।

पाठान्तर—(२१) क़ा० श० आ० सुन नानों नंदा, जा० सुन नानों सदा(२२) क़ा० सरन

१५. भाई बन्धु

और लाल सुहाना बागा था वह गेरुआ रंगा पैराहन[१६] ॥
वह सुमरन थी यूं पहुंचे पर, जूं बांधे दूल्हा हाथ कंगन।
वह सीस लटाऐं यूं बिखरीं, जूं बांधे सेहरा नेक लछन ॥
वह मुंदरे कानों बीच पड़े यूं जैसे मोती हों कानन।
वह लड़ियां सेली की ऐसी जूं ज़ेवर होवे ज़ेब बदन ॥
कुछ ठाठ न बाजा गाजा था, और कोई संग न साथी था।
वह आप सदा शिव दूल्हा थे और नादिया बेल बराती था ॥
अब यां से आगे सुनो उस जोगी की बात।
लोगों ने जिस दम सुनी, मले हर एक ने हाथ।

वां लोग बरात आने के थे, दिन रात सभी मुश्ताक़[१७] बड़े।
मालूम न था यह दूल्हा हैं, थे राह ख़ुशी की सब तकते ॥
हर चार तरफ़ ख़ुश वक़्ती से, कुछ बैठे थे कुछ फिरते थे।
वां सबने जोगी जान उन्हें हर देस नगर फिरते रहते ॥
यूं उनसे पूछा जोगी जी कोई देखी राह बरात आते।
उस वक़्त सदा शिव हंस बोले, हैं व्याहने हम ही तो आये ॥
यह बात सुनी जब लोगों ने, तब सुनकर सबके होश गये।
दिल सुस्त हुए और मन खट्ठे(२३) फिर जाकर आगे राजा के ॥
यह बात कही उस जोगी की, तब राजा भी हैरान हुए।
तहक़ीक़[१८] किया तो ठीक वही तकदीर से रोये हाथ मले ॥
सब महलों मन्दिर शोर मचे, यह भाग थे कैसे गौरा के।
कोइ माथा कूटे सीस धुने, कोई आंसू हर दम भर लाये ॥
कोई देखके सूरत गौरा की, रो देवे ठंडी सांस भरे।
कोई बोले कर्म लिखय्या ने, जो कर्म लिखी हो सो होवे ॥
वां जिन ने यह बात सुनी, अफसोस उसे फिलफ़ौर[१९] हुआ।
जो चाहा था कुछ और ही था और परगट यां कुछ और हुआ ॥
अब यां के आगे सुनो, ध्यान इधर को लाय।
आज़र्दा जैसी हुई, पार्वती की माय।

पाठान्तर—(२३) क़ा० मन भी घटे, जा० मन भी खट्टे

[१६] कुर्ता [१७] इच्छुक [१८] दरियाफ्त [१९] उस समय, तुरंत

रो झींक इधर मां गौरा की, सुन जोगी पर यूं उठ बोली।
यह कैसी बिपता आन बनी, किस मुश्किल ने सूरत खोली ॥
यह मेरी गौरा पार्वती, बाली वय की सुन्दर भोली।
यह पाली धन और दौलत की, यह फूल तराजू की तोली ॥
मुख जिसका चमके चांदनी में और मिसरी होटों में घोली।
वह अलकें मुख पर छूट रहीं, कस्तूरी ने जिस से बोली ॥
हर कंगन जिसका बेशबहा,[२०] हर पहुंची जिसकी अनमोली ।
सो पल्ले बांधी ऐसे के, जो पहने कंथा और झोली ॥
तन राख मले गुदड़ी ओढ़े, खा आक धतूरे की गोली।
सर केस बिखेरे, लाल नयन, जूं लाल महावर की गोली ॥
ने महल मकां ने ज़र ज़ेवर, ने बहल मियाना रथ डोली ।
चढ़ बैल बजाता संख फिरे, बन पर्वत खाता झकझोली ॥
अब लाज गई कुल में मोरी, सब दुश्मन बोलें कल बोली ।
तदबीर नहीं कुछ बन आती, तक़दीर जो होनी थी होली ॥
थी मेरी गोरा प्यारी की, यह बात छटी की रात लिखी ।
कुछ और न हो हो अंत वही, जो माथे में हो बात लिखी ॥
अब यां से आगे सुनो, शिव ने जब उस आन ।
अपनी माया से किये, क्या-क्या वाँ सामान ॥

तब राजा ने भी रिस खाकर, दरबार पुरोहित बुलवाये ।
जब आये तो यह बात कही, यह कैसा टीका कर आये ॥
सब लोगों ने भी नाम धरे, तब चुप हो शिव के पास आये ।
लजियाना देख पुरोहित को, वां ठाठ यह शिव ने दिखलाये ॥
जो बाद ने झाड़े ख़ारो ख़स,[२१] और बादल पानी छिड़काए ।
बानात क़नाते शमियानें, दल बादल तम्बू तनवाये ॥
नमगीरे झालर मोती के, कमख़्वाब मुशज्जर झलकाये ।
कुल फ़र्श हरीर और दीबा के, खुश रंग चमकते बिछवाये ॥
मुक़्क़ेश ज़री के लच्छे भी, फिर जागह-जागह लटकाये ।
गुल इत्रों गुलाब और पान धरे कस्तूरी अम्बर रखवाये ॥
भर थाल इलायची लौंगों के, फिर ख़ूब तरह से चुनवाये ।
चंगेर धरी सौ ज़ेब भरी और तुर्रा हार भी गुंधवाये ॥

पाठान्तर—(२४) क़ा० श० आ० अलगन

[२०] मूल्यवान [२१] काँटे-कूड़ा

हर चार तरफ़ तैयारी के, असबाब[२२] तरब[२३] के ठहराये ।
जो ठाठ बड़े हैं शादी के, एक पल भर में सब झमकाये ॥
आकाश के देवता जितने हैं, बन ख़ूब बराती आन भरे ।
वह पहला भी मैदान भरा, और वैसे सौ मैदान भरे ॥
अब यां के आगे सुनो, ख़ुश होकर हर आन ।
जैसे शिव दूल्हा बने, उसका किया बयान ॥

जब बैठे शिव की शादी में, कुल तैंतीस कोटि जो हैं देवता ।
विष्णु आप थे आये और ब्रह्मा और इन्द्र नारद मुनि उस जा ॥
और शुक्र और बृहस्पत भी और नाम शनीचर है जिनका ।
वह रूप स्वरूप औ पौशाकें, वह ऊंची शानें ज़ेब फ़िज़ा ॥
उस वक़्त ख़ुशी से मसनद(२५) पर शिव बैठे बनकर यूं दूल्हा ॥
मुख पान की लाली, कर मेंहदी, और आंखों बीच लगा कजरा ॥
हर तार चमकता चीरे का और ताश सुनहरी का बागा ।
उस तार ज़री के चीरे पर जूं माह चमकता मुकुट धरा ॥
हर कान मुरस्सा'[२४] कुन्दन थे और मुख पर सोने का सेहरा ।
वह सेहरा मुख पर यूं चमके, जूं सूरज होवे किरन भरा ॥
वह मोती माल गले झलकें और उनमें लालों की माला ।
वह बांक जड़ाऊ बाज़ू पर और कंगना पहुंचे झमक रहा ॥
जब बैठे शिव यूं दूल्हा बन, सब परियों का वां नाच हुआ ॥
और क़रना सरना झांझ बजे, नक़्क़ारे गूजे शोर मचा ॥
यह ठाठ बनाकर दिखलाया जब शिव ने माया अपनी का ।
हर चार तरफ़ आनन्द हुए गुल शोर हुआ ख़ुश वक़्ती का ॥
अब यां से आगे सुनो, इस शादी के तौर ।
देख इसे जी से खुशी, लोग हुए हर ठौर ॥

यह धूम मची वां आपस में, क्यूं लोगो कैसा यह जोगी ।
हम समझे इसको जोगी थे और निकला यह तो राजपती ॥
नर नारी निकले छोड़ मन्दिर रख मन में चाव तमाशे की ।
और बुढ़िया बूढ़े तिफ़्ल् जवां और कुबड़े लंगड़े बहरे भी ॥

पाठान्तर—(२५) का० श० आ० मन्दिर
२२. सामान २३. प्रसन्नता २४. सुसज्जित २५. बच्चे

सब देखने को वां आन भरे सो ठठ हुए और भीड़ लगी ।
यह बात सुनी जब राजा ने, तब चढ़ कर कोठे पर जल्दी ।।
जब देखा तो वां कोसों तक ज़ोर बरात आकर उतरी ।
ख़ुश वक़्त हुए, ख़ुश हाल हुए बर आई सब मनता मन की ।।
हुई महलों मन्दिर बीच ख़ुशी, और ऐशो तरब की धूम मची ।
दिल शाद हुए सब कुनबे के, मां गोरा की भी शाद हुई ।।
मुंह देख के ख़ुश हो बेटी का और माथा चूमे घड़ी घड़ी ।
कोई पार्वती के पांव छुए कोई होवे हर दम बलिहारी ।।
कोई धन धन भाग कहे रह रह, कोई वारी हो सौ सौ बारी ।
अब चाव यही और चाह यही जो देखें सूरत दूल्हा की ।।
थे कैसे जोगी देख उन्हें, वाँ ग़म से दिल पामाल[२६] हुए ।
जब ठाठ यह देखे शादी के, सब शाद हुए ख़ुश हाल हुए ।।
अब यां के आगे सुनो भोजन के सामान ।
जिसकी है तारीफ़ से मीठा हुआ बयान ।।
जब राजा ने यह हुक़्म दिया तैयारी हो अब भोजन की ।
मगवाया मैदा लाखों मन और मेवे मिसरी शक्कर घी ।।
हलवाई हज़ारों आ बैठे कर गरम कढ़ाव रख थाल नई ।
कर खोये सुथरे दूध मंगा और डाली चीनी शकर तरी ।।
फिर डाला ख़ूब गुलाब उसमें और डाली डलियां मिसरी की ।
अम्बार लगाये पेड़ों के और ढेर गुलाबी और बर्फ़ी ।।
फिर लड्डू भी तैयार किये, दे क़ंद बहुत बादाम गरी ।
बुर्राक़ मगद और ख़ुर्मे भी ख़ुश रंग इमरती बेर बली ।।
वह ख़ूब जलेबी और खजले वह घेवर बालूशाई भी ।
सब इतने वां तैयार हुए जो ठौर न रखने की पाई ।।
की अर्ज़ यह जाकर राजा से, सब जिन्स वह अब तैयार हुई ।
टुक देखो तुम भी आन उसे, जो है कितनी और है कैसी ।।
जो हुक्म हुआ था इतनी तो सौ ख़ूबी से बनवा डाली ।
जब राजा ने भी आंख उठा, हर जिन्स बहुत सुथरी देखी ।।
मग़रूर[२७] हुए यह कह मन में जिस आन बराती आवेंगे ।
सब अपने मन भर खावेंगे, और ढेर पड़े रह जावेंगे ।।
अब यां से आगे सुनो, ऐश ख़ुशी की बात ।
जैसे जैसे ठाठ से, शिव की चढ़ी बरात ।।

---

[२६] पददलित [२७] गर्वित

जब रात हुई तब शिव शंकर ख़ुश वक़्ती से असवार हुए।
सब आगे पीछे दूल्हा के, दिलशाद[२८] बराती साथ चले ॥
फ़ानूसें[२९] रंगी झिलमलियां, और झाड़ बड़ी गुल कारी के।
हर आन जड़ाऊ चौर ढलें और सीस के ऊपर छत्र फिरे ॥
वह परियां नाचें तख़्तों पर, पोशाकें गहने झमक रहे।
नक़्क़ारे नौबत तलब निशां, अलग़ोज़े बजते और डफ़ले ॥
हर सुरना में धुन में में की, और करना तुरई झांझ बड़े।
कर धोंसे धुं धू बाज रहे, और ताशे बजते कड़-कड़ से ॥
मृदंग मंदीले ताल बजें, और सारे घुंघरू भी झनके।
वह ढोल धमाधम शोर करें और झपने भी झम झम करते ॥
वह हाथी कुंजल और मकने अम्वारी होदे और बंगले।
वह झूमते चलते क़दम क़दम, और बजते जाते घंटा ले।
वह झाड़ मशालें, पंशाखें सब रौशन ऊंचे शोलों के ॥
वह सहरा झमका कोसों तक और अब्र उजाली जा पहुंचे ॥
वह घोड़े मियाने घोड़ बहले, रथ ऊंचे पहिये ढलते थे।
सब बाजे बजते जाते थे, और हौले हौले चलते थे ॥
अब यां से आगे सुनो, चले जो भोलानाथ।
और बराती भी हुए, ऐसे उनके साथ ॥

फिर और हज़ारों साथ चले जो भूत प्रेत और राक्षस थे।
डील ऊंचे उनके बुर्ज़ नमन, और सीस भी उनके गुम्मट से
हर पग्गड़ उनका सौ मन का और मोटे रस्सों के पटके।
और पगड़ों पर तुर्रों की तरह थे साखू बरके बर रखे।
कोई नंगे सर वह बाल इसके, ज्यों बांस बड़े दस दस गज़ के।
कोई मुंड कोई रुंड और कोई बिन पांवों नाचे और कूदे ॥
कोई हाथी रखे कांधे पर, कोई ऊंट बग़ल में दुबकाए।
कोई अरना भैंसा गोद लिये, कोई गैंडा सर पर बिठलाए ॥
कोई सांप गले में लिपटाए फन उनके दम पर दम चूमे।
कुछ लम्बे सोटे लोहे के, कुछ हाथ लिये भारी लकड़े ॥
कोई गावे फ़ाड़ गला अपना, कोई निरत करे चकफरी ले।
कोई शोर करें ख़ुश हाली से, यूं जैके हाथी चिंघाड़े ॥

---

[२८] ख़ुश
[२९] कंडीलें

कोई हाथ नचावे रह रह कर, कोई नैन ख़ुशी से मटकावे ।
कोई लम्बे लम्बे डग रक्खे, कोई दस दस गज़ की जस्त करे ।।
कुछ रंग अजब कुछ ढंग नये, सब हंस हंस धज दिखलाते थे ।
थे धूम मचाते रस्ते में, हर आन उछलते जाते थे ।
अब यां से आगे सुनो, शादी के अतवार ।
चले सदा शिव जिस तरह, पार्वती के द्वार ।।

जब देखा वां के लोगों ने वह कोसों फैला उजियाला ।
वह सुरना की आवाज़ सुनी, और नक़्क़ारों का शोर सुना ।।
सब बोले बरात अब आती है. यह शोर उजाला है उसका ।
तब राजा ने भी भेज दिया, हरकारे पर वां हरकारा ।।
वह आते जाते जल्द बहुत, जो देखते वां सो कहते आ ।
कोई कहता अब वां आ पहुंचे, कोई कहता आये अब इस जा ।।
कोई कहता बहुत बराती हैं, और साथ लिये हैं ठाठ बड़ा ।
कोई कहता इतने हाथी हैं, कुछ छोर नहीं जिनका मिलता ।।
कोई कहता घोड़े हाथी हैं, अम्बोह रथों का है आता ।
यह बातें सुनकर राजा ने घबराके(२६) मन के बीच कहा ।।
यां लोग बहुत से आते हैं, जनमासे बीच कहाँ यह जा ।
यह भीड़ कब उसमें मिल बैठे कुछ बन नहीं आता करिये क्या ।।
प्रधान खड़े थे जो आगे, जब उनसे अपना भेद कहा ।
यह ठाठ जो अब याँ आता है कुछ तुमने इसका फ़िक्र किया ।।
वह बोले क्या तदबीर करें, और क्या क्या इसका ध्यान करें ।
आ जावे इतना ठाठ जहाँ, वां किस-किस का सामान करें ।
अब यां से आगे सुनो, बातें हैं यह ठीक ।
आये शिव जिस तरह वां द्वारे के नज़दीक ।।

जिस आन बरात आई दर पर, यह ख़ूबी ठहरी जेब भरी ।
वह परियां नाचीं तख़्तों पर, झनकारें मार मजीरों की ।।
वह डंके लगते धौंसे पर, धुन करना सरना की ऊंची ।
दरवाज़े कोठे गूंज रहे, आवाज़ सुहानी उनकी थी ।।
वह तबल बजें और डफ़ले भी नक़्क़ारे ताशे और तुरई ।
वह दहल झलनी के बाज रहे, और घर घर में आवाज़ गई ।।

पाठान्तर—का० घर आके

कुल ज़ेब[३०] बराती चार तरफ़ और बीच सवारी दूल्हा की।
सब छज्जे छज्जे कोठों पर, वां देखें ज़ीनत और ख़ूबी ॥
सब वाह करें और चाह करें और ठाठ को देखें घड़ी घड़ी ।
हों देख के सूरत दूल्हा की वां सौ सौ दिल से बलिहारी ॥
वह आती थी जो साथ लदी और आतिशबाज़ी भी छुटती।
मेहताब अनार और फुलझडियां हथफूल हवाई ख़ूब कड़ी ॥
एक पहर तलक दरवाजे पर वां फूल रही फुलवारी सी ।
सब हाथी घोड़े बैल उछले, ग़ुल शोर हुआ और धूम मची ॥
सब शाद हुए ख़ुश वक़्त हुए यह देख तमाशे ख़ूबी के।
कर वस्फ़ बहुत बलिहार हुए उस दूल्हा की महबूबी के ॥
अब यां से आगे सुनो, शादी के रसम(२७) और ।
जिसकी हर एक रस्म से, जां ख़ुश हो फ़िलफ़ौर[३१] ॥

जब राजा के दरवाज़े पर हुई आन बरात इस तौर खड़ी ।
सब बाजे बाजे देर तलक और छूटी आतिशबाज़ी भी ॥
जब समधी आये मिलने को और समध मिलावे की ठहरी।
उस वक़्त बुलाया दूल्हा को, तो होवे ज़ेब मन्दिर की भी ॥
जब दूल्हा ड्योढ़ी बीच गए, तब निकली सुन्दर सौ चेरी।
ले आई मन्दिर में दूल्हा को, खुश होती और अरघ देती ।
वह चांद सा मुख वह सर सहरा, वह पहुंचे(२८) कंगना तार ज़री।
वह रूप सुहाना जब देखा, हुई सबके मन के बीच ख़ुशी ॥
कोई बोला दूल्हा ख़ूब मिला, इस दूल्हा के मैं बलिहारी ।
कोई बोली मैं इस दूल्हा पर अब वारूँ मन मन भर मोती ॥
कोई देखके(२९) होती शाद बहुत, कोई वार के पानी पीती थी ।
छन कह कर उस जा दूल्हा ने, ली नेग अशर्फ़ी बहुतेरी ॥
इस तौर कहे छन ख़ूबी से, जो हर एक मुंह को देख रही ।
सब महलों मन्दिर बीच हुई, आनन्द ख़ुशी और ख़ुश वक़्ती ॥
जब बैठे दूल्हा मन्दिर में, मन बीच ख़ुशी की बात लिए।
जनमासे बीच बरात उतरी, वह ठाठ ख़ुशी का साथ लिए ॥
अब यां से आगे सुनो, इस सूरत की बात।
जनमासे में जिस तरह, बैठी आन बरात ।

पाठान्तर—(२७) क़ा० श० जा० रस्म (२८) क़ा० पहुंची (२९) जा० देखे

[३०] शोभित [३१] तुरन्त

कुछ जनमासे के बीच गए, कुछ बैठे जा दालानों में।
कुछ आंगन में कुछ बैठक में, कुछ बैठे बालाख़ानों में[३२] ।।
कुछ आन बिराजे ड्यौढ़ी में, मशग़ूल[३३] ख़ुशी की बातों में ।
कुछ बाहर आकर बैठ रहे, कुछ बैठे रथ और मियानों में।।
हर ठौर बजे करना सरना, और तुरई तबल भी महलों में।
हर जानिब धोंधों बाज रहे, नक़्क़ारे रस्ते कूचों में।।
और बाजें नौबत झांझ पड़ी और शादी की रंग रलियों में ।
कुछ बात न समझे कान धरी उन बाजों में उन धोंसों में।
कुछ मियाने रथ और घोड़बहल ला आन खड़ी की राहों में।
कुछ घोड़े उछलें बैल लड़ें, कुछ हाथी झूमें(३०) गलियों में।।
थे जितने वां बाज़ार बने कुछ उतरे उन बाजारों में ।
और जितने वां थे बाग़ लगे, कुछ उतरे जा उन बाग़ों में।।
जब ठौर न पाई बस्ती में, कुछ उतरे शहर सवादों मैं।
वां डेरे तम्बू तान लिये और बैठे ख़ुश उन डेरों(३१) में ।।
वह थे वां जिस जिस तौर उपर कुल फ़रहत[३४] के आहंग हुए।
ग़ुल शोर हुए और नाच हुए और राग हुए और रंग हुए।।
अब यां से आगे सुनो, इसका भी बिस्तार ।
जिस जिस तौर से आन कर ठहरी वां ज्यौनार ।।

जिस वक़्त बराती बैठ चुके तब राजा ने वां लोगों को।
यह हुक्म किया अब ख़ूबी, से उन सबको जाकर भोजन दो ।।
सब चाकर नौकर जल्द चले और जनमासे में आकर वो ।
यूं बोले अब सब कृपा कर ज्योंनार मन्दिर के बीच चलो ।।
अब तुम भी(३२) जैमो और उनको दिलवाओ जिन्हें दिलवानी हो।
हैं मुकते ढेर मिठाई के, दरकार हों जितने उतने लो ।।
इस बात को सुनकर हंस बोले, है ख़ूब पर इतनी बात सुनो।
यह दो बालक जो बैठे हैं, तुम पहले उनको जिमवादो ।।
वह गोद उठाकर ख़ुश होते ज्योंनार में लाये दोनों को ।
थे जितने वां अम्बार लगे, और ढेर मिठाई के थे जो ।।

पाठान्तर—(३०) जा० झूले (३१) क़ा० बागों, जा० बीरानों (३१) श० आ० तुम अब भी

३२. अटारियाँ ३३. व्यस्त ३४. प्रसन्नता आनन्द

एक डेढ़ निवाला कर बैठे फिर मचले अब कुछ और रखो ।
उन लोगों के तब होश गए और भागे वां से लरज़ां[35] हो ।।
यह बात कही जब राजा से, तब वह भी अपनी सुध बुध खो ।
हैरान हुए और चुप रह गए, मन बीच बहुत शर्मिन्दा हो ।।
मग़रूर[36] हुए थे कह कर यूं जा भोजन के अंबार करें ।
सो उसकी तो यह शक्ल हुई अब काहे को ज्योनार करें ।।
अब यां से आगे सुनो, ख़ुश होकर यह शान ।
जैसे दूल्हा के हुए फेरों के सामान ।।

जब साअत आई फेरों की, तब ठहरी उस जा यह ख़ूबी ।
घर बीच बुलाया दूल्हा को और फेरों की तैयारी की ।।
कुछ बैठे लोग इधर ऊधर सब अपने मन के बीच ख़ुशी ।
जो फ़र्श मुक़र्रर[37] है उस पर आ बैठे दूल्हा दुल्हन भी ।।
जब दूल्हा दुल्हन मिल बैठे तब रीत हुई गंठजोड़न की ।
वह पंडित आये हवन किया, सब लाकर इसकी चीज़ रखी ।।
सब पंडित बैठे वेद पढ़ें, कोई बैठा डाले शक्कर घी ।
गनेश की पूजा करके वां फिर पूजा की नौ ग्रहों की ।।
भर थाल जवाहर नेग मिलें, लें जल्दी सो इसे और नेगी ।
और ले ले नेग दुआएं दें, सब दूल्हा दुल्हन को बेगी ।।
सुभ साअत नेक महूरत से, वह दूल्हा दुल्हन रूप भरी ।
इस तौर फिरें मिल आपस में है रीत जो होती फेरों की ।।
जब फेरे चार हुए आकर कुल ऐशो तरब की धूम मची ।
हर चार तरफ़ चमकी झमकी ख़ुशहाली(३३) ख़ूबी ख़ुश वक़्ती ।।
हर मन में सौ सौ ऐश भरे और फ़रहत से पहचान हुई ।
है जग में जो आनन्द ख़ुशी, वह ज़ाहिर सब उस आन हुई ।।
अब यां से आगे सुनो, और बचन दो चार ।
आये बाहर शाद हो, दूल्हा जिस अतवार ।।

वह फेरे भी जिस वक़्त हुए इस ख़ूबी और ख़ुश वक़्ती से ।
जो रस्में और मुअय्यन[38] थीं, उनसे भी सब शाद हुए ।।
दस रोज़ हुए फिर टहले में और चाव बर आये सब दिल के ।
शिव बाहर आये मंडल से, जूं सूरज वक़्त सहर निकले ।।

---

[35] कंपित [36] गर्वित, घमण्डी [37] तय [38] निर्धारित

पाठान्तर—(३३) जा० चमकी ख़ुशहाली

वह चीरा सर पर चमक रहा वह मुकुट जड़ाऊ भी दमके ।
तन बागा झलके हर साअत, और लालों की माला चमके ॥
कुछ कानों मोती चमक रहे कुछ बांक झमकते बाजू के ।
सौ ज़ेब झमक से ख़ुश होते आ मसनद(३४) पर अपने बैठे ॥
वह ख़ूबी सोभा दूल्हा की, सब देखें वां के लोग खड़े ।
सब होकर ख़ुश यह बात कहें, यह दूल्हा ऊपर ठाठ बड़े ॥
वह देखें अपनी आंखों से हों जग में भाग बड़े जिनके ।
वह राजा रानी शाद बहुत, और लोग ख़ुशी सब कुनबे के ॥
वह चेरा चेरी भी ख़ुश दिल और नौकर चाकर ख़ुश फिरते ।
उस नगरी के ताले[३९] चमके, उन लोगों के भी बख़्त[४०] खुले ॥

> जिस तौर हुई वह ख़ुश हाली कब उसकी हालत जाय कही ।
> हर चार तरफ़ ख़ुश वक़्ती के सौ शोर हुए और धूम हुई ॥
> अब यां से आगे सुनो, बात ख़ुशी आमेज़ ।
> जो जो राजा ने दिया, उस जा दान दहेज़ ॥

जिस आन हुए शिव चलने को, तब लाकर यह असबाब धरे ।
पोशाकें रंगीं ज़ेब भरीं, हर तार पड़ा जिनका झमके ॥
ज़र ज़ेवर के वां ढेर लगे, जो बाहर होवे गिनती से ।
वह मोती हीरे अनमोले, वह लाल ज़ुमुर्रद के डिब्बे ।
वह कलसे बट्टे चांदी के वह थाल कटोरे सोने के ।
वह फ़र्श सुनहरे नक़्श भरे जो बिछते महलों बीच बड़े ॥
वह चीरे ख़ूब लिबासों के और गिनती में भी बहुतेरे ।
वह चेरियां अच्छी सूरत की, सर पांव तलक ज़ेवर पहने ॥
वह कुंजर झूल झलकनी के अंम्बारी जिन पर और होदे ।
वह घोड़े गुलगूं मिस्ल हवा ज़रदोज़ी[४१] जिन पर जीन बंधे ।
चंडोल झलकते वह जिन पर, बानात ज़री के थे पर्दे ।
हथ बहले और घोड़ बहलें, सब ठाठ चमकते जिनके थे ॥
वह रंगी झालरदार रथें, वह बैल बहुत जिनके ऊंचे ।
यह ठाठ रखा दरवाज़े पर और बुगदी बोझ उठाने के ॥

पाठान्तर—(३४) क़ा० श० आ० मन्दिर

[३९] भाग्य [४०] भाग्य [४१] सुनहरी कढ़े हुए

थे जितने शादी ब्याह निमत, सामान जो वां तैयार हुए ।
हर ठाठ के वां दरवाजे पर, हर जानिब सौ अम्बार हुए ॥
अब यां से आगे सुनो, राजा ने उस आन ।
जो बातें शिव से कहीं, उनका किया बयान ॥

यह ठाठ किये धन दौलत के, तब राजा शिव से यूं बोले ।
कुछ बन नहीं आया जो हमसे मन बीच हुए हम शर्मिन्दे ॥
किस लायक़ हैं जो देते हम असबाब तुम्हारे लायक़ के ।
तुम अच्छे जग में ऐसे हो, जो पालते हो लाखों हमसे ॥
हैं भाग हमारे बहुत बड़े, जो चरन तुम्हारे हम देखे ।
इस नगरी में इस मण्डल में, तुम आये अपनी कृपा से ॥
तुम थाम न लेते जो हमको, फिर कहिये क्यूं कर हम थमते ।
जो कृपा तुमने हम पर की कब स्तुति इसकी हो हमसे ॥
हम चीज़ नहीं कुछ गिनती की और तुम हो लाखों ख़ूबी के ।
इस आन दया जो आपने की, वह देखी काहे को हमने ॥
हर वक़्त हमारी बांह रहो, कर कृपा से अपनी गहते ।
मन बीच हुए हम बहुत ख़ुशी और भाग हमारे जाग उठे ॥
तुम लाज हमारी रखने को, हर आन रहो कृपा करते ।
जो मन में थी सो बात कही अब और कहें क्या हम आगे ॥
जब राजा ने यह बात कही, और हर दम अधिक अधीनी की ।
तब शिव ने हंसकर राजा के, वां मन की बहुत तसल्ली की ॥
अब यां से आगे सुनो, मन इधर को लाय ।
पार्वती वां जिस तरह घर से हुई बिदाय ॥

जब शिव ने वां यह हुक्म किया, तैयारी हो अब चलने की ।
और आप मन्दिर के बीच गए, तो होवे विदा वां दुलहन की ॥
यह बात बिदा की सुनते ही, वां गोरा की मां यूं बोली ।
सब तौर तुम इसके मालिक हो, यह चेरी मैंने तुमको दी ॥
मन इसका रखियो बहुत ख़ुशी, मत मैला कीजो इसका जी ।
यह प्यारी है मन की मेरी और रौशनी मेरी आंखों की ॥
यूं कहकर बोली गोरा से; मिल मुझसे मेरी पार्वती ।
जब गोरा प्यारी दौड़ गले, वां अपनी मां के आ लिपटी ॥
वह मां भी रोई देख उसे और रोई जितनी थीं घर की ।
मां देख के रोती गोरा को, कर प्यार उसे यूं कहती थी ॥

तू आंखें रो रो लाल न कर, मैं तेरे मुख के बलिहारी ।
कुछ अपने मन के बीच न ला, मैं तुझको जल्द बुलाऊंगी ।।
फिर आख़िर वां इस रोती को, कर प्यार बहुत सा घड़ी घड़ी ।
चंडोल मंगाकर ड्योढ़ी पर वां सबने रोती बिठलाई ।।
सच पूछो तो मां बाप तई, है बेटी से यां प्यार बहुत ।
जिस वक़्त वह ब्याही जाती है, तब होते हैं लाचार बहुत ।।
अब यां से आगे सुनो इतनी यह भी बात ।
जैसे वां उस देस से, शिव की चली बारात ।।

जब ड्योढ़ी से चंडोल उठा, दरवाजे पर सो ख़ूबी से ।
नौछावर इतनो की उस पर, कुल मोती फूल ज़री बिखरे ।।
उस वक़्त बहुत ख़ुश वक़्ती से शिव शंकर भी असवार हुए ।
वह ख़ूबी हिश्मत[४२] चार तरफ़, सब साथ बराती ज़ेब भरे ।।
असवारी दूल्हा की आगे, चंडोल दुल्हन का था पीछे ।
वह बाजे लाये साथ जो थे, सब हर दम बजते साथ चले ।।
असबाब दिये जो राजा ने, थे उसके जाते ऊंट लदे ।
वह जितने चेरा चेरी थे, सब रथ और मियानों में बैठे ।।
वह हाथी घोड़े हर जानिब, अम्बारी ज़ीन झमकते थे ।
उस देस के रहने वाले भी, सब देखने निकले घर-घर से ।।
हर कोठे-कोठे भीड़ लगी, और रस्ते रस्ते लोग भरे ।
गुल शोर ख़ुशी के चार तरफ, सब देखें वां वह ठाठ बड़े ।।
जिस तौर ख़ुशी से ब्याहने को, शिव आये घर में राजा के ।
फिर वैसी ही ख़ुश वक़्ती से, कैलाश के ऊपर जा पहुंचे ।।
यूं ठाठ हुआ, यूं ब्याह हुआ, बस और न आगे रे बोलो ।
दंडौत करो हर आन 'नज़ीर', और हर दम शिव की जै बोलो ।।

---

[४२] आतंक, रौब

हंसनामा

दुनियां की जो उल्फ़त का हुआ उसको सहारा ।
और उसने खुशी को मेरी ख़ातिर में उतारा ।।
देखी जो यह ग़फ़लत तो मेरा दिल यह पुकारा ।
आया था किसी शहर से एक हंस बिचारा ।।
एक पेड़ प जंगल के हुआ उसका गुज़ारा ।।

चंडूल, अगन, अबलके झप्पान बने ढैयर ।
मीना व बये किलेकिले, बगले भी समनबर[१] ।
तोते भी कई तौर के, टुइयाँ कोई लहबर ।
रहते थे बहुत जानवर उस पेड़ के ऊपर ।।
उसने भी किसी शाख़ पै घर अपना संवारा ।।२।।

बुलबुल ने किया उसकी मुहब्बत में ख़ुश आहंग ।
और कोकिले कोयल ने भी उल्फ़त को लिया संग ।।
खंजन में कुलंगों में भी चाहत की मची जंग ।
देखा जो तयूरों ने उसे हुस्न में खुश रंग ।।
वह हंस लगा सबकी निगाहों में पियारा ।।३।।

सीमुर्ग[२] भी सौ दिल से हुए मिलने के शायक़ ।
गुढ़ पंख भी पंखों के हुए झलने के लायक़ ।।
सारस भी, हवासिल भी हुए उसके मुआफ़िक़ ।
बाज़ लगड़ व जर्रओ शाहीं हुए आशिक़ ।।
शिकरों ने भी शक्कर से किया उसका मुदारा[३] ।।४।।

---

[१] सफेद रंग के
[२] क़ाफ़ पर्वत पर रहने वाला बड़ा पक्षी
[३] सम्मान

कुछ सब्ज़को बड़नक्के व कुछ टनटनो बर्रे ।
पिडंख़ी से लगा टोबड़ों क़ुमरी व हरीवे ॥
गुगाई बगेरी ब लटूरे व पपीहे ।
कुछ लाल चिड़े पोदने पिद्दे ही न ग़श थे ॥
पिदड़ी भी समझती थी उसे आंख का तारा ॥५॥

चाहत के गिरफ्तार बटेरें लवें तीतर ।
कुबकों के तदरुओं के भी चाहत में बंधे पर ॥
हुदहुद भी हुए हित के बढ़ैया इधर उधर ।
ज़ाग़ो[4] ज़ग़न[5] व तूतिओ ताऊसो[6] कबूतर ॥
सब कर ने लगे उसकी मुहब्बत का इशारा[7] ॥७॥

शक्ल उसकी वहीं जी में खपी शामचिड़े के ।
दी चाह जता फिर उसे झांपू ने भी झप से ॥
हरियल भी हुए उसके बड़े चाहने वाले ।
जितने ग़रज़ उस पेड़ पै रहते थे परिन्दे ॥
उस हंस पर उन सबने दिलो जान को वारा ॥७॥

ख़्वाहिश[8] यह हुई सबकी कि हर दम उसे देखें ।
और उसकी मुहब्बत से ज़रा मुंह को न फेरें ॥
दिन रात उसे ख़ुश रक्खें नित सुख उसे देवें ।
सोहबत[9] जो हुई हंस की उन जानवरों में ॥
यक चंद रहा ख़ूब मुहब्बत का गुज़ारा ॥८॥

सब होके ख़ुश उस की मये उल्फ़त[10] लगे पीने ।
और प्रीत से हर एक ने वहां भर लिए सीने ॥
हर आन जताने लगे चाहत के क़रीने[11] ।
उस हंस को जब हो गये दो चार महीने ॥
एक रोज़ वह यारों की तरफ़ देख पुकारा ॥८॥

---

[4] कौआ [5] चील [6] मोर [7] संकेत [8] इच्छा [9] संगति [10] प्रेम-मदिरा [11] ढंग

यां लुत्फ़ो करम[१२] तुमने किये हम पै हैं जो जो ।
तुम सबकी यह ख़ूबी है कहां हमसे बयां हो ॥
तक़सीर[१३] कोई हम से हुई होवे तो बख़्शो ।
लो, यारो, हम अब जावेंगे कल अपने वतन को ॥
अब तुमको मुबारक रहे यह पेड़ तुम्हारा ॥९॥

अब तक तो बहुत हम रहे फ़ुर्सत से हम आग़ोश ।
अब यादे वतन दिल की हमारे हुई हमदोश[१४] ॥
जब हर्फ़ेजुदाई[१५] का परिन्दों ने किया गोश[१६] ।
इस बात के सुनते ही जो हर इक के उड़े होश ॥
सब बोले यह फ़ुर्क़त[१७] तो नहीं हमको गवारा ॥१०॥

बिन देखे तुम्हारे हमें कब चैन पड़ेंगे ।
एक आन न देखेंगे तो दिल ग़म से भरेंगे ॥
गर तुमने यह ठहराई तो क्या सुख से रहेंगे ।
हम जितने हैं सब साथ तुम्हारे ही चलेंगे ॥
यह दर्द तो अब हमसे न जावेगा सहारा ॥११॥

फिर हंस ने यह बात कही उनसे कई बार ।
कुछ बस नहीं, अब चलने की साअ़त से हैं नाचार ॥
आंखें हुईं अश्कों से परिन्दों की गुहरबार[१८] ।
उसमें जो शबे कूच की हुई सुब्ह नमूदार[१९] ॥
पर अपना हवा पर वहीं उस हंस ने मारा ॥१२॥

वह हंस जब उस पेड़ से वां को चला नागाह[२०] ।
मुंह फेर के इधर से वतन की जों ही ली राह ॥
देखा जो उसे जाते हुए वां से तो कर आह ।
सब साथ चले उस के वह हमराज[२१] हवा ख़्वाह ॥
हर एक ने उड़ने के लिए पंख पसारा ॥१३॥

---

१२. कृपा १३. ख़ता, भूल १४. साथी, सहयोगी १५. वियोग-शब्द १६. सुनना, कान १७. वियोग
१८. मोती बरसाना, आंसू बहाना १९. प्रकट २०. अचानक २१. मित्र

और हंस की उन सबको रफ़ाक़त[22] हुइ ग़ालिब ।
जब वां से चला वह तो हुई बे बसी ग़ालिब ॥
उल्फ़त[23] थी जो फ़ुर्क़त[24] की वह सब पर हुई ग़ालिब ।
दो कोस उड़े थे जो हुई माँदगी[25] ग़ालिब ॥
फिर पर में किसी के न रहा कुव्वतोयारा[26] ॥१४॥

पर उनके हुए तर जों हीं दूरी की पड़ी ओस ।
रोए कि रफ़ाक़त की करें क्यूं कि क़दमबोस[27] ॥
थक थक के लगे गिरने तो करने लगे अफ़सोस ।
कोई तीन, कोई चार, कोई पांच उड़ा कोस ॥
कोई आठ, कोई नौ, कोई दस कोस में हारा ॥१५॥

कुछ बन न सके उनसे रफ़ीक़ी[28] के जो वां कार ।
और इतने उड़े साथ कि कुछ होवे न इजहार ॥
जब देखी वह मुश्किल तो फिर आख़िर के तईं हार ।
कोई यां रहा, कोई वां रहा, कोई होगया नाचार ॥
कोई और उड़ा आगे(१) जो था सब मैं करारा ॥१६॥

थी उसकी मुहब्वत की जो हर एक ने पी मै ।
समझे थे बहुत दिल में वह उल्फ़त को बड़ी शै ॥
जब हो गए बेबस तो फिर आख़िर यह हुई रै ।
चीलें रहीं, कौए गिरे, और बाज़ भी थक गै ॥
उस पहली ही मंजिल में किया सबने किनारा ॥१७॥

दुनिया की जो उल्फ़त है तो उसकी है यह कुछ राह ।
जब शक्ल यह होवे तो भला क्यूंकि हो निर्वाह ॥
नाचारी हो जिस जाँ में तो वां कीजिए क्या चाह ।
सब रह गए जो साथ के साथी थे 'नज़ीर' आह ॥
आख़िर के तईं हंस अकेला ही सिधारा ॥१८॥

पाठान्तर—(१) क़ा० आके

२२. मित्रता २३. प्रेम २४. वियोग २५. थकान २६. शक्ति और हिम्मत २७. पद स्पर्श २८. मैत्री

क़िस्सा लैला मजनूं

पहले तो हम्द[१] ख़ालिक़े अर्ज़ो समां[२] लिखूं ।
बाद उसके फिर मैं नाते शहे अम्बिया[३] लिखूं ।।
गर उम्र भर मैं इसको लिखूं तो भी क्या लिखूं ।
बेइन्तिहां[४] है वह तो ग़रज़, ताकुजा[५] लिखूं ।।
लाज़िम है इसमें तबा[६] को इज्ज़इन्तिमा[७] लिखूं ।
कुछ वस्फ़ हुस्न का लिखूं कुछ इश्क़ का लिखूं ।।
कुछ नाज़, कुछ नियाज़, बफ़िक्रेरसा[८] लिखूं ।
है जी में लैला मजनूं का कुछ माजरा लिखूं ।।
सच पूछिये तो दोनों अज़ब काम कर गए ।
माशूक़ी आशिक़ी में ग़रज़ नाम कर गए ।।१।।

पैदा हुआ था क़ैस जब अपने पिदर के घर ।
मां बाप को हुई थी ख़ुशी सबसे बेशतर[९] ।।
कुनबे के लोग बैठें थे बाहम सब आन कर ।
एक धूम रही थी ख़ुशी की इधर उधर ।।
चूमे था बाप क़ैस के हरलहज़ा[१०] चश्मो सर ।
रखते थे हाथों छाओं उसे गरचा बे ख़तर ।।
मां भी लिये फिरी थी उसे अपने दोश[११] पर ।
फ़रज़ंन्द[१२] की ख़ुशी में लुटाती थी सीमोज़र[१३] ।
लेकिन वह मां की गोद में आकर न सोता था ।
हर वक़्त शोर करता था हर लहज़ा रोता था ।।२।।

---

[१] स्तुति
[२] धरती-आकाश का निर्माता, ईश्वर
[३] नबियों के शहंशाह, मुहम्मद साहब (सल०)
[४] असीम
[५] कहाँ तक
[६] स्वभाव
[७] विनीत वर्धक, अशक्त
[८] सोच-बिचार कर, विद्वतापूर्ण
[९] अधिक
[१०] प्रतिक्षण
[११] कांधा
[१२] पुत्र
[१३] चांदी-सोना, धन-दौलत

मादर थपक थपक के सुलाती थी करके प्यार ।
फिरता था बाप फ़ाल दिखाता ब चश्मे ज़ार[१४] ।।
ताबीज़ डालता था गले बीच बे शुमार ।
लेकिन उसे क़रार न आता था ज़ीनहार ।।
रहता था एक फ़क़ीर कोई वां बुज़ुर्गवार ।
जिस दम वह हाल उस पै किया जाके आश्कार[१५] ।।
सुनते ही उसने आह की और होके अश्क बार ।
मजनूं के बाप से यह कहा उस घड़ी पुकार ।।
दुख पाने वाले लड़के जो दुनिया में आते हैं ।
लच्छन सब उनके पहले ही पहचाने जाते हैं ।।३।।

लड़का तेरा यह आशिक़ सरशार[१६] होवेगा ।
महफ़िल में आशिकों की नमूदार होवेगा ।।
जुल्फ़ों में नाज़नी[१७] के गिरफ़्तार होवेगा ।
चश्मे करश्मए साज़ का बीमार होवेगा ।।
नाज़ो अदा का दिल से ख़रीदार होवेगा ।
दीदारख़ूबरू[१८] का तलब गार होवेगा ।।
रम्ज़ों से आशिक़ी के ख़बरदार होवेगा ।
रुसवाए[१९] शहरो कूचओ बाज़ार होवेगा ।।
तदबीर यह न रोने की इसके किया करो ।
तुम गुलरुख़ों की गोद में इसको दिया करो ।।४।।

मजनूं का बाप सुनते ही घर की तरफ़ फिरा ।
आया तो गुलरुख़ों की उसे गोद में दिया ।।
जब उन परीरुख़ों ने उसे प्यार टुक किया ।
था वह जो रोना धोना सो मौक़ूफ़[२०] हो गया ।।
मां बाप का दिल उसके तईं देख ख़ुश हुआ ।
बारे इसी तरह से हुआ जब वह कुछ बड़ा ।।
मक्तब में उसके बाप ने लाकर बिठा दिया ।
एक क़ायदा भी सामने उस तिफ़्ल[२१] के रखा ।।
मक्तब को देख क़ैस ने होश अपना खो दिया ।
देखा जो क़ायदे को भी, यारो तो रो दिया ।।५।।

---

१४. चिंतित १५. प्रकट १६. मस्त १७. कोमल सुन्दरी १८. सुन्दरी १९. कुख्यात, बदनाम २०. समाप्त २१. बच्चा

उस्ताद ऐसे बैठे कि पूजें वह इश्क़ को ।
रूए(१) सुखन में उनके मये आशिक़ी की बू ॥
जो कुछ पढ़े तो यूं कहें ग़म के गुहर पिरो ।
तख़्ती लिखें तो बोलें इसे आंसुओं से धो ॥
मानी जो पूछे तो कहें सब्रो क़रार खो ।
तक़रीर पूछे तो यह कहें उसके रू बरू ॥
दिल देके ख़ूबरू की मुहब्बत में ख़ूब रो ।
बाइस[२२] जो इश्क़ के थे वह हाज़िर थे दोस्तो ॥
चाहत की पाकबाज़ी[२३] का हर दम रिवाज था ।
लड़का भी इब्तिदा[२४] ही से आशिक़मिजाज[२५] था ॥६॥

इसके सिवाय और वह जादू ब हर(२) किनार ।
लड़के जो उसमें बैठे सो ऐसे वह गुल इज़ार ॥
सूरत को जिनकी देख के बुलबुल हो बेक़रार ।
अन्दर तो क़ातिलों का वह मजमा[२६] सितमशआर[२७] ॥
बाहर पड़े तड़पते थे मुश्ताक़[२८] दिलफ़िगार[२९] ।
उनके सिवा यह और क़यामत थी आश्कार[३०] ॥
जो उनमें लड़कियां भी कई थीं हयानिगार[३१] ।
जादू पै जादू जब यह हुआ आन कर दो चार ॥
दीवानगी के बढ़ने का दीवान हो गया ।
मक्तब वह उसके हक़ में परिस्तान हो गया ॥७॥

हुस्नो अदा का नाज़ का देखा जो इत्तियाम[३२] ।
उन लड़कियों में एक जो लड़की थी खुशख़िराम[३३] ॥
थी शर्मगीं वह नाज़नीं लैला था उसका नाम ।
ज़ुल्फ़ उस सनम की हो गई मजनूं के दिल की दाम ॥
बिन दाम उसने कर लिया मजनूं के तईं ग़ुलाम ।
उसके भी दिल में उल्फ़ते मजनूं का अज़दहाम[३४] ॥

पाठान्तर—(१) जा० आवे (२) क़ा० भरा

२२. कारण २३. पवित्रता २४. आरम्भ २५. प्रेम-स्वभाव २६. भीड़ २७. कष्टदायक २८. इच्छुक २९. दिलजले ३०. प्रकट ३१. लाजभरी ३२. परस्पर लीन ३३. अच्छी चाल वाली, सुगामिनी ३४. धूम

ऐसा हुआ कि बढ़ने लगा जी में सुबहो शाम ।
चाहत की मै के पी लिए आपस में भर के जाम ।।
तक़दीर से जो चाह का रौशन क़लम हुआ ।
दोनों दिलों पैं हर्फ़े मुहब्बत रक़म हुआ ।।८।।

यह चाहता था उसको उसे वह लुभाती थी ।
चाहत जो यह जताता था वह भी जताती थी ।।
सनमुख निगाह निगाह से न हरगिज़ लड़ाती थी ।
पर नीची नीची नज़रों से कुछ मुस्कराती थी ।।
ज़ाहिर में तो हर एक से वह चाहत छुपाती थी ।
लेकिन वह दिल ही दिल में मुहब्बत बढ़ाती थी ।।
मक्तब से जब वह नाज़नीं टुक घर को जाती थी ।
मजनूं के दिल पे तब तो क़यामत(१) ही आती थी ।।
होता हुजूम जी में जो था इज़तिराब[३५] का ।
एक एक वरक़ बिखरता था दिल की किताब का ।।९।।

तख़्ती को लेके जब वह क़लम को उठाता था ।
मश्क़ेअलिफ़[३६] में आह की मद्द[३७] दिखाता था ।।
बे की कशिश में तूलेतपिश[३८] को जताता था ।
नुक़्ते की जाये क़तरये आंसू बहाता था ।।
लिखने में मीम के जो क़लम को हिलाता था ।
नक़्शेदहन[३९] सनम का उसे याद आता था ।।
जिस वक़्त ऐन लिखने में दिल को लगाता था ।
देख उसको चश्मे यार तसव्वुर[४०] में लाता था ।।
तख़्ती वह क्या थी दफ़्तरे रंजो मलाल[४१] था ।
लिखने की बात पूछो तो उसका यह हाल था ।।१०।।

जाती थी जब वह घर में तो उसका भी था यह हाल ।
मक्तब में जल्द जाने का था दम ब दम ख़याल ।।
होतीं थीं चुपके रोने से आंखें जब उसकी लाल ।
जो पूछता था उससे कोई मूजिबेमलाल[४२] ।।

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० सी

३५. बेचैनी ३६. अलिफ़ लिखने का अभ्यास ३७. 'आ' के स्थान पर प्रयुक्त चिह्न ३८. व्याकुलता की लम्बाई, 'बे को लम्बाकर के लिखना' ३९. मुख का रूप ४०. कल्पना, ध्यान ४१. दुख-दर्द का लेखागार ४२. दुख का कारण

कहती थी आंख में जो पलक का गया है बाल ।
होता है इस सबब मेरे अश्कों का इत्तिसाल[४२] ॥
मजनूं से मिलने का जो उसे शौक़ था कमाल ।
एक दम के दूर रहने में होता था जी निढाल ॥
जाती थी जल्द फिर उसी उनवान[४३] आती थी ।
मजनूं के तन में देख के फिर जान आती थी ॥११॥

कितने दिनों तो रोज़ ही हमराज़ियां[४४] हुईं ।
उल्फ़त की ताज़ा ताज़ा तर अन्दाज़ियां हुईं ॥
चाहत की हर किसी से निहांसाज़ियां[४५] हुईं ।
हरगिज़ न इत्तिहाम[४६] न ग़म्माज़ियां[४७] हुईं ॥
ने इफ़तिरा[४८] हुआ न दर अन्दाज़ियां[४९] हुईं ।
शौक़े दरूं[५०] की आइना परवाज़ियां हुईं ॥
छुप छुप के हम दिगर की नज़र बाज़ियां हुईं ।
यक्ता दिली में तबा की अंम्बाज़ियां हुईं ॥
मक्तब के बीच गुल की तरह से खिले रहे ।
नाज़ो नियाज़ क्या ही घुले(१) और मिले रहे ॥१२॥

छुट्टी जो मिलती और तो सब लड़के लड़कियां ।
हंसते उछलते कूदते कर करके बाज़ियां[५१] ॥
लैला के आंसू होते थे रुख़सार पर रवाँ ।
कहती थी हो जो रात की जल्दी सहर अयां ॥
तो जाके देखूं मजनूं को मक्तब के दर्मियां ।
मजनूं भी हर बहाने से ता शाम उसके हां ॥
जाता था देखने उसे रह रह के दर्मियां(२) ।
जब होती रात घर में फिर आता था नीमजां[५२] ॥
लैला की याद दिल को जो हर दम सताती थी ।
आंखों में नींद उसके सहर तक न आती थी ॥१३॥

पाठान्तर—(१) जां० खिले (२) आ० दोस्तां

[४२] निरन्तर, गिरना [४३] वैसे ही [४४] परस्पर छुप कर बात करना [४५] छुपाना [४६] आरोप [४७] प्रकटीकरण [४८] आरोप [४९] अटकलें, अनुमान [५०] मनोकामना [५१] शर्त लगाना [५२] थका मांदा, अर्द्धमुआ

होती थी जब सहर तो वह मक्तब में आता था ।
लैलो को पहले आने से अपने वह पाता था ॥
उस गुन्चा लब के मुंह से जो वह मुंह(३) मिलाता था ।
गुल की तरह से दिल में न फूला समाता था ॥
मिलने का इश्तियाक़[५३] हर एक दम सताता(४) था ।
दिल की तलब को अपनी निगाह से जताता था ॥
जब हर्फ़ेशौक़[५४] लैला के लब से बर आता था ।
उस नाज़नीं की चाह पै क़ुर्बान जाता था ॥
कहता था "मैं गुलाम तेरा बेतमीज़[५५] हूं" ।
कहती थी हंस के वह भी "मैं तेरी कनीज़[५६] हूं" ॥१४॥

फिर घर में अपने जाती जो महबूब दिल रुबा ।
मजनूं जो कुछ सनम से निशानी था मांगता ॥
देती वह कुछ तो मजनूं से कहती थी "तू भी ला" ।
मजनं भी देता उसको तो लेकर वह महलक़ा[५७] ।
चूमे थी उस निशानी को सबसे छुपा छुपा ।
मजनूं भी हर घड़ी उसे आंखों पे रखता था ॥
रहते तमाम रात इसी धुन में मुब्तिला[५८] ।
आख़िर(५) को सुबह जब उन्हें देती थी मुंह दिखा ॥
मकतब में फिर तो आने की तशईद[५९] होती थी ॥
दोनों को वह सहर सहरे ईद होती थी ॥१५॥
जब तक यह ख़ुर्दसाल[६०] थी चाहत निहां[६१] रही ।
स्यानी हुई तो ताड़ने वालों पै कुछ खुली ॥
लोगों में चर्चे होने लगे उसके हर घड़ी ।
चाहत के गुल की बू न रही आख़िरश[६२] छुपी ॥
जाना किसी किसी ने मलामत किसी ने की ।
फिर तो वह फैली ऐसी कि पहुंची गली-गली ॥
कुछ बन सका न जब तो हुई उनको बे बसी ।
छुटपन की थी जो चाह तो हरगिज़ न छुट सकी ॥
आसां नहीं है रिश्तए उल्फ़त को तोड़ना ।
मुश्किल है बाले पन की मुहब्बत का छोड़ना ॥१६॥

पाठान्तर—(३) जा० मुंह को (४) आ० सुनाता (५) क़ा० श० आ० इसमें वह सुबह
[५३]. कामना, इच्छा [५४]. इच्छा [५५]. निःसन्देह [५६]. सेविका [५७]. चन्द्रमुखी [५८]. लिप्त [५९]. बेचैनी, जल्दी [६०]. अल्पायु [६१]. छुपी [६२]. अन्ततोगत्वा

पहुंची यह बात ख़ानएलैला[६३] में जिस घड़ी ।
मां बाप के दिलों में पड़ी ग़म की गुल छड़ी(१) ॥
लैला जब उनके रू बरू आकर हुई खड़ी ।
दोनों की तबै कसरतेतम्बीह[६४] पर अड़ी ॥
कुछ झिड़कियां दीं बाप ने कुछ मां हुई कड़ी ।
हैबत दिखाई और तक़य्युद[६५] भी की बड़ी ॥
तदबीर और इसके सिवा कुछ न बन पड़ी ।
मक्तब से उसको मना किया मार कर छड़ी ॥
महजूर[६६] कर दिया वहीं फ़रहत[६७] के साथ से ।
तख़्ती किताब छीन ली लैला के हाथ से ॥१७॥

बेबस हो घर में बैठ रही जब तो वह सनम ।
होशो हवास कर गए ख़ातिर से उसकी रम ॥
मजनूं की याद सफ़हयेदिल[६८] पर जो थी रक़म[६९] ।
"मजनूं" ही "मजनूं" कहती थी दिल में बदर्दो ग़म ॥
लैला की याद मजनूं पै करती थी यां सितम ।
तख़्ती कहीं पड़ी थी पड़े थे कहीं क़लम ॥
लैला की शक्ल फिरती थी आंखों में हर क़िसम ।
वां एक पल क़रार न यां चैन एक दम ॥
दोनों के सहने दिल में जो बेताबी होती थी ।
वां 'मजनूं' 'मजनूँ' होता था यां 'लैला' 'लैला' थी ॥१८॥

मजनूं के दिल पे जब यह सितमगारियां हुईं ।
फ़ुर्क़त[७०] के दर्दो ग़म की गिरफ़्तारियां हुईं ॥
हर आन बेबसी की मददगारियां हुईं ।
हर दम इधर उधर की दिल आज़ारियां हुईं ॥
उठने की नामो नंग की(२) तैयारियां हुईं ।
हिजरां[७१] की लहज़ा लहज़ा जिफ़ाकारियां[७२] हुईं ॥

पाठान्तर—(१) जा० झड़ी (२) श० आ के

[६३] लैला के घर [६४] घोर चेतावनी [६५] कैद, बन्धन [६६] वियोगी [६७] आनन्द [६८] हृदय-पट [६९] लिखी हुई [७०] विरह [७१] वियोग [७२] दुःखदायी

जितनी कि उसको मिलने की दुश्वारियां हुईं ।
उतनी ही उस सनम को भी नाचारियां हुईं ।।
जैसा कि उसके दिल के तईं रंजो(१) ताब था ।
वैसा ही नाज़नीं के तईं इज़्तिराब था ।।२१।।

कितने दिनों तो क़ैस रहा दिल संभालता ।
हर लहज़ा रंजो दर्द सहा इन्तिज़ार का ।।
जो फ़िक्र वस्ल होती है चाहत में जा बजा ।
उस बेक़रार ने भी किया सब वह ठक ठका ।।
लैला का जब गुज़र न उधर मुतलक़न[७३] हुआ ।
फिर तो घर अपना भी उसे लगने लगा बुरा ।।
मां बाप से भी रहने लगा हर घड़ी ख़फ़ा ।
समझाते थे जो उसके तईं ख़ुवेशोअक़रबा[७४] ।।
आंखों से आंसू बहते थे और लब ख़मोश था ।
हरगिज़ किसी की बात पै रखता न गोश था ।।२२।।

घबरा के था कभी यह(२) सरे बाम बैठता ।
कहता हवा से इस घड़ी लैला के पास जा ।।
कहियो मेरी तरफ़ से कि ऐ शोख़ दिलरुबा ।
तेगेनिगह[७५] से तूने जो बिस्मिल[७६] मुझे किया ।।
क्यूं मुझ से रूठ बैठी है ख़ातिर में हो ख़फ़ा ।
ऐ नाज़नीं, बता हुई तक़सीर[७७] मुझ से क्या ? ।।
लाज़िम है एक बार तू मेरे कने फिर आ ।
आकर किसी बहाने से फिर मुंह मुझे दिखा ।।
पहरों तलक यह हाल हवा को सुनाता था ।
बातें यह उससे कहता था और रोता जाता था ।।२३।।

जाता कभी चमन में तो होता वहां यह हाल ।
बुलबुल को वस्ल गुल में जो था देखना मुहाल(३) ।।
मिल बैठने का लैला के था बांधता खयाल ।
रो रो के आंखें करता था गुल की तरह से लाल ।।

पाठान्तर—(१) श० आ० पेचो ताव (२) क़ा० श० आ० जो (३) श० आ० देखता निहाल

[७३] कदापि [७४] भाई-बन्धु-सम्बन्धी [७५] नयन-कटारी [७६] घायल [७७] ख़ता, भूल

नर्गिस से चश्म लैला को देता कभी मिसाल ।
सुम्बुल से याद आते थे लैला के उसको बाल ॥
हर सर्व को समझ क़दे लैलाए ख़ुश जमाल ।
हर दम गले लगाता था बेताब हो कमाल ॥
दिल सख़्तिये फ़िराक़[७८] से जूं गुंचातंग[७९] था ।
घर में तो वह तरह थी चमन में यह रंग था ॥२४॥

लाता था बाप खींच के उसको घड़ी-घड़ी ।
चैन उसके दिल को घर में न होता था एक ज़री ॥
नाचार उसके पांव में ज़ंजीर डाल दी ।
ज़ंजीर की सदा से भी दीवानगी बढ़ी ॥
तदबीर और जुनूं की जो होती हैं वह भी की ।
आख़िर घर अपना छोड़के सहरा की राह ली ॥
कहता था बाप जाके जो उस से कभी-कभी ।
बेटा मैं तेरा बाप हूं मिल मुझ से इस घड़ी ॥
कहता था रोके मैं तो तुझे जानता नहीं ।
लैला सिवा किसी को मैं पहचानता नहीं ॥२५॥

आता था देखने को जो लैला को(१) वह कभी ।
था चूमता बहाने से चौखट जो घर की थी ॥
खिड़की को देखता था कि है बंद या खुली ।
करता निगाह था कभी जाली पै हर घड़ी ॥
लैला को उसके आने से होती थी आगही ।
फिरती इधर उधर थी वह हीले को ढूंढती ॥
मादर पिदर के ख़ौफ से थी गर्चे बे बसी ।
तो भी हर एक तरह से वह सूरत दिखाती थी ॥
कुछ कह न पाती(२) क्यूं कि हज़र होश खोता था ।
बातों के बदले वां उसे रो देना होता था ॥२६॥

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ० के (२) क़ा० जा० पाते

[७८] वियोग [७९] कली के समान, संकुचित

जाती थी सैर बाग़ को जिस दम वह दिलरुबा ।
मजनूं के देखने का वह रखती थी मुद्दआ[८०] ।।
दीदार के लिए वह बहाना था बाग़ का ।
लड़के जब आके मजनूं को देते थे यह सुना ।।
सुनते ही दौड़ता था ख़ुशी से वह मुब्तिला[८१] ।
लैला भी उसके सुनती थी जब शोर की सदा ।।
मोहमिल[८२] के पर्दे को वहीं देती थी फिर उठा ।
जल्दी से उसको देती थी मुंह एक नज़र दिखा ।।
दोनों तरफ़ से शौक़ जो नश्तर चुभोता था ।
वां देखना दिखाना इसी ढब से होता था ।।२७।।

मजनूं का मुद्दतों तलक ऐसा ही हाल था ।
आया कभी तो ठहरने उसको न वां दिया ।।
गर बन गया बहाना तो टुक मुंह को तक लिया ।
वर्ना वह अपने फिर उसी वादी में जा पड़ा ।।
सर की ख़बर न अपने उसे थी न होशे पा ।
"लैला" ही "लैला" उसकी ज़ुबां पर थी जा बजा ।।
रहता था रात दिन ग़मे फ़ुर्क़त में दिल फंसा ।
तन का बयां मैं यारो कहूं उसके और क्या ।।
ग़ालिब जो उसके जी पै वह दीवानापन हुआ ।
लैला की जो कमर थी वह उसका बदन हुआ ।।२८।।

कहता था दम बदम मेरी दिलदार लैला है ।
इस ख़स्ता दिल की मूनिसो[८३] ग़मख़्वार लैला है ।।
महफ़िल में दिलबरों की नमूदार लैला है ।
ख़ूबीयो दिल बरी में चमन ज़ार लैला है ।।
नाज़ो अदा की गर्मिये बाज़ार लैला है ।
ख़ूबाने नाज़नी[८४] में फ़सूं[८५]कार लैला है ।।
महबूब गुल रूखों की वफ़ादार लैला है ।
मजनूं की आशिक़ी की सज़ावार लैला है ।।
लैला ही की अदा पै मेरा दिल निसार है ।
लैला ही की निगाह मेरे सीने से पार है ।।२९।।

---

[८०] उद्देश्य
[८१] युक्त
[८२] पालकी
[८३] मित्र
[८४] सुन्दर सुकुमारी
[८५] जादू करने वाली

मां बाप ने जब उसकी यह कुछ देखी बेकली ।
मश्शाता[८५] एक ख़ानए लैला में भेज दी ॥
मादर पिदर ने लैला के बात उससे यह कही ।
लड़के(१) की उनके तो है जुनूं[८६] से लगन लगी ॥
सुनते हैं वह तो रहता है वहशी सा हर घड़ी ।
मश्शाता जब यह सुनके उधर से इधर फिरी ॥
उनसे कहा तो यां से यह कह भेजा हर घड़ी ।
सब झूठ है जो कहते हैं इसकी दिवानगी ॥
कुछ ख़ौफ़ मत करो उसे हर दम परेख लो ।
बावर न हो तो अपनी तुम आंखों से देख लो ॥३०॥

कह कर यह क़ैस को वह इरादा जता दिया ।
ज़रीं लिबास उसके बदन में पिन्हा दिया ॥
जुल्फ़ें संवार आंखों में सुर्मा लगा दिया ।
दस्तारे[८७] ज़र फ़िशां[८८] को व सर जगमगा दिया ॥
पटका सुनहरा उसकी कमर में बंधा दिया ।
बुर्दे यमन[८९] को दोश[९०] के ऊपर उढ़ा दिया ॥
रूमाल एक ज़री का भी हाथों में ला दिया ।
बूढ़े बड़ों के साथ उसे वां भिजा दिया ॥
जितने बुज़ुर्ग थे उसे सब लेके वां गए ।
मिलकर जो बैठे यह भी ख़ुश और वह भी ख़ुश हुए ॥३१॥

कहते हैं क़ैस लड़कों में साहेब जमाल था ।
पोशाक जब वह पहनी तो हुस्न और भी बढ़ा ॥
वां जिसने देखा उसको बहुत जी को ख़ुश लगा ।
थीं बीबियां भी देखतीं, गुरफ़ों[९१] से जा बजा ॥
कहती थी वह तो लड़का निहायत है ख़ुश अदा ।
दीवानगी का इसकी अबस[९२] शोर था मचा ॥

पाठान्तर—(१) क़ा० लड़की

स्त्रियों का बनाव श्रृंगार करने वाली ८६. पागलपन ८७. पगड़ी ८८. सुनहरी ८९. यमन की बहुमूल्य चादर ९०. कंधों ९१. खिड़कियां ९२. व्यर्थ, निरर्थक

बैठे(१) थे उनके पास जो लैला के अक़रबा[९३] ।
लड़के का हुस्न सबकी निगाहों में था खपा(२) ॥
सब दिल में अपने तुख़्म[९४] मुहब्बत को बोते थे ।
उल्फ़त की बातें करते थे और शाद होते थे ॥३२॥

कहते हैं(३) एक सुग[९५] कहीं लैला ने पाला था ।
नागाह जब वह क़ैस को उस जा नज़र पड़ा ॥
मजनूं ने सर को पांव पे इस सुग के रख दिया ।
कर प्यार उसको अपने गले में लगा लिया ॥
रूमाल वह ज़री का उसी को उढ़ा दिया ।
गोदी में अपनी प्यार से जल्दी बिठा लिया ॥
हाथ अपना उसके पर पे कभी पीठ पर रखा ।
बे इख़्तियार होके उसे जब तो यह कहा ॥
तू जिसके पास है मुझे उससे जुदाई है ।
मुद्दत में तेरी शक्ल नज़र मुझको आई है ॥३३॥

उस सुग को देख क़ैस का जब हो गया यह हाल ।
जो हाथ प्यार से दिये गर्दन में उसकी डाल ॥
सबके तईं यह देख के हैरत हुई कमाल ।
थे जैसे ख़ुश वह देख के वां क़ैस का जमाल ॥
वैसा(४) ही उनके दिल को हुआ रंज और मलाल ।
आपस में जब तो करने लगे सब यह क़ीलो क़ाल[९६] ॥
जो होश में हो उस से तो यह बात है मुहाल[९७] ।
होती मगर है ऐसी दिवानों की चाल ढाल ॥
यह ढंग क़ैस के जो नमूदार हो गए ।
जितने गए थे साथ वह नाचार हो गए ॥३४॥

मां बाप के थी दिल को इधर लग रही ख़ुशी ।
यानी पसंद होगी उन्हें तर्ज़ क़ैस की ॥
इतने में आये फिर के इधर से जो वह सभी ।
जो वारदात गुज़री थी आकर वह सब कही ॥

पाठान्तर—(१) क़ा० कहते, श० आ० कितने (२) श० आ० खबा (३) क़ा० थे (४) जा० ऐसा

[९३] समीप के, रिश्तेदार [९४] बीज [९५] तोता [९६] अच्छी बुरी बात [९७] कठिन, मुश्किल

और यूं कहा, बहुत हमें शर्मन्दिगी हुई ।
इससे तो हम न जाते तो बेहतर वह बात थी ॥
ख़ातिर में फिर तो क़ैस के दीवानगी बढ़ी ।
शर्मो हयाओ सब्र ने जब दिल से राह ली ।
फिर तो हमेशा कूचए लैला में जाता था ।
बेताबियां जताता था और ग़ुल मचाता था ॥३५॥

आख़िर यह क़ैस की हुई हालत फिर आश्कार[९८] ।
कर डाला अपना(१) ग़म से गिरेबान तार तार ॥
घर को भी अपने छोड़ दिया होके बेक़रार ।
लैला के दर पै आ पड़ा बस होके बेविक़ार[९९] ॥
वां से भी जब उठा दिया उसको व हाले ज़ार ।
गलियों में जब तो फिरने लगा होके दिल फ़िगार[१००] ॥
लड़कों का था हुजूम[१०१] लगा साथ बेशुमार ।
आंखें भी सुर्ख़, नालों[१०२] के ग़ुल शोर बार बार ॥
कसरत में इश्क़ था जो बुते[१०३] गुलइज़ारका ।
एक जोश था जुनूं के चमन की बहार का ॥३६॥

लैला भी उसकी चाह में बे इख़्तियार[१०४] थी ।
मुंह को लपेटे रहती थी मसनद पै वह पड़ी ॥
मिलने को उसके आती थीं जब लड़कियां कभी ।
वह ग़म जदा किसी से भी हर गिज़ न बोलती ॥
हठ करतीं वह तो उनको सुनाती थी उस घड़ी ।
आंखों में अश्क, आह व लब, और उदास जी ॥
ज़िनहार[१०५] ! मेरे पास न आया करो कभी ।
सोहबत मुझे किसी की नहीं लगती है भली ॥
मजनूं के देखने की तमन्ना मुदाम[१०६] थी ।
लेती सहर[१०७] से शाम तलक उसका नाम थी ॥३७॥

इस हद पै चाह पहुंची थी दोनों की दोस्तां ।
जो उस पै ग़ुजरा हाल वह इस पर हुआ अयां ॥

पाठान्तर—(१) क़ा० अपने
९८. प्रकट ९९. मानहीन, बेइज्ज़त १००. आहत हृदय, प्रेमी १०१. झुण्ड, भीड़ १०२. रोने चिल्लाने १०३. प्रेयसी १०४. बेचैन १०५. हरगिज १०६. हमेशा १०७. सुबह

गर इसके एक फांस लगी तन के दर्मियां ।
उसके जिगर से उठने लगा नालओ फ़ुग़ां[१०८] ॥
होती थी इसकी चश्म इधर जब गुहर फ़िशां[१०९] ।
आंखों से अश्क उसके(१) भी होते थे तब रवाँ ॥
जो इसकी शक्ल यां थी वही उसकी शक्ल वां ।
उल्फ़त का उनकी आह, मैं क्या क्या करूं बयां ॥
चाहत के गुल कुछ ऐसी तरह जी में खिल गए ।
जो दिल भी उनके मिल गए और तन भी मिल गए ॥३८॥

सच पूछिये तो रखती है चाहत भी क्या मज़ा ।
जब(२) फ़र्क की न आशिक़ो माशूक़ में हो जा ॥
यक रंग दोस्ती में रहे दोनों बरमला[११०] ।
जो उसपै हो गया वही इस पर गुज़र गया ॥
जो उसके पा में, फिरते हुए आबला पड़ा ।
घर बैठे उसके पांव में कांटा वहीं चुभा ॥
मजनूं के रूऐं रूऐं में लैला गई समा ।
लैला के बंद बंद में मजनूं ही भर गया ॥
चाहत के उनसे काम बहुत नेक हो गए ।
दोनों में कुछ दुई न रही एक हो गए ॥३९॥

इसकी मसल मैं करता हूं, यारो जो अब बयां ।
पिन्हां[१११] नहीं ग़रज़ है यह मशहूर दर जहां ॥
यह रम्ज़े[११२] इश्क़ है इसे जानें हैं आशिक़ां ।
उश्शाक़[११३] के यह दिल पै नहीं मुतलिक़न निहां[११४] ॥
लैला ने एक रोज़ खुलाई थी फस्दें[११५] वां ।
वादी[११६] में हो गया रगे मजनं से खूं खां ॥
हैरत हुई हर एक को जब यह हुआ अयां ।
हेरत नहीं, यह चाह की हैं पुख़्ता कारियां ॥
जब पुख़्तगी में चाह का होता कमाल है ।
वां होता फिर तो दोस्तो, ऐसा ही हाल है ॥४०॥

पाठान्तर—(१) श० आ० उसकी (२) क़ा० श० आ० जो
१०८. आर्तनाद १०९. मोती बरसाने वाली, आंसू बरसाने वाली ११०. खुल्लमखुल्ला १११. छिपा हुआ ११२. रहस्य ११३. आशिक का बहुवचन ११४. छिपा हुआ ११५. रगों से खून निकलवाना ११६. घाटी, जंगल

किस्सा तो लैला मजनूं का है, दोस्तो बड़ा ।
थोड़ा सा उस किताब से मैंने भी यह लिखा ॥
इतनी(१) सखुन मैं रखता था कब तबा को(२) रसा ।
कुछ बैठे बैठे यह भी मेरे जी में आ गया ॥
सच पूछो तो ज़माने का है ऐतबार क्या ।
है राहते-बहार[११७] से रंजे-ख़िज़ां[११८] लगा ॥
लैला जो उठ गई वहीं मजनूं भी चल बसा ।
आगे 'नज़ीर' उसका बयां अब करूं मैं क्या ॥
क़ागज़(३) पै नाम उनका ब इर्क़ाम[११९] रह गया ।
आख़िर को दोनों जाते रहे नाम रह गया ॥४१॥

पाठान्तर—(१) क़ा० श० आ इतने (२) जा० में (३) क़ा० श० आ० में

[११७] बहार का सुख [११८] पतझड़ का दुःख [११९] लिखा हुआ, लेख में

पोदने और गढ़ पंख की लड़ाई

एक पोदने का हाल अज़ब सुनने में आया ।
था घोंसला एक पेड़ उपर उसने बनाया ॥
और पोदनी और बच्चों को था उसमें बिठाया ।
क़द में तो वह था पोदना छोटा सा कहाया ॥
पर दिल में वह गढ़ पंख से ठहरा था सवाया ॥१॥

कौए को समझता था वह एक मक्खी का बच्चा ।
और चील को गिनता था वह नाचीज़ पतिंगा ॥
बगले को बच्चा कीड़े का और बुज़्जे को भुनगा ।
लघड़ी को समझता(१) कि तू है क्या ? अरी चल जा ॥
हमने तेरे लग्घड़ को है चुटकी में उड़ाया ॥२॥

एक रोज़ वह सारस से लगा कहने उछल कर ।
जिस पेड़ पै हम बैठे हैं हिलता है सरासर ॥
सारस ने यह सुन पोदने से यूं कहा हंस कर ।
क्या बात तुम ऐसे ही हो भारी व तनावर[1] ॥
हर पेड़ को है बोझ तुम्हारे ने हिलाया ॥३॥

रहता था वह जिस पेड़ पै वह पेड़ था बरता ।
आगे कहीं उस दश्त में एक अरनी व अरना ॥
ख़ुश आया उन्हें वां जो हरी घास का चरना ।
ठहराया उन्होंने उसी जंगल में उतरना ॥
रहने लगे वह भी उन्हें सहरा जो वह भाया ॥४॥

पाठान्तर—(१) जा० से यह कहता

[1] स्वस्थ, मोटे

वां पोदनी और अरनी में बहनापा जो ठहरा ।
दिन को वह लगी रहने ख़ुशी होके उसी जा ॥
और रात को रहने लगी वह अरने कने जा ।
ख़ुश होके लगी रहने हुआ प्यार जो गहरा ॥
दोनों ने ग़रज़ ख़ूब मुहब्बत को बढ़ाया ॥५॥

एक रोज़ वह अरनी कहीं चरती हुई आई ।
और आते ही उस पेड़ से पीठ अपनी खुजाई ॥
वह पेड़ हिला पोदने ने धूम मचाई ।
हो जावेगी इस वात से मर्दों में लड़ाई ॥
इस तेरे खुजाने ने बहुत हमको सताया ॥६॥

अरनी यह हंसी सुनके और अरने से कहा जा ।
अरना भी हंसा और कहा जा, 'फिर तू खुजा आ' ॥
और आई खुजाने को तो यूं पोदना बोला ।
वदज़ात यह तेरी नहीं तक़सीर[2] में समझा ॥
शायद तेरे अरने ने तुझे है यह सिखाया ॥७॥

कल इसकी सज़ा पावेगा अरना तेरा बदख़ू ।
जो सुबह लगी होने तो वह पोदना दिल जू ॥
आया जहां सोता था वह अरना पड़ा ख़ुश हो ।
घर पैठ गया कान में वांध अपने परों को ॥
फुर फुर(१) और पर्दे में पंजों को गड़ाया ॥८॥

अरना लगा टकराने को सर शोर मचाकर ।
अरनी गिरी उस पोदनी के पांव पै जाकर ॥
जब पोदनी ने उसके तरस हाल पै खाकर ।
जल्दी से निकाला उसे आवाज़ सुनाकर ॥
अरने को सिवा भागने के कुछ न बन आया ॥९॥

भागा ग़रज़ ऐसा कि न फिर पीछे को देखा ।
अरनी भी गई भागती साथ अरने के घबरा ॥
उस भागने में दोनों ने फिर मुंह को न फेरा ।
अरना तो "नज़ीर", अपने उधर ख़ौफ से भागा ॥
यां घोंसले में पोदना फूला न समाया ॥१०॥

पाठान्तर—(१) फड़ फड़

२. ख़ता, ग़ल्ती, भूल

कौवे और हिरन की दोस्ती

एक दस्त[1] में सुना है एक ख़ूब था हिरन ।
बच्चा ही था अभी न हुआ था बड़ा हिरन ।।
फिरता था चौकड़ी का दिखाता मज़ा हिरन ।
देखा जो एक कौवे ने वह ख़ुशनुमा[2] हिरन ।।
दिल को निहायत[3] उसके वह अच्छा लगा हिरन ।।१।।

दो(१) बातें करके कौवे ने उसका लगा लिया ।
दम में हिरन भी कौवे की उल्फ़त में आ गया ।।
कौवे हिरन में ठहरी जो गहरी मुहब्बत आ ।
कौवा जिधर जिधर को ख़ुशी होके जाता था ।।
फिरता था उसके साथ लगा जा बजा हिरन ।।२।।

एक गीदड़ उस हिरन के कने आके नाबकार ।
बोला हज़ार जान से मैं तुम पै हूं निसार[4] ।।
मुझको भी अपना जान गुलाम और दोस्तदार[5] ।
और दिल में यह कि कीजे किसी तौर से(२) शिकार ।।
उसकी दग़ाओमक्र[6] से वाक़िफ़ न था हिरन ।।३।।

गीदड़ यह कहके मक्र से जिस दम गया उधर ।
कौवा हिरन से कहने लगा करके शोरो शर ।।
यह सख़्त मक्र बाज़ है कर इस से तू हिज़र[7] ।
एक दिन दग़ा से तुझको यह पकड़ेगा फ़ितनागर[8] ।।
सुनकर यह बात कौवे की चुप हो रहा हिरन ।।४।।

पाठान्तर—(१) जा० और (२) जा० इसे

१. जंगल २. सुन्दर ३. अत्यधिक ४. कुर्बान, न्यौछावर ५. मित्र ६. छल-कपट ७. उपेक्षा, भय ८. उपद्रवी

दिन दूसरे हिरन कने गीदड़ फिर आ गया ।
कौवे को सोता(१) देख यह बोला वह पुरदग़ा[९] ॥
मैं आज देख आया हूं, क्या खेत एक हरा ।
तुम आओ उसको चरके तो हो शाद दिल मेरा ॥
सुनते ही उसके साथ उछलता चला हिरन ॥५॥

जिस(२) खेत पर यह लेके गया उसको बदसगाल[१०] ।
वां पहले देख आया था वह एक हिरन का जाल ॥
ले पहुंचा जब हिरन के तईं खेत पर शृगाल[११] ।
जाते ही वां हिरन ने दिया मुंह को उसमें डाल ॥
मुंह डालते ही जाल में वां फंस गया हिरन ॥६॥

यहां फड़फड़ाता आ गया कौवा भी नागहां ।
गीदड़ को दे के गाली हिरन से कहा कि हां ॥
तड़पै मत इसमें वर्ना तू होवे गा नातवां[१२] ।
कौवे की बात सुनते ही हिम्मत को बांध वां ॥
जैसे गिरा पड़ा था वहीं फिर उठा हिरन ॥७॥

गीदड़ लगा जब आने हिरन की तरफ़ झपट ।
कौआ पुकारा मार तू सींग एक जो जावे हट ॥
या एक खुरी तू ऐसी लगा पांव की झपट(३) ।
जावे जो उसके लगते ही गीदड़ का पेट फट ॥
सुनकर खड़े हो सींग हिलाने लगा हिरन ॥८॥

गीदड़ ने ख़ूब कौए को दीं जल के गालियां ।
सय्याद[१३] वां हुआ था किसी सिम्त को रवां ॥
इसमें शिकारी आके हुआ दूर से अयां ।
कौआ पुकारा लेट जा दम बंद करके हां ॥
दम बंद करके अपना वहीं गिर पड़ा हिरन ॥९॥

पाठान्तर—(१) जा० रोता (२) जा० जब (३) श० आ० लपट

[९] धोखे बाज़ [१०] बुराई चाहने वाला [११] गीदड़ [१२] अशक्त [१३] जाल बिछाने वाला, शिकारी, बहेलिया

गीदड़ ने उसको देख के एक जाके झाड़ी ली ।
सय्याद उस हिरन को पड़ा देख उस घड़ी ॥
अफ़सोस करके दाम[14] की रस्सी वह खोल दी ।
कौआ पुकारा भाग, अरे वक़्त है यही ॥
सुनते ही वां से चौकड़ी भर कर उड़ा हिरन ॥१०॥

सय्याद ने जो देखा हिरन उठ चला झपाक ।
जल्दी से दौड़ा पीछे हिरन के वह सीना चाक ॥
सोटे को फ़ेंक मारा जो फ़ुर्ती से उसने ताक ।
भागा हिरन लगा वों ही गीदड़ के आ खटाक ॥
सर इसका फूटा और वह सलामत गया(१) हिरन ॥११॥

गीदड़ ने उस हिरन का जो चीता था वां बुरा ।
पाई उसी से अपनी बदी की वहीं सजा ॥
था यह तो नस्र मैंने इसे नज़्म में किया ।
पहुंचा 'नज़ीर' जब वह ख़ुशी होके अपनी जा ॥
कौवे के साथ फिर वह बहुत ख़ुश रहा हिरम ॥१२॥

पाठान्तर—(१) जा० रहा

[14] फंदा जाल [15] सुरक्षित

ग़ज़ल—१

न सुर्ख़ी गुंचययोगुल[१] में तेरे दहन[२] की सी,
न यासमन[३] में सफाई तेरे बदन की सी ।

मैं क्यों न फूलूं कि उस गुल बदन के आने से,
बहार आज मेरे घर में है चमन की सी ।

ये बर्क़[४] अब्र[५] में देखे से याद आती है,
झलक किसी के दुपट्टे में नौरतन की सी ।

गुलों के रंग को क्या देखते हो ऐ ख़ूबां[६],
ये रंगतें हैं तुम्हारे ही पैरहन[७] की सी ।

जो दिल था वस्ल[८] में आबाद तेरे हिज्र[९] में आह,
बनी है शक्ल अब उसकी उजाड़ बन की सी ।

जो अपने तन को न दे नस्तरन[१०] से अब तश्बीह[११],
भला तू देख ये नर्मी है तेरे तन की सी ।

तेरा जो पाँव का तलवा है नर्म मखमल सा,
सफाई उसमें है कैसी तो नस्तरन की सी ।

नज़ीर एक ग़ज़ल इस जमीं में और भी लिख,
कि अब तो कम है रवानी[१२] तेरे सुख़न की सी ।।९।।

---

१. कली और फूल २. मुख, मुंह ३. चमेली ४. बिजली ५. बादल ६. सुकुमारियाँ ७. कुर्ता
८. मिलन, संयोग ९. वियोग १०. एक सुगन्धित फूल, सेलती ११. उपमा १२. प्रवाह

ग़ज़ल—२

दूर से आए थे साक़ी सुन के मैखाने[१] को हम ।
बस तरसते ही चले अफसोस पैमाने[२] को हम ।
मय[३] भी है मीना[४] भी है सागर[५] भी है साक़ी[६] नहीं ।
दिल में आता है लगा दें आग मैखाने को हम ।
क्यों नहीं लेता हमारी तू खबर ऐ बेखबर ।
क्या तेरे आशिक हुए थे दर्दो ग़म खाने को हम ।
हम को फंसना था कफ़स[७] में क्या गिला सैयाद[८] से ।
बस तरसते ही रहे हैं आब और दाने को हम ।
ताक अब्रू[९] में सनम के क्या खुदाई रह गई ।
अब तो पूछेंगे उसी काफिर के बुतखाने को हम ।
बाग में लगता नहीं सहरा[१०] से घबराता है दिल ।
अब कहाँ ले जाके बैठें ऐसे दीवाने को हम ।
क्या हुई तकसीर[११] हम से तू बता दे ऐ 'नज़ीर' ।
ता कि शादीएमर्ग[१२] समझें ऐसे मर जाने को हम ॥

ग़ज़ल—३

दिखाई जब तेरे मुखड़े ने आ झलक पै झलक ।
लगी न फिर मेरी उस रोज से पलक पै पलक ।
कदम कदम पै मेरा जी पड़ा निकलता है ।
गजब है यह तेरे रुखसार[१] की थलक पै थलक ।
गया जो नाला मेरा आज आसमाँ के क़रीब ।
तो उसके ख़ौफ[२] से थर्रा गए फलक[३] पै फलक ।
पियाला उससे ज़्यादा तू भर के दे साक़ी ।
कि तुझको आती है खुश जाम की झलक पै झलक ।
'नज़ीर' कह कि तू अब किसके ग़म में बैठा है ।
कि आँसुओं की चली आती है ढलक पै ढलक ॥

---

१. मदिरालय २. जाम, मदिरा का प्याला ३. शराब ४. सुराही ५. शराब का प्याला ६. शराब पिलाने वाला ७. पिंजरा ८. बहेलिया ९. भ्रू १०. जंगल ११. ख़ता, ग़लती १२. मृत्यु की खुशी

१. गाल २. भय ३. आकाश

ख़म्सा–(१)

एक नुक्ता[१] और सुनो यारो जो कौल[२] बचन के साँचे हैं ।
यह रम्ज[३] उन्होंने खोली है ये हर्फ़[४] उन्होंने बाँचे हैं ।
क्या आदम चीटीं बैल शुतुर क्या हाथी घोड़े लाँचे हैं ।
क्या हूर[५] मलिक[६] के काबिल हैं क्या जिन्नोपरी के साँचे हैं ।
हर सूरत में एक मूरत है उस मूरत के सब साँचे हैं ।। हर०

क्या फूल खिले हैं कुदरत के यां आकर बाग बहारों में ।
कलियों में कलियां फूल रहीं डाली है डाल हजारों में ।
कुछ ऊपर रहतीं हारों में कुछ नीचे रहती झाड़ों में ।
कुछ अर्जोसमां[७] की कफ़्शों[८] में कुछ रहती चाँद सितारों में ।। हर०

नै होश ठिकाने क्या कहिये क्या जोर लगा है नल नल में ।
जो एक में एक और सौ में सौ और लाख में लाख और दिल दिल में ।
गेहूँ में गेहूँ जौ में जौ चावल में चावल फल फल में ।
क्या पिदड़ी लाल कबूतर में क्या पिस्सू मच्छर खटमल में ।। हर०
क्या रंग भरा है कुदरत का हर आन भरे और रीते में ।
जो आग लगी उस पत्थर से वह भड़की आन पलीते में ।
बादाम चिरौंजी पिस्ते में क्या महुए और पपीते में ।
क्या गीदड़ चर्ख चकोरों में क्या शेर हिरन और चीते में ।। हर०

हर पीपल में तो पीपल है पाखर में पाखर बड़ में बड़ ।
जामन में जामन आम में आम और छाल में छाल और जड़ में जड़ ।
क्या चीतल शिकरी बहरी बाज कूही या शाह और लग्घड़ ।
क्या चीलें कौये हंस हुमा क्या तूती मैनां और दहियर ।। हर०

---

१. भेद, रहस्य २. वचन ३. रहस्य ४. अक्षर ५. स्वर्ग-अप्सरा ६. फरिश्ते ७. धरती-आकाश
८. जूते, पादुका

है बीज के अन्दर बीज भरा और है लकड़ी लकड़ी लक्कड़ में ।
है मक्खी मक्खी मक्खी में और मकड़ी मकड़ी मक्कड़ में ।
जो बेल पाट पर फैल चलें है तूंबी बेलैं कुम्हड़े में ।
तरबूजे तुरई खरबूजे में क्या सैंमें खीरा ककड़ी में ।। हर०

है दरिया दरिया दरिया में और सहरा[९] जंगल जंगल में ।
ऊजड़ में ऊजड़ बस्ती में बस्ती है कोंपल कोपंल में ।
क्या मोती मूंगे पन्ने में क्या हीरे लाल जमुर्रद में ।
क्या हवा और जल थल में हर सूरत में एक सूरत है ।। हर०

यह चूंओं चरा की जाय नहीं यह जितनी चूड़ी चंदी है ।
क्या कुदरत की रंगामेज़ी[११] में हिकमत[१२] की कन्दा कंदी है ।
हर जानिब घेरा घेरी है हर तरफ को बन्दा बंदी है ।
क्या कहिए और 'नज़ीर' आगे कुछ राज जंजीरा बंदी है ।
हर सूरत में एक मूरत है उस मूरत के सब साँचे हैं ।। हर०

ख़म्सा-(२)

क्या इल्म उन्होंने सीख लिया जो बिन लिक्खे को बाँचे हैं ।
और बात नहीं निकले मुँह से बिन होठ हिलाये जाँचे हैं ।
दिल उनके तार सितारों के तन उनके तबल तमाचे हैं ।
मुहचंग जबाँ दिल सारगी या घुंघुरू हाथ कमाचे हैं ।
है राग उन्हीं के रंग भरे और भाव उन्हीं के साँचे हैं ।
जो बेगत बेसुर ताल हुए बिन ताल पखावज नाचे हैं ।
कुल बाजे बजकर टूट गये आवाज लगी जब भर्राने ।
और छम छम घुघरूं बंद हुए तब गत का अंत लगे पाने ।
संगीत नहीं यह संगत है संतों का जिससे जी माने ।
यह नाच कोई क्या पहिचाने इस नाच को नाचे सो जाने ।। है राग०

---

९. जंगल १०. जल-वायु ११. चित्रकारी १२. बुद्धिमत्ता

जब हाथ को धोया हाथों से और हाथ लगे फड़काने को ।
और पावों को खींचा पावों से तब पांव लगे गत पाने को ।
जब आँख उठाली हँसने से और नैन लगे मटकाने को ।
सब काछ कछे सब नाच नचे उस रसिया छैल रिझाने को ।। है राग०

जो आग जिगर में भड़की है उस शोले[१३] की उजियाली है ।
जो मुँह पर हुस्न की जर्दी है उस जर्दी की सब लाली है ।
जिस गत पर उनका पांव पड़ा उस गत की चाल निराली है ।
जिस मजलिस[१४] में वह नाचे हैं वह मजलिस सब से खाली है ।। है राग०

सब घटता बढ़ता फेंक उधर और ध्यान इधर धर भरते हैं ।
बिन तारों तार मिलाते हैं जब नृत्य निराला करते हैं ।
बिन गहने झमक दिखाते हैं बिन जूड़े मन को हरते हैं ।
बिन हाथों भाव बताते हैं बिन पाँव खड़े गत भरते हैं ।। है राग०

था जिनकी खातिर नाच बना तब सूरत उनकी आय गई ।
कहीं आप हुए कहीं नाच हुआ और तान कहीं भर्राय गई ।
अब छैल छबीले सुन्दर की छबि नैन के अन्दर छाय गई ।
एक सूरत लाल त्रिभंगी की और जोति में जोति समाय गई ।। है राग०

सब होश बदन का दूर हुआ जब गत पर आ मिरदंग बजे ।
तन भंग हुआ दिल दंग हुआ सब आन गई बे आन सजे ।
यह नाचा कौन 'नज़ीर' और यां किस लिये रचाया नाच अजी ।
जब बूंद ही जा दरियाव पड़ी उस तान का आखिर निकला जी ।
हैं राग उन्हीं के रंग भरे और भाव उन्हीं के सांचे है ।।

---

[१३] अग्निकण, भड़कीली आग
[१४] सभा

विसाले यार–१

(दोस्त से मुलाक़ात)

नज़र आया मुझे एक शोख़ ऐसा नाज़नी चंचल ।
कि जिसकी देखकर सजधज मेरा दिल हो गया बेकल ॥
अदा भी चुलबुली और आन में भी कुछ अजीब छलबल ।
फसूँगर अँखड़ियाँ ज़ालिम कि और जिस पर लगा काजल ॥
कभी नज़रें लड़ावे और कभी मुखड़े पे ले आँचल ।
पड़ा दुरकान में झलके गले में सज रही हैकल ॥
निगारे गुल इज़ारे नौ बहारे नाज़ पैराए ।
दिल आरामे, परी शक्ले बुते, शोख़े दिल आराए ॥[१]
देह सुमन तें ऊजरी मुख तें चंद लजाय ।
भोएँ धनकें तान कें कमलन बान चलाय ॥

मुझे उस शोख़ चंचल ने जब अपना हुस्न दिखलाया ।
दिखाकर इक नज़र चलता हुआ और मुझको तड़पाया ॥
गिरा मैं होके बेख़ुद यूँ परी का जैसे हो साया ।
फिर उसमें होश जब आया तो दिल सीने में घबड़ाया ॥
बहुत सा उस घड़ी मैंने तो अपने दिल को समझाया ।
न माना दिल ने हरगिज ढूंढना ही उसको ठहराया ॥
कशीदम नालओ अज़ शौक पैराहन कबा करदम ।
बराए जुस्तनेऊ सब्रो तस्कीं रारिहा करदम ॥[२]

---

१. वह एक प्रिय गुलाब जैसे गालों वाला, नई बहार के समान नाज़ों अंदाज करने वाला, दिल का आराम, परी ज़ैसी शक्ल वाला बुत के समान चंचल और दिल को सजाने वाला है ।

२. मैं रोया और प्रेम में मैंने अपने वस्त्रों को फाड़कर गुदड़ी बना डाला उसको खोजने के लिए मैंने सब्र और आराम सबको छोड़ दिया ।

भेंट भई जातें कही नैनन आँसू लाय ।
है कोई ऐसा पीत जो पीतम मंदिर बताय ॥

कहूँ क्या उस घड़ी यारो अजब अह्वाल था मेरा ।
हरइक से पूछता था हर घड़ी उस शोख़ का डेरा ॥
तलब की कसरतें और जुस्तजू का शौक बहुतेरा ।
इधर आहों की शोरश और उधर अश्कों ने आ घेरा ॥
कभी थी इस तरफ झाँकी कभी था उस तरफ फेरा ।
जो कोई पूछता था क्यों मियाँ क्या हाल है तेरा ॥
अज़ूमीगुफ़्तम अह्वालमनपुर्स ऐ यारे ग़मख्वारम ।
ख़रावम दिल फ़िगारम वे क़रारम नौ गिरफ़्तारम ॥[३]
अलकन फन्दे उड़ पड़े मन फँस दीनो रोय ।
दृगन जादू डार कें सुध बुध दीनी खोय ॥

अभी याँ इक परीरू कर गया है मुझको दीवाना ।
मेरा दिल हो गया उस शमा रू को देख परवाना ॥
बनाया उसकी आँखों ने मुझे इस मै का पैमाना ।
निगाह ने कर दिया उसकी मुझे एक पल में मस्ताना ॥
मियाँ एकदम तो मैं अपना सुनाऊँ उसको अफसाना ।
मकाँ उसका तुझे ऐ यार कुछ मालूम है या ना ॥
अगर दानी चुना कुन लुत्फ ताबीनम मकाँ नशरा ।
नि हम सरबरदरश दर शौक बोसम आश्ताँ नशरा ॥[४]
नेह गरे का हार है हूँ तोरे बलिहार ।
मारत मोहि बिरह दुख ले चल वाके द्वार ॥

यह सुनकर था वह कहता मैं तुझे उसका पता देता ।
नहीं मैं साथ जाकर तुझको उसका घर बता देता ॥
अभी ले जाके तुझको उसकी ड्योढ़ी पर बिठा देता ।
जो वाँके बैठने के तौर हैं वह सब जता देता ॥

---

[३] मैं उससे यह कहता था कि ऐ मेरे हमदर्द दोस्त मेरे हालात मत पूछ मैं बरबाद हूँ । फटे दिल वाला बेक़रार और नया गिरफ़्तार हूँ ।

[४] अगर तू जानता है तो इतनी कृपा कर कि मैं उसके मकान को देख सकूँ उसके दरवाजे पर अपना सर रखूँ और शौक में उसकी चौखट को चूम सकूँ।

अदब से जाके उसके हलकए दर को हिला देता ।
निकलता जब तो ख़ूबी से तुझे उससे मिला देता ।।
व लेकिन आँ बुते सरकश ज़े आशिक आरमी दारद ।
रशीदन ता दरश आसाँ नं बासद कारमी दारद ।।[५]
पलक कटारी मार के हिरदे रक्त बहाय ।
कहाँ अब ऐसा मर्द जो बांके द्वारे जाय ।।

ये बातें कहके था मेरे बहुत वह दिल को बहलाता ।
जो उल्फ़त में जताते हैं वही था मुझको बतलाता ।।
मगर मुझको बग़ैर अज़ देखने के कुछ न था भाता ।
कभी था आह करता और कभी अश्क भर लाता ।।
जो रोता मैं तो मुझको इस तरह आकर वह समझाता ।
तेरा दिलवर है वह तू देखने को क्यों नहीं जाता ।।
बे बीनम आखिरश ज़े मंद ताक़े निहाँ वाशद ।
असीराने मुहब्बत रा कुज़ा परवाये जाँ वाशद ।।
नेह नगर की रीति है, तन मन दीनो खोय ।
पीत डगर जब पग रखा, होनी होय सो होय ।।

वह था ये बात सुनता जब मेरा मुँह देख रहता था ।
जो चलता था तो वह अपनी तरफ को हाथ गहता था ।।
मेरा दिल आतिशे फुर्कत में उस दिलवर की रहता था ।
न था कुछ बन जो आता, इससे दर्दो रंज सहता था ।।
गिरेबाँ तक पड़ा अश्क उस घड़ी आँखों से बहता था ।
वह कहता था अरे फिर जा तो मैं यूँ उससे कहता था ।।
कशम आहो नुमायम गिरयाओ शामो सहर गरदम ।
न बीनम ता रुखस अज जुस्तजू हरगिज न बरगरदम ।।[७]
पीतम या मन मोह के कीन्हो मान गुमान ।
बिन देखे वा रूप के मेरे कलपत प्रान ।।

---

[५] लेकिन वह सरकश बुत आशिक से नफरत करता है इसलिए उसके दरवाज़े तक पहुँचना आसान नहीं, मुश्किल काम है ।

[६] आख़िरकार मैं उसको देख लूँगा वह मुझसे कब तक छिपा रहेगा । मुहब्बत के कैदियों को जान की परवाह नहीं होती ।

[७] मैं आहें भरूँगा, रोऊँगा और शामो सुबह घूमता फिरता रहूँगा जब तक उसके चेहरे को न देख लूँगा तब तक हरगिज़ अपनी कोशिश से बाज़ न आऊँगा ।

चला वाँ से मैं उस ग़मख्वार की बातों से घबराकर ।
यही थी आरज़ू दिल में कोई बतला दे उसका घर ॥
परेशाँ हाल फिरता था, कभी ईधर कभी ऊधर ।
न पाया जब मकां उसका तो बैठा एक रस्ते पर ॥
यकायक देखता क्या हूँ कि आ पहुँचा वही दिलवर ।
उठा मैं और कहा यूँ रखके सर को उसके कदमों पर ॥
मरा मजरूह करदी वज़ निगाहम रुख़ ब पोशीदी ।
चे तकसीरम कि दिल बुरदी व हाले मन न पुरसीदी ॥[८]
मनमोरा बस कर लियो काहे कीन्हीं ओट ॥
ऐसी मोते मनहरन क्या बन आई खोट ॥

कही यह बात जब उस शोख से मैंने बचश्मे नम ।
तो पहले नाज़ मैं वह नाज़िनी मुझसे हुआ बरहम ॥
लगा मुझको झिड़कने उस घड़ी त्योरी चढ़ा पैहम ।
फिर उसमें रहम जो आया हँसकर यूँ कहा उस दम ॥
तुझे ज़ख़्मी जो कर आये थे अब तेगे निगह से हम ।
लगा देंगे तेरे हम ज़ख़्म पर अब लुत्फ़ का मरहम ॥
"नज़ीर" ई हर्फ चूं गुफ्ताँ आँ निगारे दिल सिताने मन ।
ग़म अज़ दिल रफ़्तो आमद शादमानी ता बजाने मन ॥[९]
मन मेरो या बात में निपट भयो परसंद ।
निकसो दुख मन बीच तें आन भरयो आनंद ॥

विसाले यार—२

इधर को जिस घड़ी ऐ ! हमनसी, ! वह यार आया ।
हमारे दिल से गयी बेकली क़रार आया ॥
उसे जो मेहर से है जर्रा परवरी मंज़ूर ।
तो फिर इधर को झाँकता वह मेहरवार आया ॥

---

[८] तूने मुझे ज़खमी कर दिया और मेरी आँखों से अपना चेहरा छिपा लिया। आखिर मैंने कौन सा कुसूर किया था कि तू मेरा दिल चुरा ले गया और उसके बाद तूने मेरा हाल भी न पूछा।

[९] 'नज़ीर' जब मेरा दिल लेने वाले उस महबूब ने यह बात कही तो ग़म मेरे दिल से चला गया और मेरी रूह के अन्दर खुशियाँ भर गई।

मिज़ाज उसका जो आशिक नवाज़ है हमदम ।
तो राहे लुत्फ पे फिर वह करम शिआर आया ॥
किसी ने दौड़ के हमसे कहा मुबारक हो ।
तुम्हारे पास ही वह नाज़नी निगार आया ॥
किसी ने गुल की तरह हँस के यूँ कहा आकर ।
भला हुआ कि तुम्हारा भी गुल इज़ार आया ॥
खुशी ये बोली "तुम्हारी मैं गरद ख़तिर हूँ" ।
इधर से ऐश पुकारा कि "मैं भी हाज़िर हूँ" ॥

गया मलाल हुए शाद हम ज़माने से ।
हुआ मिलाप छुटे हिज्र के सताने से ॥
निशात जी को हुई हर तरफ के मिलने से ।
सुरूर दिल को हुआ हंसने और हंसाने से ॥
हुई नमूद वह साअत भी इम्बिसात भरी ।
कि जिसमें शाद हुए हम भी दिल लगाने से ।
हर एक तरफ से हुई सौ तरह की खुशवक़्ती ।
नवेदें आइयाँ इश्रत के कारखाने से ॥
समाते फूले नहीं पैरहन में अब हरगिज़ ।
हम ऐसे शाद हैं उस गुलबदन के आने से ॥
जहाँ में जिस को मुलाकाते यार कहते हैं ।
अजीब बहार है उसको बहार कहते हैं ॥

हमारे दिल में जो फुर्कत की बेक़रारी थी ।
तो उसके हाथ से सूरत अजब हमारी थी ॥
कभी ख़याल रुख़ व ज़ुल्फ़ का सहर ता शामे ।
कभी तसव्वुरे मिस्रगाँ से दिल फ़गारी थी ॥
न दिल लगे था किसी शग़ल से कोई साअत ।
न जाँ को जुज़ अलमे हिज्र हम किनारी थी ॥
यह इज़्तराब था हरदम, ये अपनी बेताबी ।
हमारे हाल पे सीमाब की भी जारी थी ॥
ख़ुदा के फज़्ल से फिर उसमें ख़ैर व ख़ूबी से ।
वह दिन भी आया कि जिसकी उम्मीदवारी थी ॥
जो देखी भर के नजर गुलइज़ार की सूरत ।
तो हर तरफ नज़र आयी बहार की सूरत ॥

अयाँ जो सामने आकर वह गुल इज़ार हुआ ।
तो आलम ऐश का फिर एक से हज़ार हुआ ॥
निगह को हुस्न ने उस गुल के ताज़गी बख़्शी ।
खुशी करीब हुई दूर इन्तज़ार हुआ ॥
जुदा जो हिज्र में हमसे क़रार रहता था ।
हमारे दिल से वह फिर आनकर दो चार हुआ ॥
तसल्ली दिल को हुई उस सनम के मिलने से ।
रुख़ उसका देखते ही रफह इज़्तरार हुआ ॥
तलब थी दिल तयीं जिसकी एक मुद्दत से ।
हज़ार शुक्र वहीं ऐश आश्कार हुआ ॥
निशातो ऐश को ख़ातिर से हम क़रीनी है ।
नियाज़ो नाज़ है और लुत्फे हम नसीनी हैं ॥

हम अपने दिल की खुशी का बयाँ करें क्या-क्या ।
कि एक लहज़ा ये ठहरा है ऐश का नक्शा ॥
कभी हैं देखते रुखसार यार को हँस हँस ।
कभी खुशी से हैं छू लेते उसकी जुल्फ़ें दुता ॥
कभी हैं यार के चश्मो निगाह से पीते ।
खुशी से ऐश के भर-भर के साग़रे सहबा ॥
कभी है उसके तकल्लुम से दिल को खुश करते ।
कभी हैं उसके तबस्सुम पे दिल से होते फ़िदा ॥
जो देखता है हमें इस तरह की इश्रत में ।
तो यह सुखन वह रहे मुंसफी से है कहता ॥
"नज़ीर" तुमने जो हासिल ये शादमानी की ।
यही बहार है बुस्ताने ज़िन्दगानी की ॥

दिलबरी

(मेहरबानी)

है दाम बिछा उसकी ज़ुल्फ़ों के हर इक बल में ।
जादू है निगाहों में औ सहर है काजल में ॥
सर पावों से शोख़ी है उस चुलबुले चंचल में ।
चितवन की लगावट ने एक आन की छल बल में ॥
पलकों की झपक दिखला दिल छल लिया इक पल में ।
करने से खबरदारी हरगिज़ न हुआ लाहा ॥
और एक के सीने को अय्यार ने ले राहा ।
उस शोख़ सितमगर ने गम्ज़े से जो नहीं चाहा ॥
की यारों से कुछ फुर्ती क्या कहिए अहा ! हा ! हा !
पलकों की झपक दिखला दिल छल लिया इक पल में ॥

क्या पेश चले उससे यूँ नाज़ भरा हो जो ।
किस तौर सरक जाये होना हो जो कुछ हो सो ॥
ये घात ये चंचलपन कब याद परी को हो ।
इस ढब के तईं यारो देखो तो उहो ! हो ! हो ! ॥
पलकों की झपक दिखला दिल छल लिया इक पल में ॥

हँस-हँस के लगा जिस दम वह नाज़ों अदा करने ।
जी उसकी लगावट से हर लहज़ा लगा डरने ॥
हर आन लगी उसकी सौ मक्र के दम भरने ।
क्या काम किया यारो उस शोख़ सितमगर ने ॥
पलकों की झपक दिखला दिल छल लिया इक पल में ॥

डरते थे बहुत हम तो उस शोख़ लड़ाके से ।
और ख़ौफ में थे उसके ढब आनो अदा के से ॥
आया जो इधर को था अय्यार लपाके से ।
नज़रों को मिलाते ही चंचल ने छपाके से ॥
पलकों की झपक दिखला दिल छल लिया इक पल में ॥

रखते थे बहुत हम तो हर आन की होशियारी ।
खूबाँ से न मिलते थे ता हो न गिरफ्तारी ॥
आज उस बुत पुरफ़न ने आकर यह तरहदारी ।
जुल दे के हमें लपझप कुछ करके फसूंकारी ॥
पलकों की झपक दिखला दिल छल लिया इक पल में ॥

समझे थे उसे हम तो महबूब ये भोला है ।
जो मक्र है और फ़न है हर्गिज़ नहीं आता है ॥
ये बात न समझे थे जो सहर का नक़्शा है ।
क्या कहिए "नज़ीर" आगे ये ज़ोर तमाशा है ॥
पलकों की झपक दिखला दित छल लिया इक पल में ॥

“शौके दीद’

(दीदार की ख़्वाहिश)

दिखला के झमक जिसको टुक चाह लगा दीजे ।
फिर उसको बहुत, ऐ जाँ’ बाला न बता दीजे ।।
सौ नाज़ अगर कीजे उफ़त भी जता दीजे ।।
मंजर के ज़रा दर को आगे से हटा दीजे ।।
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ।।

देखी है तुम्हारे जो चेहरे की झमक ऐ जां ।
दिल सीने में तड़पे है जो देख ले फिर एक आँ ।।
है हमको बहुत मुश्किल और तुमको बहुत आसाँ ।
है अर्ज़ यही अब, तो, ऐ बादशहे ख़ूबाँ; ।।
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ।।

छुपते हो अयाँ होकर, हो तुम अगर इस ढब के ।
आशिक़ भी तो सैदा हैं, चाहत ही के मतलब के ।।
दीदार की ख़्वाहिश में हम यां हैं खड़े कब के ।
जिस ढब से दिखाया था वैसी ही तरह अब के ।।
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ।।

आखें भी तरसती हैं और दिल भी बहुत हैराँ ।
कल पड़ती नहीं एक दम बिन देखे हुए ऐ जाँ! ।
गर हुस्न दिखा हमको बेताब किया है यां ।।
तो मेहर से टुक हँस कर, ऐ रश्क महे ताबाँ ।।
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ।।

आई है नज़र हमको जब से वह तरहदारी ।
ठहरी है उसी दिन से खातिर में तलबगारी ।।
टुक लेते तुम्हें हम तो जो होती न नाचारी ।
गर हमको जिलाना है तो करके नमूदारी ।।
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ।।

छुपने की अगर तुमने यां आन सँवारी है ।
तो बस नहीं कुछ अपना, मर्ज़ी ये तुम्हारी है ॥
बिन देखे हुए हमको हर साँस कटारी है ।
कुछ और नहीं ख्वाहिश ये अर्ज़ हमारी है ॥
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ॥

दिल बहरे मुहब्बत में हर आन जो बहता है ।
एक आन तुम्हें देखें अरमान ये रहता है ॥
जो हो के बहुत बेबस दुःख दूरी के सहता है ।
बेकल हो "नज़ीर" अब तो' ऐं जाँ यही कहता है ॥
फिर एक नज़र अपने मुखड़े को दिखा दीजे ॥

गिरफ्तारिये दिल

जिस दिन से अदा मुझको उस बुत की लगी प्यारी ।
और खप गयी आँखों में चंचल की तरह दारी ।।
दिल फँस गया जुल्फों में उस शोख के इकबारी ।
दिवानगी आ पहुँची जाती रही होशियारी ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

मिलता हूँ जो टुक जाकर तो मुझसे वह लड़ता है ।
कुछ बात जो कहता हूँ झुँझला के झगड़ता है ।।
गर्दन को पकड़ मेरी सर को भी रगड़ता है ।
जो-जो वह दिखाता है सब देखना पड़ता है ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

एक चाह के दरिया में दिन रात मैं बहता हूँ ।
गोता भी जो खाता हूँ तो कुछ नहीं कहता हूँ ।।
हरदम के सितम उसके मैं खींचता रहता हूँ ।
जो ज़ुल्म वह करता है नाचार मैं सहता हूँ ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

सूरत जो कभी उसकी टुक देखने जाता हूँ ।
त्यौरी वह चढ़ाता है मैं खौफ़ में आता हूँ ।।
झिड़के है खफ़ा होकर जब हाल दिखाता हूँ ।
वह गालियाँ देता है मैं सर को झुकाता हूँ ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

दिल दे के मुझे यारो दुख दर्द हुआ लाहा ।
पलकों ने सितमगर की अब दिल को मेरे राहा ।।
रोता हूँ तो कहता है क्यों तूने मुझे चाहा ।
जितना वह सताता है कहता हूँ अहा ! हा ! हा !
क्या कीजिए हुई अब तो दिल की गिरफ़्तारी ।।

कहता है तुझे तो मैं हर आन कुढ़ाऊँगा ।
कुचलूँगा तेरे दिल को और जी को जलाऊँगा ।।
कूँचे से निकालूँगा हर वक्त सताऊँगा ।
मैं उस से ये कहता हूँ "जी सब ये उठाऊँगा" ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

कीजेगा रवाना तो थैली को भरूँगा मैं ।
जो चीज मंगाओगे ला आगे धरूँगा मैं ।।
रातों को निगहबानी करते न डरूँगा मैं ।
चप्पी को जो कहिएगा चप्पी भी करूँगा मैं ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

बैठोगे तो हर साअत रूमाल झलूँगा मैं ।
गर्मी में जो कहिएगा तो पीठ मलूँगा मैं ।।
ख़िदमत की जो बातें हैं उनसे न टलूँगा मैं ।
जाओगे कहीं जिस दम तो साथ चलूँगा मैं ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

दर पर जो बिठाओगे दरवान कहाऊँगा ।
फर्राश बनाओगे तो फर्श बिछाऊँगा ।।
तौसन के भी मलने से मुँह को न फिराऊँगा ।
गर घास मगाओगे तो घास भी लाऊँगा ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

तक़सीर न होयेगी कुछ ख़िदमते सामी में ।
होगा वही आएगा जो राय गिरामी में ।।
आने की नहीं हरगिज़ खातिर मेरी खामी में ।
हाजिर है "नज़ीर" ऐं जाँ इस वक्त गुलामी में ।।
क्या कीजिए हुई अब तो याँ दिल की गिरफ़्तारी ।।

राज़ी व रज़ा

गर तुझ में ऐ परीरू ! या मेहर या जफा है ।
या रास्ती का मिलना, या सर ब सरदग़ा है ।।
कर तू वही जो तेरे, अब दिल को खुश लगा है ।
हम जानते नहीं हैं, कुछ नेको बद कि क्या है ।।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है ।
याँ यूं भी वाह वा है और वूँ भी वाह वा है ।।

कुछ दिल में है तो दिल की, आबादियां भी कर ले ।
ज़ोरो सितम की अपने उस्तादियाँ भी कर ले ।।
वे दर्द है तो ज़ालिम, बेदर्दियाँ भी कर ले ।
जल्लाद है तो काफिर, जल्लादियाँ भी कर ले ।।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है ।
याँ यूं भी वाह वा है और वूँ भी वाह वा है ।।

अब दर पे अपने हमको रहने दे या उठा दे ।
हम सब तरह से खुश हैं रख या हवा बता दे ।।
आशिक हैं नर कलन्दर चाहे जहाँ बिठा दे ।
या अर्श पर चढ़ा दे या खाक में मिला दे ।।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है ।
याँ यूं भी वाह वा है और वूँ भी वाह वा है ।।

गर मेहर से बुलावे तो ख़ूब जानते हैं ।
और ज़ोर से डुबावे तो डूब जानते हैं ।।
हम इस तरह भी तुझको मरग़ूब जानते हैं ।
और उस तरह भी तुझ को महबूब जानते हैं ।।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है ।
याँ यूं भी वाह वा है और वूँ भी वाह वा है ।।

एक दिन वह था कि हम पर थे इश्क के धड़ाके ।
याँ मतलबों के हम पर, और ग़ैर पर कड़ाके ॥
अब ग़ैर पर करम है, और हम पे हैं झड़ाके ।
हम सब तरह खुशी हैं, सुनता है ओ लड़ाके ॥
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है ।
याँ यूं भी वाह वा है और वूँ भी वाह वा है ॥

या दिल से अब खुशी हो, कर प्यार हमको प्यारे ।
या तेग़ खींच ज़ालिम, टुकड़े उड़ा हमारे ॥
जीता रखे तू हमको, या तन से सर उतारे ।
अब तो "नज़ीर" आशिक कहते हैं यूँ पुकारे ॥
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है ।
याँ यूं भी वाह वा है और वूँ भी वाह वा है ॥

फ़हमाइश

अपने ग़म ख़्वारों से कोई आन हँस ले बोल ले ।
दर्दमन्दों का निकाल अरमान हँस ले बोल ले ॥
फिर कहाँ में दिलबरी ये शान हँस ले बोल ले ।
दम ग़नीमत है अरे नादान हँस ले बोल ले ॥
मान लें कहना मेरा ऐ ! जान हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

आज तुझको हक़ ने दी है हुस्नों खूबी की बहार ।
चाहने वालों से कर ले कुछ सलूक व मेहरो प्यार ॥
कोंदना बिजली का और जोवन का मत गिन ऐतबार ॥
काठ की हाँड़ी नहीं चढ़ती है प्यारे बार—बार ॥
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

अब तो मुँह गुल है प्यारे फिर धतूरा आक है ।
आज ये गुलशन खिला है कल को सूखा साख है ॥
जो उठा शोला भबूका आखिरश को राख है ।
चार दिन की चाँदनी है फिर अंधेरा पाख है ॥
मान ले कहना मेरा ऐ जान हँस ले बोल ले ॥
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

इस क़दर मत कर मेरी जाँ अपने जोबन पर गुमाँ ।
ये नहीं रहता सदा काफिर किसी के पास याँ ॥
जब गिरें हैं दाँत और पड़े चेहरे के ऊपर झुर्रियाँ ।
फिर ये हँसना बोलना लौर फिर ये अचपलियाँ कहाँ ॥
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

ऐसा कोई हुस्न वाला आह तू हमको बता ।
जिसकी खूबी का हमेशा एकसा आलम रहा ॥
क्यों ख़फा होता है हमसे याद रख ऐ दिलरुबा ॥
हाथ आता है नहीं काफिर जब ये जोवन गया ।
मान ले कहना मेरा ऐ जान हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥
क्या हमारा हाले दिल खूबी तुझे कहती नहीं ।
या हमारी चाह तेरे नाज़ को सहती नहीं ॥
आह खेती हुस्न काफिर की हरी रहती नहीं ॥
नाव कागज़ की है प्यारे ये सदा बहती नहीं ॥
मान ले कहना मेरा ऐ जान; हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

कैसे-कैसे खूबरू याँ हो गये हैं मेरी जाँ ।
अपने गमख़्वारों से क्या क्या कर गये हैं खूबियां ॥
तू जो—रूठा रूठा रहता है ना मेहरबाँ ।
देख पछतावेगा गाफिल हुस्न पर मत रख गुमाँ ॥
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

हुस्न का आलम सितमगर हर घड़ी मिलता नहीं ।
गुल भी खिल एक बारी ऐ जाँ ! फिर कभी खिलता नहीं ॥
मुझसे तेरा रूठना हरदम का अब झिलता नहीं ।
दूध और दिल जब फटा प्यारे ये फिर मिलता नहीं ॥
मान लें कहना मेरा ऐ जान हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥

आज तो आशिक का सर है जान! तेरा पाँव है ।
मिन्नतें होती हैं और तेरे नहीं कुछ भाव है ॥
अब ये माशूकी का सक्ता आज तेरे नाँव है ।
भूल मत इस पर मियाँ ये ढलती फिरती छाँव है ॥
मान ले कहना मेरा ऐ जान हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ॥
दिल गरीबों के जो प्यारे तुझसे अब दुःख पायेंगे ।
एक दिन तुझको भी खूंबा ये यों ही कल पायेंगे ॥

बात को हँसने को दे दे झिड़कियाँ तरसायेंगे ।
पांडे जी पछतायेंगे वो ही चने की खायेंगे ।।
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ।।

अपने अपने वक्त में क्या क्या परीरू बन रहे ।
चाँद से मुखड़े रहे और गुल से उनके तन रहे ।।
न किसी का धन रहे और न सदा जोबन रहे ।।
न सदा फूले तुरई और न सदा सावन रहे ।।
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ।।

अब तो चेहरे पर है तेरे हुश्नो खूबी की झलक ।
ख़्वाह तू हँस बोल हम से ख़्वाह गुस्सा हो झड़प ।।
एक दिन जाती रहेंगी ये चमक और झमक ।
फिर जो बोलेगा तो हर एक यूँ कहेगा चल न बक ।।
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ।।

अब 'नज़ीर' आगे तेरे रहता है हाजिर सुबहो शाम ।
प्यार से हँस बोल प्यारे पी मये उल्फत का जाम ।।
फिर कहाँ ये दिलबरी ये ऐश की बातें मदाम ।
कुछ न होयेगा रहेगा आखिरश अल्लाह का नाम ।।
मान ले कहना मेरा ऐ जान ! हँस ले बोल ले ।
हुस्न ये दो दिन का है मेहमान हँस ले बोल ले ।।

गिला

(शिकायत)

उस शोख के सितम का गिला आह क्या करूँ ।
तन सूख कर हुआ है मेरा काह क्या करूँ ॥
बहते हैं अश्क शामो सहर गाह क्या करूँ ।
मिलता नहीं है तो भी वह गुमराह क्या करूँ ॥
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ॥

जिस दिन से उस से आन के फूटा मेरा नसीब ।
दिल भर के एक दिन न हुआ देखना नसीब ॥
हूँ जागता मैं तो भी नहीं जागता नसीब ।
किन सख्तियों में आन पड़ा अब मैं या नसीब ॥
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ॥

इधर तो मुझको कत्ल करे है वह नेक नाम ।
उधर को आ रहे हैं अजल के मुझे पयाम ॥
अब यार को मनाऊँ कि रखूँ अजल को थाम ।
इस कशमकश में अब कहो क्या-क्या करूँ मैं काम ॥
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ॥

गर यार की खुशी न करूँ तो वह हो ख़फा ।
और जो अजल को रोकूँ तो माने है वह बुरा ॥
अर्सा था जिन्दगी का तो सौ घड़ियों पे आ लगा ।
इस दो घड़ी में आह मैं क्या-क्या करूँ भला ॥
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ॥
क्या बेबसी है ऐ मेरे आल्लाह ! क्या करूँ ॥

गर अपनी जिन्दगानी का करता हूँ मैं हिसाब ।
पल फरने की देर है पानी का ज्यों हुबाब ।।
क्यों कर बहे ना ग़म से मेरे आँसुओं का आब ।
इतनी सी ज़िन्दगी में भी क्या क्या सहूँ अजाब ।।
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ।।

जो जी छुपा के अब न सहूँ यार की जफा ।
तो आशिकों के बीच कहाता हूँ बेवफा ।।
और जी को देखता हूँ तो एक दिन की है हवा ।
इन मुश्किलों के बीच करूँ आह अब मैं क्या ।।
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ।।

गर हाथ धो के बैठ रहूं अब मैं सब्र कर ।
तो लोग ताने देते है हँस—हँस के घर व घर ।।
और यार से कहूँ तो वह करता नहीं नज़र ।
इस बेबसी में आह कहां पीटूँ अपना सर ।।
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ।।

न आह का मकाँ है न रोने की अब है जाये ।।
ने दिल को मेरे सब्र ना दिलदार मुँह लगाये
गर एक ग़म पुरे तो उसे जी मेरा उठाये ।
इस आस्माँ फटे को कहूँ किससे अब मैं हाय ।।
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ।।

गर यार की गली में रहूँ जाके बेक़रार ।
तो सख्तियों से मुझको उठाता है मार मार ।।
हर आन तोड़ता है मेरी आस बार बार ।
इस दर्दो ग़म को आह मैं किससे कहूँ पुकार ।।
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ।।

रोऊँ तो मुझको और रुलाता है वह हबीब ।
बोलूँ तो यूँ कहे है कि चल मत निकाल जीव ॥
गर उम्र देखता हूँ तो आ पहुँची अनकरीब ।
और यार से सुलूक ये ठहरे है या नसीब ॥
फ़ुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ।
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ॥

चाहूँ कि तुझको इश्क़ में अपने करूँ असीर ।
तू दूर भागता है मुझे जान कर हक़ीर ॥
ने मुझको कत्ल करता है ज़ालिम न दोस्तगीर ।
क्या बे तरह के ग़म में फंसा हूँ मैं ऐ "नज़ीर" ॥
फुर्सत तो साँस की भी नहीं आह ! क्या करूँ ॥
क्या बेबसी है ऐ मेरे अल्लाह ! क्या करूँ ।

अलफिराक़

(जुदाई)

जब से तुमको लें गया है ये फलक अज़लम कहीं ।
जी तरसता है कहीं और चश्म है पुरनम कहीं ।।
हम पे जो गुज़रा है वह गुज़रा किसी पर ग़म कहीं ।
न तसल्ली है न दिल को चैन है इकदम कहीं ।।
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ।।

तुम वहाँ बैठे हो हम यां हिज्र के हाथों ख़राब ।
न तो दिन को भूख है न रात को आता है ख़्वाब ।।
बेक़रारी, यादगारी, इन्तज़ारी, इज़्तराब ।
क्या कहें तुम बिन पड़ा है हम पे अब कैसा अजाब ।।
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी ज़िदगी पर तुम कहीं और हम कहीं ।।

हर घड़ी आँसू बहाना दीदए ख़ूँबार से ।
रात दिन सर को पटकना हरदरो दीवार से ।।
आहो नाला ख़ींचना हरदम दिले बीमार से ।
है बुरा अहवाल अब तो हिज्र के आज़ार से ।।
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ।।

याद आती है तुम्हारी उल्फतों की जब कि चाह ।
दिल के टुकड़े होते हैं आँसू बहे हैं ख़्वाहमखाह ।।
पावों में ताकत, न तन में ज़ोर न मालूम राह ।
क्या ग़ज़ब है, क्यों करें, कुछ बन नहीं आती है राह ।।
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
ख़ाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ।।

न किसी से मेहरो उल्फत नै किसी से प्यार है ।
नै रफीक अपना कोई और नै कोई ग़म ख्वार है ॥
दिल इधर सीने में तड़पे जी उधर बीमार है ।
क्या कहें अब तो बहुत मिट्टी हमारी ख़्वार है ।
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥

घर में जी बहले, न बाहर अन्जुमन में दिल लगे ।
नै खुश आवे सैर, नै सर्वो समन में दिल लगे ॥
नै बहारों में, न सेहरा में, न बन में दिल लगे ।
अब तो तुम बिन नै गुलिस्ताँ नै चमन में दिल लगे ॥
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥

पर नहीं, उड़कर तुम्हारे पास जो आ जाइये ।
जी ही जी में कब तलक खूने जिगर को खाइए ॥
चश्मेतर और दाग़ सीने के किसे दिखलाइये ।
दिल समझता ही नहीं क्योंकर इसे समझाए ॥
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥

दम बदम भरते हैं ठंडी साँस बे दिल की तरह ।
नाल ओ फरियाद हैं हर आन घायल की तरह ॥
सर पटकना और तड़पना रात दिन दिल की तरह ।
ख़ाको खूँ में लोटते है अब तो बिस्मिल की तरह ॥
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ॥

अब जो अपने हाल पर हम खूब करते हैं निगाह ।
हर घड़ी मिस्ले 'नज़ीर' इस ग़म से है हालत तबाह ॥
है जो कुछ जुल्मो सितम हम पर, कहें क्या तुमसे आह ।
विन मुए अब तो 'नज़ीर' आता नहीं हरगिज़ निबाह ॥
छूट जावें ग़म के हाथों से जो निकले दम कहीं ।
खाक़ ऐसी जिन्दगी पर तुम कहीं और हम कहीं ।

सोज़े फिराक़

(विरह की आग)

मुझे ऐ दोस्त ! तेरा हिज्र अब ऐसा सताता है ।
कि दुश्मन भी मेरे अहवाल पर आँसू बहाता है ।।
ये बेताबी ये बेख़्वाबी ये बेचैनी दिखाता है ।
न दिल लगता है घर में और न सेहरा मुझको भाता है ।।
अगर कुछ मुंह से बोलूँ तो मज़ा उलफ़त का जाता है ।
अगर चुपका ही रहता हूँ कलेजा मुंह को आता है ।।
मरा दर देस्त अन्दर दिल अगर गोयम ज़वाँ सोज़द ।
विगर दम दर क़शम तरसम कि मग़ज़े उस्तुख़्वाँ सोज़द ।।[१]
कूक करूँ तो जग हँसे चुपके लागे घाव ।
ऐसे कठिन सनेह का किस बिध करूं उपाव ।।

न था मालूम उलफत में कि ग़म खाना भी होता है ।
जिगर की बेकली और दिल का घबराना भी होता है ।।
सिसकना, आह भरना, अश्क भर लाना भी होता है ।
तड़पना, लोटना, बेताब हो जाना भी होता है ।।
किये पर अपने फिर आपी को दुख पाना भी होता है ।
क़फे-अफसोस को मल मल के पछताना भी होता है ।।
अगर दानिस तमज़ रोज़े अजल दाग़े जुदाई रा ।
न मी करदम व दिल रोशन चिराग़े आशनाई रा ।।[२]
जो मैं ऐसा जानती प्रीति करे दुख होय ।
नगर ढ़िढ़ोरा पीटती पीतन की जौ कोय ।।

---

[१] मेरे दिल में ऐसा दर्द है कि यदि मैं उसका वर्णन करूँ तो ज़वान जल जाय, यदि न कहूँ तो उसकी गर्मी से मेरे सिर की हड्डियों का गूदा पिघल जाय ।

[२] यदि मैं अजल के दिन से विरह के दुख और उसके दाग़ को जानता तो मैं अपने दिल में प्रेम और मुहब्बत का चिराग़ रोशन न करता ।

सहर से शाम तक सहरा में फिरता दिन को मनमारे।
लगाकर शाम से ता सुबह गिनता रात के तारे।
लबों पर आह दिल में दाग़ जों आतिश के अंगारे।
जिसे दिल चाहता है उसको कुछ परवाह नहीं वारे।
जब उसकी ही ये मर्जी है तो चुप बैठे हैं बेचारे।
मगर उसके तसव्वुर में यही कहते हैं ऐ प्यारे।
ज़िहाले मन कि चूनम बे रख़्त दारी ख़बर याना।
दिले मन सोख़्त आया दर्दिलत वाशद असरयाना।[१]
आह दई कैसी भई अनचाहत के संग।
दीपक को भावै नहीं जलजल मरै पतंग॥

कभी होकर गिरेबाँ चाक सेहरा को निकलता हूँ।
कभी घबराके फिर घर की तरफ नाचार चलता हूँ।
लगी है आग दिल में शमा सा जलकर पिघलता हूँ।
धुंआ उठता है आहों का बरंगे मोम गलता हूँ।
बदन में देखकर शोला भड़कते हाथ मलता हूँ।
भभूके तन से उठते हैं सती की तरह जलता हूँ।
ज़िताबे आतिशे दूरी कि मी सोज़द दिलों जाँरा।
नमूदह नब्ज़े मनपुर आबला दस्ते तबीं बाँरा।[२]
विरह आग तन मैं लगी, जरन लगे सब गात।
नारी छूवत बैद के पड़ें फफोला हाथ॥

ग़ज़ब है एक तो समझे न दिल और जी भी घबरावे।
तिस ऊपर हर घड़ी उस दिलरुबा की शक्ल याद आवे।
न हो दिल क्यूं कि टुकड़े और न जाँ किस तौर घबरावे।
दरो दिवार से क्यूं कर न कोई सर को टकरावे।
लगी जो आग दिल में फिर वह बुझने किस तरह पावे।
मगर जिसने लगाई हो, वही आकर बुझा जावे।

---

[१] मैं तेरे चेहरे के दीदार के बिना कैसा हूँ मेरी इस दशा से तू खबर रखता है या नहीं। मेरा तो दिल जल गया लेकिन तेरे दिल पर भी इसका प्रभाव है या नहीं।

[२] मेरे हृदय और प्राणों को जलाने वाली विरह की आग की गर्मी से मेरे हाथ की नाड़ी हकीमों को आँवले भरी नज़र आती है।

चु दरदिल आतिशे दूरी फ़ितर ऊरा कि बिन शानद ।
मगर आँ कस कि आतिशज़द हमां आवे बर अफ़्सानद ।[1]
हिरदे अंदर दौ लगी धुवां न परगट होय ।
जा तन लागे सो लखे या जिन लाई सोय ।।

कहाँ तक खाइये ग़म, अब ग़म खाया नहीं जाता ।
दिले बेताब को बातों से, बहलाया नहीं जाता ।
क़दम रखता हूँ जिस जां, वाँ से सरकाया नहीं जाता ।
यह पत्थर हाथ से तिल भर भी उकसाया नहीं जाता ।
पड़ा हूं दश्त मैं रस्ता कहीं पाया नहीं जाता ।
जो चाहूं भाग जाऊँ भाग भी जाया नहीं जाता ।
मकाने यारो दूरज़ मन न परदारम न पाए दिल ।
अजब दर मुश्किलुफ़्तादम चि साँ ते साज़म ई मंज़िल ।[2]
ना मेरे पंख न पाँव बल मैं अपंग पिय दूर ।
उड़ न सकूँ गिर-गिर पड़ूँ रहूँ बिसूर बिसूर ।।

इधर दिल मुझसे कहता है, तू चल यार के डेरे ।
उधर तन मुझको कहता है, कि तू मत मुझको दुख देरे ।
जो कहना दिल का करता हूं, तो रहता वह घर मेरे ।
मगर तन की सुनूं तो और दुख पड़ते हैं बहुतेरे ।
न दिल माने, न तन माने हरइक अपनी तरफ फेरे ।
करूँ क्या मैं 'नज़ीर' ऐसी, जो मुश्किल आन कर घेरे ।
दिलम दिलदार मी जोयद तनम आराम मी ख़्वाहिद ।
अजाइब कशमकश दारम कि जानम मुफ़्त भी काहिद ।
दिल चाहे दिलदार को और तन चाहे आराम ।
दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम ।।

---

१. दिल में जो विरह की आग लगी है उसे कौन ठंडा कर सकता है सिवाय उसके कि जिसने यह आग लगाई है।

२. मेरे प्रिय का मकान मुझसे दूर है मेरे पास न पंख हैं, न पांव में शक्ति है। ऐ दिल ! मैं अजीब मुश्किल में पड़ गया हूँ किस तरह इस मंज़िल को तय करूँ।

३. मेरा दिल दिलदार को चाहता है और शरीर आराम चाहता है। मैं अजीब कशमकश में रहता हूँ मेरी जान मुफ़्त में घुटी जा रही है।

दोहा

कूक करूँ तो जग हँसे, चुपके लागैं घाव ।
ऐसे कठिन सनेह का किस विधि करूं उपाव ॥

जो मैं ऐसा जानती पीत किए दुख होय ।
नगर ढिढोरा फेरती पीत न कीजो कोय ॥

आह ! दई कैसी भई अन चाहत के संग ।
दीपक को भावैं नहीं जल जल मरे पतंग ॥

विरह आग तन में लगी जरन लगे सब गात ।
नारी छूवत वैद के पड़े फफोले हात ॥

हिरदे अंदर दव लगी धुवां न परगट होय ।
जातन लागे सो लखे या जिन लाई होय ॥

ना मेरे पंख न पाँव बल मैं अपंख पिया दूर ।
उड़ न सकूँ गिरि गिरि पड़ूँ रहूँ बिसूर बिसूर ॥

दिल चाहे दिलदार को तन चाहे आराम ।
दुविधा में दोहू गए माया मिली न राम ॥

देह सुमन तें ऊजरी मुख तें चंद लजाय ।
भौहें धनकें तान के पलकें बान चलाय ॥

भेंट भई जाते कही नैनन असुवा लाय ।
हो कोई ऐसा महंत जो पीतम मंदिर बताय ॥

अलकन फंदे उड़ परी मन फस दियौ रोय ।
दृगन जादू डार के सुध बुध दीनी खोय ॥

नेह गले का हार है हूं तीरे बलिहार ।
मारे मोहे विरह दुख ले चल वाके द्वार ॥

पलक कटारी मारके हिरदे रक्त बहाय ।
कह की आह सामर्थ जो वाके द्वारे जाय ॥

नेह नगर की रीत है तन मन देहौ खोय ।
पीति डगर जब पग रखा होनी हो सो होय ॥

पीतम ने मुँह मोड़ के कीनो मान गुमान ।
बिन देखे वा रूप के मेरे कढ़त पिरान ॥

मन मोरा बस कर लियो, काहे कीनी ओट ।
ऐसी मोते मन हरन का बन आई खोट ॥

मन मेरो या बात रस निपट भयौ परसंद ।
निकसो दुख मन बीचते आन भरो आनन्द ॥

8705

—०—

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
[illegible]		15/7/84
Class on	Sanjeev	9/9/94
Cat on	Sanjeev	
[illegible]	Sanjeev	
[illegible]		
E A P		02/7/84
Any other		
Checked		

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

Compiled
1999-2000

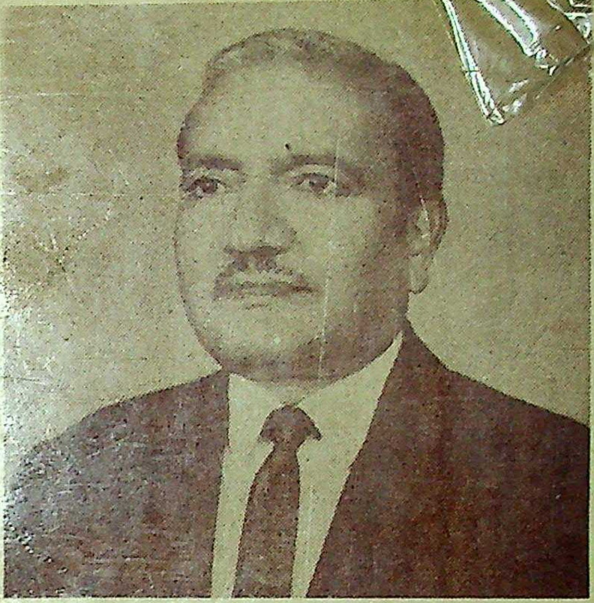

डा० नज़ीर मुहम्मद

एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी., डी.लिट्.

प्रोफेसर हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

अनेक विश्वविद्यालयों की उच्च स्तरीय विभिन्न समितियों के सदस्य

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मनोनीत राष्ट्रीय व्याख्याता

प्रमुख रचनायें :–

कबीर के काव्यरूप, धरती के लाल, संत साहित्य का अभिव्यंजनापरक अध्ययन, एकता के चरण, हिन्दी की आदिकालीन कविता, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में बहुत से लेख प्रकाशित

उत्तर प्रदेश सरकार, हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति, अखिल भारतीय कबीर–पंथी महासभा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित।